

विज्ञापन

के हमारे कारखाने में जो पुस्तकें मूल संस्कृत टीका उर्दू में से कुछ नीचे लिखते हैं जिन साहबों को ज़रूरत हो मैगा तायत से मिलेगी-

याज्ञवल्क्य स्मृति.

स्वामीदयाल साहब के उर्दू तर्जुमा समेत है जिस में राजाधियों के प्रजा पालन करने के धर्म और अधर्मियों को दण्ड देने और चारों चरों और गृहस्थादि चारों आश्रमों के धर्म और ब्रतार्थ इत्यादि अनेक विषय संयुक्त हैं-

मार्कण्डेय पुराण.

का उत्था श्री बाबू देवनन्दन सिंह रईस खान्दान राजशिवहर श्री परगनात जिला निरहृत व चम्पारन ने कराया श्लोक के नीचे श्लोकानुसार भाषा टीका है और उर्दू टीका भी संयुक्त कर दोनों टीकाएँ तबवार अंक लगा दिये गये हैं छापा पत्थर है जिस में मार्कण्डेय मुनि जैमिनि का सत्संग और संवाद अप्सराओं पर दुर्वासा मुनि का शाप, के सारे जाने पर विद्युतरूप राक्षस का मारा जाना और यक्षिणी के जार चरित्र, देवी जी का माहात्म्य और दुर्गा पाठ भी संयुक्त है-

ब्रतार्क.

का उत्था लाला स्वामीदयाल साहब ने किया है छापा पत्थर का शुद्ध है इस में सम्पूर्ण ब्रतों की कथा व उच्चापन इत्यादि बरिती है

भगवद्गीता.

श्री प्रथमसुन्दर लाल कत उत्था सहित है छापा पत्थर है इस में यदि में भावार्थ स्पष्ट किया है और फिर हर एक पद के अर्थ भी अलग अलग दिये हैं कि श्लोक लगाने की भी शक्ति हो-

दृढसंहिता अर्थात् बाराहीसंहिता.

इस के मूल श्लोकों को बराह मिहराचार्य जी और दीक्षा दे
परिडित दुर्गाप्रसाद शास्त्री ने किया था और उसी देवनागरी
नक़ल उर्दू खत में लिखा कर संस्कृत मूल व उर्दू दीक्षा शास्त्र
पी गई है इस में नवग्रह अगस्त्य और सप्तऋषियों के चार
ग्रह चन्द्र ग्रहण, धूमकेतु के फल, ग्रहयुद्ध, ग्रहसमागम, ग्रह
ल, पानी वर्धने के अनेक विचार इत्यादि १०८ विषय वर्णित
समान लौकिक व्यवहारों के निमित्त कोई संहिता नहीं है-

महिम्नस्तोत्र.

लाला स्वामीदयाल जी का तर्जुमा किया हुआ हर श्लोक का उल्
थ है जिस में शिव जी की स्तुति वर्णित है-

विष्णुसहस्रनाम.

जिस में श्रीविष्णु जी के हजार नाम श्लोकों में वर्णित हैं इस के टीके
भी लाला स्वामीदयाल जी ने उर्दू में उल्था किया है-

शिवसहस्रनाम.

उर्दू तर्जुमे को सुंशी शंकर दयाल प्रारहत ने किया है इस में
शिव जी के हजार नाम श्लोकों में वर्णित हैं-

अर्कप्रकाश.

यह वेद की पुस्तक रावरा ने अपनी घरम प्यारी महीदरी प्रति व
र्णन किया है इस में सम्पूर्ण औषधियों की अर्क निकालने की विधि
और निकालने यंत्र बनाने की विधि लिखी है इस का भी तर्जुमा ल
स्वामीदयाल जी ने किया है-

मनोरंजन अर्थात् दिलबहलाव.

सुंशी जगन्नाथमहाय कत, हज़ारीबाग निवासी- इस में गज़लों व
शिव भजन, वगैरह अनेक प्रकार के हैं- देखने योग्य हैं-

वेदशास्त्रार्थतत्त्वज्ञो यत्र तत्राश्रमेव सन् ॥ इहैव लोके तिष्ठन्
ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥ १०२ ॥ अज्ञेभ्यो ग्रन्थिनः श्रेष्ठा ग्रन्थि-
भ्यो धारिणो वराः ॥ धारिभ्यो ज्ञानिनः श्रेष्ठा ज्ञानिभ्यो व्यव-
सायिनः ॥ १०३ ॥ तपो विद्या च विप्रस्य निश्चये यस्य करं परम् ॥
तपसा किल्बिषं हन्ति विचयाऽमृतमश्नुते ॥ १०४ ॥ प्रत्यक्षं च
नुमानं च शास्त्रं च विविधागमम् ॥ त्रयं सुविदितं कार्यं धर्मस्य
द्विसंभीप्सिता ॥ १०५ ॥ आर्यधर्मो पदेशं च वेदशास्त्राऽविरो-
धिना ॥ यस्तर्करा नुसन्धत्ते स धर्मं वेदनेतरः ॥ १०६ ॥

۱۰۱- ویدادست ستر کے اصلی مطلب کو جاننے والا کسی آشرم میں قیام کرتا ہوا مکش کے
میں ہوتا ہے۔

۱۰۲- جو کچھ مہین جانتا اس سے ایک گرنفقہ پڑھنے والا بڑا ہے اس سے وہ بڑا ہے
پڑھے ہوئے کو مہین بھولتا اس سے پڑھے ہوئے کے مطلب کو جاننے والا بڑا ہے اس سے
مہین لکھے ہوئے کرم کو کرنا والا بڑا ہے۔

۱۰۳- تب یعنی اپنا دھرم بڑیا یعنی برہم گیان یہ دونوں برہمن کی مکش کی افضل ہے
کیونکہ بت سے پاپ کو فانی کرتا ہے اور بڑیا سے مکش کو پاتا ہے۔

۱۰۴- دھرم کے مدد سے جانتے کو جاننے کو خواہشمند آدمی پر تیکش انان انواع قسم کا
استر میں کہا ہوا ان تینوں پرمان کو اچھی طرح سے جانتے۔

۱۰۵- ویدادوست ستر ان دونوں کو اچھی دلیل سے جو تلاش کرتا ہے اس کے اصلی مطلب کو
منا ہے وہی دھرم کو جانتا ہے دوسرا مہین۔

उत्पद्यन्ते च्यवन्ते च यान्यतोऽन्यानि कानिचित् ॥ तान्यर्वाका-
लिकतया निष्कलान्यन्तानि च ॥ ६६ ॥ चातुर्वर्ण्यं त्रयो लोका-
श्चत्वारश्चाश्रमाष्टयक ॥ भूतं भव्यं भविष्यं च सर्वं वेदात्प्रसिद्ध-
ति ॥ ६७ ॥ शब्दः स्पर्शश्चरुपंचरसोगन्धश्च पंचमः ॥ वेदादेव प्र-
सूयन्ते प्रसूतिगुराकर्मतः ॥ ६८ ॥ विभर्त्ति सर्वं भूतानि वेदशा-
स्त्रं सनातनं ॥ तस्मादेतत्परमं न्येयं जन्तोरस्य साधनम् ॥ ६९ ॥
सेनापत्यं च राज्यं च दराडनेतृत्वमेव च ॥ सर्वलोकाधिपत्यं च वे-
दशास्त्रविदहति ॥ ७० ॥ यथा जातवलो वन्हिर्दहत्यार्शनपि
हुमान् ॥ तथा दहति वेदज्ञः कर्मजं दोषमात्मनः ॥ ७१ ॥

۹۶- دیکھتا باہر جو کلام ہے وہ آدمی کا بتایا ہوا اس واسطے بازوال ہے اور اس کا پران بہنیں
اور اہمیت وغیرہ جو کلام بہن وہ بے زوال ہیں کیونکہ انکی خبر دیدی اس واسطے انھوں کا پران ہے۔
۹۷- چار ورن تینوں لوگ علیحدہ علیحدہ چار ورن شرم ماضی و حال و استقبال و خیر کرم ہے
وہ سب دیدی سے مشہور ہوتا ہے۔

۹۸- ست برج تم ان تینوں گنوں سے پیدا ہوئے جو شہر اسپرس روپ رس گندہ میں وہ
سب دیدی سے پیدا ہوتے ہیں۔

۹۹- ہمیشہ سب جانداروں کو وھارن کر نیوالا جو شاستر ہے وہی آدمی کا افضل شاستر ہے
ہے اس بات کو میں مانتا ہوں۔

۱۰۰- سنیاسیت کا کرم راج ڈنڈ و بیاس کوک کی حکومت ان کو دید شاستر کا دالا ہے۔

۱۰۱- جبطح ترقی یافتہ آگ کیسی درخت کو جلا دیتی ہے اسبطح وید جانتے والا اپنے کرم
سے پیدا ہوتے و دشمن کو جلاتا ہے۔

سर्वभूतेषु चात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि ॥ समं पश्यन्नात्मया-
 जीवन् राज्ञ्यमधिगच्छति ॥ ६१ ॥ यथोक्तान्यपि कर्माणि परि-
 ह्रायद्विजोत्तमः ॥ आत्मज्ञानेन शमेन च स्याद्वेदभ्यासेन च तत्त्वान् ॥
 ६२ ॥ एतद्विजन्मसाफल्यं ब्राह्मणस्य विशेषतः ॥ प्राप्येत-
 त्त्वात कृत्यो हि द्विजो भवति नान्यथा ॥ ६३ ॥ पितृदेवमनुष्या-
 राणां वेदश्चक्षुःसनातनम् ॥ अशक्यं चाप्रमेयं च वेदशास्त्रमिति
 स्थितिः ॥ ६४ ॥ या वेदवाह्याः स्मृतयो याश्च काश्च कदृश्यः ॥
 सर्वास्तानिष्कलाप्रेत्य तमो निष्ठाहिताः स्मृताः ॥ ६५ ॥

۹۱۔ جب جانداروں میں اپنی آتما کو اور سب جانداروں کو اپنی آتما میں دیکھتا ہوا ہے
 گیتہ کہتا ہے کہ آتما کو اپنی آتما میں دیکھتا ہوا ہے۔
 ۹۲۔ برہمن یعنی برہم گیانی اگن ہونے وغیرہ کرموں کو ترک کر کے برہم دھیان اندریوں کو
 جیتنا پر توجہ دینا وغیرہ وید بھیس ان سب میں تدبیر کرے۔
 ۹۳۔ برہمن گیتہ کے جنم کو بانیجہ کرنا ہے اتم گیان اور وید بھیس وغیرہ کرم
 میں لیکن برہمن کو تو زبانی سوا سوا اس کرم کو پا کر کرت کرت ہوتا ہے یعنی کرنے کے لائق
 کام کو کر چکا ہے۔
 ۹۴۔ وید ہمیشہ تیز دیتا ہے اور آتما کی آکھ ہے وید و شاستر دونوں شک کے لائق نہیں
 ہیں اور دلیل کہ نیکے لائق ہیں یہ شاستر کی مر جاوے۔
 ۹۵۔ جو وید سے باہر یعنی خلاف وید و شاستر اور جو کچھ ظاہری عقل سے پیدا ہوا ہے وہ
 میں وہ سب کچھ نتیجہ ہیں یعنی موکش نہیں دے سکتے ہیں اور جو کچھ سے بھرے ہوئے ہیں۔

यसामेषान्सर्वेषां कर्मणां प्रेत्य चेह च ॥ श्रेयस्करतरं ज्ञेयं सर्व-
 हा कर्म वैदिकम् ॥ ८६ ॥ वैदिके कर्मयोगे तु सार्वरायेतान्यशेष-
 तः ॥ अन्तर्भवन्तिक्रमशस्तस्मिंस्तस्मिन्क्रियाविधौ ॥ ८७ ॥ सु-
 खाभ्युदयिकं चैवं नैश्रेयसिकमेव च ॥ प्रवृत्तं च निवृत्तं च द्विवि-
 धं कर्म वैदिकम् ॥ ८८ ॥ इह चासुत्रवाक्याम्यं प्रवृत्तं कर्म कीर्त्यते
 ॥ निष्कामं ज्ञानपूर्वञ्च निवृत्तमुपदिश्यते ॥ ८९ ॥ प्रवृत्तं कर्म सं-
 सेव्यदेवानामेति साम्यताम् ॥ निवृत्तं सेवमानस्तु भूतानत्ये-
 तियंच वै ॥ ९० ॥

- ۸۶- پہلے کہے ہوئے وید بھیاں وغیرہ چھ کرموں میں دید میں کہا ہوا کرم یعنی اتم گیان
 اس لوک اور پرلوک میں موکش کی واسطے ہر وقت جاننے کے لائق ہے۔
- ۸۷- اس کرپا بدھ ویدک کرم جوگ یعنی برہم آپاسا میں یہ ب وید بھیاں وغیرہ جنم ہوتا
 ہیں لینے جب برہم آپاسا حاصل ہوئی تب کچھ سادھن یا تپ بنین رہتا۔
- ۸۸- وید میں لکھا ہوا کرم دو قسم کا ہے ایک پر برت دوسرا نیرت عیش و تہال کا دینے والا
 دیکھنے جو لشوم بیکہ وغیرہ سے سکھ دینے والا اور ک وغیرہ پھل ہوتا ہے لیکن سنسار میں بھولے
 اتا ہے اس واسطے پر برت کہلاتا ہے اور نیرت موکش دینے والا ہے (دینے موکش کی واسطے جو کرم
 ہے وہ نیرت کہلاتا ہے وہ کلیان کر نیوالا ہے لینے سنسار میں پھر نہیں لاتا۔
- ۸۹- اس لوک اور پرلوک میں خواہش دل حاصل ہونے کی واسطے جو کرم ہے وہ پر برت
 کہلاتا ہے اور گیان پورک جو کرم ہے وہ نیرت کہلاتا ہے۔
- ۹۰- پر برت کرم کرنے سے دیوتاؤں کے برابر ہوتا ہے اور نیرت کرم کرنے پر بھی
 وغیرہ پانچ عناصر کو فتح کرتا ہے پانچ عناصر سے جنم ہوتا ہے انکے فتح کرنے پر جنم نہیں
 ہوتا۔

विविधाश्चैवसंपीडाः काकोलूकैश्चभसराम् ॥ कर्मवां^{सर्व}
 न्नापात्कुम्भीपाकांश्चरारुगान् ॥ ७६ ॥ सम्भवांश्चवियोनीषु
 दुःखप्रायासुनित्यशः ॥ शीतातपाभिधातांश्चविविधानिभ-
 यानिच ॥ ७७ ॥ असक्तर्भवासेषुवासंजन्मचरारुगाम् ॥ वंध-
 नानिचकाष्ठानिपरप्रेष्यत्वमेवच ॥ ७८ ॥ बन्धुप्रियवियोगां-
 श्चसंवासंचैवकुर्जनैः ॥ द्रव्यार्जनंचनाशंचमित्रमित्रस्यचार्ज-
 नम् ॥ ७९ ॥ जरांचैवाप्रतीकारांव्याधिभिश्चोपपीडनम् ॥ क्षे-
 शांश्चविविधांस्तांस्तान्मृत्युमेवचकुर्जयम् ॥ ८० ॥

۷۶- اور انواع اقسام کی تکلیف تھیں اور کوڑا اور آلو پر نزل کو کھاتے ہیں اور گرم ہلو
 کی گرمی کو پاتے ہیں اور نہایت خوفناک کنبھی پاکظم نر کے دکھ بھوک کرتے ہیں
 ۷۷- ہمیشہ بہت دکھ دلی ناقص ہون میں پیدا ہوں اور سردی و گرمی و تکلیف اور
 انواع اقسام کا خوف پاتے ہیں۔

۷۸- بار بار شکم میں قیام و تکلیف ولادت و تکلیف گرفتاری و دوسری خدشگزار ہی ان
 سب کو پاتے ہیں۔

۷۹- بھائیوں اور پیارے لوگوں سے جدائی اور پر آدمیوں کے ساتھ بوجھ و دواش اور
 دولت کا فراہم ہونا اور پھر اوسکا کالعدم ہونا اور دوست و دشمن کا ملانا ان سب کو پاتے ہیں
 ۸۰- قابل عدم معالجہ حالت پیری و بیماریوں سے دکھ و انواع اقسام کی تکلیف
 کے بعد موت ان سب کو پاتے ہیں۔

مैत्रاक्षج्यوتیک: پرتو वैश्योभवति पूयमुक्ता ॥ चैलाशकश्चम
वतिशूद्रो धर्मात्त्वकाश्च्युतः ॥ ७२ ॥ यथायथानिषेवने विषया
न्विषयात्मकाः ॥ तथातथाकुशलतातेषां तेषूपजायते ॥ तेषां
भ्यासात्कर्मणां तेषां पापानामल्पबुद्धयः ॥ सम्यामुवन्ति दुः
खानितासुतास्त्रिहयोनिषु ॥ ७४ ॥ तामिखादिबुचोप्रेषु नर-
केषु विवर्त्तनम् ॥ अक्षिपन्नवनादीनि वन्धनच्छेदनानि च ॥
७५ ॥

۶۲- جو دیشیا اپنے دھرم سے علیحدہ ہو وہ پیپ بھوجن کریں والا سترکشی نام پریت ہوتا ہے
اور جو شوہا اپنے دھرم سے علیحدہ ہو وہ کیرا بھوجن کریں والا پریت ہوتا ہے -
۶۳- بیشیون میں آتا کو لگا نیوالا آدمی جس جس طرح بیشیون کا سیون کرتا ہے اس سطح
دیشیون میں ہوشیار ہوتا ہے -
۶۴- وہ سب کم عقل دالے آپ پاپ کریں کی دھارت سے اُن اُن یوں میں دکھ کو پاتے ہیں
۶۵- اور تاشتر اس پتر بن بندھن چھیدن جو ترک ہیں انہیں دکھ پاتے ہیں -

हको मृगोभं व्याघ्रोऽश्वं फलमूलक्षुमर्कतः ॥ स्त्री मृशः स्तोक
को वारियानान्युष्टपश्नजः ॥ ६७ ॥ यद्वातद्वापरद्वयमपह-
त्य वलान्नरः ॥ अवश्यं याति तिर्यक् जग्ध्वा चैवाह तं हविः ॥
६८ ॥ स्त्रियोऽप्येतेन कल्पेन हत्वा दोषमवाप्नुयुः ॥ सतेषामेव
जन्तूनां भार्गवपुण्यान्विताः ॥ ६९ ॥ स्वेभ्यः स्वेभ्यस्तु कर्मभ्य-
श्च्युता वराण्यनापदि ॥ पापान्संस्त्य संसारान्नेभ्यतां यान्ति
शत्रुषु ॥ ७० ॥ वान्ताश्च्युत्का मुखः प्रेतो विप्रो धर्मात्त्वकाश्च्यु-
तः ॥ अमेध्यकुरापाशी च सत्रियः कटपूतनः ॥ ७१ ॥

۶۷- ہرن اور ہاتھی ان دونوں میں سے کسی ایک کو چرانے سے بندھ رہا ہوتا ہے گھوڑا کے
چورانے سے باگھ ہوتا ہے پھل پھول ان دونوں سے کسی ایک کے چورانے سے بندھ رہا ہوتا ہے
عورت کے چورانے سے سمجھ ہوتا ہے مینے کے لائق پانی چورانے سے پیسیا نام پر بندھ رہا ہے
سوار یون کو چور اگر اونٹ ہوتا ہے چار پاؤں کو چور اگر بکرا ہوتا ہے -

۶۸- دوسری درتہ چورانے سے اور بدون بھوک لگائے دیوتاؤں کے سبیکے بھوجن
سے ضرور ٹیڑھے چلنے والے جانوروں کے جسم یعنی قالب کو پاتا ہے یعنی انکی صحت سے
پسید ہوتا ہے -

۶۹- اور عورت بھی اوپر لکھے ہوئے کرموں کے کڑے سے اوپر لکھے ہوئے جانوروں کی
عورت ہوتی ہے -

۷۰- وقت نصیبت کے نوٹمین چار دہن آئے کر سوس علیحدہ ہو کر پاپ یون ہن جا کر
اپنے دشمنوں کے غلام ہوتے سن -

۷۱- اپنے دھرم سے علیحدہ برہمن نے کی ہوئی چیز کو بھوجن کرنا الا اکھ نام پریت ہوتا ہے
اور اپنے دھرم سے علیحدہ کشتری غلیظ پیشاب کھانیوالا کیٹوتن نام پریت ہوتا ہے -

धान्यं हत्वा भवत्याखुः कास्यं हंसो जलस्रवः ॥ मधुशः पयः
काकोरसं श्वानकुलोद्यतम् ॥ ६२ ॥ मांसं शुधो वपां महुस्ते लते
लपकः खगः ॥ चीरी वाकस्तुलवरां बलाकाशकुनिर्दधि ॥ ६३ ॥
॥ कौशेयं तिचिरिहत्वा सौमं हत्वा तु रुरः ॥ कार्या सतान्नवं कौ-
चो गोधा गावा गुरो गृहम् ॥ ६४ ॥ कुच्छुनरिः शुभान्धान्य-
त्रशाकलुवर्हि राः ॥ श्वा विस्तृतान् विविधमकृतान् तु श-
ल्यकः ॥ ६५ ॥ वको भवति हत्वाग्निं गृहकारी ह्युपस्करम् ॥ र-
क्तानि हत्वा वासां सिजायते जीवजीवकः ॥ ६६ ॥

۶۲۔ غلہ کے چرانے چربا اور کانس کے چرانے سہس اور پانی کے چرانے پلو نام
جاولز اور شہ کے چرانے جگل کے ماچی اور دودھ کے چرانے کو اور رس کے چرانے
کنتہ اور گھی کے چرانے نیولا ہوتا ہے۔

۶۳۔ گوشت و چربی و تل و نمک و وہی انھوں کے چرانے سلسلہ گردہ و پانی کے
اد پرینے والا پرند و تیل تک پرند و بھینگر و بھلا کا پرند ہوتا ہے۔

۶۴۔ کیردن کے پیٹ سے نکالے ہوئے سوت کا کیرا اور پٹی کی جھال سے بنا ہوا کیرا اور پٹی
کے سوت سے بنا ہوا کیرا اور گنوا اور گڑا انھوں کے چرانے بلحاظ سلسلہ تتری پرند و نینڈھک
و درونج و گوہ و گودرا پرند ہوتا ہے۔

۶۵۔ شک و غیرہ بھوا و غیرہ بھات و سنو و غیرہ جو دگیہوں انھوں کے چرانے بلحاظ سلسلہ
چھوٹے پرند و مور و سواہی ہوتا ہے۔

۶۶۔ گن و سوپ و موٹل و غیرہ گوہ کی فائدہ مند چیزیں لال کیرا انھوں کے چرانے سے بلحاظ
سلسلہ بگلا بلی چکور ہوتا ہے۔

لرااگولملاتانانंचक्रव्यादांरंशिराामपि॥ श्रुत्कर्मकृतोचैव
शतशोगुरुतल्पगः॥ ५८॥ हिंसाभवतिक्रव्यादाः कृतमयोऽभ-
स्यभक्षिराः॥ परस्परादिनःस्तेनाःप्रेतान्यस्त्रीनिषेविराः॥
५९॥ संयोगंपतितैर्गत्वापरस्यैवचयोषितम्॥ अपहत्यच-
विप्रस्वंभवतिब्रह्मराक्षसः॥ ६०॥ मरिामुक्ताप्रबालानिहत्वा
लोभेनमानवः॥ विविधानिचरत्नानिजायतेहेमवर्तुषु॥ ६१॥

۵۸ - ترن لینے دوپ وغیرہ (گلم لتا کچے گوشت کے کھانیوے) (گیدھ وغیرہ) ڈال دے والے
(سنگھ وغیرہ) کر در کرم کرنیکا جنکا سبھاوہی (باگھ وغیرہ) انھون کی یون مین دال دے جماع کریو
سیکڑوں دفنہ جاتا ہے -

۵۹ - حیوان کے مارنے کی حصلت رکھنے والے جو مین وہ کچے گوشت کے کھانیوے (سینٹ بلا -
وغیرہ) ہوتے ہیں اور جو نہ کھانے کے قابل چیز کو کھاتے ہیں وہ چھوٹے کیرے ہوتے
ہیں مہا پاکلی کے سواے جو چور ہیں وہ باہم گوشت کے کھانیوے ہوتے ہیں (یعنی وہ
اسکے گوشت کو کھاتا ہے اور وہ اسکے گوشت کو کھاتا ہے اور چاٹال کی عورت سے جماع
کرتیو الا پریت ہوتا ہے -

۶۰ - تپت لوگوں کے ساتھ میل ملاپ کرنا دوسرے کی عورت سے صحبت کرنا برہمن کا
سونا چورانا انھون میں سے کوئی ایک کرم کر کے برہم راگشس ہوتا ہے -

۶۱ - لوہے سے سن موتی و مولگا و انواع اقسام کے جواہرات کے چرانے سے سار ہوتا ہے -

इन्द्रियाराणं प्रसंगेन धर्मस्यासेवनेन च ॥ पापान्संयान्ति संसारा-
न विद्धां सो न राधमाः ॥ ५२ ॥ यां यां योनिं त्वु जीवो यं येन येनेह क-
र्मणा ॥ क्रमशो याति लोकेऽस्मिंस्तत्तत्सर्वं निबोधत ॥ ५३ ॥ ब-
ह्वर्चस्य गगान्धोरा न्नरकान् प्राप्य तत्सयात् ॥ संसारान् प्रतिपद्य-
न्ते महापातकिनस्त्विमान् ॥ ५४ ॥ श्वश्रूकस्वरौ द्द्वाराणां गो जा-
विन्मृगपक्षिराणाम् ॥ चराडालपुच्छसानां च ब्रह्महायो निमृच्छ-
ति ॥ ५५ ॥ कृमिकीटपतंगानां विड्भुजां चैव पक्षिराणाम् ॥ हिं-
स्त्राणां चैव सत्त्वानां सुरापो ब्राह्मणो ब्रजेत् ॥ ५६ ॥ लूता हि सर-
शनां च तिरश्चां चाम्बुचारिणाम् ॥ हिंस्त्राणां च पिशाचानां स्ते-
नो विप्रः सहस्रशः ॥ ५७ ॥

۵۲- آدمیوں میں سے جو کچھ آدمی اطاعت نفسِ امارہ سے اور عزم کر کے ترک کرینے
خراب حالت کو پاتا ہے۔

۵۳- اس لوگ میں سے جو جس جس کرم کر کے جس جس یون میں جاگتا اس سب کو
کے ہیں۔

۵۴- بہت سال تک گھوڑے کے بھوک کرنے سے پالون کو دور کر کے باقی ماندہ پالون
میا پالی آدمی سنسار میں جنم پاتے ہیں۔

۵۵- کتہ سورگدھار دانت کو بکرا بھیرا ہرن پرند چائٹال کپڑے انھوں کی یون میں
برہمن کا مار پیٹا داتا ہے وہی انھوں کا جنم پاتا ہے۔

۵۶- چھوٹے بڑے کیرت تہنک علیظ کھانیوں کے پرند مارنے کی فصلت رکھنے والے شیر وغیرہ
کی یون میں تراب پیٹنے والا برہمن جاتا ہے۔

۵۷- مکرئی ساپ رگت جیل کے جو شیرھے چلنے والے جو پیش مارنے کی فصلت رکھنے والے
جو انھوں کی یون میں سونا چورانیو والا برہمن ہزاروں وفد جاتا ہے۔

گन्धर्वा گھڑ کا یسا بیبھالو چراغ ہے ॥ تھے باپ اس: سب راج-
 جسی بھوت ماگتی: ॥ ۴۷ ॥ تاپ سائت یو وی پراپے چہ مانی کا گ-
 را: ॥ نسا ترا شی چہ دے تیا شتھ ما سا لکی گاتی: ॥ ۴۸ ॥ یجنا-
 ن کر دے یو دے با بے دا جیو تیں بی بھارا: ॥ پیتر شے ب سا دھا شتھ دیتی
 یا سا لکی گاتی: ॥ ۴۹ ॥ بھلا بی شتھ سب جیو دے مہا ن بھکت-
 مے ب چ ॥ उत्तमांसा लकी मेतां गतिमाहर्मनी विरा: ॥ ۵۰ ॥ एष
 सर्व: समुद्रिष्टस्त्रिप्रकारस्य कर्मरा: ॥ त्रिविधस्त्रिविध: कृत्स्न:
 संसार: सार्वभौतिक: ॥ ۵१ ॥

۴۷۔ گندھرب کھجک دیکش و دیوتوں کے چھپنے والے بدیا و دھو وغیرہ و لپسٹا
 گتوں کو رجوگن کی آتم گت جانتا۔

۴۸۔ مپسوی پتی برہمن اور آپس کے علاوہ شک بان پر چرہ کر چلنے والے و کشر و دیشیہ
 ان سب گتوں کو ستوگن کی شیح گت جانتا

۴۹۔ یکیر نیو لے رش دیوتا وید و دے و غیر جوت گن تبسرت گن ساو دھو گن ان گتوں کو
 ستوگن کی مدھیم گت جانتا۔

۵۰۔ برہما جی و سب سار کے پیو اگر نیو لے سب جاپت و دھم مت تتو نیا ان سب گتوں کو
 ستوگن کی آتم گت جانتا۔

۵۱۔ دل و کھار و بدن شینوں کرم کی سا دھن میں بیٹے شینوں کے وسیلے سے عمل ہو
 تو انھوں کی توفیق سے تین قسم کے کرم ست راج تم تمام والے ہوئے پھر شیح و مدھیم و آتم
 کی توفیق سے ایک ایک کی تین قسم ہو تین کہ سب سا کر تو ہوتی ہیں تمام عالم پانچ عناصر کی
 پیدا سے سکومین نے دکھائے واسطے کہا ایسے جو نہیں کہا وہ گت بھی دوسری ایک
 سے دیکھنے کے لائق ہے۔

स्यावराः कर्मिकीटाश्चमत्स्याः सर्पाः सकच्छयाः ॥ पशवश्च नृ-
गाश्चैव जघन्यातामसीगतिः ॥ ४२ ॥ हस्तिनश्चतुरंगाश्चशूद्रास्ते-
च्छाश्चगर्हिताः ॥ सिंहाव्याघ्रावराहाश्चमध्यमातामसीगतिः ॥ ४३ ॥
॥ चारुगाश्चसुपरागाश्चपुरुषाश्चैव हंभिक्ताः ॥ रक्षांसिचपिशाचा-
श्चतामसीघूतमागतिः ॥ ४४ ॥ भक्षामहानदाश्चैवपुरुषाः श-
स्त्रवृत्तयः ॥ द्यूतपानप्रशक्ताश्चजघन्याराजसीगतिः ॥ ४५ ॥ रा-
जानः क्षत्रियाश्चैवराजांचैवपुरोहिताः ॥ बादयुद्धप्रधानाश्चम-
ध्यमाराजसीगतिः ॥ ४६ ॥

۴۲۔ درخت دیوہوٹے ٹبرے کیڑے دیھلی دسانپ دچارپایہ وکچھو اوہرن این سب

۳۳۔ ہاتھی و گھوڑا شور مچا سنا۔ باگھ سوران سب گون گون کی مدد کرتے تھے۔

۴۵- بر اینیه کشته شدی هم قوم عورت من پیدا مونی اولاد ز جکایان نشون، دیکه یی

۴۶۔ راجہ دشتی دراجہ کا یہ دست و پخت علمی کو بفضل جاننے والا و تکلیف پسند کو

येनास्मिन्कर्मराालोकेस्वातिमिच्छातिपुष्कलाम् ॥ नचशो-
 चत्यसम्पत्तौतद्विजेयंतुराजसं ॥ ३६ ॥ यत्सर्वेशोच्छतिज्ञातुंयत्न-
 लज्जतिचाचरन् ॥ येनतुष्यतिचात्मास्यतत्सत्त्वगुरालक्षराम्
 ॥ ३७ ॥ तमसंलक्षरांकामोरजसस्त्वर्थउच्यते ॥ सत्त्वस्यलक्ष-
 रांधमःश्रेष्ठमेवायथोत्तरम् ॥ ३८ ॥ येनयांस्तुगुरोनैवांसंसा-
 रान्नप्रतिपद्यते ॥ तान्समासेनवक्ष्यामिसर्वस्यास्ययथाक्रमम्
 ॥ ३९ ॥ देवत्वंसात्विकायान्तिमनुष्यात्वंचराजसाः ॥ तिर्यक्त्वं
 तामसानित्यमित्येषात्रिविधागतिः ॥ ४० ॥ त्रिविधात्रिविधै-
 वातुविजेयागौराकीर्तिगतिः ॥ अधमामधमाग्र्याचकमाव-
 द्याविशेषतः ॥ ४१ ॥

۳۵۔ جس کرم کر کے اس لوگ میں بڑی شہرت ہو نیکی خواہش کرتا ہے اور بے دہنی میں
 رنج مین کرتا ہے اس کرم کو جس گن لکشن جابین۔
 ۳۶۔ جو کرم مہرب آدم کے وسیلہ سے دیندار رتقہ کو جاننے کی خواہش کرتا ہے اور جس کرم
 کو کرتے ہوئے شرم مین ہوتی اور جس کرم کر کے پریش کی آتما خوش اور تربٹ ہوتی ہے
 اس کرم کو ست گن لکشن جابین۔
 ۳۷۔ جو گن کا لکشن کام لینے شہوت ہے جو گن کا لکشن ارتقہ ہو ستو گن کا لکشن دھرم
 مین پھل پھل افضل ہے۔
 ۳۸۔ جو جس گن کے وسیلہ سے جو جس گن کو پاتا ہے اس تمام جگت کی گت کو مہر بیان کر دے گا۔
 ۳۹۔ ستو گن دیو بھاد کو اور جو گن دے منشیہ بھاد کو اور ستو گن دے چار پایہ و پرندہ وغیرہ کے بھاد
 کو پاپت ہوتے ہیں یہ تین طرح کی گت ہے۔

۴۰۔ ستو گن وغیرہ تین گن دے وسیلہ سے تین قسم کی گت جو بیان کی وہ دیش کال وغیرہ
 کی تفریق سے اور سب صورت عالم تفریق عمل سے ادھم بدھم دھم فسم کرم کے پھر تین قسم کی گت جانا

تریارامپیتےتھاں گورانانای: فلوہی: ॥ اترتھو مڈیو جھ-
 نڈتتتتتتتتتتتتتتتت: ॥ ۳۰ ॥ بےرا بھاسرستپو جنانن شو چمی-
 نڈی نینتھ: ॥ دھرمکریا تھ چننا چسا تھ کتھ گورال لکھرام ॥
 ۳۱ ॥ اترتھو مڈیو جھ- نڈتتتتتتتتتتتت: ॥ وی یو پ سہا-
 چا جھ راج سگورال لکھرام ॥ ۳۲ ॥ لوب: سبھو ۵ دھتی: کوہی-
 نا سٹیکھ مینن تھتھتھ ॥ یا چیا پوتا پما دھتھتا سگورال-
 لکھرام ॥ ۳۳ ॥ تریارامپیتےتھاں گورانانای تھتھتھتھ ॥
 دھتھتا سگورال لکھرام ॥ ۳۴ ॥ ی تھ کھتھ-
 تھتھتھتھتھتھتھتھتھ ॥ تھتھتھتھتھتھتھتھتھ-
 لکھرام ॥ ۳۵ ॥

۳۰۔ ان تینوں گنوں کا جو نتیجہ افضل و اوسط و ادنیٰ ہے اسکو ہم کہیں گے۔
 ۳۱۔ وید کا پڑھنا تپ گیان پاکی اندریوں کو کا جینا و دھرم کرنا یعنی وید کے موافق
 عمل آتم جنتا یہ سب تھو گن کے لکشن ہیں۔
 ۳۲۔ شروع کام میں عینت بے صبری تھو کام کو قبول کرنا ہمیشہ ویشیوں کی سبھا
 یہ سب رجو گن کے لکشن ہیں۔
 ۳۳۔ کو بھہ خواب بے صبری کھوڑن ناسک پن آچار پھل نکرنا مانگنا پراپنا
 تھو گن کے لکشن ہیں۔
 ۳۴۔ تینوں زمانہ ماضی مستقبل و حال میں رہنے والے تینوں گنوں کا خلاصہ سلسلہ
 یہ گن لکشن جاننے کے لائق ہے۔
 ۳۵۔ آدمی جو کرم کرے اور کرتا ہوا اور کرنے کی خواہش کرتا ہوا تھرم گین بھو
 کرم کو پنڈت لوگ ناس گن لکشن جانیں۔

سत्व راجست مہا بھری نینیا داत्मनो गुरान् ॥ येव्यायेमास्थि-
तोभावान्महान् सर्वान शोधतः ॥ २४ ॥ योयदैवांगुरागोदेहेसाकल्ये
नातिरिच्यते ॥ सतदा तद्गुरा प्रायंतं करोति शरीरिराम ॥ २५ ॥ स-
त्वं ज्ञानंतमोऽज्ञानं रागे द्वौ रजः स्मृतम् ॥ एतद्वाप्तिमदेतेषां स-
र्वभूताश्रितं वयुः ॥ २६ ॥ तत्र यत्पीतिसंयुक्तं किंचिदात्मनिलक्ष-
येत् ॥ प्रशांतमिव शब्दमसत्त्वं तदुपधारयेत् ॥ २७ ॥ यत्तु दुःख-
समायुक्तमपीति करमात्मनः ॥ तत्र जो प्रतियं विद्यात्मततं हा-
रिदेहिनाम् ॥ २८ ॥ यत्तु स्थानो हसंयुक्तमव्यक्तं विषयात्मकं
॥ अथ तर्कमपि ज्ञेयं तमस्तदुपधारयेत् ॥ २९ ॥

۲۴ - ست برج تم پیتون آتماست تنو کے گن میں ان گنوں سے محیط ہو کر سب چیزیں
میں مان قائم ہے۔

۲۵ - پیتون گنوں میں سے جو گن جس بدن میں زیادہ اس بدن کو زیادہ اسی
گن والا گن کرتا ہے۔

۲۶ - ست کیا ہے، آتم کیا ہے، راگ یعنی مرغوب چیز کی خواہش اور ودیش یعنی چیز
نامرغوب میں غصہ یہ دونوں راج میں ان تینوں گنوں سے تمام عالم محیط ہے۔

۲۷ - جب آتما کو پریت سے مشمول سانت و سدرہ روئے کچھ تب سب گن کو جانے۔
۲۸ - جب آتما کو دکھ سے مشمول و ما خوش دیکھ تب راج گن جانے وہ راج گن سب

ارباب قابون کو مشکل سے دور کرنے کے لائق ہے۔
۲۹ - جب آتما کو نوہ سے مشمول بیش روپ و پوشیدہ و بکو تب تو گن جانے وہ تو گن
دلیل کے لائق نہیں ہے اور جاننے کے لائق نہیں ہے۔

سوی: तुभूया सुखोदकां न्दीवान् विषयसंगजान् ॥ व्यपेतकल्म-
षोऽभ्येतितावेवो भौमहोजसौ ॥ १८ ॥ तौ धर्मपश्यतस्तस्य पा-
पंचातन्त्रितो सह ॥ याभ्यां प्राप्नोतिसंयुक्तः प्रेत्येह च सुखा सु-
खम् ॥ १९ ॥ यद्याचरति धर्मसंप्रायशोऽधर्ममल्पशः ॥ तैरेव
चाहृतो भूतेः स्वर्गसुखमुपाश्रुते ॥ २० ॥ यदि तु प्रायशोऽधर्मो से-
वते धर्ममल्पशः ॥ तैर्भूतेः सपरित्यक्तो यामीः प्राप्नोति यातनाः
॥ २१ ॥ यामीस्तायातनाः प्राप्य सजीवो बीतकल्मषः ॥ तान्ये-
व पंचभूतानि पुनरभ्येति भागशः ॥ २२ ॥ यता हृद्वा स्य जीवस्य
गतीः स्वैर्नैव चेतसा ॥ धर्मतोऽधर्मतश्चैव धर्मो दध्यात्सहामनः
॥ २३ ॥

۱۸۔ لنگ نام بدن میں قائم چوبیسے ہانسی صحت سے پیدا ہو پاپوں کو بھوک کر پاپوں
سے علیحدہ ہو کر بڑے پاکرم والے مکان اور پرانا تار و نوں کی پناہ لیتا ہے۔

۱۹۔ سستی سے علیحدہ مکان اور پرانا تار و نوں ساتھ ہو کر جس دھرم وادھرم مشہور
چوبیس لک ہر لوک میں سکھ دیکھ کر پاپاں اس دھرم کو اور بھوک سے بچے ہوئے پاپوں کو
بچاتے ہیں۔

۲۰۔ جب چوبیس دھرم کو کرتا ہے اور تھوڑے پاپوں کو کرتا ہے تب ہر لوک میں سکھ کو پاتا ہے
۲۱۔ اور جب بہت پاپ کرتا ہے اور تھوڑا دھرم کرتا ہے تب ہر لوک میں دیکھ پاتا ہے۔

۲۲۔ ایم راج کی سزا کو بھگت کر پاپ سے علیحدہ ہو کر پھر جہان سے لنگ نام بدن پیدا ہوا
اسی میں پھر حصہ دار داخل ہوتا ہے۔

۲۳۔ اپنے جنت سے اس حیوان کی ریگت دیکھ کر ہر وقت دل کو قائم کرے۔

जीवसंज्ञोऽन्तरात्माऽन्यः सहजः सर्वदेहिनाम् ॥ येन वेद्यते
सर्वसुखदुःखचक्रजन्मसु ॥ १३ ॥ तावुभीभूतसंघत्तो महान्सेवज
सवच ॥ उच्चावचेषु भूतेषु स्थितं तं व्याप्य तिष्ठतः ॥ १४ ॥ असंख्या
मूर्त्यस्तस्य निष्पतन्ति शरीरतः ॥ उच्चावचानि भूतानि सततं चे-
द्यन्ति याः ॥ १५ ॥ पंचभ्यं वमात्राभ्यः प्रेत्य दुष्कृतिनां नराणां
॥ शरीरं यात नार्थीयमन्यदुत्पद्यते ध्रुवम् ॥ १६ ॥ तेनानुभूयता-
यामीः शरीरे सो हयातनाः ॥ तास्वैव भूतमात्रासु प्रलीयन्ते वि-
भागशः ॥ १७ ॥

۱۳- حجاب قالب کے ساتھ پیدا ہوا انتر آتما جو نام والا جب کو منت کہتی ہیں علیہ
ہے جس سے جنم میں تمام سکھ دکھ کو کثیر گیمہ ان بھو کرتا ہے یعنی سکھ و دکھ کو بھوگ کرتا ہے
۱۴- منت تنو و کثیر گیمہ یہ دونوں پر تقویٰ وغیرہ پانچ ما بھوتوں کے اچھے فیض
یوں ہیں پر ماما کو پکڑ کر رہتے ہیں۔

۱۵- پر ماما کے بدن سے اچھے و پچھے یوں میں قائم بدن کو ہمیشہ کرم متحرک کر نیو لے
لے لغو امور سے یعنی بھونکے میں۔

۱۶- پر لوک میں پاپیوں کے دکھ بھوگ کر نیکی لیتے پر تقویٰ وغیرہ پانچ عناصر کے
خصلتوں سے ایک دوسرا بدن لنگ نام جدا ہوتا ہے۔

۱۷- اس بدن سے ہم راج کی سمت منرا کو ان بھو کر کے یعنی دکھ بھوگ کردہ بدن سے
میں چھو جاتا ہے (یعنی پر تقویٰ وغیرہ پانچ عناصر سے جو حصہ نکلا وہ پانچ عناصر
میں مل جاتا ہے۔

अदत्तानामुपादानं हि सांचैवाविधानतः ॥ परदारोपसेवाचशा-
रीरं विविधं स्मृतम् ॥ ७ ॥ मानसं मनसैवायमुपभुंक्तं शुभाशुभम्
॥ वाचावाचाकृतं कर्म कायेनैव च कायिकम् ॥ ८ ॥ शरीरं जैक
र्मदोषैर्यातिस्थावरतां नरः ॥ वाचिकैः पक्षिभ्यः गतां मानसैरत्य-
जातिताम् ॥ ९ ॥ वाग्दराडोऽथ मनोदराडः कायदराडस्तथैव च
॥ यस्मै ते निहिता बुद्धौ त्रिदराडीति स उच्यते ॥ १० ॥ त्रिदराडभे-
तनिक्षिप्य सर्वभूतेषु मानवः ॥ कामक्रोधौ तु संयम्य ततः सिद्धिं
नियच्छति ॥ ११ ॥ यो स्यात्मानः कारयिता तं क्षेत्रज्ञं प्रचक्षते ॥ यः
करोति तु कर्माणि स भूतात्मोच्यते बुधैः ॥ १२ ॥

۷- بدون دی ہوئی چیز کو لینا بدھ کے خلاف جموں کا مارنا دوسرے کی عورت سے
جماع کرنا یہ تین قسم کا کرم بدن کا ہے۔

۸- بدن سے پیدا ہوتے عمل نیک و بد کے نتیجے کو صاحب بدن آدمی سلسلہ داروں و گفتار
و بدن سے بھوک کرتا ہے۔

۹- بدن و گفتار و دل سے پیدا ہونے والے کرم سے ساکن یعنی وراثت وغیرہ و پیر و چار پاویہ
و چاندال وغیرہ کا جنم پاتا ہے۔

۱۰- جس کے گفتار و دل و بدن سلسلہ دار نامرغوب گفتار و بد خیالی و منہج تجارت کو ترک
کر نیوے لین ہی نہ دے کھانا ہے۔

۱۱- تمام جانداروں میں ان تینوں ڈنڈوں کو (یعنی دل و بدن و گفتار کے ڈنڈوں کو) قائم کر کے
کام اور کرو و جو کو رک کر سوجھ کو پاتا ہے۔

۱۲- بدن کو کرم میں مبتول کرانیوالا کشر گبیہ کھانا ہے اور جو کرم کرتا ہے وہ بھوت ہوتا
یعنی بدن کھانا ہے یہ بات پیڑت لوگ کہتے ہیں۔

चातुर्वर्ण्यस्य कृत्स्नोऽयमुक्तो धर्मस्त्वयानघ ॥ कर्मणां फलनि-
र्घृतिं शंसनस्तत्त्वतः परम् ॥ १ ॥ सतानुवाच धर्मात्सामहर्षो न्मा-
नवो भूगुः ॥ अस्य सर्वस्य शृणु तत्कर्मयोगस्य निर्णायकम् ॥ २ ॥ शु-
भाशुभफलं कर्ममनोवाग्देहसंभवम् ॥ कर्मजागतयो न्दृष्टा सु-
त्तमाधममध्यमाः ॥ तस्येह त्रिविधस्यापित्र्यधिष्ठानस्य देहिनः
॥ दशलक्षरायुक्तस्य मनोविद्यात्त्वर्त्तकम् ॥ ४ ॥ परब्रह्मे स्वभि-
ध्यानं मनसानिष्ठचित्तनम् ॥ वितथाभिनिवेशश्च त्रिविधं कर्म-
मानसम् ॥ ५ ॥ पारुष्यमन्दतंचैव यश्चूत्य चापि सर्वशः ॥ असं-
वृत्तप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम् ॥ ६ ॥

۱- سب ریش بھوگ جی سے کہتے ہیں کہ اے پاپ رہت بھوگ جی آپ نے پرچہ موافق
چارو درون کے دھرم کو کہا اب ہم سمجھوں سے عمل نیک دیو کے نتیجہ کو بدھ کو
موافق کہئے۔

۲- دھرماتما من جی کے بیٹے بھوگ جی ان مہرشیوں سے بولے کہ اے ریش لوگو سب
کرم یوگ کے نرے کو ہم سے سنو۔

۳- دل و بدن و گفتار سے جو عمل نیک و بد پیدا ہوتا ہے اس سے ہم کو کئی قسم کا
ہیبت ہوتی ہے۔

۴- آگے جو ریش لکشن کہینگے اس سے مشمول آدمی ارباب غالب کا دل و بدن و گفتار و
دل سے اتم دھرم اہم کرم میں مصروف کرینو اور اس کو جانو۔

۵- دوسری دولت مین و معیان دل سے بد خیالی ناشکستہ پن یہ تین قسم کے مانس
کرم مین اپنے دل سے پیدا ہونے والے مین۔

۶- نام رغوب گفتار و دروغ گوئی و دھرم کا عیب کہنا بے مطلب بولنا یہ چار قسم کا پاپ
کرم ہے جسے گفتار سے پیدا ہوتا ہے۔

यथा महाद्वंद्वं प्राप्य सिमं लोचं विनश्यति ॥ तथा दुश्चरितं सर्वदे-
वे त्रिहृत्तिमञ्जति ॥ २६३ ॥ अथो यजुर्विधान्या निसामानि वि-
विधानि च ॥ सद्यज्ञेयस्त्रिचंद्रे दोयो वेदेनं सवेदवित् ॥ २६४ ॥ आ-
द्यं यत्स्य सारं ब्रह्म त्रयीयस्मिन् प्रतिष्ठिता ॥ सगुह्योऽन्यस्त्रिचंद्रे-
दोयस्तं वेदसवेदवित् ॥ २६५ ॥

इति मानवे धर्मशास्त्रे भृगुप्रोक्तायां संहिताया मेकादशोऽध्यायः ११

۲۶۳- جب طرح انتہاء جل میں مٹی کا ڈھیلہ ڈالو تو جلد غائب ہو جاتا ہے اور طرح سب
پاپ تینوں دیکھ کے پڑھنے سے ڈوب جاتے ہیں۔
۲۶۴- رگ یج سام ان تینوں دیدون کے مترج برہمن یہی تین مسم کا دید جانا چاہئے
جو اسکو جانتا ہے وہی دید کا جاننے والا ہے۔
۲۶۵- سب دیدون کے آدھین اکثر والا سب دید کا سارا سب دیدون کو اپنی
در بیان میں قائم کر نیوالا جو پر نو ہے اسکو جانے وہ دید کا جاننے والا ہے۔

شری من جی کا دھرم شاہی ترگ جی کی سنگھتا کا

گیارھواں ادھیاسماپت ہوا۔

۳

अररायेवात्रिरभ्यस्यप्रयतोवेदसंहिताम् ॥ सुच्यतेपातकैः स-
र्वैः पराकैः शोधितस्त्रिभिः ॥ २५८ ॥ अहन्नूपवसेद्युक्तस्त्रिर-
ह्मोऽभ्युपयन्त्यः ॥ सुच्यतेपातकैः सर्वैस्त्रिजपित्वाऽघमर्षरां
॥ २५९ ॥ यथाश्वमेधः क्रतुरादुसर्वपापायनोदनः ॥ तथाऽघम-
र्षरांसूक्तं सर्वपापायनोदनम् ॥ २६० ॥ हत्वा लोकानपीमांस्त्री
नशनन्नपियतस्ततः ॥ ऋग्वेदंधारयन्विप्रो नैनः प्राप्नोति किंचि-
न ॥ २६१ ॥ ऋक्संहितां त्रिरभ्यस्य यजुषां वा समाहितः ॥ सान्ना-
वासरहस्यानां सर्वपापैः प्रसुच्यते ॥ २६२ ॥

۲۵۸ - جنگل میں بیفکر ہو کر وید سنگھٹا کو تین دفعہ ابھیا س کرے اور تین دفعہ پرکٹ کرے تو سب پاپ سے چھوٹتا ہے۔

۲۵۹ - اندر یوں پر غالب ہو کر ہر روز وقت صبح دوپہر و شام اسان کر کے جل میں تین دفعہ تشیح ستیم اس لکھ ترکھن سوکت کو چپ کرے تو سب پاپوں سے چھوٹتا ہے۔

۲۶۰ - جب طرح سب یگیوں کا راجا سو میہ یگیہ سب پاپوں کو دور کرتا ہے اسی طرح لکھ ترکھن سوکت سب پاپوں کو دور کرتا ہے۔

۲۶۱ - تینوں لوگ کو بن کر کے اور جہان تہاں بھوجن کر کے رگ وید کو دھارن کرے تو کسی پاپ کو نہیں پاتا ہے۔

۲۶۲ - بیفکر ہو کر رگ وید پچر وید سام وید کی سنگھٹا میں سے ایک ایک سنگھٹا کو تین دفعہ مزاولت کرے سب پاپوں سے چھوٹتا ہے۔

सोमारौद्रं तु वहेनामा सुमभ्यस्य शुद्ध्यति ॥ स्ववन्त्यामाचरन् नान
मर्यमा भिति च तृचम् ॥ २५४ ॥ अर्द्धार्थमिन्द्रमित्येतदेनस्वी-
सप्तकं जपेत् ॥ अप्रशस्तं कृत्वा पुनः समासीत भैक्षभुक् ॥
२५५ ॥ मंत्रैः साकलहोमीयैरब्जं कृत्वा घृतं द्विजः ॥ सुगुर्वप्यपह-
न्येनोज्ञावानमइत्युचम् ॥ २५६ ॥ महापातकसंयुक्तोऽनुग-
च्छेद्वाप्तमाहितः ॥ अभ्यस्याब्जं पावसानीर्भैक्षान् हारो वि शुद्ध्य-
तिः ॥ २५७ ॥

۲۵۴۔ سوّم رورا وغیرہ چار چار جہنم وغیرہ تین رچا انھوں میں سے ایک ایک کو ایک دفعہ ایک مہینہ تک مذی وغیرہ میں انسان کر کے چپ کرے تو بہت پاپوں سے بچھوٹتا ہے۔
۲۵۵۔ اندر سندر وغیرہ سات رچا کو چھ مہینہ تک چپ کرے تو سب پاپوں سے بچھوٹتا ہے۔
جل میں مو ترا ورتا وغیرہ کر نیوالا ایک مہینہ تک پھیکھ مانگ کر بھون کرے۔
۲۵۶۔ دیو کریشہ وغیرہ ساکل ہون متیر سے ایک سال تک کھی کا ہون کرے خواہ نمہ اندر پرچ اس رچا کو ایک سال تک چپ کرے تو یہ سب کشتری ویشیہ کے مہا پاکت و درہون۔
۲۵۷۔ برہم ستیا وغیرہ پاپ میں سے کسی ایک پاپ سے شمول ہو تا بنیکر نوکر گند کے پیچھے پیچھے چلے اور پھیکھ مانگ کر بھون کرے اور اندریوں پر غالب ہو کر ایک سال تک ہر روز پادمانی رچا کو چپ کرے تو پاک ہوتا ہے۔

कौत्सं जज्ञाप इत्येतद्वासि च प्रतीत्युचम् ॥ माहित्रं शुद्धवत्य-
श्चमुरायोऽपि विशुध्यति ॥ २४६ ॥ सकृजज्ञास्य वामीयं शि-
वसं कल्पमेव च ॥ अपहृत्य सुवर्गान्नु सरागा इव तन्निर्मलः ॥
२४७ ॥ हविष्यन्तीयमभ्यस्य न तमं ह इतीति च ॥ जपित्वा पौ-
रुषं सत्तं मुच्यते गुरुतल्पगः ॥ २४८ ॥ अनसां स्थूलसूक्ष्माणां
चिकीर्षन्नपनोदनम् ॥ अवेत्युचं जपेदब्दं यत्किंचेदगितीति
वा ॥ २४९ ॥ प्रतिशुद्ध्या प्रतिश्राव्यं मुक्ताचान्नं विगर्हितम् ॥
जपं स्तरत्समन्वीयं पूयते मानवश्च हातः ॥ २५० ॥

۲۴۹۔ کونش رش نے جو شوکت دیکھا اپنے نام اور بشت رتن نے جو شوکت دیکھا پریشد نام
و ماہتر شوکت و متبر ہی بدھ دتی اپنا مندرم بیٹین رچا اخون کو ہر روز ایک مہینہ تک
سولہ دفعہ جب کرے تو شراب پینے والا پاک ہوتا ہے۔
۲۵۰۔ ایک مہینہ تک ہر روز ایک دفعہ ایو می کو اور شیو سنگھ کو جو کہ اپنشد نام سے
مشہور ہے جب کرے تو برہمن کا سونا چورانیو والا پاک ہوتا ہے۔
۲۵۱۔ بہتیم وغیرہ اینیں رچا اور نت سنگ ہو کر سنگ آٹھ رچا اور ستر شہر کچا جو پریش
نام اپنشد سے مشہور ہے اخون کو سولہ دفعہ ہر روز ایک مہینہ تک جب کرے تو داروہ کے
نماحقہ جماع کرنے کے پاپ سے چھوٹتا ہے۔
۲۵۲۔ اوت سہلو برن یہ رچا ٹیکنیم برن دیو دجل یہ رچا اخون کو کیاں تک ایک دفعہ
جب کرے تو چھوٹے بڑے پا پون کو دور کرتا ہے۔
۲۵۳۔ نہ لینے کے لائق چیز کو لیکر اور نندا کے لائق اُن کو بھوجن کر کے تیرت سم وغیرہ
چار چا کو تین دن جب کرے۔

इत्येतत्तपसो देवामहाभार्यप्रचक्षते ॥ सर्वस्यास्य प्रपश्यन्त-
स्तपसः पुरायमुत्तमम् ॥ २४४ ॥ वेदाभ्यासोऽन्वहं शक्त्या महा-
तत्तक्रियाक्षमा ॥ नाशयत्याशु पापानि महापातकजान्यपि
॥ २४५ ॥ यथैधस्तेजसा वह्निः प्राप्तं निर्दहति क्षरात् ॥ तथा-
ज्ञानाग्निना पापं सर्वदहति वेदवित् ॥ २४६ ॥ इत्येतदेन सा सुक्तं
प्रायश्चित्तं यथाविधि ॥ अत ऊर्ध्वं रहस्यानां प्रायश्चित्तं निबोध-
त ॥ २४७ ॥ सव्याहति प्रणावकाः प्राणायामास्तु द्यौः दश ॥ अपि
भूराहरां मासास्तु न न्यहरहः कृताः ॥ २४८ ॥

۲۴۴- تمام جانداروں کو تپ ہی سے دہکھ جہم ہوتا ہے اس بات کو دیکھتے ہوئے دیوتا لوگ
تپ کو سب کی جڑ جان کر تپ کا ہاتھم کہتے ہیں۔
۲۴۵- مہاکیلا اور طاقتور نہ کہ برا بد مذہب کا پانچھ کر نیو لے جلہی مہا پاکو بھی فنا کرتے ہیں
۲۴۶- جسطرح تیز آگ کا ٹھک کو جھٹ پٹ جلاتی ہے اسی طرح دید کو جانتے والا بیان کر دیتا ہے
۲۴۷- تمام پاپوں کو جلاتا ہے۔
۲۴۸- ظاہری پاپوں سے یہ پریشیت کو کہا اسکے بعد پوشیدہ پاپوں کا پریشیت کہتے ہیں
۲۴۹- پروردگاہ سے مستول گائتھری کے وسیلے سے ہر روز سولہ پرانا یا م ایک
مہینہ تک کرے تو اسقاطِ حمل کے پاپوں کو دور کرنا ہے۔ ۲۵۰۔

۲۵۰- پریشیت برہمن کشتری دیشیہ کا ہے استری و شودر کو منتر کا ادھکار نہیں ہے۔

यदुस्तरं यदुरायं यदुर्गं यच्च दुष्करम् ॥ सर्वतु तपसा साध्यं तपो हि
 दुरतिक्रमम् ॥ २३८ ॥ महापातकिनश्चैव शेषाश्चाकार्यकारि-
 राः ॥ तपसैव सुतपो न मुच्यन्ते किल्विपाततः ॥ २३९ ॥ कीटाश्चा-
 हियतंगाश्च पशवश्च वयांसि च ॥ स्थावराणि च भूतानि दिव्यां-
 तितपो बलात् ॥ २४० ॥ यत्किंचिदेनः कुर्वन्ति मनोवाङ्मूर्ति-
 भिर्जेनाः ॥ तत्सर्वं निर्दहं त्याशु तपसैव तु पोधनाः ॥ २४१ ॥ तपसै-
 व विशुद्धस्य ब्राह्मणस्य दिवौकसः ॥ इज्याश्च प्रतिशूलन्ति का-
 मान्सं वर्धयन्ति च ॥ २४२ ॥ प्रजापतिरिदं शास्त्रं तपसैवा सृजत्य-
 भुः ॥ तथैव वेदान् व्यवस्तपसा प्रतिपेदिरे ॥ २४३ ॥

۲۳۸ - جو چیز دکھ سے ٹرنے کے لائق اور ملنے کے لائق اور جائز و حلال ہے وہ تپ ہی ہے جو پاکتی ہو جو پاک
 تو اس کے ہونے میں تپ ہی ضرورت ہے تپ کا انھیں میں کچھ ہے -

۲۳۹ - وہ لوگ پاک ہیں جو غیرہ سے بیکار جتنے پاپ کر نیوالے ہیں وہ تپ سے پاک ہوتے ہیں

۲۴۰ - بڑے بڑے سائب و پلنگ چار پاپ و پرند و ساکن جاندار یہ سب تپ کے زور سے سوکھ
 میں جاتے ہیں -

۲۴۱ - دل و گفتار و بدن سے جو کچھ پاپ ہوتا ہے وہ سب تپ ہی سے خالی ہوتا ہے -

۲۴۲ - یکجہ میں تپ سے پاک برہمن کی دی ہوئی ہر شے کو دیتا ہے جن اور ان کے دل
 چیزوں کو ترقی دیتے ہیں -

۲۴۳ - پر جا پت ہر نیہ گر بھولے اس شاستر کو تپ ہی سے پیدا کیا اور سکورش لوگوں نے
 تپ ہی سے پایا -

अज्ञानाद्यदिवाज्ञानात्कल्पाकर्मविगर्हितम् ॥ तस्माद्विमुक्ति
मन्विच्छन्वितीयं न समाचरेत् ॥ २३२ ॥ यस्मिन्कर्मरायस्य कृते
मनसः स्यादलाघवम् ॥ तस्मिंस्तावत्तपः कुर्याद्यावत्तुष्टिक-
रमावेत् ॥ २३३ ॥ तपोमूलमिदं सर्वदैवमातुधिकं सुखम् ॥
तपोमध्यं बुधैः प्रोक्तं तपोऽन्तवेददर्शिभिः ॥ २३४ ॥ ब्राह्मरा-
स्य तपोज्ञानं तपः क्षत्रस्य रक्षराम् ॥ वैश्यस्य तु तपो वार्त्ता तप-
श्शूद्रस्य सेवनम् ॥ २३५ ॥ ऋषयः संयतात्मानः फलमूलानि
लाशनाः ॥ तपसेवप्रपश्यन्ति त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥ २३६ ॥
श्रीवधान्यगरोविद्यादेवीचबिबिधास्थितिः ॥ तपसेवप्रसि-
ध्यन्ति तपस्तेषां हि साधनम् ॥ २३७ ॥

۲۳۲- دانسته یا نادانسته بیکام کر کے اس کرم سے چھوٹنے کی خواہش کرنا ہوا دوسری چیز
بڑا کرم ٹکرت اور اگر دوسری دفعہ بڑا کرم کرے تو دو چہرہ پر لپکتی کرے۔

۲۳۳- جس پر لپکتی کے کرنے سے پاپ کی بنیاد کے دلوں ستونوں بنو تو اس پر لپکتی
کو پھوٹ کر جتنک جت کو ستونوں بنو تب تک پر لپکتی کرتا رہے۔

۲۳۴- دیوتا آدمی ان دونوں کے سکھ کا مول مدھیا اور نت میں تپ ہی اس بات
کو دیکھنے والوں نے کہا ہے۔

۲۳۵- برہمن کا تپ برہم گیان پر کشتی کا تپ حفاظت عالم ہے دلشیا کا تپ درخت
وغیرہ ہے شودر کا بیوا ہے۔

۲۳۶- ریش لوگ اندریوں پر غالب ہو کر پھل مول ہوا اخون ہیں سے کسی ایک کو بھون
کرتے ہوئے ساکن و متحرک شیون لوک کو تپ ہی سے دیکھتے ہیں۔

۲۳۷- ادویات و تندرستی دہیا یعنی برہمن کرم روپ ویدارتھ گیان وید کا پڑھنا اور
الواع اقسام کا سورگ میں پاس یہ سب تپ ہی سے سڈھ ہوتے ہیں۔

स्थापनेनानुतापेनतपसाऽध्यायनेनचापापकनुच्यतेयापात्त-
 थादानेनचापदि॥ २२७॥ यथायथानरोधर्मस्वयंकृतानुभाष-
 ते॥ तथातथात्वचेवाहिस्तेनाधर्मैरामुच्यते॥ २२८॥ यथाय-
 थामनस्तस्यदुष्कृतंकर्मगर्हेति॥ तथातथाशरीरंतत्तेनाधर्मैरामु-
 च्यते॥ २२९॥ कृत्वापापंहिसन्तप्यतस्मात्पापात्ममुच्यते॥
 नैवकुर्यापुनरितिनिवृत्त्यापूयतेतुसः॥ २३०॥ एवंसंचिंत्यमन-
 साप्रेत्यकर्मफलोदयम्॥ मनोवाङ्मूर्तिभिर्नित्यंशुभंकर्मसा-
 माचरेत्॥ २३१॥

۲۲۷- کہنا پچھنا تپ کرنا وید پڑھنا انھوں کے وسیلے سے پاپ کرنیوالا پاپ سے چھوٹتا ہے
 اور وقت مصیبت میں دان کر کے پاپ سے چھوٹتا ہے۔

۲۲۸- جیسے کپل سے سانپ چھوٹتا ہے اسی طرح ظاہر پاپوں کو جیسے جیسے کہتا ہے
 اسی طرح آدمی پاپ سے چھوٹتا ہے۔

۲۲۹- پاپ کرنیوالے آدمی کا دل جیسے جیسے بُرے کام کی بُرائی کرتا رہے ویسے ویسے
 اسکا بدن اس اوجھم سے چھوٹتا ہے۔

۲۳۰- پاپ کر کے سننا پ کرے تو اس پاپ سے چھوٹتا ہے میں پھر اپنا کردگار اسی
 شرط کر کے وہ پانی پاک ہوتا ہے۔

۲۳۱- اسی طرح دل سے پر لوک میں طامع نتیجہ اعمال کو سوچ کر دل و گفتار و بدن سے ہمیشہ ہی
 عمل نیک کرے۔

ترجمہ لیکن جو پاپ ظاہر ہے اسکو کہنا پوشیدہ پاپوں کو نہ کہنا ایک پراجا پتھی کی جگہ پر ایک گنوہ دان کرنا ایک مہینہ میں دھلا
 گنوہ ہونی بارہ سال میں ۴۰ گنوہ ہوتی ہیں۔

نیرھسترنی شایاں سوا سا جلا ما ویروت ॥ سخی شری پتیتاں شے
 ونا بیما ویست کھنچیت ॥ ۲۲۳ ॥ سٹانا سنا مٹاں ویہرے راکتو
 ۵ ی: شاییتوا ॥ بھارواری برتو ویسٹا ڈورے ویہرے جاکتو ॥ ۲۲۴ ॥
 ۱۱ سا ویہرے جاکتو پتیتاں پتیتاں شاکتو ॥ سخی ویہرے جاکتو
 ویہرے پتیتاں شاکتو ۱۱ ۲۲۵ ॥ سخی ویہرے جاکتو شاکتو
 تیرا ویہرے جاکتو ۱۱ ۲۲۶ ॥ سخی ویہرے جاکتو شاکتو
 ۱۱ ۲۲۷ ॥

۲۲۳ - رات میں اور دن میں سج کپڑوں کے انسان کرے یہ انسان پہلے دو جانورین
 کو چھوڑ کر تیسرے چاندرا میں جانا کہ ان دونوں میں توڑ کا ل سناں لکھا ہے اور
 برت کر نیوالا عورت اور ستور سے مکلام ہنودے۔

۲۲۴ - رات میں اور دن میں کھڑا ہے یا بیٹھا ہے خواب کرے طاقت ہنوتو میں
 میں خواب کرے برہم چاری رہے لیغے عورت سے جملے کرے مریج کی مکیلا اور پلاس کا
 دندو دھارن کرے گرو و دیوتا و براہمن کی پوجا کرے۔

۲۲۵ - گاتیری و پاک متراں دونوں کا جب طاقت کے موافق کرے یہ بات سب
 برتون میں جانا چاہئے۔

۲۲۶ - براہمن کشتری ایشیہ ان برتون سے اپنے کئے ہوئے پاؤں کو دور کریں اور
 جو پاؤں پوشیدہ ہیں انکو منتر و ہون کر کے دور کریں۔ ۱۱

۱۱ اس مقام پر یہ شک ہوتا ہے کہ جب دعوم شاستروں سے اپنے پاؤں کو بیان کرینگے تب تو منتر و ہون کا پیش کرینگے
 تب پاؤں ظاہر ہی ہوگا پھر پاؤں پوشیدہ کی طرح ہوگا اسکا جواب یہ ہے کہ دوسرے باب سے پوچھو تو اپنا پاؤں پوشیدہ ہی رہے گا

एतमेवविधिंकत्तमाचरेद्यवमध्यमे ॥ शुक्लयज्ञादिनियतश्च-
रंश्चान्द्रायरांन्रतम् ॥ २१७ ॥ अथावष्टौसमशनीयात्पिराडान्म-
ध्यन्दिनेस्थिते ॥ नियतान्माहविष्याशीयतिचान्द्रायरांचरन् ॥
२१८ ॥ चतुरः प्रातरशनीयात्पिराडान्विप्रः समाहितः ॥ चतुरोऽ-
स्तमितेसूर्येशिशुचान्द्रायरांस्तृतम् ॥ २१९ ॥ यथाकथंचित्पि-
राडानांतिष्ठोऽशीतिः समाहितः ॥ सासेनाशनहविष्यस्यचन्द्र-
स्येतिसलोकताम् ॥ २२० ॥ एतद्ब्रह्मस्तथादित्यावसवश्चाचरन्व्रत-
म् ॥ सर्वाकुशलमौक्षायमरुतश्चमहर्षिभिः ॥ २२१ ॥ महाव्या-
हृतिभिर्होमः कर्त्तव्यः स्वयमन्यहम् ॥ अहिंसांसत्यमक्रोधमा-
र्जवंचसमाचरेत् ॥ २२२ ॥

۲۱۷- اسی کو شکل یکپیش میں متروک کرے تو جو عیبہ چاندرا بن کہلاتا جیسے جو درمیان
میں موٹا ہوتا ہے اور شروع و اخیر پچھلا ہوتا ہے۔

۲۱۸- چاندرا بن کو کرتا ہوا اندریون کو قابو میں کئے ہوئے ہمیشہ کے آٹھ لقمہ دقت
ایک مہینہ تک بھوجن کرے جس یکپیش سے چاہے اس یکپیش سے متروک کرے۔
۲۱۹- سش چاندرا بن کرتا ہوا بیفکر ہو کر چار لقمہ صبح اور چار لقمہ رات کو بھوجن کرے۔
۲۲۰- کسی طرحے بیفکر ہو کر ایک مہینہ میں ہمیشہ کے ۲۴ لقمہ بھوجن کرے تو چندر لوگ
میں جاوے۔

۲۲۱- سب پاپوں کے دور ہونے کی واسطے روز سورج پر تقویٰ ہو اور ٹبرے
رشیوں نے اس نیرت کو کیا ہے۔

۲۲۲- آپ ہر روز مہا پیارٹ سے ہون کرے جانور و کوئل نکرنا پرج بولنا غصہ نکرنا
نرم مزاج ہونا ان سب کو اختیار کرے۔

۱۱۔ تینوں وقت یعنی صبح و دوپہر شام انسان کرنا ہوا ایک لقمہ کو کمرش مکیش میں گھٹاؤ اور شکل مکیش میں بڑھا دینے شکل مکیش کی پورنماشی کو سپرد لقمہ بھوجن کری اور کمرش مکیش کی پرلوا کو چودہ لقمہ بھوجن کر اسطرح ایک ایک لقمہ کو کم کرتے ہوئے اماوشیا کو آس پاس ہوگا پھر شکل مکیش کی پرلوا سے ایک ایک لقمہ بڑھاتے ہوئے پورنماشی کو سپرد لقمہ ہونگے یہ پیلیکا تہ چاندرا بن کھلتا ہے۔

अनुक्तनिष्कृतीनाल्लुपायानामपनुत्तये ॥ शक्तिचविह्यपायं
चप्रायश्चित्तंप्रकल्पयेत् ॥ २०६ ॥ यैरभ्युपायैरेनांसिमानबोध्य-
पकर्षति ॥ तान्योऽभ्युपायान्वक्ष्यामिरेवविहितसेवितान् ॥
२१० ॥ अहंप्रातस्त्र्यहंसायंअहमद्याद्याचितम् ॥ अहंपरंच
नाश्रीयात्प्राजापत्यंचरन्धिजः ॥ २११ ॥ गोमूत्रंगोमयंक्षीरंद-
धिसर्पिःकुशोरकम् ॥ सकारात्रोपवासश्चक्षुष्यंसातपनंरु-
तम् ॥ २१२ ॥

۲۰۹- جس پاپ کا پشیمت نہیں کیا ہے اس پاپ کو دور کرنے کے واسطے اسکی طاقت اور پاپ
دونوں کو دیکھ کر پشیمت کو کلینا کرے۔

۲۱۰- آدمی جن تدبیروں سے پاپوں کو دور کرتے ہیں اور ان تدبیروں کو دیوریش بتیروں نے
کہا ہے ان تدبیروں کو ہم کہیں گے

۲۱۱- پرا جاپتیه برت کرتا ہوا بیتن دن وقت صبح دتین دن وقت شام کے بھوجن کرے
بیتن دن بد دن مانگنے کے جوئے اسکو بھوجن کرے اخیر بیتن دن آپاس کرے (اپنے لقمے کی تعداد
دمقدار کو کہتے ہیں کہ وقت صبح ۲۴ لقمہ وقت شام ۳۲ لقمہ اور بد دن مانگنے میں ۲۴ لقمہ بقدر
بیضہ مرغ یا جتنا منہ میں جاسکے ہمیشہ کے ان کو بھوجن کرنا اور خیر کو نہ بھوجن کرنا)۔

۲۱۲- گو کا موتر گو برودھ لگی دسی جل مع کشان سب کو طائر ایک بیک اور دوسرے
دن آپاس کرے یہ شانت پن کر چھ کہنا ہے اور جب اوپر لگی ہوئی چیز دن کو ایک ایک
دینین ایک ایک چیز کو بھوجن کرے اور ساتویں دن آپاس کرے یہ مہاشانت پن کر چھ کہنا ہے

۴ اسکو پنج گئیے کہتے ہیں

वेदो वितानां नित्यानां कर्मणां समतिक्रमे ॥ स्नातकव्रतलोपे-
 च प्रायश्चित्तमभोजनम् ॥ २०३ ॥ हुंकारं ब्राह्मणस्योक्ता त्वंका-
 रं च गरीयसः ॥ स्नात्वाऽनश्नन्नहः शेषमभिवाद्य प्रसारयेत् ॥ २०४ ॥
 ताडयित्वा त्रिगोत्रापि करादिवा बध्यवाससा ॥ विवादे वा विनि-
 र्जित्य प्रणियत्य प्रसारयेत् ॥ २०५ ॥ अवगूर्य त्वद्विशतं सहस्रम-
 पि हृत्य च ॥ जिघांसया ब्राह्मणस्य नरकं प्रतीयद्यते ॥ २०६ ॥ शो-
 रितं यावतः पांशून् सशुक्लातिमहीतले ॥ तावन्मृदमहस्या-
 रितं तत्कर्त्तारं नरकं वसेत् ॥ २०७ ॥ अवगूर्य चरेत् कच्छमतिकच्छं
 निपातिते ॥ कच्छाति कच्छौ कुर्वीत विप्रस्योत्पाद्य शो रितम्
 ॥ २०८ ॥

۲۰۳ - وید میں کسے ہوئے عمل روزمرہ کو کرنے میں اور برہمن حرج برت کے چھوٹ جانے
 میں ایک دن آپاس کرنا چاہیے۔

۲۰۴ - برہمن کو ہونے ایسا کمر اور پیر کو گو نگو تم ایسا کمر استان کر اور انھوں کو خوش کر دو
 اور پرانا پیام کر کے ایک دن آپاس کرے۔

۲۰۵ - برہمن کو ترن سے بھی تاڑنا کر کے اور بحث میں جیت کر کپڑے سے گلے کو باندھ کر پرنام
 کر کے خوش کرے۔

۲۰۶ - برہمن کے مارنے کو ہتھیار اٹھاؤ اور مار سہیں تو بھی تنہا برتنک میں رہنا ہے۔

۲۰۷ - مارنے برہمن کے جسم کا خون گر کر زمین کے جتنے دودھ کو پکڑنا ہوتا ہے ہزار برس
 تک مارنا الا نرک میں رہنا ہے۔

۲۰۸ - برہمن کے مارنے کے واسطے ہتھیار اٹھا کر کر چھ برت کو کرے اور مارے میں ات کر چھ
 برت کو کرے اور خون نکالنے میں کر چھ اور ات کر چھ دونوں برتوں کو کرے۔

शरणागतं परित्यज्य वेदं विस्माव्य च द्विजः ॥ संवत्सरं यावद्वाहस्त
 त्यापमपसेधति ॥ १९८ ॥ श्वच्छालस्वरे र्दष्टो ग्राम्यैः क्रव्याद्भि-
 रेव च ॥ नराश्वोद्वराहैश्च प्राणायामेन शुध्यति ॥ १९९ ॥ यश्चान्न
 कालतामासं संहिताजपसवव ॥ होमाश्च सकलानित्यमयं-
 तधानां विशोधनम् ॥ २०० ॥ उद्ध्यानं समारुह्य स्वरयानं तु काम-
 तः ॥ स्नात्वा तु चिप्रोद्दिग्वासाः प्राणायामेन शुध्यति ॥ २०१ ॥ वि-
 नाङ्गिरप्सु वाप्यार्तः शरीतं सन्निवेश्य च ॥ सचैलो बहिराश्रुत्य गा-
 मालभ्य विशुध्यति ॥ २०२ ॥

۱۹۸- اپنی پناہ میں آئے ہوئے کو ترک کر کے جو دیر پڑھانے کے لائق نہیں ہے اسکو
 دیر پڑھا کر ایک سال تک جو کا بھوجن کر کے رہے۔

۱۹۹- کتہ سیار آدمی گردھا گھوڑا سورگانوں کا رہنے والا بلار وغیرہ انھوں میں سے کسی
 ایک کا کاٹا ہوا آدمی پر اپنا نام سے پاک ہوتا ہے۔

۲۰۰- کچے گوشت کا گھائیو والا نیگلت میں رہنے کے لائق جو برہمن بنین یہ دونوں ایک
 تک دو دن آپاس کر کے پچیس دن وقت شام بھوجن کریں اور شگفتا کا چپ کریں اور بوج
 کرت وغیرہ آٹھ منتر کر کے ہمیشہ آٹھ دفعہ ہون کریں تب پاک ہوتے ہیں۔

۲۰۱- جو کاڑی اونٹ یا گدھا سے مشمول ہے اسپرغوسہش سے پڑھکر اورنگا ہو کر سنان
 کر کے پرانا نام کرے۔

۲۰۲- دیکھی آدمی بدوں پانی کے ٹٹا دموت کرے یا پانی ہی میں ٹٹا دموت کرے تو گالوں
 سے باہر جا کر نری وغیرہ میں مع کپڑوں کے غسل کر کے گنو کو چھو کر پاک ہوتا ہے۔

۱۹۳۔ برہمن قابل نفرین کام کو کر کے جو دولت کو فراہم کر لے تھیں اس دولت کو ترک اور چپ تپ کر کے پاک ہوتے تھیں۔

۱۹۴۔ برہمن بے فکر ہو کر ایک مہینہ تک ہمیشہ تین سہرا گائیتری کا جپ کرتا ہو گئو کے مقام میں مقیم ہو کر صرف دو دھپتیا ہوا پے دان لینے کے پاپ سے چھوڑتا ہے۔

۱۹۵۔ برت کر کے گئو کے مقام سے آئے ہوئے کمزور و علیل برہمن کو بھلے لوگ پوچھیں کہ اے برہمن کیا ہم سب کے برابر ہو سکی خود پیش کر لے تبو۔

۱۹۶۔ تب وہ برہمن کہے کہ آمیزہ نہ لینے کے لائق دان کو نہ لینے کا سچ کہتے ہیں بسا ایک کر گئو کے بھوجن کیواسے گھاس دیوے اُسکی دی ہوئی گھاس کو گئو بھوجن کرے تب بے لوگ اُسکو قبول کریں۔

۱۹۷۔ برہمنہ لوگوں کو گیہ کر کے تپا دگر و غیرہ کے سوا مسنوع واہ وغیرہ من شترادھ کر کے اور بارن پر یوگ کر کے امین نام والی گیہ کر کے نین کر چھر برت کرے۔

सत्यमुतंघटंप्रास्यप्रविश्यभवनंस्वकम् ॥ सर्वशिक्षातिकाया-
 शिष्यापूज्यसमाचरेत् ॥ १८७ ॥ सतदेवविधिंकुर्याद्योयित्सुपति-
 तास्वपि ॥ वस्त्रान्नपानदेयत्तुवसेयुश्चगृहान्तिके ॥ १८८ ॥ शन-
 स्विभिरनिर्गोतैर्नर्थिकंचित्सहाचरेत् ॥ कृतनिर्गोजनंश्चैव
 नजुगुप्सेतकहिंचित् ॥ १८९ ॥ बालघ्नांश्चकृतघ्नांश्चविशुद्धान-
 पिधर्मतः ॥ शरणागतहंतृश्चस्त्रीहंतृश्चनसंवसेत् ॥ १९० ॥ येष्वा-
 द्विजानांसावित्रीनानुचेतयथाविधि ॥ तांश्चारयित्वात्रीकृच्छ्रा-
 न्यथाविध्युपनाययेत् ॥ १९१ ॥ प्रायश्चित्तंचिकीर्षन्तिविकर्म-
 स्थास्तुयेद्विजाः ॥ ब्रह्मणाचपरित्यक्तस्तेषामप्येतदादिशेत् ॥
 १९२ ॥

۱۸۷۔ اور گرم پانی میں گھڑے کو ڈال کر اپنے گھر میں داخل ہو کر ذات کے سب کاموں کو پورا
 کے مانند کرے۔

۱۸۸۔ تپت استری میں بھی بی بی اور تپت استری کو گھر کے سامنے جا قیام اور کھانا
 پانی اور کپڑا دینا چاہئے۔

۱۸۹۔ بد دن پر پیشیت کے پا پون کے ساتھ ارمٹھ کو کرے اور جب پریشیت کر چکیں تو
 انکی برائی بھی کہنی کرے۔

۱۹۰۔ بابا و ایکار و مرنا گت دعوت انھوں میں سے کسی ایک کے ماریو لے لے ناسترین
 لکھا ہوا پریشیت بھی کیا ہو تو بھی اسکے ساتھ نہ رہے۔

۱۹۱۔ جس برہمن کشتری ویشیہ کا گائتری بدھ سے اپدیش نہوا ہوا سکوتین کر چھوڑ
 کر کے بدھ کے موافق پھر جینو کرانا چاہئے۔

۱۹۲۔ خلاف کام یعنی ستودر کی سیوا کر نیوالا اور وید کو نہ پڑھنے والا برہمن کشتری
 ویشیہ پریشیت کرنا چاہیں تو انکو بھی تین کر چھوڑت کا اپدیش کرنا چاہئے۔

۲۔ تبت اسکو کہتے ہیں جو اپنے دماغ و آئینہ کے درجہ سے گرجا کے لینے بے ذات ہو جائے۔

ساچے تھن: پردھے تھس دھشونو پھنریتا ॥ کھنچا کھنچا یگاں چہ تھ-
 دھسٹا: پاو نر سھتھ ॥ ۲۵۷ ॥ یھ کھو تھو کھرا تھرا دھبھلی سہونا-
 دھج: ॥ تھہ سھمھن پھننیتھن تھمھنریتھن ۲۵۸ ॥ رھ-
 پا پھتا تھکتا چھو رھا مھننیتھن: ॥ پھننیتھن: سھن پھکتا نا مھ-
 مھ: سھرا تھننیتھن: ॥ ۲۵۹ ॥ سھن تھو رھا پھتھن پھننیتھن سھن تھ-
 رھ ॥ یاجنا دھیا پھنا دھو نا تھن تھنا سھنا شھنا ॥ ۲۶۰ ॥ یو-
 یھن پھننیتھن نھن سھن سھن یاجنا تھن مھن: ॥ سھن تھو بھن تھن تھن تھن
 سھن تھن ۲۶۱ ॥

۱۶۷۔ جو عورت اپنی ذات کے مرد کے ساتھ ایک دفعہ جماع کر کے مجرم ہوئی ہو اور اس کا
 پڑاؤت کر کے پھر اپنے ذات والے مرد کے ساتھ جماع کرے تو وہ عورت پرا جا سکتی ہے
 چاندرا بن برت کرے۔

۱۶۸۔ بر آھن کھتری دھو درن کی عورت کے ساتھ ایک رات جماع کر کے جو پاپ
 کرتے تھن اس کے دو کر تھکے واسطے تھن سال تک تھیکھ مانگ کر بھو جن کرتے ہوئے جب
 کرتے تھن۔

۱۶۹۔ چارہ وران کے پاپ کا یہ پڑاؤت کھا اپ تھن تھن کے ساتھ میل دیو ہار کرنے کے
 پڑاؤت کو سنو۔

۱۷۰۔ تھن لوگون کے ساتھ جو کوئی ایک سال تک ایک سواری یا ایک سھن پڑھئے یا
 ایک نیک تھن بھو جن کرے تو اس کے برابر تھو نا ہو اور تھن لوگون کو گیکھ کرا دی یا جنیو
 کرا کے گا تھری سھن یا دواہ دھیرہ رھنہ داری کرے تو جلد اس کے برابر تھو نا۔
 ۱۷۱۔ جس تھن کے ساتھ جو بیو ہار کرے وہ اس کے پاکی کے واسطے اسی کا برت کرے۔

سताستیسوस्तو भार्यार्थेनोपयच्छेत्तुबुद्धिमान् ॥ ज्ञातित्वेनानुयेया
 स्ताः पततिह्युपयन्नधः ॥ १७२ ॥ अमानुषीषुपुरुषउदक्याया-
 मयोनिषु ॥ रेतःसिक्ताजलेचैवकच्छंसान्नपनंचरेत् ॥ १७३ ॥
 मैथुनन्तुसमासेव्यपुंसियोषितिवा द्विजः ॥ गोयानेऽप्सुरिवा-
 चैवसवासाः स्नानमाचरेत् ॥ १७४ ॥ चण्डालान्पश्चिन्नयोग-
 त्याभुक्त्वाचप्रतिगृह्यच ॥ पतत्यज्ञानतोविप्रोज्ञानात्साम्यंतुम-
 च्छति ॥ १७५ ॥ विप्रदुष्टांस्त्रियंभर्तानिरुध्यादेकवेशमनि ॥ य-
 त्युंसः परदारेषुतच्चैनांकारयेद्व्रतम् ॥ १७६ ॥

- ۱۶۲۔ عقلمند آدمی ان تینوں کے ساتھ جماع کرے کیونکہ وہ رشتہ سبز ہونے سے جماع
 کے لائق نہیں ہیں ان کے ساتھ جماع کرنے سے ترک بین جاتا ہے۔
 ۱۶۳۔ گھو کو چھو کر گھوڑے وغیرہ چار پایہ و با جھین عورت کسی ایک نسبت سے چھو
 عورت و پانی انھوں میں لطفہ گراتے سے سانت پن کر چھو بہت کو کرے۔
 ۱۶۴۔ گاؤں ہی پانی دن انھوں میں برہمن کشتری و شیشہ مرد یا عورت سے جماع کر کے
 صبح کپڑے دن کے اسنان کرے۔
 ۱۶۵۔ برہمن اکیان سے چاندالی اور پلچھ کی عورت کے غلم کو چھو جن کر کے اور انھوں سے
 دان لیکر تپت ہوتا ہے اور جا کر پیوے تو اس کے برابر ہوتا ہے۔
 ۱۶۶۔ جس عورت نے دوسرے مرد میں دل لگایا اسکو شوہر ایک گھر میں روک کر رکھے اور جو
 برت مرد کو دوسری عورت کے ساتھ جماع کر نہیں کہا چودہ برت عورت کو کراوے۔

मणिमुक्ताप्रवालानां ताक्षस्यस्तस्य च ॥ अथः कांस्योपलानां च द्वादशाहं करणान्तथा ॥ १६७ ॥ कापीसकीटजीर्णानां द्विशफैकशफस्य च ॥ यस्य गन्धो यधीनां चरञ्ज्वाञ्चैव च ग्रहं ययः १६८ ॥ एतैर्ब्रतैरपोहेतपापं स्तेयकृतं द्विजः ॥ अगम्यागमनीयस्तु ब्रतैरेभिरया नुदेत् ॥ १६९ ॥ गुरुतल्पव्रतं कुर्याद्रेतः सिल्कासियोनिषु ॥ सरस्यः पुत्रस्य च स्त्रीषु कुमारीष्वन्यजासु च ॥ १७० ॥ पितृष्वसेयीभगिनीं स्वस्त्रीयां मातुरेव च ॥ मातुश्च भ्रातुस्तनयांगत्वा चान्द्रायणं चरेत् ॥ १७१ ॥

۱۶۷۔ جو آبر موتی منگاتا بنا لوبا روپا کان پتھر انھوں میں سے کسی ایک کے چوراخیں بارہ تک چادر کے کن بھوجن کرے

۱۶۸۔ کپاس کیڑا اور نا انھوں سے طیارے کو کپڑے ایک کھوڑا لے چار پائیہ پرند خوشیویات اور دیگر شئی انھوں میں سے کسی ایک کے چورائے میں تین دن تک دو ہر پیکو (بیان سپینر چوراخیں ایک روپ پر پستخت کہا اسطرح چوری میں جہاں پر ایک روپ پر پستخت ہو وہاں پر جانا چاہئے)

۱۶۹۔ ان برتون کے وسیلہ سے چوری کے پاپ کو دور کرے اور جو عورت جماع کے لائق نہیں ہے اس کے ساتھ جماع کرے کہیں جو پاپ کو اسکو برت مرقومہ ذیل سے دور کرے۔

۱۷۰۔ خواہر حقیقی اور دوست اور بیٹے کی زوجہ اور کماری اور چاندالی انھوں میں سے کسی ایک کے ساتھ گیان سے جماع کرے اس پر پستخت کو کرے جو مانا کے ساتھ جماع کرے کہیں ہوتا ہے

۱۷۱۔ بوسہ کی بیٹی اور بھوپھو کی اور ناموں کی بیٹی جو اپنی خواہر میں کہیں سے کسی ایک کے ساتھ جماع کرے کہیں چاندیاں برت کرے لیکن یہ سب گیان سے ایک دفعہ دوسرے مرد کے ساتھ

جماع کرے تب جانا کیونکہ پر پستخت تھوڑا ہے اسلئے لیتے ہیں۔

धान्यान्नधनचौर्योराहत्याकाशाद्विजोत्तमः॥ स्वजातीय-
गृहादेवकच्छादेनविशुध्यति॥ १६२॥ मनुष्याणां तु हरसोऽस्त्री
गांधीनगृहस्यच॥ कूपवापीजलानांचशुद्धिश्चान्नायरांस्त्वतः
॥ १६३॥ इव्यारागमलपसारारांस्तेयकत्वाऽन्यवेशमतः॥ च-
रेत्तांतपनंकच्छंतनिर्योत्यात्मशुद्धये॥ १६४॥ भक्ष्यभोज्या-
यहरसोयानशय्यासनस्यच॥ पुष्पमूलफलानांचपंचगव्यं
विशोधनम्॥ १६५॥ त्वराकाशमुमागांचशुष्कान्नस्यगुड
स्यच॥ चैलचर्मामिषारागांचत्रिरात्रंस्यादभोजनम्॥ १६६॥

۱۶۲- برہمن برہمن کے گھر سے بالاراوہ دھانیہ کو چور کر پاکی کیوں سطر ایک سال تک کر چھ
برت کو کرے لیکن دیش نکال درپہ پران دسوا می کا گن دیکھ کر زیادہ بھی جانتا
اسی طرح سے جو آگے کہیں اس میں بھی جانتا۔
۱۶۳- آدمی عورت کھیت گھر بادلی کنوان کا جل انھوں کے چور انہیں پاکی کیوں
چاندرا این برت کہا ہے۔

۱۶۴- مخوڑی تمیت والی چیز اور مخوڑے مطلب الی چیز کے چور انہیں سناٹ پن کر چھوڑت
کرے اور مال سر وقت مالک کو دیوے یہ بات سب چوری کے پتہ تخت میں جانتا۔
۱۶۵- چینیہ وغیرہ بھجات وغیرہ سواریاں دہلنگ آسن دھیل دھیل انھوں میں سے
کسی ایک ایک کر چورائے میں پنج گنیہ کو بہوے۔
۱۶۶- ترن کا ٹھہ سوکھا درخت غلہ کر کپڑا چڑا گوشت انھوں میں کسی ایک کے چور انہیں
تین دن برت کرنا چاہئے۔

۱۶۷- پنج گنیہ لینے گنو کا دودھ گنو کا گھی گنو کا دہی گنو کا سوتہ گنو کا گوہر۔

भासिकान्तुयोऽश्नीयादशमावर्तकोद्विजः ॥ सत्रीरायहा-
न्युपवसेदेकाहंचोदकेवसेत् ॥ १५७ ॥ ब्रह्मचारीतुयोऽश्नीयान्ना
धुमांसंकथंचन ॥ सकृत्वाप्राक्तंतच्छृङ्गं व्रतशेषंसमापयेत् १५८
॥ विडालकाकाखूच्छिष्टं गध्याश्वनकुलस्य च ॥ केशकीटाव-
पन्नंचपिवेद्वह्मसुवर्चलात् ॥ १५९ ॥ अभोज्यमन्नं नात्तव्यमा-
त्मनः शुद्धिमिच्छता ॥ अज्ञानमुक्तंदत्तार्यं शोध्यावाऽप्याशुशो-
धनैः ॥ १६० ॥ सद्योऽनाद्यादनस्योक्तो व्रतानां विविधो विधिः ॥
स्तेयदोषापहर्तृणां व्रतानां श्रूयतां विधिः ॥ १६१ ॥

۱۵۷۔ برہم چاری مہینہ کی شہزادہ کے غلہ کو بھوجن کر کے تین دن اُپاکس وادیکہ پن نہیں

۱۵۸۔ برہم چاری اگیان شراب یا گوشت کو بھون کر کے پراجا پتیبہ کر چھوڑت کو کرے
 رمانہ رت کو تمام کرے۔

۱۶۸۔ یہ بلار کو اس وقت سے کہلا آتھوں میں سے کسی ایک کی جو ٹھی چیز کو بھون کر کے اور بالک
 اور دیر رہی ہے ان دونوں میں سے کسی ایک سے ملی ہوئی چیز کو بھون کر کے سیر چلانا نام اور یہ کچ
 چھوٹے چار کو بیٹے۔

۱۶۰۔ آپ کو پاک کر نیکی خواہش رکھنے والا آدمی اس چیز کو جو بھوجن کے لائق نہیں ہے بھوجن کرے اور اگیاں بھوجن کیا ہو تو تنے کرے یہ بھی تنوں کے تو جلد پر پشت کر کے اپنی اتنا کو پاک کرے۔

۱۶۱۔ بھوجن کے لائق جو چیز ہیں، اُسکے بھوجن میں یہ پُراپت کہا اب چوری پاپ کے پُراپت کو کہتے ہیں۔

अभोज्यानांतुक्तानांस्त्रीशूरोच्छिद्यमेवच॥ जग्ध्वासांसम-
भस्यंचसमरात्रयवान्यिवेत्॥ १५२॥ शुक्तानिचकषायांश्च-
दीत्वामेध्यान्यपिद्विजः॥ तान्नदवत्यप्रयतोयावत्तन्नब्रजत्य-
धः॥ १५३॥ विद्वराहखरोद्वासांगोभायोःकयिकाकयोः॥
प्राश्यसूत्रपुरीषारिाद्विजश्चाक्षरांचरेत्॥ १५४॥ शुक्का-
रिशुक्तामांसानिभौमानिकवकानिच॥ अज्ञातंचैवसूना-
स्थभेतदेववतंचरेत्॥ १५५॥ कव्याश्चकरोद्वासांकुक्कुटानां
चभक्षरो॥ नरकाकरवराणांचतप्तद्वन्द्वविशोधनम्॥ १५६॥

۱۵۲- کھانیکے لائق جب کاغذ بنیں، اس کاغذ اور شور اور عورت کا بوٹھا غلہ اور جو گوشت
کھانیکے لائق بنیں، ان میں سے کسی کو بھون کر نہیں جو کے ستوسات دن تک میوے
۱۵۳- شکست اور کبھی چیز (مثل کھیر وغیرہ) یہ پاک بھی ہوں تو بھی انکو پیکر تک پاک نہیں
ہونا جب تک کہ وہ مضم بنیں ہوتے۔
۱۵۴- گائون کے سور گڑھاؤنٹ کو اسکا بھون کا موتا اور شیشا بھون کر نہیں کشتہری
دیشیہ چاندرا بن برت کریں۔
۱۵۵- سوکھا گوشت اور زمین میں پیدا ہوا لکڑی اور جس گوشت کو جانا نہیں کہہ کھا
کے لائق ہے یا نہیں اور وہ مقام قتل جائز زمین رکھا ہو، بھون میں کسی ایک کر کھا نہیں
اوپر کے ہوتے برت کو کرے۔
۱۵۶- کچے گوشت کے کھانے پر شیر وغیرہ گائون کا سور اوٹ مرغا آدمی کو اگر کھا بھون
میں سے کسی ایک کے گوشت کے کھانے میں بپت کر چھو برت کو کرے۔

نکتہ اسکو کہتے ہیں کہ جو مادہ میٹھا ہے اور سبب گزندہ آدمی کے یا پانی میں رہنے سے کھٹا ہو جا۔

अज्ञानाद्वाहणीं पीत्वा संस्कारे नैव शुध्यति ॥ मतिपूर्वमनि-
 र्दश्यं प्राणांतिकमिति स्थितिः ॥ १४६ ॥ अथः सुराभाजनस्या
 मद्यभाराडस्थितास्तथा ॥ पंचरात्रं पिवेत्पीत्वा शंखपुष्पीं
 तं पयः ॥ १४७ ॥ सृष्ट्वा त्वाचमदिरां विधिवत्प्रतिपद्यत ॥ शू-
 द्रोच्छिष्टाचपीत्वा पः कुशवारिपिवेत्प्रहम् ॥ १४८ ॥ प्राह-
 रास्तु सुरापस्य गन्धमाघाय सोपमः ॥ प्राणान् सुत्रिरायस्य
 घृतं प्राश्य विशुध्यति ॥ १४९ ॥ अज्ञानात्वाश्यविरामूत्रं सु-
 रासं सृष्टमेव च ॥ पुनः संस्कारमर्हन्नित्रयो वर्णाद्विजातयः
 ॥ १५० ॥ चपनं मेखलादराडो भैक्षचर्या व्रतानि च ॥ निवर्त्तते
 द्विजातीनां पुनः संस्कारकर्मणि ॥ १५१ ॥

۱۴۶ - بغیر جانے ہوئے گڑی و ماو دعوی نام شراب کو پیکو تو دوسرے سنکار سے پاک ہوتا ہے
 اور جانکر پیوے تو ترک قالب سے پاک ہوتا ہے یہ شاستر کا حکم ہے۔

۱۴۷ - پیشی اور مدیہ نام شراب کے برتن میں رکھا ہوا پانی پینے میں سنگھشی نام ادویہ
 گرم دودھ کے ساتھ پانچ رات تک پیوے۔

۱۴۸ - شراب کو چھوڑ کر دیگر لیکر اور شودر کے جوٹے جل کو پیکر کرش سے پاک ہو کر جل کو تین
 دن تک پیوے۔

۱۴۹ - سوم نام گیہ کو کرنیوالا برہمن شراب پینے والے کی پونگھ کر جل میں تین دفعہ
 پرایا نام کر کے گھی کو بھون کرنے سے پاک ہوتا ہے۔

۱۵۰ - جو چیز موتر اور بشتا اور شراب سے چھو گئی انہیں سے کسی ایک کو گیان سے بھون کر
 برہمن کشتی دیشیہ بھر سنکار کے لائق ہوتے ہیں۔

۱۵۱ - دوسرے سنکار میں سنڈن دیکھلا دودھ و بھکشا بنیں ہوتے۔

کینچیدےوتوویپراپدھادستھیماتاںوہے ॥ آنسٹاںچےوہیںسا-
 یاںپراشاایامینسٹھیتی ॥ ۱۴۱ ॥ فلداناںلھوہساراںچےد-
 نےجھمکھشام ॥ سٹھوہللیلتاناںچپوٹھیتاناںچوی-
 رڈھام ॥ ۱۴۲ ॥ آنایجاناںراٹھاناںرسجاناںچساروہش ॥
 فلدپوٹھوہللیلتاناںچدھتپاشوویشودھنم ॥ ۱۴۳ ॥ کھٹ-
 جاناںموہڈیاناںجاناںچسٹھیاںبہ ॥ دھالاموہٹوگٹھجناں
 دینمکپڈیوت ॥ ۱۴۴ ॥ سٹھیرتیرپوٹھیاںدےنوہیںسام-
 سٹھوہم ॥ جاناںجانکھتکھٹنٹھراٹھاناںچسٹھوہ ॥ ۱۴۵

۱۴۱- استخوان دار جاندار کو مار نہیں برہن کو کچھ دیکو اور بے استخواندار جاندار کے مارے میں
 پرانا پیام کرے۔

۱۴۲- پھل دینے والے درخت یعنی آتب وغیرہ گلم بلی یعنی گرج لٹا اور پھولا ہوا کھٹھراٹھو
 میں سے ایک ایک کے توڑنے اور اکھاڑنے میں گاہٹری وغیرہ رچا کو سوار چپ کرے۔

۱۴۳- ان وغیرہ گوڑ وغیرہ رس پھل پھول ان سب میں سے پیدا ہونے جانداروں کے مار نہیں
 کھی کو بھوجن کرے۔

۱۴۴- سانھی وغیرہ جو ان جو تنے سے پیدا ہوتا اور تنی وغیرہ جو جھکلیں سے آپ پیدا ہوتی
 انھوں کا بے مطلب اکھاڑنے میں ایک دن دودھ پیکر رہے اور گنوں کے پیچھے
 چلے۔

۱۴۵- دانستہ یا نادانستہ جانداروں کو مارا اس پ کو ہر تون کے وسیلہ سے دور کرنا چاہیو
 اور جو چیز کھانے کے لائق نہیں ہے اس کے کھانے میں پرکشت سنو۔

हत्वा हंसं बलाकां च वक्रं वर्हिषामेव च ॥ वानरं श्येनभासौ च स्पर्शयेद्वाह्मरायणम् ॥ १३५ ॥ वासो दद्याद्भयं हत्वा पंच नीलान्धयान् राजम् ॥ अजमेषा वनद्वाहं स्वरं हत्वेकहायनम् ॥ १३६ ॥ क्रव्यादांस्तु मृगान् हत्वा धेनुं दद्यात्पयस्विनीम् ॥ अक्रव्यादान् वत्सतरीमुग्रं हत्वा तु कृष्यालम् ॥ १३७ ॥ जीनकार्मुकवस्तावीन्मृथकृदद्याद्विशुद्धये ॥ चतुराणामपि वर्यानां नारी हत्वाऽनवस्थिताः ॥ १३८ ॥ दानेन वधनिर्गोकं सर्पादीनामशक्नुवन् ॥ एकैकशश्चरेत्कच्छं द्विजः पायापनुत्तये ॥ १३९ ॥ अस्थिमतां तु सत्वानां सहस्रस्य प्रमापरी ॥ पूरोचानस्य नस्थां तु शूद्रहत्याव्रतं चरेत् ॥ १४० ॥

۱۳۵ - ہنس بلا کا بگلا مور بندر باز بھاس ان سب میں سے کسی ایک کو مار کر براہمن کو گنو دے
۱۳۶ - گھوڑا کو مار کر گھوڑا دیوے اور باغی کو مار کر پانچ بیل براہمن کو دیو بکرا اور بھینس براہمن سے کسی ایک کو مار کر ایک بیل دیوے کرے کو مار کر ایک سال کا بچہ دیوے۔

۱۳۷ - بٹیر وغیرہ کے گوشت کے کھانیو لے جانور کو مار کر دو دھرتی ہوئی گنو دیوے اور سرن وغیرہ کے گوشت کو نہ کھانیو جانور کو مار کر بھجھ دیوے اور اونٹ کو مار کر ایک تی سونا دیوے۔
۱۳۸ - براہمن وغیرہ چاروں دھرتی کی چھال عورت کو مار کر براہمن کشتری ویشیہ سلسلہ سے جرم پٹ و بھیش بھیر کر کو دیوے۔

۱۳۹ - دان سے سب پاؤں کو دو کر نہیں بے طاقت ہو تو ایک ایک کے قتل میں ایک ایک کر چھ برت کرے۔

۱۴۰ - ہزار جاندار استخوان دار کے قتل میں اور بغیر استخوان دار جاندار گاڈی بھیر کے قتل میں شوروہستیا کے برت کو کرے۔

رات دے بھرتن کھٹن ہر ماسا شہر ہا چرےت ॥ دھبہ کا دشاوا پی
 دشا دی پرا یگا: سیتا: ॥ ۱۳۰ ॥ مارجا رن کولی ہتھا چا یں مہ
 ک مہ بھا رن گویا لک کا کاں شہر ہتھا بھرتن چرےت ॥ ۱۳۱ ॥
 پم: پیو تھیرا یں وا یو جت نوا ۵ دھنوی جتےت ॥ ۱۳۲ ۥ
 نیاں واس کت نوا دے بھرتن جےت ॥ ۱۳۳ ॥ شہر کا یو یسی دشا
 تھ پھتھا دی جی نیا: ॥ پلا لمار ک یں رات سہ س ک چے ک ماسا بک
 م ॥ ۱۳۴ ॥ دھت کت مہ رات ہتھ تیل شہر انھ تیتھیرے ॥ شہر کا
 ہا یں نوا کت کت چھتھا تھ ہا یں م ॥ ۱۳۵ ॥

۱۳۰۔ برہمن شودر کو قتل کر نہیں چھ مہینہ مک برہم ہتھیا کر برت کو کرے اور ایک ہل سفید
 رنگ اور دشن لگو برہمن کو دیوے یہ بھی بلا خواہش قتل کرے نہیں جانتا ان سب برہمن
 کے کر نہیں کیاں وہ جو جا کو چھوڑ دینا چاہتے۔
 ۱۳۱۔ بلی نیولا۔ تیل کھٹھ مہینہ تک کتہ گوہ اتو کو اٹھون میں سے کسی ایک کو شودر قتل
 کر کے مہیا کے برت کو کرے۔
 ۱۳۲۔ یا تین رات دو دھوپ اور اگر بے مقدور ہو تو تین رات مک چار کو چلے یہ بھی
 نہو کے تو تین رات نہی میں اسان کرے یہ بھی نہو کے تو آٹھ سوکھ نام سوکھ کا جب کہی
 یہ سب بلا خواہش کے قتل میں جانتا۔
 ۱۳۳۔ اسانپ کو مارے تو لوہے کا ڈنڈ جھکا جھٹ پشین اچھا ہو برہمن کو دیو اور
 کو مارے تو ایک بو جھ لورا اور ایک ماشہ سیا ان دونوں کو دیوے
 ۱۳۴۔ سور کے مارنے میں گھی کا گھڑا دھتھیرے کے مار نہیں ایک وادن کل اور طوا کے
 مار نہیں دو سال کا پھو اور کریم نام جالوز کے مار نہیں تین سال کا پھو برہمن کو دیوے۔

तकरापात्रकृत्यासुमासंशोधनमैन्दवम् ॥ मलीनीकरणीये-
 बुतमः स्याद्यावकौस्त्यहम् ॥ १२५ ॥ तुरीयो ब्रह्महत्यायाः स-
 त्रियस्य वधे स्मृतः ॥ वैश्येऽहमांशो वृत्तस्ये शूरे ज्ञेयस्तु षोडशः
 ॥ १२६ ॥ अकामतस्तुराजन्यं विनिपात्य द्विजोत्तमः ॥ वृषभै-
 क सहस्रागाद्या सुचरितव्रतः ॥ १२७ ॥ अयं चरेद्वानियतो
 जटी ब्रह्महाराजव्रतम् ॥ वसन्तूरतरे ग्रामाह स मूलनिकेतनः ॥
 १२८ ॥ एतदेव चरेदयं प्रायश्चित्तं द्विजोत्तमः ॥ प्रमाप्य वैश्यं व-
 तस्थं रद्याच्चैकशतं गवाम् ॥ १२९ ॥

۱۲۵۔ شکاری کرن کرہوں میں اور آپا تری کرن کرہوں میں کسی ایک کرم کو خواہش سے
 کرنے میں ایک مہینہ چاندرا میں برت کرے اور ملنی کرن کرہوں میں کسی ایک کرم کو
 خواہش سے کہ مہینہ میں دن جو کی لپی بھوجن کرے۔
 ۱۲۶۔ اپنے کرم میں قائم کشتی دیشیہ شود کو قتل کر نہیں سلسلہ سے چوتھی مٹھو میں
 سولہویں حصہ برت کو جانتا مگر یہ سب برت خواہش سے کرم کرنے میں جانتا۔
 ۱۲۷۔ برہمن بدن خواہش کے کشتی کو قتل کرے تو نہر گنو اور ایک میل برہمن کو دیکھو۔
 ۱۲۸۔ خواہ جہادھاری ہو کر نیم سے گانوں کے باہر دھن کی جڑ میں مقیم ہو کر تین سال تک
 برہم ہتیا کا برت کرے اسکو بلا خواہش قتل کر نہیں جانتا۔
 ۱۲۹۔ برہمن اپنے کرم میں قائم دیشیہ کو قتل کرے ایک سال تک برہم ہتیا کا برت کرے۔
 یا ایک سولہویں گنو دان کرے بلا خواہش قتل کرنے میں اس برت کو جانتا۔

आत्मनोयद्विबान्ध्यां च हस्ते वेऽयमारवले ॥ अथ यन्त्रीनकथ-
येत्येवन्तं चैव वत्सकम् ॥ ११४ ॥ अनेन विधिना यस्तु गोघ्नो वा-
मनुगच्छति ॥ सगोहत्याकृतं पापं त्रिभिर्मामैव्यपोहति ॥
११५ ॥ हयभेकादशागाश्च दद्यात्सुचरितव्रतः ॥ अविद्यमा-
ने सर्वस्य वेदविज्ञो निवेदयेत् ॥ ११६ ॥ स तदेव व्रतं कुर्युः स-
पातकिनो द्विजाः ॥ अवकीर्तिवर्ज्यं शुद्धार्थं चान्द्रायणम-
द्यापि वा ॥ ११७ ॥ अवकीर्तिवृत्तकारो नगार्धमेन चतुष्पथे ॥ पा-
कयज्ञविधानेन यज्ञे तलैर्ब्रूति निशि ॥ ११८ ॥ हुत्वाग्नेविधि-
वद्धो मानन्ततश्च समेतृचा ॥ वातेन्द्रगुरुबन्हीनां जुह्यात्स-
र्विषाहृतीः ॥ ११९ ॥

۱۱۴۔ اپنے خواہ و دوسرے گھر میں یا کھلیان یا کھیت میں چرتی ہوئی گنتو کو نہ کہے اور کچھ
کو لیا ہی ہو تو بھی نہ کہے۔

۱۱۔ گنو کا رینوال آدمی اس طریق سے گنو کے پیچھے پہلے تو تین مہینہ میں گنو کی سنتیا سے چھوٹ جائے۔

۱۱۶۔ ابھی ریت سے برت رکے ایک ہیل اور دلش گنو دیوے اگر اتنا ہو سکے تو دیر پڑھے ہوئے
 رہن کو سب دھن دلوے۔

۱۱۔ اوکیری برت جو آگے کیسنگے اسکو جھوڑ کر براسمن دکشتی دیشیہ آپ پالک کریں تو
ک ہونے کیواسطے اسی برت کو کریں یا چاندز این برت کریں۔

۱۱۔ اور کہتی چوراہ میں پاک یگیہ بدھان کر کے رات میں نرود دیوتا کی سسطے گاتا

۱۔ اگن میں بدھ کے موافق سہمان پنجھوتا رہا اس منتڑ سے یا پواندراگن ان سب کو گھسی سکر

उपपातकसंयुक्तोगोघोमासंयवाचिवेत॥ कृतवापोवसेजो-
 छेचर्मरातेनसंचतः॥ १०८॥ चतुर्थकालमशनीयादक्षारलवरां
 मितम्॥ गोमूत्रैराचरेत्तानंदौमासौनियतेन्द्रियः॥ १०९॥
 दिवानुगच्छेज्जास्तास्तुतिष्ठन्धूर्ध्वरजःपिवेत॥ शुश्रूषित्वानम-
 रकृत्यरात्रौवीरसमं वसेत्॥ ११०॥ तिष्ठन्तीष्वनुतिष्ठेत्तु ब्रजन-
 तीष्वप्यनुब्रजेत्॥ आसीनासुतथासीनोनियतो वीतमत्सरः
 ॥ १११॥ आतुरामभिशास्ताचाचौरव्याघ्रादिभिर्भयैः॥ पति-
 तांपंकलग्नांवासर्वोपायैविमोचयेत्॥ ११२॥ उद्योवर्षति-
 शीतेवामारुतेवातिवाभ्युद्यम्॥ नकुर्वीतात्मनस्त्राशांगोरक्षा-
 त्वालुशक्तितः॥ ११३॥

۱۰۸- آپ پانی گنو کا مارنوالا ایک مہینہ تک جو کے تنو سپو ناخن مو بدن و مو کمر وغیرہ کو نہرنی و چھوڑا سے گنو اگر گنو کا چڑا اور ہلکے گنو کے مقام میں قیام کرے۔

۱۰۹- ایک دن برت کر کے دوسرے دن پہلی دفعہ چھوڑا بھوجن کرے جو اس پر غالب ہو کر مہینہ تک گنو موتر سے اُتان کرے۔

۱۱۰- دن میں گنو کے پیچھے چلے کھڑا ہو کر گنو کے کمر سے اُرتی ہوئی دھول کو پیچھا کرنا ہوا سنکار کر کے رات میں میر آسن سے رہے۔

۱۱۱- گنو کھڑی ہو تو آپ بھی حسد و نفق سے علیحدہ ہو کر اندریوں کو جیت کر کھڑا رہے گنو چلے تو آپ بھی اسکے پیچھے چلے گنو بیٹھے تو آپ بھی بیٹھے۔

۱۱۲- جو گنو بیمار ہو اور چورا در شیر وغیرہ کے خوف سے خوفناک ہو یا گر پڑے ہو یا کچ میں پھنس گئی ہو اسکو سب تدبیروں سے حتی المقدور چھوڑا دے۔

۱۱۳- گرمی و برسات و جاڑا و اندھی میں اپنے مقدور کے موافق بد دن حفاظت کرنے گنو کے اپنی حفاظت کرے۔

۱۰۳۶۔ یورو تلتھ میماوی ن ست مے سوا د یو م یے ॥ سمری جیل نئی سوا -
 شلی مے نھ تھو نا س وی شری جی ت ۥ ۱۰۳۷ ॥ سوا ی و ا شری شری جی ت ۥ
 تھ ا د ی و ا ج ل ۥ ۱۰۳۸ ॥ ن ۥ رت ۥ د ش م ا ت ۥ د ا ن ی ا ت ا د جی شری جی ۥ ۥ
 ۱۰۳۹ ॥ سوا ی و ا شری جی ت ۥ د ش م ا ت ۥ د ا ن ی ا ت ا د جی شری جی ۥ ۥ
 ۱۰۴۰ ॥ سوا ی و ا شری جی ت ۥ د ش م ا ت ۥ د ا ن ی ا ت ا د جی شری جی ۥ ۥ
 ۱۰۴۱ ॥ سوا ی و ا شری جی ت ۥ د ش م ا ت ۥ د ا ن ی ا ت ا د جی شری جی ۥ ۥ
 ۱۰۴۲ ॥ سوا ی و ا شری جی ت ۥ د ش م ا ت ۥ د ا ن ی ا ت ا د جی شری جی ۥ ۥ
 ۱۰۴۳ ॥ سوا ی و ا شری جی ت ۥ د ش م ا ت ۥ د ا ن ی ا ت ا د جی شری جی ۥ ۥ
 ۱۰۴۴ ॥ سوا ی و ا شری جی ت ۥ د ش م ا ت ۥ د ا ن ی ا ت ا د جی شری جی ۥ ۥ
 ۱۰۴۵ ॥ سوا ی و ا شری جی ت ۥ د ش م ا ت ۥ د ا ن ی ا ت ا د جی شری جی ۥ ۥ
 ۱۰۴۶ ॥ سوا ی و ا شری جی ت ۥ د ش م ا ت ۥ د ا ن ی ا ت ا د جی شری جی ۥ ۥ
 ۱۰۴۷ ॥ سوا ی و ا شری جی ت ۥ د ش م ا ت ۥ د ا ن ی ا ت ا د جی شری جی ۥ ۥ
 ۱۰۴۸ ॥ سوا ی و ا شری جی ت ۥ د ش م ا ت ۥ د ا ن ی ا ت ا د جی شری جی ۥ ۥ
 ۱۰۴۹ ॥ سوا ی و ا شری جی ت ۥ د ش م ا ت ۥ د ا ن ی ا ت ا د جی شری جی ۥ ۥ
 ۱۰۵۰ ॥ سوا ی و ا شری جی ت ۥ د ش م ا ت ۥ د ا ن ی ا ت ا د جی شری جی ۥ ۥ

۱۰۳۶۔ والدہ سے جماع کرنا والا اپنے پاپ کو کہہ کر گرم لوہے کے پلنگ پر سو دیا لوہے کی
 عورت بنا کر آگ میں گرم کر کے اس سے بھگسیری کرے۔

۱۰۳۷۔ یا آلت و فوط کو کاٹ کر اپنی انجلی میں رکھ کر گوشہ جنوب و غرب میں دینی سیرت کو نہ
 میں سیدھا جلا جا جب تک وفات نہ پائے۔

۱۰۳۸۔ یا پلنگ کا ایک جزو ہاتھ میں لئے ہوئے کپڑے کا ٹکڑا اپنے ہونے ناخن و مویں
 بدن و ڈاڑھی و مویں کو دھارن کئے ہوئے بیٹھ کر ویران جنگل میں ایک سال تک

پرا جا پتیبہ برت کرے یہ پراپتت اگیان سے اپنی عورت جا کر والدہ کے جماع میں جانا چاہے۔
 ۱۰۳۹۔ یا اندریون کو جین کر مہیش یا جوگی پسپا کھا کر دائرہ جماع کر نیکی پاپ کو دور کر نیکی

داسے تین مہینہ تک چاندرا بن برت کرے یہ پراپتت غیر پت پتا ستری یا دوسرے دون کی
 گرو بھاریا سے جماع کر نہ میں جانا چاہیے۔

۱۰۴۰۔ مہاپاکی لوگ ان برتون سے اپنے پاپ کو دور کریں اور آپ پانکی لوگ پتر مرقومہ
 ذیل سے اپنے پاپ کو دور کریں۔

رथाविचित्राभिहितासुरापानस्यनिष्कतिः ॥ अतर्कपूर्वप्रवक्ष्या-
मिसुवर्गास्तेयनिष्कतिम् ॥ ६८ ॥ सुवर्गास्तेयकद्विप्रो राजानम-
भिगम्यतु ॥ स्वकर्मव्यापयन्मूयान्नां भवाननुशास्त्विति ॥ ६९ ॥
॥ इहीत्यासुसत्तराजासकद्वन्मात्तुतं स्वयम् ॥ बधेन सुव्यतिस्ते-
नो ब्राह्मणास्तपसिषतु ॥ १०० ॥ तपसाऽपनुचुत्सुस्तु सुवर्गास्तेयजं
मलम् ॥ चीस्वासाद्विजोऽसुराये चरेद्वह्न्यह्नरागो व्रतम् ॥ १०१ ॥ स-
तेर्व्रतैरपोहेतपायं स्तेयकतं द्विजः ॥ शुरुस्त्रीगमनीयन्नुव्रतैरे-
भिरयानुरेत ॥ १०२ ॥

- ۹۸- یہ تجھ پر لپیٹت شراب نوشی کا کما کے بعد سونا چور کا پڑیخت کتے میں۔
۹۹- برہمن سونا چور اگر راجہ کے پاس جا کر کہے کہ میں سونا چور ہوں تو آپ مجھ کو سزا دیں
۱۰۰- راجہ آپ کو سزا دے گا کہ ایک دفعہ اسکو مارے چوری کرنے والا قتل خواہ قتل کے برابر پھانسی
سے پاک ہوتا ہے چونکہ برہمن کو سزا ہے جہاں میں وہ سوئے ہوگا جی کہتے ہیں کہ برہمن
تپ ہی سے پاک ہوتا ہے۔
۱۰۱- تپ سے سونا چور اپنے کے پاپ کو دور کرنے کی خواہش کرے تو اسکو پھانسی کا گڑا ہنکرت میں
جا کر اس برت کو کرے جسے کرنے سے برہمن ہتیا دور ہوتی ہے یعنی سونا چور تا برہمن ہتیا کرے تو
۱۰۲- برہمن ان برتون کو کرے چوری کے پاپوں کو دور کرے اور اس سے جمع کرنے کے
پاپ کو برت مرقومہ ذیل کر کے دور کرے۔

सुरावैमलमन्त्रानां पाप्माचमलमुच्यते ॥ तस्माद्वाह्यराज-
न्योवैश्यश्चनसुरांपिबेत् ॥ ६३ ॥ गौडीपैष्टीचमाध्वीचविज्ञेया
त्रिविधामुरा ॥ यथैवैकातथासर्वानपातव्याद्विजोत्तमैः ॥ ६४ ॥
यक्षरक्षः पिशाचाश्चमयंग्मांसं सुरासवम् ॥ तद्वाह्यराजनात्तव्यं
देवानामश्नताहविः ॥ ६५ ॥ असेध्येवापतेनत्तोवैदिकं वायु-
दाहरेत् ॥ अकार्यमन्यत्कुर्याद्वावाह्यराजोमहमोहितः ॥ ६६ ॥
यस्यकायगतं बह्ममयेनाहाच्यते सकल ॥ तस्यव्यपैति ब्राह्म-
रामं भूदत्वं च समाच्छति ॥ ६७ ॥

۹۳- اُن کے مل کو سُرا کہتے ہیں اسلئے براہمن و کشتری و دیشیہ سُر کو نہ پیوں۔
۹۴- گوری سادھوی پیشی تین قسم کی شراب ہے (یعنی گڑ اور سُر) اور لپٹاں سے بنائی جاتی ہیں جسے ایک
دیشی تینوں میں اسلئے تینوں کو براہمن نہ پیوے۔
۹۵- مدیر اور مالسن اور سُرا اور سادان سب کو میکش اور راش و پتاج کا اُن کو تین میں سوار
دیوتاؤں کے پیہیہ کو بھوجن کرنا والا براہمن ان سب کو نہ پیوے۔
۹۶- براہمن بیاعت شراب نوشی کے غفلت میں اگر ناپاکی میں گر لگا وید کے منتر و لگو کیگا
نہ کر نیکی لائق کام کو کر لگا اسواسلئے شراب نہ پیوے۔
۹۷- جس براہمن کے سینہ میں قائم وید ایک دفعہ بھی شراب نوشی سے ڈوبے گا اس میں
کو برہم تیج جانا رہیگا اور وہ براہمن شودر بھاؤ کو پراپت ہوگا۔

مدیر یعنی تینوں قسم کی شراب چھوڑ کر و مہت رش نے گیارہ قسم کی شراب کی جو وہ گناتے ہیں۔ گڑ، مالکھ، سُر، کجور، مال، اور
وہ مہت مردہ کی شراب۔ ان چیزوں سے بنائی ہوئی شراب کو بھی براہمن نہ پیوے۔

उक्त्वा चैवानृणां साक्ष्ये प्रतिरुद्यशु रंतथा ॥ अपहत्य च निःसे-
पं कृत्वा च स्त्रीसु हृदयम् ॥ ८८ ॥ इयं विशुद्धिरुदिता प्रमाणा का-
मतो विजम् ॥ कामते बाह्यरावधे निष्कृतिर्न विधीयते ॥ ८९ ॥
सुरां पीत्वा हि जो मोहादग्निवराणां सुरां पिवेत् ॥ तथा स काये निर्द-
ग्धे मुच्यते किल्बिषा ततः ॥ ९० ॥ गौमूत्रमग्निवराणां वा पिवेद्दु-
कमेव वा ॥ पयो घृतं वा मरगात्तो मक्कद्वसमेव वा ॥ ९१ ॥ करा-
न्वा भक्षयेद्वं पिराया कं वा सक निशि ॥ सुरायाना पनुत्यर्थ-
वाल्लचा सा जटो ध्वजी ॥ ९२ ॥

۸۸- گواہ ہو کر چھوٹھ بونے میں گر و کو چھوٹھا دوست لگانے میں برہمن کا سونا چھوڑ کر چاندی
وغیرہ زر امانت اور کشتی وغیرہ کا سونا وغیرہ زامانت کے لینے میں اگر بہتری برہمن کی
استری کی ناکر میں دوست کے مارنے میں برہمن ہتیا کا برت کرنا چاہئے -
۸۹- یہ جو بارہ سال کا پرستیت کہا ہے وہ بدون خواہش کے برہمن کے مارنے میں جاننا اور
خواہش سے برہمن کے مارنے میں یہ پرستیت نہیں ہے بلکہ اسکا وہ چند ہے
۹۰- برہمن کشتی دیشیہ موہ سے تینوں پیشی سدا کو پی کر اگر کن برن شراب کو پیو میں اس
جسم فانی ہونے سے اس پاپ سے چھوٹے ہیں -
۹۱- گنو مو تر یا پانی یا گنو کا دودھ یا گنو کا گھی یا گنو کے گوبر کا رس ان میں سے کسی ایک کو اگر کن
برن (آتش زدگ) کر کے پیوے اور اس سے مر جائے تو پاک ہوتا ہے -
۹۲- گنو وغیرہ کے باتوں سے کپڑے بنا کر پہنے اور جھاو دھارن کر کے شراب کے برتن کا نشان
لگا کر چاول کا کن یا تل کی کھلی آمین سے کسی ایک کو رات میں ایک دفعہ ایک سال تک جو جن
کرے تو شراب نوشی کے پاپ سے چھوٹے یہ پرستیت بدون سجا ہوئے شراب نوشی میں جاننا -

धर्मस्य ब्राह्मणो मूलं मयं राजन्य उच्यते ॥ तस्मात्समागतेषां मे-
नो निरव्याप्य उच्यते ॥ ८३ ॥ ब्राह्मणाः सम्भवेनैव देवानामपि
दैवतम् ॥ प्रमारां चैव लोकस्य ब्रह्माग्निं वह्निकारणम् ॥ ८४ ॥ ते-
षां वेदविदो ब्रह्मयुक्त्वोऽप्येनः सुनिष्कृतम् ॥ सा तेषां पावनाय स्मा-
त्यवित्रा विदुषां हि वाक् ॥ ८५ ॥ अतोऽन्वतममास्याय विधिं-
विप्रः समाहितः ॥ ब्रह्महत्या कृतं पापं व्यपोहत्यात्मवत्तया ॥
८६ ॥ हत्वा गर्भमविज्ञातमेतदेव व्रतं चरेत् ॥ राजन्यवैश्यौ चेजा-
ना वा त्रेयीमेव च स्त्रियम् ॥ ८७ ॥

۸۳ - کیونکہ براہمن دھرم کا مول ہے اور کشتری دھرم کا حصہ پیشین ہی اسلئے دونوں سے
اپنے پاپ کو کھمکریا پاک ہوتا ہے -

۸۴ - براہمن اپنی پیدائش ہی سے دیوتاؤں کا دیوتا ہے اور اس کا اپدیش سب کے ماننے کی
لاکھ ہے ان باتوں میں ویدی کا ران ہے اور اپدیش کا مول ویدی ہے -

۸۵ - وید پڑھے ہوئے یتن براہمن جو پڑچٹ کہیں وہی پاک ہے کیونکہ وید پاٹھی براہمن
کی بانی ہی پاک ہے -

۸۶ - ہونے پر اپچٹوں میں ایک بھی کرے اور برہم کو جاتے تو برہم ستیا سے چھوٹا ہے -

۸۷ - براہمنی میں براہمن سے پیدا ہونے حمل کی استفا میں بھی ہی برت ویکر کر لے ہوئے
کشتری اور ویشیہ اور براہمن کی باجھن عورت انھوں میں سے کسی ایک کے ماتیمین بھی
بچلے ہوئے برتوں میں سے کسی ایک ت کو کرے -

ترباں پرتیرو جیوا سرب سب مہ جیتھیا ॥ ویہ سہ تہن مہ تہ تہ
 پرا سالا مہ وی سہ تہ ॥ ۵۰ ॥ سہ ہد ہرتو نیتھ ہرتا سہ
 ہیت: ॥ سہ مہ ہد ہرتو ہرتا ہرتا ہرتا ॥ ۵۱ ॥ شیشا-
 ہا ہرتا ہرتا ہرتا ہرتا ہرتا ॥ سہ مہ نو: ۵ ہرتا ہرتا ہرتا ہرتا
 ہرتا ॥ ۵۲ ॥

۸۰۔ کوئی شخص برہمن کا سب دھن چور کر لئے جاتا ہے اس کے لئے کچھ سطلے طاقت کو موافق
 بہانہ چھوڑ کر تدبیر کرے اور تین دفعہ جگ کرے اور برہمن کے چوری گئے ہوئے دھن کو
 لا بھی نہ سکے تو برہمن ہتیا سے چھوٹتا ہے خواہ دھن چاہیے دیکھی برہمن چور کے ساتھ جگ
 کرنے سے جان دینے پر مستعد ہو تو جو دھن چوری کیا اسکے برابر دھن دیکر اس کی جان کی حفاظت
 کرے تو بھی برہمن ہتیا سے چھوٹتا ہے۔ ۵۔

۸۱۔ اس ریت سے ہمیشہ برت کر نیوالا ہے اندیشہ ہو کر برہمن چر کرنے والا بارہ برس کے تمام بچے
 پر برہمن ہتیا سے چھوٹتا ہے۔

۸۲۔ خواہ برہمن ہتیا کر نیوالا برہمن اٹھو سیدھیگی کے انت انسان کر نیکی وقت راجہ اس
 جاکر برہمن ہتیا کو ظاہر کر کے اسکے ساتھ انسان کرے تو برہمن ہتیا سے چھوٹتا ہے یہ پرست
 سو مشرتے کسی کا انگ ہے۔

۵۔ اس مقام پر بیشک ہوتا ہے کہ یہ بات اشلوک ۹، مین لکھ آئے ہیں پھر دوبارہ کیوں کہتا ہے اس کا جواب یہ ہے کہ اس طرح کا دھن
 چھوڑ کر دوسری طرح سے گنہ دہرہن کی حفاظت کیوں سطلے ترک غالب کر کے وہاں اشلوک ۹، کا مطلب جانا سہیے دینا
 کہنے کا دوش نہیں ہوا۔

सर्वस्य वेदविदुषे ब्राह्मरायो यपादयेत् ॥ धनं वा जीवनायात्
 ग्रहं वा सपरिच्छदम् ॥ ७६ ॥ हविष्यसुग्वाऽनुसरेत्पतिस्रोतः
 सरस्वतीम् ॥ जपेद्द्वानियताहारस्त्रिवैवेदस्य संहिताम् ॥ ७७
 कृतवायनी निवसेद्ब्रह्मान्ते गोव्रजेऽपि वा ॥ आश्रमे ह्यक्षमूले
 वा भोजाहाराहिते रतः ॥ ७८ ॥ ब्राह्मरार्थे गवार्थे वा सद्यः प्रा-
 गान्य रित्यजेत् ॥ सुच्यते ब्रह्म हत्याया गोघ्ना गोव्रह्मरास्य-
 च ॥ ७९ ॥

۷۶- خواہ دید پڑھے ہوئے برہمن کو تمام دن و رات دیوے خواہ تمام عمر تک بھوجن کرے
 برہمن کو دھن دیوے یا گھر مع سامان کے برہمن کو دیوے یہ بھی اکیان برہمن ذات
 کے مارنے میں برہمن کو جانتا۔
 ۷۷- خواہ دلشہ بھوجن کرتا ہوا پیچم باہنی سرسوتی میں نشان کرے یا تھوڑا بھوجن کرتا ہوا
 تین دفعہ دید کی شگفتا کو پڑھے یہ اکیان سے برہمن ذات کو مارنے میں برہمن کو جانتا۔
 ۷۸- گنوا اور برہمن کا بھلا کرتا ہوا ڈاڑھی مونچھ و سرسٹا کے دناخن کٹائے ہوئے کانوں
 کے روبرو یا گنوکے مقام یا دھت کی جڑ میں قیام کرے جنگل میں کٹی بنا کر سی سی لکڑی کیوں کہا جی
 ۷۹- خواہ بارہ سال کے برت کا آغاز کیا ہے اور وریمب ان میں برہمن اور گنوا
 کی بہت چھوڑائے کیواسطے پران کا تیاگ کرے تو سو وقت برہمن بہت سے چھوڑتا ہے۔

ब्रह्महादादशसमाः कुटीं कृत्वा वने वसेत् ॥ भैसाश्यात्मविशु-
द्धयर्थं कृत्वा शवशिरो ध्वजम् ॥ ७२ ॥ लक्ष्यं शस्त्रं च तां वा स्याद्वि-
दुषामिच्छयात्मनः ॥ प्रास्ये रात्मानमग्नौ वा समिद्धे त्रिखा-
कशिराः ॥ ७३ ॥ यजेत वा श्वमेधेन स्वर्जितागो सवेन वा ॥
अभिजिह्विष्वजिह्वां वा त्रिहतामिषु तापि वा ॥ ७४ ॥ जयन्
वान्यतमं वेदं योजनानां शतं व्रजेत् ॥ ब्रह्महत्यापनोदायमि-
तमुद्धृत्य नियतेन्द्रियः ॥ ७५ ॥

۷۲۔ براہمن کو ماریوالا اپنے پاک ہونے کی واسطے جھگین کٹی بنا کر بارہ برش کات اسمین
رہے جس براہمن کو مارا ہو اسکا شتر دھو جائیں رکھ کر پیکھ مانگے یہ پڑا شت نرگن براہمن کے
ماریہمین گنواں براہمن کو بدوٹا اچھا کے جانتا۔
۷۳۔ خواہ اپنی خواہش کے علم سلی کو جاننے والے آدمیوں کے سلی کا نشانہ ہو کہ یا نیچے
شتر کے تین دفعہ اپنی آٹا کو گن گن کر ڈالے یہ پڑا شت ہی اور آگے کے شلوک میں جو سویدہ
کیا کہیں گے وہ بھی نرگن براہمنوں کو گنواں کشتری اچھا سے مارے وہاں جانتا۔
۷۴۔ خواہ سویدہ سویدہ کو سب بھجوت بھجوت ترورت کشتوت اھون میں سے کوئی ایک
کیٹ کر یہ پڑا شت اگیان براہمن کو مارے وہاں براہمن وغیرہ تینوں دن کو
جانتا۔

۷۵۔ برہم ہتیا چھوڑنے کی واسطے تھوڑا بھوجن کرنا ہوا اندر یوں بر غالب ہو کر کسی ایک
وید کو پڑھنا ہوا سوچن گن کرے یہ بھی اگیان سے براہمن ذات کے مارنے میں براہمن
کشتری دلشہ کو پڑا شت جانتا۔

ब्राह्मरास्यरुजः कल्याणातिरघ्रेयमद्योः ॥ जैर्यं च मे धुनं पुं-
 सिजातिभंशकरं रत्नम् ॥ स्वराश्वोऽष्टमगेभानामजाविकवध-
 स्तथा ॥ संकरीकरां जेयं सीनाहिमहिवस्य च ॥ ६८ ॥ निनि-
 तेभ्यो धनारानं वाशिज्यं ह्यहमेवनम् ॥ अपात्रीकरां जेय-
 मसत्यस्य च भावशाम् ॥ ६९ ॥ कृमिकीरवयो हत्यामद्यानुग-
 तभोजनम् ॥ फलैधः कुसुमस्तेयमर्धैर्यं च मलावहम् ॥ ७० ॥
 सतान्येनां सिसर्वा शिथयोक्ता निश्चयकथयक ॥ यैर्यैर्ब्रतैरयो-
 ह्यन्तेतानि सम्यङ् निबोधत ॥ ७१ ॥

۶۶۔ براہمن کو ڈنڈ و نیلے ہاتھ پاتون وغیرہ کی ایذا دینا آگن و پیشاب شراب کا نہ گھنا
 کٹل بنانا شہر وغیرہ میں جماع کرنا یہ سب ذرات کو بھوسٹ کر نیوالے ہیں۔
 ۶۸۔ گردہ گھوڑا۔ اونٹ۔ ہاتھی۔ بکرا۔ بھیڑ۔ اٹھلی۔ سانپ۔ بھینسا۔ انھون کا مارنا شکاری۔
 کرن کہلاتے ہیں۔

۶۹۔ شذت آدمی سے وصل لینا بنیا کا کام کرنا شور و کاسیون کرنا جھوٹا بولنا یہ اپاتری
 کرن کہلاتے ہیں۔

۷۰۔ چھوٹے کیرے بڑے کیرے و پرند انھون کا مارنا کھانے کے لائق چیز پیاری میں رکھی
 ہوئی شراب کے ساتھ آئی ہوئی ہوس چیز کا کھانا پھل و لکڑی و پھول کا چورانا دھیرج کرنا
 یہ سب نلادہ کہلاتے ہیں۔

۷۱۔ یہ سب پاپ علیحدہ علیحدہ کہے یہ سب جس جس برت کر نیسے و دوسرے ہیں ان برتن
 کو کہتے ہیں۔

سर्वाकरेष्वधीकारो महायंत्रप्रवर्तनम् ॥ हिंसौषधीनां रूपा
जीवोऽभिचारो मूलकर्मच ॥ इन्धनार्थमशुष्काराण्डुमाराणां
मवपातनम् ॥ आत्मार्थचक्रियारम्भो निन्दितान्नादनं तथा ॥
६४ ॥ अनाहिताग्नितास्तेयसूराणामनयक्रिया ॥ असच्छा-
स्त्राधिगमनं कौशीलव्यस्य चक्रिया ॥ ६५ ॥ धान्यकुप्ययशु-
स्तेयं मध्यपस्त्रीनियेवरां ॥ स्त्रीश्च विद्वत्सत्रवधो नास्तिक्यं
चोपपातकम् ॥ ६६ ॥

۶۴۔ سونا وغیرہ کی پیدائش کا جو مقام ہے سپر حکم حاکم وقت اختیار ہونا پل وغیرہ کا بانہا
دواؤں کا مارنا یعنی کشتہ بنانا اپنی عورت کو کسی بنا کر دوسرے مرد کے جماع سے جو دولت ملی
اس سے اوقات بسر کرنا ستر تین لکھے ہوئے مارن پر لوگ کو کرنا منتر یا دویر وغیرہ کے
ذریعہ سے بسی کرن کرنا۔

۶۴۔ ایندھن کی واسطے کیلے درخت کو گرانا بدون دیوتا و پتروں کے صرف اپنے ہی واسطے
کھانا بنانا بدون خواہش کے ایک دفعہ لسن وغیرہ جو کھانے کے لائق نہیں ہے
اسکو کھانا۔

۶۵۔ ادھکار ہوتے ہوئے گن ہو تر کو ترک کرنا سونا چھوڑ کر چاندی وغیرہ چورانا تینوں گن
یعنی ریش رن دیورن پترن کو نہ ادا کرنا دید و دھرم ستر کے خلاف جو ستر ہے
اسکو کھانا چنا گانا بجانا۔

۶۶۔ دھانیہ تانیا ولوبا وغیرہ دچا پایہ کا چورانا برہمن کشتی دیشیہ کی ستر اپنی عورت
جماع کرنا ستری دشوور و دیشیہ و کشتی اہنوں کا مارنا پر لوگ نہیں ہے ایسا سمجھنا یہ
سب ایک ایک اپ پاپات کھاتے ہیں۔

रेतः सेकः स्वयोनी यु कुमारी धन्यजा सुच ॥ सरस्युः पुत्रस्य च
स्त्री यु गुरु तल्प समं विदुः ॥ ५८ ॥ गोवधोऽयान्य संयाज्य पार
दार्यात्म विक्रयाः ॥ गुरु मातृ पितृ त्यागः स्वाध्यायाग्न्योः सु
तस्य च ॥ ५९ ॥ परि वि त्ति ता नु जेऽचूढे परि वेदन मेव च ॥ तथो
र्दानं च कन्यायास्तयोरेव च याजनम् ॥ ६० ॥ कन्याया दूषणं चै
व वार्द्ध्यं व्रतलोपनम् ॥ तडागारा मदाराराम पत्यस्य च वि
क्रयः ॥ ६१ ॥ ब्राह्म्यता वान्धव त्यागो भृत्या ध्यापन मेव च ॥
भृताश्चाध्ययनादाना मपरायानां च विक्रयः ॥ ६२ ॥

۵۸۔ سگی بہن اور کماری اور چانڈالی اور درگست کی زوجہ اور بیٹے کی زوجہ انھوں کے ساتھ
جماع کرنا والدہ کے ساتھ جماع کرنا بیکے برابر ہے۔

۵۹۔ گھو کو مارنا جو گھیکہ کر نیکی لائق نہیں ہے اسکو گھیکہ کرنا دوسرے کی زوجہ سے جماع کرنا اپنی
آتما کو فروخت کرنا گھر دار اور ماما اور نیا کو ترک کرنا دیدہ خوانی اور اگن کی سیوا اور بیٹیا کو ترک کرنا
۶۰۔ بے شادی بڑے بھائی کے ہوتے پر چھوٹے بھائی کی شادی ہو جانا اور ارنج ہون
بھائیوں کو کنبیا دینا اور انکو بیکہ کرنا۔

۶۱۔ کنبیا کی فرج میں اولگی ڈالکر باعیب کرنا سود لیکر زندگی بسر کرنا برہم چاری ہو کر جماع
کرنا تالاب و باغیچہ و عورت و بیٹے کو فروخت کرنا۔

۶۲۔ وقت پر حنیو کا ہونا چاہا وغیرہ کی سیوا نہ کرنا دولت لیکر پڑھانا دولت دیکر پڑھنا
قل وغیرہ جو فروخت کر نیکی لائق نہیں ہیں انکو فروخت کرنا۔

एवं कर्म विशेषेण जायन्ते सहिर्गहिताः ॥ जडमूकान्धवधिरा-
 विकृताकृतयस्तथा ॥ ५२ ॥ चरितव्यमतो नित्यं प्रायश्चित्तं वि-
 श्रुज्ये ॥ निन्दैर्हिलसरोर्युक्ता जायन्तेऽनिष्कृतैः नसः ॥ ५३ ॥
 ब्रह्महत्यासुरापानं स्तेयं गुर्वगनागमः ॥ महान्तिपातकान्या-
 हुः संसर्गश्चापितैः सह ॥ ५४ ॥ अन्तं च समुत्कर्षे राजगामि च
 पैशुनम् ॥ गुरोश्चात्मीकनिबन्धः समानि ब्रह्महत्यया ॥ ५५ ॥
 ब्रह्मोज्झता वेदनिन्दा कोटसाहस्यं सुहृद्वधः ॥ गर्हितानाद्ययो-
 र्जग्धिः सुरापानसमानिषद् ॥ ५६ ॥ निक्षेपस्यायहरां नरा-
 श्वरजतस्य च ॥ भूमिवन्नमराणां च रुक्मस्तेयसमं स्मृतम् ॥
 ५७ ॥

۵۲- آدمی اس راہ کھوٹا کام کر کے بھلا لوگوں میں مذمت ہوتا ہے اور جاہل و گونگے و
 اندھے و بہرے و غیرہ عیوب کو پاتا ہے۔
 ۵۳- اس لیے پاک ہو نیکی واسطے ہمیشہ پرستش کرین جنھوں نے پرستش نہیں کیا وہ مذمت لکشتی ہیں
 ۵۴- برہم ہستی شراب خوری برہمن سنگاوشلشہ یا زیادہ سونا چرانا دالہ سی جماع یہ چار
 مہا پاپ ہیں انھوں کے ساتھ میل و ملاپ کرنے سے پانچو ان مہا پاپ تک ہے۔
 ۵۵- سبب ذات ہو کر کہ ہم پری ذات والے میں اس طرح جھوٹ بولنا اور کسی کا قسم کاوش
 کر کے کہنے سے اسکی موت ہو راج کے روبرو کہنا کر دوسے جھوٹ بولنا یہ سب ہم ہتیا کے برابر ہیں
 ۵۶- پڑھے ہوئے وید کو بھولنا وید کی برائی کرنا گواہ ہو کر جھوٹ بولنا دوست کو مارنا لسن
 وغیرہ کھانا لٹا وغیرہ کا کھانا یہ سب شراب نوشی کے برابر ہیں۔
 ۵۷- زمانت و آدمی و گھوڑا و چاندی و زمین و سیرا و لسن جھوٹا چرانا سونا چوڑے کے برابر

۴۶۔ کامات: کھت پاپ پندہ مہا سے ن سھتھتھ ॥ کامات ستھ کھت مہا
 تھاتھ شتھتھ: ۲۲ گھتھ: ॥ ۸۶ ॥ پھاتھ شتھتھتھ پھاتھ دھتھتھ
 وھتھتھتھ ॥ ن س س گ گ جھتھتھتھ: پھاتھ شتھتھ: کھتھتھتھ: ॥ ۸۷ ॥
 ۴۷۔ رھتھ شتھتھ: کھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھ ॥ پھاتھتھتھتھتھتھتھتھتھ
 ن رھتھتھتھتھتھتھتھ ॥ ۸۸ ॥ سھتھتھتھتھ: کھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھ
 دھتھتھتھ ॥ رھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھ ॥ ۸۹ ॥
 پھتھتھتھ: پھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھ: پھتھتھتھتھتھتھ ॥ دھتھتھتھتھتھتھ
 گھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھ: ۹۰ ॥ شتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھ
 مہتھتھتھتھتھتھتھتھتھ: ۹۱ ॥ رھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھتھ
 رھتھ: ۹۲ ॥

۴۶۔ ہر دن خواہش کے کیا ہوا پاپ وید کی مہارت سے چھوٹتا ہے اور شوق سے جو پاپ کیے
 وہ انواع اقسام کے پریشیت کر نیے چھوٹتے ہیں۔
 ۴۷۔ برلقاھا مقسوم پہلے جنم میں کئے ہوئے پاپ سے پریشیت کے لائق ہو کر جھونک
 ساتھ بھوجن و قیام و تبلیگی و غیرہ ملاپ کرے۔
 ۴۸۔ کوئی آدمی اس لوگ میں کھوٹے کام کر نیے اور کوئی آدمی پہلے جنم میں کھوٹے
 کام کرنے سے بد صورتی کو پاتے ہیں۔
 ۴۹۔ سونا پورا نیوالا شراب پینے والا برہمن کو بار نیوالا گورو کی عورت سے جمع کر نیوالا
 سلسلہ ناخن کا کارہ پیدائش سے سیاہ و دھڑاں کشتی روگ ناقص جلد پاتا ہے۔
 ۵۰۔ چنل خور اشارہ سے کام کو جاننے والا و بھائیہ چور نیوالا ملاوٹ کر نیوالا یہ سلسلہ
 برہمنی و برہمن کسی عضو کا نہ ہونا اور کسی عضو کا زیادہ ہونا ان عیب کو پاتے ہیں۔
 ۵۱۔ غلہ چور نیوالا جانکر چپنے وال کپڑا چور نیوالا گھوڑا چور نیوالا سلسلہ سو عام روگ
 گولگان سفید کوڑھ لنگر ان کو پاتے ہیں۔

इन्द्रियाण्यशःस्वर्गमायुःकीर्त्तिप्रजाःपशून्॥ हन्यत्यद-
क्षिराण्यजस्तस्मान्नल्पधनोयजेत्॥ ४०॥ अग्निहोत्रमपवि-
ध्यान्नीन्ब्राह्मणाःकामकारतः॥ चान्द्रायणांचरेन्मासवीर-
हत्यासमंहितत्॥ ४१॥ येशूद्रादधिगम्यार्थमग्निहोत्रमुपा-
सते॥ बह्विजस्तेहि शूद्राणां ब्रह्मवार्त्तिषु गर्हिताः॥ ४२॥ ते-
षां सततमज्ञानांच यस्तान्युपसेविनाम्॥ यशस्तकमाक-
म्यदाता दुर्गारि सन्तरेत्॥ ४३॥ अकुर्वन्विहितं कर्म निन्दितं-
च समाचरन्॥ प्रशक्तश्चेन्नियार्थेषु प्रायश्चित्तीयते नरः॥ ४४॥
अकामतः कृते यापे प्रायश्चित्तं विदुर्बुधाः॥ कामकारकतेऽ-
प्याहरे केचुति निर्दर्शनात्॥ ४५॥

۴۰- مخدوری دشنام الی گیتی اندری لیش سوگ عمر نکلیسی اولاد چار پایہ ان سب کو نیت پائو کرتی ہے، سیکے مخدور او دھن والا گیتی نکرے۔

۴۱- اگر بوتری برہمن خواہش سے صبح و شام ہون نکرے تو بیٹا مارنے کا پاپ ہوتا ہے اس پاپ دور ہونیکے واسطے ایک مہینہ چاندراہن برت کرے۔

۴۲- جو برہمن شودر سے دھن لیکر اگر بوتر کرنا ہے وہ شودری کا رتوج ہوتا ہے اسکو کچھ پھل نہیں ہوتا اور وید پڑھنے والے برہمنوں میں سنت کھاتا ہے۔

۴۳- وہ شودر وہیہ دینے سے اپنے رتوجون کے ماتھے پر پانون دھو کر نرک کو ترنا ہے اور رتوجون کو کچھ پھل نہیں ہوتا۔

۴۴- شاستر میں لکھے ہوئے کرم کو نہ کرنے سے اور آسنت کرم کرنے سے اور اندریوں کے مطالب میں بدل متحول ہونے سے آدمی پر اپسخت کرنیکے لائق ہوتا ہے۔

۴۵- پیڑتوں نے برہمن خواہش کے پاپ کرنے میں پر اپسخت کو کہا اور خواہش سے پاپ کرنے میں بھی وید کے حکم سے پر اپسخت ہے۔

सत्रियोवाहवीर्येरातरेदापदमात्मनः ॥ धनेनैवैश्वर्यं ह्येव तु जय-
होमेर्द्धिजोत्तमः ॥ ३४ ॥ विधाताशासितावक्तामैत्रोवाह्वराउ-
च्यते ॥ तस्मैनाकुशलं ब्रूयान्नशुष्कांगिरमीरयेत् ॥ ३५ ॥ नवै-
कान्यानशुवतिर्नाल्पविद्यो न बालिशः ॥ होतास्यदग्निहोत्रस्य
नार्तोनासंस्कृतस्तथा ॥ ३६ ॥ नरकेहियतन्त्येतेजुह्वतः सच-
यस्यतत् ॥ तस्माद्वैतानकुशलो होता स्याद्वेदपात्रगः ॥ ३७ ॥ प्रा-
जापत्यमदत्त्वाश्वमग्न्याधेयस्यदक्षिरागम् ॥ अनाहिताग्नि-
र्भवति ब्राह्मणो विभवे सति ॥ ३८ ॥ पुरायान्यन्यानि कुर्वीत-
अदधानोजितेन्द्रियः ॥ नत्वल्पदक्षिरोर्यज्ञैर्यजेतेह कथंचन
॥ ३९ ॥

۳۴ - کشتری اپنی قوت بازو سے اور دیشیہ اور شور و دون دولت سے اور برہمن جیہ
ہون سے وقت مضیبت کو بھر کریں۔

۳۵ - جو برہمن تناسل میں لکھے ہوئے کرم کا کر میوالا اور بیٹے اور شاگرد وغیرہ کو پڑھائیے
دیہ شجرت وغیرہ کو کہتے والا اور سب جانداروں سے دوستی رکھنے والا ہے اسکو نام غوب بات
و سخت کلمہ کہنا چاہیے۔

۳۶ - کینان اور جوان اور تھوڑے علم والا اور مورکھ یعنی بیوقوف اور بیمار اور چنبیڑ کو کہنے والا
یہ سب وقت صبح و شام اگن ہو تر نہ کریں۔

۳۷ - اگر ان سب کو کریں تو نرک میں جاتے ہیں اور جلی اگن دے لینے جو جہان ہے وہ
بھی نرک میں جاتا ہے ایسے جو وید کے پار گیا ہوا اور اگن ہو تر نہ کر کے کو جانتے والا ہو ہی جہان
ہون کرے۔

۳۸ - برہمن کو اسے اگن ہو تر نہ کشتہ جو کھڑا ہو سکے اور دولت ہو کر ہی ہو تو اگن ہو تر نہ کشتہ میں کو نہیں پتہ

۳۹ - جو آدمی انڈیوں کو حیث کر نہ دے اس سے دوسرا پیشہ کرے لیکن تھوڑی دکان سے لینے لکھنے

آپتکالپن یو دھرم کورن تے ۵ نا پدینج: ॥ سنا مو تی فال
 ت س ی پ ر تے تی چی چار ت م ॥ ۲۷ ॥ وی شے شے دے وی: سا دھے شے براہ-
 م ن م دھرمی م: ॥ آپ ت س م ر ر ا ا د ر تے وی دھ: پ ر ت ن ی دھ: ک ت:
 ॥ ۲۸ ॥ پ ر م: پ ر م ک ل پ س ی ی ن ک ل پ ن و ر ت تے ॥ ن س ا پ ر ا ی
 ک ت س ی د ر م تے وی دھ تے فال م ॥ ۳۰ ॥ ن براہ م ر ا ا ۵ و د ی ت ک ی چی
 د ر ا ج ن ی دھ م و ت ॥ س و ی ر ی ر ا و ت ا ن ش ی د ی ا ن م ا ن و ا ن پ ک ا-
 ر ر ا: ॥ ۳۱ ॥ س و ی ر ی ر ا ج و ی ر ی ر ا س و ی ر ی ر ب ل و ت ت ر م ॥ ت س ا
 ت ی ن و ی ر ی ر ا ن ی م ل ل ی ا ن د ر ی دھ ج: ॥ ۳۲ ॥ س ت ر ی ر ی ر ی ر ی
 ر س ا: ک ر ی ا ر ی ت ی چی چار ی ن ॥ و ا ک ش ا س و ی ر ا ا س ی ت ن د-
 ن ی ا ر ی دھ ج: ॥ ۳۳ ॥

۲۸- وقت مصیبت میں ہر اور جو براہمن وقت مصیبت کے دھرم کرنا ہے وہ پر لوک میں
 اس کے پھل کو نہیں پاتا۔

۲۹- موت سے خوفناک شوق دیو دسا دھگن براہمن دبر ریش لوگ ان سچوں نے
 وقت مصیبت میں اچھے دھرم کے خلاف عمل کیا ہے۔

۳۰- مقدم دھرم کے کرنے میں صاحب طاقت ہو کر خلاف دھرم کر نیوالا پر لوک میں
 اس خلاف دھرم کا پھل نہیں پاتا۔

۳۱- دھرم کو جاننے والا براہمن راجہ سے کچھ کمے لیکر اپنی خوشی اٹھائی اور مینو کو سزا
 دی ہے۔

۳۲- راجہ کے پر اکرم سے اپنا پر اکرم بڑا ہے اس لئے براہمن اپنے پر اکرم سے دشمنوں کو نکلنے
 دے۔

۳۳- اٹھرب و انگریش نے جو مارن پر لوگ کہا اس کو کر سہیں کچھ بچا نہ کرے براہمن کی
 بانی ہی سہی بھاری اس سے دشمنوں کو مارے۔

तस्य भृत्यजनं ज्ञात्वा स्वकुटुम्बा न्महीयतिः ॥ श्रुतशीले च
विजाय च त्तिंधर्म्यां प्रकल्पयेत् ॥ २२ ॥ कल्पयित्वाऽस्य च-
त्तिं चरसेदेनं समन्ततः ॥ राजा हि धर्मवड्भागं तस्मात्प्राप्नोति
रसितात् ॥ २३ ॥ न यज्ञार्थं धनं श्रृङ्गा द्विप्रौ भिक्षेत कर्हिचित् ॥
यजमानो हि भिक्षित्वा चाराडालः प्रेत्य जायते ॥ २४ ॥ यज्ञार्थं
मर्थं भिक्षित्वा यो न सर्वं प्रयच्छति ॥ स याति भाषतां विप्रः का-
कतां वा शतं समाः ॥ २५ ॥ देवस्वंब्राह्मणस्वंबालोभेनोपहि-
नस्ति यः ॥ स या पात्मापरे लोके शुद्धोच्छिद्ये न जीवति ॥ २६ ॥
इक्ष्वैश्वानरीं नित्यं निर्वपेद्द्वयं यये ॥ लहृपानां पशुसोमा-
नां निष्कृत्यर्थमसम्भवे ॥ २७ ॥

۲۲۔ راجہ برہمن کے نوکر و عیال اطفال و یتیمانی کی عادت ان کو جان کر دھرم سے مشمول وجہ معاش کو مقرر کرے۔

۳۴۔ براہمن کی وجہ سے اس کی حفاظت چاروں طرف ہو کر اس حفاظت سے براہمن جو دھرم کر لیا اس کا چھٹھو ان حصہ راجہ یاد لگا۔

۲۴ - براہمن اگیہ کے لئے شودر سے کبھی دھن نہ مانگے اگر مانگ کر اس دھن سے اگیہ لے لے تو دوسرے جہنم میں چاندال ہوتا ہے۔

۲۵۔ یکجہ کیواسطے بھی حکم نامہ کر دینا فرام کر کے تمام دولت کو یکجہ میں نہ لگا دے تو تنہا حکم نامہ بھاس نام سرندا رو کو آیتنا ہے

۲۷۔ جو آدمی طبع سے برہمن کی درجہ اور دیوتائی کی درجہ بریاد کرتا ہو وہ پانی پر لوک میں گندم

۲۔ پس گیہ و سوم گیہ تمام سال میں ایک مرتبہ کرنا چاہئے اگر یہ بنوسکے تو اسکی پٹھت

تथैव सप्तमे भक्ते भक्तानि षडनश्नता ॥ अश्वस्तनविधाने
न हर्तव्यं हीनकर्मणाः ॥ १६ ॥ खलात्सेनादगाराद्वायतो वा-
युपलभ्यते ॥ आख्यातव्यं तु तत्तस्मै पृच्छते यदि पृच्छति १७
॥ ब्राह्मणास्व न हर्तव्यं क्षत्रिये राकदाचन ॥ दस्युनि विक्रिय-
योस्तु स्वमजीव न हर्तुमर्हति ॥ १८ ॥ योऽसाधुभ्योऽर्थमाशय
साधुभ्यः संप्रयच्छति ॥ सक्तत्वा सवमात्मानं संताप्य तिता-
बुभो ॥ १९ ॥ यद्धनं यज्ञशीलानां देयं स्वतद्विदुर्बुधाः ॥ अय-
ज्वनां तु यद्वित्तमासुरस्य तदुच्यते ॥ २० ॥ न तस्मिन्धारयेद्दण्डं
धार्मिकः प्रथिवीपतिः ॥ क्षत्रियस्य हि बालिश्याद्वाह्नराः
सीरति सुधा ॥ २१ ॥

۱۶- دن میں دو دفعہ بھوجن کرنا شاستر کا حکم ہے جو کسی برہمن نے چھ دفعہ بھوجن نہیں کیا
یعنی تین دن فاقہ ہوا اور چھ دن ایک دفعہ کیوں اسے بھی بھوجن ہو تو بڑا کام کرنا پڑے
سے چوری کر کے لینا چاہئے

۱۷- گھلیان سے یا کھیت سے یا گھر سے یا جہان سے ملے دہانے غلہ چوراہے اور
غلہ کا مالک پوچھے کہ تم نے کہاں سے غلہ چورایا تب کہہ دے۔

۱۸- کشتری برہمن کا دھن کبھی نہ لیوے اور نہایت وقت تعہیت ہو تب کھوٹا کام کرنا
اور شاستر میں کہے ہوئے دھرم کو چھوڑنا اور برہمن و کشتری کے گھر سے چوری کرے۔

۱۹- جو آدمی آسادھ لوگوں کو روپیہ لیکر آسادھ لوگوں کو دیتا ہے وہ اپنے کو نا دیہی کشتی بنا کر دلوں کو تاراج

۲۰- بیکہ کرنا لوں کا دھن دلوں کا دھن اور بیکہ کرنا لوں کا دھن دھن کرنا کشتی کا دھن
کہلاتا ہے اس طرح پنڈتوں نے کہا ہے۔

۲۱- ایسے کرم میں جبکہ بیان اوپر ہوا راہ نہ ملے کیونکہ راہ نہ ملے سے برہمن کھ
سے دکھی ہوتا ہے۔

यो वैश्यः स्याद्वत्पशुर्हीनः कतुरसो मयः ॥ कुदुस्वात्तस्य तद्व-
 व्यमाहरेद्यज्ञसिद्धये ॥ १२ ॥ आहरेत्वीशिवादेवा कामं शु-
 द्रस्यवेश्मनः ॥ नहिं शूद्रस्य यज्ञेषु कश्चिदस्ति परिग्रहः ॥ १३ ॥
 ॥ योऽनाहिताग्निः शतयुरयज्वाचसहस्रगुः ॥ तयोरपि कु-
 दुंबाभ्यामाहरेदविचारयन् ॥ १४ ॥ आशाननित्याद्यादातु-
 राहरेदप्रयच्छतः ॥ तथा यशोस्य प्रयते धर्मश्चैव प्रवर्धते ॥
 ॥ १५ ॥

۱۲- توجو دیشیہ پاک یگیہ اور سووم یگیہ نکر تا سو اور بہت چار پایہ (یعنی گنو وغیرہ) رکھتا ہو اسکے
 گھر سے اس الگ یعنی سامان کے لائق دولت کو زور سے یا چوری سے یگیہ کر نیوالا لیوے
 ۱۳- جب یگیہ کے دو الگ (یعنی سامان) خواہ تین الگ بدون دریبہ کے پورے نہیں
 ہو سکے اور دیشیہ سے بھی دھن نہیں ملتا نو ستود کے گھر سے زور سے یا چوری سے دھن لینا
 منع نہیں ہے۔

۱۴- جو شخص اگن ہو تری نہیں ہے اور تنگو گنو پاس رکھتا ہو یا یگیہ نہیں کرتا اور نہ زور گنو رکھتا ہو
 دونوں کے گھر سے یگیہ نا انگ پورا ہو سکے واسطے دھن لیوے اس میں کچھ بچا نہ کرے۔
 ۱۵- جو براہمن ہر روز دان لیتا ہے اور بادلی دکان و تالاب میں کھڈاتا ہو اور یگیہ
 نہیں کرتا اور دان نہیں دیتا ہے اس سے یگیہ کا بوبگ پورا ہونے کے واسطے دھن مانگا
 اور وہ نہیں دیتا ہے تو زور سے یا چوری سے اس کے گھر سے دھن لیوے اس سے لینے دے
 کی شہرت ہوتی ہے اور دھوم مچھتا ہے۔

۴۔ جو براہمن زن و فرزند کی پرورش میں ہوا اور دید پڑھتا ہو راجہ اسی براہمن کو اپنی قسط
 کے موافق دولت دیوے وہ راجہ اس لوگ اور پرلوک کو حاصل کرتا ہے۔
 ۵۔ جس آدمی کے پاس نوکر دزن و فرزند وغیرہ زیر سایہ رہنے والے کے خرچ کے لائق تین
 سال تک کھانے کے واسطے غلہ موجود ہے وہ سوم یگیہ کرے لائق ہے۔
 ۸۔ اس سے کم دولت رکھنے والا سوم یگیہ کرے تو اسکا چل سنین پاتا۔
 ۹۔ غیر آدمیوں کو غلہ دینے میں صاحب نقد درہی اور اپنی عیال و اطفال کو کھانا سنین
 دینا اور دس عیال و اطفال تکلیف سے بسر کرتے ہیں اسکا آدمی دھرم کرنوا لا سنین کر
 پہلے نیکنامی ملتی ہے پیچھے ترک ملتا ہے۔
 ۱۰۔ جو شخص نوکر دچا کر دزن و فرزند وغیرہ کو دکھ و کیر پرلوک کے واسطے دان وغیرہ کرتا ہے
 دان اسکی زندگی تک ہو بعد مرے دکھ دینے والا ہے۔
 ۱۱۔ دھرم اتاراجہ کے موجود ہوئے جس براہمن یا کستری یگیہ کی سام گری کا کوئی ایک
 سامان طیار نور

سائناتیکانکسماہارامادھوگسار्ववेदसम्॥ शुर्वर्थपितृमात्रं
 स्वाध्यायार्थुपतापिनः॥ १॥ नवेतान्नातकान्विद्याद्वाहारा
 न्धर्मभिष्कुनः॥ निःस्वेभ्योदेयमेतेभ्योदानंविद्याविशेषतः
 ॥ २॥ सतेभ्योहिद्विजाद्येभ्योदेयमन्नंसदक्षिराम्॥ इतरेभ्योव
 हिर्वेदिकतानंदेयमुच्यते॥ ३॥ सर्वरत्नानिराजातुयथाहंप्र
 तिपादयेत्॥ ब्राह्मरान्वेदविदुषोयज्ञार्थंचैवदक्षिराम्॥ ४
 ॥ कृतदारोऽपराक्षरान्भिसित्वायोऽधिगच्छति॥ रतिमात्रं
 फलंतस्यद्रव्यदातुस्तुसत्ततिः॥ ५॥

۱۔ شادی کی خواہش کر نیوالا جو شمعوم وغیرہ بگیہ کی خواہش کر نیوالا مسافر سب جن کشتیاں
 بسوجت نام بگیہ کو کر نیوالا وڈیا کرو دانا پتا ان تینوں کو کھانا و کپڑا دینے والا وقت پڑھنے
 وید کے کھانے اور کپڑے کی خواہش کر نیوالا بیمار

۲۔ یہ تو براہمن شاکت کہلاتے ہیں یعنی برہم چاری کشتا ہیں اور دھوم بھگتا کا بھلا
 رکھتے ہیں یہ سب بے رزہوں تو انکی دویا کے لائق سونا وغیرہ دینا چاہئے۔
 ۳۔ یہ تو براہمن افضل ہیں انکو بیدی کے اندر غلام و کشتا دینا چاہئے اور جو براہمن
 سبواپن انکو بیدی کے باہر طیار کھانا دینا کہتے ہیں۔

۴۔ راجہ وید پڑھنے والے براہمن کو اوسکی دویا کے لائق سب رتن دیو اور بگیہ کے
 واسطے بھی دکتا دیو ہے۔

۵۔ پہلی عورت موجود ہو اور بھگتا سے دولت فراہم کر کے اس روپیہ سے دوسری شادی
 کر کے تو اسکو صرف جماع کا لطف ملتا ہے اور اولاد اسکی کی ہے جسے دولت دی۔

۶۔ چونکہ اس ادھیائے میں پراشچتوں کو بیان کیا جائیگا اس واسطے پہلے ان براہمنوں کو بیان کیا جو کہ ان دیکھ کے لائق
 ہیں۔

एतेचतुर्णांवरानामापहर्माःप्रकीर्त्तिताः॥यान्मन्यगनुति
सत्तोन्नयनियरमांगतिम्॥१३०॥सबधर्मविधिःकृत्स्नश्चातु-
र्वरार्थस्यकीर्त्तितः॥अतःपरंप्रवक्ष्यामिप्रायश्चित्तविधिंशुभम्
॥१३१॥

इतिमानवेधर्मशास्त्रेभृगुप्रोक्तायांसंहितायां
दशमोऽध्यायः२०

۱۰۔ وقتِ عصیّت میں چارو ورن کیواسطے اس دھرم کو کہا جس دھرم کے کرنے سے پر مکت کو پاتا ہے۔

۱۱۔ چارو ورنوں کا یہ طریق دھرم کہا اس کے بعد پریشیت (یعنی کفار) کے نیک طریق کہتے ہیں۔

من جي کا دھ شرم ستر بھگ سرجي کي سنگھتا کا
دسون ادھيا سماپت ہوا۔

नमृद्देधातकं किंचिन्नच संस्कारमर्हति ॥ नास्याधिकारो धर्म
ऽस्ति न धर्मात्यतिवेधनम् ॥ १२६ ॥ धर्मेष्ववस्तु धर्मज्ञाः सतां वृत्त
मनुचिताः ॥ मंचवर्ज्यं ननु व्यंति प्रशंसां प्राप्नुवन्ति च ॥ १२७ ॥ य
था यथा हि सह तमातिष्ठत्यनसूयकः ॥ तथा तथे मंचा मुंचलो
कं प्राप्नोत्यनिंदितः ॥ १२८ ॥ शक्तेनापि हि श्वेदे रानकार्यो धनसं
चयः ॥ श्वरो हि धनमासाद्य ब्राह्मणानेव वाधते ॥ १२९ ॥

۱۲۶۔ شودر کو لسن وغیرہ کھانے سے پاپ بہین ہوتا اور شودر کو جینیو وغیرہ سنسکار
بھی بہین ہے اور اگر ہو تو وہ غیر دھرم کا اور بھکاری بھی بہین ہے پاک بیکیشہ وغیرہ دھرم کی
ممانعت بہین ہے دیر بات تو کہہ آئے ہیں مگر شکوک آمیزہ کیوں اسلئے اصل بات کا ظاہر
کرنیوالا ہے۔

۱۲۷۔ اپنے دھرم کو جاننے والا دھرم کی خواہش کرنیوالا دھرم کے ناقص آچار کرنیوالا جو
شودر ہے وہ نہ شکار منتر سپینج یگیہ کو کرے اور انکو ترک کرے تو اس لوک میں نہ کیٹا سی
حاصل کرتا ہے۔

۱۲۸۔ دوسرے کے گن کی نندنا کر نیوالا شودر جس جس طرح بھلا لوگوں کے آچرن کو
کرتا ہے اسی طرح اس لوک میں بڑا کماتا ہے اور پر لوک میں سوگ پاتا ہے۔

۱۲۹۔ شودر سمر تھ بھی ہو مگر دولت جمع کرے کیونکہ شودر دولت پا کر براہمن ہی کو تکلیف
دیتا ہے۔

शुद्धस्त्वितिमाकांक्षन्सर्वभाराधयेद्यदि॥ धनितं वा धन्यपारा-
 ध्यवैश्यं शुद्धीजिजीवियेत॥ १२१॥ स्वर्गार्थमुभयार्थं वा विप्रा-
 नाराधयेत्तुतः॥ जानब्राह्मराशब्दस्य साह्यस्य कृतकत्वता॥
 १२२॥ विप्रस्यैव शुद्धस्य विशिष्टं कर्म कीर्त्यते॥ यदतोऽन्यद्वि-
 कृतते तद्वज्रस्य निष्फलम्॥ १२३॥ प्रकल्प्या तस्यैव तत्तिः
 त्वकुटुम्बाद्यथाईतः॥ शक्तिं चावेक्ष्य दास्यं च भृत्यानां च परि-
 ग्रहम्॥ १२४॥ उच्छिष्टमन्नं दातव्यं जीर्णानि वसनानि च॥ शु-
 लकाश्चैव धान्यानां जीर्णाश्चैव परिच्छेदाः॥ १२५॥

۱۲۱- شود بر این کی سیوا سے اوقات گزاری کر سکے اور وہ سری جو کاکلی جو این کرے
 تو کشتی کی سیوا یا درویش کی سیوا کرے اوقات بسر کرے۔
 ۱۲۲- شود در شورگ یا جو کا و شورگ و دون کیو سیوا کرے بر این کی سیوا کرے یہ شود بر این کی
 سیوا کرے یا اسے اسطرح عالم میں مشہور ہونا لیا ہے کہ گویا شود کر نیکی لائق سب کاموں کو
 کر چکا۔

۱۲۳- بر این کی سیوا شود کا برا کو م ہے اسکو چھوڑ کر اور جو کچھ کرتا ہے وہ نیک ہے۔
 ۱۲۴- بر این اپنے خد شکر شود کی سیوا میں طاقت اور کام کرنے میں خوشی اور زن و
 فرزند وغیرہ کی غذا اور اونکا خرچ ان سب باتوں کو دیکھ کر اپنے گھر سے اسکے لائق جو کاکو
 بخویر کرے۔

۱۲۵- جو شود را پنا خد شکر اور اپنی پناہ میں ہے اسکو جو ٹھانلہ اور پرانا کپڑا وغیرہ ساز کا
 دھانیہ دیرانی چارپائی و گھوڑا پرانا اسباب دینا چاہئے۔

विद्याशिल्पं भूतिसेवागोरक्षं वियोगिः कृषिः ॥ धृतिर्भैक्ष्यं-
कुसीदं च दशजीवनहेतवः ॥ ११६ ॥ ब्राह्मणाः क्षत्रियो वापि
प्रद्धिर्नैव प्रयोजयेत् ॥ कामन्तु स्वलुधर्मार्थं रक्षात्पापीयसे ॥
लिपिकाम् ॥ ११७ ॥ चतुर्थमादरा नोऽपि क्षत्रियो भागमापदि ॥
प्रजारसन्परं शक्या कित्ति वात्यतिमुच्यते ॥ ११८ ॥ स्वधर्मो
विजयस्तस्य नाहवे स्यात्पराङ्मुखः ॥ शास्त्रेणावैश्यान् रक्षि-
त्वा धर्ममाहास्ये हलिम् ॥ ११९ ॥ धान्येष्टमं विशां सुत्कं विशं
कार्या पराचरम् ॥ कर्मोपकरणाद्भद्राः कारवः शिल्पिनस्त-
था ॥ १२० ॥

۱۱۶- دو پائین دید کے سواے دیگر علوم اور لکھنا وغیرہ مزدوری و سیو و پردر ش گنو و خدمت
و فروخت و کھیتی کرنا و دھیرج و بھیکہ و بیاج لینا یہ و سب اس سبب اوقات گذاری میں لوگوں
معیشت میں جو وجہ معاش صکون ہے وہ آدے وقت معیشت میں اس معاش کو اختیار
۱۱۷- برہمن و کشتی بیاج نہ لیوں یا برا کام کر نیوالے کو دھرم کے واسطے تھوڑا سیاج
لیکر رز مطلوبہ دیوں۔

۱۱۸- کشتی اپنی طافت کے موافق پردر ش رعایا کرتا ہوا وقت معیشت میں رعایا
جو تھا حصہ لیکر پاپ سے چھوٹتا ہے۔

۱۱۹- سلوٹن سے فتح کا حاصل کرنا لڑائی میں نہ بھاگنا یہ دونوں کام راجہ کا دھرم اور
اسلوٹن سے دیشیوں کی حفاظت کر کے اسے دھرم کے موافق محمول لیوے۔

۱۲۰- بحالت وقت معیشت و ہانیہ میں دیشیوں سے بمنزل روپیہ برہمن میں آنکھوان حصہ
لیوے اور نہایت وقت معیشت میں توچ تھا حصہ کہ اسے پین وقت معیشت نہ تو بار ہوا
حصہ لیوے سونا و چار پائے پنوں کا پچاسواں حصہ لیوے اور وقت معیشت نہ تو لیوے حصہ لیوے شودرو
رہو پین نہایت الا و برہمن وغیرہ سے وقت معیشت میں محمول نہ لیوے جو صل سکے کام کر لیوے۔

شیلو نڈم پیا رسی ت وی پوجی بھت ت رت ت ॥ प्रतिमहाञ्जितः
 श्रेयांस्ततोऽप्युच्चः प्रशस्यते ॥ ११२ ॥ सीरद्भिः कुप्यमिच्छद्भि-
 र्धनं वा एधि वीयति ॥ याच्यः स्यात्त्नात कै विप्रैरहितान्यागम-
 र्हति ॥ ११३ ॥ अकृतं च कृता त्सेवाज्ञौ स्याविकमेव च ॥ हिर-
 रायं धान्यमन्तं च पूर्वपूर्वमलोषवत् ॥ ११४ ॥ समवित्तागमा-
 धर्म्या रायो लाभः क्रयोजयः ॥ प्रयोगः कर्मयोगश्च सत्यतिप्र-
 हस्यवच ॥ ११५ ॥

۱۱۲۔ برہمن اپنی جیو کا سے اوقات گزاری نہ کر سکے تو نسل اور انچھ سے اوقات گزاری کرے
 دان سے نسل اور نسل سے انچھ بڑا ہے۔

۱۱۳۔ بے زر برہمن دھرم و عیال و اطفال ان دو باتوں کی واسطے تکلیف پا کر سوا
 سونا و چاندی کے غلہ و کپڑا اور یگیہ کی واسطے سونا و چاندی کو بھی اس کشتی سے مانگے
 جو کہ شستر کے موافق عمل نہ کرتا ہو اور جو نجل سے دینے کے خواہش نہ کرے اسکو ترک کرے۔
 ۱۱۴۔ زراعت رکھنے والے کھیت سے بدون زراعت رکھنے والے کھیت کا دان لینا بدو
 ہے اور گنہ و بکرا و بھیر و سونا و غلہ و دان انھوں میں پہلا پہلا دوسر دوسر سے بے دوش ہے
 اس واسطے اول اول کے نونے میں دوسر دوسر کو لینا چاہیے۔

۱۱۵۔ تقسیم زمین ملازمین میں و فیہ ملا جو خرید کیا گیا جو فتح سے ملا جو بیوہ یا کر نیب ملا جو کام کے
 ملا جو اچھے آدمیوں سے دان لینے سے ملا ان سات قسم کی دولت کا ملنا دھرم سے شامل ہے

भरद्वाजः सुधार्तस्तु स पुत्रो विजने वने ॥ वह्नीर्गाः प्रतिग्रहाहव-
धोस्तद्वर्गो महातपाः ॥ १०७ ॥ सुधार्तश्चाक्षुमभ्यागाद्विषामि-
त्रः श्वजाघनीम् ॥ चराडालहस्तादाशयधर्माधर्मविचक्षराः
॥ १०८ ॥ प्रतिग्रहाद्याजनाद्वातयैवाध्यापनादपि ॥ प्रतिग्रहः
प्रत्यवरः प्रेत्यविप्रस्यगर्हितः ॥ १०९ ॥ याजने ध्यापने नित्यं क्रि-
येते संस्कृतात्मनाम् ॥ प्रतिग्रहस्तु क्रियते शूद्रादप्यन्यजन्मनः
॥ ११० ॥ जपहोमे रयैत्येनो याजनाध्यापनैकतम् ॥ प्रतिग्रहनि-
मित्तस्तु त्यागेन तपसैव च ॥ १११ ॥

۱۰۶۔ بھرواچ رش بڑے تپشوی نے بھوکھ سے دکھی ہو کر مع اپنے بیٹے کے بن میں رہو
نام بڑھی سے بہت گھون کا دان لیا۔

۱۰۸۔ دشوا منتر رش دھوم دھوم کے جاننے والے نے بھوکھ سے دکھی ہو کر چاندل کے
ہاتھ سے کٹہ کی ران کو لیکر کھانے کو اسطے بخویر کیا۔

۱۰۹۔ برہمن کو وقت مصیبت نہونے میں لگیہ کرانا اور پڑھانا ان دونوں کاموں کے وسیلہ سے
دان لینا پر لوگ میں نندا کے قابل ہے۔

۱۱۰۔ اوپر لکھی ہوئی بات میں یہ سب کے مصیبت یا غیر مصیبت میں برہمن و کستری و
سناریوں کو پڑھانا اور لگیہ کرانا ہوتا ہے اور دان لینا تو بیچ ذات شودر سے بھی ہوتا ہے
اسلئے ان دونوں سے زیادہ نندا کے قابل دان لینا ہے۔

۱۱۱۔ لگیہ کرانے اور پڑھانے سے جو پاپ ہوتا ہے وہ جب اور ہوم سے جاتا ہے اور دان
لینے سے جو پاپ ہوتا ہے وہ تپ و دان کی چیز کے ترک سے جاتا ہے۔

سर्वतः प्रतियुक्तीयाद्वाहारास्त्वनयंगतः ॥ यचित्रंदुष्यतीत्ये-
तद्धर्मतो नोपपद्यते ॥ १०२ ॥ नाध्यायनाद्याजनाद्वागर्हिता-
द्वाप्रतिग्रहात् ॥ शेषोभवति विप्रारांज्वलनाम्बुसमाहिते ॥
१०३ ॥ जीवितात्ययमापन्नोयोऽन्नमत्तियतस्ततः ॥ आका-
शमिवपंकेननसपापेनलिख्यते ॥ १०४ ॥ अजीगर्तः सुतंहनु
मुपास्यपुंसुसितः ॥ नचालिख्यतपापेनसुत्पतीकारमाच-
रन् ॥ १०५ ॥ श्वमांसमिच्छन्नार्त्तोत्तुंधर्माधर्मविचक्षणाः ॥
प्राराणानां परिरक्षार्थंचामदेवोनलिसवान् ॥ १०६ ॥

۱۰۲- بر آہن وقت مصیبت میں چاروں طرف سے دان لیوے جبطح یہ بات دھرم پیدا
ہوئی کہ گنگا وغیرہ ندی کو دیش لگنا ہے۔

۱۰۳- اسی طرح پڑھانا کیلئے کرانا نڈا کے لائق آدمیوں سے دھن لینا بھونے بر آہن کو
دوش ہین ہوتا کیونکہ بر آہن جل اگن کے برابر ہے۔

۱۰۴- جو بر آہن وقت مصیبت میں اوپر اوڑھتے بھون کرتا ہے وہ پاپے آلودہ ہین
ہوتا جیسے آکاش پرچ میں بھی ہے لیکن اس سے آلودہ ہین ہوتا۔

۱۰۵- اسی گرت رس نے بھوکھ سے دکی ہو کر اپنے پیٹے شونہ سب کو بچا اور بکھین تنوگو
لیا اور بھوکھ دور کرنے کے واسطے پیٹے کو بکھین کے ستون میں باندھ کر مارنے لگے لیکن پاپے
آلودہ ہین ہوئے یہ بات رگ وید کے بر آہن میں شونہ سب کی کٹھا میں ظاہر ہے۔

۱۰۶- بادلوں میں دھرم اور اودھوم کے جانتے والے بھوکھ سے دکی ہو کر حفاظت جان
کیواسطے کٹھ کا گوشت کھانے کی خواہش کرنے پر بھی پاپے آلودہ ہین ہوئے۔

यो लोभार्थमोजात्याजीवेतुत्कारकर्मभिः ॥ तं राजानिर्द्धनं कृ-
त्वा सिप्रमेव प्रवासयेत् ॥ ६६ ॥ वरं स्वधर्मो विगुराणो न पारयचः
स्वनुष्ठितः ॥ परधर्मो राजीवन् हि सद्यः पतति जातिनः ॥ ६७ ॥
वैश्योऽजीवन् स्वधर्मो राज्ञश्च हत्यापि वर्त्तयेत् ॥ अनाचरन् न का-
र्याणि निवर्त्तेत च शक्तिमान् ॥ ६८ ॥ अशक्तुर्वस्तु शुश्रूषां शु-
द्रः कर्तुं हि जन्मनाम् ॥ पुत्रदारात्ययं प्राप्तो जीवेत्कारुण्यकर्म-
भिः ॥ ६९ ॥ येः कर्मभिः प्रचरितैः शुश्रूष्यन्ते हि जातयः ॥ ता-
निकारुण्यकर्मणि शिल्पानि विविधानि च ॥ १०० ॥ वैश्य
वृत्तिमनातिष्ठन् ब्राह्मणाः स्वेयमिस्थितः ॥ अवृत्तिं कर्षितः
सीदन्निमं धर्मं समाचरेत् ॥ १०१ ॥

۹۶- پنج ذات والا طمع سے بڑوں کے کرم سے اوقات گزاری کرے تو راجہ اسکو
بے زر کر کے جلد اپنے ملک سے نکال دے۔

۹۷- اپنا دھرم گن سے علیحدہ بھی ہو تو اسکو کرنا چاہئے دوسرے کا دھرم بہت اچھا تو بھی
اسکو نکرنا چاہئے دوسرا دھرم کرنے سے جلد ذات سے بچت ہوتا ہے۔

۹۸- ویت یہ اپنے کرم سے اوقات گزاری نہ کر سکے تو شودر کے کرم سے اوقات گزاری کرے
اور جو چیز کر نیکی لائق نہیں ہے اسکو نہ کرے۔

۹۹- شودر و جہاؤن کی سیوا نہ کرے اور اس کے زن و فرزند بھوکھ سے دیکھی ہو تو بیوی
کر نیوالوں کے کام سے اوقات بسر کرے۔

۱۰۰- جن کاٹوں سے دو جہاؤن کی سیوا ہو سکے وہ کام (یعنی در و درگزی و مصوری وغیرہ
انواع اقسام کے کام) کرے۔

۱۰۱- جو برہمن ویشیہ کے کام کو نہ کرے اور جیو کا سے تکلیف پاو اپنے مارگ میں قائم ہوو
اُس دھرم کو کرے جو آگے کہیں گے۔

भोजनाभ्यंजनादानाद्यश्चत्कुरुतेतिलैः ॥ कृमिभूतःश्वविद्या-
 यांपितृभिःसहमज्जति ॥ ६१ ॥ सद्यःपततिमांसेनलाक्षयाल-
 वरोनच ॥ श्रहेराशूरीभवतिबाह्यराःक्षीरविक्रयात् ॥ ६२
 ॥ इतरेयान्नुपरायानां विक्रयादिहकामतः ॥ ब्राह्मराःसप्त-
 रात्रेरावैश्यभावंनियच्छति ॥ ६३ ॥ रसास्मैर्निमातव्यानत्वेव
 लवरांस्सैः ॥ कृतानंचाकृतान्नेनतिलाधान्येनतत्समाः ६४
 जीवेदेतेनराजन्यःसर्वेराण्यनयंगतः ॥ नत्वेनज्याभ्यसीवृत्ति
 मभिमन्येतकर्हिचित् ॥ ६५ ॥

- ۹۱- جو شخص بھوجن واپٹن و دان بیتن کام چھوڑ کر دوسرا کام تل سے کرے وہ کٹر اہل کفر
 مع اپنے بزرگوں کے کٹہ کے غلیظ میں غرق ہوتا ہے۔
 ۹۲- گوشت اور نمک اور لاکھ کے نیچے سے جلد تپت ہوتا ہے (یعنی اپنے دل کے درجہ
 سے گر جاتا ہے) اور دودھ نیچے سے تین دن میں شودر بھاد کو پراپت ہوتا ہے۔
 ۹۳- برآہن خواہش دل دوسری چیز کے فروخت کرنے سے سات رات میں ویشیہ
 بھاد کو پراپت ہوتا ہے۔
 ۹۴- رُس یعنی گرد و غیزہ کو گھی وغیرہ سے تبادلا کرنا واجب ہے اور نمک کو دوسرے رُس کے
 ساتھ تبدیل کرنا چاہیے اور بڑوں بنائے ہوئے غلام کو تباہ ہونے غلام سے اور تل کو
 دھان سے تبدیل کرنا چاہیے مگر وہ تبادلا وزن میں برابر ہو۔
 ۹۵- کشتری وقت مضیبت آنے پر جو کام قومہ بالا سے اوقات گزاری کرے لیکن
 بڑوں کی جیو کا سے اوقات گزاری کا غور کبھی نہ کرے۔

सर्वानुरसानपोहेतकतान्नंचतिलैः सह ॥ अश्मनोत्परां चै-
वपशवोश्चमानुषाः ॥ ८६ ॥ सर्वचतान्नवंरक्तं शारादीमावि-
कानिच ॥ अपिचेत्पुरस्तानि फलमूलेतथीयधीः ॥ ८७ ॥ अ-
प. शस्त्रं निषमांसं सोमं गन्धं सर्वशः ॥ क्षीरं क्षीरं दधि घृतं तै-
लं मधु गुडं कुशान् ॥ ८८ ॥ आरायाश्च पशून्सर्वान्द्विशांश्च न-
यांसिच ॥ मद्यं नीलीं चलासां च सर्वांश्चैकशफांस्तथा ॥ ८९ ॥
काममुत्पाद्य कथ्यान्तु स्वयमेव हवीवतः ॥ विकीरीतति-
तान् सुद्वान्धमार्यमचिरस्थितान् ॥ ९० ॥

- ۸۶- سب بریں اور سترئون مع تل و پتھر و نمک و چار پایہ آدمی ان سب کو نہ بچین رس کی نمائش سے نمک کی ممانعت ثابت ہو پتھر و نمک کی ممانعت کی تو عیب کی غلطی ظاہر کر نیکی و سبط
کہا وہ بھی پڑا سخت کی بڑائی کیواسطے ہے اس طرح ان کی ممانعت علیحدہ کو بھی لگا لینا چاہیگا۔
۸۷- پارچہ سترخ و سن پتھر ان تینوں سے جو پارچہ طبیا ہوتا ہو وہ سفید ہو خواہ
سترخ ہو و پھل ہو ل و او دیم۔
۸۸- پانی ہنسیار زہر گوشت سوم لہا خوشبویات و وہ وہی شہر گھی تیل سوم گوشت
۸۹- جھلی چوپایہ ڈارم و اے جانور یعنی شیر و غیرہ پر نو شراب نیل لاکھ ایک کھڑ والا چوبہ
سب کو نہ بچین۔
۹۰- بھیتی کر نیوالا بھیتی میں تل کو پیدا کرے اور وہ تل شہرہ ہو بہت دن بھر بیچ رہا ہو
اسکو دھرم کے واسطے بیچے۔

अजीवंस्तु यमोत्तेन ब्राह्मणाः स्वेन कर्मणा ॥ जीवेत्स त्रियधर्मे-
 रासह्यस्य प्रत्यनन्तरः ॥ ८१ ॥ उभाभ्यामप्यजीवंस्तु कथं स्यादि-
 ति चेद्भवेत् ॥ कृषिगौरसमास्थाय जीवेद्दृश्यस्य जीविकाम् ८२
 वैश्यदृष्ट्यापि जीवंस्तु ब्राह्मणाः सत्रियोऽपि वा ॥ हिंसाप्रायां
 यशोनां कृषियत्नेन वर्जयेत् ॥ ८३ ॥ कृषिं साधिति मन्यन्ते
 सावृत्तिः सद्विहर्तिता ॥ भूमिं भूमि शयांश्चैव हन्तिका मम यो-
 सुखम् ॥ ८४ ॥ इदं नृपतिर्वैकल्यात्पजतो धर्मनैयुराम् ॥ वि-
 द्यराय सुदृष्टोऽहं निशेधं चित्तवर्द्धनम् ॥ ८५ ॥

۸۱- اگر برہمن اپنے خاص کام سے اوقات گزاری نہ کر سکے تو کشتری کے کام سے اوقات
 گزاری کرے کیونکہ کشتری دن برہمن دن کے قریب ہی ہے۔
 ۸۲- دونوں کے کرم سے اوقات گزاری نہ کر سکے تو دلشہ کے کرم سے اوقات گزاری کرے۔
 ۸۳- برہمن و کشتری بھی دلشہ کی برت سے گزارہ کرتے ہوئے بہ تدبیر تمام کھیتی کو نہ کریں جو کہ
 دوسروں کے اختیار میں ہے (یعنی بدون ہل وغیرہ کے اس سے مطلب حاصل نہیں ہوتا اور جس کے
 کرنے سے زمین میں رینے والے بہن سے چاندرون کی جان جاتی ہے)۔
 ۸۴- کھیتی کو کوئی اچھا کہتا ہے سو درست سمجھیں کہ کیونکہ زمین کو اور زمین میں بسنے والے
 جانداروں کو کاٹنے اور ٹوٹنے کا منہ رکھنے والا (یعنی ہل) ناس کرنا ہے اس واسطے سادہ گوشت
 نے اس جیو کا کی غذا کی ہے۔

۸۵- برہمن و کشتری اپنی جیو کا سے اوقات گزاری نہ کر سکیں اور دلشہ کی جیو کا کہنے سے
 اوقات گزاری کریں داگے جو فروخت کرنا منع کریں اسکو چھوڑ کر دولت کو ترقی دینے والی چیزوں کو
 فروخت کریں۔

यशशां कर्मणामस्य त्रीणि कर्माणि जीविका ॥ याजनाध्या-
पना चैव विशुद्धाश्च प्रतिग्रहः ॥ ७६ ॥ त्रयो धर्मानि वर्तन्ते ब्राह्म-
णास्त्रियं प्रति ॥ अध्यापनं याजनं च तृतीयश्च प्रतिग्रहः ॥ ७७ ॥
वैश्यं प्रति तथैवैते निवर्तन्ते रक्षितस्थितिः ॥ न तो प्रतिहितान्ध-
र्मान्मनुराह प्रजायति ॥ ७८ ॥ शास्त्रास्त्रभूत्वं स च स्य वशिष्-
थकथिर्विशः ॥ आजीवनार्थं धर्मस्तु दानमध्ययनं यजिः ॥ ७९ ॥
वेदाभ्यासो ब्राह्मणा स्य क्षत्रियस्य च रक्षाराम ॥ वार्त्ता कर्मैव वैश्य-
स्य विशिष्टानि स्वकर्मसु ॥ ८० ॥

۶۷ - ان چہ کرمون میں تین کرم دینے پڑھنا اور لکھ کرنا اور پاک آدمیوں سے دان لینا
حصول معاش کے لئے ہیں۔

۶۸ - برہمن سے آگے لینے کستری پڑھنا اور لکھ کرنا دو دان لینا ان تینوں دھرموں کے
کرنیکا اور حکاری نہیں ہے۔

۶۸ - سیطرج دیشیہ میں بھی وہ تینوں کرم سوتوف ہو چکے ہیں لیکن وہ بھی ان کرموں کے
کرنیکا اور حکاری نہیں ہے یہ مر جاتا ہے کستری اور دیشیہ دونوں کے واسطے ان دھرموں
کو پر جانت من جی نے نہیں کہا ہے۔

۶۹ - کستری لینے پھیلار دسٹر لینے جو منتر پڑھ کر چلایا جا ان دونوں کا دھارن کرنا کستریوں
کا کرم ہے اور سو پار کرنا اور گنو وغیرہ کو پر دیش کرنا اور کھیتی کرنا دیشیہ کا کرم ہے اور پڑھنا اور
لکھ کرنا اور دان دینا یہ دھرم کستری اور دیشیہ دونوں کا ہے۔

۷۰ - اپنے اپنے کاموں میں ایک ایک افضل کرم تینوں کا ہے یعنی برہمن کو پڑھنا کستری
کو حفاظت عالم کرنا دیشیہ کو سو پار کرنا۔

यस्माद्विजप्रभावेरातिर्यजाऋषयोऽभवन् ॥ पूजिताश्चप्रश-
स्ताश्चतस्माद्दीजंप्रशस्यते ॥ ७२ ॥ अनार्यभार्यकर्मराभा-
र्यचानार्यकर्मिराम् ॥ सम्प्रधार्याब्रवीद्धातानसमौनास-
माविति ॥ ७३ ॥ ब्राह्मरााब्रह्मयोनिस्थायेस्वकर्मरायवस्थि-
ताः ॥ तेसम्यगुपजीवेयुःषट्कर्मरायथाक्रमम् ॥ ७४ ॥
अध्यापनमध्ययनंयजनंयाजनंतथा ॥ दानंप्रतिग्रहश्चैवषट्-
कर्मरायप्रजन्मनः ॥ ७५ ॥

۷۲ - تخم کی فضیلت سے ہرنی سے پیدا شدگی رش وغیرہ برہم رش پونچے کے لائق ہوئے
اسوجہ سے تخم بڑا ہو دینے در بیان تخم و ظرت کے اونچے تخم والی ذات افضل ہو اس بات کو
جاننا چاہئے -

۷۳ - پنج ہے ادخ کا کام کرتا ہے اور ادخ ہے پنج کا کام کرتا ہے ان دونوں کا بچہ
کر کے برہما جی نے کہا کہ وہ نہ برابر ہیں نہ مختلف ہیں -

۷۴ - جو برہمن برہم دیہان میں مشغول ہو اور اپنے کرموں میں مصروف ہو وہ سلسلہ سے چھوٹ
کرموں سے اذفات لے کر ہے -

۷۵ - پڑھنا پڑھنا لکھنا لکھنا کرنا دانا دینا دانا لینا یہ چھ کرم برہمن کے ہیں -

نو کیونکہ جو شور و دھماکا کام کرنا ہے وہ دھماکا نہیں ہوتا یعنی جو شخص دھماکا کام کا ادا ہکاری نہیں ہے وہ دھماکا
کام کرنا بھی ہو تو دھماکا کے برابر نہیں ہوتا اس لیے تو سے شور کا کام کرنا والا دھماکا شور کے برابر نہیں ہونا کا مجموعہ
کرنے سے ذات کی بڑائی نہیں گئی ہے اور مختلف بھی نہیں ہے کار منع کرنے سے مدون کو برہمی ہے اس لیے سب کو جو کام
مندانے لائق ہے اس کام کو نکر سے یہ اپدیش دن شکر تک ہے -

जातो नार्या मनार्याथामार्याशर्यो भवेजुरौः ॥ जातोऽप्यनार्याशर्या
यामनार्य इति निश्चयः ॥ ६७ ॥ तावुभावप्यसंस्कार्याविति धर्मो
व्यवस्थितः ॥ वेगुरायाज्जान्मनःपूर्वउत्तरःप्रतिलोमतः ॥ ६८
॥ सुबीजं चैव सुक्षेत्रे जातं सम्यद्यते यथा ॥ तथाऽर्थाज्जातश्चा-
र्यायां सर्वसंस्कारमर्हति ॥ ६९ ॥ बीजमेके प्रशंसन्ति सैत्रमन्ये
मनीषिणाः ॥ बीजक्षेत्रे तथैवाच्येतत्रेयस्तु व्यवस्थितिः ॥ ७० ॥
अक्षेत्रे बीजमुत्तममन्तरेव विनश्यति ॥ अबीजकमपि क्षेत्रं के-
वलं रथशिडितं भवेत् ॥ ७१ ॥

۶۷۔ او پنج بیج سے بیج یوں میں (یعنی برہمن سے شودرا میں) پیدا ہوا پاک یگیہ وغیرہ اوصاف
سے مشمول ہو وہ بڑا ہے اور پنج بیج سے او پنج یوں میں (یعنی شودر سے برہمن میں) پیدا
ہوا بڑا بہن میں یہ یقین ہے۔

۶۸۔ یہ سیدھا بت ہے کہ دونوں سنگار کے لائق نہیں ہیں کیونکہ پہلا پنج ذات میں پیدا ہوا
اور دوسرا برت قوم ہے۔

۶۹۔ جس طریق پر اچھا بیج اچھے کیفیت میں پڑنے سے اچھا غلہ پیدا ہوتا ہے اسی طریق سے
افضل مرد سے افضل عورت میں پیدا ہوا سب سنگار کے لائق ہوتا ہے۔

۷۰۔ کوئی بیڑت تم کو افضل کہتے ہیں کوئی طرف کو اور کوئی دونوں کو افضل کہتے ہیں اس بات
میں آگے جو کیفیت بیان کرینگے اسکو جاننا۔

۷۱۔ اوس زمین جو بیج پڑتا ہے وہ برباد جاتا ہے یعنی اگتا بہن ہے اور کھیت اچھا ہے مگر
اس میں بیج بہن ہے تو صرف چوترا ہی ہے اس میں غلہ پیدا بہن ہوتا ہے اسیلئے دونوں کی
بڑائی ہے اچھا بیج اچھے کیفیت میں پڑے تو اچھا غلہ پیدا ہوا یہ پہلے کہا کے ہیں وہی
قرن مصلحت ہے کہ دونوں کو فضیلت ہے۔

श्रद्धायां ब्राह्मणा ज्ञातः श्रेयसाचेत्यजायते ॥ अश्रेयान् श्रेयसीं
जातिंगच्छत्यासप्तमाद्युगात् ॥ ६४ ॥ शूद्रो ब्राह्मणात्तामेति-
ब्राह्मणांश्चेति श्रद्धताम् ॥ सत्रिया ज्ञातमेव तु विद्याद्वैश्यात्तथै-
व च ॥ ६५ ॥ अनार्याणां समुत्पन्नो ब्राह्मणा तु यदृच्छया ॥ ब्राह्म-
णस्य मध्यनार्या तु श्रेयस्त्वं चेति चेद्भवेत् ॥ ६६ ॥

۶۴۔ شورابین برہمن سے کنیا پیدا ہو وہ پادشوی کہاتی ہے اس سے برہمن دواہ کرے
اور کنیا پیدا ہو پھر اس سے برہمن دواہ کرے اور کنیا پیدا ہو اسی طریق سے کنیا پیدا ہوتی
جاوے اور اس کنیا کا دواہ برہمن کرتا جاوے تو چھوٹوں کنیا نفیلت تم سے برہمن
ذات کو پیدا کرتی ہے۔

۶۵۔ شوراب برہمن بھاو کو حاصل کرنا ہی اور برہمن شوراب بھاو کو حاصل کرنا ہی اسی طریق
سے کستری و دلشیہ سے پیدا شدہ اولاد کو جانتا۔

۶۶۔ شورابین برہمن سے پیدا ہوا اور برہمنی میں شور سے پیدا ہوا ان دونوں میں کون
بڑا ہے اس کا جواب اشوک آئیزہ میں دیتے ہیں۔

ڈیلے جیلج شورابین برہمن سے پیدا ہوا پادشوی ہوتا ہے وہ شور کا دواہ کرے اس سے پیدا ہوا بھی شور کا دواہ کرے
اس سے بھی بٹیا پیدا ہو اسی طریق پر بٹیا پیدا ہوتا جاوے اور شور کا دواہ کرتا جاوے تو چھوٹے ان بٹیا عورت کو بیچ بٹیا سے
شور اذات کو پیدا کرتا ہے اسی طرح شورابین کستری سے پیدا کنیا پوتلی پشت میں نفیلت تم سے کستری کو پیدا کرتی ہے
اور بٹیا تیسری پشت میں عورت کے بیچ ہونے سے شور کو پیدا کرتا ہے اور دلشیہ سے شورابین پیدا کنیاں دوسری پشت میں
نفیلت تم سے دلشیہ کو پیدا کرتی ہے اور بٹیا دوسری پشت میں عورت کے بیچ ہونے سے شور کو پیدا کرتا ہے اسی طریق پر
برہمن سے دلشیہ میں پیدا ہوا پانچون لیت میں بزرگی و خردی کو پاتا ہے اور برہمن سے کستری میں پیدا ہوا تیسری
پشت میں بزرگی و خردی کو پاتا ہے کستری سے دلشیہ میں پیدا ہوا تیسری پشت میں بزرگی و خردی کو پاتا ہے

अनार्यतानिधुरताक्रूरतानिध्रियात्मता॥ पुरुषं व्यञ्जयन्ती-
हलोके कलुषयोजिनम्॥ ५८॥ पित्र्यं वा भजते शीलं मातुर्वोभ-
यमेव वा॥ न कथंचन दुर्योनिः प्रकृतिं स्वानियच्छति॥ ५९॥ कु-
ले मुख्येऽपि जातस्य यस्य स्याद्यो निसंकरः॥ संश्रयत्येव तच्छ्री-
लं नरोऽल्पमपि वा बह्व॥ ६०॥ यत्र त्वेते परिध्वंसा ज्ञायन्ते वर्गा-
दूषकाः॥ राष्ट्रिकैः सह तद्वाष्टं क्षिप्रमेव विनश्यति॥ ६१॥ ब्रा-
ह्मणार्थं गवार्थं वा देहत्यागोऽनुपस्कृतः॥ स्त्री बालाभ्युप-
त्तौ च वाद्यानां सिद्धिकारणम्॥ ६२॥ अहिंसा सत्यमस्तेयं-
शौचमिन्द्रियनिग्रहः॥ सतन्मासासिकंधर्मैश्चातुर्वर्ण्येऽब्रवी-
न्मनुः॥ ६३॥

۵۸- افضل بنو نابد سیرتی سخت مزاجی دید و شاستر کے موافق عمل کرنا بخوبی لوگ میں
جانا جاتا ہے کہ یہ آدمی پنج ذات سے پیدا ہوتا ہے -

۵۹- آدمی والد یا والدہ کی یا دونوں کی خاصیت حاصل کرتا ہے مگر پنج ذات والا سیطیح
اپنی خاصیت کو نہیں چھوڑتا ہے -

۶۰- جو شخص چھ خاندان میں پیدا ہو اگر والدہ اس کی پنج ذات ہوتا ہم وہ شخص والد کی
خاصیت کو حاصل کرتا ہے -

۶۱- جس سلطنت میں درون کو باعیب کر نیوالے درن سرک پیدا ہوتے ہیں وہ سلطنت
مع رعایا جلد فانی ہو جاتی ہے -

۶۲- جو مطلب دیکھنے میں آدے اسکو چھوڑ کر براہمن اور گنوا اور عورت اور بالک کیوا سٹے
ترک قلب کرنا ان لوگوں کو سورگ میں والہی جو کہ وہاں سے علیحدہ ہیں -

۶۳- کسی جاندار کو قتل نہ کرنا سچ بولنا چوری نہ کرنا پاکیزگی جو اس کو روکنا ان سب چھ مونگو
من جی نے چار درن کیوا سٹے کہا ہے -

वासांसि दत्त चेलातिभिन्नभाराद्युभोजनम् ॥ कार्याय समलं-
 कारः परिव्रज्या च नित्यशः ॥ ५२ ॥ नतैः समयमन्विच्छेत्सुरयो
 धर्ममाचरन् ॥ व्यवहारो मिथस्तेषां विवाहः सदृशैः सह ॥ ५३ ॥
 अन्नमेवापराधीनं देयं स्याद्विन्नभाजने ॥ रात्रौ न विचरेयुस्ते श-
 मेयु नगरेषु च ॥ ५४ ॥ शिवाचरेयुः कार्यार्थं चिह्निताराजशासनैः
 ॥ अवाग्वंशवंचैव निर्हरेयुरिति स्थितिः ॥ ५५ ॥ बंध्याश्च हन्युः
 सततं यथाशास्त्रं नृपाक्षया ॥ वध्यवासांसि युक्तीयुः शय्याश्चा-
 भरानि च ॥ ५६ ॥ वर्यापेतमविज्ञातं नरं कलुषयो निजम् ॥
 आर्यरूपमिवानार्यकर्मभिः स्वैर्विभावयेत् ॥ ५७ ॥

۵۲ - مردے کے کپڑے پہنیں اور پھوٹے ہوئے برتن میں بھوجن کریں زلیوارہی زیب بدن
 کریں ہمیشہ گشت کرتے رہیں۔
 ۵۳ - دھرم اتا آدمی ان لوگوں کے ساتھ درشن وغیرہ ہو بارن کرے انھوں کا دواہ آپس میں
 ہوتا ہے اور پیو بار بھی آپس میں ہی کریں۔
 ۵۴ - انھوں کی خوراک دوسرے کے اختیار میں ہے پھوٹے برتن میں اُن دینا چاہیے اور
 یہ لوگ وقت شب گائون و شتر وغیرہ میں پھرتے پیا دین۔
 ۵۵ - یہ لوگ نشان ذات سے مستول ہو کر حکم راجہ ملک کے کام کرنے کے واسطے دن میں پھرین
 اور جس مردہ کا کوئی رشتہ دار نہ ہو اس کو بجا دین شاستری مر جاوے۔
 ۵۶ - یہ لوگ حکم راجہ موافق طریق شاستری قتل لائق آدمیوں کو قتل کریں اور انھیں بچھوٹوں
 کا کپڑا اولنگ و پارچہ و زلیوارہ پہنیں۔
 ۵۷ - جو شخص بیخ ذات سے پیدا ہوا ہو درج علیحدہ ہو مگر جائنہ میں نہ آتا ہو شریف
 کی صورت مگر شریف نہ ہو تو اس کے اعمال سے اس کی ذات کو جانے۔

सूतानामश्वसारथ्यमन्वष्टानांचिकित्सनम् ॥ वैदेहकानां स्त्री
कार्यमागधानां वशिष्पथः ॥ ४७ ॥ मत्स्यघातो निषादनां त्व-
ष्टित्वा योगवस्य च ॥ मेदान्धुं चुमहूनामारराय पथुहिंसनम् ॥
४८ ॥ क्षत्रुग्रपुक्कमाना लुविलौकावधवन्धनम् ॥ धिग्वरानां
चर्मकार्यं वेरानां भाराड्वादनम् ॥ ४९ ॥ चैत्यद्रुमश्मशानेषु शे-
लेषूपवनेषु च ॥ वसेयुरेते विज्ञाता वर्तयन्तः स्वकर्मभिः ॥ ५० ॥
चराडालाश्वपक्षानां लुवहिर्गामात्यतिशयः ॥ श्वपपात्राश्च
कर्तव्या धनमेवांश्च गर्दभम् ॥ ५१ ॥

۷۔ سوٹ کا کام رتھہ پانی اور ہنٹ کا کام طبابت مہدی کا کام ناچنا اگر دم کا کام بقیانی ہے۔

۴۸۔ نشاد کی وجہ سے اس نے پھیلنے لگا۔ مرنے سے پہلے وہ لوگوں کو دعا دے کر کہتا تھا کہ تم میری جگہ پر جاؤ۔

۴۹۔ کشتہ و اگر و پکس کی وجہ معاش سوراخ میں رہنے والی گودہ وغیرہ کا قتل و گرفتاری و دھمکیوں کی وجہ معاش چھڑے کا کام و بین ذات کی وجہ معاش مردانہ وغیرہ کا بھانا ہے۔

۵۔ یہ سب لوگ مشہور درخون کی جڑ واقع منقل دیہہ و سمنان و پیار و جمل میں نظر آئے
کا موسم اوقات گزاری کرتے رہیں۔

۱۵۔ چانڈاں سوچ یہ دونوں گانوں کے باہر قیام کریں بہن وغیرہ سے محروم رہیں۔
کی دولت سگ و خر ہے۔

۴۔ بیوریک کی عورتیں براہمن سے پیدا ہونے پر خراج کھلاتا ہے اور اسی سے ہندی کی عورت میں پیدا ہوا راگو کھلاتا ہے

सुखबाहुरूपज्ञानांयालोकेजातयोवहिः॥ स्नेच्छवाचश्चार्य
वाचःसर्वेतेदस्यवःस्थिताः॥ ४५॥ येद्विजानामपसदायेचाप-
धंसजाःस्थिताः॥ तेनिन्दितैवर्तयेयुर्द्विजानामेवकर्मभिः॥
४६॥

۴۵ - برہمن اور کشتری اور دلشہ اور شودر ان چاروں نون کی مکیاؤں کے لوپ ہو جانے سے جتنی ذات ہوئیں ان کا نام پچھ بھاشا میں ہو خواہ آرمی نام بھاشا میں ہو یہ سب ذات دسیو کہاتی ہیں۔ +

۴۶ - وجوں سے جو آپ سدا وغیرہ بطریق اُن لوم پیدا ہوئے ہیں اور خبا بیان دسیوین اشوک میں ہوا اور بھی جو پرت لوم سے پیدا ہوئے ہیں یہ سب وجوں کے مدت کرم سے اوقات بسر کیا

+ لیجئے برہمن کشتری دلشہ و شودر کو جو کہ ویدنسا ستر کے موافق عمل کرتے ہیں انکو آری کہتے ہیں اور دتت پیدا ہونے کے ان لوگوں کو جو ملک پاک مرغوب خاطر ہوا دسکو آریا دت کہتے ہیں اور علم سنسکرت کو جو کہ سب زبانوں کی مان لپی ذالہ و کھڑکی آری تریا کہتے ہیں چنانچہ دیگر ولایت ہا میں لفظ آری کو ایرین کہتے ہیں اور کونو میں کہ تمام دنیا کی زبانیں ایرین زبان سے نکلی ہو کر کوئی کہے کہ کون نے ملک پارن میں حرف آریا دت کو پاک دکت و ہندہ کھلا کہیں قیام کیا تو دیگر ملک ہائے زمین پر طرح آبادی ہوئی اسکا جواب یہ کہ شروع میں برہمنوں نے اپنا قیام بلحاظ تپ و عبادت کے آریا دت ہی میں مناسب جانا اور کشتری لوگوں کو اجازت دی کہ تم دیگر ولایت ہا میں جا کر سلطنت کرو اسوج سے تخرج تمام مردمان عالم زبان اس عالم حرف آریا دت ہے کہ جسکی گواہی اشوک ۱۲۰ دھیا سے دوم ہی نسا ستر کا دیتا ہے۔

خر خدنگاسی وغیرہ۔

तपोबीजप्रभावेस्तु ते गच्छन्ति युगे युगे ॥ उत्कर्षचापकर्षचम
 नुष्ये ध्विहजन्मजः ॥ ४२ ॥ शनकैस्तु क्रिया लोपादिमाः सत्रि
 यजातयः ॥ वषलत्वं गता लोके ब्राह्मणादर्शनेन च ॥ ४३ ॥ पौंड्र
 काश्चौड्रविडाः काम्बोजायवनाः शकाः ॥ पारदाः पाह्लावा
 श्वीनाः किरातादरदाः खसाः ॥ ४४ ॥

۴۴- تب اور بیج کے پر بھاؤ سے یکساں وغیرہ یکساں ذات سے پیدا ہونے پر سناری کی
 جگہ جگہ میں جنم سے اور بیج اور بیج ہوتے ہیں -
 ۴۵- رفتہ رفتہ بعد تم قیام فرماؤں سے اور برہمن کے نہ دیکھنے سے مفضلہ ذیل کشتری دنیا میں
 شور و ہرجے -
 ۴۶- پونڈراک اور دروڈ کا بیج یوں شک پارہ پہلو چین کرات و رکھش دان ملکوں کے
 رخنہ والے کشتری لوگ جینیو وغیرہ سنگار وید خوانی وغیرہ اعمال کے نکرانے سے شور و ہرجے -

۴۷- تب کے پر بھاؤ سے اندھ بو اندھ کے اور ہم کے پر بھاؤ سے ماند سرنگی رشی کے جانا چاہئے -
 ۴۸- اشوک ۴۹- وہم ثابت کرتے ہیں کہ شروع میں تمام زمین پر صرف ایک مذہب ماند وید کے بیج کو نکالتا تھا جب بہت کھنڈ کے
 سونے کے دیگر کھنڈ میں ایران و توران وغیرہ کے باشندگان کشتری لوگوں نے بیج کرم کو چھوڑ دیا تب وہ شور و ذات ہو گئے اور کانا
 اگلے اشوک میں کہتے ہیں -

۵۰- یعنی جینیو وغیرہ دیکھ کر ناواڑ پڑھانا اور پر اشیئت کرنا ان سب باتوں کے ترک کرنے سے شور و ہرجے -

چاراڈا لاکھ سوا سو پا کھنکھار بھار وان ॥ آھیرا ڈ
 کو نیو دھنن وے دھنن بھار وان ॥ ۳۹ ॥ چار ڈالے نلو سو پا کو مٹ
 بھنن بھنن تھنن ॥ پھنن بھنن بھنن بھنن ॥ ۴۰ ॥
 ॥ نیو دھنن بھنن بھنن بھنن بھنن ॥ ۴۱ ॥
 ۴۲ ॥ ۴۳ ॥ ۴۴ ॥ ۴۵ ॥ ۴۶ ॥ ۴۷ ॥ ۴۸ ॥ ۴۹ ॥ ۵۰ ॥
 ۵۱ ॥ ۵۲ ॥ ۵۳ ॥ ۵۴ ॥ ۵۵ ॥ ۵۶ ॥ ۵۷ ॥ ۵۸ ॥ ۵۹ ॥ ۶۰ ॥
 ۶۱ ॥ ۶۲ ॥ ۶۳ ॥ ۶۴ ॥ ۶۵ ॥ ۶۶ ॥ ۶۷ ॥ ۶۸ ॥ ۶۹ ॥ ۷۰ ॥
 ۷۱ ॥ ۷۲ ॥ ۷۳ ॥ ۷۴ ॥ ۷۵ ॥ ۷۶ ॥ ۷۷ ॥ ۷۸ ॥ ۷۹ ॥ ۸۰ ॥
 ۸۱ ॥ ۸۲ ॥ ۸۳ ॥ ۸۴ ॥ ۸۵ ॥ ۸۶ ॥ ۸۷ ॥ ۸۸ ॥ ۸۹ ॥ ۹۰ ॥
 ۹۱ ॥ ۹۲ ॥ ۹۳ ॥ ۹۴ ॥ ۹۵ ॥ ۹۶ ॥ ۹۷ ॥ ۹۸ ॥ ۹۹ ॥ ۱۰۰ ॥

۳۶۔ چاٹڑال سے بیدریک کی عورت میں بالسن کے روزگار سے اوقات بسر کر نیوالا پاٹڑو
 پاکفات والا بیٹا ہوتا ہے اور اسی عورت میں سے نشا و سے آہنڈک ذات والا بیٹا پیدا ہوتا ہے۔
 ۳۷۔ چاٹڑال سے کپس کی عورت میں شو پاکفات والا بیٹا پیدا ہوتا ہے جو کہ کھمکھم حاکم وقت
 مردمان قابل قتل کو قتل کر نیوالا اور اسی سے اوقات بسر کر نیوالا اور پاپی ہمیشہ سادھ
 لوگوں سے لعنت ملاست پانیوالا ہوتا ہے۔

۳۸۔ چاٹڑال سے نشا و کی عورت میں آہنڈک کی زمین پر رہنے والا سے لعنت ملاست
 پانیوالا بیٹا دسائی ذات والا بیٹا پیدا ہوتا ہے۔

۳۹۔ ورن سکڑ ذات میں مان باپ سے اتنی ذاتوں کو بیان کیا وہ ذات ظاہر ہون والی
 ہون مگر اپنے اپنے کاموں سے جاننے کے لائق ہوتی ہیں۔

۴۰۔ برہمن کشتری ویشیوں سے اپنی اپنی ذات کی عورت میں جوڑکے پیدا ہوتے ہیں
 اور برہمن سے کشتری اور کشتری سے ویشیہ میں اور ویشیہ سے شوڈا میں جوڑکے پیدا
 ہوتے ہیں وہ چھوڑج کے دھرم والے ہوتے ہیں یعنی جینو وغیرہ سنسکار کو لائق
 ہیں، اسکے سوا جو پرت لوم سے پیدا ہیں وہ سب دھرم والے کہلاتے ہیں۔

प्रसाधनोपचारज्ञमदासन्दासजीवनम् ॥ सेरिन्ध्रवागुराहन्ति-
 स्तुतेदस्युरयोगवे ॥ ३२ ॥ मैत्रेयकतुर्धेदेहोमाधुकंसंप्रसूयते ॥
 न्द्वयशंसत्यजसंयोधरादाताडोऽकरोत्ये ॥ ३३ ॥ निषादोमा-
 र्जवस्तेदासंनोकर्मजीविनम् ॥ कैवर्त्तमितियं प्राहुरार्यावर्त्त-
 निवासिनः ॥ ३४ ॥ स्तवस्त्वस्तुनारीधुगर्हितान्नाशनासुध
 ॥ भवन्त्यायोगवीध्वेतेजातिहीनाः दृष्टकृत्रयः ॥ ३५ ॥ कार-
 वरोनिशादाचुर्चर्मकारः प्रसूयते ॥ वैदेहिकादन्धमेदीवहिर्षा-
 मप्रतिश्रयो ॥ ३६ ॥

۳۲۔ درستی و صفائی موسے کا کرنیوالا جو ٹھا کھانا کھانے کے سوا کھانا دھلانا وغیرہ کا
 غلامی کو جاننے والا جال وغیرہ کے وسیلہ سے ہرن وغیرہ کے قتل سے اوقات بسر کرنیوالا
 سیرنڈھ نام بیٹے کو آلوگو کی استری میں دسویں نام ذات والا آدمی جس کا لکشن شکل ۵۴ میں
 کہینگے پیدا کرتا ہے۔

۳۳۔ آلوگو کی عورت میں بید بیک سے بیٹے نام بیٹا شیرین کلام کرنیوالا پیدا ہوتا ہے
 جو وقت شام صبح بجا کر جیو کا گویا سٹے راجہ وغیرہ کی تعریف کرتا ہے۔

۳۴۔ آلوگو کی عورت میں نشا سے پیشہ ملاجی سے اوقات بسر کرنیوالا دانش نام دمارگو نام
 بیٹا پیدا ہوتا ہے جسکو آربادت کے رہنے والے کی عورت کہتے ہیں۔

۳۵۔ سیرنڈھ و میتیری دمارگو بیٹوں پنج ذات آلوگو کی اس عورت میں والد کی تعریف سے
 علیحدہ علیحدہ پیدا ہوتے ہیں جو کہ پارچہ مردہ کے سینے والے دماغی حیدوں پر مردہ کھانیوں کے ہیں

۳۶۔ نشا سے بید بیک کی عورت میں چپڑے کو چھیننیوالا کار اور نام بیٹا پیدا ہوتا ہے۔
 اور بید بیک سے کار اور کی عورت میں اندھ ذات والا بیٹا اور نشا کی عورت میں مید ذات
 والا بیٹا پیدا ہوتا ہے یہ دونوں گانوں کے باہر رہنے والے ہوتے ہیں۔

प्रतिफलं वर्तमानावाद्यावाद्यतरान्युनः ॥ हीनाहीनान्यस्य
यत्नेवर्गान्यंचरशेवतु ॥ ३१ ॥

اسم - شو در سے پیدا ہوا براہین کستری لیشیہ کی عورت میں اُلو گشتا چاٹال تینوں چاروں
کی عورت اور اپنی مہموم عورت میں آپ سے بیچ میں بیچہ پندرہ بیٹے پیدا کرتے ہیں اور ان لوہج سے
ہیں ریشیہ کستری سے پیدا مگر وہ بید بیک سوت یہ تینوں چاروں درن کی عورت اور اپنی
ذات کی عورت میں آپ سے بیچ پندرہ بیٹے پیدا کرتے ہیں اس طریق سے تین بیٹے ہوئے
خواہ چاٹال کشتا اُلو گو - بید بیک مگر وہ سوت یہ تینوں اول سے کھیلے کھیلے اچھے ہیں -
یہی چھوٹا پرت نوم کر کے بیٹے پیدا کریں تو پندرہ بیٹے ہوتے ہیں جسے چاٹال سو یا چوٹ
درن کی عورت میں پانچ لڑکے پیدا ہوئے کشتا سے چاروں درن کی عورت میں چار لڑکے پیدا
ہوئے اُلو گو سے تینوں درن کی عورت میں تین لڑکے پیدا ہوئے بید بیک سے
دو درنوں درن کی عورت میں دو لڑکے پیدا ہوئے مگر وہ سے ایک درن کی عورت میں
ایک لڑکا پیدا ہوا سوت سے آگے کوئی نہیں ہے اسلئے سوت سے کوئی پرت لوہج پیدا نہیں
ہوتا اس طریق سے پندرہ بیٹے ہوئے اسلئے کہ میں بھوک جی نے لفظ پھر کا بیان کیا اسکا مطلب
یہ ہے کہ سوت مگر وہ بید بیک اُلو گو کشتا چاٹال یہ چھ تھیلے کھیلے سے اول اول اچھے ہیں
یہ چھوٹا پرت نوم کے طریق پر بیٹے کو پیدا کریں تو پندرہ بیٹے پیدا ہوئے ہیں جسے سوت سو
پانچوں کی عورت میں پانچ بیٹے پیدا ہوئے مگر وہ سے چاروں کی عورت میں چار ہوئے بید بیک سے
تینوں کی عورت میں تین بیٹے ہوئے اُلو گو سے دو درنوں کی عورت میں دو بیٹے ہوئے کشتا سے
ایک کی عورت میں ایک بیٹا ہوا چاٹال سے کوئی اور بیچ نہیں ہے اسلئے اس سے ان نوم
نہیں ہوتا اس طریق سے ملکر پندرہ ہوئے دو درنوں ملکر تین ہوئے -

اسے یسھاسھشاشاچراناچجننمندیسیوینیشو ॥ مانتھنا تھانیش-
 یکنی پکراشوچوینیشو ॥ ۲۹ ॥ یثا تھانیشاواچراناچناہی-
 تھاسیجا یثے ॥ آنا تھانیشا تھانیشا تھانیشا تھانیشا تھانیشا
 تھ ॥ ۳۰ ॥ تھانیشا تھانیشا تھانیشا تھانیشا تھانیشا ॥ ی-
 سھاسھشاشاچراناچجننمندیسیوینیشو ॥ ۳۱ ॥ یثے تھانیشا
 راناچا تھانیشا تھانیشا تھانیشا تھانیشا تھانیشا تھانیشا
 یثے ॥ ۳۲ ॥

۳۲۔ یہ سب اپنی ذات کی استری میں اپنے وزن کو پیدا کرتے ہیں بیان والدہ کو ہم ذات
 کے ہونے سے والد کے برابر پیدا ہونے کو لانا چاہئے کہ چونکہ چار وزن کی استری میں
 والد سے بیچ ذات والے پیدا ہوتے ہیں یہ بات آگے کیلئے والد اپنی ذات کی عورت میں
 بھی بیچ پیدا کرتے ہیں اسقدر باقی رہا اسکا بیان اس اسلوک میں کیا جیسے شودر سے
 بیچ کی استری میں پیدا ہوا لڑکا آگے کو کھاتا ہے اس سے شدم جو آگے کو بیچ کی استری
 خود را میں پیدا ہوا گا وہ آگے کو کھاتا ہے لیکن شدم آگے کو سے یہ سب آگے کو دشت میں تھانیشا
 دشت میں کہ جیسے شدم مرد و عورت کے ایک نے برہم ہوتا تھا اس سے بیچ پیدا ہوا اسکی نسبت سے
 عورت دونوں گھنگار میں آئے جو پیدا ہوا گا وہ برادشت ہوگا۔

۳۳۔ جیسے تھانیشا کو وزن میں سے وہ میں اپنی طرح پیدا ہوتا ہے (یعنی عورت قریب ہوتی
 اپنی قوم میں) اس طرح خارج القوم میں بھی تھانیشا ہوتا ہے۔

۳۴۔ آگے کو وغیرہ جیسے ہنوم عورت میں ان قوم کو کے بھی زیادہ دشت بیٹے کو پیدا کرتے ہیں
 جیسے آگے کو گشت کی عورت میں اپنے سے بیچ بیٹے کو پیدا کرتا ہے اور شدا بھی آگے کو کی عورت میں اپنے
 سے بیچ بیٹے کو پیدا کرتا ہے اسی طرح دیگر پرت قوم میں بھی جانا چاہئے۔

۳۵۔ جس طرح شودر برہمتی میں چاٹا ل کو پیدا کرتا ہے اسی طرح ہار ورن کی عورت میں
 اپنے سے بھی بیچ بیٹے کو پیدا کرتا ہے۔

भलोमह्यश्च राजन्याद्वात्यानिच्छि विरेवच ॥ नदश्चकराश्चै
 वरवसोऽविडसवच ॥ २२ ॥ वैश्यास्तु जायते ब्राह्म्यास्तु धन्वाचा
 र्यसवच ॥ कारुषश्च विजन्मा च मैत्रः सात्वतसवच ॥ २३ ॥ व्य-
 भिचारे रावर्गा नाभवेद्यावेदनेन च ॥ स्वकर्मणांच त्यागेन जा-
 यन्ते वर्गा संकराः ॥ २४ ॥ संकीर्णायोनयो ये तु प्रतिलोमानुलो-
 मजाः ॥ अन्योन्यव्यतिषक्ताश्च तान्न वक्ष्याम्यशेषतः ॥ २५ ॥
 सूतो वैदेहकश्चैव चराडालश्च नराधमः ॥ मागधः स्रहजातिश्च
 तथाऽयोगवसवच ॥ २६ ॥

۲۲۔ پرائیمہ کشتری سے کشتری ذات کی عورت میں جعل ذات دلا ہوتے ہیں اسکا نام جھل
 پنجب نہ کر ن گھس در دوس ہے۔

۲۳۔ پرائیمہ ویشیہ سے ویشیہ ذات کی عورت میں سدھنوا چارج ذات دلائے تھو ہیں انکو
 کارن بنجما ستر ساوت ذات دلائے کہتے ہیں۔

۲۴۔ دوسر ذات کے مرد سے دوسری ذات کی عورت میں جماع۔ دواہ کرنیکے لائق
 جو بنین ہے اس کے ساتھ دواہ اپنے کرہوں کا تیاگ۔ ان سب باتوں سے ورن شکر پیدا ہوتے ہیں

۲۵۔ ان لوم اور پرت لوم کر کے باہم نسبت سے جو ورن شکر ہوں ہے اسکو میں کہوں گا۔

۲۶۔ سوت اور میدھیک اور چاڈال اور ماگدھ اور کشت اور آیوگ۔

* دیکھو شلوک نمبر ۲۰۔

آیوگ و سس تا چہ را ڈال آید سونہرا سہ ॥ پراتیلو-
 مین جا پنے سہرا پ سدا سہرا ॥ ۱۶ ॥ پشیا نسا گدہ دہو س-
 ویا تہ تہا ॥ پتی پمے تہا پنے پے ۵ پ سدا سہرا ॥ ۱۷ ॥
 ۱۱ جاتو نیسا را چہرا یا جاتیا مہا تپو کشا ॥ سہرا جاتو نی-
 سا را تہ سہرا کشا ۵ ۱۲ ॥ سہرا جاتو نی سا را تہ سہرا
 پا کشا تکی تہ ۱۳ ॥ پشیا نسا گدہ دہو سہرا تہ ۱۴ ॥
 ۱۵ ॥ دہا تہا سہرا سہرا تہا تہا تہا ۱۶ ॥ تہا تہا تہا-
 ویا تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا ۱۷ ॥ تہا تہا تہا تہا
 تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا ۱۸ ॥ تہا تہا تہا تہا
 تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا ۱۹ ॥ تہا تہا تہا تہا
 تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا ۲۰ ॥ تہا تہا تہا تہا
 تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا ۲۱ ॥ تہا تہا تہا تہا
 تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا ۲۲ ॥

۱۶۔ ایوگ و سس تا چہ را ڈال آید سونہرا سہ ۱۷۔ پشیا نسا گدہ دہو سہرا تہ ۱۸۔ دہا تہا سہرا سہرا تہا تہا تہا تہا تہا تہا ۱۹۔ تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا ۲۰۔ تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا ۲۱۔ تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا ۲۲۔ تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا

۱۶۔ ایوگ و سس تا چہ را ڈال آید سونہرا سہ ۱۷۔ پشیا نسا گدہ دہو سہرا تہ ۱۸۔ دہا تہا سہرا سہرا تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا ۱۹۔ تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا ۲۰۔ تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا ۲۱۔ تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا ۲۲۔ تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا

۱۶۔ ایوگ و سس تا چہ را ڈال آید سونہرا سہ ۱۷۔ پشیا نسا گدہ دہو سہرا تہ ۱۸۔ دہا تہا سہرا سہرا تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا ۱۹۔ تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا ۲۰۔ تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا ۲۱۔ تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا ۲۲۔ تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا

۱۶۔ ایوگ و سس تا چہ را ڈال آید سونہرا سہ ۱۷۔ پشیا نسا گدہ دہو سہرا تہ ۱۸۔ دہا تہا سہرا سہرا تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا ۱۹۔ تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا ۲۰۔ تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا ۲۱۔ تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا ۲۲۔ تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا تہا

विप्रस्य प्रियवर्गो बुद्धपतेर्वर्गो यो द्वयोः ॥ वैश्यस्य वर्गो चैकस्मि
न्यडेतेऽयमदाः स्मृताः ॥ १० ॥ सत्रियाद्विप्रकन्यायां सुतो भवति
जातितः ॥ वैश्यान्मागधवैदेही राजविप्रांगना सुतो ॥ ११ ॥ शू-
द्रादायोगवः सत्ताचराडालश्चाधमो न्दरागाम् ॥ वैश्यराजन्यवि-
प्रा सुजायन्ते वर्गो संकराः ॥ १२ ॥ सकान्तरे त्वाचुलो म्यादम्बष्ठो
ग्रीयथा स्मृतो ॥ सत्त्ववैदेहको तद्वत्प्रतिलो म्येऽपि जन्मनि ॥
युत्रायेऽनन्तरस्त्रीजाः कर्मनोक्ता द्विजन्मनाम् ॥ ताननन्तरना-
शस्तु मातरो घात्य च क्षते ॥ १४ ॥ ब्राह्मणादुग्रकन्यायामाह-
तो नाम जायते ॥ आभोरोऽम्बष्ठकन्यायामायोग्यां तु धि-
स्वराः ॥ १५ ॥

۱۰- برائمن سے کستریانی وغیرہ تین درجہ کی استری میں اور کستری سے ویشیہ وغیرہ دو درجہ کی
استری میں اور ویشیہ سے شتو درجہ کی استری میں جو پیدا ہونے میں وہ چھٹا پسند کیا تو کستری
۱۱- ان قوم کو بیان کرتے اب پرت قوم کو کہتے ہیں (کستری سے برائمنی کینیا میں سوت ذات والا
ہوتا ہے اور ویشیہ سے کستری یا کینیا میں ماگھوہ اور برائمنی کینیا میں بدوہ ذات والا ہوتا ہے۔
۱۲- شتو درجہ سے ویشیہ اور کستری اور برائمن کی کینیا سے حرب سلسلہ آگے جو کستری اور مین پر
چاندل ذات والے ہوتے ہیں۔

۱۳- حیطہ ایک ذات کے تفاوت میں ان قوم میں سبشت اور اگر ہے اسی طرح پرت قوم
میں کستری اور برائمن ہیں

۱۴- دو جہاؤں میں ایک ذات کی تفاوت والی عورت میں سلسلہ سے جو لوگ پیدا ہوئے
کے ہیں وہ سب مان کے عیسے مان کی ذات والے کہلاتے ہیں۔

۱۵- برائمن سے اگر آئیشٹ ایوگوان منیون کی کینیا میں سلسلہ سے آبرٹ۔ ایوگوان
ذات والے ہوتے ہیں

स्त्रीष्वनन्तरजातासु द्विजैरुत्पारितान्मुतान् ॥ सदृशानेवतानाह-
र्मात्सरोषविगर्हितान् ॥ ६ ॥ अनन्तरासुजातानांविधिरेषसनात-
नः ॥ द्योकान्तरासुजातानांधर्म्यंविद्यादिमंविधिम् ॥ ७ ॥ ब्राह्म-
णावैश्यकन्यायामश्वघोनामजायते ॥ निषादःशूद्रकन्यायां
सःपारशवउच्यते ॥ ८ ॥ सत्रियाच्छूद्रकन्यायांकूराचारविहा-
रवान् ॥ सत्रशूद्रवपुर्जन्तुरुग्रोनामप्रजायते ॥ ९ ॥

۶۔ دوج اور ایک ذات کی تفاوت والی عورت سے جو اولاد پیدا ہو وہ موافق کہلاتی ہے اگر
اس میں ان کے عیب کا نقص ہے۔ +

۷۔ ایک ذات کی تفاوت میں پیدا ہوئی اولاد کے قدیم طریق کو کہا اب دو ایک ذات کے تفاوت میں پیدا ہوئی اولاد کے طریق کو کہتے ہیں۔ کہ

۸۔ براہین سے بواہتا دلشایا میں اسبست والا پیدایو تا ہے اور براہین سے بواہتا شتو و رکلی کیا میں نشاد ذات والا پیدایو تا ہے اسکو براہین شتو کہتے ہیں غر۔

۹ کشتی سے بولتا تھا شور اکیسواہین بچپن کشتی شور انگ دلا اگر نام ذات دلا ہوتا ہے۔

[illegible]

अधीयींस्त्रयोवर्णाः स्वकर्मस्थाद्विजातयः॥ प्रब्रूयाद्ब्राह्मणारूवे-
षां नेतरापिति निश्चयः॥ १॥ सर्वेषां ब्राह्मणो विद्याद्वत्सुपाया-
न्यथाविधि॥ प्रब्रूयादितरेभ्यश्च स्वयंचैव तथा भवेत्॥ २॥ वैशे
ध्यात्प्रकृतिश्चैव नान्यमस्य च धारणात्॥ संस्कारस्य विशेषा
च्च वर्णानां ब्राह्मणानामुः॥ ३॥ ब्राह्मणाः सत्रियो वैश्यस्त्रयोव-
र्णाद्विजातयः॥ चतुर्वर्णकजातिस्तु शूद्रो नास्ति तु यंचमः॥ ४॥
सर्ववर्णोऽप्युत्पत्त्या सुपत्नीष्वसतयो निष्ठुः॥ आनुलोम्येन संभूता
जातानेयास्तस्यते॥ ५॥

- ۱- برہمن کشتری ویشیہ پیتنوں درن اپنے اکرم من قائم ہو کر وید کے جانے ہوئے سے بچ دھرم کو کرتے ہوئے وید کو پڑھیں برہمن تو دوسروں کو پڑھانے سے گریز کریں ویشیہ پڑھنا اگر پڑھادیں تو شپکین
- ۲- برہمن سب لوگوں کی تہذیب و عادت کو موافق طریق کے جانے اور دوسروں کو سمجھا دے اور اپنا بھی اسی کے موافق کرے۔
- ۳- بڑی ذات اور اتم جگہ سے پیدائش اور نیم کا دھارن اور بڑا سنگار ان و ہون برہمن سے بڑا ہے اور سب درنوں کا گرو اور پڑھو ہے۔
- ۴- برہمن کشتری ویشیہ پیتنوں درن دو چٹا کھلا تھے پن اور چوٹھا درن شودر ایک جہاں تھا ہے اور کوئی درن پانچواں نہیں ہے۔
- ۵- سب درنوں میں ان عورتوں سے جو مہقوم و منکوحہ وقت شادی کے باکرہ ہوں جو اولاد پیدا ہوتی ہے وہ مساوی (یعنی ماں باپ کی ذات والی) کہلاتی ہے۔

۶- یعنی ایک جنم مانا ہے جو تاسے اور دوسرا جنم سنگار سے ہوتا ہے۔

۷- جماعت انسان پر یہاں دیاسے سولہ اشکوک ۱۰۱۲ و ۳۰۰ میں بھی صاف لکھا ہے کہ پانچواں درن نہیں ہے اور چارویں کے فرائض نہیں ہیں۔

धर्मराचद्रव्यवद्वावातिष्ठेयत्तमुत्तमम् ॥ दद्याच्चसर्वभूताना
मन्नमेवप्रयत्नतः ॥ ३३३ ॥ विप्राराणांवेदविदुषांयहस्थानांय-
शस्विनाम् ॥ शुश्रूषेन्नतुशूद्रस्यधर्मो नैश्वयेयसःपरः ॥ ३३४ ॥
शुचिरुत्कृष्टशुश्रूषुस्तदुवागनहंकृतः ॥ ब्राह्मणाद्याश्रयो-
नित्यमुत्कृष्टांजातिमश्नुते ॥ ३३५ ॥ सखोऽनापदिवर्गानामु-
क्तःकर्मविधिःशुभः ॥ आपद्यपिहियस्तेषांकमशःतन्निबो-
धत ॥ ३३६ ॥

इतिमानवेधर्मशास्त्रेभृगुप्रोक्तायांसंहितायां
नवमोऽध्यायः ६

۳۳۳- دھرم سے ترقی دولت میں اچھی تدبیر کرے سب جائداروں کے کھانپنے کی
نیک طریق سے خبر گیری کرے۔

۳۳۴- ویڈ پڑھنے والے نیکنام گرسہتھ برہمنوں کی سیوا شودروں کی موکش دینے میں بے
انصاف ہے۔

۳۳۵- پاکیزگی و خدمت بزرگان و نرم زبانی و خودی نکرنا و ہمیشہ برہمنوں کی پناہ میں رہنا
یہ سب کام شودروں کو اتم ذات دینے والے ہیں۔

۳۳۶- بحالت ہونے وقت برصیت کے یہ طریق اعمال حسنہ ہر چاروں کیواسطے کہا اب وقت
برصیت میں انھوں کے طریق عمل کو سلسلہ وار کہتے ہیں۔

مَن جی کا دھبہ گرم جی کی سنگھتا کا

نوان ادھیا سماپت ہوا۔

✽

प्रजापतिर्द्विवेश्यायसृष्ट्यापरिद्वेषश्च॥ ब्राह्मणायचराज्ञेच
 सर्वाःपरिद्वेषजाः॥ ३२७॥ नचवैश्यस्यकामःस्यान्नरक्षेयंय-
 शूनिति॥ वैश्येचेच्छतिनाऽन्येनरक्षितव्याःकथंचन॥ ३२८॥
 मरिासुक्ताप्रबालानांलोहानांताजवस्यच॥ गन्धानांचरसा-
 नांचविद्यार्थबलाबलम्॥ ३२९॥ बीजानामुत्तिविद्यस्यास्ते-
 त्रदोषगुरास्यच॥ मानयोगंचजानीयात्तुलायोगांश्चसर्वशः॥
 ३३०॥ सारासारंचभाराडानांदेशानांचगुरागुरान्॥ लाभ-
 लाभंचपरायानांपशूनांपरिवर्जनम्॥ ३३१॥ भृत्यानांचभृ-
 तिंविद्याद्वायाश्चविविधान्तरााम्॥ इव्याणांस्थानयोगांश्च-
 क्रयविक्रयमेवच॥ ३३२॥

۳۲۷- برہما جی نے ویشیہ کو پیدا کر کے اسکو پیش (یعنی چار پایہ) دیا اور برہمن وکشتری کو تمام رعیت دی۔

۳۲۸- ویشیہ یہ خواہش نہ کرے کہ چار پایہ کی حفاظت نہ کرے کاشتکاری وغیرہ کرنا سوا ہی چار پایہ کی حفاظت ضرور کرے اور جب تک ویشیہ چار پایہ کی حفاظت کرے تب تک دوسرا ور نہ کرے۔
 ۳۲۹- جو اہرات ہو گا موتی و گوا و سوت و خوشبویات و رس ان سبھوں کی قیمت ملک و وقت سمجھ کر کم و زیادہ مقرر کرے۔

۳۳۰- گھیت کا عیب و نہر تخم زری پرستھہ و دورن و غیرہ لغو اور تول و ماسنہ و غیرہ لغو و دورن ان سبھوں کا جاننے والا ویشیہ ہو دے۔

۳۳۱- برہمنوں کا سارا سار ملکوں کا عیب و نہر تیار و نہر وختی کا نفع و نقصان ترقی چار پایہ ان سب کو جانے۔

۳۳۲- مزدوروں کی مزدوری آدمیوں کی انواع اقسام کی زبان و پیہ اشرفی وغیرہ خرید کے قیام کی تدبیر اور خرید و فروخت ان سب کو جانے۔

अद्भ्योऽन्वित्रह्यतः सत्रमश्मनो लोहमुत्थितम् ॥ तेषां सर्वत्रांते-
जः स्वासुयोनिषु शाम्यति ॥ ३२१ ॥ नाब्रह्मसत्रमधोतिना सत्रं
ब्रह्मवर्जते ॥ ब्रह्मसत्रं च संस्तुतमिह चामुत्र वर्जते ॥ ३२२ ॥ द-
त्वा धनं तु विप्रेभ्यः सर्वदरादसमुत्थितम् ॥ पुत्रे राज्यं समास्तु
कुर्वीत प्रायशं रसो ॥ ३२३ ॥ एवं चरन्महायुक्तो राजधर्मेषु पा-
र्यिवः ॥ हितेषु चैव लोकस्य सर्वांस्त्याग्नियोजयेत् ॥ ३२४ ॥
सद्योऽखिलः कर्मविधिरुक्तो राजः सनातनः ॥ इमं कर्मविधिं-
विद्यात्कमशौचैश्च शूद्रयोः ॥ ३२५ ॥ वैश्यस्तु ह्यतः संस्कारः क-
त्वादारपरिग्रहम् ॥ वार्त्तायां नित्यमुक्तः स्यात् शूनां चैव रक्ष-
सो ॥ ३२६ ॥

۳۲۱۔ پانی سے آگ کی پیدائش ہے برہمن سے کشتری کی پیدائش ہے پتھر سے لوہے کی
پیدائش ہے اور انھوں نے کچھ سب جگہ ملتا ہے دھلو بگڑتا دھرتا تو لیکن اپنی اصل کو پرکشتات
ہو جاتا ہے۔

۳۲۲۔ برہمن سے کشتری اور کشتری سے برہمن علیحدہ ہو کر ترقی نہیں پاتا ورنہ مثال
رہنے سے اس کو کمین ترقی پاتے ہیں۔

۳۲۳۔ ستر سے حاصل ہوئی تمام دولت کو برہمن کو دیکر اور ملک بیٹے کو دیکر خگین ترک
قالبت کرے۔

۳۲۴۔ اس طریق سے راجہ ہر ایک وقت پر راج دھرموں کو کرتا ہوا ہیودی عالم میں رہ
ملا زمان کو مفروض کرے۔

۳۲۵۔ یہ تمام طریق راجہ کے عمل روزمرہ کا کیا گیا اب آگے سلاہ وار ویشیہ اور شورو کے
دھرموں کو کہیں گے۔

۳۲۶۔ ویشیہ سنگار کو پاکر دواہ کر کے حفاظت چارپایہ و کشتکاری وغیرہ میں ہمیشہ مہر و

لोकानन्यात्सृजेयुर्येलोकपालاंश्चکوپیता: ॥ देवान्कुर्युरदे-
वांश्चक: सिरावंस्तांसमधुयात् ॥ ३१५ ॥ यातुपात्रित्यतिष्ठति
लोकादेवाश्चसर्वदा ॥ ब्रह्मचैवधनंयेषांकोहिंस्यात्तान्जिजी-
विषु: ॥ ३१६ ॥ अविद्वांश्चैवविद्वांश्चात्मारोदैवतंमहत ॥ प्रणी-
तश्चाप्रणीतश्चयथाग्निदैवतंमहत ॥ ३१७ ॥ श्मशानेष्वपिते-
जस्वीपावकोनैवबुध्यति ॥ हूयमानश्चयज्ञेषुभूयरावाभिवर्द्धते
॥ ३१८ ॥ सर्वयद्यप्यनिष्ठेषुवर्तन्तेसर्वकर्मसु ॥ सर्वथाब्राह्म-
णा: पूज्या: परमदैवतंहितत् ॥ ३१९ ॥ सत्रस्यातिप्रवृद्धस्य-
ब्राह्मणान्यतिसर्वश: ॥ ब्रह्मैवसन्नियन्तुस्यात्सत्रंहिब्रह्मसं-
भवम् ॥ ३२० ॥

۳۱۵۔ جو برہمن جنگیں ہو کر دوسرے لوگوں کو کپال بنا دے اور دیوتا کو غیر دیوتا کرے اس میں
تکلیف دیکر کون شخص دولت و حکومت حاصل کر سکتا ہے۔

۳۱۶۔ جن برہمنوں کی دولت و برتری انھوں کی نپاہ میں لوگ اور دیوتا رہتے ہیں ان
برہمنوں کو زندگی کی خواہش رکھنے والا کون شخص مار لگا۔

۳۱۷۔ جس طرح گن سنسکار کو حاصل کرے یا کرے تاہم وہ بڑا دیوتا ہے اس طرح برہمن بڑا
ہو یا مگر کھو تاہم بڑا دیوتا ہے۔

۳۱۸۔ بیج والی گن سہاں میں بھی دوش کو مین پر اپت ہوتی پھر بھی بگیہ میں ہوں کو
پر اپت ہوتی ہے بہر حال ترقی ہی پاتی ہے۔

۳۱۹۔ اس طرح اگرچہ برہمن تمام اعمال ناشائستہ کرتے ہیں تاہم پوجنے کے لائق ہیں اور بڑے
دیوتا ہیں۔

۳۲۰۔ کشتی تمام چیزوں سے بڑا ہوتا ہے برہمن کو اپنے اختیار میں مین کر سکتا کیونکہ وہ برہمن
سے ہوا ہے اس سب سے برہمن کشتیوں کو اپنے اختیار میں کر سکتا ہے۔

परिपूरायथाचन्द्रं हृष्टा हृष्टान्तिमानवाः ॥ तथा प्रकृतयो य-
स्मिन्सचान्द्रव्रतिको ह्यः ॥ ३०६ ॥ प्रतापयुक्तस्ते जस्वी नित्यं
स्यात्पापकर्मसु ॥ दुष्टसामन्तहिंसश्च तदा ज्ञेयं त्रतं स्मृतम् ॥
३१० ॥ यथा सर्वाणि भूतानि धराधारयते समम् ॥ तथा सर्व-
ाणि भूतानि विधत्तः पार्थिवं वनम् ॥ ३११ ॥ एतैरुपायैरन्यैश्च यु-
क्तो नित्यमतन्द्रितः ॥ स्तेनान् राजानि शक्तीयात्स्वराष्ट्रे परव-
च ॥ ३१२ ॥ परमध्यायदं प्राप्नो ब्राह्मणान् प्रकीपयेत् ॥ ते हो-
नं कृपिता हन्तुः सद्यः सवलवाहनम् ॥ ३१३ ॥ यैः कृतः सर्वभ-
क्ष्योऽग्निरपेयश्च महोरधिः ॥ सयी चाप्यायितः सोमः को न न-
श्येत्प्रकीप्यतान् ॥ ३१४ ॥

۳۰۵۔ حبطح پورن چندرمان کو دیکھ کر آدمیوں کو آندھ ہوتا ہے اسی طرح سب جاندار راجہ کو
دیکھ کر خوش زمین اس طریق سے راجہ پر ہارے۔
۳۰۶۔ پاپ کرکون ہمیشہ صاحب اقبال و پر جلال ہے یعنی مجرموں کو ضرور سزا دیوے
اور ان کا برت کرتا ہو اڈسٹ منتیرون کو سزا دینے والا ہے۔
۳۰۷۔ حبطح زمین تمام جانداروں کو اپنے اوپر یکساں قائم رکھتی ہے اسی طرح راجہ زمین پر
دھارن کرتا ہو اسب جانداروں کو دھارن کرے۔
۳۰۸۔ ان تیریون اور دیگر تیریون سے مشمول رہ کر ہمیشہ سستی سے دور رہے اپنے اور دوسروں
کی طرح سے چورون کو مینٹ و نابو کرے۔
۳۰۹۔ راجہ وقت مصیبت میں بھی برہمنوں کو خوشگین نہ کرے کیونکہ ان کے عہدہ کرنے سے راجہ
سج فوج و سوار یوں کے مینٹ و نابو ہو جاتا ہے۔
۳۱۰۔ جن برہمنوں نے ان کو سب ہکشی اور ہما سدر کو کھادی اور چندرمان کو کشتی روگ
والا کیا ان برہمنوں کو خوشگین کرانے کو ن قانی ہوگا۔

इन्द्रस्यार्कस्यवायोश्चयमस्यवरुणास्यच॥ चन्द्रस्याग्नेः प्रथि-
व्याश्चतेजोवृत्तिश्चयश्चेत॥ ३०३॥ वार्षिकाश्चतुरो मासान्यथे-
न्द्रोऽभिप्रवर्धति॥ तथाभिवर्धत्वंराष्ट्रं कामैरिन्द्रव्रतंचरन् ३०४
॥ अथौ मासान्यथादित्यस्तोयंहरनिरस्मिभिः॥ तथाहरेत्करंरा-
ष्ट्रानित्यमर्कव्रतंहितत्॥ ३०५॥ प्रविश्यसर्वभूतानिमयाचर-
तिमारुतः॥ तथाचौरैः प्रवेष्टव्यं व्रतमेतद्विमारुतम्॥ ३०६॥
यथायमः प्रियद्वेष्योप्राप्तेकाले नियच्छति॥ तथाराज्ञानिय-
न्तव्याः प्रजास्तद्वियमव्रतम्॥ ३०७॥ वरुणो नयथापाशैर्वद्ध-
सवाभिदृश्यते॥ तथापापानियुक्तीयाव्रतमेतद्विवारुणाय
॥ ३०८॥

۳۰۳۔ آتور سورج ہو ایم راج برن چند زمان اگن زمین انھوں کے پر اکرم کو راجہ دھارن
کرے اور دشتوں کو خانی کر کے اقبال و محبت سے شامل رہے۔
۳۰۴۔ جب طرح چار مہینہ برسات میں راجہ اندر پانی برساتے ہیں اس طرح راجہ اندر کا کام
کرتا ہوا تمام راج میں رعایا کی تمنا، دلی پوری کرے۔
۳۰۵۔ جب طرح سورج اپنی شعاع سے آٹھ مہینے مکنت پانی زمین سے کھینچتے ہیں اس طرح
راجہ سورج کا کام کرتا ہوا راج سے محصول لےوے۔
۳۰۶۔ جب طرح ہوا تمام راج میں داخل ہو کر گشت کرتی ہے اس طرح راجہ ہوا کا کام
کرتا ہوا پوسیلہ جاسوسان تمام جانداروں میں داخل ہو کر گشت کرے۔
۳۰۷۔ جب طرح بیم راج دوست و دشمن دونوں کو قریب الگ ہو کر پرماتما ہی اس طرح راجہ
سب رعایا کو جرم کے موافق بیم راج کا کام کرتا ہوا سزا دےوے۔
۳۰۸۔ جب طرح برن دشتوں کو باندھتے ہیں اس طرح راجہ برن کا کام کرتا ہوا مجرموں کو
گرفتار کرے۔

चोस्रगोत्साहयोगेनक्रियैवचकर्मणाम्॥स्वशक्तिं परशक्तिं
चनित्यंविद्यान्महीपतिः॥२६८॥पीडनानिचसर्वाणि॥व्यमना-
नितयैवच॥आरभेतततःकार्यसंचिंत्यगुरुलाघवम्॥२६९॥
आरभेतैवकर्माणिआन्तःआन्तःपुनःपुनः॥कर्मागारभमा-
णांहिपुरुषंश्रीर्निषेवते॥३००॥कृतं त्रेतायुगंचैवद्वापरंकलिरे-
वच॥राज्ञोच्चतानिसर्वाणिराजाहियुगमुच्यते॥३०१॥कलिः
प्रसुप्नोभवतिसजाग्रद्वापरंयुगम्॥कर्मस्वभ्युद्यतस्त्रेताविचरं-
स्तु कृतंयुगम्॥३०२॥

۲۹۸۔ جاسوسِ انتہاء (یعنی تقویتِ دل)، عملِ انکے، سیاستِ راجہ دوسروں کی طاقت کو ہمیشہ جانے۔

۲۹۹۔ تمام تکلیفات و بیج کو خیال کر کے چھوٹے بڑے کام کو آغاز کرے۔
۳۰۰۔ اگر کاموں کو کرتے کرتے تھک جائے تو پھر پھر کاموں ہی کا آغاز کرتا رہے کیونکہ
لکشی کام کرنا ہون کی سیوا کرتی ہے۔

۳۰۱۔ ست جگ تریتا دوا پر کلجگ یہ چار جگ ہیں مگر کچھ نہیں بلکہ راجہ جیسا رواج جاری کرے وہی جگ ہوتا ہے یعنی راجہ ہی جگ ہے۔

۴۰۴۔ جب راجہ بیو قونی وکسنی وغیرہ سے انجام کار نہ کرے تب کھی گئے تھے اور جب جانگر کام نہیں کرتا تب دوا پر ہوتا ہے اور جب کام کرتا ہے تب تریا ہوتا ہے اور جب تریا کے موافق کام کرتا ہے تب سٹ جگ ہوتا ہے اسلئے راجہ ہر وقت کام کرتا ہے یہ سترہاٹ ہے چارو جگ کا نونا سترہاٹ نہیں ہے۔

स्वाम्यमात्योपुराणं कोशशब्दी सुहृत्तया ॥ सप्तप्रकृतयो ह्ये-
ता सप्तांगराज्यमुच्यते ॥ २६४ ॥ सप्तानां प्रकृतीनां तु राज्यस्या-
सां यथाक्रमं ॥ पूर्वपूर्वगुरुतरं जानीयाद्यसर्गमहत् ॥ २६५ ॥ सप्ता-
ंगस्येह राज्यस्य विषयस्य त्रिदश उच्यते ॥ अन्योन्यगुरावैशेष्या-
न्म किंचिदतिरिच्यते ॥ २६६ ॥ तेषु तेषु तु कत्येषु तत्तत्संगं विशिष्य-
ते ॥ येन यत्साध्यते कार्यं तत्तस्मिन् श्रेष्ठमुच्यते ॥ २६७ ॥

۲۹۴- راجہ و وزیر و دار السلطنت و ملک و خزانہ و سرادشہ و دار و دوست و غیر ان ساتوں کو
پرکرت کہتے ہیں اور یہ ساتوں عضو سلطنت میں ہر ایک کی سلطنت ہفت اعضاء کی کہلاتی ہے۔

۲۹۵- ان ساتوں میں سلسلہ سے اول اول کو سب سے بڑا دیکھو ہوتا ہے یعنی آخر کے نمونے میں
اول اول کو دیکھو ہوتا ہے۔

۲۹۶- اس لوگ میں باہم ملے ہوئے ہفت اعضاء سلطنت میں باہم عجیب و غریب سے تڑپ کی
طرح کوئی عضو نہ ہین ہے اگرچہ اول اول عضو کو زیادہ کہا تو بھی ان ساتوں اعضاء کے
درمیان میں ایک عضو کے کام کو دوسرا عضو بذات خود نہیں کر سکتا اس سے اگلے لگے
عضو کی بھی ضرورت ہوتی ہے ایسے سے زیادہ کی ممانعت سے اس میں تڑپ کی شکل
دہی ہے جیسے تینوں ڈنڈ ملا کر اوپر چار لگے گلوں کے بال سے بندش کرتے ہیں باہم نسبت
ہوتی ہے اور تڑپ دھارن سے ششستر ارقہ میں کوئی ڈنڈ زیادہ نہیں ہے دیکھتے ہی
ہفت اعضاء سلطنت مرقومہ بالا کو جاننا چاہئے۔

۲۹۷- جس عضو سے جو کام ہو داس میں افضل ہے۔

प्राकारस्य च भेत्तारं परिवाराणां च पूरकम् ॥ द्वाराणां चैव भंक्ता-
 रं क्षिप्रमेव प्रवासयेत् ॥ २८६ ॥ अभिचारेषु सर्वेषु कर्तव्यो द्वि-
 शतोदमः ॥ मूलकर्मणि चानामैः कृत्यासु विविधासु च २८७
 ॥ अवीज विक्रीयैव बीजोत्कृष्टं तथैव च ॥ मर्यादाभेदकश्चै-
 व विक्षतं प्राप्नुयाद्धमम् ॥ २८८ ॥ सर्वकराटकपापिष्ठं हेमकारं
 तु पार्थिवः ॥ प्रवर्त्तमानमन्यायेच्छेदयेच्छवशः सुरैः ॥ २८९ ॥
 सीताद्रव्यापहरणोऽशस्त्राणामौषधस्य च ॥ कालमासाद्यका-
 र्यं च राजा दण्डं प्रकल्पयेत् ॥ २९० ॥

۲۸۹- قلعہ کو توڑنیوالا اور اسکی خندق کو پٹنے والا اور اسکے دروازہ کو توڑنیوالا جلدی ملک سے
 باہر نکال دیا جائے۔

۲۹۰- شہر میں کے سب مارن کا پر لوگ اور پالون کی دھول لیکر مارن پر لوگ ان کربوں
 کے کرنیوالوں کو دوسوین ڈنڈ دینا چاہئے اگر اس پر لوگ سے آدمی مر جائے تو شہر سے قتل دینا
 اور اسی طریق سے مان باپ اور زوجہ کو چھوڑ کر اگر شہر میں وغیرہ موہ کر کے دولت لینے کیو اسے
 ہسی کرن دیا جائے و انواع اقسام کا پر لوگ کرینے والے کر نہیں بھی دوسوین ڈنڈ دینا چاہئے
 ۲۹۱- جو جگہ جس کے لائق نہیں ہے اسکو جس کے لائق کہہ کر دھنڈکرنیوالا یا ناقص تخمین
 تھوڑا اچھا تخمینہ لکھ کر دینے والا مر جاوے گا کہو نیوالا یہ سب انواع اقسام کی سزا قطع اعضا یا دین
 ۲۹۲- سب شہر میں میں شراوٹ شہر ہے وہ جب حضور کرے تو جرم کے موافق تھوڑی
 تھوڑے عضو کو چھوری سے کاٹے۔

۲۹۳- بل دھوڑو یا وغیرہ جو آلات کا شکاری ہیں اور اسکو اور ادویہ انھوں کے چرنے میں وقت
 اور فصل کو دیکھ کر راجہ سزا کا لغین کرتے۔

चिकित्सकानां सर्वेषां मिथ्याप्रचरतां दमः ॥ अमानुषेषु प्रथमो
मानुषेषु तु मध्यमः ॥ २८४ ॥ संक्रमध्वजयद्दीनां प्रतिमानां च
भेदकः ॥ प्रतिकुर्याच्च तत्सर्वं पंचदद्याच्च तानि च ॥ २८५ ॥ अ-
दूषितानां द्रव्याणां दूषणो भेदने तथा ॥ मरणो नाम पवेधे च दराडः
प्रथमसाहसः ॥ २८६ ॥ समैर्हि विषमं यस्तु चरेद्द्वैमूल्यतोऽपि वा
॥ समाप्नुयाद्दमं पूर्वमनरो मध्यममेव वा ॥ २८७ ॥ बन्धनानि च स-
र्वाणि राजा मार्गे निवेशयेत् ॥ दुःस्विता यत्र दृश्येरन्विहताः पा-
पकारिणः ॥ २८८ ॥

۲۸۴- جو شخص بددین حکم نشاستر کے چار پایہ دیگرہ میں جھوٹھی طبابت کرتا ہو اس کے پورب سہس
تا دان اور آدمیوں میں جھوٹھی طبابت کرنے والے سے مدھیم ساسہس تا دان لینا چاہئے۔

۲۸۵- پانی کے اوپر آنے جانے کے واسطے قائم جو لکڑی یا تیچر سے اور محل یا دشابی میں جو
سیرق جھنڈا ہے اور تالاب وغیرہ میں جو لکڑی سے اور پوتنا کی سورت ان چیزوں میں سے کسی چیز
کا علیحدہ کر نیوالا پالسنوں ڈنڈ دیوے اور جو لگاڑا ہے اسکو بنا دے۔

۲۸۶- بے عیب چیز ڈنگو با عیب کرنے اور ٹوٹنے میں اور جو اہرات وغیرہ میں ناکارہ سوراخ
کرنے پر مہم ساسہس ڈنڈ دیوے۔

۲۸۷- برابر قیمت دینے والوں میں ایک کو اچھی چیز اور دوسرے کو ناقص چیز یا کسی قیمت پر
چیز اور کسی قیمت پر والی چیز دینے والا پورب ساسہس یا مدھیم ساسہس ڈنڈ دیوے حسب قیمت جرم
تعمین ہذا کرنا چاہئے۔

۲۸۸- تمام قید خانوں کو سرک پر بنانا چاہئے تاکہ اس کے دیکھنے سے پاپ کر نیوالوں کو ڈکھ
د یعنی پابجولان دیکھو کچھ و پیاسے اور ناخن و نمونے سر و داڑھی کے بال بڑھ ہونے و لاغر بدن
ایسے قیدیوں کے دیکھنے سے سب آدمی کا رہا کر دلی کو کرنے سے خوف کھانے کے جب ہم بڑا کام
کرنے کے قیاسی حالت میں ہو چکی۔

तडागभेदकंहन्यादपुष्टद्वयेनवा॥ यद्यपिपतिसंस्क्रुयाहा-
प्यत्तमसाहसम्॥ २७६॥ कोद्यागारायुधागारदेवतागारभेद-
कान्॥ हस्त्यश्चर्यहर्तृश्चहन्यादेवाविचारयन्॥ २७७॥ यस्तु-
पूर्वनिविष्टस्यतडागस्योदकंहरेत्॥ आगमंवाप्यपांभिद्या-
त्सदाप्यः पूर्वसाहसम्॥ २७८॥ समुत्तजेद्राजमार्गेयस्त्वमेध्य-
मनापदि॥ सद्योकार्वापरौदद्यादमेध्यंचाशुशोधयेत्॥ २७९॥
॥ आयज्ञतोऽथवाचजोगर्भिणीबालस्यवा॥ परिभाषणमहे-
तितच्चशोध्यमितिस्थितिः॥ २८०॥

۲۷۹- جو تالاب کہ انسان اور دان وغیرہ سے لوگوں کا اپکار کر نیوالا ہے اسکو پل وغیرہ شکست
کرنے سے جو لگاؤ تا ہے اس آدمی کو پانی میں غرق کر کے یا اور طرح سے نابود کرے اگر وہ آدمی
تالاب نہ کرے تو بدستور سابق بنادوبے تو اسکو فانی نہ کرنا چاہئے بلکہ اتم ساس تادان لینا چاہئے
۲۸۰- راجہ کا غلہ وغیرہ دولت کا خزانہ واسلحہ خانہ ودیوتا کا سند انھوں کا توڑنے و بگاڑ نیوالا اور
باتمقی و گھوڑ اور غلہ کو چورانیوالا ان سب کو مارنا سہین کچھ سچا نہ کرنا چاہئے۔
۲۸۱- کسی شخص نے رعیت کیواسطے تالاب بنایا اور دوسرا آدمی اسکا پانی بیوی اور پانی کے
آئینی راہ کو عینڈ لگا کر بند کر دے تو وہ شخص میر تقم ساس ڈنڈ کے لائق ہے۔
۲۸۲- بغیر وقت مصیبت کے شاہراہ میں ناپاک چیز کو ڈالے تو وہ کار شاہراہ بند دلوے
جس ناپاک چیز کو ڈالا ہے اسکو جلد شاہراہ سے باہر لے جائے۔
۲۸۳- اگر کوئی مصیبت زدہ یا بوڑھا یا حاملہ عورت یا نابالغ لڑکا حرکت نہ تو کرے یا اگر
صرف اس بات کے کہنے کے لائق نہ ہو تا ہے کہ یہ کیا کیا میرا کے لائق نہیں ہوتا لیکن اس ناپاک
چیز کو تو ضرور اسٹہ سے اٹھا لیا دین۔

یسچا پی دھرم س م ی ا ت م چ ی تو دھرم جی ون : ॥ د ر ا ڈے ن ے و ت م ی و ی د ی
 ت ب ک ا د م ا د ی و ی چ ی ت م ॥ ۲۹۳ ॥ ا م م ی ا ت ے ہ ت ا م ی و ی ی م ی
 ی ا م ی د ر ا ن ے ॥ ا ک ت ی ت ی ن ا م ی د ا و ت ی ن ی و ا س ی ا : س ی ر ی چ ی د ا : ॥
 ۲۹۴ ॥ ر ا ج : ک ی ش ا ی ہ ت د ی ا پ ت ی ک ی ل ی ی و ی چ ی ت ا ن ۥ ۥ ی ا ت ی
 د ی و ی د ی د ر ا ڈے ر ی ر ا ن ا م ی و ی چ ی ت ا ن ۥ ۥ ۲۹۵ ॥ س ن د ی د ی ل ی و ی
 ی ی و ی ر ا م ی و ی د ی و ی ن ی ت ر ک ر ا : ۥ ۥ ت ی ا م ی د ی ل ی و ی پ ی ہ ت ی ت ی س ی و ی
 ل ی ن ی و ی ش ی و ی ۥ ۥ ۲۹۶ ॥ ا م ی ل ی و ی م ی د ی و ی د ی و ی د ی و ی م ی و ی ۥ ۥ
 د ی ت ی و ی ہ ت چ ر ی و ی د ی و ی و ی د ی و ی ۥ ۥ ۲۹۷ ॥ ا م ی د ی و ی د ی
 د ا م ی و ی د ی و ی د ی و ی د ی و ی ۥ ۥ س ن ی د ی و ی د ی و ی د ی و ی
 د ی و ی د ی و ی ۥ ۥ ۲۹۸ ॥

۲۹۳۔ جو ہر مین گئیہ دو ان دغیر کر کے گئیہ دو ان دغیر دھرم کو دوسرے کے واسطے پیدا کر کے
 اوقات گزاری کرے اور اپنے دھرم سے علیحدہ ہو راجہ مین کو بھی دھرم سے
 ۲۹۴۔ جو شخص چورون سے کانوں کے غارت ہونے کی حالت میں چور کے نظر
 آئیں بہالت صاحب طاقت ہونیکے دھرم مین دھرم کا توں نکال دینے کے
 لائق ہے۔

۲۹۵۔ راجہ کے خزانہ مین چورانیوال اور خلاف حکم راجہ کے عمل کو نیوال اور راجہ کے دشمنوں سے
 دوستی کر نیوال انکو انواع اقسام کے دھرم سے قتل کرنا چاہئے۔
 ۲۹۶۔ جو چور بھگت زنی کر کے مات مین چوری کرتے ہیں انکے دونوں ہاتھ کاٹ کر پھانسی پر
 پھانسی دے۔

۲۹۷۔ جو چور دھرم کا گناہ کرے اور گناہ کی پکارت کرے اور دھرم سے دور ہو جائے اور دھرم سے
 ۲۹۸۔ جو شخص چور کو آگ بھات دے دھرم سے دور ہو جائے اور دھرم سے دور ہو جائے
 انھوں کو راجہ مانتہ چور کے نابود کر دے۔

भक्ष्यभोज्योपदेशे च ब्राह्मणानां च दर्शनैः ॥ शौर्यकर्मोपदेशो-
 च कुर्युस्तेषां समागमम् ॥ २६८ ॥ ये तत्र नोपसर्पे युर्मूलप्रणि-
 हिताश्च ये ॥ तान्प्रसक्त्यन्वपोहत्यात्ममित्रज्ञातिवान्धवान् ॥
 २६९ ॥ न ह्योढेन विना चौरं घातयेद्दार्मिको नृपः ॥ सहोदं सोप-
 कारां घातयेदविचारयन् ॥ २७० ॥ ग्रामेऽपि च ये केचि चौरा-
 राणां बलदायकाः ॥ भाराडावकाशदाश्चैव सर्वास्तानपि घात-
 येत् ॥ २७१ ॥ राश्रेषु रक्षाधिकृतान् सामन्तांश्चैव चोदितान् ॥ अ-
 भ्याघातेषु मध्यस्थान् शिष्याचौरानिवद्भुतम् ॥ २७२ ॥

۲۶۸- پہلے سے جو چار جا سوس صورت میں وہ ان سب چوروں سے ایسا کہیں کہ آئیے
 ہمارے گھر چلے لڑو وغیرہ کھائے ہمارے ملک میں ایک برہمن ایسا کہ تیرے حصولِ حملہ
 بمطالب کی جائے اسکا ورثہ کیجئے ایک آدمی بہت آدمیوں سے جنگ کر لگا یا اسکو دیکھو
 اس بہانہ سے راجہ کے ڈنڈ کو دھارن کر نیوالے آدمی ان چوروں کو فراہم کرے وہ گنہگار
 ۲۶۹- جو چور مقام حوزہ نوش میں پھیلانے لگے انکو پکڑو یا دزدان و جاسوس
 ۲۷۰- دھرم کا جاننے والا اور سپہ عمل کر نیوالا راجہ چوروں کو بددین دریافت و تلبوت کامل
 چوری کے قتل کرے اگر جو ریح نشان چوری کے ہو تو اسکو مع اسکے اشیاء کے نیست و نابود کرے
 ۲۷۱- گانوں میں جو کوئی چور کو غلام و نوکرانہ کو راجہ انکو بھی نابود کرے۔
 ۲۷۲- راجہ میں جو آدمی حفاظت کا اختیار رکھنے والے ہیں اور جو آدمی گانوں کے
 چارہ و طرفینے والے ہیں یہ دونوں قسم کے آدمی چوروں کو چوری کرنے سے ہتھکڑی
 تو راجہ انکو بھی چوروں کی طرح سزا دیوے۔

۲۶۸- پہلے سے جو چار جا سوس صورت میں وہ ان سب چوروں سے ایسا کہیں کہ آئیے
 ہمارے گھر چلے لڑو وغیرہ کھائے ہمارے ملک میں ایک برہمن ایسا کہ تیرے حصولِ حملہ
 بمطالب کی جائے اسکا ورثہ کیجئے ایک آدمی بہت آدمیوں سے جنگ کر لگا یا اسکو دیکھو
 اس بہانہ سے راجہ کے ڈنڈ کو دھارن کر نیوالے آدمی ان چوروں کو فراہم کرے وہ گنہگار
 ۲۶۹- جو چور مقام حوزہ نوش میں پھیلانے لگے انکو پکڑو یا دزدان و جاسوس
 ۲۷۰- دھرم کا جاننے والا اور سپہ عمل کر نیوالا راجہ چوروں کو بددین دریافت و تلبوت کامل
 چوری کے قتل کرے اگر جو ریح نشان چوری کے ہو تو اسکو مع اسکے اشیاء کے نیست و نابود کرے
 ۲۷۱- گانوں میں جو کوئی چور کو غلام و نوکرانہ کو راجہ انکو بھی نابود کرے۔
 ۲۷۲- راجہ میں جو آدمی حفاظت کا اختیار رکھنے والے ہیں اور جو آدمی گانوں کے
 چارہ و طرفینے والے ہیں یہ دونوں قسم کے آدمی چوروں کو چوری کرنے سے ہتھکڑی
 تو راجہ انکو بھی چوروں کی طرح سزا دیوے۔

تہاں دویہان بھیرا پھیرا کرم شیت تھت: ॥ کوریا تہا سنانرا-
 جا سامک سارا پھیرا تھت: ॥ ۲۶۲ ॥ نہ ہندرا ڈاھتہ شاکھ: کتہ پھ-
 یوہنننننن: ॥ ستہننا نا پاپ پھوڈی نا نینہت چرتاں سیتو ॥ ۲۶۳ ॥
 ॥ سہا پھاپھ پھالاکا ویشم مہا نینکھیا: ॥ چتھ پھیا شے-
 تھتھسا: سہا جا: پھیرا نا نین ॥ ۲۶۴ ॥ جی رتو دھانان پھیرا نا
 نینکھیا: سہا جا: پھیرا نا نین ॥ ۲۶۵ ॥ سہا پھاپھ پھالاکا ویشم
 مہا نینکھیا: سہا جا: پھیرا نا نین ॥ ۲۶۶ ॥ سہا پھاپھ پھالاکا ویشم
 مہا نینکھیا: سہا جا: پھیرا نا نین ॥ ۲۶۷ ॥ سہا پھاپھ پھالاکا ویشم
 مہا نینکھیا: سہا جا: پھیرا نا نین ॥ ۲۶۸ ॥ سہا پھاپھ پھالاکا ویشم
 مہا نینکھیا: سہا جا: پھیرا نا نین ॥ ۲۶۹ ॥

۲۶۲۔ راجا کے علیحدہ علیحدہ کام میں کیا حقہ عیب کو کھڑا کر دینا جس سے جرم کے موافق سزا
 دیوے۔

۲۶۳۔ چور اور پانی جو موڈ متواضع صورت بنا کر عالم میں گشت کرتے ہیں انھوں کے
 جرم کا ان کو بدوں سزا دینے کے ممکن نہیں ہے اس واسطے سزا دینا چاہیے۔

۲۶۴۔ سمجھا (یعنی مقام فراہمی صلح اندیشاں) چاہے کچھ پختہ ہو ان مقام شہر اب فردوسی
 مقام غلہ فردوسی چور اسہ خانہ طوائف شہر وخت مول مقام جمع خلافت

۲۶۵۔ باغات جنگل ہاگنہ خانہ کاریگراں خانہ خالی درخت سبہ وغیرہ کا جنگل جنگل نو طیار گزہ
 ۲۶۶۔ ایسے ملکوں کی فوج وغیرہ سے راجہ گرفتاری چور وغیرہ کی کرے کیونکہ چور وغیرہ ایسے مقامات

میں سامان خور و نوش و لوازمہ عیاشی کے تلاش کرنے کے واسطے اکثر ہا کرتے ہیں۔

۲۶۷۔ انھوں کے سود کرنے والے اور ملاپ اور بگاڑ کے جانتے والے چوروں کے قریب میں
 ہوشیار پہلے چور جا سوس کی صورت میں انھوں کے وسیلے سے چوروں کو جاننا اور نیت نہایت
 کرنا چاہیے۔

उत्कोचकाश्चोपधिकावंचकाः कितवास्तथा ॥ मंगलादेशस्त-
त्ताश्चमद्राश्चैसशिकैः सह ॥ २५८ ॥ असम्यक्कारणाश्चैवमहा-
मात्राश्चिकित्सकाः ॥ शिल्पोपचारयुक्ताश्चनिपुणाः पराय-
योधितः ॥ २५९ ॥ एवमादीन्विजानीयात्प्रकाशांलोककंद-
कान् ॥ निगूढचारिराश्चान्याननार्यानार्यलिंगिनः ॥ २६० ॥
तान्विदित्वासुचरितैर्गूढैस्तत्कर्मकारिभिः ॥ चरैश्चानेकसं-
स्थानैः प्रोत्साद्यवशमानयेत् ॥ २६१ ॥

۲۵۸ - کام والے آدمی سے دھن لیکر نامناسب کام کر نیوالا اور خوف دکھلا کر دھن لینے والا
اور سونا وغیرہ میں ناقص چیز ملا کر دغا بازی کر کے دوسرے کا دھن لینے والا اور دیوت اور سماج
مستم کی تمنا باری کر نیوالا اور دولت و فرزند و نفع وغیرہ حالات خوشی کو بیان کر کے اوقات
لسر کر نیوالا اور بد غلی کو چھپا کر اچھے فعل کو ظاہر کر کے دوسری دولت لینے والا اور ہاتھ کی
ریکھا کو دیکھ کر اچھے اور بُرے پھل کو کھڑے دوسرے کی دولت لینے والا -

۲۵۹ - ہاتھی کو سکھانے سے اوقات لسر کر نیوالا اور پیشہ طبابت سے اوقات لسر کر نیوالا
یہ دونوں اس حالت میں جب اپنے کام کو اچھی طرح نہ کریں اور دھن لیوں اور پیشہ مصوری وغیرہ
سے گزارہ کر نیوالا اور بغیر کئے ہوئے تصور یہ چھوٹا نیکی تحریک و ترغیب دیکر دوسرے کی دولت لے لیا
اور دوسری عورت یہ سب دوسرے کو اپنے قابو میں کر لینے کو ہوشیار ہیں -

۲۶۰ - ان سب کو اور ان کے برابر دوسروں کو ظاہر میں خار عالم جانتا چاہئے اور پوشیدہ غارتگر
دوسرے میں جو کہ بھلے آدمی ہیں میں مگر بھلے آدمیوں کے نشان سے رستے ہیں

۲۶۱ - ان سب کو بوسیدہ کاٹیک وغیرہ جاسوس کے (جو کہ بیت سے مقامات پر مقیم ہیں اور
جنگا بیان ساتوں میں اُدھکا میں ہوا) اور نیز بوسیدہ ان آدمیوں کے جو کہ پوشیدہ غارتگری کر نیوالا
ہیں جانگر اور اُن کو دکھ دیکر اپنے اختیار میں کرے -

سم्यङ्گی۔ विश्वेशस्तु कृतदुर्गश्च शास्त्रतः ॥ कराटकोद्धरणो-
 नित्यमातिष्ठेद्यत्नसुत्तमम् ॥ २५२ ॥ रक्षणादार्यवृत्तानां कराट-
 कानांच शोधनात् ॥ नरेन्द्रास्त्रिदिव्यांतिप्रजापालनतत्पराः
 ॥ २५३ ॥ अशासंस्तस्करान्यस्तु वलिं गृह्णाति पार्थिवः ॥ तस्य
 प्रसूभ्यते राक्षस्यर्गाश्च परिहीयते ॥ २५४ ॥ निर्भयस्तु भवेद्यस्य-
 राष्ट्रं बाहुबलाश्रितम् ॥ तस्य तद्वर्द्धते नित्यं सिच्यमान इव द्रुमः
 ॥ २५५ ॥ द्विविधांस्तस्करान्विद्यात्पर इव्यापहारकान् ॥ प्रका-
 शांश्चाप्रकाशांश्च चारुचसुर्महीयति ॥ २५६ ॥ प्रकाशवं च का-
 स्तेषां नानापरायोपजीविनः ॥ प्रच्छन्नवं च कास्ते ते ये स्तेनाद-
 विकाश्यः ॥ २५७ ॥

۲۵۲۔ شاستر میں کئے ہوئے ملک میں موافق ہدایت نشاستر کے قلعہ بنا کر اور اسمین مقیم
 ہو کر کاشا لگانے میں تدبیر نشا لیتہ کرے۔
 ۲۵۳۔ راجہ پرورش رعایا میں کما حقہ مشغول ہو کر اچھے لوگوں کی حفاظت کرے اور کٹے
 کے نکلنے سے شوگرک میں جاتا ہے۔

۲۵۴۔ جو راجہ چورون کو سراہین دیتا۔ اور محسول اپنا لیتا تو ایسے راجہ کی راج میں رعایا
 بردعا کرتی ہے۔ اور اس پاپ پینہ چھین ہو کر شوگرک میں حاصل نہیں ہوتا۔

۲۵۵۔ جس راجہ کی قوت بازو پاکر رعایا بیخوف رہتی ہے اسکا راج ہر روز ترقی پاتا ہے جسے
 بچا ہوا درخت۔

۲۵۶۔ راجہ دونوں کی آنکھ سے دیکھ کر دوسرے کی دولت کو چور لے والے چور کو ظاہر و باطن
 دوستم کر کے دوطرہ کا جانے۔

۲۵۷۔ انواع اقسام کی چیزوں کو فروخت کر نیوالے ظاہری چور میں اور آدمیوں کی
 مقام میں اور بجات سو جانے آدمیوں کے دوسرے کی دولت چورانیوں کے پوشیدہ چور میں۔

यत्र वर्जयते राजा पापहादभ्योधनागमम् ॥ तत्र कालेन जायन्ते
मानवा दीर्घजीविनः ॥ २४६ ॥ निष्यद्यन्ते च सस्यानि यथोप्ता-
नि विशांश्च यक ॥ बालाश्च न प्रमीयन्ते विद्वतं न च जायते ॥ २४७
॥ ब्राह्मणान्वाधमानस्तु कामादवरवर्जाजम् ॥ हन्याच्चित्रैर्व-
धोपायैरुद्धे जनकरैर्नृपः ॥ २४८ ॥ यावानवध्यस्य वधेतावान्
वध्यस्य मोक्षसो ॥ अधर्मो नृपतेर्ह्यधर्मस्तु विनियच्छतः ॥
२४९ ॥ उदितोऽयं विस्तरगोमिथो विविस्मानयोः ॥ अष्टादश
सुमार्गेषु व्यवहारस्य निर्णायः ॥ २५० ॥ संबंधस्य शिवाय
शिसम्यक् कुर्यन्महीपतिः ॥ देशानलब्धां लिप्से तलब्धांश्च य-
रिपालयेत् ॥ २५१ ॥

۲۴۶- جس مقام پر راجہ پاپیوں کی فراہم کی ہوئی دولت کو نہیں لیتا ہر وہاں آدمی بڑی
عمر والے پیدا ہوتے ہیں (یعنی بہت دن تک زندہ رہتے ہیں)۔

۲۴۷- جسطح ویشیہ لوگ جو غلہ بوٹتے ہیں وہ غلہ علیحدہ علیحدہ پیدا ہوتا ہے جسطح اس راجہ
کی راج میں لوگ بھی بہنیں مرتے اور نہ کوئی لڑکا کسی عرصہ سے مہر دم پیدا ہوتا ہے۔
۲۴۸- جو چھوٹا درن خواہش سے براہمنوں کا قتل کرے اور اسکو انواع اقسام کی تدبیروں
سے قتل کرے جو بھکاری درج و فوج کی دینے والی ہیں۔

۲۴۹- جو قتل کے لائق نہیں ہے اس کے قتل میں جتنا باپ ہوتا ہے اتنا ہی باپ قتل کے لائق
آدمی کو چھوڑ دینے سے ہوتا ہے۔

۲۵۰- اب بھوک جی کہتے ہیں کہ اسے رش لوگوں کو اٹھارہ قسم کے مفدمات میں باہم کرنا لوگوں
کی تیج مفدہ کو مفصل کیا۔

۲۵۱- راجہ اس طریق کار یا مشورہ دھرم کو چھی طرح سے کرنا ہوا ان ملکوں کے فتح کی خواہش
کرے جو کہ فتح بہنیں ہوتے اور پھر ممالک منقوحہ کی پرورش کرنیکی خواہش کرے۔

پراپشیتلکوکوروا:سर्ववर्गायथोदितम्॥नांवाराजा
ललाटेस्युर्द्वारस्तूतमसाहसम्॥२४०॥आगस्तुब्राह्मरा
स्यैवकार्योमध्यमसाहसम्॥विवास्योवाभवेद्राष्ट्रात्सद्व्यःस
परिच्छदः॥२४१॥इतरेकतवन्नस्तुपायान्येतान्यकामतः॥
सर्वस्वहारमर्हन्तिकामतस्तुप्रवासनम्॥२४२॥नाददीतनृपः
साधुर्महापातकिनोधनम्॥आददानस्तुतल्लोभात्तेनदोषेरा
लिप्यते॥२४३॥असुप्रवेश्यतंदराडंबरुरागोपपादयेत्॥
श्रुतवृत्तोपयन्नेवाब्राह्मरोप्रतिपादयेत्॥२४४॥ईशोदराडस्य
वरुरागोराजादराडधरोहिमः॥ईशःसर्वस्यजगतोब्राह्मरोवे
दपारगः॥२४५॥

۲۴۰- جو چارہ ورن پڑاچیت کے کرنیوالے ہیں راجہ انکی پیشانی پر نشان نکرے بلکہ ہر اپن
ڈنڈ لیوے۔

۲۴۱- مجرم برہمن سے مدھیم سامن ڈنڈ لیوے خواہ مجرم برہمن کو مع استیاء خانگی و دولت کے
اپنی مانج سے باہر نکال لیے۔

۲۴۲- کشتی وغیرہ تینوں درن ملا خواہش ان پاپون کو کرن تو انھوں کی تمام دولت
کو لے لیوے اور خواہش سے کیا ہو تو قطع اعضا خواہ قتل کی نمراد بنیا جائیے۔

۲۴۳- ہر راجہ سادھو و وہ بڑے پاپیوں کا دھن نہ لیوے اگر طمع سے لیو تو انھوں کے
پاپ میں شامل ہوتا ہے۔

۲۴۴- ڈنڈ کے دھن کو (یعنی زر جہانہ و ناوان والی چیز) پانی میں ڈال کر برن دیوتا کی اختیار
میں کرے یا اس برہمن کو دیوے جو دیدر شاستر کا جانتے والا اور اس پر عمل کرنیوالا ہو۔

۲۴۵- کیونکہ مہاپا پی کو ڈنڈ دینے سے جو دھن ملا ہر اس دھن کا مالک برن دیوتا و دیدر
تمام مطلب کو جانتے والا برہمن تمام جگت کا سوا می ہے۔

ब्रह्महाचसुरायश्चस्तेयीचगुरुतल्पगः॥ सतेसर्वेष्टयकृजेया
महापातकिनोनराः॥ २३५॥ चतुर्गामयिचैतेषांप्रायश्चित्तम
कुर्वताम्॥ शारीरंधनसंयुक्तं दण्डधर्म्यप्रकल्पयेत्॥ २३६॥ शु-
रुतल्येभगः कार्यः सुरापाने सुराध्वजः॥ स्तेये च श्वपदं कार्यं ब्र-
ह्महराय शिरः पुमान्॥ २३७॥ असंभोज्याह्यसंयाज्या असं-
पाठ्या विवाहिनः॥ चरेयुः ष्ठिवीदीनाः सर्वधर्मवहिष्कृताः॥
॥ २३८॥ ज्ञातिसंबन्धिभिरुत्वेतेत्यक्तव्याः क्षतलसराः॥ नि-
र्दयानिर्नमस्कारास्तन्मनोरनुशासनम्॥ २३९॥

۲۳۵ - براہمن کو مارنیوالا شراب پینے والا براہمن کا سونا بفر ۱۶ ماشہ چورانیوالا اپنی الزہ
سے جملع کر نیوالا یہ چار وعلیحدہ علیحدہ بڑے پاپی کسلاتے ہیں
۲۳۶ - یہ چار وپرست نکرین کو مع دولت شرابے بدنی مرقومہ ذیل انکو دینا چاہیے۔
۲۳۷ - والدہ سے جملع کر نیوالا شراب پینے والا براہمن کا ۱۶ ماشہ سونا چورانیوالا براہمن کو
مارنیوالا ان چاروں کی پیشانی پر حسب سلسلہ نشانات مرقومہ ذیل کرنا چاہیے یعنی فرج کی صورت
دیکھ کاکی صورت کتے کے پانوں کی صورت بے سر کے آدمی کی صورت۔
۲۳۸ - جو یہ سب لوگ نشانات مرقومہ بالا کے رکھنے والے ہیں انکے بھوجن اور گیہ اور پاٹھ
اور شادی وغیرہ کرم نہ کرنا چاہیے یہ سب تمام دھرموں کا باہر ہو کر مفلس و متفرد و خوفناک ہو کر
زین پر گھومیں۔
۲۳۹ - ذات والے اور دشتہ دار اور بھائی وغیرہ سب انکو ترک کریں اپنرحم نکرین اور نہ انکو
نیشکار کریں یہ ن مبالغ کا حکم ہے۔

۲۲۹- کشتی و شیشہ شور یہ سب تاوان دینے کی طاقت نہ رکھتے ہوں تو کام کر کے تاوان بشکل
 قرضہ سے خلاصی پاؤں اور برہمن تو آہستہ آہستہ دیوے کا کام کرے۔
 ۲۳۰- کشتی - بالک - پورٹھا - جہت - غفلت - پیارا - غفلت - کو باسن وغیرہ کی چھوٹے ماراؤ
 رشی سے پانچھان منہ اڑن گوارا دیوے۔
 ۲۳۱- کام کرانے کے واسطے حکوم آدمی کام دے کے کام کا نقصان کر تو سب میں اسکا جیوے
 ۲۳۲- آدمی راجہ کے حکم کے خلاف کام کرے تو اسے وصال سرکاری کو نقصان دے گی پوچھا تو
 ۲۳۳- کشتی و بالک برہمن کو اڑیوے دشمن کی غارتگری کرے تو اس میں راجہ ان سب میں کو نیست فنا ہو کر
 ۲۳۴- جس مقام پر کسی مقدمہ میں از رو سے انصاف جو حکم اخیر ظاہر کنندہ منہ اڑا دے گی اسکو سزا
 کرے اور پھر اسکو دوسری طرح نکرے۔
 ۲۳۵- لیکن وزیر و خدیف جس مقدمہ کو خلاف فیصلہ کریں اسکو راجہ آپ دیکھے اور اگر راجہ
 کو وقت ملاحظہ کے انکا فیصلہ خلاف حکم ہو تو راجہ انھوں سے ہزار پین ڈیڑھ لاکھ۔

अप्राप्तिभिर्न क्रियते तल्लोके द्यूतमुच्यते ॥ प्राप्तिभिः क्रियते यस्तु स विजेयः समाह्वयः ॥ २२३ ॥ द्यूतं समाह्वयं चैव यः कुर्यात्कारयेत्तदा ॥ तान्सर्वान्धातये राजा शूद्रांश्च द्विजसिंघिन ॥ २२४ ॥ कितवान्कुशीलवान्कूरान्पाखराडस्थांश्च मानवान् ॥ विकर्मस्थान् शौरिडकांश्च क्षिप्रं निर्वसयेत्पुरा ॥ २२५ ॥ एते शस्त्रैर्वर्त्तमाना राज्ञः प्रच्छन्नतस्कराः ॥ विकर्म क्रिययानित्यं बाधन्नेव त्रिकाः प्रजाः ॥ २२६ ॥ द्यूतमेतत्पुरा कल्पे हृदं वैरकारं गतम् ॥ तस्माद् द्यूतं न सेवेत्तदा स्यात्तर्धमपि बुद्धिमान् ॥ २२७ ॥ प्रच्छन्नं वा प्रकाशं वा तन्निवेयेत्तयो नरः ॥ तस्य दराडविकल्पः स्याद्यथेष्टं नृपतेस्तथा ॥ २२८ ॥

۲۲۳- بیان چیز پالسنہ وغیرہ سے داؤ لگا کر بازی کرنا دیوت کہلاتا ہے اور جاندار چیزیں بھینسہ و بھیش و گھوڑا سے داؤ لگا کر بازی کرنا سما ہوسے کہلاتا ہے۔

۲۲۴- ان دونوں کو جو کرے اور کرادے اسکو اور جو شودر کہ برہمن و کشتی کی نشان کو و معارن کرنیوالا ہے۔ اسکو راجہ بنا بود کرے۔

۲۲۵- قمار باز رقاص کانیوالا سے دشمنی کرنیوالا۔ پاکھنڈی ناکارہ کام کرنیوالا شراب بنانہ والا ان۔ ب۔ کورا جہ جلد شہر و باہر نکال دیوے۔

۲۲۶- یہ سب چھپے ہوئے چوہین کوٹے کاموں سے اچھی رعایا کو تکلیف دینے پر تیار ہیں۔

۲۲۷- بری دشمنی کرنیوالا قمار ہی ہے یہ زمانہ سابق میں تجربہ کیا گیا اسواسطے قطعاً آدمی نہیں کے طور پر بھی اسکا استعمال نہ کرے۔

۲۲۸- پوشیدہ یا بظاہر قمار بازی کرنیوالے آدمیوں کو راجہ جس سزا کے دینے کی خواہش کرے وہی سزا دیوے۔

अनपत्यस्य पुत्रस्य माताहायमवाप्नुयात् ॥ मातर्यपि च वृत्ता
यां पितुर्माताहरेद्धनम् ॥ २१७ ॥ क्रयोधने च सर्वस्मिन् प्रवि-
भक्तेयथाविधि ॥ पञ्चादृश्येत यत्किंचित् सर्वसमतानयेत्
॥ २१८ ॥ वस्त्रं पत्रमलंकारं कृतान्मुद्रकं स्त्रियः ॥ योगक्षेमं
प्रचारं च न विभाज्यं प्रचक्षते ॥ २१९ ॥ अथ मुक्तो विभागो वः
पुत्रारां च क्रियाविधिः ॥ क्रमशः क्षेत्रज्ञादीनां द्युतधर्मनि-
बोधता ॥ २२० ॥ द्युतं समाह्वयं चैव राजा राजान्निवारयेत् ॥ राजा
न करणावेतौ द्वौ द्वौ प्रथिवीसिताम् ॥ २२१ ॥ प्रकाशमेत-
त्तास्कार्यं यदेव न समाह्वयो ॥ तयोर्नित्यं प्रतीघाते नृपतिर्य-
त्नवाञ्छयेत् ॥ २२२ ॥

۲۱۷- اگر بیٹا والد ہو تو اسکا دھن اسکی والدہ کیسے والدہ بھی ہو تو اسکی وادی کیسے۔
۲۱۸- توفیقیم دولت و قرضہ کے موافق طریقہ شائستہ کے جو کچھ دھن دیکھنے میں آوے اسکا
حصہ برابر کریں۔

۲۱۹- پارچہ سواری زیور لٹو ستون کنوان وغیرہ غلام و کنیزک مشیر پر دہت وغیرہ گنو وغیرہ چاہیے
کے آنے جانے کی راہ ان سبھوں کا حصہ نکرنا چاہیے اپنے کام کے موافق سب کوئی بیویں۔
۲۲۰- بھوکہ جی کہتے ہیں کہ اسے رت لوگو کشین وغیرہ بیویوں کی تقسیم حصص کو آپ لوگوں
کہا اسکے بعد قمار بازی کو بیان کرتے ہیں۔

۲۲۱- دیوت اور سماہوے نام قمار بازیوں کو راجہ اپنی راج میں شہر کیسے کیونکہ یہ دونوں
راج کو نیست و نابود کرتے ہیں۔

۲۲۲- یہ دونوں ظاہر چور ہی ہیں اس واسطے ان دونوں کے شانے کی تہذیب میں ہے۔

येवाज्येष्ठः कनिष्ठो वा हीयेतां शप्रदानतः ॥ त्रियेतान्यतरो वापि
तस्य भागो न लुप्यते ॥ २११ ॥ सोदर्या विभजे रत्नं समेत्य सहिताः
समम् ॥ आतरो ये च संसृष्टा भगिन्यश्च सनाभयः ॥ २१२ ॥ यो-
ज्येष्ठो विनि कुर्वीत लोभाद्वा त्वन्यवीच्यसः ॥ सो ज्येष्ठः स्याद
भागश्च नियन्तव्यश्च राजभिः ॥ २१३ ॥ सर्व एव विकर्मस्थाना-
हन्ति भ्रातरो धनम् ॥ न चादत्त्वा कनिष्ठेभ्यो ज्येष्ठः कुर्वीत यो
तुकम् ॥ २१४ ॥ भ्रातृणां मविभक्तानां यद्युत्थानं भवेत्सह ॥
न पुत्रभागां विषमं पिता दद्यात्कथंचन ॥ २१५ ॥ उर्ध्वं विभागा-
ज्ञातस्तु पित्र्यमेव हरेद्धनम् ॥ संसृष्टास्तेन वा येस्युर्विभजे स
तैः सह ॥ २१६ ॥

۲۱۱- بھائیوں میں بڑا بھائی یا چھوٹا بھائی تقسیم حصہ کے وقت بوجہ سنیاس وغیرہ دھارنا
کرنے کے اپنے حصہ سے عروم ہو یا فوت ہو گیا ہو تو اس کے حصہ کو غائب کرنا چاہئے بلکہ اس کا حصہ
بھی علیحدہ کرنا مناسب ہے۔

۲۱۲- اس حصہ کو سب بھائی اور بہن ملکر بانٹ لیویں۔
۲۱۳- جو بڑا بھائی طبع سے چھوٹے بھائی کو حصہ نہ دے وہ بڑا بھائی نہیں کہلاتا اور اس
سے فخر پاتا ہے۔

۲۱۴- اگر سب بھائی پیغامدہ کا بونھن مشغول رہیں تو دولت کو نہیں پہنچا بھائی دولت
کو چھوٹے بھائی کو بغیر دیتے ہوئے مرے اپنے قبضہ میں نہ کرے۔
۲۱۵- سب بھائی ملکر دولت کو جمع کریں تو والد کو مناسب ہے کہ وقت تقسیم کے طاق حصہ
نکرتے لیکن سب کو حصہ برابر دیوں۔

۲۱۶- اپنے بیٹوں سے علیحدہ ہو کر پھر بنیاد کیا ہو تو وہ بڑا بھائی یا بہن یا بہن کا بھائی اور اس کا
ساتھ بڑا علیحدہ ہو بھائی شامل ہو ہوں تو اس کی ساتھ بقیم حصص جو بڑا بھائی یا بہن یا بہن کا حصہ

विद्याधनक्षयद्यस्तत्तस्यैवधनंभवेत्॥मैत्र्यभौद्धाहिकंचैव-
 माधुपर्किकमेवच॥२०६॥आतृणांयस्तुनेहेतधनंशक्तःस्व-
 कर्मणा॥सनिर्भाज्यःस्वकादंशात्किंचिद्व्योपजीवनम्॥२०७
 ॥अनुपपन्नितद्व्यंशमैरायदुपार्जितम्॥स्वयमीहितलब्धं
 तन्नाकामोवातुमर्हति॥२०८॥पैतृकस्तुपिताद्व्यमनवाप्तंय-
 दाशुयाव॥नतस्तुत्रैर्भजेत्तार्द्धमकामःस्वयमर्जितम्॥२०९॥
 विभक्ताःसहजीवन्तोविभजेरन्तुनर्यदि॥समस्तत्रविभागाःस्था-
 ज्यैक्यंतत्रनविद्यते॥२१०॥

۲۰۶- علم و دوستی مرد و او و در هر یک از خون کے وسیلے سے جو دولت ملے اس میں کسی کا حصہ
 نہیں ہے جو جمع کرے وہی لیتے۔

۲۰۷- سب بھائیوں میں جو بھائی اپنے کام میں ہوشیار ہے اور والد کی دولت میں
 کی خواہش نہیں کرتا ہی اس کو اپنے حصہ سے کچھ دولت دیکر لا حصہ کرنا چاہیے کیونکہ اس کے لئے
 پیچھے سے مکران کریں کہ ہمارا والد نے حصہ نہیں لیا ہی۔ ہکو حصہ دو۔

۲۰۸- والد کا روپیہ ضائع ہو گئے خراج ہوا اور اپنی محنت سے جو دولت فراہم کرے اس کو اگر اپنی
 مرضی ہو تو بھائیوں کو بڑی سے لیتے اس دولت میں سے بھائیوں کو حصہ نہیں دیتے۔

۲۰۹- والد کی دولت کو کیسے چھین لیا اور والد نے اس کو واپس نہ پایا ہو اور بیٹا اس
 دولت کو اپنی محنت سے وصول کرے تو اس کا حصہ اپنے بیٹوں کو نہیں دے اور خوشی ہو تو
 دیوے کیونکہ وہ دولت اپنی کوشش و پیروی سے آئی ہے باپ کی نہیں ہے۔

۲۱۰- ایک دفعہ تقسیم ہو گئی ہو اپنی خواہش سے شامل ہو کر رہیں اور پھر تقسیم حصہ کریں
 تو برابر گلان کو وہ حصہ نہیں دے جو اس کی بزرگی کی وجہ سے تقسیم اول میں دیا جاتا ہے۔

पत्न्यौ जीवति यः स्त्रीभिरलंकारो धृतो भवेत् ॥ नतं भजेरन्दायादा
भजमानाः पतन्ति ते ॥ २०० ॥ अनंशौ ह्नीवयति तौ जात्यंधव-
धिरो तथा ॥ उन्मत्तजडसूकाश्च ये च केचिन्निरिन्द्रियाः ॥ २०१ ॥
सर्वेषामपि तु न्याय्यं दातुं शक्या मनीषिणा ॥ ग्रासाच्छादन-
मत्यन्तं पतितो ह्यदरुद्भवेत् ॥ २०२ ॥ यद्यर्थिता तु दारैः स्यात्स्त्री-
वादीनां कथंचन ॥ तेषामुत्पन्नतन्तूनामपत्यं दायमर्हति २०३
॥ यत्किंचित्पितरि प्रेते धनं ज्येष्ठोऽधिगच्छति ॥ भागो यवी-
यसां तत्र यद्विद्यानुयासिनः ॥ २०४ ॥ अविद्यानां तु सर्वेषां
मीहातश्चेद्धनं भवेत् ॥ समस्तत्र विभागस्यादपि व्युत्तिधार-
णा ॥ २०५ ॥

۲۰۰۔ مورت نے بحالت زندگی شوہر کے جو بیوی زیب بدن کیا ہے اسکو حصہ لینے والے تقسیم کرنے تو تیت ہوتے ہیں۔

۲۰۱۔ محنت پت پیدائش سے اندھا ہوا پیدا ہو وغیرہ سے پیدا ہوا بقیہ اردل کو نگاہ کی عضو نر کہنے والا ایسے پوشخص ہر وہ جہد ہنیز پاتے۔

۲۰۲۔ حصہ لینے والا شتر جاننے والا آدمی ان سب کو حسب مقدار کھانا و کپڑا تار لیت
انکو دیوے اور اگر نہ دیوے تو نیت ہوتا ہے۔

۴۴۔ تم - محنت وغیرہ کو شادی کرنے کی خواہش ہو تو شادی کر کے حسبِ بیاقت اس عورت
میں بیٹا کرا کے اس بیٹے کو حصہ دیوے

۲۰۴۔ بعد وفات والد کے بڑا بھائی قبل تقسیم شراکت کے کچھ دولت جمع کرے تو حسین صاحب چھوٹے بھائی پاؤں شتر علیک صاحب علم ہوں۔

۲۰۵۔ جملہ برادران بے علم کی محنت کسے دولت جمع ہو تو اوشیں برابر حصہ کرنا چاہئے دوست
والد کی بہن سے یہ تناشتہ کاٹنے سے۔

अन्नाधेयं च यद्वत्तं पत्या प्रीतेन वै वयतः ॥ यत्पौ जीवति वत्तायाः
पत्न्यास्तद्वत्तं न भवेत् ॥ १६५ ॥ ब्राह्मणैर्वा र्षगान्धर्वप्राजायत्ये-
षु यद्वत्तं ॥ अप्रजायामतीताभ्यां भर्तुरेव तदीक्ष्यते ॥ १६६ ॥ य-
त्तस्याः स्याद्वत्तं विवाहेष्वा सुरादिषु ॥ अप्रजायामतीता-
भ्यां मातापित्रोस्तदीक्ष्यते ॥ १६७ ॥ स्त्रियाः तु यद्वत्तं विवा-
दत्तं कथंचन ॥ ब्राह्मणी तद्वत्तं कन्या तदयत्तस्य वा भवेत् ॥ १६८
॥ न निर्हारं स्त्रियः कुर्युः कुटुम्बाद्ब्रह्मसंभवात् ॥ स्वकारयि च-
वित्ताद्विस्वस्य भर्तुरनाजया ॥ १६९ ॥

- ۱۹۵- خوش ہو کر خوش ہوئے دیا۔ لید شادی کے خاندان شوہر سے جو حاصل ہوا ان دونوں
دھن کو لید وفات اس عورت کے اسکے بیٹے لیویں۔
- ۱۹۶- براہم دیو آرش گاندھو پیرا جاپتیہ ان پانچوں دواہ میں جو کچھ استری کو ملا اسکو
لید وفات اس لاولد استری کے اسکا شوہر پاتا ہے۔
- ۱۹۷- استریشاج۔ راکشس ان تین قسم کی شادیوں میں جو دھن استری کو ملا اسکو لید
وفات اس لاولد استری کے اسکے مان باب پاتے ہیں شوہر نہیں پاتا۔
- ۱۹۸- برہمن کے گھر میں چاروں درن کی عزت شادی کی ہوئی ہوں برہمن برہمنی کہتا ہے
ہوا اور دونوں کی استریاں لاولد دیوہ ہوں اور انکو کی طرح پائے دھن دیا ہوا اس دھن کو لید
وفات ان استریوں کے برہمنی کی کہتا پادے اگر کہتا ہوا تو اسکا بیٹا پادے۔
- ۱۹۹- براہ و غیرہ بہت لوگوں کا بوسادھارن دھن ہر اسکو استری وغیرہ در سلی زینہ
کے نہ لیویں اور بدوں راجازت شوہر کے شوہر کا دیا ہوا دھن بھی نہ لیویں اس سے یہ بات
ثابت ہوئی کہ یہ استریوں کے دھن نہیں ہیں۔

सर्वाशामेकपत्नीनामेकाचेत्युत्रिणीभवेत् ॥ सर्वास्तास्तेन-
पुत्रेणाप्राहपुत्रवतीमनुः ॥ १८३ ॥ अथसः अथसोऽलाभेयायी
यान् रिक्थमर्हति ॥ बहवश्चेत्तुसदृशाः सर्वेरिक्थस्यभागिनः
॥ १८४ ॥ नधातरोनपितरः पुत्रारिक्थहराः पितुः ॥ पिताहरेत
पुत्रस्यरिक्थंभातरएवच ॥ १८५ ॥ अथाराणामुत्कंकार्यत्रिषु
पिराडः प्रवर्त्तते ॥ चतुर्थः संप्रदातेषां पंचमो नोपपद्यते ॥ १८६
॥ अनन्तरः सपिराडास्तस्यतस्यधनंभवेत् ॥ अत ऊर्ध्वं सकु-
ल्यः स्यादाचार्यः शिष्यसेववा ॥ १८७ ॥ सर्वेषामप्यभावेतु
ब्राह्मणारिक्थभागिनः ॥ त्रेविद्याः शुचयोदान्तास्तथाध-
र्मो न ह्यीयते ॥ १८८ ॥

۱۸۳- ایک آدمی کے چار پانچ زوجہ ہوں ان سب میں ایک پتروان ہو تو اس کے ہونیے
سب زوجہ پتروان کہلاتی ہیں اس بات کو من جیئے کہا ہے۔

۱۸۴- بارہ طرح کے بیٹوں میں بحالت نمونے اول اول کے دوسرے دوسرے دولت کو پانچ
ہیں اگر بہت بیٹے جفت ہوں تو دولت کو بھی جفت پاتے ہیں۔

۱۸۵- باپ اور بھائی دولت کو بیٹن پاتے بیٹا ہی دولت کو پاتا ہے بیٹا ہو تو باپ اور
بھائی دولت کو پاتے ہیں۔

۱۸۶- باپ اور دادا اور پردادا ان تینوں کو نپڑ اور جمل دینا چاہئے چوتھا دینے والا پانچواں
کوئی بیٹن۔

۱۸۷- سپنڈ یعنی سات پشت میں جو مرد آدمی کا قریب ہو وہ دولت کو پاتا ہے اگر سپنڈ ہو
تو سات پشت کے اوپر والا دولت کو پاتا ہے اگر وہ بھی ہو تو آ چارچ دولت کو پاتا ہے اگر چارچ بھی ہو تو چارچ
۱۸۸- یہ سب بیٹوں کو بیٹنوں کی طرح دے دے اور اندریوں کے جیتنے والے صاحب زادے ہیں
لوگ دولت کو پاتے ہیں اس ریت سے دھرم کا نامش نہیں ہوتا۔

मातापितृविहीनोयस्यक्तोवास्यादकारणात् ॥ आत्मानं-
स्पर्शयेद्यस्मैस्वयंदत्तस्तु संसृतः ॥ १७७ ॥ यंत्राहारास्तु शूद्रा-
यां कामादुत्पादयेत्सुतम् ॥ सपारयन्नेव शवस्तस्मात्पारशवः
सृतः ॥ १७८ ॥ दास्यांवादासदास्यांवायः शूद्रस्य सुतो भवेत् ॥
सोऽनुजातो हरेर्दशमिति धर्मो व्यवस्थितः ॥ १७९ ॥ क्षेत्रजा-
दीन्सुतानेतांनेकादशयथोदितान् ॥ पुत्रप्रतिनिधीनाहुः क्रि-
यालोपान्मनीषिणः ॥ १८० ॥ यस्य तेऽमिहिताः पुत्रः प्रसंगा-
दन्यबीजजाः ॥ यस्य ते बीजतो जातास्तस्य तेनेतरस्य तु ॥ १८१ ॥
आदृशामेकजातानामेकश्चेत्पुत्रवान्भवेत् ॥ सर्वास्तांस्तेन
पुत्रेणापुत्रिणो मनुष्यव्रीतः ॥ १८२ ॥

۷۷- جس لڑکے کے مان باپ مر گئے ہوں یا بلا سب مان باپ نے اسکو ترک کر دیا ہو وہ لڑکا اپنے کو آپ جیکو دیوے وہ اسکا سویم و شنام بیٹا کہلاتا ہے۔

۱۷۸۔ شہوت و محبت کے غلبہ سے شادی کی ہوتی شودر ذات کی عورت میں جو لڑکا پیدا ہوا وہ زندہ ہی مردہ ہے اس لیے وہ لڑکا برہمن کا شودر خواہ پارشونام بیٹا کہلاتا ہے۔

۱۷۹۔ داسی خواہ داسی کی داسی میں شور سے لڑکا پیدا ہوا وہ والد کے حکم سے حصہ
یا کتاب یہ دھرم میں داخل ہے۔

۱۸۰۔ کشمیر ج وغیرہ جو گیارہ بیٹے ہیں انکو پندرہ توں نے بدین لحاظ کہ پندرہ دان وغیرہ کواریہما
نہو جاوین بجائے فرزند قائم کیا ہے۔

۱۸۱۔ دوسرے کے نطفہ سے جو لڑکے پیدا ہوئے گئے ہیں وہ سب بحالت موجودگی اور تمام بیٹے کے بین درجہ جو جبکہ نطفہ سے پیدا ہوتا ہے اسیکا بیٹا کہلاتا ہے دوسرے کا نہیں۔

۱۰۸۔ ایک باپ نے پیدا ہوئے چار بیٹے بھائیوں میں ایک بھائی بھی پتہ والا ہو تو اس کے چھوٹے سے سب بھائی پتہ والے کہلائے ہیں اس بات کو من جی نے کہا :-

यागभिरीसंस्क्रियतेज्ञाताज्ञातापिवासती॥ वोढुःसगर्भो
भवतिसहोदरइतिचोच्यते॥ १७३॥ त्रीशीयाद्यस्त्वयत्यर्थ
सातापित्रीर्यमनिकात्॥ सत्रीतकःसुतस्तस्यसहशोसहशो
पिवा॥ १७४॥ यापत्यावापरित्यक्ताविधवावास्वयेच्छया॥
उत्पादयेत्युनर्भूत्वासयोनर्भवउच्यते॥ १७५॥ साचेरसतयो-
निःस्याज्ञतप्रत्यागतापिवा॥ योनर्भवेनभर्त्रासाधुनःसंस्का-
रमर्हति॥ १७६॥

۱۷۳۔ وخت حاملہ ہے اور سب کوئی جانتا ہے یا نہیں جانتا اور اس شادی میں اولاد
شادی کے اسی حمل سے لڑکا پیدا ہوا تو وہ لڑکا شادی کرنے والے کا سہو نام بیٹا کہلاتا ہے۔
۱۷۴۔ جس لڑکے کے مان یا پ داسے بنائے فرزند اپنے کے خرید کریں اور وہ لڑکا اپنے برابر
صفت رکھتا ہو یا اپنی صفت کے خلاف ہو مگر ذات میں اپنے برابر ہو وہ لڑکا خریدنے والے کا کریت
نام بیٹا کہلاتا ہے۔

۱۷۵۔ جس عورت کو شوہر ترک کیا ہو وہ یا زن بیوہ اپنی خواہش سے پھر دوسری زوجہ ہو کر
اس آدمی سے بیٹا پیدا کرے تو وہ بیٹا پیدا کرنے والے کا پونجی نام بیٹا کہلاتا ہے۔
۱۷۶۔ جس عورت کی شادی ہو گئی ہے مگر اس سے جماع نہیں ہوا وہ دوسرے شوہر کی بیوہ بن
جائے تو اس آدمی کے ساتھ پھر شادی کے لائق ہوتی ہے خواہ کمار شوہر کو چھوڑ کر دوسرے
شوہر کی بیوہ ہو یا شوہر کی بیوہ ہو پھر کمار شوہر کی بیوہ ہو تو پھر اس کے
ساتھ شادی کے لائق ہوتی ہے۔

۰ دیکھو یا گئیہ لک سمرت اچار ایشیا ٹوک نمبر ۶۔ دیم سمرت سدرجہ دیکھو کاویہ شیشٹ دگاتیاں دایولی اور دایاں
سمرت اور توتہ دیر سنگھت اور تیرار نیک سو بھاشیہ سانا چارج۔

यस्तत्पुत्रः प्रमीतस्य स्त्रीवस्य व्याधितस्य वा ॥ स्वधर्मरानियु-
क्तायां सपुत्रः संपुत्रः स्मृतः ॥ १६७ ॥ मातापितावारद्यातां
यमग्निः पुत्रमायति ॥ सदृशं प्रीति संपुक्तं सज्जोदविमः सु-
तः ॥ १६८ ॥ सदृशं तु प्रकुर्याद्यं गुणादीयविचक्षराम् ॥ पुत्रं
पुत्रगुरोर्युक्तं सविज्ञेयञ्च कत्रिमः ॥ १६९ ॥ उत्पद्यते गृहे यस्य
न च ज्ञायेत कस्य सा ॥ स गृहे यद् उत्पन्नस्तस्य स्याद्यस्य तत्पुत्रः
॥ १७० ॥ मातापितृभ्यामुत्पद्यंतयोरन्यतरेणात्रा ॥ संपुत्रं परि-
गृह्णीयादपविद्धः स उच्यते ॥ १७१ ॥ पितृवेश्मनिकन्यातु यं पु-
त्रं जनयेद्ब्रह्मः ॥ तं कानीनं वदेन्नाम्ना बोधुः कन्यासमुद्भवम् ॥
१७२ ॥

۱۶۷۔ محنت اور بیمار و وفات یافتہ اس قسم کے آدمیوں کی زوجہ میں ازود و ہوم والد
وغیرہ کے حکم سے دیور وغیرہ نے جو بیٹا پیدا کیا وہ کشتیج کہلاتا ہے۔

۱۶۸۔ مان باپ وقت مصیبت میں آپ اپنے ہمقوم بیٹے کو پانی سے شنگھ کرب کر کے براہ
بہجت دیوین وہ بیٹا تو تک یعنی مہینا کہلاتا ہے۔

۱۶۹۔ جو لڑکا ہمقوم اور عیب نہ ہو کو جانتے والا اور بیٹوں کی صفاتوں سے بھر اسکا اسکو اپنا بیٹا
بتا دے وہ بیٹا کرترم کہلاتا ہے۔

۱۷۰۔ گھر میں پیدا ہوا اور نہیں معلوم کہ کسے تخم سے پیدا ہوا تو جس کی عورت سے پیدا ہوا اسکا گورہ تین نام بیٹا کہلاتا ہے
۱۷۱۔ مان باپ و دونوں نے خواہ ایک کے جس لڑکے کو ترک کیا اس بیٹے کو دوسرے بیٹے نے

اپنا بیٹا کیا تو وہ بیٹا لینے والے کا بیٹا اپ پر جو نام کہلاتا ہے۔

۱۷۲۔ بدون شادی ہوئے دختر کے بچانے والے خلوت میں جس لڑکے کو پیدا کیا وہ لڑکا

اس دختر سے شادی کر نیوالے کا کانی نام بیٹا کہلاتا ہے۔

यद्येकरिक्थिनौ स्यातामौ रससेत्रजौ सुतो ॥ यस्य यत्पैतृकं
रिक्थं सतजृह्णीतनेतरः ॥ १६८ ॥ एकस्य वीरसः पुत्रः पित्रस्य
वसुनः प्रभुः ॥ शेषाशाभान्दशं स्यार्थं प्रदद्यात्तु प्रजीवनम् ॥
१६९ ॥ यस्तु सत्रजस्यां शं प्रदद्यात्पैतृकाज्जनात् ॥ श्रीरसो
विभजन्दायं पित्र्यं पंचममेव वा ॥ १७० ॥ श्रीरससेत्रजौ पुत्रौ
पितरिक्थस्य भागिनौ ॥ दशापरे तु क्रमशो गोत्ररिक्थांश-
भागिनः ॥ १७१ ॥ स्वसेत्रे संस्कृतायां तु स्वयमेपादये छियम् ॥
तमौरसां विजानीयात्पुत्रं प्रथमकल्पितम् ॥ १७२ ॥

۱۶۲- جس آدی کا تخم بیماری وغیرہ سے خانی ہو گیا ہو اسکی عورت میں لاؤں تو والد وغیرہ کے
حکم سے بیٹا پیدا کیا اور پھر معالجہ وغیرہ سے نطفہ کی ترقی پا کر اس آدھی اپنی عورت سے بیٹا پیدا کیا
تب اسکی دولت کے مالک کشتیج دادرس نام دو بیٹے ہوئے اسپرین جی کہتے ہیں کہ جبکہ تخم شو
جو پیدا ہوا ہو وہ اسکی دولت کو پاوے۔

۱۶۳- ایک ہی بیٹا دوس نام والا اپنے باپ کی تمام دولت کا مالک ہے وہ اور بھائیوں
کو رحم سے کھانا اور کپڑا دلوے۔

۱۶۴- والد وغیرہ کے حکم سے لڑکا پیدا کر نیوالا صاحب اولاد ہو تو کشتیج اور کس دونوں بیٹے اپنے
والد کی دولت کے چھ حصہ پانچ حصہ کریں ایک حصہ کو کشتیج کیو یا قیمازدہ دولت کو اور اس
لیوے اگر کشتیج صاحب صفت ہو تو دولت کے پانچ حصہ کرنا چاہئے اور اگر وہ بے صفت ہو تو
چھ حصہ کرنا چاہئے۔

۱۶۵- کشتیج دادرس یہ دونوں والد کی دولت کو لے سکتے ہیں یا قیمازدہ جو ہر بیٹے
ہیں وہ کو تراور دولت دونوں کو سلسلہ سے لینے والے ہیں۔

۱۶۶- جو اپنی دوا پتا استری سے بیٹا پیدا ہو وہ دادرس نام بیٹا کہتا ہے وہ سب بیٹوں سے افضل

समवर्णासुयेजाताः सर्वेषुत्राद्विजन्मनाम् ॥ उद्धारं ज्यायसेर-
त्त्वाभजेरन्नितरेसमम् ॥ १५६ ॥ अहस्यतुसर्वौचनान्याभा-
र्याविधीयते ॥ तस्यांजाताः समांशाः स्युर्यदियुत्रशतंभवेत् ॥
१५७ ॥ पुत्रान्धारशायानाहन्हरांस्वार्यभुवोमनुः ॥ तेषां व-
ड्वन्धुदायाहाः षडदायाहवान्धवाः ॥ १५८ ॥ अौरसः सेत्र-
जश्चैवदत्तः कृत्रिमसवच ॥ शूढोत्यन्तोऽपविद्धश्चदायाहा-
वान्धवाश्चयद् ॥ १५९ ॥ कानीनश्चसहोदश्चक्रीतः यौनर्भ-
वस्तथा ॥ स्वयंदत्तश्चशौद्रश्चषडदायाहवान्धवाः ॥ १६० ॥
यादृशंफलमाप्नोतिकुसुमैः संतंजलम् ॥ तादृशंफलमा-
प्नोतिकुपुत्रैः सन्नरस्तमः ॥ १६१ ॥

۱۵۶۔ برہمن وکستری ودریشیہ کی مہقوم عورت میں جو لڑکا پیدا ہو وہ بڑے کو ادھار نام حصہ دیکر باقی ماندہ دولت کو برابر حصہ کرے۔

۱۵۷۔ شوہر کیوں اسے خاص اپنی ہی ذات کی زوجہ دوسری ذات کی نہیں اس لیے اگرچہ سولہ لڑکے ہوں تو بھی برابر حصہ پائے ہیں۔

۱۵۸۔ برہما جی کے بیٹے میں جی نے جو آدمیوں کے بارہ طرح کے بیٹے کہے ہیں ان میں اول کے چھ بندہ اور دایا دکھلاتے ہیں اور پچھلے چھ خلاف اسکے ہیں بھالی برابر نہ ترک کرے کہ دوسری ۱۵۹۔ وہ بارہ ہیں۔ ادرس کشیشچ۔ دکت۔ کرشم۔ گوڈھو پٹن۔ آپ بڑم یہ چھ دایا دندہ کہلاتے ہیں ۶ بندہ بھالی کو کہتے ہیں اور دایا دندہ ترک کر پری کو کہتے ہیں۔

۱۶۰۔ کانین۔ سہوڑم۔ کریت۔ پونرکھو۔ سویم۔ دت۔ شوہر یہ چھ دایا دندہ کہلاتے ہیں۔ ان بارہ قسم کے بیٹوں کی شرح و ہفت اسلوک ۱۶۱ تا ۱۶۹ میں لکھی ہے۔

۱۶۱۔ خراب ناؤ پر چڑھ کر دریائے پار ہوئی والا جیسا نتیجہ پایا ویسا ہی نتیجہ نالائق بیٹے سے ترک پار اترنے وقت پاتا ہے۔

کیناشوگوچو یو یان مملوکار شش و شصت ॥ ویپر سئو دھار کندی
 ی مہکاں شش و شصت ॥ ۱۲۵ ॥ اتر شش و شصت دھار کندی شش و شصت
 نیا سو ت ॥ ویپر شش و شصت سار دھار شش و شصت شش و شصت
 سار و شش و شصت شش و شصت شش و شصت شش و شصت ॥ ۱۲۶ ॥
 سار و شش و شصت شش و شصت شش و شصت شش و شصت شش و شصت
 شش و شصت شش و شصت شش و شصت شش و شصت شش و شصت ॥ ۱۲۷ ॥
 شش و شصت شش و شصت شش و شصت شش و شصت شش و شصت
 شش و شصت شش و شصت شش و شصت شش و شصت شش و شصت ॥ ۱۲۸ ॥
 شش و شصت شش و شصت شش و شصت شش و شصت شش و شصت
 شش و شصت شش و شصت شش و شصت شش و شصت شش و شصت ॥ ۱۲۹ ॥
 شش و شصت شش و شصت شش و شصت شش و شصت شش و شصت
 شش و شصت شش و شصت شش و شصت شش و شصت شش و شصت ॥ ۱۳۰ ॥

۱۵۰۔ ہر وہ سناٹا دگھڑا وغیرہ سواری فریور وغیرہ مکان کل اجڑا ہن سے ایک ایک
 افضل جزو ان سب کو برہمنی کے بیٹے کو ادھار نام حصہ دیکر یا تیار نہ کی تقسیم اس طریق کے
 موافق کرے جو آگے کہیں گے

۱۵۱۔ برہمن سے برہمنی میں جو لڑکا پیدا ہو وہ تیسرا حصہ لے لے اور کشتیا کا بیٹا دوسرا
 حصہ لے لے اور ویشیا کا بیٹا دوسرا حصہ لے لے اور شودر کا بیٹا ایک حصہ لے لے۔

۱۵۲۔ خواہ جو طریق آگے کہیں گے اسکے موافق دھرم کے جانتے والے تمام دولت مند
 حصہ کر کے از روئے دھرم کے تقسیم حصہ کی کریں۔

۱۵۳۔ برہمنی کا بیٹا چار حصہ اور کشتیا کا بیٹا تین حصہ اور ویشیا کا بیٹا دو حصہ اور شودر کا
 بیٹا ایک حصہ لے لے۔

۱۵۴۔ برہمن و کشتری و ویشیہ ان تینوں ورن کی عورت میں برہمن کا بیٹا پیدا ہوا ہو یا
 نہ ہوا ہو لیکن از روئے دھرم کے شودر کے بیٹے کو دسویں حصہ سے زیادہ نہ لے لے۔

۱۵۵۔ برہمن کشتری و ویشیہ ان تینوں ورن کی دولت کو شودر کا بیٹا نہیں لے سکتا اسکا چوتھو حصہ کو ہی اسکی دولت

हरेत्तत्रनियुक्तायांजातःपुत्रोयथौस्मः॥सोत्रिकस्यतुतद्वीजं
धर्मतःप्रसवश्चसः॥१४५॥धनंयोविन्द्याद्भ्रातुर्मृतस्यस्त्रिय
मेवच॥शोऽपत्यंभ्रातुरुत्याद्यदद्यात्तस्येवतद्धनम्॥१४६॥
यानियुक्तान्यतःपुत्रंदेवराष्ट्राण्यवाप्नुयात्॥तंकामजमरि-
कधीयंवथोत्पन्नंप्रचक्षते॥१४७॥एतद्विधानंविज्ञेयंविभा-
गस्येकयोनिषु॥वह्नीषुचैकजातानानानास्त्रीषुनिबोध-
त॥१४८॥ब्राह्मरास्यानुपूर्वगांचतस्रस्तुयदिस्त्रियः॥ता-
सांपुत्रेषुजातेषुविभागोऽयंविधिःस्मृतः॥१४९॥

۵۴۱۔ جطرح اور دنیا دولت کو لیتا ہے اسی طرح جو لڑکا سسر وغیرہ کے حکم سے عورت سے پیدا کیا وہ بھی دولت کو لیبوسے کیونکہ وہ کشتیر دے گا بیج ہے اور اسکی پیدائش محرم ہے
۵۴۲۔ برابر وفات یافتہ کی دولت ورژہ کو جو لیبوسے وہ اس عورت میں بیٹا کر کے اسی بیٹے کو دولت دیوے۔

۵۴۳۔ عورت سسر وغیرہ کے حکم سے دیور خواہ سسر وغیرہ رشتہ دار سے بیٹا پیدا کرے۔ اور ایسا سمجھا جا کہ وہ بیٹا کام سے پیدا ہوا ہے تو دولت نہیں پاتا اور وہ بیٹا مردہ پیدا ہوا ہے پیرش کو گونے کہا ہے۔

۵۴۴۔ بہت سے ہجوم عورتوں میں تقسیم حصص مطابق بیان مرقومہ بالا جانو اور مختلف اقوام کی بہت سی عورتوں میں ایک سے پیدا ہونے سب بیٹوں کی تقسیم حصص آگے کہنگے۔
۵۴۵۔ ایسا سے جائز ورن کی عورتیں جب برہمن کے گھروں اور ان عورتوں سے جو بیٹے پیدا ہوں انکی حصص کے تقسیم کو آگے کہیں گے۔

۵۴۶۔ ناردرش نے پیر کام سے پیدا ہونے کی علامت یہ لکھی ہے کہ وقت جماع عورت کے منہ سے ٹکڑا اور یہ عضو منہ لگاؤے مرن تمام حصص میں عضو منہ داخل کر نیسے جو بیٹا پیدا ہوا وہ بیٹا پیدائش کے لائق و کام پیدا ہوا ہے برخلاف اس طریق کے پیدا ہوا وہ کام سے پیدا ہوا کہنا ہے

مات: प्रथमतः पिराडं निर्वपेत् पुत्रिका सुतः ॥ द्वितीयं पुत्रितु-
 स्तस्यास्तृतीयं तत्पितुः पितुः ॥ १४० ॥ उपपन्नो गुरौः सर्वैः पुत्रो-
 यस्य तु तत्त्रिमः ॥ सहैतैव तद्विषयं संप्राप्तोऽप्यन्नगोत्रतः ॥
 १४१ ॥ गोत्रविषये जनयितुर्न होद्विषयः कश्चित् ॥ गोत्रविषया-
 नुगः पिराडो व्यपेति दहतः स्वधा ॥ १४२ ॥ अनियुक्ता सुतश्चैव
 पुत्रिराया स च देवरात् ॥ उभौ तौ नार्हतौ भागं जाज्ञातक काम-
 जो ॥ १४३ ॥ नियुक्तायामपि पुमान् नार्या जातो विधानतः ॥
 नैर्वाहः पेतकं विषयं पतितो त्यादितो हिमः ॥ १४४ ॥

۱۴۰- پتر کا پہلا بیٹا پندر والدہ کو دیوے دوسرا بیٹا نا کو تیسرا بیٹا باپ کو دیوے -
 ۱۴۱- دوسرے گوت سے بھی لڑکا آیا ہو اور ہمہ صفت ہو تو عبادہ منہی ہو ای سکی تمام
 دولت کو پاتا ہے -
 ۱۴۲- پیدا کر نیوالے کے گوت اور دولت کو فرزند شتی بنین پاتا ملک جکا بقنی ہو اس کے گوت
 اور دولت کو پاتا ہے اور اس کو پندر دیتا ہے جس سے پیدا ہو ای اس کو پندر بنین دیتا -
 ۱۴۳- اب بیوہ عورت نے بد دن حکم والدہ وغیرہ کے جو لڑکا دیور وغیرہ سے پیدا کیا اور کسی
 عورت کی سجا لت عدم ہو جو دگی فرزند با جازت سسر وغیرہ دیور وغیرہ سے لڑکا پیدا کیا اور
 مستم کے لڑکے حصہ بنین پاتے کیونکہ پہلا لڑکا دوسرے شوہر سے پیدا ہوا -
 ۱۴۴- در حالیکہ عورت سسر وغیرہ کے حکم کو پا کر خلات طریق سے بیٹا پیدا کری تو وہ بیٹا
 باپ کی دولت کو بنین پاتا کیونکہ وہ بیٹا اس سے پیدا ہوا -

۱- بیٹا اس کو کہتے ہیں کہ وہ اپنی بیوی سے دن کے دویم سے گر گیا ہے -

پوتریکا یا کتا یا تپری پوترو ۽ چو جا یاتے ॥ سمست تریو بیما-
 گ: سیا جیہ ۽ تانا سنیہ سنیہ یا: ॥ ۱۳۴ ॥ اتر پوتریکا یا کتا-
 یا تپریکا یا کتا یا کتا ॥ یات تپریکا یا کتا یا کتا ۽ تپریکا
 سنیہ ॥ ۱۳۵ ॥ اتر کتا یا کتا یا کتا یا کتا ۽ تپریکا یا کتا
 یو تریکا یا کتا یا کتا یا کتا یا کتا ۽ تپریکا یا کتا ۽ تپریکا
 کتا یا کتا یا کتا یا کتا یا کتا ۽ تپریکا یا کتا ۽ تپریکا
 سنیہ یا کتا یا کتا یا کتا یا کتا ۽ تپریکا یا کتا ۽ تپریکا
 ر سنیہ: ॥ تسمات پوتریکا یا کتا یا کتا یا کتا یا کتا ۽ تپریکا
 تریو تریو تریو تریو تریو تریو تریو تریو تریو تریو تریو
 تریو تریو تریو تریو تریو تریو تریو تریو تریو تریو تریو
 سنیہ یا کتا یا کتا یا کتا یا کتا ۽ تپریکا یا کتا ۽ تپریکا

۱۳۴۔ لاد آدی کے اگر تیر کا کرنے کے بعد (یعنی لڑکی کو سچا فرزند قرار دینے کے بعد)
 لڑکا پیدا ہو تو اس مقام پر اس لڑکے کے ساتھ بیٹے کا حصہ برابر ہوتا ہے کیونکہ عورتوں کو بزرگی
 نہیں ہے اس سے بزرگی کا حصہ پیدا دے گی۔

۱۳۵۔ اگر تیر کا سے لڑکا پیدا ہو تو اور تیر کا مر جائے تو اس کے مرنے کے بعد اسکی دولت
 کو اسکا شوہر لیوے اس میں کچھ بچا رہے۔

۱۳۶۔ بیٹے کو بیٹا کر کے مانا ہو یا بیٹیا مانا ہو لیکن وہ بیٹی اپنے مقوم شوہر سے بیٹیا پیدا
 کرے تو وہ بیٹیا اپنے مانا لاد کی دولت لیوے اور مانا کو ٹپہ دیوے سکی دھن مانا بیٹا لاد لگا
 ۱۳۷۔ بیٹا کے وسیلہ سے اندر لوگ وغیرہ کو فتح کرتا ہے اور پوتا کے وسیلے سے بے انتہا پھل کو پاتا

۱۳۸۔ پوتہ کے بیٹے کے وسیلے سے سورج لوک کو پاتا ہے
 ۱۳۹۔ اتر نام و فرخ کا ہے اتر بیٹے کا لفظ کے ہیں چونکہ بیٹا اپ کو و فرخ سے پچھتا
 اس سب سے پتر کہتا ہے اس بات کو شری برہما جی نے کہا ہے۔

۱۴۰۔ دنیا میں پوتا اور ناتی دونوں برابر ہیں ناتی بھی مانا کو لڑکے میں شل پوتا کی تباہی

अनेन तु विधानेन पुराचक्रेऽथ पुत्रिकाः ॥ विवृद्धार्थस्ववंश-
 स्य स्वयं रसः प्रजायति ॥ १२८ ॥ दसौ सदशधर्माय कश्यपाय त्र-
 योदश ॥ सोमाय राज्ञे सत्कृत्य प्रीतात्मा सप्तविंशतिम् ॥ १२९ ॥
 यथैवात्मा तथा पुत्रः पुत्रेणादुहितासमा ॥ तस्या मात्मनिति सं-
 त्यां कथमन्योधनं हरेत् ॥ १३० ॥ मातुस्तु यौतुकं यस्यात्कुमारी
 भागवत्सः ॥ दीहि त्रयवचहरेदपुत्रस्याखिलं धनम् ॥ १३१ ॥
 दीहि त्रयोह्यखिलं त्रिवचमपुत्रस्य पितुर्हरेत् ॥ स एव दद्याद्द्वौ-
 पिराष्टौ पित्रे मातामहाय च ॥ १३२ ॥ यौत्रदौ हि त्रयोर्लोकेन-
 विशेषोऽस्ति धर्मतः ॥ तयोर्हि मातापितरौ संभूतौ तस्य देहतः
 ॥ १३३ ॥

۱۲۸۔ اگلے زمانہ میں ترقی نسل کی واسطے وکش پر جا پت نے اسطرح دختر کو بجائے
 فرزند کے مانا ہے۔

۱۲۹۔ خوشی سے بہ تو وضع تمام وکش پر جا پت نے دھرم کو دس کنیا اور سیب رش کو
 تیرہ کنیا اور چند رمان کو ستائیس کنیا دیں۔

۱۳۰۔ جیسے اپنی آتما ہے ویسے بیٹا ہے اور بیٹا کے برابر کنیا ہے اسلئے آتما کے برابر کنیا
 ہونے پر کس طرح دوسرا آدمی دولت کو لےوے۔

۱۳۱۔ بعد وفات والدہ کے اسکی پوتک نام دولت حکا آگے بیان ہوگا اسکی کماری کنیا
 پاتی ہے اور جبکے بیٹا ہوا سکا سب دھن ناتنی یعنی لڑکی کا لڑکا پاتا ہے۔

۱۳۲۔ جو شخص بیٹا نہ رکھتا ہو اسکی تمام دولت ناتنی پاوے اور وہ دو پٹو دیوے ایک
 باپ کو اور ایک اپنے مانا کو۔

۱۳۳۔ دنیا میں پوتا اور ناتنی میں خصوصیت نہیں ہے دونوں برابر ہیں کیونکہ ایک کے
 والد کی اور ایک کے والدہ کی سپد آیش ایک ہی سے ہے۔

एकं ह्यममुज्जरं संहरत स पूर्वजः ॥ ततोऽपरे ज्येष्ठे ह्यवास्तू-
नानां स्वमावृतः ॥ १२३ ॥ ज्येष्ठस्तु जातो ज्येष्ठ्यायां हरे ह्यममघोड-
शः ॥ ततः स्वमावृतः शेषाभजे रन्ति धारणा ॥ १२४ ॥ सदृश-
स्त्रीषु जातानां पुत्राराम विशेषतः ॥ न मावृतो ज्येष्ठमस्ति जन्म-
तो ज्येष्ठ्यमुच्यते ॥ १२५ ॥ जन्म ज्येष्ठेन चाह्वानं स्वब्राह्मण्या-
स्वपि स्मृतम् ॥ यमयोश्चैव गर्भेषु जन्मतो ज्येष्ठता स्मृता ॥ १२६ ॥
॥ अपुत्रोऽनेन विधिना सुतां कुर्वीत पुत्रिकाम् ॥ यदपत्यं भ-
वेदस्यां तन्मम स्यात्त्वधाकरम् ॥ १२७ ॥

۱۲۳ - پہلی شادی سے جو لڑکا پیچھے پیدا ہوا وہ ایک اچھا بیل اور دھاریوں سے اور بھائی
اس اچھے بیل سے چھوٹا بیل اور دھاریوں والدہ کی شادی کے سلسلہ بزرگی لڑکے کی جاتا چا
۱۲۴ - بڑی عورت میں پہلے لڑکا پیدا ہوا تو پندرہ گنوا اور ایک بیل سوے اسکے بعد چھوٹی عورت میں
جو لڑکے پیدا ہوئے ہیں وہ اپنی والدہ کی شادی کے سلسلہ بزرگی کو پار لیتا باقی ماندہ گنوا لڑکا
حصہ لیون۔

۱۲۵ - اپنی ذات کی عورت سے جتنے لڑکے پیدا ہوئے ہیں انھوں میں والدہ کی شادی کے حساب بزرگی
میں سے بلکہ پیدائش کے حساب بزرگی ہے۔

۱۲۶ - اس میں کہ صرف تقسیم حصص میں پیدائش سے بزرگی ہو بلکہ جو شوم گیمہ میں ان کے
بلانے کی دستانے سو برائے نام منتر پہلے پیدا ہونے لڑکے کے نام سے کہا جاتا ہے کہ غلامی لڑکے کا باپ
گیمہ کرتا ہے ایسا شیون کہتا اور جو دو لڑکے ساتھ ہی پیدا ہوئے اس مقام پر اگر چہ بیام
حاصل میں پہلے لفظ سے پیچھے پیدا ہو گا اور پچھلے لفظ سے پہلے پیدا ہو گا تاہم جو پہلے پیدا ہو گا
وہی بڑا کہتا دیکھا۔

۱۲۷ - کہنا دان کے وقت داد ایسی صلح کری کہ ہر گھر میں بیانیہ ہے اس طرح سے جو
پہلے پیدا ہو گا وہ ہمارا مرادہ کرم کہنوالا ہو اس طرح دفتر کو یہاں سے فرزند قرار دے۔

सकाधिकं हरेत्त्येवः पुत्रोऽध्यर्द्धततोऽनुजः ॥ अशमं शयवी
यांस इति धर्मो व्यवस्थितः ॥ ११७ ॥ स्वेभ्योऽशेभ्यस्तुकन्याभ्यः
प्रदद्युन्नातरः पृथक् ॥ स्वात्त्यादंशाच्चतुर्भागं पतिताः स्युरदि-
त्सवः ॥ ११८ ॥ अजाविकं शैकशफं न जातु विधमं भजेत् ॥ अ-
जाविकस्तु विधमं ज्येष्ठस्यैव विधीयते ॥ ११९ ॥ यवीयानज्ये-
ष्ठभार्यायां पुत्रमुत्पादयेद्यदि ॥ समस्तत्र विभागः स्यादिति ध-
र्मो व्यवस्थितः ॥ १२० ॥ उपसर्जनं प्रधानस्य धर्मतो नोपपद्यते
॥ पिता प्रधानं प्रजनेतस्माद्धर्मो रातं भजेत् ॥ १२१ ॥ पुत्रः कनि-
ष्ठो ज्येष्ठायां कनिष्ठायां च पूर्वजः ॥ कथं तत्र विभागः स्यादिति
चेत्संशयो भवेत् ॥ १२२ ॥

۱۱۷۔ بڑا بھائی دو حصہ لیوے اس سے چھوٹا ڈیڑھ حصہ لیوے سب سے چھوٹا ایک حصہ لیوے۔
یہ دھرم کی پوستھا ہے۔

۱۱۸۔ سب بھائی علیحدہ علیحدہ اپنے اپنے حصہ میں چھ حصہ بشیرہ کو دیوین نہ دیں تو تپت ہو

۱۱۹۔ بکری و بھیر و ایک گھروالے (یعنی گھوڑا وغیرہ) یہ سب طاق ہوں (یعنی چار بھائی اور پانچ گھوڑے
ہوں) تو طاق کا حصہ بکرا چاہئے جو باقی ہے وہ بڑا لیوے۔

۱۲۰۔ چھوٹا بھائی بڑے بھائی کی زوجہ میں بیٹا پیدا کرے تو اس بیٹا کے ساتھ چار لوگ برابر
تقسیم حصہ کریں اس بیٹے کو بڑے بھائی کے برابر حصہ دیوین دھرم پوستھا ہے۔

۱۲۱۔ افضل کو غیر افضل کرنا دھرم کے خلاف ہے پیدائش میں والد افضل ہے اس لیے دھرم
والد کی خیر نگذاری کرے

۱۲۲۔ ایک کے دو زوجہ میں اور چھوٹی زوجہ لڑکا پہلے پیدا ہوا اور بڑی زوجہ کے پیچھے ہوا اس
مقام پر تقسیم حصہ کی طرح کرنا چاہئے ایسی حالت میں مشتبہ میں تعقیبہ کرنے کو شلوک آئندہ میں کہیں گی

ज्येष्ठस्यविंशउद्धारःसर्वद्रव्याच्चयद्वयम्॥ ततोर्द्धमध्यमस्या-
 स्यात्तुरीयंतुयवीयसः॥ ११२॥ ज्येष्ठश्चैवकनिष्ठश्चसहरेतांय-
 योदितम्॥ येऽन्येज्येष्ठकनिष्ठाभ्यांतेषांस्यान्मध्यमंधनम्॥
 ११३॥ सर्वेषांधनजातानामादरीताश्चमग्रजः॥ यच्चसातिश-
 यंकिंचिद्वशतश्चाभुयाद्वयम्॥ ११४॥ उद्धारो न दशस्वस्ति सं-
 यन्तानांस्वकर्मसु॥ यत्किंचिदेवदेयन्तुज्यायसेमानवर्द्धनम्॥
 ११५॥ एवंसमुद्भूतोद्धारोसमानंशान्मकल्पयेत्॥ उद्धारोऽनुद्भू-
 तेत्येषामियंस्यादंशकल्पना॥ ११६॥

۱۱۲- تمام چیزوں میں افضل چیز میں اور بیٹوں حصہ بڑے کو دیا جائے اور منجھلے کو چالیسواں
 حصہ اور چھوٹے کو اسی دان حصہ دیگر جو باقی رہے اسکو برابر حصہ کر کے اور سب بیویں
 ۱۱۳- بڑے اور چھوٹے کو جیسا کہ ہے ویسا ہی دینا اور منجھلے بھائی کو دولت بھی اور
 قسم کی دنیا جاتی ہے

۱۱۴- تمام دولت میں جو دولت افضل ہے اور ہم قسم دولت میں جو دولت افضل ہے اور اگر کوئی
 وغیرہ جو چار پائین زمین سے منجھلے دس چار پائیکے ایک چار پائیہ ان تینوں چیزوں کو برابر بھائی
 لیوے لیکن اس قسم کی تقسیم کو اس وقت جانتا جبکہ بڑا بھائی صاحب صفت ہو اور سب بھائی و صفت
 ۱۱۵- سب بھائی اپنے کرم میں مصروف ہوں تو جو تقسیم اور پرکھ لے ہوں وہ کرنا بلکہ بڑے کی
 تعظیم قائم رکھنے کی واسطے کچھ ایک چھوٹی چیز دینا -
 ۱۱۶- اس طرح بڑے کو اوپر نام حصہ دیگر باقی ماندہ اشیاء کو برابر حصہ کرنا اور حصہ نہ کرنا
 نویسے تو آگے جو حصہ مقرر کریں گے وہ کوہے -

شرح ۴۰۲، ۵۰۰- ان سب عددوں میں سے صفر دور کیا جاتا ہے تقسیم حصص ہوگی -

ج्यےشہنجاتما تیرا پوتریभवतिमानवः॥ पितृरामन्तराश्चैव
सतस्मात्सर्वमर्हति॥ १०६॥ यस्मिन्तरांसन्नयतियेनचानंत्य
मश्नुते॥ सखधर्मजःपुत्रःकामजानितरान्विदुः॥ १०७॥ पि
तेवपालयेत्युत्रान्ज्येष्ठोभ्रातृन्यवीयसः॥ पुत्रवच्चापिवर्त्त-
नज्येष्ठेभ्रातरिधर्मतः॥ १०८॥ ज्येष्ठःकुलंवर्द्धयतिविनाश
यतिवापुनः॥ ज्येष्ठःपूज्यतमोलोकेज्येष्ठःसद्भिर्गार्हितः१०९
॥ योज्येष्ठोज्येष्ठवृत्तिःस्यान्मातेवहिपितेवसः॥ अज्येष्ठवृत्ति
र्यस्तुस्यात्संपूज्यस्तुबन्धुवत्॥ ११०॥ एवंसहवसेयुर्वापृथ-
ग्वाधर्मकाम्यया॥ पृथग्विवर्द्धतेधर्मस्तस्माद्भर्मापृथक्क्रि-
या॥ १११॥

- ۱۰۶- بڑے بیٹے کے پیدا ہونے سے آدمی صاحب اولاد کہلاتا ہے اور پتر دیکے قرضہ سے
چھوٹ جاتا ہے اسلئے بڑا بیٹا سب دولت لینے کے لائق ہوتا ہے۔
- ۱۰۷- جبکہ پیدا ہونے سے باپ قرضہ سے ادا ہو جاتا ہے اور مکت پاتا ہے وہی بیٹا و حرم
پیدا ہوا۔ اور سب کام سے پیدا ہونے میں ریشیوں نے کہا ہے۔
- ۱۰۸- باپ کی طرح بڑا بیٹا سب بھائیوں کی حفاظت کرے اور بڑے بھائی کے پانچوں
بھائی بیٹے کی طرح رہیں۔
- ۱۰۹- بڑا بیٹا ہی خاندان کو ترقی دیتا ہے اور نیت ناپو دہی کرتا ہے اور دنیا میں بڑی تعظیم
کے لائق ہے اچھے لوگوں نے اسکی بڑائی مین کی ہے۔
- ۱۱۰- جو بزرگی اختیار کرتا ہے وہ مان باپ کے برابر ہے اور جو بزرگی مین اختیار کرتا ہے وہ مثل
بھائی کے قابل تعظیم ہے۔
- ۱۱۱- اس طریق سے سب شامل ہو کر مین یا و حرم کر سکی خواہش سے علیحدہ مین جو کہ علیحدہ
رہنے سے و حرم ترقی پاتا ہے اسلئے علیحدہ رہنا و حرم سے شامل ہے۔

नानुशुशुमजात्वेतत्पूर्वेष्वपि हि जन्मसु ॥ शुल्कसंज्ञेन मूल्ये-
न च नंदुहित विक्रयम् ॥ १०० ॥ अन्योन्यस्याव्यभिचारो भवे-
दामरगान्तिकः ॥ सवधर्मः समासेन ज्ञेयः स्त्रीपुंसयोः परः ॥
१०१ ॥ तथानित्यं यतेयातां स्त्रीपुंसौ तु कृतक्रियौ ॥ यथाना-
भिचरेता तौ विमुक्तावितरेतरम् ॥ १०२ ॥ सवस्त्रीपुंसयोरुक्तो
धर्मो बोरतिसंहितः ॥ आपद्यत्यप्राप्तिश्च दायभागं निबोध-
त ॥ १०३ ॥ ऊर्ध्वपितुश्च मातुश्च समेत्य भ्रातरः समम् ॥ भजेर-
न्यैतं करिष्यमनीशास्ते हि जीवतोः ॥ १०४ ॥ ज्येष्ठस्य वतुशक्ती
यात्पित्र्यंधनमशेषतः ॥ शेषास्तमुपजीवेयुर्यथैव पितरन्त-
या ॥ १०५ ॥

- ۱۰۰- سوادھنہ لیکر پوشیدہ کنیا کا بیچنا پہلے جنم میں بھی مہین سنا۔
۱۰۱- مرتے دم تک دونوں کی جدائی نہ ہو یہ بھلا پریم و دھرم استری پریش کا جانتا۔
۱۰۲- استری پریش ایسی تدبیروں سے زندگی بسر کریں کہ جس سے باہم جدائی نہ ہو۔
۱۰۳- استری پریش کا دھرم مع محبت باہمی کے بیان کیا اور وقت مصیبت میں اولاد کے حاصل کرنے کو بھی بیان کیا اب اس کے بعد تقسیم حصص کو بھی بیان کرتے ہیں۔
۱۰۴- مان باپ کے مرنے کے بعد سب بلکہ مان باپ کی دولت کے برابر حصہ کریں بھائی زندگانی والدین سب لڑکے بہن نہ نابالغ کے ہیں۔
۱۰۵- مان باپ کی تمام دولت کو بڑا بیٹا ہی لیوے اور چھوٹا اور سمجھلا بھائی سب بڑے بھائی سے اوقات گزاری کریں جس طرح والد سے پرورش پاتے تھے۔

त्रिषद्वयोद्दहेत्कन्यां ह्यद्याद्वादशवार्षिकीम् ॥ अष्टवर्षोऽष्ट-
वर्षावाधर्मेसीदतिसत्वरः ॥ ६४ ॥ देवदत्तां पतिर्भार्याविन्दते
नेच्छयात्मनः ॥ तांसाधिविभया न्नित्यं देवानां प्रियमाचरन् ॥
६५ ॥ प्रजनार्थं स्त्रियः सृष्टाः सन्तानार्थं च मानवाः ॥ तस्मात्ताधा-
रणाधर्मः श्रुतोपत्यासहोदितः ॥ ६६ ॥ कन्यायां दत्तशुल्का-
यां प्रियेतयदि शुल्कदः ॥ देवराय प्रदातव्यायदिकन्यानुमन्य-
ते ॥ ६७ ॥ आदरीतनशूद्रोऽपिशुल्कंदुहितरंददन् ॥ शुल्कं-
हियुक्तां कुरुते च नन्दुहितविक्रयम् ॥ ६८ ॥ एतत्तुनपरेचकु-
र्नापरेजातुमानवाः ॥ यदन्यस्य प्रतिज्ञाय पुनरन्यस्य दीयते
॥ ६९ ॥

۹۴ - تیس برس کی عمر کا لڑکا اور بارہ برس کی دختر تحت جگر کا دواہ کرے یا چوبیس برس کا لڑکا اور آٹھ برس کی لڑکی کا دواہ کرے یہ مناسب وقت دکھایا گیا نہیں ہے اتنی برت میں دید پڑھ سکتا ہے اسکے بعد گریستھ آشرم میں انہیں درنگ کرے۔

۹۵ - دیوتاؤں کی دی ہوئی کنیا کو شوہر پاتا ہے اپنی خواہش سے نہیں اسلئے دیوتاؤں کی پوجن کرتا ہوا اس نیک چلن عورت کی ہر روز پرورش کرے۔

۹۶ - حمل رہنے کیواسلئے عورت کو اور حمل قائم کرنے کیواسلئے مرد کو پیایا اسلئے دید میں استری پریش کا سا دھارن دھرم ہے لینے زچہ کے ساتھ ہی شوہر اگلن ہو زوئیرہ کرم کرے
۹۷ - کنیا کا معاوضہ دیکر معاوضہ دینے والا مر جا تو اسکے بھائی کے ساتھ اس کنیا کا دواہ کرے بشرطیکہ وہ کنیا منظور کرے۔

۹۸ - شوہر بھی کنیا کو دیکر معاوضہ نہ لےوے اسکے لینے سے کنیا کا پوشیدہ عجز والا کتا ہر
۹۹ - ایک کو کمرہ دوسرے کو دینا اس بات کو کسی چھوٹے بڑے نے کبھی نہیں کیا۔

काममामस्यातिष्ठेद्ब्रूहेकन्यतुमत्यपि॥ नचैवैनांप्रयच्छेत्तुगु-
राहीनायकहिंचित॥ ८६॥ श्रीशिवर्याशुदीक्षेतकुमा-
र्युतुमतीसती॥ ऊर्ध्वतुकालादेतस्माद्धिरेतसदृशंपतिम्॥
८७॥ अदीयमानाभर्तारमधिगच्छेद्यदिस्वयम्॥ नैनः किं-
चिरवाप्नोतिनचयंसाधिगच्छति॥ ८८॥ अलंकारं नाददीत
पित्र्यंकन्यास्वयंवरा॥ मातृकंभ्रातृदत्तंवास्तेनास्याद्यदितं
हरेत्॥ ८९॥ पित्रेनरद्याच्छुल्कंतुकन्यामृतुमतींहरन्॥ सहि-
स्वाम्यादतिक्रामेददृतांप्रतिरोधतात्॥ ९०॥

۸۹۔ کنیا باجین ہو کر بھی تازہ لیت گھر میں رہے مگر اس کنیا کو کبھی بڑا آدمی کو نہ دیا۔
۹۰۔ نین برتن تک باجین کنیا اچھے شوہر کی امید میں رہے اس کے بعد اپنے ہی موافق شوہر حاصل کرے۔

۹۱۔ والد وغیرہ شادی نہیں کرتے اور کنیا آپ سے یہ قبول کرے تو اس کنیا کو اور بڑا عیب نہیں ہے۔

۹۲- اپنی طرف سے شوہر کو قبول کرنا والی دختر کے ماں باپ بھائی وغیرہ کے دیئے ہوئے زیور وغیرہ کو نہ لےوے اگر لےوے تو حرام کاتی ہے۔

۹۔ باجیجن دختر سے شادی کر نیا آلا ستوپر دختر کے باپ کو کچھ شلگ (نیوی ماؤنٹ) دے دیوے۔ کیونکہ اولاد بدیر پیدا ہوئی کی وجہ سے باپ کی ملکیت قائم نہیں رہتی۔

+ یعنی اگر پہلے ہی سے شادی ہوتی تو بعد فراغت جیسن کے حمل قائم ہو جاتا پس سب پریشانی، کچھ حمل نہ رہتا اور سب بچے باپ کی ملکیت جاتی رہی۔

अधिविन्नातुयानारीनिर्गच्छेद्दुषिताग्रहात्॥ सासद्यः सन्नि-
 रोद्धव्यात्याज्यावाकुलसन्निधौ॥ ८३॥ प्रतिविद्धापिवेद्यातु
 मद्यमभ्युदयेष्वपि॥ प्रेक्षासमाजंगच्छेद्वासादराड्याकृष्या
 लानिषद्॥ ८४॥ यद्विस्वाश्च पराश्चैव विन्देरन्यो धितो द्विजाः
 ॥ तासां वर्ताक्रमेरास्याह्येष्ठं पूजाचवेशमच॥ ८५॥ भर्तुः
 शरीरशुश्रूषांधर्मकार्यचनैत्यकम्॥ स्वाचेव कुर्यात्सर्वेषां ना-
 स्वजातिः कथंचन॥ ८६॥ यस्तु तत्कारयन्मोहात्सजात्यास्थि
 तयान्यथा॥ यथा ब्राह्मराचांडालः पूर्वदृष्टस्तथैव सः॥ ८७
 ॥ इत्याद्याभिहृषायचरायसदृशायच॥ अप्राप्तमपितां
 तस्मै कन्यादद्याद्यथाविधि॥ ८८॥

۸۳- جس عورت کے اوپر دوسرا وادہ شوہر نے کیا اور وہ عورت عقدہ ہو کر گھر سے نکلی جاتی ہو
 تو اس کو روک کر گھر میں رکھنا خواہ خاندان کے رو برو ترک کرنا چاہیے۔

۸۴- کشتری وغیرہ کی زوجہ شوہر وغیرہ سے محفوظ رہو اور شادی وغیرہ کاموں میں بھی منع
 شراب کو پیو بلکہ ناز رنگ کے طبقہ میں چلی جا تو چھوٹی ہونا دٹر دیوے۔

۸۵- ہر آہن کشتری دیشیہ یہ سب اپنے درن کی اور دوسرے درن کی عورتوں سے شادی کریں
 تو ان عورتوں کے درجہ کی بڑائی اور پوجا اور گھر یہ سب بلحاظ سلسلہ درن کے مقدم ہونے پر

۸۶- سب درنوں میں جو اپنے درن کی استری میں وہی شوہر کے ذاتی و جہی کام و قیوم و حرم
 کا کام کریں دوسرے درن کی استری نہ کریں۔

۸۷- جو شخص بھالت نہ ہو اپنی ذات کی عورت کے ان دونوں کاموں کو وہ دوسری ذات کی عورت
 سے کرانا ہی تو جیسا بلکہ اپنی میں شوہر سے چاہا مال پیدا ہوا ویسا ہی وہی یہ رشتہ بنے کہا ہے۔

۸۸- اپنے کل میں بہت اچھا چارج اور خوبصورت اور مہتمم رکھنے کا بڑی چوٹی بھی ہو
 (یعنی وادہ کے لائق نہ ہو) تو بھی اس کا وادہ شاستر کے موافق کر دینا چاہیے۔

अतिक्रामेत्यमत्तं यामतं रोगार्तमेव वा ॥ सात्रीन्मासान्परि-
त्याज्याविभूषणापरिच्छदा ॥ ७८ ॥ उन्मत्तं यतितं क्लीबमबीजं
पापरोगिराम ॥ न त्यागोऽस्ति द्विषं त्याश्च न च दाया पवर्त्तमम्
॥ ७९ ॥ मद्यपासाधुवृत्ताचप्रतिकूला च या भवेत् ॥ व्याधिता
वाधिवेत्तव्या हिंसाऽर्थघ्नी च सर्वदा ॥ ८० ॥ वन्ध्याश्मेऽधिवे-
द्याब्दे दशमे तु मृतप्रजा ॥ एकादशे स्त्रीजननी मद्यस्त्वप्रिय-
वादिनी ॥ ८१ ॥ यारोगिरागी स्यात्सुहिता सम्यक्ता चैव शीलतः
॥ सात्तुजाप्याधिवेत्तव्या नावमन्या च कर्हिचित् ॥ ८२ ॥

۷۸ - قمار باز و نشه باز و مرلین شوهر کی بے نظیمسی جو عورت کرتی ہے اسکو تین مہینہ تک

زیور اور کپڑا نڈینا چاہئے۔

۷۹ - امانت اور اپنے ورثہ کے دھرم کو نہ کر نیوالا و نمٹ و کسی بیماری کی وجہ سے لطفہ نہ کھنے

والا و دیاپ روگی ایسے شوہر سے فساد کر نیوالی عورت کو ترک کرنا مگر اسکی دولت نہ لینا۔

۸۰ - تہراب پینے والی اور سادھون کی سیوا کر نیوالی اور دشمنی کر نیوالی اور بیماریوں سے بھری

ہوئی اور گھات کر نیوالی اور ہر روز دولت کو مینٹ و نابو کر نیوالی عورت ہو تو دوسرا دواہ کرنا چاہئے

۸۱ - بانجھ عورت اور جسکی اولاد نہ جیتی ہو اور جو صرف دختر می پیدا کرتی ہو ایسی عورت ہونے

پر چھ سالہ آنکھوں میں دشوین گیارھویں سال دوسرا دواہ کرنا چاہئے اور پندرہ سال عورت کے

اوپر تو فوراً دوسرا دواہ کرنا چاہئے۔

۸۲ - جو عورت مرلین ہو لیکن خیر خواہ اور بامروت ہو تو اسکی اجازت سے دوسرا دواہ

کرنا چاہئے مگر اسکی بے قدری ہرگز نہ کرنا چاہئے۔

विधायचत्तिभार्यायाःप्रवसेत्कार्यवान्नरः॥अचत्तिकार्यि-
ताहिस्त्रीप्रदुष्येत्स्थितिमत्यपि॥७४॥विधायप्रोषितेचत्तिं
जीवेन्नियममास्थिता॥प्रोषितेत्वविधायैवजीवेच्छित्तेर-
गर्हितैः॥७५॥प्रोषितोधर्मकार्यार्थप्रतीक्ष्योऽद्योनरसमा-
॥विद्यार्थवद्यशौर्यवाकामार्थत्रीस्तुवत्सरान्॥७६॥संव-
त्सरंप्रतीक्षेतद्विषंतींयोषितंपतिः॥ऊर्ध्वसंवत्सरात्त्वेनांदा-
यंहत्वानसंवसेत्॥७७॥

۶۴۔ اہل مطلب سفر کرنے سے پہلے عورت کے کھانے پینے کا بندوبست کروے تب
پردیش کو جائے کیونکہ بھوکھ کی شدت سے چاروں عورت بھی دوسرے مرد کی خوشامیسی کر لگی۔
۶۵۔ کھانے پینے کا انتظام کر کے پردیش جانے کے بعد اسکی زوجہ نیم سے رکھ زندگی بسر کرتے
اور بد دن انتظام خورد و نوش کے شوہر کے سفر کرنے میں سوت کاتنے سے یا اور لائق تفریق
دستکار یوں سے اوقات گزاری کرے۔

۶۶۔ دھوم کا راج کرنے کے واسطے عورت پردیش گئے ہوئے شوہر کے حکم کی تعمیل آٹھ برس
تک کرے اور اوڑیا پڑھے کھو اسطے پردیس گئے ہوئے شوہر کے حکم کی تعمیل چھ برس
تک کرے اور روزگار اور پیشہ کو اسطے پردیش گئے ہوئے شوہر کے حکم کی تعمیل تین برس تک کرے۔
۶۷۔ مرد ایک سال تک لڑائی جھگڑا فساد کرنے والی عورت کا انتظار کرے اس کے بعد بھی
اگر لڑائی جھگڑا فساد کرتی رہے تو زیور وغیرہ جو دھن دیا اسکو واپس لیکر اس کے ساتھ جماعت کرے
کرے مگر کھانا کپڑا دیے جائے۔

۶۸۔ اس کے بعد کیا کرنا چاہیے اسکا بیان مارہمہرت میں جو الاقول میں جی کے مخرج اور اس موقع پر بھی ہے، کے متعلق ہے
لاکڑاوسکو پڑھنا چاہیے۔

यस्याप्रियेतकन्यायावाचासत्येकतेयतिः ॥ तामनेनवि-
धानेननिजोविन्देतदेवरः ॥ ६६ ॥ यथाविध्यभिगम्येनांशु-
ल्लवस्त्रांशुचित्रताम् ॥ मिथोभजेताप्रसवात्सकत्सकृताव-
तौ ॥ ७० ॥ नदत्वाकस्यचित्कन्यांपुनर्दद्याद्विचक्षणाः ॥ इत्वा
युनःप्रयच्छन्निप्रामोतिपुरुषानृतम् ॥ ७१ ॥ विधिवत्प्रतिगृ-
ह्यापित्यजेत्कन्यांविगर्हिताम् ॥ व्याधितांविप्रबुधांवाछन्न-
नाचोपपादिताम् ॥ ७२ ॥ यस्तुरोषवतींकन्यामनारव्यायो-
पपादयेत् ॥ तस्यतद्वितथंकुर्यात्कन्यावातुर्दुरात्मनः ॥ ७३ ॥

۶۹۔ پورہ عورت میں بیٹے کی پیدائش و عدم پیدائش کو بیان کیا اب اسکی دوسری کیفیت بیان کرتے ہیں کہ جس دختر کو کسی کو زبان سے دینے کو کہہ چکے اور وہ شخص جبکو دینے کو کہا قبل شادی ہو نیلے مر گیا تو اسکا برا اور حقیقی اس دختر کی شادی مطابق طریقہ مندرجہ ذیل کے کرے۔
۷۰۔ پائی سے برت کر نیوالی سفید کپڑے پہنے ہوئے کنیا کا دواہ شاستری رتیبے کر کے بعد فراغت حیض حمل رہنے والی راتوں میں ایک ایک بار حمل رہنے تک اس سے جماع کرے اس سے اولاد ہوگی وہ اسکی ہوگی جبکو وہ دختر دانی اقرار پر پہلے دیگئی تھی۔
۷۱۔ عقلتند آدمی ایک شخص کو کنیا دیکر پھر اس کنیا کو دوسرے کو مذہبے اگر دیوے تو ہزار آدمی کے قتل کے برابر عذاب ہوتا ہے سات قدم پھرنے سے پہلے عورت کے دھرم کی پیدائش نہیں ہوتی تب دوسرے کو دینے کی سنکار ہوئی اسلئے اس نیکن کو کہا۔
۷۲۔ نفوس کے لالین اور آفت آمیز اور سنگار اور سخت عورت کو شاستر کے طریق سے دواہ کر کے ترک کرنا چاہئے۔
۷۳۔ عیب دار کنیا کا عیب نہ کھرا سکے دینے والے دُر آتما کا کنیا دان بے فائدہ ہے۔

۴۸۔ اُس دن سے مٹوہ کر کے ادلا دی خواہش سے بیوہ عورت سے جماع کو جو حکم دیتا ہے۔
اسکی بُرائی سادہ لوگ کرتے ہیں۔

دے وراہا س پی را ڈا دھ سٹریا س مپ ڈ نی یو کتا یا ॥ پ ر جے سیتا دھ
 گ ن ت و ی ا س ن ت ا ن س ی پ ر ک س ی ॥ ۵۶ ॥ وید ہا ی ا نی یو کت سٹو د ت ا
 کتو واک ی تو نی ش ॥ ر ک م ی ت پ ا ر ی ت یو ت ر ن دھ ت ی ی ک ی چ ن ॥
 ۵۷ ॥ دھ ت ی مے کے پ ر ج ن م ن ی ن تے سٹری یو ت دھ ر ॥ ا ن ر ی و ت ت نی یو
 گ ا ر ی پ ش ی کتو دھ ر م ت سٹ یو ॥ ۵۸ ॥ وید ہا ی ا نی یو گ ا ر ی ن ر ی
 تے ت ی ی ی ا وید ہ ॥ یو ر ک ب دھ ر یو ا و ب دھ ر تے ی ا ت ا پ ر س پ ر م ॥ ۵۹
 ॥ نی یو کتو یو وید ہ دھ ر تے ی ا ت ا ت و ک ا م ت ॥ ت ا یو م ی پ
 ت ت یو سٹا ت ا سٹو ا ی یو ر ک ت ل ی م ی ॥ ۶۰ ॥

۵۹۔ اولاد کے ہونے میں سسر وغیرہ کے حکم کو پا کر عورت رشتہ دار سے پسند یا دیور سے اولاد
 دلچواہ حاصل کرے۔

۶۰۔ والد کا حکم پا کر بدبینی لگا کر خاموش ہو کر بیوہ عورت میں لڑکا پیدا کرے سو ایک
 لڑکے کے دوسرا لڑکا کبھی نہ پیدا کرے۔

۶۱۔ ایک بیٹا ہونا اور بے اولاد ہونا دونوں برابر ہیں بچہ کو گون کی اسی بحث سے اور والد
 وغیرہ کے حکم سے جو بیٹا پیدا ہو اس سے مطلب حاصل ہوا لیا ماننے والے اور والد وغیرہ کے
 حکم سے بیٹا پیدا ہونے کے طریق کو جاننے والے جو دوسرا چارج ہیں وہ بیوہ عورت میں دوسرے
 بیٹے کی پیدائش کو بھی دھرم سے مانتے ہیں۔

۶۲۔ جب حمل پیدا ہو چکا تب بڑا بھائی مانتا کرو کے اور چھوٹے بھائی کی زوجہ مانتا ہو تو والد
 یا ہم ریں کہہ سکتا کہ سوقت جانتا جب چھوٹے بھائی کی زوجہ میں والد وغیرہ کا حکم ہوا ہو۔

۶۳۔ والد وغیرہ کے حکم کو پا کر اور طریق کو چھوڑ کر خواہش سے بڑا بھائی چھوٹے بھائی کی زوجہ سے
 یا چھوٹا بھائی بڑے بھائی کی زوجہ سے حمل کرے تو دونوں اپنے درجہ و آئینہ کے درجہ گر جاتی
 ہیں بڑا بھائی بیوہ سے حمل کرے تو والد کہلاتا ہے اور چھوٹا بھائی گریختی سے حمل کرے تو والد
 کہلاتا ہے۔

کریا سنی یگما لیت دئی جارتھ ی تری ی تے ॥ ت سہ ہ ما گینو دھو
 وی جی سہ تری ک ر ب چ ॥ ۲۳ ॥ آو دھا تا ہ ت ب ج ی س س س ت ر پ ر
 ہ ت ॥ س تری ک س ی ی ت دئی ج ن و ا م ا ل م ت ف ل م ॥ ۲۴ ॥ ر ب
 د م ر م ا و ا ش و س د ا س ی د ر ا ج ا و ک س ی چ ॥ و ہ گ م ہ ی ر ا ا ن
 و ی ج ی : پ ر س و پ ر ت ॥ ۲۵ ॥ س ت د : س ا ر ف ل م ل و ب ج ی و ن ی : پ
 ک ا ر ت ت م ॥ ا ت : پ ر پ ر ہ م ی م ی و ی ت ا د م م م ا ی ر ॥ ۲۶
 ॥ ا ت ر ی ج س م ا ر ی ا ی ر ی ر ی ل ی ج س م ا ॥ ی و ی س س ت ر ی
 م ا ر ی ر ی ج س م ا س م ت ॥ ۲۷ ॥ ج ی و ی و ی س م ا ر ی
 ی و ی ا ن و ا ج ر ی ی م ॥ ی ت ت م م ت م ا ل ی ن ی ک ت ا و
 ی ن ا ی ر ॥ ۲۸ ॥

۵۳۔ اس عورت میں جو پیدا ہو وہ ہمارا اور تمہارا دونوں کا ہووے ایسا دل میں رکھ کر جو پیدا
 کیا اس کا حصہ دار تم والا اور کھیت والا دونوں ہوتے ہیں۔

۵۴۔ تم ہو اسے اور کر کے کھیت میں پڑا اس کا پھل کھیت والا ہی پاتا ہے صاحب تم نہیں
 پاتا۔

۵۵۔ گھوڑا۔ اونٹ بکری بھینس اسی انھوں کی پیدائش میں اسی عورت کو جانا
 ۵۶۔ بھوک جی کہتے ہیں کہ آپ لوگوں سے تم ذہن کی فضیلت دیگر فضیلت کو کہا اس کے بعد
 وقت مصیبت میں عورتوں کا دھرم کہتے ہیں۔

۵۷۔ بڑے بھائی کی زوجہ چھوٹے بھائی کی گریہی کہاتی ہے اور چھوٹے بھائی کی زوجہ بڑے
 بھائی کی بیوی ہو کہلاتی ہے۔

۵۸۔ وقت مصیبت نہو اور والد وغیرہ کا حکم بھی ہو لیکن بڑے بھائی کی زوجہ چھوٹا بھائی
 اور چھوٹے بھائی کی زوجہ بڑا بھائی جماع کرے تو دونوں تپت ہو گئیں یعنی درن و ا ش م کے
 درجہ سے گر جاتے ہیں

सकदंशोनियततिसकत्वन्याप्रदीयते ॥ सकदाहददानीति
 श्रीरयेतानिसतांसकत् ॥ ४७ ॥ यथागोऽश्वोष्टदासीधुमहि-
 ष्यजाविकासुच ॥ नोत्पादकः प्रजाभागीतथैवान्यांगनास्व-
 पि ॥ ४८ ॥ येऽक्षेत्रिणोबीजवन्तः परक्षेत्रप्रवापिराः ॥ तेषाम-
 स्यस्यजातस्यनलभन्तेफलंक्वचित् ॥ ४९ ॥ यदन्यगोषुवृषभो-
 वत्सानांजनयेच्छतम् ॥ गोमिनामेवतेवत्सामोघंस्कन्दितमा-
 र्घभम् ॥ ५० ॥ तथैवाक्षेत्रिणोबीजं परक्षेत्रप्रवापिराः ॥ कु-
 र्वन्तिक्षेत्रिणामर्थंनबीजीलभतेफलम् ॥ फलंत्वनभिसन्धा-
 यक्षेत्रिणांबीजिनांतथा ॥ प्रत्यक्षंक्षेत्रिणामर्थोबीजाद्यो-
 निर्गरीयसी ॥ ५१ ॥

۴۷- تقسیم حصہ کنیا و ان دینگے یتیموں باتین بھلے لوگوں کی ایک ہی دفعہ ہوتی ہے۔
 ۴۸- جسطرح گھوڑا اونٹ لوٹدی بھینس بکری۔ بھینس اونٹوں میں بچہ پیدا کر نیوالے کا مالک
 بچہ کو سین پاتا اسطرح دوسرے کی عورت میں تخم ڈالنے والا اولاد کو نہیں پاتا۔
 ۴۹- دوسرے کھیت میں تخم ڈالنے والا اس تخم کے بھر کو کبھی نہیں پاتا۔
 ۵۰- دوسرے کی گھوٹیں دوسرے کا بیل بچھڑا پیدا کرے تو گھوٹ کا مالک بچھڑو کو پاتا ہے اور
 بیل کا لطف بے فائدہ جاتا ہے۔
 ۵۱- اسطرح دوسرے کھیت میں بیج بونے والا کھیت والے کو مطلب کرتا ہے آپ بھل کو
 نہیں پاتا۔
 ۵۲- اس عورت میں جو پیدا ہو وہ بیمار اور تمھارا دونوں کا ہوگا ایسے خیال کو دہین
 نہ کھلے جو پیدا کیا وہ لڑکا ظن والی کا بچے تخم سے طرف افضل ہے۔

अन्नमायावासुगीताः कीर्तयन्तिपुराविदः॥ यथाबीजंनच-
 प्रव्यं पुंसापरपरिग्रहे॥ ४२॥ नश्यतीषुयथाविद्धः स्वेविद्धः म-
 नुविद्धातः॥ तथानश्यतिवैसिप्रंबीजंपरपरिग्रहे॥ ४३॥ य-
 थोरपोमांशयिबींभार्यापूर्वविदोविदुः॥ स्यारागुच्छेदस्यकेहा-
 रमाहुः शल्यवतोमृगम्॥ ४४॥ एतावानेनपुरुषोयज्ञाया-
 त्माप्रजेतिह॥ विप्राः प्राहुस्तथाचैतद्योभर्तासास्मृतांगना
 ॥ ४५॥ ननिष्कयविसर्गाभ्यांभर्तुमार्याविमुच्यते॥ एवंधर्मं
 विजानीमः प्रजाप्रतिविनिर्मितम्॥ ४६॥

۴۴- دو سر کی عورت میں تخم نہ ڈالنا چاہئے اسباب میں اگلے زمانہ کے جاننے والے رش لوگوں
 نے ہوا کا کہا ہوا تخن جو خاص چھند سے شامل ہے بیان کیا ہے بلکہ اس پر عمل کیا ہے۔

۴۵- کسی نے آسمان پر پرند کو تیر مارا پھر دوسرا آدمی نے اسی پر پرند تیر مارا تو دوسرا آدمی کا
 تیر ضائع ہوا کیونکہ شکار تو پہلے تیر انداز کو ملتا ہے اسی طرح دوسرے کی عورت میں تخم ضائع جاتا ہے
 یعنی جسکی عورت ہو اسی کو بچہ کا افادہ ہوتا ہے۔

۴۶- اول راجہ پریتقو نے اس پریتقوی کو لیا پھر تیسرا چاؤنے لیا تاہم یہ پریتقوی راجہ
 پریتقوی کی استری تھے اور جسے اپنی بی بی زمین کو برابر کیا اسی کا کھیت ہو اور جسے اول تیر سے
 مارا اسی کا شکار ہو یہ اگلے زمانہ کے جاننے والوں نے کہا ہے۔

۴۷- ایک ہی پریش ہین ہوتا بلکہ اپنا جسم دوسری عورت داولا دیسب ملکر پریش کہا تا یہ پریش ہون
 نے کہا ہے۔ جو شوہر سے ہی عورت ہو پر رش لوگوں نے کہا ہے۔

۴۸- استری فروخت کرنے اور ترک کرنے سے استری کے دھرم سے علیحدہ ہین ہوتی اول
 ہی تری برہما جی نے یہ متفق دھرم کی کی یہ سب ہم جانتے ہیں ایسا من جی نے کہا ہے۔

यादृशं तूष्यते बीजं क्षेत्रे कालोपपादिते ॥ तादृशो ह तित्त -
स्मिन् बीजं सैव्यञ्जितं गुरोः ॥ ३६ ॥ इयं भूमिर्हि भूतानां शाश्व -
तीयो निरुच्यते ॥ न च योनिगुराणां चिद्बीजं पुष्यति पुष्टियु -
॥ ३७ ॥ भूमावप्येककेदारे कालोत्पानि क्वधी बलैः ॥ नानारू -
पाणि जायन्ते बीजानीह स्वभावतः ॥ ३८ ॥ ब्रीहयः शालयो -
मुज्जास्तिलामाषास्तथायवाः ॥ यथा बीजं प्ररोहन्तिलसुना -
नीक्षवस्तथा ॥ ३९ ॥ अन्यदुमं जातं मन्यदित्येतन्नोपपद्य -
ते ॥ उष्यते यद्विद्यद्बीजं तत्तदेव प्ररोहति ॥ ४० ॥ तत्प्राज्ञेन -
विनीतेन ज्ञानविज्ञानवेदिना ॥ आयुष्कामेन वसव्यं न ज -
तु परयोषिति ॥ ४१ ॥

۳۶- تخم ریزی کے وقت جیسا تخم کھیت میں بویا جاتا ہے ایسی ہی سب اپنی صفات کے پتے پڑتا ہے
۳۷- پانچ غنایم سے پیدا ہونے لگتے جاندار ہیں اونکی پیدائش کا سبب ظرت ہے اور
کوئی چیز پونے اور اگنے کی صفت کو سو کہ تخم کے مضبوطی بہین بخشی ہے اسلئے تخم ہی مقدم افضل ہے
۳۸- ایک ہی کھیت میں کاشتکارے تخم ریزی کے وقت جو دکنڈم وغیرہ تخم کو بویا اور وہ
تخم اپنی عادت سے انواع و اقسام کا ہوتا ہے زمین تو ایک ہی صورت کی ہے اور تخم
ایک صورت کا بہین پس تخم ہی افضل ہے۔
۳۹- جیسے سانھی و دھان و مونگ و تل و ماش و جو و لسن و اودکھ یہ سب نے کے مختلف
صورت سے پیدا ہوتے ہیں۔

۴۰- ایک چیز کو بویا اور دوسری چیز پیدا ہوئی ایسا بہین ہوتا بلکہ جو بویا ہی اگتا ہے۔
۴۱- سب متواضع و دانشمند و کامل و گیان بگیان یعنی دید و شاستر کے جاننے والے و علم
جو ہمیشہ کرینیا لے جو آدمی ہیں وہ دوسری عورت میں تخم کو نہ ڈالیں۔

व्यभिचारात्तु भर्तुः स्त्रीलोके प्राप्नोति निन्द्यताम् ॥ सगालयो
 निं चाप्नोति पापरोगे श्वपीड्यते ॥ ३० ॥ पुत्रं प्रत्युदितं सद्भिः पू-
 र्वजैश्च महर्षिभिः ॥ विश्वजन्यमिमं पुराणमुपन्यासं निबोधत
 ॥ ३१ ॥ भर्तुः पुत्रं विजानन्ति श्रुतिद्वैधं तु भर्तारि ॥ आहूतत्वाह-
 कं केचिदपरे सेविरां विदुः ॥ ३२ ॥ सेव्यभूतास्मृतानां बीज-
 भूतः स्मृतः पुमान् ॥ सेव्यबीजसमायोगात्संभवः सर्वदेहिना-
 म् ॥ ३३ ॥ विशिष्टं कुत्रचिद्बीजं स्त्रीयोनिस्त्वेव कुत्रचित् ॥ उ-
 भयंतु समं यत्र सा प्रसूतिः प्रशस्यते ॥ ३४ ॥ बीजस्य चैव योन्या-
 श्वबीजमुत्कृष्टमुच्यते ॥ सर्वभूतप्रसूतिर्हि बीजलक्षणा ल-
 सिता ॥ ३५ ॥

۳۰۔ دوسرے مرد کے ساتھ جماع کرنے سے عورت دنیا میں مذہب کے قابل ہوتی ہے اور عورتوں
 کا جہنم پاتی ہے اور باپ روگوں سے وکھی وکلیش دان ہوتی ہے۔
 ۳۱۔ اچھے قدیم بڑے لوگوں نے بابت اولاد کے سنار کے بچے کیواسطے جس پاک عورت
 کو کہا ہے اسکو کہتے ہیں۔
 ۳۲۔ باپ کا بیٹا ہے ایسا سچا بیٹا اور باپ کی بابت دو طرح کی شرت ہے کوئی کہتا
 کہ تخم والے کا بیٹا اور کوئی کہتا ہے کہ ظرت (یعنی کثیر) والے کا بیٹا ہے۔
 ۳۳۔ عورت ظرت کی صورت ہے اور تخم مرد کی صورت ہے ظرت اور تخم کی آئینہ شرت سے بہت
 جہم و اردن کی پہلی شرت ہے۔
 ۳۴۔ کہیں تخم بڑا ہے کہیں ظرت بڑا ہے ان دونوں برابر ہیں وہ اولاد بہت اچھی ہے۔
 ۳۵۔ تخم اور ظرت دونوں میں تخم بڑا ہے سب جانداروں کی پہلی شرت تخم کے نشان
 سے جاتی جاتی ہے۔

एताश्चान्याश्चलोकेऽस्मिन्नपकष्टप्रसृतयः ॥ उत्कर्षयोषितः
प्राप्ताः स्वैः स्वैर्भर्तृगुरौः शुभैः ॥ २४ ॥ एयोहितालोकयात्रा-
नित्यं स्त्रीपुंसयोः शुभा ॥ प्रेत्येह च सुखोदकां न्यजाधर्मानि
बोधत ॥ २५ ॥ प्रजनार्थमहाभागाः पूजार्हा एहदीप्तयः ॥ स्त्रि-
यः श्रियश्च गेहेषु न विशेषोऽस्ति कश्चन ॥ २६ ॥ उत्पादनमप-
त्यस्य जातस्य परियालनम् ॥ प्रत्यहं लोकयात्रायाः प्रत्यहं-
स्त्रीनिबन्धनम् ॥ २७ ॥ अपत्यं धर्मकार्याणि शुश्रूषारतिरु-
त्तमा ॥ वाशधीनस्तथा स्वर्गः पितृशामात्मनश्च ह ॥ २८ ॥ य-
तिं यानाभिचरति मनोवाग्देहसंयता ॥ सा भर्तृलोकानाप्नो-
तिसद्भिः साध्वीति चोच्यते ॥ २९ ॥

۲۴۔ سوا آنکے اور بھی عورتیں زویل قوم سے پیدا ہو کر اس لوگ میں اپنے شوہر دن کی غفلت سے عظمت کو پہنچ گئیں۔

۲۵۔ عورت و مرد کی قدیم نیک چلنی کو کہا اب اس لوگ میں اور پر لوگ میں اور زمانہ میں سکھایا گئے جو رعایا کا دھرم ہے اسکو کہتے ہیں۔

۲۶۔ گھر میں پیدا لاش نکھو اسے بڑی قسمت دانی پوچھا کہ لائق گھر کی بیج دان انتہری اور شہی میں ان دونوں میں جھوٹیت کچھ نہیں ہے، دونوں برابر ہیں۔

۲۷۔ بیٹا اور بیٹی کی پیدائش اور بعد پیدائش کی انکی حفاظت اور دنیاوی مراسم قدیم ان سہوں کا ظاہری سبب عورت ہی ہے۔

۲۸۔ اولاد اور دھرم کا راج اور انم پیدا اور اپنا اور اپنے بزرگوں کا سورگ سب عورت کے اختیار میں ہیں۔

۲۹۔ جو عورت دل و زبان و بدن کے عیب علیحدہ ہو کر اپنے شوہر کو چھوڑ کر غیر مرد کا میل
بین کرے وہ پت نوک کو پاتی ہے اور دنیا میں اس کو چھوڑ کر گناہوں میں نیکی چلے کہیں۔

पानं दुर्जनसंसर्गः पत्या च विरहोऽदनम् ॥ स्वप्नोऽन्यगेहवास-
श्च नारीसंदूषणानिषद् ॥ १३ ॥ नैतारूपं परीक्षन्ते नासां वय-
सि संस्थितिः ॥ सुरूपं वा चिरूपं वा पुमानित्येव भुंजते ॥ १४
॥ यौंश्च ल्याच्चलचित्ताश्च नैस्नेह्याच्च स्वभावतः ॥ रक्षिता य-
त्नतोऽपीह भर्तृव्येता विकुर्वते ॥ १५ ॥ एवं स्वभावं ज्ञात्वाऽऽ-
सा प्रजापतिनिर्गमम् ॥ परमं यत्नमातिष्ठेत्पुरुषो रसरां प्र-
ति ॥ १६ ॥ शय्यासनमलंकारं कामं बोधमनार्जवम् ॥ द्रोह-
भावं कुचर्यां च स्त्रीभ्यो मनुरकल्पयन् ॥ १७ ॥ नास्ति स्त्रीणां-
क्रियामंत्रैरिति धर्मव्यवस्थितिः ॥ निरिन्द्रियाह्यमंत्राश्च स्त्रि-
योऽनृतमिति स्थितिः ॥ १८ ॥

۱۳ - عورتیں کیواسطے چھ باتیں داخل عیب میں شراب کا پینا بد کی صحبت شوہر دوری
اور اوڑھو گھوڑنا بیوقت سونا دوسرے کے گھر میں رہنا۔
۱۴ - عورتیں صورت و عمر کو پیش دیکھتی ہیں تو بصورت ہو یا بد صورت ہو لیکن مرد ہو
کو بھوک کرتی ہیں۔
۱۵ - عورت شر پر نیکی سے محفوظ بھی ہوتا ہم اپنی بد اطواری ڈٹوں طبعی و بیو خانی دعادات
ان باتوں سے شوہر کو رنجیدہ کرتی ہے
۱۶ - وقت پیدائش سری برہما جی سے عورتوں کی یہ عادت جانتا کیوں سطر مرد تدبیر کرے۔
۱۷ - پلنگ دامن دنا دغیرہ بنائیکی عادت و کام کرو دھ دھورین و فسانیت دہر چلی
ان سب کو من جی نے شروع پیدائش میں عورتوں کو دیا اسلیے تدبیر سے حفاظت کرنا چاہئے۔
۱۸ - عورتوں کی کریا نستر دن سے نہیں ہے یہ دھرم میں داخل ہوا اندری اور نستر ان دنوں
سے عورت علیحدہ ہوا دروغ کے مانند مبارک ہر یہ شاستر کا حکم ہے۔

स्वां प्रसूतिं चरित्रं च कुलमात्मानमेव च ॥ स्वच धर्मप्रयत्नेन -
 जायां रसन्धिरसति ॥ ७ ॥ पतिर्भार्यासम्प्रविश्य गर्भो भूत्वे ह -
 जायते ॥ जाया यास्तज्जि जाया त्वयस्स्यां जायते पुनः ॥ ८ ॥ या -
 दृशं भजते हि स्त्री सुतं सूते तथा विधम् ॥ तस्मात्प्रजाविशुद्ध्यर्थं
 स्त्रियं रसेत्प्रयत्नतः ॥ ९ ॥ न कश्चिद्योषितः शक्तः प्रसह्य परि -
 रक्षितुम् ॥ रतेरुपाययोगैस्तु शक्यास्ताः परिरक्षितुम् ॥ १० ॥
 अर्थस्य संग्रहे चैनां व्यये चैव नियोजयेत् ॥ शौचे धर्मेऽन्य -
 क्त्वांच पारिणाह्यस्य चेक्षरो ॥ ११ ॥ अरक्षिता गृहे रुद्धाः पुरु -
 षैराप्रकारिभिः ॥ आत्मानमात्मना यास्तुरक्षेयुस्ताः सुरक्षि -
 ताः ॥ १२ ॥

- ۷۔ عورت کی حفاظت کر نیسے اپنے خاندان و اولاد و تمام دھرم و غیرہ کی حفاظت ہوتی ہے۔
- ۸۔ شوہر اپنی عورت میں داخل ہو کر شکل حمل دنیا میں پیدا ہوتا ہے عورت میں عورت سے نسبت رکھنے والا دھرم وہی ہے کہ عورت میں آپ پیدا ہوئے۔
- ۹۔ جس قسم کے مرد کا استعمال عورت کرتی ہے وہی اسی پیدا کرتی ہے اسلئے اولاد پاک ہو کے لئے حتی المقدور عورت کی حفاظت کرنا چاہئے۔
- ۱۰۔ کوئی آدمی صدمہ کر کے عورت کی حفاظت میں صاحب قدرت بنیں ہوتا ہے بلکہ جو تہیہ کرے کینگے اسکے وسیلے سے آدمی حفاظت کر نہیں صاحب قدرت ہوتا ہے۔
- ۱۱۔ مطلبوں کا حاصل کرنا خرچ خانہ پاکیزگی و دھرم خانہ بنانا گھر کی چیز دن کو دیکھنا ان سب کاموں میں عورت کو اختیار دینا چاہئے۔
- ۱۲۔ حکم کر کے اچھے آدمی سے عورت گھر میں محفوظ کی جائے ہو اس پر بھی محفوظ نہیں ہوتی بلکہ جو عورت اپنے کو آپ حفاظت کرتی ہے وہی محفوظ رہتی ہے۔

पुरुषस्य स्त्रियाश्चैव धर्मवर्त्मनितिष्ठतोः ॥ संयोगो विप्रयो-
गे च धर्मान्वस्यामि शाश्वतान् ॥ १ ॥ अस्वतंत्राः स्त्रियः का-
र्याः पुरुषैस्ते दिवानिशम् ॥ विषयेषु च सज्जन्यः संस्थाप्या
आत्मनो वशे ॥ २ ॥ पितारक्षति कौमारे भर्तारक्षति यौवने ॥
रक्षन्ति स्य विरे पुत्रानस्त्री स्वातंत्र्यमर्हति ॥ ३ ॥ कालेऽज्ञाता
पिता वा च्यो वा च्यश्चानुययन्यतिः ॥ मृते भर्तारि पुत्रस्तु वा-
च्यो मातुररक्षिता ॥ ४ ॥ सूक्ष्मेभ्योऽपि प्रसंगेभ्यः स्त्रियोरस्या
विशेषतः ॥ द्वयोर्हि कुलयोः शोकमावहेयुररक्षिताः ॥ ५ ॥ इ-
मं हि सर्ववर्णानां पश्यन्तो धर्ममुत्तमम् ॥ यतन्नेरक्षितुं भार्या
भर्तारो दुर्बला अपि ॥ ६ ॥

۱- دھرم کی راہ پر چلنے والے جو مرد و عورت ہیں ان دونوں کے وصل و جدائی میں جو دھرم
نہیں ہے اسکو کہتے ہیں۔

۲- رات دن عورتوں کو شوہر وغیرہ کے وسیلے سے بے اختیار کرنا مناسب ہے جو عورت
یشبون میں لگی ہے اسکو اختیار میں رکھنا چاہئے۔

۳- لڑکپن میں باپ اور جوانی میں شوہر اور بڑھاپے میں بیٹا عورتوں کی حفاظت کریں
کیونکہ عورتیں خود مختار ہونیکے لائق نہیں ہیں۔

۴- کنبیاؤں کی بوقت کنبیا کو نر لویے تو باپ اسکا پاپی ہوتا اور جیسے فراغت ہو کر
شوہر اس سے جماع کرے تو وہ پاپی ہوتا ہے اور بحالت وفات شوہر کے بیٹا اپنی ماں کی
حفاظت نہ کرے تو وہ پاپی ہوتا ہے۔

۵- تھوڑی صحبت سے بھی خصوصاً عورتوں کی حفاظت کرنا چاہئے عورتیں غیر محفوظ رہنے سے
دونوں کل دیتے خاندان شوہر و خاندان والد کو رنج پہونچاتی ہیں۔

۶- سب دنوں کے اس تم دھرم کو دیکھو کہ کمزور شوہر بھی عورت کی حفاظت کیوں کر کوشش کرتا ہے

वैश्यश्चैव प्रयत्नेन स्वानि कर्माणि कारयेत् ॥ तौ हि च्युतौ स्वक-
र्मभ्यः क्षोभयेतामिदं जगत् ॥ ४१८ ॥ अहन्यहन्यवेक्षेत कर्मा-
न्तान्वाहनानि च ॥ आथ व्ययौ च नियतावाकरा न्कोशमेव च
॥ ४१९ ॥ एवं सर्वानि मान् राजा व्यवहारान्समापयन् ॥ व्यपोह्य
किंल्विषं सर्वं प्राप्नोति परमां गतिम् ॥ ४२० ॥

इतिमानवेधर्मशास्त्रेभृगुप्रोक्तायां संहितायाम्-

दशमोऽध्यायः ८

۱۸۔ دیشیہ اور شور یہ دونوں اپنے کام سے بیکار بننے پادین اگر یہ دونوں اپنے
دھرم سے علیحدہ ہوں تو زمانہ کو پیر آشوب کریں۔
۱۹۔ کام کا ہو جانا دسواری و حاصل زر و خراج و معدن ان سبھوں کو ہر دراجہ
ملاحظہ کیا کرے
۲۰۔ اس طریق سے راجہ تمام کاموں کو کرتا ہوا پاپ کو چھوڑ کر پریم گت کو پاتا ہے۔

سُن جی کا دھڑلہ بترگ جی کی شکستا کا

آٹھواں ^b اڈھیائے سماپت ہوا۔

शृङ्खलकारयेद्वास्यं क्रीतमक्रीतमेव वा ॥ दास्याथैव हि स्थष्टोऽ
 सौवाह्मणास्य स्वयं भुवा ॥ ४१३ ॥ न स्वामिना न स्थष्टोऽपि शू-
 द्रो दास्याद्विमुच्यते ॥ निर्मर्गजं हित तस्य कस्तस्मात्तदपोहति
 ॥ ४१४ ॥ ध्वजाहृतो भक्तदासो गृहजः क्रीतदन्त्रिभौ ॥ धैत्रिको
 दराडदासश्च सप्तैते दासयो नयः ॥ ४१५ ॥ भार्या पुत्रश्च दासश्च
 त्रयस्य बाधनाः स्मृताः ॥ यत्ते समधिगच्छन्ति यस्य ते तस्य तद्ध-
 नम् ॥ ४१६ ॥ विसृज्य ब्राह्मणाः शूद्रा इव्योपादानमाचरेत् ॥
 न हितस्यास्ति किञ्चित्त्वं भर्तृहार्यधनो हि सः ॥ ४१७ ॥

۴۱۳۔ جو شودر خرید کیا گیا ہو یا نہ خرید کیا گیا ہو اس سے داس کا کام کرانا چاہئے کیونکہ
 براہمن کا داس کرم کیواسطے سری برہما جی نے شودر کو پیدا کیا ہے۔
 ۴۱۴۔ جو مالک داس کرم سے داس کو آزاد نہیں کرتا تو وہ داس اس کرم سے آزاد نہیں
 ہوتا کیونکہ داس کرم شودر کے سوا بھاد سے پیدا اس کرم کو کون چھوڑا سکتا ہے۔
 ۴۱۵۔ دھوجا ہرت ملکیت داس گھر میں داس سے پیدا ہوا مول لیا ہو وہ ان میں ملا ہو
 بزرگوں سے چلا آیا دند داس یہ سب تو بھلی داس ہی ہیں۔
 ۴۱۶۔ رزق و فرزند داس یہ بیٹوں بے زر ہیں اور دولت کو فراہم کریں تو جسکے بیٹوں
 ہیں اوسکی دولت بڑی
 ۴۱۷۔ براہمن داس شودر سے دولت لے لیوے اس میں کچھ سچا نہ کرے کیونکہ وہ دولت
 کچھ اوسکی ملکیت نہیں ہے وہ بے زر ہے وہ جو دولت فراہم کرے اس دولت کا مالک اسکا
 سوا می ہے۔

• جبکو میدان جنگ سے فتح کر کے لائے۔

• اپنے بھوجن کیواسطے داس کرم کو منظور کرنا والا

• لائے کسی قصور کی سزا کے عوض میں داس بھاد کو منظور کرنا والا۔

यन्नाविकिंचिदासानांविशीर्येतापराधतः॥ तदासैरेवदात-
व्यंसमागम्यस्यतोऽशतः॥४०८॥सुखनीयायिनामुक्तोव्य-
वहारस्यनिर्णायः॥ दासापराधस्ततोयेदैविकेनास्तिनिग्रहः
॥४०९॥वाराज्यंकारयेदैश्यंकुशीदंकायिमेवच॥यशूनां
रसरागंचैवदास्यंशूद्रंविजयनाम्॥४१०॥सन्नियंचैवदैश्यंच
ब्राह्मणीचत्तिकर्षिती॥विभ्रयाहान्यंशयेनस्वानिकर्माणि
कास्यन्॥४११॥दास्यक्षुकार्यंज्ञोभाद्ब्राह्मणाःसंस्कृताच्चि-
जान्॥अनिच्छतःसमभवत्पादात्तादराज्यःशतानिषट्॥
४१२॥

۴۰۸۔ کشتی میں ملا حون کے قصور سے کسی چیز کی بنیادی ہو تو اسکو سب مل لے کر اپنے حصے سے دیں۔

۴۰۹۔ ملا حون کے قصور سے پانی میں برہا ہوئی چیزوں کی تیغ کو کھا۔ آفت آسانی ملا حون کا جرم و مزا نہیں ہے۔

۴۱۰۔ دلشہ کا کام کھیتی کرنا اور سونو ملینا اور چار پائی کی پرورش کرتا ہے ان سب کاموں کو دلشہ کو کرادے برہمن اور کشتری اور دلشہ کی سوا شودرؤن سے کرادے۔

۴۱۱۔ جو کشتری یا دلشہ رزق نہ ملے سے پریشان ہو اسکو برہمن ہم سے کام کو کرانا ہوا پرورش کرے۔

۴۱۲۔ جو برہمن کشتری دلشہ جینیو وغیرہ سنگھ کو پاکر کام کرنیکی خواہش نہیں کرتے اسکو جو برہمن بوسیدہ اپنے پر بھاؤ کے کو بھستے کام کرنیوالا اس برہمن سے راجہ چھوڑیں دینا دیوے۔

شुल्کस्थानेषुकुशलाः सर्वपरायविचक्षराः॥ कुर्युस्थं य-
थापरायंततोविशं न्यपोहरेत्॥ ३६८॥ राज्ञः परव्यातभाराडा
निप्रतिषिद्धानियानिच॥ तानिनिर्हरतो लोभात्सर्वहारं हरे-
न्नुपः॥ ३६९॥ शुल्कस्थानं परिहरन्काले क्रयविक्रयी॥
मिथ्यावादी च संख्याने दाप्योऽष्टगुरा सत्ययम्॥ ४००॥ आ-
गमं निर्गमं स्थानं सथावृद्धि सयावुभौ॥ विचार्य सर्वपरायानं
कारयेत्क्रयविक्रयी॥ ४०१॥ यंचरात्रे पंचरात्रे पक्षे पक्षेऽथ-
वा गते॥ कुर्वीत चेष्टां प्रत्यक्षमर्घ्यं संस्थापनं न्युपः॥ ४०२॥ तु-
लामानं प्रतीमानं सर्वं च स्यात्सुलक्षितम्॥ यत्सु यत्सु च मा-
सेषु पुनरेव परीक्षयेत्॥ ४०३॥

۳۹۸- خراج سلطنت کو جاننے والے اور ہر چیز کو فروخت کر نین ہوتیار ایسا آدمی جس چیز
کی جو قیمت مقرر کرے اس میں جو نقص ہو اس کے بیسویں حصہ کو راجہ لے لے۔
۳۹۹- راجہ کے لائق جو چیز ہے اور جس چیز کو دوسرے کے پاس فروخت کرنے کو راجہ نے
منع کیا ہے ان چیزوں کو درقصے دوسرے مقام پر فروخت کرے تو اس کا تمام مال راجہ لے لے
۴۰۰- جس مقام پر راجہ کا محصل لیا جاتا اس مقام کو ترک کر نیوالا دے بے وقت خرید و فروخت
کر نیوالا قبول میں کم کرنے والا محصل سرکاری کا ہمت چند تا دان دیوے
۴۰۱- سب چیز کا آنا جانا و قیام و روانہ کو دیکھ کر خرید و فروخت کرنا چاہئے۔
۴۰۲- بعد آخر ہونے پہلے پہلے پنج دن یا ہفتہ بھٹتے کے سب چیزوں کی قیمت قائم کرے۔
۴۰۳- ماشہ و تولہ سیر و پانچ سیری وغیرہ پرستھہ دو روں وغیرہ کے ہاٹوں کی کمی بیشی
کو راجہ دیکھے پھر چھوٹے چھوٹے مہینہ میں اونکا امتحان کرے اور سب چیزوں پر راجہ ہر گز
کر دے

प्रातिवेश्यानुवेशौ च कल्याणो विंशतिदिने ॥ अर्हावभोजय-
न्विप्रोदरादमर्हतिमायकम् ॥ ३६२ ॥ ओत्रियः ओत्रियं साधुं
भूतकृत्येवभोजयन् ॥ तदन्वद्विगुरां राप्यो हिरासं चैव मायक-
म् ॥ ३६३ ॥ अन्योजडः पीठसर्पिस्सप्तत्यास्यविरश्चयः ॥ ओत्रि-
येषूपकुर्वन्श्च न दाप्याः केनचित्करम् ॥ ३६४ ॥ ओत्रियं व्याधि-
ता तौ च बालवृद्धावकिंचनम् ॥ महाकुलीनमार्यचराजासंपूजये-
त्सदा ॥ ३६५ ॥ शात्मलीफलकेशलक्ष्मणे निज्यान्नेजकः शनैः
॥ न च वासां सिवासोभिर्निहरेन्न च वासयेत् ॥ ३६६ ॥ न लुवायो
वशायलं दद्यादेकपलाधिकम् ॥ अतीऽन्यथा वर्त्तमानो दाप्यो
द्वादशकं रमम् ॥ ३६७ ॥

۳۹۲- سنگل شانت کرم بین برہمن کو ویشیہ بھوجن کرانا ہوا اور اپنے گھر کے روبرو بیٹے والے
اپنے گھر سے ایک گھر چھوڑ کر دوسرے گھر میں ستر لے لیتے برہمن کو بھوجن کرادے تو ایک
ماشہ چاندی دینا دیتے۔

۳۹۳- شادی وغیرہ خوشی کے کاموں میں دیدیا پٹھی اور اپنے گھر کے سنیہا ایک گھر چھوڑ
کر دوسرے گھر میں رہنا دیدیا پٹھی برہمن کو بھوجن کرادے تو ایک ماشہ سونا اور بھوجن کا دو چنٹا دینا دیتے۔

۳۹۴- اندھا بہرالنکرا ستر برہمن کی عمر والا دھن و معانی سے دیدیا بھیموں کا اپکار کرنا والا
ان بھیموں سے راجا بدو دھالی ہونے خزانے کے اپنے لینے کے لائق حصول ہونہ لیتے۔

۳۹۵- دیدیا پٹھی یا دھن دیکھی لاکھ ماشہ زندہ خندانیا فیاض دل ان بھیموں کا بھوجن کرادے تو ایک

۳۹۶- ستر کے چکنے پانا پریشگی سے دھوبی کپڑے دھو کر اور ایک کپڑا دوسرے کو نہ دیوے
اور بہت دن تک اپنے گھر میں نہ رکھے۔

۳۹۷- کپڑا بیٹنے والا کپڑا سنا گیا واسطے بمقدار وزن دینا گندہ پیسا کے سوت لپوے تو
بمقدار وزن گیارہ گندہ کے کپڑا دیکھ اس سے کم دیکھ تو بمقدار بارہ پن دیکھ کر دیکھ کر ایک سوت کو نامی کرے

यस्यस्तेनःपुरेनास्तिनान्यस्त्रीगोनबुधवाक् ॥ नसाहसिकद-
राडघौसराजाशक्रलोकभाक् ॥ ३८६ ॥ सतेषांनिग्रहोराजः
पंचानांविषयेस्वके ॥ साध्राज्यकृत्सजात्येषुलोकेष्वयश-
स्करः ॥ ३८७ ॥ ऋत्विजंयस्त्यजेद्याज्योयाज्यंचर्त्विक्त्यजे-
द्यदि ॥ शक्त्यंकर्मशयदुष्टंचतयोद्गराडःशतंशतम् ॥ ३८८ ॥
नभातानपितानस्त्रीनपुत्रस्त्यागमर्हति ॥ त्यजन्नपतिता-
नेतान्राज्ञादराड्यःशतानियद् ॥ ३८९ ॥ आश्रमेषुद्विजाती-
नांकार्येविवर्त्तामिथः ॥ नविभूयान्नृपोधर्मचिकीयन्हित-
मात्मनः ॥ ३९० ॥ यथार्हमेतानभ्यर्च्यब्राह्मणैःसहपार्थिवः
॥ सांत्वेनप्रशमय्यादौस्वधर्मप्रतिपादयेत् ॥ ३९१ ॥

۳۸۶۔ چور اور دوسرے کی زوجہ سے جماع کر نیوالا اور کھوٹے بچن بولنے والا اور زبردستی
کام کر نیوالا اور ڈنڈا وغیرہ سے مار نیوالا سب جلی راج میں نہیں ہیں وہ راجہ اندر لوگ کو پاتا ہے
۳۸۷۔ اپنی راج میں ان یا کچھ گھنڑا دینے والا راجہ راجاؤں میں مندری طور راجہ کا کام کرتا ہے
اور اس دنیا میں نیکیاں پاتا ہے۔
۳۸۸۔ اپنے کام میں لائق اور کھوٹے پس سے علیحدہ رہ لوگ اور جیمان ان دونوں میں سے
ایک کو ایک ترک کرے تو ترک کر نیوالے کو تلوں ڈنڈا دینا چاہیے۔
۳۸۹۔ سان و باپ وزوج و فرزند جو اپنے درن سے بھر شت ہو گئے ہوں ان میں سے کسی
ایک کو ترک کرے تو وہ چھ سو پن ڈنڈے کے لائق ہوتا ہے۔
۳۹۰۔ گرسہقہ وغیرہ شرم میں برہمن کشتری ویشیہ کے باہم بحث مطالب شاستری کی ہوتی
ہو تو اپنا بھلا چاہنے والا راجہ سامس کو کے ایسا نہ بولے کہ یہ مطلب شاستر کا ہے۔
۳۹۱۔ راجہ مع برہمنوں کے بحث کر نیوالوں کو حسب لیاقت آرام صورت کام سے پوچھ
کر کے اسکے عقدہ کو دور کر کے اپنے دھرم کو بیان کرے۔

نजातुब्राह्मراہنہنیاکسर्वपापेष्वपिस्थितम् ॥ राश्रादेनवे
 कुर्ष्यात्समग्रधनमक्षतम् ॥ ३८० ॥ नब्राह्मरावधाङ्ग्यानध-
 र्मोविद्यतेभुवि ॥ तस्मादस्यवधंराजामनसापिनचित्तयेत् ॥
 ३८१ ॥ वैश्यश्चेक्षत्रियांगुप्तांवैश्यावाक्षत्रियोव्रजेत् ॥ यो-
 ब्राह्मरायामगुप्तायांताबुभौदराडमर्हतः ॥ ३८२ ॥ सहस्रं ब्रा-
 ह्मराोदराडंदाप्योगुप्तेतुतेव्रजन् ॥ शूद्रायांक्षत्रियविशोःसा-
 हस्रोवैभवेहमः ॥ ३८३ ॥ क्षत्रियायामगुप्तायांवैश्येपंचशतं
 रमः ॥ मूत्रेराभौराड्यमिच्छेत्क्षत्रियोदराडमेववा ॥ ३८४ ॥
 अगुप्तेक्षत्रियांवैश्येशूद्रांवाब्राह्मराोव्रजन् ॥ शतानिपंच-
 दराड्यः स्यात्सहस्रंत्वन्यजस्त्रियम् ॥ ३८५ ॥

۳۸۰ - تمام پاپوں کو برہمن نے کیا ہو تو بھی شکو قتل کرنا چاہئے بد دن دینے سزا بدنی
 کے مع سامان خانگی راج علیہ کال دنیا چاہئے۔

۳۸۱ - دنیا میں برہمن کے قتل سے زیادہ کوئی دوسرا دھرم نہیں ہے اسلئے راجہ دہمین بھی
 برہمن کے قتل کا خیال نہ کرے۔

۳۸۲ - شوہر وغیرہ سے محفوظ دلشہ کی زوجہ کستری جماع کرے یا دلشہ ہی کستری کی
 دلشہ جماع کرے تو شوہر وغیرہ سے محفوظ برہمنی کے جماع میں جو سزا کی ہو وہی سزا دونوں کو دینا چاہئے۔

۳۸۳ - شوہر وغیرہ سے محفوظ کستری یا دلشہ کی زوجہ سے جماع کر نیوالے برہمن کو ہزارین
 دینا چاہئے اور شوہر وغیرہ سے محفوظ شوہر کی زوجہ سے جماع کر نہیں دلشہ کو ہزارین دینا چاہئے۔

۳۸۴ - شوہر وغیرہ سے غیر محفوظ کستری کی زوجہ سے جماع کر نہیں دلشہ کو پانسویں دینا چاہئے
 اور اسکے ساتھ جماع کر نیوالے کستری کو گدھے کے پیشاب سے مرنوٹا دینا بھی سزا کافی ہے۔

۳۸۵ - شوہر وغیرہ سے غیر محفوظ کستری یا دلشہ یا شوہر کی زوجہ سے جماع کر نیوالے برہمن کو پانچ
 ہزار دینا چاہئے اور چاٹوال وغیرہ کی زوجہ سے جماع کر نہیں برہمن کو ہزارین دینا چاہئے۔

वैश्यः सर्वस्वदण्डः स्यात्संवत्सरनिरोधतः ॥ सहस्रं सत्रियोदंड्यो
 भौराड्यं मुत्रेण चार्हति ॥ ३७५ ॥ ब्राह्मराणीयद्यगुप्रांतुगच्छेतां-
 वैश्यपार्थिवौ ॥ वैश्यं च शतं कुर्यात्सत्रियस्तु सहस्रिराम् ॥
 ३७६ ॥ उभावपितुतावेव ब्राह्मरायागुपया सह ॥ विलुप्तौ शू-
 द्रवदण्ड्यो रग्धव्यौ वा कटाग्निना ॥ ३७७ ॥ सहस्रं ब्राह्मरा-
 दण्ड्यो गुप्रां विप्रां बलाहजन् ॥ शतानि यं च दण्ड्यस्यादि-
 च्छत्या सह संगतः ॥ ३७८ ॥ भौराड्यं प्राणान्तिको दण्ड्यो-
 ब्राह्मरास्यविधीयते ॥ इतरेषां तु वरानां दण्डः प्राणान्ति-
 को भवेत् ॥ ३७९ ॥

۳۷۵ - محفوظ برہمنی سے جماع کرنے میں دیشیہ کو ایک سال تک چلی جائے تین قید رکھنا چاہیے
 اسکے بعد سب مال کا چھین لینا یہ سزا اسکو دینا چاہیے اور اسی جرم میں کشتی کو ہزار پن ڈنڈ
 دیوے اور گدھے کے پیشانی سے نوٹھوٹھا دیوے۔

۳۷۶ - شوہر وغیرہ سے غیر محفوظ برہمنی سے جماع کرنے پر کشتی دیشیہ پانچ سو روپے
 دہزار پن ڈنڈ دیوے۔

۳۷۷ - شوہر وغیرہ سے محفوظ برہمنی سے جماع کرنے پر کشتی دیشیہ دو سو روپے شوہر
 کی طرح ڈنڈ کے لائق ہیں یعنی سب اعضا سے منہ دکر کرنا چاہیے خواہ لال کش سے ڈھلک کر
 دیشیہ کو اور پھر تر لے کر ہری سے ڈھلک کر کشتی کو جلانا چاہیے یہ سزا برہمنی صحت
 کی جماع میں جانتا چاہیے۔

۳۷۸ - شوہر وغیرہ سے محفوظ برہمنی کے ساتھ زبردستی جماع کرنے پر برہمن کو ہزار پن ڈنڈ
 دینا چاہیے اور اس برہمنی کی خواہش سے جماع کرنے پر برہمن کو پانچ سو روپے دینا چاہیے
 ۳۷۹ - سزائے قتل کے مقام میں برہمن کو نوٹھوٹھا دیا ہی سزا ہو اور دیگر قوم کو قتل
 ہی کی سزا دینا چاہیے۔

یا تھ کھیاں پرکھیاں تھیاں سا سہو مہو راجھ مہرہ ॥ آنگھ لہو رے
 واکھ رے رے رے رے رے رے رے رے ॥ ۳۹۰ ॥ مہرہ رے رے رے رے رے رے رے رے
 گھرا رے رے رے ॥ تہاں رے رے رے رے رے رے رے رے ۳۹۱ ॥
 ॥ پھو ماں سہا رے رے رے رے رے رے رے رے ॥ آہیا رے رے رے رے رے رے رے رے
 نیت رے رے رے رے رے رے رے رے ۳۹۲ ॥ سہا رے رے رے رے رے رے رے رے
 گھرا رے رے رے ॥ آہیا رے رے رے رے رے رے رے رے ۳۹۳ ॥
 آہیا رے رے رے رے رے رے رے رے ۳۹۴ ॥ آہیا رے رے رے رے رے رے رے رے
 سہا رے رے رے رے رے رے رے رے ۳۹۵ ॥

۳۹۰۔ جو استری کینا کی فرج میں اونگی ڈالکر باعیب کرے اوسکا موٹو موٹا انا اور الکلی
 کاٹنا اور گدھے پر چڑھا کر شاہراہ میں گشت کرنا چاہئے کہ شیشیہ کی پٹیاں لٹکائی جائیں
 ۳۹۱۔ رات و صفا کے غور سے اپنے شوہر کو ترک کر نیوالی عورت کو راجہ بہت آدمیوں
 کے روبرو کٹوں سے بھونچ کر ادا ہے۔

۳۹۲۔ دوسرے کی عورت مرقومہ بالا سے جماع کر نیوالے آدمی کو لوہے کے گرم پلنگ
 میں سولا کر چاروں طرف لکڑی رکھ کر آگ لگا دے جس سے وہ پانی جل جا۔

۳۹۳۔ دوسرے کی عورت رتھ جکا جینو وغیرہ وقت محکومہ شاستریہ بنیں ہوا اسکی عورت
 اور چانڈال کی عورت۔ انھوں سے جماع کر کے نالائق آدمی بغیر پانے منرا کے ایک سال کے
 بعد پھر اسی عورت سے جماع کرے تو جو منرا کہ آئے ہیں اسکی دو چھ منرا دیوے۔

۳۹۴۔ براہمن کشتری ویشیہ کی عورت شوہر وغیرہ سے محفوظ ہو خواہ محفوظ ہو اس جماع
 کر نیوالے شوہر کا عضو تناسل قطع کرنا و تمام دولت چھین لینا و منرا قتل دینا چاہئے مگر گناہ
 غیر محفوظ عورت سے جماع کر نہیں قطع عضو تناسل تمام دولت چھین لینا صرف یہی سزا دینا
 چاہئے اور محفوظ عورت سے جماع کر لے میں دونوں منرا مرقومہ بالا منرا قتل دینا چاہئے

کनیاں بجنی مکتھن کینچید پیرایے ॥ جघन्यं सेवमा-
 नानुसंयतां वासयेद्देहे ॥ ۳۶۵ ॥ उत्तमां सेवमानस्तु जघन्यौ
 वधमर्हति ॥ शुल्कं दद्यात्सेवमानः समा मिच्छेत्पिता यदि ॥
 ۳۶۶ ॥ अभिषेक्तुयः कन्यां कुर्यादर्थे रामानवः ॥ त-
 स्यात्सुकर्त्यं श्रंगुल्यो दशद्वयं चार्हति षड्शतम् ॥ ۳۶۷ ॥ सका-
 मां दूषयंस्तु ल्यो नां गुलिच्छेदमाप्नुयात् ॥ द्विशतं तु दमं द-
 ष्यः प्रसंगविनिवृत्तये ॥ ۳۶۸ ॥ कन्यैव कन्याया कुर्यात्त-
 स्याः स्याद्विशतोदमः ॥ शुल्कं च द्विगुणं दद्याच्छिफां शे-
 वाप्नुयाद्दश ॥ ۳۶۹ ॥

۳۶۵ - اپنی ذات سے اونچی ذات کو چاہنے والی کنیا تھوڑا بھی دترہنیں پاس کرے اور اپنی
 ذات سے نیچے ذات کو چاہنے والی کنیا کو گھومیں باز مھر کر لےنا چاہئے۔

۳۶۶ - جو اونچی ذات کی کنیاں خواہش کرتی ہوں یا کنیو والی ہے اس سے زبردستی براء
 وغیرہ کرنا بالاتفاق ذات کی سب سے قطع اعضا و قتل کے لائق ہوتا ہے اور خواہش کرنا والی
 ہمقوم کنیا کو کچھ دیکر اس سے جماع وغیرہ کرنا اس کے لائق نہیں ہوتا اور اگر اس کنیا کا
 باپ راضی ہو تو اس کو کچھ سوا دھنہ دیکر شادی کرے۔

۳۶۷ - جو آدمی زبردستی اور معزوری سے اپنی ذات کی کنیا کی فرج میں جو کہ ناقابل جماع ہے
 انگلی ڈال کر با عیب کرتا ہے اس کی دوا انگلی کا سنا چاہئے اور چھ سوین ڈٹر لےنا چاہئے

۳۶۸ - اور اگر خواہش کرنا والی ہمقوم کنیا کو بطریق مرقومہ بالا با عیب کرے تو قطع انگستان کی
 سزا دینا چاہئے لیکن کچھ سزا دینے کے واسطے دوسوین ڈٹر لےنا چاہئے۔

۳۶۹ - جو کنیا دوسری کنیا کی فرج میں انگلی ڈال کر با عیب کرے اس کو دس سوین ڈٹر دینا چاہئے
 اور انگلی ڈالنے والی کنیا کا باپ دس سوین ڈٹر (شک) دیوے

मिस्रुकावन्निश्चैवरीसिताः कारवस्तथा ॥ संभाषणां सहस्री
भिः कुर्युरप्रतिवारिताः ॥ ३६० ॥ न संभाषां परस्त्रीभिः प्रतिवि
द्धः समाचरेत् ॥ निषिद्धो भाषमारास्तु सुवर्गां वराडमर्हति ॥
३६१ ॥ नैष चारणादरेषु विधिर्नात्मोपजीविषु ॥ सज्जयन्ति
हितेनारीर्निगूढाश्चारयन्ति च ॥ ३६२ ॥ किंचिदेव तु दाप्यः स्या
त्संभाषान्नाभिराचरन् ॥ प्रैष्यासुंचैकभक्तासुरहः प्रव्रजिता
सुच ॥ ३६३ ॥ योऽकामां दूषयेत्कन्यां समद्योवधमर्हति ॥
सकामां दूषयंस्तुल्यो न वधं प्राप्नुयान्नरः ॥ ३६४ ॥

۳۶۰۔ بھکاری و بھاٹ و نکیت (یعنی جسے گیتھ کیو اسطے دیکشالی ہو)۔ اور سونین بنو
یہ سب بھیکہ وغیرہ اپنے کام کیو اسطے عورتوں سے باتیں کریں۔ تو انکو منع کرنا چاہئے۔

۳۶۱۔ ایک بار منع کیا کہ تم اس عورت سے نہ بولنا اور پھر وہ آدمی اسی عورت سے باتیں
کرے تو ایک سترن (یعنی سولہ ماہ) سونا دیو دیوے۔

۳۶۲۔ نہ اور گانے بجانے کی عورت اور جو شخص عورت کے قہر میں سے اپنی اوقات بکری
پہن انکی عورتوں کے واسطے آئین مندرجہ بالا نہیں کیونکہ وہ لوگ تو خود اپنی عورتوں کو پیشہ سب بھیکہ وغیرہ

۳۶۳۔ لیکن تمام دوسرے کی عورتیں ہیں سو اسطے انھوں کے ساتھ بات کرنے سے بات
کرنا والا تھوڑا سا ڈنڈ پاوے گی اور ایک گھر میں جس عورت کو روک کر رکھا ہو وہ۔ اور سنیا سی
کی عورت انھوں کے ساتھ بات کرنا والا تھوڑا سا ڈنڈ پاوے۔

۳۶۴۔ جو ہم قوم و ختر خواہش نہیں کرتی اور مرد اس سے جماع کرتا ہو اسکو قطع عضو
کی سزا اسی وقت دینا چاہئے لیکن برہمن کو یہ سزا نہ دینا چاہئے کیونکہ اسکو سزا کے بدلے دیوی کی
مخالفت ہو اور جو شخص خواہش کرنا والی و ختر ہم قوم سے جماع کرے وہ سزا کے قطع اعضا نہ پاوی

परस्यपत्न्यायुरुषःसंभाषांयोजयन्नरहः॥ पूर्वमाक्षारितोदो-
 र्धैःप्राप्तुयात्पूर्वसाहसम्॥ ३५४॥ यस्त्वनाक्षारितःपूर्वमभि-
 भाषेतकारणात्॥ नदीघंप्राप्तुयात्किंचिन्नहितस्यन्यतिक्र-
 मः॥ ३५५॥ परस्त्रियंयोऽभिवदेत्तीर्थेऽरायेवनेऽपिवा॥ न-
 दीनांवापिसंभेदेसंग्रहरामाप्नुयात्॥ ३५६॥ उपचारक्रि-
 याकेलिःस्पर्शोभूयरावाससाम्॥ सहस्यद्वासनंचैवसर्वसं-
 ग्रहरांस्मृतम्॥ ३५७॥ स्त्रियंशरीरेदेशीयःस्पृष्टोवामर्षयेत्त-
 या॥ परस्परस्यानुमतेस्सर्वसंग्रहरांस्मृतम्॥ ३५८॥ अत्रा-
 क्षराःसंग्रहरोपाराणांतंदराडमर्हति॥ चतुर्णामपिवर्णानां
 दारारस्यतमाःसदा॥ ३५९॥

۳۵۴- دو سر کی عورت سے جو شخص خلوت میں بائین کرتا ہے اور پہلے سے اسکا
 عیب جانا گیا ہے اسکو پوربیا ہنس نہ دینا چاہئے۔
 ۳۵۵- جبکہ عیب پہلے سے جانا نہیں گیا ہے اور کسی باعث سے خلوت میں دوسر
 کی عورت سے بائین کرتا ہے تو اسکو نہ نہ دینا چاہئے۔
 ۳۵۶- بائین جانیکارستہ اور گھاس بھوس سے شامل اور آدمیوں سے علیحدہ رکھو گاؤں کی باہر
 ہو اور جنگل اور ندی کا شکر ان مقامات میں دوسر کی عورت سے بائین کرو تو سنگرسن نام پاپ کو پاتا ہے
 ۳۵۷- الا پہنا عطر لگانا اور کپڑا اور زیور پہننا وضو کے بغیر اور دیگر کرنا ایک چار پائی پر
 بیٹھنا یہ سب سنگرسن کہلاتا ہے اس بات کو من وغیرہ شیونے کہا ہے۔
 ۳۵۸- جس مرد عورت کی ران وغیرہ کو چھو آخواہ عورت نے مرد کے فوط وغیرہ کو پکڑا اور مرد
 عفتہ نہ کیا تو باہمی محبت سے یہ سنگرسن کہلاتا ہے من وغیرہ شیونے کہا ہے۔
 ۳۵۹- سو آبرو ہنوں کے اور ذات دالوں کو سنگرسن کی عورت میں قتل کی سزا دینا چاہئے
 کیونکہ چار وورن کی استری نہایت حفاظت کے لائق ہیں۔

आत्मानश्चपरिवारादक्षिराणानांचसंगरे॥ स्त्रीविप्राभ्युप-
 त्तौचघ्न्यमैराननुव्यति॥ ३४६॥ शुरुवाबालहृद्धौवाघ्राह-
 रांवाबहश्रुतम्॥ आततायिनमायान्तंहन्यादेवाविचारय-
 न॥ ३४७॥ नाततायिवधेरोयोहन्तुर्मवतिकश्चन॥ प्रकाशं
 वाऽप्रकाशंवामन्युलंमन्युमुच्छति॥ ३४८॥ परसाराभिम-
 र्शेषुप्रवृत्तान्महीपतिः॥ उद्देजनकोर्देराडैश्छिन्नयित्वा
 प्रवासयेत्॥ ३४९॥ तत्समुत्थोहिलोकस्यजायतेवरासंक-
 रः॥ येनमूलहरोधर्मःसर्वनाशायकल्पते॥ ३५०॥

۴۹- آتما اور گیتی کے سامان اور دشمنی اور براہمن آفون کی حفاظت کر رہیں اور
 میدان جنگ میں دھرم سے ماریو لے کو دوش بہنیں ہوتا۔
 ۵۰- گرد و بالک پورھا و بہت پڑھا ہوا براہمن یہ سب ایشامی ہو کر آدین تو انکو مارنا
 چاہئے۔ کچھ بکاڑنگنا جاسئے۔
 ۴۹- آتانی کے قتل میں ماریو لے کو پاپ بہنیں ہوتا جو شخص ظاہر یا پوشیدہ ماریو لے
 کے کر دھ سے ملے گئے اسکے ظاہر و پوشیدہ کر دھ کو سلسلہ ور پاتا ہے۔
 ۵۲- جو آدمی دوسری عورت سے بر فلی کر نیو لے ہیں انکو ادھیاک کر نیو لے و ٹوکے
 وسیلے سے بدن پر نشان کر کے ملک سے باہر نکال دے۔
 ۵۳- زمانہ میں عورتوں کی بر فلی سے وزن سکر پیدا ہو بہنیں اور اس وزن سنگر
 سے جڑا کھاڑ بینوالا دھرم پیدا ہوتا ہو جس سے جگت کی ناسخ ہوتی ہے۔

انگ لگانا دزیر و بنا کسی دولت و کھبت و عورت کو جھین لینا ان کاموں کا کر نیو لے آتانی کہلاتا ہے۔

अनेनविधिनाराजाकुर्वाणः स्नेननिग्रहम् ॥ यशोस्मिन्नामु-
यालोके प्रेत्यचानुत्तमं सुखम् ॥ ३४३ ॥ ऐन्द्रं स्थानमभिप्रेत्य-
शास्त्राक्षयमव्ययम् ॥ नोपेक्षेत क्षरामपिराजासाहसिकं नरम्
॥ ३४४ ॥ बाधुष्टात्तत्स्कराच्चैव दराडेनैव च हिंसतः ॥ साहसस्य न-
रः कर्त्ता विज्ञेयः पापहृत्तमः ॥ ३४५ ॥ साहसे वर्त्तमानस्तु यो म-
र्ययति पार्थिवः ॥ स विनाशं व्रजत्याशु विद्वेयं चाधिगच्छति ॥
३४६ ॥ न मित्रकारशाहाजा विपुला द्वाधनागमात् ॥ समुत्त-
जेत्साहसिकान् सर्वभूतमया वहान् ॥ ३४७ ॥ शस्त्रं द्विजातिभि-
र्ग्राह्यं धर्मो यत्रोपरुध्यते ॥ द्विजातीनां च वर्णानां विसर्गे काला-
कारिते ॥ ३४८ ॥

۳۴۳- اس طریق سے چورون کا ڈنڈ دینے والا راجہ اس نوک بین پس اور نوک بین آتم
شکد کو پاوت۔

۳۴۴- جو راجہ اند کی پدی پانے کی خواہش کر نیوالا اور زوال شکیانی کا چاہنے والا ہے
وہ زبردستی بھی زبردستی سے کام کر نیوالے آدمی کی دلوری کرے۔

۳۴۵- گالی دینے والا اور چور ڈنڈ سے ماریوالا ان محبوب سے ساس کر نیوالا پالی ہے
۳۴۶- جو راجہ زبردستی سے کام کر نیوالے آدمی کے جرم کا تحمل کرنا ہو وہ جلد عداوت
و فنا کو پاتا ہے۔

۳۴۷- تمام جاندارون کو خوف دینے والے اور زبردستی سے کام کر نیوالے آدمی کو
راجہ دوستی سے یا بہت دولت پانے سے رہا نہ کرے۔

۳۴۸- دھرم بٹھانے کی حالت میں زمانہ کی تحریک سے برہن کشتی دیشیہ تینون ورن
ہتھیارون کو دھارن کریں۔

अथापाद्यन्तु इहस्यस्तेयेभवतिकिल्बिषम् ॥ षोडशैवतुवैश्य-
स्यद्वात्रिंशत्सत्रियस्यच ॥ ३३७ ॥ ब्राह्मणास्यचतुःषष्ठीः पूर्णा-
वापिशतम्भवेत् ॥ द्विपुराणाचतुःषष्टिस्तद्वैषयुराविद्धिसः
॥ ३३८ ॥ वानस्यत्यंमूलफलंदावन्यर्थंतथैवच ॥ तृणांचगो-
भ्योग्रासार्थमस्तेयमनुरब्रवीत् ॥ ३३९ ॥ योऽदत्तादायिनोह-
स्तास्त्रिप्तेतब्राह्मणो धनम् ॥ याजनाध्यापनेनापियथास्ते-
नस्तथैवसः ॥ ३४० ॥ द्विजो ध्वजः क्षीराद्यतिर्द्वाविशुद्धेचमूल-
के ॥ आदत्तानः परस्तेजान्नदण्डंदातुमर्हति ॥ ३४१ ॥ असंधि-
तानांसन्धातासन्धितानांचमोसकः ॥ दासाश्चरयहर्ताच-
प्राप्तः स्याद्यौरकिल्बिषम् ॥ ३४२ ॥

۳۳۷- جو شورویشیہ کشتی و برابن چیزوں کے گن اور دوش کو بہن جانتے اور لگا جی
میں جو ڈنڈ کہا ہے اس کا آٹھ گنا سو گنا گنا بیٹیں گنا۔

۳۳۸- چوتھ گنا یا تلو گنا یا ایک سو اٹھائیس گنا دس سلاہ دار شورویشیہ کشتی پر بہن پان
در حالیہ چیزوں کے گن و دوش کو چانتے ہوں۔

۳۳۹- جو دخت وغیرہ میاف کی حفاظت میں بہن ہے اس دخت کا مول پھل و پھول اور بہن
کیواسے لکڑی اور گنو کے کھانیکے واسطے گھاس وغیرہ ان سب کو کیو تو اسکو سزا نہ دینا کہ وہ بڑا
بہن ہے من جی نے کہا ہے۔

۳۴۰- جو برابن چور کو پڑھا کر اور کیو کر اسکے ہاتھ سے دولت لینے کی خواہش کرتا ہے وہ بہن میں
۳۴۱- برابن کشتی ویشیہ یہ سب بہن میں چلے جاتے ہوں اور کھانے کو کچھ پاس نہو تو دوسرے
کے کہیتے و گنا یعنی ارکھ اور دوتولی کے نیوں تو ڈنڈ کے لائق بہن میں۔

۳۴۲- دوسرے کا گھوڑا جو بندھا بہن ہے اسکو غور سے بانہ سے والا اور طویل میں بند ہو
گھوڑے وغیرہ کو چھوڑ نیوالا اور غلام اور گھوڑا اور گھوڑا انکو لیجا نیوالا چور پاپ کو پاتا ہے۔

परिपूतेषु धान्येषु शाकमूलफलैश्च ॥ निरन्वयेशतंदराडः
 सान्वयेऽर्द्धशतंदमः ॥ ३३१ ॥ स्यात्साहसं त्वन्वयवत्प्रसभंक
 र्मयत्कृतम् ॥ निरन्वयं भवेत्स्तेयं हत्वा पव्ययते च यत् ॥ ३३२
 ॥ यत्स्वेतान्युपहृतानि द्रव्याणि स्तेनयेन्नरः ॥ तमाद्यं दंड
 येद्राजायश्चाग्निचौरयेद्ब्रह्मात् ॥ ३३३ ॥ येन येन यथांगेन
 स्तेनो न्ययुविचेष्टते ॥ तत्तदेव हरेत्तस्य प्रत्यादेशाय पार्थिवः ॥
 ३३४ ॥ पिताचार्यः सुहृन्माताभार्या पुत्रः पुरोहितः ॥ नाद-
 राड्यो नाम राज्ञोऽस्तियः स्वधर्मनतिष्ठति ॥ ३३५ ॥ कार्या-
 परां भवेद्दराड्यो यत्रान्यः प्राकृतोजनः ॥ तत्र राजा भवेद्दंड्यः
 सहस्रमितिधारणा ॥ ३३६ ॥

۱۰۱- صاف و مفانیہ و ساگ ٹمول و پھل انھون میں سے کسی ایک چیز کے چور انہیں چورانیوا
 اگر مالک کا رشتہ دار ہو یعنی مہوینی مہوینی وغیرہ رشتہ رکھتا ہو تو پچاس پن ڈنڈ اور اگر رشتہ اور نسبت
 نہ رکھتا ہو تو سو پن ڈنڈ دیوے۔

۱۰۲- مالک کے دیکھتے ہوئے زبردستی سے چیز کو لیجاوے اور وقت ہتھار کے
 لینے سے انکار کرے تو وہ بھی چور کہلاتا ہے۔

۱۰۳- چور آدمی دوسری چیز کو چور کیا اگر بیوتر کے مقام سے اگر بیوتر کی گن کو اور گھڑی لگ چور
 وہ پچاس پن ڈنڈ پاوے اور اگر بیستھاپن میں جو کچھ خراج ہو وہ گن مالک گن کو دیوے۔

۱۰۴- جس جس عرصے سے دوسری چیز کو چور اوے اس عرصے کو قطع کرنا چاہی تاکہ پھر ایسا کام نہ کرے۔

۱۰۵- راجہ کے نزدیک کوئی آدمی ایسا نہیں کہ وہ بحالت مجرئی قابل سزا دہی ہو بلکہ مان و باپ
 و آچاریج و دوست و رفیق و فرزند و پرہت سب اپنے و عوم میں قائل ہوں تو لائق سزا دینے کے ہیں۔

۱۰۶- جس جرم میں سواراچ کے اور آدمی کا رشتہ پن ڈنڈ کے لائق ہو پن اس جرم میں اچ
 ہر تین ڈنڈ کے لائق ہوتا ہے۔

गोषु ब्राह्मणसंस्था सुहृदिकायाश्च भेदने ॥ पशूनां हारो चैव
 सद्यः कार्योऽर्धपादिकः ॥ ३२५ ॥ सूत्रकार्यासकिरावा-
 नांगो मयस्य गुडस्य च ॥ दधः क्षीरस्य च फ्रस्य पानीयस्य त-
 रास्य च ॥ ३२६ ॥ वेरागु वैदलभाराडानां लवणानां तथैव च ॥
 मृन्मयानां च हारो मृदो भस्मनयव च ॥ ३२७ ॥ मत्स्यानां पक्षि-
 गां चैव तैलस्य च घृतस्य च ॥ मांसस्य मधुनश्चैव यच्चान्यत्पशु-
 सम्भवम् ॥ ३२८ ॥ अन्येषां चैव मादीनामद्यानां मोदकस्य च
 ॥ पक्वान्नानां च सर्वेषां तन्मूल्या हि गुरादमः ॥ ३२९ ॥ पुष्पे
 सु हरिते धान्ये गुल्मवह्नी न गेषु च ॥ अन्येष्वपरिपूतेषु दराड-
 स्यात्पंचकषालः ॥ ३३० ॥

۳۲۵۔ براہمن کی گتو چھین لینے اور سواری کے واسطے یا نجہ گتو کی تاک چھیننے اور کبرا
 وغیرہ اور غیرہ کیلئے کے لائق چار پائیوں کے چورانے میں آدھا پائون فوراً کاٹنا چاہیے
 ۳۲۶۔ اور نانام سوت اور کپاس کا سوت اور مہوا اور گوہر اور گڑ اور دی اور دوہا اور بیجا
 اور جل اور ترل لینے گھاس وغیرہ۔

۳۲۷۔ اور بالنس کے ٹکڑے کا بنا ہوا پانی کا برتن اور مٹی کا برتن دھٹی ورا کھ و نک۔
 ۳۲۸۔ دیکھی و پرند و تیل و گھی و گوشت و شراب و قسم مرگ چرم و شاخ و گوزن وغیرہ۔
 ۳۲۹۔ اسی قسم کی اور جو چیزیں ہیں وال و بھات و لہو وغیرہ پکوان انہیں ہستے کی ایک
 چیز کے چورے میں اسکی قیمت سے دو چنڈ تا دان دیوے۔

۳۳۰۔ پھولے ہوئے کھیت میں قائم سنبہرہ دھانیہ اور مع پوست گم لتا و دخت اور ایک لہی
 کے لیجا نیلے لائق دھانیہ انہیں سے کسی چیز کے پورا نہیں ملک وقت کو دیکھ کر ایک ماشہ تا
 یا چانزی تا دان دیوے۔

धान्यं दशम्यः कुम्भो म्यो हरतोऽभ्यधिकं बधः ॥ शेषे प्येकादशगु-
 रां दशम्यस्तस्य च तद्वनम् ॥ ३२० ॥ तथा धरिममेयानां शतादभ्य-
 धिके बधः ॥ सुवर्गा रजतादीनामुत्तमानां च वाससाम् ॥ ३२१
 ॥ पंचाशतस्त्वभ्यधिके हस्तच्छेदनमिष्यते ॥ शेषे त्वेकादश
 गुणां शूल्यादराडं प्रकल्पयेत् ॥ ३२२ ॥ पुरुषाणां कुलीनानां
 नारीणां च विशेषतः ॥ सुख्यानां चैव रत्नानां हरसो बधमर्ह-
 ति ॥ ३२३ ॥ महापशूनां हरसो शस्त्राणामोषधस्य च ॥ का-
 लमासाद्यकार्यं च दशदं राजा प्रकल्पयेत् ॥ ३२४ ॥

۳۰-۳۱۔ ویش کنبھ سے زیادہ غلہ چور کو تو اسکو سزا بدنی دینا مگر چور مالک مال کی حیثیت
 دیکھ کر تنبیہ و قطع اعضا و قتل کی سزاؤں کو دنیا چاہتا اگر اس مقدار سے کم چور اسے تو مال سرقہ
 کا گیارہ گنا تاوان دینا چاہئے اور شے سرقہ تو مالک پاوے۔

۳۲-۳۳۔ سونا، چاندی، دھب، ستران، سہون کو سو گندے سے اوپر چور انہوں کو قتل کرنا چاہئے
 سزا کا حکم اخیر لکھ زمانہ و چور مالک کی قومیت و حیثیت دیکھ کر دنیا چاہئے اس طرح اشلوک نمبر ۱۰
 میں بھی جانا۔

۳۴-۳۵۔ اگر شہیاد مرقومہ بالا چور سو گندے سے اوپر اور سو گندے کے اندر ہو تو اسے چور نے
 میں ہاتھ کاٹنا اور پیاس گندے کے نیچے جتنا ہوا اسکا گیارہ گنا تاوان دیکو۔
 ۳۶-۳۷۔ خاندانی آدمی یا بڑے خاندان کی عورت یا عمدہ جواہر ہون میں سے کسی ایک
 چیز کے چور نے یا غائب کر دینے میں قتل کرنا۔

۳۸-۳۹۔ ہاتھی گھوڑا بھینس گمو سہیاد اور وہ ان سہیون میں سے کسی ایک کے چور نے میں قتل
 وغیرہ زمانہ و مطلب کو دیکھ کر تنبیہ و قطع اعضا و قتل کی سزا راجہ دیوے۔

۴۰۔ گندے پیسے کے وزن کو درون کہتے ہیں اور ۲۰ درون کا ایک کنبھ کہلاتا ہے۔

راجا ستنے نغان گنت بھو سکت کھشن دھاوت ॥ آچ سارون ت-
 تے ی مے و کرم سمشا دھما ॥ ۳۱۴ ॥ سکنی نا دھ ی سکت-
 ل یو ڈن واپ سوار س ॥ شکتی و بھ ی ت سکی سنا مایا س دھ مے-
 و ۳۱۵ ॥ شاسنا دھ ی موی سنا دھ ستن: سکیا دھ ی سکت ॥
 آشا سکتا ت ت راجا ستن سنا پری نیک لیکھ ی ۳۱۶ ॥ آنا
 دھ ی راجا مایا دھ ی مایا دھ ی مایا دھ ی مایا دھ ی مایا دھ ی
 ستن راجا نیک لیکھ ی ۳۱۷ ॥ راجا نیک لیکھ ی سکتا ت-
 ی مایا دھ ی مایا دھ ی مایا دھ ی مایا دھ ی مایا دھ ی
 ی ۳۱۸ ॥ ی سکتا ت ی مایا دھ ی مایا دھ ی مایا دھ ی مایا دھ ی
 راجا دھ ی مایا دھ ی مایا دھ ی مایا دھ ی مایا دھ ی ۳۱۹ ॥

۳۱۴۔ برہمن کا دھن ماشہ سونا وغیرہ چورانی دالا آپسے چونی کو کھول کر دوڑ کر راجا کے
 روبرو جا کر۔
 ۳۱۵۔ موئل یا کھیر کی لائٹی یا دونوں طرف سے تیز برچی یا لوہے کا ڈنڈا کھینچ کر
 کھینچ کر ایسا کام کر نیوالا مین ہون مجھ کو سنا دیجیے۔
 ۳۱۶۔ راجا اسکو سنا دے یا چھوڑ دے تو وہ مجرم چوری کے پاپ سے چھوٹ جا اور اگر
 اسکو رحم سے سنا نہ دیوے تو چور کے پاپ کو پاوے۔
 ۳۱۷۔ استقاط حمل کر نیوالا دھن عورت و چیل دیگی کر نیوالا دھن یہ سب پاپ کو سکتا
 بھوجن دینے والے و شہر و گرو و راجا دھن مین دھوتے ہیں۔
 ۳۱۸۔ جط مین کر نیو سکت مین چھین سطح پاپ کر نیو لے جس سے سنا یا کر ایک دھن کر سکت مین چھین
 ۳۱۹۔ کونین سترشی اور گھڑا چورانیوالا دھن سالہ کو کر نیوالا ایک ماشہ سونا تادان دھن
 اور گھڑے اور سترشی کو کونین پر رکھ دیوے۔

अरक्षितारं राजानं बलिषड्भागहारिराम् ॥ तमाहुः सर्वलोक
स्य समग्रमलहारकम् ॥ ३०८ ॥ अनपेक्षितमर्यादं नास्तिकं
विप्रलुम्बकम् ॥ अरक्षितारमतारं नृपं विद्यादधोगतिम् ३०९
॥ अधार्मिकं त्रिभिर्न्याये निपुल्लीयात्प्रयत्नतः ॥ निरोधनेन
बन्धेन विविधेन बन्धेन च ॥ ३१० ॥ निग्रहे राहिया पानां साधू-
नां संग्रहे राच ॥ द्विजातयश्चेज्याभिः पूयन्ते सततं नृपाः ॥
३११ ॥ क्षत्तव्यं प्रभुनानित्यं सिपतां कार्थिराणां नृणाम् ॥ बा-
लवद्भ्रातुराणां च कुर्वता हितमात्मनः ॥ ३१२ ॥ यः क्षिप्तो म-
र्षयत्यात्तैस्तेन स्यर्गे महीयते ॥ यस्त्वैश्वर्यान्ममते नरकं ते
न गच्छति ॥ ३१३ ॥

۳۰۸- جو راجہ رعیت کی حفاظت نہیں کرتا اور رعیت سے اپنا حصہ لینے محض لیتا ہے۔
وہ تمام آلاش و آخور کو لیتا ہے۔

۳۰۹- مر جاؤ کو چھوڑنے والا اور ماسک (یعنی پر لوک کو نہ ماننے والا) اور کوٹنے والا اور
رعیت کی حفاظت نہ کرنے اپنا محض لینے والا جو راجہ یہ وہ ترک میں جاتا ہے۔

۳۱۰- روکنا اور باندھنا اور انواع اقسام کی سزا سے بدنی دنیا ان تینوں سزاؤں کو بولے
تذبیہ نیک مجرموں کو سزا دیوے۔

۳۱۱- مجرموں کو سزا دینے اور سادھ مہاتماؤں کی حفاظت اور یکجہ کرنے سے راجہ مانتہ
برہمن و کشتری و دیشیہ کے پاک ہوتا ہے۔

۳۱۲- اپنا بھلا چاہنے والا آدمی سعی و دعا علیہ اور پاک اور بڑھے اور دکھی آدمیوں کی
باتوں کی برداشت کرے جو کہ رنج کی حالت میں کہتے ہوں۔

۳۱۳- مصیبت زدہ کی نالائقی باتوں کو نہ برداشت کرتا ہے وہ سوگ میں غمت پاتا
اور جو حکومت کی خیال سے برداشت نہیں کرتا وہ ترک میں جاتا ہے۔

परमं यत्नमातिष्ठेत्तेनानां निग्रहे नृपः ॥ स्तेनानां निग्रहादस्य
 यशोराष्ट्रं च वर्द्धते ॥ ३०२ ॥ अभयस्य हियो दाता स पूज्यः सततं
 नृपः ॥ सत्रं हिवर्द्धते तस्य सदैव अभयदक्षिराम् ॥ ३०३ ॥ सर्वतो
 धर्मवद्भागो राज्ञो भवति रक्षतः ॥ अधर्मादपि षड्भागो भ-
 वत्यस्य ह्यरक्षतः ॥ ३०४ ॥ यदधीते यच्च जते यद्दाति यदर्चति
 ॥ तस्य षड्भागभागजा सम्यग्भवति रक्षणात् ॥ ३०५ ॥ रक्ष-
 न्धर्मो राभूतानिराजा वध्यांश्च घातयन् ॥ यजते ऽहरहर् यज्ञैः
 सहस्रशतदक्षिणैः ॥ ३०६ ॥ यो ऽरक्षन्बलिमादत्ते करशुल्कं
 च यार्थिवः ॥ प्रतिभागं च दराडं च स सद्यो नरकं व्रजेत् ॥ ३०७

۳۰۲۔ چورون کو سزا دینے میں بڑی تدبیر کرے اس سے راجہ کایش (سیکنا می)

اور راج ترقی پاتا ہے۔

۳۰۳۔ رعیت کو بیخوف کرنا والا راجہ ہر ایک وقت پر لائق تعظیم ہوتا ہے اور ہمیشہ اس راجہ
 کی بیخوف دشتا والی یگیہ بڑھتی ہے۔

۳۰۴۔ چاروں طرف سے رعیت کی حفاظت کرنے سے رعیت کے وھرم کا چھوٹا حصہ
 راجہ پاتا ہے اور حفاظت نہ کرنے سے اس کے وھرم کا چھوٹا حصہ پاتا ہے۔

۳۰۵۔ رعیت کی حفاظت کر نیے رعیت کے لئے ہونے پاٹھ دیگیہ وان دو چاکے
 چھوٹا حصہ کو راجہ پاتا ہے۔

۳۰۶۔ وھرم سے سب جانداروں کی حفاظت کرتا ہوا اور قطع اعضا خواہ قتل کے لائق
 مجرموں کو سزا دینا ہوا راجہ لاکھ دشتا والی یگیہ کو ہر روز کرتا ہے۔

۳۰۷۔ جو راجہ بدون حفاظت کرنے رعیت کے رعایا سے محسولات وغیرہ لیتا ہے وہ راجہ
 جلد نرک میں جاتا ہے

۱۰۔ سب مار پیٹ کے جرموں کی تیقح کو بیان کیا اسکے بعد چور کی سزا دہی طریق کو بیان کرتے۔

دھنے چے و یں تراں یو کتر سسوی ستیے و چ ॥ آکھنے چا پئی
 ہی تین دھڑم تھوڑی ۥ ۲۵۲ ॥ ی پ پ ورتتے یو یں وے رات
 تاج کس تھ ॥ ت ت سوا می م وے دھڑم ہینسا یں دھیش ت ت م
 م ॥ ۲۵۳ ॥ پاج ک سھ دھڑم : پاج ک دھڑم ہینسا ۥ یو
 گھ سٹھا : پاج ک سٹھا سہ دھڑم : شات شات م ॥ ۲۵۴ ॥ س
 چے چ پ یں سٹھ : ی ی م یں و یں نوا ॥ پ م پ یں تھ ت
 ست ت دھڑم : و یں : ۥ ۲۵۵ ॥

۲۵۲۔ ہڈھنے کا چڑا چار پائیہ کے گلے کی رسی کوڑا یہ سب ٹوٹ گئے یوں اور آواز بند
 سار تھی (یعنی رتھ ہانکنے والا) نے پکارا ہو کہ ہٹ جاؤ تو رتھی دسار تھی مالک رتھ نہیں
 کی کو ڈھڑم دینا چاہیے۔

۲۵۳۔ جس مقام پر رتھ سار تھی کے تصور سے جیسا چلنا چاہیے ویسا نہیں چلتا اور اس
 چال سے کوئی مر گیا ہے تو اس مقام پر بدون سیکھ ہوئے سار تھی کو رتھ پر نوکر ہونے سے
 مالک رتھ کا دوسوین دھڑ دیوے۔

۲۵۴۔ سار تھی رتھ ہانکنے میں ہوشیار ہو اور رتھ سے کوئی مر گیا ہو تو سٹھین دھڑ سار تھی
 دیوے سار تھی ہوشیار ہو اور رتھ سے کوئی مر گیا ہو تو بدون سیکھ ہوئے سار تھی کو رتھ پر مقرر
 کرنے سے مالک رتھ دسار تھی در رتھ کا سواریہ سب سٹھین دھڑ دیوے۔

۲۵۵۔ سار تھی کے روبرو دوسرا رتھ آیا خواہ بہت گنود غیرہ چار پائیہ روبرو آئے اور ٹھوڑی
 رتھ رک گیا اور سار تھی آپ رتھ کو پیچھے لیجانے کی قدرت نہیں رکھتا اور گھوڑے کو
 کوڑا مار کر آگے لیجاتا ہے اس میں کوئی مر گیا تو بچار کرنا سار تھی کو دھڑ دینا۔

सहासनमभिप्रेक्षुस्तत्त्वस्यावकाशजः ॥ कल्यांकतांकोनि-
 र्वास्यः स्फिचंवास्यावकर्तयेत् ॥ २८१ ॥ अवनिष्ठीवतोदर्प्या
 द्वावोद्योद्येदयेनृपः ॥ अवसूत्रयतोमेद्रमवशार्धयतोशुद्धम् ॥
 २८२ ॥ केशेषुगृह्णतोहस्तोद्येदविचारयन् ॥ पादयोर्द्वि-
 कायांचग्रीवायांचषरोषुच ॥ २८३ ॥ त्वग्मेदकः शतंरराड्यो
 लोहितस्यचदर्शकः ॥ मांसमेत्तातुषस्तिष्कान्प्रवास्यस्त्वस्थि-
 भेदकः ॥ २८४ ॥ वनस्पतीनांसर्वेषामुपमोगंयथायथा ॥ तथा
 तथादमः कार्योहिंसायामितिधारणा ॥ २८५ ॥ मनुष्याणां
 पशूनांचदुःखायप्रहृतेसति ॥ यथायथामहद्दुःखंरराडंकुर्यात्
 तथातथा ॥ २८६ ॥

۳۸۱- چھوٹا آدمی بڑے آدمی کے ساتھ ایک آسن پر بیٹھے تو اسکی کمر میں نشان کر کے نکال
 دیوے خواہ اس طرح اسکے پتھر کو کاٹ دے کہ وہ مرنے نہ پاوے۔

۳۸۲- غور سے بدن پر تھوک کے تو دونوں ہونٹھ چھید ڈالے اور پیشاب کرے تو عقنوساں کو
 کاٹ ڈالے اور براز کرے تو مقعد کاٹ ڈالے۔

۳۸۳- جو شودر برائے کے بال و پائون و دھارنی و گلا و فوط کو غور سے پکڑنیوالا اسکا
 ہاتھ کاٹنا چاہئے یہ نہ خیال کرنا چاہئے کہ اسکو تکلیف ہوگی۔

۳۸۴- جلد بدن کو چھیدنے والا خون نکالنے والا یہ دونوں سوین و ڈنڈ پاوین اور گوشت
 بدن کو علیحدہ کر نیوالا چھوٹا شک و ڈنڈ کو پاوہ اسخوان بدن کو چھیدنیوالا ویش سے نکالا جاوے
 یہ وڈمکیان ذات میں جانتا چاہئے۔

۳۸۵- تمام درختوں کا جیسا لقرن کرے ویسا دیا و ڈنڈ پاوے مارنے میں ویسا ہی
 جانتا یہ شستر کا حکم ہے۔

۳۸۶- آدمی و چارپایہ انھوں کو جیسا جیسا دیکھو ویسا دیا و ڈنڈ پاوے۔

ماतरं پیت رं جا یاں برا ت ر ت ن یں گ ر س م ॥ آ س ا ر ی ا ج ت ر ت ر ی ی :
 پ ن تھ ا ن و ا د د ر گ ر و : ॥ ۲۹۵ ॥ ب ر ا ہ ر ا س ت ر ی ا م ی ا ت د ر ا ڈ : کا
 ر ی و چ ج ا ن ت ا ॥ ب ر ا ہ ر ا س ا ہ س : پ و ر ب : س ت ر ی ی ل و ب م م ی م : ॥
 ۲۹۶ ॥ و ی د ش د ی و ر ی و م ی و س و ج ا ت یں پ ر ت ی ت ل و ت : ॥ ج و د و ر ج پ ر ا
 ی ن د ر ا ڈ س ی ت ی و ی ن ی ش ی ی : ॥ ۲۹۷ ॥ ر ی د ر ا ڈ و ی د ی : پ ر و ت و
 و ا ل ی ا ر و ی ی س ی ت ل و ت : ॥ ا ت ر و ی پ ر و ی ی م ی د ر ا ڈ ی ا ر و ی
 م ی ر ا ی ی م ॥ ۲۹۸ ॥ ی ن ک ی ن چ ی د ر گ ی ن ہ ی س ی ا ج و ج و م ن ی ج : ॥
 ج و ت ل و ی ت ت د و ا س ی ت ل و ت ن ی ر ل و ش ا س ن م ॥ ۲۹۹ ॥ ی ا ر ی ا م ی د
 م ی د ر ا ڈ و ا ی ا ر ی ج و د ن م ر ہ ت ی ॥ ی ا د ی ن پ ر ہ ر ک و ی ا ت ی ا د ج و
 د ن م ر ہ ت ی ॥ ۳۰۰ ॥

۲۹۵۔ مانتا پتا استری بھائی بیٹا گروان سب کو اگر ایسا کہے کہ تم پاتکی ہو اور گرو کو راہ نیکو
 تو ستوپن ڈنڈ دیوے۔

۲۹۶۔ برہمن کو کشتری یا کشتری کو برہمن کہلاتے تھارت آمیز بادار بلند کو تو برہمن کو
 پوربہس ڈنڈ اور کشتری کو مدیم سامس ڈنڈ دیوے۔

۲۹۷۔ اسی طرح ویشیہ اور شودر میں بھی اپنی ذات میں سوا زبان میں سوراخ کرنے کے
 باقی سب ڈنڈ جانتا یہ شاستر کا حکم ہے۔

۲۹۸۔ سخت گفتاری کی سزاؤں کا بیان کیا اسکے بعد مار پیٹ کی سزاؤں کا طریق کہتے ہیں کہ

۲۹۹۔ چاندل وغیرہ جس عضو سے بڑے آدمیوں کے عضو پر ضرب کرے اس عضو کو کاٹ ڈالنا
 یہی من جی کا حکم ہے۔

۳۰۰۔ ہاتھ کے کھرب سے مارے تو ہاتھ کاٹنا چاہیے پاتوں کے ضرب سے مارے تو پانوں
 کاٹنا چاہیے۔

समवर्गो द्विजातीनां द्वादशैव व्यतिक्रमे ॥ वारेष्ववचनीयेषु त-
देवद्विगुरां भवेत् ॥ २६६ ॥ सकजातिर्द्विजातींस्तु वाचादासुरा-
याक्षिपन् ॥ जिह्वायाः प्राप्नुयाच्छेदं जन्यप्रभवो हिमः ॥ २७०
॥ नामजातिग्रहं त्वेषामभिज्ञो हेराकुर्वतः ॥ निक्षेप्योऽथो मय-
शंकुर्ज्वलनास्येदशांगुलः ॥ २७१ ॥ धर्मोपदेशं दर्पेणा वि-
प्रारणामस्य कुर्वतः ॥ तत्र मासे च ये तैलं वक्त्रे श्रोत्रे च पार्थिवः
॥ २७२ ॥ श्रुतं देशं च जातिं च कर्म शरीरमेव च ॥ वितथेन ब्रुवन्
प्याद्वाप्यः स्याद्द्विशतं दमम् ॥ २७३ ॥ कारां वाप्यथ वास्वजम-
न्यं वापितथाविधम् ॥ तथ्येनापि ब्रुवन्दाप्योदराडं कार्याय-
गावरम् ॥ २७४ ॥

۲۶۹۔ مہموم میں سخت گفتاری مرقومہ بالا کے کرنے سے بارہ پن اور جو بات کہنے کے لائق
ہیں ہے اس کے کہنے سے جو میں پن ڈنڈ ہوتا ہے۔
۲۷۰۔ اگر شودر برہمن یا گشتری یا ویشیہ سے سخت زبانی کرے تو اس کی زبان میں سو باخ
کیا جائے کیونکہ وہ عفو حقیر سے لینے پانوں سے پیدا ہوا۔
۲۷۱۔ جو شودر دارے تو فلاںے برہمن سے بچ (ایسا باوا بلند برہمن وغیرہ کے نام اور
ذات کو کے تو اس کے منہ میں بارہ انگل کی سیخ آہنی جلتی ہوئی ڈالنا چاہئے۔
۲۷۲۔ جو شودر برہمن کو غور سے دھرم کا پندیش کرے تو اس کے منہ اور کان میں گرم
تیل راجہ ڈالے۔
۲۷۳۔ ایک بیان ذات میں ڈنڈ کہتے ہیں کہ جو شخص کسی غور سے کہے کہ تمہارا بیٹا نہیں ہے تم اس ملک میں پیدا
ہو تمہارا یہ ذات نہیں ہے تمہارا جینو وغیرہ نہیں ہو (ایسا غور سے کہنے والا ڈنڈوں میں ڈنڈ دیوے۔
۲۷۴۔ جو کانیا لنگرہ اس کو راستی سے بھی کانیا لنگرہ نہ کہنا چاہئے اور جو کبھی کہے تو ایک
کارشاپن ڈنڈ دیوے۔

سامانتاश्चेन्मृषाब्रूयुःसेतौविवदतान्तराम्॥ सर्वेष्टथकृष्टथ-
 ग्दराड्यारानामध्यमसाहसम्॥ २६३॥ गृहंतडागमारामंक्षे-
 त्रंवाभीषयाहरन्॥ शतानिपंचदराड्यःस्यादज्ञानाद्विशतो-
 दमः॥ २६४॥ सीमायामभियह्यायांस्वयंराजैवधर्मवित्॥
 प्रदिशेद्भूमिमेतेयानुपकाररितिस्थितिः॥ २६५॥ सवोऽस्मि-
 लेनाभिहितो धर्मःसीमाविनिर्णये॥ अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि
 वाक्पारुष्यविनिर्णयम्॥ २६६॥ शतं ब्राह्मणामाशुशयस-
 त्रियोदराडमर्हति॥ वैश्योऽप्यर्धशतं देवाश्च द्रुस्तु वधमर्हति॥
 २६७॥ पंचाशद्ब्राह्मणोदराड्यः सत्रियस्याभि शंसने॥ वैश्ये
 स्यार्धपंचाशच्छूद्रैश्चादशकोदमः॥ २६८॥

۲۶۳- گانون والے جھوٹھے بولین تو راجہ ایک ایک کو مدھیم ساہس ڈنڈ دیوے۔
 ۲۶۴- گھر تالاب باغیچہ کھیت ان سب کو خون و کھاکر چھین لینے والے کو پانسون ڈنڈ دیوے اور اکیان سے چھین لینے والے کو دو ستون ڈنڈ دیوے۔
 ۲۶۵- نشان و گواہ وغیرہ مرقومہ بالا کے نمونے میں دھرم جاننے والا راجہ اس شخص کو زمین دیوے جب کاس زمین کے پالے سے بہت اچکا رہتا ہو یہ شاستری مرحا دیوے۔
 ۲۶۶- پست پیچین حدود کی کمی گتین اسکے بوجھت گفتاری کے جرم اور سزا کی تیغ کرینگے۔
 ۲۶۷- اگر کشتری کسی برہمن کو چور کے تو ستون ڈنڈ دیوے اور اگر ویشیہ ایسی بات کہے تو ڈیڑھ یا دو ستون ڈنڈ دیوے اور اگر شودر ایسی بات کہے تو قطع عضو کے لائق ہے۔
 ۲۶۸- اگر برہمن سخت بات مرقومہ بالا (لینے چور) کشتری کو کہے تو پچاس ڈنڈ دیوے ویشیہ کو کہے تو پچیس پن ڈنڈ دیوے شودر کو کہے تو بارہ پن ڈنڈ دیوے۔

साक्ष्यभावे तु च त्वारोग्रामाः सामन्तवासिनः ॥ सीमाविनिर्णायं कुर्युः प्रयताराजसन्निधौ ॥ २५८ ॥ सामन्तानामभावे तु मौलानां सीमां निसाक्षिरागाम् ॥ इमानप्यनुयुज्जीतपुरुषान्वनगोचरान् ॥ २५९ ॥ व्याधाच्छाकुनिकानोपान्क्तेवर्तान्मूलखानकान् ॥ व्यालगाहानुच्छृत्तीनन्यांश्च वनचारिराः ॥ २६० ॥ तेष्वष्टास्तु यथा ब्रूयुः सीमासन्धिषु लक्षरागम् ॥ तत्तथास्थापयेद्वाजाधर्मैराग्रामयोर्द्वयोः ॥ २६१ ॥ क्षेत्रकूपतडागानामागमस्य गृहस्य च ॥ सामन्तप्रत्ययोज्ञेयः सीमासेतुविनिर्णयः ॥ २६२ ॥

۲۵۸- گواہ بھی نہ ملین تو گانوں کے چارو طرف کے رہنے والوں میں سے چار آدمی ٹکیہ تدبیر سے راجہ کے ردیروحد کی تیقح کرن۔

۲۵۹- گانوں کے رہنے والے بھی نہ ملین تو جو لوگ اور آبادی گانوں سے پشت و پشت اسی گانوں کے رہنے والے بھی نہ ملین تو جو لوگ اور آبادی گانوں سے پشت و پشت اسی گانوں کے رہنے والے ہوں ان سے تیقح حدود کرانا چاہئے یہ بھی نہ ملین یا تیقح نہ کر سکیں تو جنگل کے رہنے والوں کو تیقح کے واسطے حکم دینا چاہئے۔

۲۶۰- شکاری اور پرند پکڑنے والے اور گنہ گرانہ والے و بھلی بچے سے اوقات گزیرنے کے دیکھ کر ہرگز دے دے دسانپ پکڑنے والے و انچھ سے اوقات گزیرنے والے جنگل کے رہنے والے یہ سب اپنے مطلب کے استحقاق اس گانوں سے ہر وقت جنگل کو جاتے ہوئے اس گانوں کی حد کو جاننے والے ہوتے ہیں۔

۲۶۱- وقت استفسار کے یہ سب جیسا نشان حد کا بیان کریں اسی طرح راجہ و حرم سے دونوں گانوں کی حدود قائم کرے۔

۲۶۲- کھیت۔ کنواں۔ تالاب یا غنچہ گھران سبھوں کی حد کی تیقح گانوں والوں کے بیان سے جانا چاہئے۔

एतैर्लिङ्गैर्नयेत्सीमां राजा विवदमानयोः ॥ पूर्वभुक्त्वा च स तत्
सुदकस्यागमेन च ॥ २५२ ॥ यदि संशय एव स्यात्लिङ्गानाम-
पि दर्शने ॥ साक्षिप्रत्यय एव स्यात्सीमादादविनिर्णायः ॥ २५३ ॥
ग्रामीयककुलानां च समक्षं सीम्नि साक्षिराः ॥ प्रष्टव्याः सी-
मलिङ्गानितयोश्चैव विवादिनोः ॥ २५४ ॥ तेषु ह्यस्तु यथा भू-
युः समस्ताः सीम्नि निश्चयम् ॥ निवधीयात्तथा सीमां सर्वा-
स्तांश्चैव नामतः ॥ २५५ ॥ शिरोभिस्तेष्टहीत्वोर्दीप्त्वा गिराणो
रुक्तवाससः ॥ सुकृतैः शायिताः स्तैस्त्वेर्नयेद्युक्ते समञ्जसम् ॥
२५६ ॥ यथोक्तेन नयन्तस्ते पूयन्ते सत्यसाक्षिराः ॥ वियरीतं
नयन्तस्तुराण्याः स्युर्द्विशतं दमम् ॥ २५७ ॥

۲۵۲۔ یہ سب نشانات اور زمانہ ماضی میں قبضہ و تصرف اور نالہ وغیرہ پانی کا راستہ ان کے وسیلے سے راجہ حدود کی تہتیم و تصفیہ کرے۔

۴۵۴۔ جب نشان کے ویکھیں میں شک ہو تب گواہوں کے بیانات سے متنازع حدود کی تفریح و تصفیہ کرے۔

۲۵۴۔ گانوں کے آدمیوں اور فریقین کے رو برو گواہوں کی نشانات حدود پوچھنا چاہئے۔
۲۵۵۔ دس سب ایک صلاح ہو کر جیسا تقضیہ کریں سطح حد بندی کرے اور ان سب گواہوں کا نام بھی تقضیہ حدود کے کاغذ پر لکھے۔

۲۵۶- دے سب گواہ پھولوں کی مالا اور لال کپڑے پہنکر شہر پریشی کا ڈھیلدار رکھکراور تہقہ
کرنوالے سے ایسا کلام دکر نشان و روع و کھلاؤ گئے تو تمھارا پیٹہ جاتا رہیگا انکرجون کا
تیون حدکی تہقہ کرن۔

۴۵۷۔ واجبی پہنچ کر ہیں تو پوجہ راست بیانی کے پاک ہو جاتے ہیں اور غلط متقیقہ کریں
 نوہر ایک دو تلوین تاوان دیوے۔

सीमावसांश्चकुर्वीतन्यग्रीधाश्वत्यकिंश्चकान्॥शाल्मली
 त्वालतालांश्चसीरिराश्वैवपादपान्॥२४६॥शुल्मान्वेरां-
 श्विविविधाञ्चमीवह्रीस्थलानिच॥शरान्कुञ्जकशुल्मांश्च
 तथासीमाननश्यति॥२४७॥तडागान्युदपानानिवायःप्र-
 श्वरानानिच॥सीमासन्धियुकार्याणिदेवतायतनानिच॥
 २४८॥उपच्छन्नानिचान्यानिसीमालिंगानिकारयेत्॥सी-
 माज्ञानेन्दरांवीक्ष्यनित्यंलोकेविपर्ययम्॥२४९॥अश्व-
 नोऽस्थीनिगोवालांस्तुषाभस्मकपालिकाः॥करीषमिश्र-
 कांगाराञ्चर्कराबालुकास्तथा॥२५०॥यानिचैवंप्रकारा-
 णिकालाद्भूमिर्नभक्षयेत्॥तानिसन्धियुसीमायामप्रका-
 शानिकारयेत्॥२५१॥

۲۴۷۔ برگرد۔ پیل۔ ڈھانک۔ سنبھل۔ شال۔ تال۔ شیر۔ دار۔ درخت۔ زمین۔ کسی ایک کو حد کے
 درمیان میں لگانا چاہیے۔

۲۴۸۔ جھاڑی۔ دبالش۔ دانوں۔ اقسام کے کم و زیادہ کیلئے۔ درخت اور اونچی زمین اور میرٹھی
 جھاڑی زمین سے کسی ایک کو حد کے درمیان لگانا چاہیے۔ اس سے حد کا نشان ملتا ہے۔
 ۲۴۹۔ تالاب۔ چاہ۔ دباولی۔ دھیرنا۔ دیو۔ استھان۔ زمین سے کسی کو حد و دیو کی پینڈ میں
 قائم کرنا چاہیے۔

۲۴۹۔ حدود کی پیمائش میں آدمیوں کو اولٹ پلٹ دیکھ کر اور بھی پوشیدہ نشانات قائم کرنا چاہئے
 ۲۵۰۔ پتھر۔ بڑی۔ ٹیگوں کے بال۔ بھوسہ۔ راکھ۔ ٹھکرا۔ کرسی۔ اینٹ۔ کوئلہ۔ کھیر۔ بالو۔
 ۲۵۱۔ جگہ بیت دن زمین نہ کھائے اسی جو چیزیں ہیں ان سب کو حد کے اندر رکھنا چاہئے۔
 پوشیدہ نشانات ہیں۔

अजाविकेतुसंरुद्धैवकैःपालेवनायति ॥ यांप्रसह्यचकोह-
न्यात्पालेतत्किल्बिषंभवेत् ॥ २३५ ॥ तासांचेद्वरुद्धानांचर-
त्तीनांमिथोवने ॥ यामुत्सुत्यचकोहन्यान्नपालस्तत्रकिल्बि-
षी ॥ २३६ ॥ धनुशतंपरीहारोग्रामस्यस्यात्ममन्ततः ॥ शम्या-
पातास्त्रयोवापित्रिगुराणोग्रामस्यतु ॥ २३७ ॥ तत्रापरिहतं
धान्यंविहिंस्युःपशवोयदि ॥ नतत्रप्ररायेद्वराडंनृपतिःप-
शुरक्षिरागाम ॥ २३८ ॥ हन्तिंतत्रनकुर्वीतयामुद्घोनविलोकये-
त् ॥ छिद्रंचवारयेत्सर्वंश्वसूकरमुखानुगम ॥ २३९ ॥ यथि-
क्षेत्रेपरिहतेग्रामन्तीयेऽथवापुनः ॥ सपालःशतद्वराडाहो-
विपालान्वासयेत्यश्न ॥ २४० ॥

۲۳۵۔ بکری یا بھیری کو بھیڑ پانے گھیرا اور اُسوقت نہیں آیا اور زیر دستی سے بھیڑنے
نے بکری یا بھیری کو مارا تو اہیر پالی ہوتا ہے۔

۲۳۶۔ اہیر کی حفاظت میں نہو کر جنگل میں چرتی ہوئی بکری یا بھیری کو شیر اچھلکا
تب اہیر کا دوش نہیں ہے۔

۲۳۷۔ گتوں کے چرنے کیونکہ اسطے گاؤں کے چاروں طرف تلواروں کا ہوش دہنی چاروں طرف تک زبردست
نکڑا یا ہاتھ سے لاٹھی پھینکا جان جا کر لاٹھی گرے اتنی زمین کی سہ چند زمین تک کھیتی نہ کرنا
اور شہر کے چاروں طرف زمین مرقومہ بالا کا سہ چند چھوڑنا۔

۲۳۸۔ ا۔ حاطہ نہ رکھنے والی غیر مزدور زمین کے روپر وجود دھانسیہ اسکو چار پائے پر یاد کر
تو راجہ اہیر کو سزا دی ہے۔

۲۳۹۔ حاطہ ایسا بناؤ کہ جبکہ اسٹیکہ کے تمام سوراخوں کو بند کر دیں گتھا سوا گتھا سہین جا سکی
۲۴۰۔ رستہ کے پاس کا کھیت یا گاؤں کے پاس کا کھیت حاطہ نہ رکھنا ہوا اس کھیت کی چیز کو چار پائے
نے پر یاد کیا ہو تو اہیر سٹوپن ڈیو دیو اور جس چار پائے کے ساتھ اہیر نہو اسکو اپنے کھیت سے نکال دی۔

دیوا و کت و پالیشا و تریو سوامی نیت کھڑے ॥ یوگ سہمے ۵ ن-
 یا چہ تپالو و کت و پالیشا ॥ ۲۳۰ ॥ گوپ: شیر سوتو ی-
 ستو سہو دھیا د شاتو ورام ॥ گو سوامی نیت سہو: سا سوامی
 لے ۵ سہو: ۱۱ ۲۳۱ ॥ ن سہو: ۱۱ ۲۳۱ ॥ ن سہو: ۱۱ ۲۳۱ ॥
 ت ۱۱ ۲۳۲ ॥ ہین پور و کارے پادشا تپال لکھتو ۱۱ ۲۳۲ ॥
 و ت ۱۱ ۲۳۳ ॥ یو: شیر سوتو ی-
 مین: سہو: ۱۱ ۲۳۳ ॥ کرم: شیر سوتو ی-
 یو: شیر سوتو ی-
 ۲۳۴ ॥

۲۳۰۔ دن میں گتو چرانے والے کے پاس گتو مفوضہ مالک کی حفاظت نہو سکے تو وہ گتو
 چرانے والا ملزم ہوتا ہے اور رات میں مالک کے گھر میں اسیر کی سپردگی ہوئی گاے کی طقت
 نہو سکے تو مالک ملزم ہوتا ہے اگر رات میں بھی اسیر کے گھر گتو رہے اور اسکی حفاظت نہو سکے
 تو اسیر ہی ملزم ہوتا ہے۔

۲۳۱۔ جس اسیر کی کچھ مزدوری مقرر نہیں ہوئی وہ مالک کی صلح سے دن گتو چراوے
 تو ایک اچھی گتو کا دو دھ لےوے۔

۲۳۲۔ جو گتو کم ہو جائے یا کپڑا اسکو کھاجا یا کتہ مارو لے یا شیر ہی زمین میں لگا یا اسیر سے
 علیحدہ ہو کر مر جائے تو اسکا مادان اسیر دیوے۔

۲۳۳۔ آواز دیکر جو رلیجائے تو اسکو اسیر نہ دیوے بشرطیکہ اسوقت مالک کو خبر کرے۔

۲۳۴۔ مرنے پر گتو کے اعضا کو مالک کو دکھلاوے اور گتو کا کان اور چہرہ اور بال بٹ
 دینی حصہ رگ زیر نافت، ان سب کو گتو کے مالک کو دیوے۔

अकन्येतितुयः कन्यां ब्रूयाद्देवे रामानवः ॥ सशतस्रांमुपाह
 रडंतस्यारोषमदर्शयन् ॥ २२५ ॥ पारिश्रहशिकामंत्राः -
 कन्यास्वेवप्रतिष्ठिताः ॥ नाकन्यासुक्कचिन्हरांलुप्रधर्म
 क्रियाहिताः ॥ २२६ ॥ पारिश्रहशिकामंत्रानियतं सरलस
 राम् ॥ तेषां निष्ठातु विज्ञेया विद्वद्भिः सप्तमे पदे ॥ २२७ ॥ य-
 स्मिन् यस्मिन् कृते कार्ये यस्येहानुशयो भवेत् ॥ तमनेन विधा
 नेन धर्मे पथि निवेशयेत् ॥ २२८ ॥ पशुषु स्वामिनां चैव पा-
 लानां च व्यतिक्रमे ॥ विचारं संप्रवक्ष्यामि यथा वद्वर्मा तत्त्व-
 तः ॥ २२९ ॥

۲۲۵۔ دشمنی سے کنیا کو با عیب کہے اور اس عیب کو ثابت نہ کرے تو ستوپن ڈنڈ دیوے۔

۲۲۶۔ وداہ کرنیکا منتر کنیا ہی کو کہا ہے اور جو کنیا یعنی با عیب ہے، اُسکی دھرم کر یا ٹوپ
 ہو جاتی ہے اسکو وداہ کا منتر نہیں ہے۔

۲۲۷۔ نیم کر کے وداہ کے منتری سے زوجہ کہلاتی ہے اُس زوجیت کی تکمیل ساتویں بھر
 (یعنی بھالور) میں ہوتی ہے وداہ میں منتر سے سات پھیرے مرد و عورت پھرتے ہیں ساتویں
 پھیرے میں وہ کنیا اس مرد کی زوجہ ہو جاتی ہے۔

۲۲۸۔ جو جو کام کرتے ہوئے صیکو منوس ہو اُسکو اس طریق سے دھرم کی راہ پر قائم
 کرے۔

۲۲۹۔ چو پایہ کے مالک اور اُس کے رکھنے والے اسپر وغیرہ انھوں کے جھگڑے کو
 جیون کاتیون دھرم سے کہینگے۔

یوگرامدیشسंधानां कृत्वासत्येनसंविदम्॥ विसंवदेन्नरोलोमा
 तंराष्ट्राद्विप्रवासयेत्॥ २१९॥ निष्ठुह्यदापयेच्चैनंसमयव्यभि-
 चारिराम्॥ चतुःसुवर्गान्वारिनिष्कांश्छत्तमानंचराजतम्
 ॥ २२०॥ सतहराडविधिकुर्याद्धार्मिकः प्रथिवीपतिः॥ ग्राम
 जातिसमूहेषुसमयव्यभिचारिराम्॥ २२१॥ क्रीत्वाविक्रीय
 वाकिंचिद्यस्येहानुशयोभवेत्॥ सोऽन्तरशाहात्तद्व्यंदद्याच्चै
 वादरीतच॥ २२२॥ परेणातुदशाहस्यनदद्यान्नापिदाययेत्॥
 आदहानोददच्चैवराजादराड्यःशतानिषद्॥ २२३॥ यस्तुदो-
 षवतींकन्यामनाख्यायप्रयच्छति॥ तस्यकुर्यान्नृपोदराडं
 स्वयंयसावर्तीपरान्॥ २२४॥

۲۱۹- جو آدمی گائون و ملک و علاقہ کی صلاح کو راستی سے کر کے بھر طمع سے اسکو بہین کرتا ہے
 اسکو راج سے باہر نکال دینا چاہیے۔

۲۲۰- پکڑ کر اس سے چار تہن چھہ فشک ایک ست مان (یعنی ۳۲۰ رتی) چاندنی تادلان
 لیوے اور یقین حصہ معاملہ کی خوردی و بزرگی پر منحصر کر کے ایک ایک کو یا سب کو لینا۔

۲۲۱- دھرماتاراج گرام جات کے سموہ میں صلاح چھہ رتے دالون کی اس ڈنڈ پر بھوکے

۲۲۲- کسی چیز کو مول لیکر یا فروخت کر کے کچھتا دے (یعنی کچھ اچھا نہ بیچا یا اچھا نہ مول لیا
 ایسا کہے) تو دس دن کے اندر پھر بھار کرے۔

۲۲۳- دس دن کے بعد پھر بھار بہین سوتا اور اگر کرے تو چھہ سوین ڈنڈ دیوے۔

۲۲۴- جو شخص عیب دار لڑکی کا عیب نہ لکھ کر اسکا دواہ کرے وہ چھیا نوے پن تادلان
 دیوے۔

यदिसंसाधयेत्तत्तुदर्पाब्धोभेनवायुनः॥ राज्ञादायःसुवर्गास्था-
 तस्यस्तेयस्यनिष्कृतिः॥ २१३॥ दत्तस्येवोदिताधर्म्याथवावद-
 नपक्रिया॥ अतऊर्ध्वप्रवक्ष्यामिवेतनस्यानपक्रियाम्॥ २१४
 ॥ श्रुतो नार्तो न कुर्याद्योदर्पात्कर्मयथोदितम्॥ सरराड्यः कृ-
 ष्णालान्यद्यौ न देयं चास्यवेतनम्॥ २१५॥ आर्तस्तुकुर्यात्त्व-
 स्थः स न्यथाभाषितमादितः॥ सदीर्घस्यापि कालस्य तल्ल-
 भेतैव वेतनम्॥ २१६॥ यथोक्तमार्तः सुस्थो वायस्तत्कर्म न क-
 रयेत्॥ न तस्य वेतनं देयमल्पो न स्यापि कर्मणाः॥ २१७॥ यद्य-
 धर्मोऽखिलेनोक्तो वेतनादानकर्मणाः॥ अतऊर्ध्वप्रवक्ष्यामि
 धर्मसमयभेदिनाम्॥ २१८॥

۲۱۳۔ جب پوچھ سے وہ ندیوں سے خواہ داتا دینے کو کہہ کر نہیں دیتا ہے اور لینے والا بزرگ
 و حرم میں نہیں لگاتا تو راجہ ان دونوں سے اس چوری کے پریشیت کیوں اسلے ایک سبرن دیکھو
 اور اس درینہ کو داتا پاکو یہ تو دنگ لینے ہی سے ثابت ہے۔

۲۱۴۔ دی ہوئی چیز کو واپس لینے کے طریق کو کہا اب اس کے بعد مزدوری کی مزدوری نہ دینے کے طریق
 کو کہتے ہیں۔

۲۱۵۔ صحیح و سالم آدمی ایک کام کو کرنا قبول کیا اور نہ کار یعنی خود ہی سے نہیں کرتا ہے تو راجہ
 اس سے آٹھ رتی سونا تا داتا لینے سے اور مزدوری اسکو دلا دے۔

۲۱۶۔ کام کرنا والا آدمی بیماری میں مبتلا ہو کر کام کو ترک کرے اور تندرست ہو کر کام کرے تو پچھلے دنوں کی
 ۲۱۷۔ بیمار ہو یا تندرست ہو کام کرنا جس کام کو قبول کرے اس کام کو کرنا ہے اور وہ کام پورا ہونے سے
 مقور رہ گیا ہے اسکو نہ آپ کرنا ہے نہ دوسرے سے ختم کرنا ہے تو اسکو بھی کچھ دینا چاہئے۔
 ۲۱۸۔ مزدوری نہ دینے کے طریق کو کہا اب اس کے بعد کوئی کام کرنے کی صلاح کرے اسکو نہیں کرنا اسکا و حرم کی

यस्मिन्कर्मशियास्तुस्युरुक्ताः प्रत्यंगदसिराः ॥ ससवता
 आदहीतभजेस्सर्वसवा ॥ २०८ ॥ रथं हरेतवाध्वर्युर्ब्रह्माधा-
 नेचवाजिनम् ॥ होतावापिहरेदश्वमुज्जाताचाप्यनः क्रये
 ॥ २०९ ॥ सर्वेषामर्द्धिनो मुख्या तर्द्धेनार्द्धिनोऽपरे ॥ तृती-
 यिनस्तृतीयांशाश्चतुर्थींशाश्चपादिनः ॥ २१० ॥ सम्भूयस्या-
 निकर्माशिकुर्वद्भिरिहमानवैः ॥ अनेनविधियोगेनक-
 र्तव्यांशप्रकल्पना ॥ २११ ॥ धर्मार्थयेनदत्तं स्यात्कस्मै-
 चिद्याचतेधनम् ॥ यश्चाचनतथातत्स्यान्नदेयंतस्यतद्भ-
 वेत् ॥ २१२ ॥

۲۰۸- جن کام میں جس انگ کی جو کشت ہے اسکو اس انگ کے کرم کو نیا ملے پاویں خواہ سب
 لوگ ملکر بانٹ لیں۔

۲۰۹- ادمی جو رتھ کو پادے برہما اور ہوتا گھوڑا کو پاویں اور گانا گاڑی کو پاوے۔
 ۲۱۰- جس گینے کی تو گنو د کشت ہے اسکی تقسیم کا طریق ملے ہیں کہ گینے میں سوار تو گنو گے ہوتے
 ہیں زمین چار تو گنو مقدم میں لیئے ہوتا اور ہوتا چار و تمام د کشت کی نصف پاویں
 اور تیرا تیرا پرستوتا پرستوتا چار و مقدم تو گنو کا آدھا پاویں اور اٹھیا باکینہ پیشا
 اگینہ پرست ہوتا چار و مقدم تو گنو کا تقسیم حصہ پاویں اور اگر البت انتیا تو ماشہر ہمیشہ چار
 مقدم تو گنو کا چوتھا حصہ پاویں اس مقام پر سب کو مطابق بیان کے د کشت کے اسلیئے سب کا
 آدھا اگرچہ پاس ہے تو بھی اننا لیس لیا تب پہلی کہی ہوئی نقد اور پوری ہوگی۔

۲۱۱- اپنے کام کو ملکر کرنے والے آدمی اس طریق سے حصہ میں کریں۔
 ۲۱۲- کسی نے کسی مانگنے والے کو دھرم کیو اسلئے کچھ دیا اور وہ دیکر دھرم میں کچھ نہیں لگاتا
 تو اس دولت کو اس سے وانا پھیرے۔

अथमूलमनाहार्यप्रकाशकयशोधितः॥ अदराड्योमु-
च्यतेराज्ञानादिकौलभतेधनम्॥ २०२॥ नान्यदन्येनसंसृष्ट-
रूपं विक्रयमर्हति॥ नचासारंनचन्यूनंनदूरेणातिरोहितम्॥
२०३॥ अन्यांचेद्दर्शयित्वान्यावोदुःकन्याप्रदीयते॥ उमेतेष-
कशुल्केनवहेदित्यत्रवीन्मनुः॥ २०४॥ नोन्मत्तायानकुचि-
न्यानचयासृष्टमैथुना॥ पूर्वदोषानभिरव्याप्यप्रदातादराड-
मर्हति॥ २०५॥ ऋत्विग्यदिदृतोयज्ञेस्वकर्मपरिहाययेत्॥
तस्यकर्मानुरूपेरादेयोऽशःसहकर्तृभिः॥ २०६॥ दक्षिणा-
मुचदत्तासुस्वकर्मपरिहाययन्॥ कृत्स्नमेवलभेतांशमन्ये-
नैवचकारयेत्॥ २०७॥

۲۰۲۔ جس سے مول لیا اسکو دکھلا نہیں سکتا اور جسے اوپر د مول لیتا ثابت کرتا ہے تو اسکو
راجہ منزا دیوے اور مول لی ہوئی چیز کو جبکی چیز مباد ہوئی ہے وہ مالک پاوے جتنے روپیہ وہ
چیز مول لی گئی اتنا روپیہ مول لینے والے کا گیا۔

۲۰۳۔ زعفران وغیرہ چیزوں میں کسٹم ملا کر فروخت نہ کرنا اور ناکارہ چیز کو اچھی کہہ کر فروخت
نہ کرنا ورنہ میں کم نہ تولنا روپر دینا اور رنگ سے اچھا بنا کر فروخت نہ کرنا۔

۲۰۴۔ اور کینیا دکھلا کر دوسری کینیا دیکو تو وداہ کرنیوالا ایک ہی شک (معاوضہ) سے دلو
کینیا کا وداہ کرے بیٹن جی نے کہا ہے۔

۲۰۵۔ جو کینیا بیادھر سے دکھی یا گورھن ہے یا بیاسرت میں یا عیب اسکا وداہ بدو
اسکے عیب ظاہر کئے ہوئے کر دیوے تو اس کینیا کا دینے والا اس کے لائق ہے۔

۲۰۶۔ یکیشمین ورن لیکر جوڑ توگ اپنے کام کو نہ کریں تو جتنا کام کیا ہے اتنا ہی حصہ کرم کرنا
کے ساتھ پاویں۔

۲۰۷۔ تمام دکتاے کر بیماری وغیرہ سے اپنے کام کو ترک کرے تو اپنا کرم دوسرے سے کرادیوے

निक्षेपस्यापहर्तारमनिक्षेपारमेव च ॥ सर्वैरुपायैरन्विच्छे-
 च्छपयैश्चैव वैदिकैः ॥ १६० ॥ यो निक्षेपं नार्ययति यश्चानि-
 क्षिप्ययाचते ॥ तावुभौ चौरवच्छास्यौ दाप्यौ वा तत्समंदमम् ॥ १६१ ॥
 निक्षेपस्यापहर्तारं तत्समं दापयेद्दमम् ॥ तथोपनि-
 धिहर्तारमविशेषेणार्थिवः ॥ १६२ ॥ उपधाभिश्च यः कश्चि-
 त्यरद्रव्यं हरेन्नरः ॥ स सहायः सहन्तव्यः प्रकाशं विविधैर्वधैः ॥ १६३ ॥
 निक्षेपो यः कृतो येन यावांश्चकुलसन्निधौ ॥ ता-
 वानेव स वित्ते यो विब्रुवन् दराडमर्हति ॥ १६४ ॥ मिथो दायः
 कृतो येन गृहीतो मिथ स्रजवा ॥ मिथ स्रजप्रदातव्यो यथा रा-
 यस्तथाग्रहः ॥ १६५ ॥

- ۱۶۰۔ شے امانت کو لینے والا اور بد دن امانت رکھنے کے اسکو مانگنے والا ان دونوں کو ویر
 جو قسم اور تمام تدبیریں لکھی ہیں انکے وسیلے سے اصل مطلب کو جانے۔
- ۱۶۱۔ جو شخص شے امانت کو زمین دینا اور جو بد دن رکھنے کے امانت کو مانگتا ہو دونوں کو
 کی طرح سزا دینا چاہئے یا شے امانت کے برابر تادان لینا چاہئے۔
- ۱۶۲۔ سہر کشادہ و سہر مہربان دونوں قسموں کی امانتوں کو جو زمین دیتا ہو اسکو ان دونوں
 قسم کی امانت کے برابر تادان دینا چاہئے۔
- ۱۶۳۔ جو شخص فریب کر کے کسی دولت لیتا ہے اسکو مع سب دروگاران اس شخص کے سب
 آدمیوں کے رد و رد انوار و افسام کی سزا دیکر مارے۔
- ۱۶۴۔ کل کی موجودگی میں جتنی امانت رکھی ہے اس میں خلافت بیان کرے تو تنہائی میں
 دیوے۔
- ۱۶۵۔ جسے بغیر گواہ کے دیا تو وہ بے گواہی لیوے کیونکہ جیسا دینا ویسا لینا۔

कुलजैवतसम्पन्नेधर्मज्ञेसत्यवारिनि ॥ महापक्षेधनिन्या
येनिक्षेपंनिक्षिपेद्बुधः ॥ १७६ ॥ योयथानिक्षिपेद्भस्तेयमर्थ-
यस्यमानवः ॥ सतथैवग्रहीतव्योयथाशयस्तथाग्रहः ॥ १७७
॥ योनिक्षेपंयाच्यमानोनिक्षेपुर्नप्रयच्छति ॥ सयाच्यः प्राङ्नि-
वाकेनतन्निक्षेपु रसन्निधौ ॥ १७८ ॥ साक्ष्यभावेप्रणिधि-
भिर्वयोरूयसमन्वितैः ॥ अयदेशैश्चसंन्यस्यहिरण्यंतस्यत-
त्त्वतः ॥ १७९ ॥ सयदिप्रतिपद्येतयथान्यस्तंयथाकृतम् ॥ न
तत्रविद्यतेकिंचिद्यत्परैरभियुज्यते ॥ १८० ॥ तेषान्नदद्याद्य-
दितुतडिरण्यंयथाविधि ॥ उभौनिगृह्यदाप्यः स्यादितिध-
र्मस्यधारणा ॥ १८१ ॥

۱۶۹۔ کلیں سا دھو (یعنی خاندانی عاید دیا چار کر خیال دودھ م چائینے والا دس بولنے والا دست بیٹے پوتے والا دودھ مند جو آدمی ہے اس کے پاس امانت کو رکھنا چاہئے۔

۱۸۰۔ جو آدمی جس آدمی کے ہاتھ میں جس چیز کو صیقل دیکو وہ اسے اس چیز کو صیقل دیو
جیادینا ویالینا۔

۱۸۱۔ جانی ہوئی چیز کو امانت رکھنے والے نے اپنی چیز کو اُس آدمی سے جس کے پاس امانت رکھی ہو مانگا اور وہ نہیں دیتا تو تب امانت رکھنے والے کی غیر حاضری میں جس کے پاس امانت رکھی گئی اُس حاکم کو لے گیا۔
۱۸۲۔ گواہ کے ہونے میں امانت میں خیانت کرنے والا شخص یا لیان حکم دے گا کہ اگر چیز امانت شدہ نہیں دیتا ہے تو اُس کے پاس کچھ سونا رکھا کر۔

۱۸۔ بیدہ امانت رکھنے والا اپنی امانت کو اس سے یعنی امانت دار سے طلب کرے اگر وہ بیک
تو اسکو سچا جاننا اور اس سے جو شخص اپنی امانت مانگتا ہے وہ جھوٹا ہے۔

۱۸۴- اور جبکہ اہالیان دربار یا وکیل کو دھنوں کے سونا وغیرہ کوئی چیز امانت رکھی ہو انکو بھی وہ امانت دار نہ دیوے تو اس سے دونوں امانت کو راجہ کیلئے یہ بات دھرم میں داخل ہے۔

यस्त्वधर्मोराकार्याशिमोहात्कुर्यान्नराधिपः॥ अचिरात्त
दुरात्मानं वशे कुर्वन्ति शत्रवः॥ १७४॥ कामक्रोधौ तु संयम्य
योऽर्थान्धर्मोरापश्यति॥ प्रजास्तमनुवर्तन्ते समुद्रमिव सि-
न्धवः॥ १७५॥ यः साधयन्तं हृदेन वेदयेद्धनिकं हृदये॥ स राजा
तच्चतुर्भागां राध्यस्तस्य चतुर्जनम्॥ १७६॥ कर्मणापि समं कु-
र्याद्धनिकाया धर्मशोकः॥ समोऽवक्कहजातिस्तु दद्याच्छ्रे-
यांस्तु तच्छ्रेयः॥ १७७॥ अनेन विधिनाराजामिथो विवरतां ह-
राम्॥ साक्षिप्रत्ययसिद्धान्तकार्याणि समानयेत्॥ १७८॥

۱۶۴- جراحہ ہونہ سے اور حرم کر کے کام کو کرے اُس درہ تماراجہ کو دشمن لوگ اپنے قابضین کر لیں

۱۶۵- جراحہ کام کر دہ کو چھوڑ کر دھرم سے مطلب کو دیکھتا ہے اسکے پیچھے سب رعیت رہتی ہو
جیسے سب نری سندر کے پیچھے رہتی ہیں یعنی سندر میں جا کر اچھڑے سے علیحدہ نہیں ہوتی اس طرح
اجہ سے رعیت علیحدہ نہیں ہوتی۔

۱۶۶- جو قرض دینے والا قرضدار سے اپنے دے ہوئے دھن کو اپنے زور سے لیتا ہے اور
قرضدار راجہ کے پاس جا کر نالاش کرے تو راجہ اس قرضدار سے قرضہ کا چوتھا حصہ نادان پ
لیوے اور قرضہ دہندہ کو زور قرضہ دلا دے۔

۱۶۷- اگر شخص زور قرضہ دہندہ کا ہجوم یا زریل قوم ہو اور قرضہ ادا کرنے کی استطاعت
نہ رکھتا ہو تو قرضہ دہندہ کا کام کر کے قرضہ ادا کرے اور اگر قرضہ دار قرضہ دہندہ کی قوم سے اونچی قوم
دالا ہے تو وہ قرضہ دہندہ کا کام نہ کرے بلکہ آہستہ آہستہ جب کچھ لے تب دیوے۔

۱۶۸- اس طریق سے جو مقدمہ باہم محبت کر نیوالے آدمیوں کے گواہوں سے ثابت ہو راجہ زمین خلاف
باتوں کو رد کرتے اصل مطلب کو پہچان لے۔

अथः परार्थेक्षित्यनिसासिराः प्रतिभूकुलम् ॥ चत्वारस्त-
पचीयन्तेविप्रश्चाक्ष्योवशिङ्गन्तपः ॥ १६६ ॥ अनादेयं ना-
दरीतपरिशीरोऽपि पार्थिवः ॥ नचादेयं समृद्धोऽपि स-
ह्यमप्यर्थमुत्तजेत् ॥ १७० ॥ अनादेयस्य चादानादादेय-
स्य च वर्जनात् ॥ दौर्बल्यं व्याप्यते राज्ञः स प्रेत्येह च नश्यति
१७१ ॥ स्वादानाद्वर्णासंसर्गात्त्वबलानां चरसरात् ॥ बलं सं-
जायते राज्ञः स प्रेत्येह च वर्जते ॥ १७२ ॥ तस्माद्यमइव स्वामी
स्वयंहित्वा प्रिया प्रिये ॥ वर्तेत याम्यया च त्याजितक्रोधो-
जितेन्द्रियः ॥ १७३ ॥

۱۶۹- گواہ و ضامن دگل یہ تینوں دوسرے کی واسطے تکلیف اٹھاتے ہیں اور برہمن دوتہ ہستند
دینیہ را جب یہ چار دوسرے کے واسطے ترقی پاتے ہیں اسلیے پہلے کے ہوئے تین آدمی اہل ہی
اپنے کام کو منظور کریں یعنی گواہی و ضمانتی دیو بار دیگھنا ان کاموں کو نہ کریں اور پہلے ہی
جو چار برہمن وہ سلسلہ سے اپنے کام میں قوت سے مشغول ہو دیں یعنی برہمن دوتا گودوتہ ہستند
کو مینا خبر دیں کہ گواہی دے کر جو بار دیگھنا سے کام میں مشغول کریں۔

۱۷۰- راجہ اگرچہ بے زر ہو لیکن جو چیز لینے کے قابل نہیں ہر اسکو ہرگز نہ لےوے اور اگرچہ بڑا ہستند
ہو لیکن جو چیز چھوٹی بھی لینے کے قابل ہو اسکو لےوے۔

۱۷۱- لینے کے لائق چیز کو ترک کرنے سے اور نہ لینے کے لائق چیز کو لینے سے راجہ کی کم قوتی ظاہر
ہوتی ہے اور وہ راجہ اس توک میں اور پرلوک میں ناش کو پاتا ہے۔

۱۷۲- لینے کے لائق چیز کو لینے سے اور ہر قوم کا ہر قوم کے ساتھ شائستہ کے موافق شادی وغیرہ
نسبت کرانے سے کم قوت رعایا کی حفاظت کرنے سے راجہ کو قوت ہوتی ہے اور وہ راجہ اس
اور پرلوک میں بڑھتا ہے۔

۱۷۳- اسلیے راجہ ہم راج کے مانند مرغوب و نام مرغوب کو ترک کر کے کرودھ و اندر لینے کو جیت کر رہے۔

آधि شوی پنی دیشو بھون کالالتی ی مہت: ॥ अवहार्यो भवे
तानो दीर्घकालमवस्थितौ ॥ १४५ ॥ संग्रीत्या भुज्यमानानि न
नश्यन्ति कदाचन ॥ धेनु रुद्रो बहन् श्वो यश्च दस्यः प्रयुज्यते ॥
१४६ ॥ यत्किंचिद्दशवर्षाणि सन्निधौ प्रेक्षते धनी ॥ भुज्यमा-
नं परेस्तूष्णीं न स तल्लभ्युमर्हति ॥ १४७ ॥ अजडश्चेदप्योगराडो
विषये चास्य भुज्यते ॥ भग्नं तद्व्यवहारेण भोक्ता तद्व्यमर्हति
॥ १४८ ॥ आधिः सीमा चालधनं निक्षेपो यनिधिः स्त्रियः ॥ रा-
जस्वं श्रोतियस्वंच न भोगेन प्रशस्यति ॥ १४९ ॥

۱۴۵۔ شے مرہونہ براہ محبت استعمال کیلئے کسی کو کوئی چیز مانگا دینا۔ یہ دونوں قسم کی چیز
حبوت مالک طلب کرے اس وقت دینا چاہئے یہ نہ کہنا کہ اتنے دینیں جیسے اور بہت دن
تک رہنے سے یہ دونوں چیز کا عدم بہین ہو جاتی ہیں اصل مالک کی ملکیت قائم رہتی ہے جس کے پاس
رکھی ہے وہ مالک بہین ہوتا ہے۔

۱۴۶۔ گنو اور اونٹ اور گھوڑا اور بیل ان سب کو مالک کی محبت سے جو کوئی استعمال کرے تو اسکی
وہ چیز میں اسکی مالکیت زائل نہیں ہوتی ہے۔

۱۴۷۔ مالک دیکھتا ہے اور منع نہیں کرتا ہے اسکی چیز کو دس برس تک دوسرے آدمی نے
استعمال کیا پھر مالک اس چیز کو پا نہیں سکتا۔

۱۴۸۔ کیونکہ استعمال کرنا والا کہتا ہے کہ یہ دیوانہ یا بالغ نہیں ہے اسکے دیکھتے ہوئے سمجھنے
استعمال کیا ہے تب وہ کچھ جواب نہیں دیکھتا اس واسطے یہو بار سے وہ خارج ہوتا ہے استعمال کرنے والا
اس چیز کو پاتا ہے۔

۱۴۹۔ شے مرہونہ وحدود یا بالغ کی دولت و امانت جو دیکھا کر اور شمار کر کے کسی کے پاس رکھی جا اور پھر
دینی جو بدوٹن دیکھانے اور شمار کر کے سر بند چیز کیے پاس امانت رکھی جا، دوسری وراج کی دولت
دو بدوٹن کی دولت یہ سب استعمال کرنے سے کا عدم بہین ہوتی ہیں اصل مالک کی ملکیت قائم رہتی ہے

वसिष्ठविहितां वृद्धिं स्तुजेद्वित्तविवर्द्धनीम् ॥ असीतिभागं
 शुक्लीयान्मासाद्वायुषिकः शते ॥ १४० ॥ द्विकंशतं वा शुक्ली-
 यात्सतांधर्ममनुस्मरन् ॥ द्विकंशतं हि शुक्लानोनभवत्यर्थ-
 किल्विधी ॥ १४१ ॥ द्विकं त्रिकं चतुष्कं च पंचकं च शतं सम-
 म् ॥ मासस्य वृद्धिं शुक्लीयाद्वर्गानामनुपूर्वशः ॥ १४२ ॥ न-
 त्वेवाधोसोपकारे कोसीरीं वृद्धिमाप्नुयात् ॥ न चाधेः का-
 लसंरोधानिसर्गोऽस्ति न विक्रयः ॥ १४३ ॥ न भोक्तव्यो
 बलादाधिर्भुज्जानो वृद्धिमुत्तजेत् ॥ मूल्येन तोषयेच्चैनमा-
 धिस्तेनोऽन्यथा भवेत् ॥ १४४ ॥

۱۴۰۔ بشت جی کا کہا ہوا سود جو روپیہ کا بڑھانیوالا ہے اسکو ترک کرے اور تنور روپیہ کا آٹھی
 دان حصہ لینے فیصدی سوارڈ پیہ سود ماہواری مقرر کرے۔

۱۴۱۔ خواہ اچھے لوگوں کو ہرم خیال کر کے فیصدی دو روپیہ ماہواری لیوے اسکے لینے
 سے دریتہ پانی بہن ہوتا۔

۱۴۲۔ ہر مہین سے فیصدی دو روپیہ کشتی سے تین روپیہ ویشیہ سے چار روپیہ سود
 پانچ روپیہ سود فیصدی ماہواری لیوے۔

۱۴۳۔ اب رہن کے قواعد لکھتے ہیں کہ جو چننے دینے والی شل زمین و غلام و گنود وغیرہ رہن
 کیجائے اس میں سود نہ لینا چاہئے جب رہن کو بہت دن ہو جاوے اور رہن بھکر چننا روپیہ لیا
 تھا اس سے دو چنر روپیہ نفع شے مرہونہ سے مالک نے پایا تب اس شے مرہونہ کو کسی کو دیدیوے
 یا فروخت کر دے ایسا کرے کہ جتنک زر اصل بنادے تب تک اسکی نفع کو حاصل کرتا رہے
 ۱۴۴۔ زبردستی سے شے مرہونہ کو لقمہ نہ کرے اگر کرے تو سود چھوڑ دے یا جسکی چیرے
 اسکو قیمت دیکر راہنی کرے اگر ایسا نہ کرے تو شے مرہونہ کا چور ہوتا ہے۔

سर्वपाः षड्यवो मध्यस्थियवंत्वेककृषालम् ॥ पंचकृषाल-
को मायस्ते सुवर्गास्तु षोडश ॥ १३४ ॥ पलं सुवर्गाश्चत्वारः प-
लानि धरणां दश ॥ द्वे कृषाले समधृते विज्ञयी रीष्यमायकः ॥
१३५ ॥ तेषोडशस्याद्भिरां पुराराश्चैव राजतः ॥ कार्यापरांतु-
विज्ञेयस्ताम्रिकः कार्षिकः पराः ॥ १३६ ॥ धरणा निदशज्ञेयः
शतमानस्तुराजतः ॥ चतुःसौ वर्गाको निष्को विज्ञेयस्तु प्रमा-
रातः ॥ १३७ ॥ पराणां द्विशते सार्धे प्रथमः साहसः स्मृतः ॥ म-
ध्यमः पंचविज्ञेयः सहस्रं त्वेव चोत्तमः ॥ १३८ ॥ ऋगो देये प्रति-
ज्ञाते पंचकं शतमर्हति ॥ अथ नृपेत द्विगुरांतन्मनोरनुशास-
नम् ॥ १३९ ॥

۱۳۴- چھ سو سو کا ایک مدھیم جو تین جو کی ایک تی پانچ رتی کا ایک یا شہ سولہ ماشہ کا ایک
سبرن ہوتا ہے۔

۱۳۵- چار سبرن کا ایک پل دس پل کا ایک دھرن ہوتا ہے اب روپیچے وزن کی مقدار
کو کہتے ہیں۔ کہ دو رتی کا ایک ماشہ۔

۱۳۶- اور سولہ ماشہ کا ایک دھرن ہوتا ہے اور اوسکو پران بھی کہتے ہیں سولہ ماشہ تانبہ
مرک اور کارشک پین کہتے ہیں۔

۱۳۷- دس دھرن کا ایک ست مان چار سبرن کا ایک تشک ہوتا ہے۔

۱۳۸- ڈو معالی شتوپن کا پورب سامس اور پانسوپن کا مدھیم سامس اور نہر اپن کا آتم سامس
ہوتا ہے۔

۱۳۹- دربار میں جا کر معروض کئے کہ قارض کا قرضہ ہو گیا تو فیصدی پن پر پانچ پن ڈو
دیوے اور اگر کئے کہ ہم قرضہ دار نہیں ہیں اور گواہ تحریر کے ذریعہ سے مدعی کا دعویٰ ثابت ہو
تو فیصدی پن پر دس پن ڈو مدعا علیہ دیوے پن جن جی کا حکم ہے۔

अदराड्यान्दराडयनराजादराड्यांश्चैवाप्यदराडयन॥ अयशो
महदाप्रोतिनरकंचैवगच्छति॥ १२८॥ वाग्दराडमप्रथमंकुर्या
द्भिदराडंतदनन्तरम्॥ तृतीयंधनदराडन्तुवधदराडमतः परम्
॥ १२९॥ वधेनापियशलेतानिग्रहीतुंनशक्नुयात्॥ तदैशुस-
र्वमप्येतत्प्रयुज्जीतचतुष्टयम्॥ १३०॥ लोकसंव्यवहारार्थयाः
संज्ञाः प्रथिताभुवि॥ ताप्ररूपसुवर्णानांताः प्रवक्ष्याम्यशेष
तः॥ १३१॥ जालान्तरगतेभानौयत्तूह्मं दृश्यतेरजः॥ प्रथमं
तत्प्रमाणानां त्रसरेणुं प्रचक्षते॥ १३२॥ त्रसरेणावोऽष्टौ विज्ञे-
यालिक्षेकापरिमारातः॥ ताराजसर्षपस्तिस्त्रस्तेत्रयो गौर
सर्षपः॥ १३३॥

۱۲۸۔ جو سزا کے لائق نہیں ہے، اسکو سزا دینے سے جو سزا کے لائق ہے اسکو سزا نہ دینے سے راجہ بدنام ہوتا ہے۔ اور ترک میں جاتا ہے۔

۱۲۹۔ اول تو حکم لے اچھا نہیں کیا پھر ایسا نہ کرنا ایسی باتوں سے خوف دینا یہ پہلا ڈنڈ ہے اس کے بعد یہ کہنا کہ تجھکو لعنت ہے بڑا پاپی و تیرے کھڑے تیری زندگی نہویہ دوسرا ڈنڈ ہے دھن ڈنڈ تیسرا ڈنڈ ہے اعضا کاٹ ڈالنا چوتھا ڈنڈ ہے۔

۱۳۰۔ من کسی عضو کے کاٹ ڈالنے سے بھی مجرم کو قابو میں نہ کر سکے تو چارو ڈنڈ دیوے ۱۳۱۔ جلگت کے اچھے بیوہ بار کے واسطے تانبہ اور پادسونا ان کے وزن کی مقدار رکھی ہو اس سب کو میں کہتا ہوں۔

۱۳۲۔ چھوٹے میں سورج کی کرن آئے سے جو ذرہ دیکھ پڑتا ہے وہ مقدار میں اول کہلاتا ہے اسکو ترمین کہتے ہیں۔

۱۳۳۔ آٹھ ترمین کا ایک لکشا تین لکشا کی ایک رائی اور تین رائی کی ایک پائی ستر ہونے

लोभान्मोहाद्वयान्मैत्रात्कामात्क्रोधात्तथैव च ॥ अज्ञानाद्वा
लभावाच्च साक्ष्यं वितथमुच्यते ॥ ११८ ॥ एवामन्यतमे स्थाने
यः साक्ष्यमचूतं वदेत् ॥ तस्य दण्डविशेषांस्तु प्रवक्ष्याम्यनुपूर्व-
शः ॥ ११९ ॥ लोभात्सहस्रं दण्ड्यस्तु मोहात्पूर्वं तु साहसम् ॥
मया ह्येव मध्यमो दण्डो मैत्रात्पूर्वं चतुर्गुराम् ॥ १२० ॥ कामाद्दश
गुरां पूर्वक्रोधात्तु त्रिगुरां परम् ॥ अज्ञानाद्देशते पूर्वो वालिस्था-
च्छतमे च तु ॥ १२१ ॥ एतानाहुः कीदृसाक्ष्ये प्रोक्तान् दण्डान्मनीषि-
भिः ॥ धर्मस्याप्यभिचारार्थमधर्मनियमाय च ॥ १२२ ॥

۱۱۸۔ نوچھ۔ موہ ڈر ترنا کام کر دو ہم اگیان رکپن ان سپون بین سے کسی ایک سیکے ہوئے
گواہ لوگ جھوٹے بولتے ہیں۔

۱۱۹۔ انکے سواے اور مقامات میں جھوٹے گواہی دے تو اسکے واسطے خاص سزا سلسلہ وار
کہیں گے۔

۱۲۰۔ اگر گواہ نوچھ سے جھوٹے بولے تو ہزار پن جرمانہ دیوے اور اگر موہ سے جھوٹے بولے تو
بمقدار پورب ساہس جرمانہ دیوے اور اگر خوف سے جھوٹے بولے تو بمقدار دو وٹم ساہس
جرمانہ دیوے اور اگر عیاذ دوستی جھوٹے بولے تو بمقدار چار پورب ساہس جرمانہ دیوے۔

۱۲۱۔ اگر گواہ کام کے غلبہ سے جھوٹے بولے تو دس پورب ساہس جرمانہ دیوے اور اگر گرد
سے جھوٹے بولے تو بمقدار تین اتم ساہس جرمانہ دیوے اگر اگیانیتا سے جھوٹے بولے تو بمقدار دو وٹم
پن جرمانہ دیوے اور اگر رکپن سے جھوٹے بولے تو بمقدار ایک سو پن جرمانہ دیوے۔

۱۲۲۔ ادموم کے بندھونے اور دھرم کے جاری ہونے کے واسطے پندرہ گونے یہ دیکھو
کے جھوٹے بولنے میں کہتے۔

कुम्भाराडैर्वापि जुह्याद्घृतमग्नौ यथाविधि ॥ उदित्युचावा
 वारुरायाश्चुचेनावैवतेनवा ॥ १०६ ॥ त्रिपसादशुवन्सास्य-
 म्भृगासिधुनरोऽगदः ॥ तद्वरांप्राप्नुयात्सर्वदशवन्धंचसर्वतः ॥
 १०७ ॥ यस्यदृश्येतसप्राहादुक्तवाक्यस्यसाक्षिगाः ॥ रोगोऽमि-
 त्तातिमरगाम्भृगांदाप्योदमंचसः ॥ १०८ ॥ असाक्षिकेषुत्वर्थे-
 युमिथो विचरमानयोः ॥ अविन्दंस्तत्त्वतः सत्यंशपथंनापि
 लम्भयेत् ॥ १०९ ॥ महर्षिभिश्चदेवैश्चकार्यार्थशपथाः कृ-
 ताः ॥ वशिष्ठश्चापिशपथंशपेवैवनेन्दये ॥ ११० ॥ नवद्याश-
 पथंकुर्यात्त्वत्योऽप्यर्थेनरोबुधः ॥ चयाहिशपथंकुर्वन्प्रेत्यवेहच
 नश्यति ॥ १११ ॥

۱۰۶- خواہ گوشماند منتر تو پیر دید میں ہے اسکو پڑھ کر یا اہ تم اپو سٹھان دون شتر و تین
 کسی ایک منتر کو پڑھ کر پھر پھر گلی سے ہون کرے شاستری کے برہم کے موافق۔
 ۱۰۷- قرین غیرہ کے مقدمات میں تندرست گواہ ڈیڑھ مہینہ کے اندر کچھ کہے تو جس قدر
 میں گواہ ہوا اس مقدمہ کے قرضہ کو دسویں حصہ دے دو دیوے۔
 ۱۰۸- عدالت سے گواہ کو ای دیکر آدے اور سات دن کے اندر ہماری داگ کا گناؤں سے
 موت نہیں سے کوئی ایک رتج گواہ کو ہو تو وہ گواہ اس قرضہ کو اور اس قرضہ ہتھو تن حصہ دے دو دیوے۔
 ۱۰۹- جس مقدمہ میں گواہ نہیں ہے اور غور کرنے سے حاکم اصلی بات کو ہمیں پاسکتا ہے
 آگے لکھی ہوئی سوگند کے وسیلے سے اصلی بات کو دریا منت کرے۔
 ۱۱۰- دیوتا اور پرب پربے ریش لوگوں نے کام کیو اسطے سوگند کھائی ہے اور ہوا مٹر کے
 جھگڑے میں لٹشٹ ریش نے پیوں کے بیٹے سدا مان نام راجہ کے روہر وستم کھائی تھی
 ۱۱۱- تھوڑے مطلب میں بھی نادان آدمی جھوٹی سوگند نہ کھا دین کیونکہ جھوٹی قسم کھانے
 سے اس کو کہ میں اور پر لوک میں فٹ ہوتا ہے

اشمبھومیو دیتا: ستریگاں بھوگے چمے یونے ॥ اشمبھو چو بھو
 بھو سہ شش مہ یو چ ॥ ۱۰۰ ॥ راتانہو یانہو بھو بھو سہ سہ
 تہا بھو ॥ یثا بھو تہا بھو سہ سہ سہ سہ سہ سہ ॥ ۱۰۱ ॥
 گورس کانا بھو جیکاں سہا کارو کوشی لہا ॥ پری بھو
 وارڈھیکاں بھو بھو بھو بھو بھو بھو ॥ ۱۰۲ ॥ تہا بھو
 بھو بھو بھو بھو بھو بھو ॥ ۱۰۳ ॥ بھو بھو بھو بھو
 بھو بھو بھو بھو بھو بھو ॥ ۱۰۴ ॥ بھو بھو بھو
 بھو بھو بھو بھو بھو بھو ॥ ۱۰۵ ॥

- ۱۰۰۔ پانی، عورت، جلے، موتی، حواریات وغیرہ کے مقدمات میں بھی مثل زمین کے جانتا۔
 ۱۰۱۔ جھوٹے بولنے میں اٹنے، دشمن کو دیکھ کر جیسا دیکھا اور سنا ہے ویسا سہ سہ بولو۔
 ۱۰۲۔ گینوں کی حفاظت سے اوقات بسر کرنیوالا دیکھ کر کام کرنیوالا دوسرے کی رسوئی میں نہا نیوالا
 کانے والا غلامی کرنیوالا بیان لینے والا جو اس میں ہے اسکو شور کی طرح مانتا جاسکتے۔
 ۱۰۳۔ دیکھ دو اور سہ سہ کی نظر سے جھوٹے بولنے میں سوگ سے نہیں گرتا اور اسکی
 بانی میں وغیرہ دیوتا کی باقی کے برابر سمجھتے ہیں۔
 ۱۰۴۔ جہاں سہ بولتے سے براہین کثرتی دیشیہ شور و قتل ہوتا ہو وہاں جھوٹے بولنے
 سہ سے بھی زیادہ اچھا ہے۔
 ۱۰۵۔ جھوٹے بولکر گھر میں آکر سہ سہ کی گینوں کی گینوں کے پاپ جھوٹے بولنے کے پاپ جھوٹے

अन्धोमत्यानिवाशनातिसनरः कराटकैः सह ॥ योभाषतेऽर्थ
 वैकल्यमप्रत्यक्षं समागतः ॥ ६५ ॥ यस्य विद्वान्निवदतः क्षेत्रज्ञो
 नाभिशंकते ॥ तस्मान्नरेवाः श्रेयांसं लोकेऽन्यं पुरुषं विदुः ॥ ६६ ॥
 यावतोवाचवाचस्मिन्हन्ति मास्थेऽनृतम्बदन् ॥ तावतः
 संख्यया तस्मिन् ह्यरासौ म्यानुपूर्वशः ॥ ६७ ॥ पंचयश्च नृते-
 हन्ति दशहन्ति गवानृते ॥ शतमश्वानृते हन्ति महस्यं पुरुषा-
 नृते ॥ ६८ ॥ हन्ति जातान्जातांश्च हिरण्यार्थे नृतं वदन् ॥ सर्व-
 भूम्यनृते हन्ति मास्मभूम्यनृतं वदीः ॥ ६९ ॥

۹۵۔ جو آدمی دربار میں جا کر رشوت لیکر جھوٹا بولتا ہے وہ اندھے کی طرح پچھلی کوچ کا نونکے کھاتا ہے۔

۹۶۔ جس آدمی کے بولتے ہوئے انتہا تماشا کش بنیں کرتی ہے اس سے اچھا دوسرا آدمی کو اس لوگ میں دیونا لوگ بنیں جانتے۔

۹۷۔ جس کام میں جھوٹا بولنے سے جتنے رشتہ داروں کو مارتا ہے وہ سب پریش لوگوں سے سنئے۔

۹۸۔ پیش لینے چار بابہ کے مقدمہ میں جھوٹھی گواہی دینے سے پانچ پشت کی فنا کرتا ہے اور گنہ کے مقدمہ میں سزا کی اور گھوڑے کے مقدمہ میں تلو پشت کی اور آدمی کے مقدمہ میں نہر پشت کی فنا کرتا ہے۔

۹۹۔ سونے کے مقدمہ میں جھوٹھی گواہی دینے سے بولے اور ہونیوالے رشتہ داروں کی فنا کرتا ہے اور زمین کے مقدمہ میں جھوٹھی گواہی دینے سے سب کو نابود کرتا ہے اس لیے زمین کی بابت گواہی دینے میں کبھی جھوٹا نہ بولے۔

ब्रह्मघोयेस्मृतालोकायेचस्त्रीवालघातिनाम्॥ मित्रद्रुहः
 कृतघ्नस्यतेतेस्युर्बुवतोमृया॥ ८६॥ जन्मप्रभृतियत्किंचित्सु-
 रायंभद्रत्वयाकृतम्॥ तत्तेसर्वंशुनोगच्छेद्यदिब्रूयास्त्वमन्य-
 था॥ ८७॥ सकोहमस्मीत्यात्मानंयत्त्वंकल्याणमन्यसे॥ नि-
 त्यंस्थितस्तेहद्येषपुरायपापेक्षितामुनिः॥ ८८॥ यमोवैवस्व-
 तोदेवोयस्तवैवहरिस्थितः॥ तेनचेदविवादस्तेमागंगांमाकु-
 रूनामः॥ ८९॥ नग्नोसुराडःकपालेनभिक्षार्थीक्षुत्पियासितः
 ॥ अन्यःशत्रुकुलंगच्छेद्यःसाक्ष्यमन्दतंवदेत्॥ ९०॥ अवाक-
 शिरास्तमस्यन्धेकिल्बिषीनरकं व्रजेत्॥ यःप्रश्नंवितथंब्रूया-
 त्पृष्टःसन्धर्मनिश्चये॥ ९१॥

- ۸۹- براہمن اور استرمی اور بالک ان تینوں کا ہارنیوالا اور دوست سے دشمنی کرنے والا اور ابلکا کو نمائنے والا ان سب کو چلوک ملتا ہے وہی کوک جھوٹے بولنے سے ٹکولے۔
- ۹۰- جو مہینہ تمام جہنم میں تھنے کیا ہے وہ سب جھوٹے بولنے سے کٹھ کوٹے۔
- ۹۱- اپنے کو تم ایسا مانتے ہو کہ میں اکیلا ہوں سو نہ مانو کیونکہ ہمیشہ سے تمہارا گھنہ میں پاپ اور مہینہ کا دیکھنے والا منیشور قائم ہے
- ۹۲- یم راج دو پوسوت دیوتا تمہارے ولیمین قائم سے اسکے ساتھ اگر تمہاری بحث ہو تو گنگا اور کرشنتر میں بجائے جھوٹے بولنے سے یم راج کے ساتھ بحث ہوگی تو اس پاپ کے دور ہونے کے واسطے گنگا جی اور کرشنتر میں جانا پڑے گا۔
- ۹۳- جو گواہ جھوٹے بولے وہ پرہنہ مونڈ مونڈا لے ہوئے جھوٹے بیاس سے دکھی اندھا ہو بھیکہ مانگنے کیلئے کپال کیلئے دشمن کے خاندان میں جاوے۔
- ۹۴- جو شخص دھرم کے شے کر نہیں پوچھا گیا اور جھوٹے بولا وہ پاپی نیچے شے کے ہوئے بنت اندھیائے رگ میں جاتا ہے

आत्मेव ह्यात्मनः साक्षी गतिरात्मा तथात्मनः ॥ मावमांस्थाः
 स्वमात्मानं नृणां साक्षिरासुत्तमम् ॥ ८४ ॥ मन्यन्ते वै पापक-
 तो न कश्चित्पश्यतीति नः ॥ तांस्तु देवाः प्रपश्यन्ति स्वस्यैवा-
 न्तरपुरुषः ॥ ८५ ॥ द्यौर्भूमिरापो हृदयं चन्द्रार्काग्निप्रमानि-
 लाः ॥ रात्रिः सन्ध्ये च धर्मश्च वृत्तज्ञाः सर्वदेहिनाम् ॥ ८६ ॥ दे-
 वब्राह्मणासान्निध्ये साक्ष्यं षच्छेदतं द्विजान् ॥ उदङ्मुखान्
 प्राङ्मुखान् वा पूर्वाह्ने वै शुचिः शुचीन् ॥ ८७ ॥ ब्रूहीति ब्राह्म-
 णां षच्छेत्सत्यं ब्रूहीति पार्थिवम् ॥ गौबीजकांचनैर्वैश्यं शूद्रं
 सर्वैस्तु पातकैः ॥ ८८ ॥

۸۴- آتما کی گت اور گواہ آتما ہی ہے اسلئے سب آدمیوں میں آتم اپنی آتما ہی اسکا اپنا
 نکرنا چاہئے۔

۸۵- پاپ کرنیوالے یہ جانتے ہیں کہ بھوکو کوئی نہیں دیکھتا اور اُس پاپ کو دیکھتا تو گ
 اور اپنے جسم کے اندر رہنے والا پریش دیکھتا ہے۔

۸۶- سورگ بخوم جہل ہر دے میں رہنے والا جو آتما سوچ چند سان اگن تیم سراج ہوتا
 یہ دونوں سب دیکھتا ہے سب آدمیوں کے کرم کو دیکھتے د جانتے ہیں۔

۸۷- دوتنا اور براہمن کے سامنے گویا ان قوم براہمن و کستری و دیشیہ پاک ہو کر پورب ہنہ
 یا انر ہنہ کھڑے ہو دیں اولئے حاکم پاک ہو کر دن کے حصہ اول میں سوال کرے۔

۸۸- کتو- اس طرح براہمن سے پوچھے سچ کہو اس طرح کستری سے پوچھے کیوں اور بیج اور سونا
 کی قسم دے کر دیشیہ سے پوچھے اور جھوٹ بولنے سے سب پاپوں کے بھوک کرنیوالے
 ہو گے ایسا ککر شودر سے پوچھے۔

स्वभावेनैवमद्युस्तद्वाह्यव्यावहारिकम् ॥ अतोयदन्यद्विबु-
 दुर्धर्मार्थतदपार्थक्यम् ॥ ७८ ॥ समान्नः साक्षिराः प्राप्तानर्थि-
 प्रत्यर्थिसन्निधौ ॥ प्राड्विवाकोऽनुयुज्जीतविधिनानेनसान्त्व-
 यन् ॥ ७९ ॥ यद्वयोरनयोर्वैत्यकार्येऽस्मिन्चेष्टितमिथः ॥ तद्-
 तसर्वसत्येनयुष्माकंहात्रसाक्षिता ॥ ८० ॥ सत्यंसाक्ष्येब्रुवन्सा-
 क्षीलोकानामोतिषुष्कलान् ॥ इहचानुत्तमांकीर्त्तिंवागेषा-
 ब्रह्मपूजिता ॥ ८१ ॥ साक्ष्येऽनृतंवेदेष्योर्वैज्यतेवाकुरोर्धृष-
 म् ॥ विवशः शतमाजातोस्तस्मात्साक्ष्यंवेदेहतम् ॥ ८२ ॥ सत्ये-
 नपूयतेसाक्षीधर्मः सत्येनवर्द्धते ॥ तस्मात्सत्यंहिवक्तव्यंस-
 र्ववसोबुसाक्षिभिः ॥ ८३ ॥

۷۸۔ اپنی طبیعت سے جو بات کہے اسکو قبول کرنا چاہئے (یعنی روح اظہار کرنا چاہئے)
 اور جو بات سکھانے سے کہے وہ بیفائدہ ہے اسکو قبول نہ کرنا چاہئے۔
 ۷۹۔ راجہ کے حکم سے مقدمہ فیصلہ کرنا والا پیر بہن دربار میں مدعی و مدعا علیہ کے روپ و مطابق
 طریقہ مندرجہ آئینہ بوسیدہ سام نام تذبیر کے گواہوں کو حکم دے۔
 ۸۰۔ کہ مدعی و مدعا علیہ کے مقدمہ تذبیر میں باہم طعن و برہن آگے ہونے کے حال کو جو کچھ تم جانتے ہو
 برستی تمام کو اس مقدمہ میں تمہاری گواہی ہے۔
 ۸۱۔ گواہی میں سچ بولنے سے اونچا لوک (یعنی برہم لوک وغیرہ) کو پاتا ہے اور اس لوک میں
 بڑی نیکیاں کو پاتا ہے اور بانی اسکی شری برہما جی سچ بولنے والے برہما جی اسکی تعریف کرتے ہیں
 ۸۲۔ گواہی میں جھوٹ بولنے سے دوسرے کے قابو میں پڑ کر توبہ تک برن دیوتا کے پاس منت
 باز ہوتا ہے اس سے سچی گواہی دینا چاہئے۔
 ۸۳۔ سچ بولنے سے گواہ پاک ہوتا ہے اور اسکا وہم ترقی پاتا ہے اسواسطے سب لوگ
 اسکی گواہی بولنا چاہئے۔

बहत्वं परितुल्यतासासिद्धेन राधियः ॥ समेषु तु गुरोत्क-
 ष्ठा न्युरासिद्धे द्विजोत्तमान् ॥ ७३ ॥ समक्षदर्शनात्साक्ष्यं श्रव-
 नाच्चैव सिद्ध्यति ॥ तत्र सत्यं बुवन्साक्षी धर्मार्थाभ्यां न हीयते
 ॥ ७४ ॥ साक्षी दृष्टश्रुतादन्यद्विबुवन्नार्यसंसदि ॥ अवाङ्म-
 सभ्येति प्रेत्य स्वर्गाच्च हीयते ॥ ७५ ॥ यत्रानिवज्जोऽपीक्षेत शृणु-
 याद्वापि किंचन ॥ दृष्टस्तत्रापि तद्ब्रूयाद्यथा दृश्यं यथा श्रुतम् ७६
 ॥ सकोऽलुब्धस्तु साक्षी स्याद्बल्यः शुच्योऽपि न स्त्रियः ॥ स्त्री-
 बुद्धेरस्थिरत्वाच्चुरो वै श्रान्येपिये हताः ॥ ७७ ॥

۷۳۔ جہاں گواہوں کے دو قسم کے بیان ہوں وہاں زیادہ تعداد کے گواہوں کا بیان
 ماننا چاہئے اگر تعداد میں برابر ہیں اور دو قسم کے بیان میں تو گواہان بعینہ و حسب صفت کے
 بیان کو ماننا چاہئے اور صاحب صفت کے دو قسم کے بیانوں میں برہمن کے بیان کو ماننا
 چاہئے۔

۷۴۔ حالات پچشم دیدہ و بگوش خود شنیدہ میں گواہی دینا ٹھیک ہے اور اس میں سچ بولنے
 سے دھرم دار تک کا نقصان نہیں ہوتا۔

۷۵۔ جو شخص امر و نفی پچشم دیدہ و بگوش شنیدہ کے برخلاف اچھے لوگوں کی سبعا میں گواہی
 دیتا ہے وہ نیچے شہر کے ہونے تک میں جاتا ہے سو رنگ کو نہیں ملتا۔

۷۶۔ تم اس میں گواہ ہو اگر طرح نہیں کہتا اور کیفیت مقدمہ کو اس نے دیکھا ہے اس کو طلب کر کے
 مقدمہ کا حال پوچھا جاوے تو جس طرح دیکھا اور بتاتا ہے اسی طرح سے بیان کرے۔

۷۷۔ طرح نہ کہنے والا ایک آدمی بھی گواہ ہو سکتا ہے اور طہارت رکھنے والی بہن عورتیں
 گواہ نہیں ہو سکتیں کیونکہ عورتوں کی عقل ایک حالت پر قائم نہیں رہتی اور جو آدمی عیب
 ہیں وہ بھی گواہ نہیں ہو سکتے۔

स्त्रीणां सास्यं स्त्रियः कुर्युद्विजानां सदृशा द्विजाः ॥ शूद्राश्च स-
 न्नः शूद्राणां सत्यानां सत्ययोनयः ॥ ६८ ॥ अनुभावी तु यः कश्चि-
 त्कुर्यात्सास्यं विवादिनाम् ॥ अन्तर्वेश्मन्यराये वा शरीरस्यापि
 चात्थये ॥ ६९ ॥ स्त्रियाश्च संभवे कार्यं बालेन स्थविरेणावा ॥ शि-
 ष्येणावन्धुना वा पिदासेन मृतकेन वा ॥ ७० ॥ बालवृद्धा तुराणां
 च सास्येषु वदतां सदा ॥ जानीयादस्थिरां वा च सुस्मिन् मन-
 सांतया ॥ ७१ ॥ साहसेषु च सर्वेषु स्तेयसंग्रहणेषु च ॥ चाग्दंड-
 योऽप्यारुध्येन परीक्षेत साक्षिराः ॥ ७२ ॥

- ۶۸- خورتون کی گواہ عورتیں ہودین و چون گواہ درج ہودین شورون کے گواہ شود ہودین
 چانڈال کے گواہ چانڈال ہودین -
- ۶۹- مدعی اور مدعا علیہ کے مطالب کو جو جانتا ہو وہ گواہ ہو جو جھگل گھر ان دونوں کے اندر
 و جانکشی ان تینوں طرح کے مقدموں میں قرض لینے میں جو لکشت گواہوں کے کہے گئے ہیں
 انکا اور نہ کرنا لینے اس مقام پر اسکی تہیل نہ کرنا -
- ۷۰- ان تینوں مقدموں میں اگر گواہ مرقوم بالا کے نمونے پر عورت و لڑکے دہڑے و شہتہ
 دشا کر دغلام و مزدوریہ سب بھی گواہ ہودین -
- ۷۱- گواہی میں بالکے بوڑھے و کبھی دانت وغیرہ کی بات معتبر نہ جاتا -
- ۷۲- زور سے کام کرنا (شل نش زنی وغیرہ) اور چوری اور عورت کو زبردستی لیجانا
 اور سخت زبانی کرنا اور لالچی وغیرہ سے مارنا ان مقدموں میں گواہوں کی گواہی
 معتبر نہ ہونا چاہئے -

गृहिणाः पुत्रिणो मोलाः सत्रविद्वद्भ्यो नयः ॥ अथ्युक्ताः सा
 द्यमर्हन्ति नये कोचिदनायदि ॥ ६२ ॥ आशाः सर्वेषु वर्गेषु कार्याः
 कार्येषु साक्षिणाः ॥ सर्वधर्मविदो लुब्धा विपरीतास्तु वर्ज
 येत् ॥ ६३ ॥ नार्थसम्बन्धिनो नामानसहायानवैरिणाः ॥ न ह-
 रदोषाः कर्तव्याः न व्याध्या र्तानवूयिताः ॥ ६४ ॥ न साक्षी नृप-
 तिः कार्यो न कारु क कुशीलवौ ॥ न त्रिधोनलिंगस्थोन-
 संगे स्थो विनिर्गतः ॥ ६५ ॥ नाध्यधीनो न वक्तव्यो न रस्युर्न विक-
 र्मकृत् ॥ न हृद्वेन शिष्येनैको नाह्योन विकलेन्द्रियः ॥ ६६ ॥ ना-
 र्तो न मत्तो नोन्मत्तो न सुत्तव्याोपपीडिनः ॥ न त्रपार्त्तो न कामा-
 र्तो न क्रुद्धो नापितस्करः ॥ ६७ ॥

۶۲۔ وقت مصیبت ہونے پر جو کوئی ملے وہی گواہ تجویز ہو لیا بیجا ہے بلکہ عیالدار صاحب اولاد
 و خاندانی کشتری و دلشہ سٹور ذات مدعی کی گواہی دینے کے لائق ہوتے ہیں۔
 ۶۳۔ سب ورنوں کے کام میں سچ بولنے والے تمام دعوہوں کو جاننے والے حص
 نہ رکھنے والے جو آدمی ہیں وہی گواہی دینے کے لائق ہوتے ہیں اور جو صفات مرقومہ بالا
 نہ رکھتے ہوں انکو گواہ نہ کرنا چاہئے۔
 ۶۴۔ جس مطلب کی بحث ہے اس سے نسبت رکھنے والا و دوست و مرد کر نیوالا دشمن اور حبا
 عیب جگہ دیکھتے ہیں آیا ہو اور بیاد ہو سے دکھی اور دوست والا۔
 ۶۵۔ اور راجہ اور سوتیلے بنا بیوالا اور پٹ وغیرہ و بیڑ پٹھنے والا اور برہم چاری وغیرہ عیب سے جو لگا لگتا
 ۶۶۔ و غلام و بیچ کرم کر نیوالا و چور و خلاف کرم کر نیوالا و اسی برہمن سے زیادہ عمر والا و سولہ برس
 کم عمر والا و اکیلا و چاند آل وغیرہ و کوئی ایک عضو نہ رکھنے والا۔
 ۶۷۔ اور دکھی اور بھگت گانجہ وغیرہ کے نشہ میں مست و مخمور و بھوت وغیرہ کا خلل رکھنے والا
 بھوکھ پیاس کی تکلیف رکھنے والا و معنی دکادیو سے دکھی و کر و دھنی و چوران سبکو گواہ نہ کرنا چاہئے

ب्रूहीत्युक्तश्चनब्रूयादुक्तंचनविभावयेत्॥ नचपूर्वापरंविद्यात्त-
स्मादर्थोत्सहीयते॥ ५६॥ सासिराः सन्निमेत्युक्तादिशेत्युक्तो
दिशेन्नयः॥ धर्मस्थः कासोरेतैर्हीनत्तमपिनिर्दिशेत्॥ ५७॥ अ-
भियोक्तानचेद्ब्रूयादध्योदराड्यश्चधर्मतः॥ नचेत्त्रिपक्षात्प्रब्रू-
याद्धर्ममतिपराजितः॥ ५८॥ योयावन्निह्वीतार्थमिच्छाया
वतिवावदेत्॥ तौह्येराह्यधर्मज्ञौदाप्योतद्विगुरांदमम्॥ ५९
दृष्टोऽपव्ययमानस्तुक्तावस्थोधनेषिरा॥ अवरैः सासिभि
र्भाव्यो नृपब्राह्मरासन्निधौ॥ ६०॥ यादृशाधनिभिः कार्य्या-
व्यवहारेषु सासिराः॥ तादृशान्नाम्यवस्थामियथावाच्यम-
तंचतैः॥ ६१॥

۵۶ - اور جب حاکم نے حکم دیا کہ پو پو تب بوتا نہیں ہے اور جو بیان کئے ہوئے دعوے
گو اہی و تجریر وغیرہ سے ثابت نہیں کرتا اور جو اول و آخر بات کو نہیں جانتا یہ سب اپنے
مطلب کا نقصان کرتے ہیں -

۵۷ - ہمارے گواہ ہیں ایسا کہ اگر گواہوں کو حاضر نہیں کرتا ان سببوں سے حاکم کو
بارنیوالا جانے -

۵۸ - جو مدعی حاکم کے روبرو کہتا ہے اور مدعا علیہ کے سامنے کچھ پو پوتا نہیں ہے وہ پو پو
کا بڑا جھوٹا مقصود ہو کر قتل و جرماتہ کے لائق ہوتا ہے -

۵۹ - جو مدعی یا مدعا علیہ جتنے دھن کو چھوٹے بیان کرتا ہے اتنے دھن کا دو خیزتا اور ان
دونوں سے راہ لیوے اور یہ دونوں ادھرم کے جانشین والے ہیں -

۶۰ - جب مدعا علیہ عدالت میں آکر کہے کہ میں اسکا دھن نہیں لیا ہے تب مدعی حاکم کے
روبرو میں سے زیادہ گواہوں کے وسیلے سے اپنے دے ہوئے دھن کو ثابت کرے -

۶۱ - جو گواہان جب عدالت مقدامین مقرر ہوئے ان میں جیسا کہ وہ لوگ سچ بولیں سچ کہتے ہیں -

अर्थऽपव्ययमानन्तु करणो न विभावितम् ॥ तपयेद्धनिकस्य
 र्थं दराडेलेशं च शक्तितः ॥ ५१ ॥ अपह्वेऽधमर्गास्य देहीत्यु-
 क्तस्य संसदि ॥ अभियोक्तादिशोद्देश्यं करणां वान्यदुद्दिशेत्
 ॥ ५२ ॥ अद्देश्यं यच्च दिशति निर्दिश्यापह्वते च यः ॥ यश्चाधरो
 चरानर्था न्विगीतान्नावबुध्यते ॥ ५३ ॥ अपदिश्यापद्देश्यं
 च पुनर्यस्त्वयधावति ॥ सम्यक्प्रशिहितं चार्थं पृष्ठः सन्ना
 भिनन्दति ॥ ५४ ॥ असंभाष्ये साक्षिभिश्च देशे संभाषते मि-
 थः ॥ निरुच्यमानं प्रश्नं च नेच्छेद्यश्चापि निव्यते त ॥ ५५ ॥

۵۱۔ مدعی کے عرض کئے ہوئے دعوے سے مدعا علیہ نے انکار کیا اور مدعی نے گواہی
 گواہان و پیشی دستاویزات وغیرہ سے اپنے دعوے کو ثابت کیا تو راجہ قمر بن دینے والے
 کے روپیہ کو نقص مفروض سے ملا دے اور لحاظ حیثیت سزا بھی شخص مفروض کو دیوے۔
 ۵۲۔ عدالت میں حاکم نے شخص مفروض سے کہا کہ قمر بن دینے والے کا روپیہ دے دو
 اور مفروض نے جواب دیا کہ اس نے نہیں لیا ہے اس وقت مدعی گواہی و تحریر وغیرہ وجہ ثبوت کو
 پیش کرے۔

۵۳۔ جس شہر میں مدعا علیہ کا قیام کیس وقت میں بھی ممکن نہیں اور مدعی اس شہر کو لکھنؤ
 کے کہ اس شہر کو مینے نہیں کہا اور وہ مدعی اول آفر خلافت بولتا ہے۔

۵۴۔ اور جو کہتا ہے کہ اس نے میرے ہاتھ سے اس قدر سونا لیا ہے ایسا لکھنؤ کے کہ
 میرے لڑکے کے ہاتھ سے لیا ہے اور جس بات کو حاکم پوچھتا ہے اس کو ثابت نہیں کرتا۔

۵۵۔ اور جو خلوت میں گواہوں سے گفتگو کرتا ہے اور سوال کو قائم کرنے کے واسطے حاکم
 سوال کرتا ہے اس کا جواب نہیں دیتا اور جو ایک مقام میں قیام نہیں رہتا۔

सद्भिराचरितं यत्स्याधार्मिकैश्च द्विजातिभिः ॥ तद्देशकुलजा-
तीनामविरुद्धं प्रकल्पयेत् ॥ ४६ ॥ अधमरार्थसिद्ध्यर्थमु-
त्तमरौचचोदितः ॥ नापयेद्वनिकस्यार्थमधमरार्थद्विभावि-
तम् ॥ ४७ ॥ येर्यैरुपायैरर्थं स्वंप्राप्नुयादुत्तमरार्थकः ॥ ते तैरुपा-
यैः संगृह्यादापयेदधमरार्थकम् ॥ ४८ ॥ धर्मे रात्र्यवहारे रात्र-
लेन चरितेन च ॥ प्रयुक्तं साधयेदर्थं पंचमेन बलेन च ॥ ४९ ॥
यः स्वयं साधयेदर्थमुत्तमरार्थः ॥ अधमरार्थकात् ॥ न संराजाभि-
योक्तव्यः स्वकं सन्साधयन्धनम् ॥ ५० ॥

۴۶- دھرماتما اچھے راج کو گونے جس دھرم پر عمل کیا ہے اُس پیش و کل اوقات کے موافق دھرم کو بخوبی کرے۔
۴۷- قرضہ دینے والے نے راجہ کے رو برو اپنے دیئے ہوئے دھن کو ملنے کیوں اسلے
عصر ضن کیا اور گواہ اور تحریر وغیرہ ثبوت سے اُس قرضہ کو ثابت کیا تو راجہ اس کے دھن
کو قرضہ سے دلاوے۔
۴۸- جس جس تدبیر سے قرضہ دینے والا اپنے دھن کو پاوے اُس اُس تدبیر سے قرضہ
کو پکڑ کر راجہ دھن کو دلاوے۔
۴۹- دھرم و ہیو ہار (یعنی گواہی و تحریر وغیرہ) و فریب و اجرت (یعنی برت و پاس و قنات
ان پانچو تدبیروں میں سے کسی تدبیر سے اپنے دیئے ہوئے دھن کو وصول کرے۔
۵۰- جو قرضہ دینے والا اپنے روپیہ کو مفروض آدمیوں سے بذریعہ تدبیر ذاتی کے وصول
کرتا ہے اسکو راجہ منع کرے کہ ہمارے یہاں مالش کیوں نہ کی آپ اپنی تدبیر سے کیوں
لیتا ہے۔

दातव्यं सर्ववर्गोभ्यो राजा चौरैर्हृतं धनम् ॥ राजा तदुपयुज्या-
न चौरस्याप्नोति किल्बिषम् ॥ ४० ॥ जातिजानपदान्धर्मान्श्री-
णीधर्मान्चधर्मवित् ॥ समीक्ष्य कुलधर्मान्च स्वधर्ममप्रतिपा-
लयेत् ॥ स्वानिकर्माणि कुर्वाणा दूरे सन्तोऽपि मानवाः ॥ प्रि-
याभवन्ति लोकस्य स्वेवेकर्मण्यवस्थिताः ॥ ४१ ॥ नोत्साद-
येत्स्वयं कार्यं राजानां व्यस्य पूतयः ॥ न च प्रापितमन्येन प्रसे-
दर्थं कथंचन ॥ ४२ ॥ यथा न यत्यस्तु कथा ते मृगस्य मृगयुः पद-
म् ॥ न ये तथानुमानेन धर्मस्य ह्यतिः पदम् ॥ ४३ ॥ सत्यमर्थं
च सम्यग्देवात्मानमथ साक्षिणः ॥ देशं रूपं च कालं च व्यव-
हारविधौ स्थितः ॥ ४४ ॥

۴۰۔ راجہ چور کی چورائی ہوتی چیز کو لیکر سب درنوں کو دیوے (یعنی جسکی چیز ہے اسکو دیوی
اگر اس چیز کو راجہ آپ لے لے تو جو پاپ چور کو ہوتا ہے وہ راجہ کو ہووے
۴۱۔ جات دھرم و دلش دھرم و سپہ داس وغیرہ دھرم و کل دھرم ان سب دھرموں کو
دیکھ کر اپنے دھرم کو قائم کرے۔

۴۲۔ اپنے کرم کو کٹے ہوئے دو بھی رہنے والے آدمی سنار کو پیار سے ہوتے ہیں
۴۳۔ راجہ دراجہ کے نوکر آپ سے کام کو پیدا نکرین اور مدعی و مدعا علیہ کے عرض کئے ہوئے
کام کو دولت کی حرص سے ترک نہ کرے (اس مقدمہ کا فیصلہ راستی سے کرے)۔
۴۴۔ جس طرح شکاری آدمی زخمی ہرن کے بدن سے زمین پر قطرات خون گرنے سے اسکا
مقام ڈھونڈ لیتا ہے اسی طرح راجہ خیال سے دھرم بد کو حاصل کرے
۴۵۔ راجہ طریق بیوہ پر قائم ہو کر راستی و صل مطلب آتا (یعنی تجویز وغیرہ) و گواہ و دلش
دروپ و کال ان سب کو دیکھے۔

मनायमिति यो ब्रूयात्निधिं सत्येन मानवः ॥ तस्यादहीतवड्भा
 गं राजा द्वादशमेव वा ॥ ३५ ॥ अन्ततस्तु वदं सराड्यः स्ववित्तस्यां
 शमममम ॥ तत्रैव वानिधानस्य सारं व्यायात्पीयसी कला-
 म् ॥ ३६ ॥ विद्यते तु ब्राह्मराजो दद्यात्पूर्वोपनिहितं निधिम् ॥ अ-
 शेषतोऽप्यादहीत सर्वस्याधिपतिर्हिंसः ॥ ३७ ॥ यस्तु पश्येन्नि-
 धिराजा पुराणां निहितं सितौ ॥ तस्माद्विजेभ्यो रत्नार्द्धमर्द्धको-
 शो प्रवेशयेत् ॥ ३८ ॥ निधीनास्तु पुराणानां धातूनामेव च क्षि-
 तौ ॥ अर्द्धमात्रं सराजराजाभूमेरधिपतिर्हिंसः ॥ ३९ ॥

۳۵۔ جو چیز زمین میں گرہی ہے اسکو راجہ کے روبرو لیجیے اور کوئی دوسرا آدمی کے کہ
 چیز ہماری ہے اور صورت اور لقاؤ کے وسیلہ سے جیسی ہے ویسی ثابت کرے تو اس چیز کو
 وہی پاوے اور اس چیز کا چھٹھواں حصہ راجہ کیوں دے وہی نہ کے مالک کی صفت و بے
 صفتی کو دیکھ کر چھٹے تین کر کے صفت والے سے چارھواں حصہ اور بے صفت
 والے سے چھٹھواں حصہ کیوں دے۔

۳۶۔ اگر چھٹھواں حصہ پاوے تو اپنی چیز کا آٹھواں حصہ جرمانہ دیوے یا اس چیز بد فونہ کے
 حصہ قلیل کے برابر اپنے گھر سے جرمانہ دیوے اور تین حصہ کا موافق طریقہ بد فونہ بالا سمجھا جائے
 ۳۷۔ اگر نیڈت برائے چیز بد فونہ کو پاوے تو وہ اس تمام چیز کو کیوں دے کیونکہ وہ سب کا
 مالک ہے۔

۳۸۔ اگر راجہ چیز بد فونہ کو خود پاوے تو آٹھواں حصہ سے آدھا برابر سون کو دیوے اور آدھا
 اپنے خزانہ میں رکھے۔

۳۹۔ چیز بد فونہ یا فحشہ کے نصف حصہ کو لینے والا راجہ ہی کیونکہ حفاظت کرتا ہے اور
 سب کا مالک ہے۔

प्रराष्ट्रस्वामिकं रिक्थं राजान्यन्धं निधापयेत् ॥ अर्वाक्य-
 न्दाष्ट्रे त्वामीपरेण च पतिर्हरेत् ॥ ३० ॥ समेदमितियो ब्रूयात्
 सोऽनुयोज्यो यथाविधि ॥ संवाद्यस्य संख्यादीन्वामीतद्व्य-
 मर्हति ॥ ३१ ॥ अवेद्यानोनवस्य देशं कालं च^१ वतः ॥ वरारि-
 यं प्रमाणां च तत्समं दण्डमर्हति ॥ ३२ ॥ आदरीताथ वड्भागां
 प्रराष्ट्राधिगताः ॥ दशमं द्वादशं वापि सतां धर्ममनुस्मर-
 न् ॥ ३३ ॥ प्रराष्ट्राधिगतं द्रव्यं सिद्धेद्युक्तैरधिष्ठितम् ॥ यांस्तथ
 चौराश्च लूनीयात्तान् राजेभेन घातयेत् ॥ ३४ ॥

۳۰ - جس دولت کا کوئی مالک نہیں ہے اس دولت کو تین سال تک راجہ اپنے پاس رکھے اگر تین سال کے اندر اسکا مالک آئے تو اس دولت کو پاؤ اور بعد تین سال کے راجہ آپ لے لے۔

۳۱ - جو آدمی راجہ کے روبرو جا کر کہے کہ یہ چیز ہماری ہے تو اس سے بابت صورت مقدم اس چیز کے سوال کرے جب وہ اس چیز کی تعداد و صورت کو صحیح بتلاوے وہ اس چیز کو پاوے۔

۳۲ - جب اوپر کی ہوئی چیز کی تعداد و رنگ اور مقام و وقت کو نہ بتلاوے تب اس چیز کے برابر سزا پاوے۔

۳۳ - اس چیز کے چھٹھوین دسویں بارھویں حصہ کو بطور خرچ حفاظت کے لے لے اچھے لوگوں کے دھرم کو خیال کرنا ہو اراہ حصہ کا تقرر مالک کے بے صفتی و صاحب صفتی کو دیکھ کر کرے۔

۳۴ - پڑی ہوئی چیز لے تو اسکی حفاظت اچھے لوگوں سے کرا کے رکھے اور راجہ اسکی چورانے والوں کو بھی ہاتھی سے مروا دے۔

अर्थनर्थावुभौबुद्धाधर्माधर्मौचकेवली॥ वर्राक्रमेरासर्वा
 शिपश्येत्कार्याशिकायिरागाम्॥ २४॥ बाह्यैर्विभावयेत्सिंगै
 र्भावमन्तर्गतंनराम्॥ स्वरवर्णगिताकारैश्चसुवाचेष्टितेन-
 च॥ २५॥ आकारैरिंगितैर्गत्याचेष्टयाभाषितेनच॥ नेत्रवक्त्र
 विकारैश्चपृथक्तेऽन्तर्गतंमनः॥ २६॥ बालरायादिकंरिक्त्यंता-
 वज्ञानानुपालयेत्॥ यावत्सस्यात्समाहृतोयावच्चातीतशेष-
 वः॥ २७॥ वसापुत्रासुचैवंस्याद्रक्षणांनिष्कुलासुच॥ पतिव्र-
 तामुचस्त्रीषुविधवास्वातुरासुच॥ २८॥ जीवन्तीनांतुतासां-
 येतन्नेपुःस्वबान्धवाः॥ ताञ्छिष्याच्चौरदराडेनधार्मिकःपु-
 थिवीपतिः॥ २९॥

۲۴ امر واجب و غیر واجب کو تحقیق کر کے اور صرف و محرم و داحرم پر لحاظ کر کے ان دینی
 براہمن و کشتری وغیرہ کے سب مفومات کو درجہ وار دیکھیے۔

۲۵ سداوز و صورت و قیافہ و اشارہ وغیرہ علامات سیر دلی کے ذریعہ سے آدمیوں کے
 مانی انصیر کو جاسکتے ہیں۔

۲۶ صورت و لہرہ درختار و گفتار و چہرہ و اشارہ چشم انھوں کے وسیلے سے دل کی
 بات جانی جاتی ہے۔

۲۷ لا دارت لکے کی دولت کو اس کے چچا وغیرہ لیتے ہوں تو اس دولت کو راجہ قوت
 کت اپنے پاس رکھے جب تک اس کا سہا و تن کرم نہوا و عہد طفولیت آخر نہو۔

۲۸ بانجھ دلا ولد و خاندان سے نکالی ہوئی پت پرتا وراثت و رکنی ان سب کی دولت
 کی حفاظت راجہ کر کے کوئی لینے نہ پاوے۔

۲۹ ان سبھوں کے جیتے جی انکی دولت کو انھوں کے رشتہ دار لے لیوں تو دھرم اتاراج
 اس دولت کے لینے والے کو چر کی طرح سزا دیوے۔

पादोधर्मस्य कर्तारं पादः साक्षिगाम् च्छति ॥ पादः सभासदः
 सर्वान्पादो राजानम् च्छति ॥ १८ ॥ राजा भवत्यनेनास्तुमुच्य-
 त्ते च सभासदः ॥ एनगच्छति कर्तारं निन्दार्हो यत्र निन्द्यते ॥
 १९ ॥ जातिमात्रोपजीवी वा कामं स्याद्वा क्षराब्रुवः ॥ धर्मप्र-
 वक्तान् पतेर्न तु शूद्रः कथंचन ॥ २० ॥ यस्य शूद्रस्तु करुते राजो
 धर्मविवेचनम् ॥ तस्य सीरतितदास्यं के गौरिव प्रयतः ॥ २१ ॥
 ॥ यदा शूद्रशूद्रभूयिषं नास्तिकाक्रान्तमद्विजम् ॥ विनश्यत्याशु
 तत्कत्तनं दुर्भिसव्याधिपीडितम् ॥ २२ ॥ धर्मासनमधिष्ठाय सं-
 वीतांगः समाहितः ॥ प्रराम्य लोकपालेभ्यः कार्यार्थं नमा-
 रमेत् ॥ २३ ॥

۱۸- ادھرم کے چار حصہ ہوتے ہیں ایک ایک حصہ کو ادھرم کرنیوالا دگواہ و وزیر و راجہ
 یہ چار دپاتے ہیں۔

۱۹- جوان نندا کے قابل آدمی نندا کو پاتے ہیں وہاں راجہ پاپے علیحدہ ہوتا ہے
 اور سجھائیں بیٹھے والے وزیر بھی پاپ سے چھوٹ جاتے ہیں ادھرم کرنیوالے ہی کو
 پاپ لگتا ہے۔

۲۰- جو ذات ہی میں برہمن ہو اور برہمن کا کرم کچھ بھی نہ کرنا ہو وہ کو بھی وہ راجہ کو دھرم کا
 آپدیش کر سکتا ہے اور شूدر کیسی ہی ہو وہ آپدیش نہیں کر سکتا۔
 ۲۱- جس راجہ کے دھرم کا بجا شوڈر کرتا ہے اس راجہ کا راج اس کے دیکھتے ہی دیکھتے ٹٹ
 جاتا ہے جیسی دلدل میں گتو ٹھپس کر مر جاتی ہے۔

۲۲- جس راجہ میں شوڈر اور ناشک بہت ہیں برہمن کو شتمری و دیشیہ بنیں ہیں وہ تمام
 راجہ قحط اور آفت سے پریشان ہو کر جلد مٹ جاتا ہے۔

۲۳- دھرم سجھائیں بیٹھے کرنیوالے ہی کو چھپا کر کیل ہو کر لوکیا لون کو پرنام کر کے کام کا کو بھی شتم
 کرے۔

धर्मो विदुस्त्वधर्मेण सभां यत्रोपतिष्ठते ॥ शत्रुं चास्य न हंत
 न्ति विदुस्तत्र सभासदः ॥ १२ ॥ सभां वान प्रवेष्टव्यं वक्तव्यं वा-
 समज्जसम् ॥ शत्रुवन्विश्रुवन्वापिन रोभवति किल्बिषी ॥ १३ ॥
 यत्र धर्मो ह्यधर्मेण सत्यं यत्राचूचेन च ॥ हन्यते प्रेक्षमाणानां
 हतास्तत्र सभासदः ॥ १४ ॥ धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षि-
 तः ॥ तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मानो धर्मो हतोऽवधीतः ॥ १५ ॥ व-
 यो हि भगवान् धर्मस्तस्य यः कुरुते ह्यलम् ॥ वधतन् विदुर्देवा-
 स्तस्माद्धर्मं न लोपयेत् ॥ एकस्व सुहृद्धर्मो निधनेऽप्यनुया-
 जेयः ॥ शरीरेण स मन्नाशं सर्वमन्यद्विगच्छति ॥ १६ ॥

۱۲۔ دھرم سے بیدھا ہوا دھرم جس سبھا میں رہتا ہے وہ سبھا کے بیٹھنے والے اس دھرم کو
 دوزخ میں کر سکتے ہیں۔ سب سبھا کے بیٹھنے والے دھرم سے بیدھ گئے ہیں۔
 ۱۳۔ سبھا میں جانا پنا ہے اگر جانا تو صحیح بات کہنا چاہئے اگر جان کر صحیح نہ بولے یا خلاف
 بولے تو پاپی ہوتا ہے۔

۱۴۔ جہاں دھرم سے دھرم اور جھوٹ سے سچ مارا جاتا ہے اور دیکھنے والے اس کو دوزخ میں
 کر سکتے ہیں۔ وہاں گویا سبھا کے مالک ہی مارے گئے ہیں۔

۱۵۔ مارا گیا دھرم مارتا ہے اور حفاظت کیا گیا دھرم حفاظت کرتا ہے دھرم ہنگو نہ مارتا
 اس لئے دھرم کو نہ مارتا چاہئے۔

۱۶۔ بھگوان جو دھرم ہے اس کو برکھ یعنی بیل کہتے ہیں اور جو اس کو مارتا ہے اس کو بریل کہتے ہیں
 اس لئے دھرم کو نہ بول دگرتا چاہئے۔

۱۷۔ دھرم ہی دوست ہے اور وہی ساتھ جاتا ہے اور زن و فرزند وغیرہ سب ہم کے ساتھ
 ہی چھوٹ جاتے ہیں۔ اگر کوئی دھرم کو ہی ساتھ جاتا ہے وہ بھی دوست ہے اس کا جواب یہ کہ دھرم ہی
 دینے کیو اس لئے اور دھرم نتیجہ نام نہ دیتے کیو اس لئے ساتھ جاتا تو جو نتیجہ دلخواہ دینے کیو اس لئے ساتھ جاتا وہی دوست کہلاتا ہے۔

سُتری پُندرمو^۱ ویभागश्च द्यूतमाह्वयसवच॥ पदान्यश्चादशैता-
 निव्यवहारस्थिताविह॥ ७ ॥ एवुस्थानेषु भूमिहं विवाहं चर-
 तान्हरागाम॥ धर्मशास्वतमाश्रित्य कुर्यात्कार्यं विनिरास्यम्॥
 ८ ॥ यदा स्वयं न कुर्यात्सुच्यतिः कार्यदर्शनम्॥ तदानि यु-
 ज्ञ्याद्विद्वांसं ब्राह्मणां कार्यदर्शने॥ ९ ॥ सोऽस्य कार्यं शिष्यं
 पश्येत्सम्यैरेव त्रिभिर्द्वितः॥ सभा मेव प्रविश्याश्रमासीनः
 स्थित एव वा॥ १० ॥ यस्मिन्देशे निधीरन्ती विप्रवेदविदस्त्र-
 यः॥ राज्ञश्चाधिकतो विद्वान्ब्रह्मरास्तांसभां विदुः॥ ११ ॥

۱- سُتری پُندرمو کا وہم۔ یقیم حصقل شراکت۔ قمار بازی و جنگ جالوران وغیرہ اس
 لٹکسین یہ اٹھارہ طرح کے مقدمات مقدم رکھے گئے ہیں اور سب مقدمات انھیں میں
 شامل ہیں۔

۸- راجہ ہمیشہ وہم کی پناہ میں ہو کر ان اٹھارہ طرح کے مقدمات میں بہت کار پر وارون
 کے خاص کاموں کو غور سے دیکھے۔

۹- جب راجہ آپ کا مومن کو ملاحظہ نہ کرے تب بیڈت برائیں کو کام دیکھنے کا حکم دے
 ۱۰- وہ برائیں عدالتِ عالیہ میں بیٹھ کر خواہ کھڑے ہو کر تین بیڈرون کے ساتھ راجہ کو کام
 کو دیکھے۔

۱۱- جس ملک میں ایک برائیں بیڈت و بیڈر ہے ہوئے تین برائیں کے ساتھ مقدمات
 دیکھنے کے واسطے سوائق حکم راجہ کے بیٹھتا ہے اس سبھا کو سری برہما جی کی سبھا جانتا چاہئے

۱۲- سبھا قول میں کہ نہ دھرتی کہ راجہ کے سپاہی سبھا شہر و صوم شاستر عا سب ششی سونا گ پانی اٹھ ارکان کار و دانی
 کے ہیں اسباب میں قول برہمت دیاس بندرہ و بیڈر اودے دو پوار و دو شلو و صوم سوتر و پر پر شہرت و ناکشہر پوارک
 سکرتت و متبہ پران لائن ملاحظہ ہیں کہ کس کس کام پر کون کون قوم مقرر کرنا چاہئے۔

व्यवहारान्दिदमुस्तुवाहसौ:सहयार्थिव:॥ मंत्रज्ञैर्मंत्रिभि
 श्चैवविनीतःप्रविशेत्सभाम्॥ १॥ तत्रासीनःस्थितोवापिपा
 रीमुद्यम्यदक्षिराम्॥ विनीतवेषाभरताःपश्येत्कार्याणि
 कार्थिराम्॥ २॥ प्रत्यहंदेशदृष्टैश्चशास्त्रदृष्टैश्चहेतुभिः॥
 अष्टादशसुमार्गेषुनिवृत्तानिष्ठयकृष्टयक॥ ३॥ तेषामाद्य
 च्छरासनंनिक्षेपोऽस्वामिविक्रयः॥ सम्भूयचसमुत्थानंद
 त्तस्थानपकर्मच॥ ४॥ वेतनस्यैवचादानंसंविदश्चव्यतिक्र
 मः॥ कयविक्रयानुशयोविवादःस्वामियालयोः॥ ५॥ सी
 माविवादधर्मश्चयारुख्येदराडवाचिके॥ स्तयंचसाहसंचैव
 स्त्रीसंग्रहसामेवच॥ ६॥

- ۱- راجہ مع شیران سلطنت دہراہستان کے مقدمات کے ملاحظہ کی خواہش سے سادی
- پوشاک پہن کر راج سبھامین داخل ہو
- ۲- سبھامین بیٹھکر خواہ کھڑا ہو کر اسناہا تھ اوٹھا کر سادی پوشاک پہن کر کارپردہ
- سلطنت کے کاموں کو دیکھے۔
- ۳- داد و ستد قرضہ وغیرہ اٹھارہ طرح کے مقدمات مفصلہ ذیل کو ملک و قوم و درجہ مکانی
- و شاستر سے جانے ہوئے گواہ و سوگند وغیرہ کے وسیلہ سے علیحدہ علیحدہ سر روز فور کرے۔
- ۴- اٹھارہ طرح کے مقدمات یہ ہیں داد و ستد قرضہ۔ اثاثت۔ لاوارثی چیز کا بیچنا۔ شراکت
- قرضہ وغیرہ سے انکار کرنا۔
- ۵- تنخواہ یا اجرت کا نہ دینا عہد شکنی کرنا خرید و فروخت میں ٹکرا و رنج پیدا ہونا۔ مالک و
- نوکرا جھگڑا۔
- ۶- تنازع حدود الارضی۔ و تنام دی۔ مار پیٹ۔ خفیہ چوری۔ ظاہر زہنی و دوا کر زنی
- عورات کا زیروستی لیجانا۔

गत्वा कसान्तरं त्वन्यत्समनुज्ञाप्य तं जनम् ॥ प्रविशेन्नोजनार्थं च स्त्रीवृत्तोऽन्तःपुरं पुनः ॥ २२४ ॥ तत्र भुक्त्वा पुनः किंचित् कार्यं धीरैः प्रहर्षितः ॥ स विशोक्तुं यथा कालमुत्तिष्ठेच्च गतं तमः ॥ २२५ ॥ एतद्विधानमातिष्ठेद्दोगः पृथिवीपतिः ॥ अश्वस्य सर्वमेतत्तुभ्यं तेषु विनियोजयेत् ॥ २२६ ॥

इति मानवे धर्मशास्त्रे भृशुप्रोक्तायां संहितायां
राजधर्मो नाम सप्तमोऽध्यायः ७

۲۲۴- دو سکر استعان میں جا کر وہاں کے آدمیوں کو حکم دے کر پھر بھوجن کرے
ورقون کے مملات میں داخل ہو۔
۲۲۵- پھر تھوڑا کھانا کھا کر شیرازی آواز سے خوش ہو کر خواب میں آرام کر کے
دمنت کو رفع کر کے وقت مناسب پر خواب سے بیدار ہو۔
۲۲۶- جو راجہ تندرست ہو وہ اس طریق چلے اگر آپ تندرست ہو تو ان سب امور
سلطنت کے کرنے کو دہیرون کو حکم دے۔

من جی کا دھشام بترگ جی
سنگمتا کا ساتوان ادھیاسماپت ہوا

۴۴۴۔ وقت شام سبز ہیا کر کے خلوت گاہ میں مسجح ہو کر دوت و خفیہ گویاں کچھ کر لے۔
لائق کاموں کو سنئے۔

सहसर्वाः समुत्पन्नाः प्रसमीक्ष्या परोभूशम् ॥ संयुक्तांश्च-
 वियुक्तांश्च सर्वोपायान् हजेद्बुधः ॥ २१४ ॥ उपेतारमुपेयंच स-
 र्वोपायांश्च कृत्स्नशः ॥ एतंत्रयं समाश्रित्य प्रयतेतार्थसिद्ध-
 ये ॥ एवं सर्वमिरं राजा सहस्रमंत्र्यमंत्रिभिः ॥ व्यायम्याश्रुत्य
 मध्याह्ने भोक्तुमन्तः पुरं विशीत् ॥ २१६ ॥ तत्रात्मभूतैः कालज्ञै-
 र्हार्यैः परिचारकैः ॥ सुपरीक्षितमन्त्राद्यमद्यान्मंत्रैर्विधाय-
 हैः ॥ २१७ ॥ विषधैरगर्दैश्चास्य सर्वद्रव्याणि योजयेत् ॥ वि-
 षघ्नानि चरत्नानि नियतो धारयेत्सदा ॥ २१८ ॥

۲۱۴- ایک ہی زمانہ میں خزانہ کا خالی ہونا اور پرکرت کا کوپ اور دوست سے رنج
 واقع ہو تو نوہ نکرے بلکہ سام وغیرہ جو تدبیریں مین آئین سے ایک ایک یا سب کو کر
 ۲۱۵- تدبیر تدبیر کا بتانے والا تدبیر کے وسیلے سے جو چیز حاصل ہو ان تینوں کا آخر
 کر کے حصول مطلب کی واسطے تدبیر کرے۔

۲۱۶- اس طرح ان باتوں کو وزیروں کے ساتھ بجا کر کے اسکے بعد کسرت یا ورزش کر
 اور وقت دوپہر غسل کر کے کھانا کھانے کی واسطے محل میں داخل ہو۔

۲۱۷- اپنے برابر کال کا جاننے والا دولت وغیرہ پائے سے بھید نہ کھولنے والا ایسا
 جو دولت و اور زہر کا دور کر نیو والا جو منتر ہے ان سب کے وسیلے سے جس غلہ کا امتحان ہو گیا
 اس کو کھائے۔

۲۱۸- زہر اور بیماری کو فنا کرنے والی جو چیزیں مین انکو سب چیزوں مین ملانا چاہئے
 اور جو زہر کے فنا کرنے کے مین انکو ہر وقت ترتیب بدن کرنا سنا ہے زہر آمیز
 غلہ کو دیکھنے سے چکور نام پرند کی آنکھ سرخ ہو جاتی ہے اس واسطے انکو غلہ دکھلا کر
 امتحان لینا چاہئے۔

धर्मज्ञंचकतज्ञंचतुष्टप्रकृतिमेवच॥ अनुरक्तस्थिरामंल-
घुमित्रं प्रशस्यते॥ २०६॥ प्राज्ञंकुलीनंशूरंचदसंदातारमे-
वच॥ कतज्ञंधृतिमंतंचकष्टमाहुररिंबुधाः॥ २१०॥ आर्य-
तापुतमज्ञानंशौर्यंकरुणावेदिता॥ स्थूलतस्थंचसततमु-
दासीनयुरादयः॥ २११॥ सेम्यांसस्यप्रदानित्वंयशुवृद्धि-
करीमपि॥ परित्यजेन्मृपोभूमिमालार्थमविचारयन्॥ २१२॥
॥ आपदर्थंधनंरसेदारांरसेर्जनैरपि॥ आत्मानंसततंरसे
हारेरपिधनैरपि॥ २१३॥

۲۰۹- ایکار اور دھرم کا جاننے والا مستقل کام شروع کر نیوالا اچھی فصلت والا محنت سے بھرپور وجود دوست ہے وہ نہایت اچھا ہے۔

۲۱۰- جو دشمن نہایت ہے اور بڑے کل میں پیدا ہوگا اور شور مچا دے گا اور دانا اور پاک جاننے والا اور دھیر ہے وہ بڑا کھن ہے یعنی وہ قابو میں نہیں آسکتا اس بات کو نیکو بننے کا ہے۔

۲۱۱- جو راہ او اس میں دھرم زیادہ جاننے والا دشمن دکر مال و ہر ایک وقت بہت دینے والا ہے اسکی پناہ میں ہو کر دشمن کے ساتھ جنگ کرے۔

۲۱۲- جو زمین بے عیب اور دھانیہ دینے والی اور ہمیشہ جانوروں کی ترقی کو نیوالی اسکو بھی اپنی آتما کی حفاظت کے واسطے ترک کرے یعنی جو دن ترک کہنے اسی زمین کے آتما کی حفاظت ہو سکے تو بھی اس زمین کو ترک کرے اور آتما کی حفاظت اور طرح سے کرے۔

۲۱۳- وقت مصیبت کے واسطے دولت فراہم کرے اور دولت کے وسیلے عورت کی حفاظت کرے اور عورت اور دولت کے وسیلے سے آتما کی حفاظت کرے۔

سर्वकर्मतमायत्तं विधाने देवमानुषे ॥ तयोर्देवमचिन्त्यं तु ना
 मुवे विद्यते क्रिया ॥ २०५ ॥ सहवापि यजेद्युक्तः सन्धिं कृत्वा प्र-
 यत्नतः ॥ मित्रं हिरण्यं भूमिं वा सपश्यंस्त्रिविधं फलम् ॥ २०६ ॥
 ॥ याद्रीं शाहं च सम्येक्ष्य तथा कृत्वा च मराडते ॥ मित्राद्या-
 प्यमित्राद्याचा फलमवाप्नुयात् ॥ २०७ ॥ हिरण्यं भूमिं
 प्राप्त्वा यार्थिजनतर्पेयते ॥ यथा मित्रं धुवं तज्ज्वा कशम-
 प्यायति समम् ॥ २०८ ॥

۲۰۵- دیو کرم اور انش کرم انھیں دونوں کرموں کے اختیار میں کرنے کے لائق جو چیزیں ہیں
 انھیں دیو کرم تو لائق فکر کرنے کے نہیں ہے مگر انش کرم میں بچار ہے جیسے اس جنم
 میں جو کام کرے اسکو خوب سمجھ کر کرے۔

۲۰۶- اس طریق سے جنگ کرے اور اگر وہ راجہ دوستی کرے تو جاتا کا پہل دینے
 دوست وزمین دسونا وغیرہ کا ملنا دیکھ کر اس کے ساتھ ملاپ کرے۔

۲۰۷- راج شٹل میں پارشن گراہ اور اگر ثدان دونوں راجا دن کی صلاح جاتا
 کرے ورنہ بدون مرضی ان دونوں کے جاتا کرنے سے اندیشہ ہے کہ وہ دونوں
 بر پارکریگے سوچ سے صلاح لیکر جاتا کرنے سے دوست خواہ دشمن جاتا کا پہل ملتا ہے۔

۲۰۸- زمانہ حال میں کم قوت دوست اور زمانہ مستقبل میں صاحب ترقی و قائم دل دوست
 کو پارکرا راجہ جیسی ترقی پاتا ہے ویسا ترقی سونا وزمین پاتے سے نہیں پاتا۔

• بچے جنم میں جو باپ اور بچہ کے وہ دیو کرم کھاتا ہے۔

• اس ملک میں جو باپ و بچہ کے وہ انش کرم کھاتا ہے۔

• پارشن گراہ سے وہ راجہ جو بچہ رہتا ہے۔

• کہہ رہا ہے کہ جو اس پارشن گراہ کے بچے پر عمل کرتا ہو جو اپنے شجرہ کے خلاف کام کرتا ہو

त्रयाराणामप्युपायानां पूर्वोक्तानामसम्भवे ॥ तथा युज्येत
सम्यक्नो विजयेतरि पूज्यथा ॥ २०० ॥ जित्वासं पूजयेद्देवान्त्रा-
ह्मणांश्चैव धार्मिकान् ॥ प्रदद्यात्परिहारांश्च ख्यापयेद्भया
निचा ॥ २०१ ॥ सर्वेषां तु विदित्वेषां समासेन च कीर्तितम् ॥
स्थापयेत्तत्र तद्वंशं कुर्याच्च सममक्रियाम् ॥ २०२ ॥ प्रमाराण-
निच कुर्वीत तेषां धर्म्यान् यथोदितान् ॥ रत्नेषु पूजयेद्देवं प्रधान-
नयुरुधैः सह ॥ २०३ ॥ आदानमप्रियकरं दानं च प्रियकारक-
म् ॥ अभीप्सितानामर्थानां काले युक्तं प्रशस्यते ॥ २०४ ॥

۲۰۰- جب تین تدبیر مرقومہ بالا نہ چل سکیں تب ایسے تدبیر سے جنگ کرے جسکے وسیلے
فتحیاب ہی ہوا کرے۔

۲۰۱- فتح حاصل ہونیکے بعد دیوتاؤں اور دھرماتما برہمنوں کا پوجن کرے اور سونا
وغیرہ فتح کی ہوئی چیزوں کو دیوتا اور ریش لوگوں کے واسطے شنگھ کر کے اُس دیش کے
رہنے والوں کو بطور معافی دوام کے دیوے اور سب آدمیوں کو بخوف کرے۔

۲۰۲- مجملاسب کا منشا سمجھا اس راجہ کی نسل میں جو ہوا سکواسی کی گدی پر بیٹھا
اور یہ تم کرنا یہ نکرنا ایسا اس راجہ کو اور اسکے وزیروں کو سمجھاوے۔

۲۰۳- انھوں کا جو آپار شاستر کے موافق دھرم سے شامل ہے
اسکو پرمان کرے اور مع پردھان آدمیوں کے رتنوں سے راجہ کا پوجن
کرے۔

۲۰۴- اگرچہ دلخواہ چیزوں کا لینا رنج کا دینے والا ہے اور دان یعنی چیزوں کا
دینا خاطر خواہ آرام و عیش کا دینے والا ہے یہ بات قطعی ہے تاہم خاص وقت پر دینا دینا
اچھا ہوتا ہے اسلئے اسوقت دان ہی کرنا چاہئے۔

उपरुध्वारिमासीतराष्ट्रं चास्योपपीडयेत् ॥ दूषयेच्चास्यसत
तं यवसानोदके न्यनम् ॥ १६५ ॥ भिन्धाच्चैव तडागानि प्राका-
रपरिखास्तथा ॥ समवस्कन्दयेच्चैनं रात्रौ वित्रासयेत्तथा ॥ १६६
॥ उपजघ्यानुपजपेद्दुष्टं तैव च तत्कृतम् ॥ युक्ते च देवे युज्येत ज-
यप्रेप्सुरपेतमीः ॥ १६७ ॥ साम्नादानेन भेदेन समस्तैरथ वा श्व-
क् ॥ विजेतुं प्रयतेतारीन् युद्धेन कदाचन ॥ १६८ ॥ अनित्यो-
विजयो यस्माद्दृश्यते युद्धमा नयोः ॥ पराजयश्च संग्रामे तस्मा-
द्युद्धं विवर्जयेत् ॥ १६९ ॥

۱۹۵- دشمن قلعہ میں سے یا باہر سے اور جنگ بھی نہ کرتا ہو لیکن اس کو گھیرے رہے اور
اوسکی راج کو تکلیف دے اور گھاس اور لکڑی اور پانی انھوں میں ناکارہ چیز
ڈال کر خراب کرے۔

۱۹۶- تالاب و قلعہ و بالا خانہ و کھائیں ان سب کو کھو دو اسے خوف و دشمن کو باخوف
کرے اور برہمی لیکر رات کو دھکام نام باج کی آواز سے زیادہ تکلیف دے۔
۱۹۷- جو لوگ وزیر وغیرہ راجہ کے خاندان میں راج لینے کی خواہش رکھتے ہوں انکو
توڑ پھوڑ سے ملا کر اپنے قابو میں کرے اور انکو قیافہ سے جانے لے کر اپنے قابو میں نہ لے
فتح کی خواہش کرے اور راجہ خوف چھوڑ کر جب سب گروہ و شاخچے ہوں تب اثر آئی
کرے۔

۱۹۸- سام۔ دان۔ پھیدان میں سے ایک ایک کے وسیلے سے خواہ تھینکے وسیلے
سے دشمنوں کو فتح کرنے کیوں اسے تدبیر کرے نہ صرف جنگ ہی کے وسیلے سے۔
۱۹۹- کیونکہ جنگ میں فتح ہوتی ہی ہے اور ہین بھی ہوتی ہے اس واسطے جنگ نہ کرنا
چاہئے۔

गुल्मांश्चस्थापयेदामान्कृतसंज्ञान्समन्ततः ॥ स्थानेषु ज्ञेयकु-
 शलानभीरुनविकारिणः ॥ १६० ॥ संज्ञतान्योधयेदत्यान्का-
 संविस्तारयेद्धहन् ॥ स्तब्धवावनेन चैवेतान्व्यूहेन व्यूह्य योधयेत् ॥
 ॥ १६१ ॥ स्यन्दनाश्चैः समेषु ज्ञेयेषु पेनो द्विपैस्तथा ॥ वृक्षगुल्मा-
 दतेचापैरसिचर्मा युधैः स्थले ॥ १६२ ॥ कुरुक्षेत्रांश्च मत्स्यांश्च
 पंचालान्श्च रसेन जान ॥ दीर्घाल्लघूंश्चैव नरान् ग्रानीकेषु यो-
 जयेत् ॥ १६३ ॥ प्रहर्षयेद्धलं व्यूह्य तांश्च सम्यक् परीक्षयेत् ॥ चे-
 द्वाश्चैव विजानीयादरीन् योधयतामपि ॥ १६४ ॥

۱۹۰۔ جو حصہ فوج کاغ سنیا پت و بلا و ہیکش کے نیک آدمیوں سے متاثر ہو اور نیام کرنے
 اور بھاننے اور لڑنے کیو اسطے بھیری سکھ وغیرہ با جو کے اشاروں کو سمجھتا ہو اور قیام و جنگ
 میں ہوشیار اور خوف و ہناوت سے خالی ہو ایسے حصہ فوج کو دور دور سب رشاؤں میں ہتھیار
 کے روکنے اور اسکی خواہش دلی جانتے کیو اسطے حکم دیوے۔

۱۹۱۔ فوج تھوڑی ہو تو ملکر جنگ کرے اور بہت ہو تو موافق خواہش اہل کے متفرق کر کے
 جنگ کرے سوچی بیوہ بچہ بیوہ کر کے جنگ کرے۔

۱۹۲۔ برابر زمین میں رتھ اور گھوڑے کے وسیلے سے جنگ کرے اور زمین پر آب میں
 کشتی و ہاتھی سے جنگ کرے اور درخت اور چھاڑی والی زمین پر تیر کمان سے اور ہتھیار
 زمین پر ڈھال تلوار سے جنگ کرے۔

۱۹۳۔ کرکشیتر و ستیبہ و پنچال و سورسین ان ملکوں میں جو آدمی چھوٹے یا بڑے
 پیدا ہوئے ہوں۔ انکو آگے کر کے جنگ کرے۔

۱۹۴۔ بیوہ آراستہ کر کے فوج کو خوش و خرم کرے اور اس فوج کا اچھی طرح امتحان
 بیوے اور دشمنوں کے ساتھ لڑتے ہوئے فوج کی حالت کو دریافت کرے کہ وہ ہتھیار
 ساتھ ملی ہے یا نہیں۔

دंडव्यूहेनतन्मार्गयायात्तुशकटेनवा॥वराहमकराभ्यांवासूच्या
वागरुडेनवा॥१८७॥यतश्चभयमाशंकेततोविस्तारयेदंतं॥य-
मेनचेवव्यूहेननिविशेतसदास्वयम्॥१८८॥सेनायतिवलाध्यसौ
सर्वदिक्षुनिवेशयेत्॥यतश्चभयमाशंकेत्वाचींतांकल्पयेद्विशं॥१८९॥

۱۸۷- ڈنڈ- سکت- براہ- مکر- شوچی- گرہ ران بیوہ کر کے چلے یعنی جب چاروں طرف سے خوف
پیدا ہو تب ڈنڈ بیوہ سے جاوے جب پیچھے خوف پیدا ہو تب سکت بیوہ سے جاوے جب پلوین
خوف پیدا ہو تب براہ اور گرہ ران بیوہ سے جاوے جب آگے پیچھے خوف پیدا ہو تب مکر بیوہ سے جاوے
جب آگے خوف پیدا ہو تب شوچی بیوہ سے جاوے
۱۸۸- جیٹن خوف کا خیال ہو اس طرف فوج کو بڑھاؤ پدم بیوہ کر کے شہر سے نکل کر راجہ
پوشیدہ رہے۔

۱۸۹- سیناپت اور بلا دھیکش کو چاروں طرف میں رکھنا چاہیے اور جس دشا سے خوف
کا خیال ہو اسکو پورب دشا جانو۔

۱- ڈنڈ کی صورت فوج کو ہٹانا ڈنڈ بیوہ کہلاتا ہے شرح اسکی یہ ہے کہ بلا دھیکش آگے درمیان میں راجہ پیچھے فسر فوج دونوں
پلوین باقی اس کے روپر دھکھوڑا پھر پیادہ اس طرح سے لہا اور چاروں طرف سے برابر ہو وہ ڈنڈ بیوہ کہلاتا ہے۔
۲- آگے تھلا مثل گاڑی کے اور پیچھے موٹا یہ سکت بیوہ کہلاتا ہے۔

۳- آگے پیچھے تھلا جو پنج میں موٹا ہو وہ براہ بیوہ کہلاتا ہے۔

۴- آگے پیچھے موٹا جو پنج میں تھلا ہو وہ مکر بیوہ کہلاتا ہے۔

۵- چنبی کی پانت کے مانند آگے پیچھا برابر ہو اور پلو ان آگے رہیں یہ سوچی بیوہ کہلاتا ہے۔

۶- آگے پیچھا تھلا ہو اور پنج میں بہت موٹا ہو وہ گرہ بیوہ کہلاتا ہے۔

۷- چاروں طرف برابر فوج اور درمیان میں راجہ اسکو پدم بیوہ کہتے ہیں۔

۸- دشا باقی دشا گھوڑا دشا پیادہ دشا رتھ کا ایک ایک کرنا اسکا نام سکت کہلاتا ہے دشا سکت ایک سیناپت کہلاتا ہے دشا سناپ
یہ ایک بلا دھیکش کہلاتا ہے۔

मार्गशीर्षे शुभे मासियायाद्यात्रां महीपतिः ॥ फाल्गुणां वाथ
चैत्रं वामासी प्रतियथा बलम् ॥ १८२ ॥ अन्येष्वपि तु कालेषु-
यथापश्येद्भुवं जयम् ॥ तदा यायाद्विग्रहं वचसने चोत्थितेरिषोः
॥ १८३ ॥ कृत्वा विधानमूले तु यात्रिकं च यथाविधि ॥ उपशु-
त्वा स्य दं चैव चारात्सम्यग्विधाय च ॥ १८४ ॥ संशोध्य त्रिविधं
मार्गं ध्वजं च बलं स्वकम् ॥ सायरायिक कल्पेन यायादरिषु
रंजनैः ॥ १८५ ॥ शत्रुसेवी निमित्रे च ह्युत्तरो भवेत् ॥ गतप्र-
त्यागते चैव सहिकस्य तरोरिषुः ॥ १८६ ॥

۱۸۲- راجہ مجھ مہینہ گھن من دشمن کے اوپر جاتے کرے خواہ بھاگتے یا نہیں اپنی فوج کو ہتھیار کرے
۱۸۳- دو ستر وقت پر بھی جب یقیناً اپنی فتح جانیے تب لگاڑ کر کے جاوے اور دشمن کے
اوپر جب دکھ دیکھے تب بھی جاوے۔

۱۸۴- اپنے ملک کی حفاظت کر کے اور دستور کے موافق جاتے کرے وقت کے کام کو کر دینی
سواری و ہتھیار و زہ وغیرہ بدستی تمام ساتھ لیکر دشمن کے ملک میں جا کر جس سے اپنا قیام ہو
اوسکو لیکر اور دشمن کے نوکر و نو کو اپنے اختیار میں لے کر اور دشمن کے ملک کا حال جانتے کرے
دوسرے کا ٹیٹ وغیرہ چار قسم کے آدمیوں کو حفت کرے۔

۱۸۵- تین طرح کے جو راستہ ہیں یعنی جانگل الوپ اٹیک انکو صاف کر کے دینی در
وغیرہ کا مگر اونچی اونچی زمین برابر کر کے اور تھوڑے رزور میں دینے باقی گھوڑا رتھہ پناہ
فوج۔ کاریگر۔ ان سب کو خوراک و ادویہ دست کار وغیرہ سے درست کر کے سنگرام
میں نیک طریق سے جلد دشمن کے شہر میں جاوے۔

۱۸۶- جو اپنا دست دشمن کی خدمت گزاری پوشیدہ کرنا ہو اور جو نوکر وغیرہ اپنے بیان سے
نکل کر بھڑائے ہوں ان دونوں پر ہتھیار ہے کیونکہ انھوں کا اٹھا یا سوا فساد بری شکل سے رفع ہوتا ہے
۱۵۴- دیکھو اسلوک

यदितत्रापिसंपश्येदोषसंश्रयकारितम् ॥ सुयुद्धमेवतत्रापि
निर्विशंकः समाचरेत् ॥ १७६ ॥ सर्वोपायेस्तथाकुर्यान्नीति
ज्ञः पृथिवीपतिः ॥ यथास्याभ्यधिकानस्युर्मित्रोदासीनशत्रु-
वः ॥ १७७ ॥ आयतिंसर्वकार्यभ्रांतदातृत्वंचविचारयेत् ॥
अतीतानांचसर्वेषांगुरादोषोचतत्त्वतः ॥ १७८ ॥ आयत्यां
गुरादोषज्ञस्तदात्वेसिप्रनिश्चयः ॥ अतीतेकार्यशेषज्ञः श-
त्रुभिर्नाभिभूयते ॥ १७९ ॥ यथैनंनाभिसंदध्युर्मित्रोदासीनश-
त्रुवः ॥ तथासर्वसविदध्यादेयसामासिकोनयः ॥ १८० ॥ स-
दातुयानमातिघेदरीशघ्नंप्रतिप्रभुः ॥ तदानेनविधानेनयाया
हरिपुरंशनैः ॥ १८१ ॥

۱۷۶- جب نیاہ لینے میں بھی کچھ نقصان سمجھے تب شک کو دور کر کے اچھی لڑائی کرے۔
۱۷۷- نیت جاننے والا راجہ سب تدبیروں سے اپنے کو ایسا کرے۔
۱۷۸- حسین دوست دادا حسین دشمن یہ سب اپنے سے بڑے
منوں کے پاؤں۔

۱۷۸- تمام کاموں کا دوش اور گن زمانہ ماضی و حال مستقبل سے نسبت رکھو
والا آں سب کو کہا حقہ خیال کرے۔

۱۷۹- ایسا خیال کرنے والا راجہ دشمنوں سے رنج نہیں پاتا۔
۱۸۰- مجملہ سب نیت کا خلاصہ یہ ہے کہ دشمن اور دوست اور دادا حسین سب تکلیف نہ
دے سکیں ایسی تدبیر کرے۔

۱۸۱- جب دشمن کے اوپر جانے کی خواہش ہو تب موافق تدبیر سدرجہ شکوک ہا
آئندہ کے آہستہ آہستہ دشمن کے شہر میں جاوے۔

सकाकिनश्चात्ययिकेकार्येप्राप्तेयदृच्छया ॥ संहतस्यचमि
त्रेगाद्विविधंयानमुच्यते ॥ १६५ ॥ सीरास्यचैवक्रमशोरे-
वात्पूर्वकतेनवा ॥ मित्रस्यचानुरोधेनद्विविधंस्मृतमासन-
म् ॥ १६६ ॥ बलस्यस्वामिनश्चैवस्थितिःकार्यार्थसिद्धये ॥
द्विविधंकीर्त्यतेद्वैधंवाङ्मुरायंगुरावेदिभिः ॥ १६७ ॥ अर्थसं-
पादनार्थंचपीड्यमानस्यशत्रुभिः ॥ साधुबुद्ध्यपदेशार्थद्वि-
विधःसंश्रयःस्मृतः ॥ १६८ ॥ यदावगच्छेदायत्यामाधिक्यं-
ध्रुवमात्मनः ॥ तदात्वेचात्पिकापीडांतदासन्धिसमाश्र-
येत् ॥ १६९ ॥

۱۶۵- وقت در پیشی کا ضروری آپ کیلادشمن پر چڑھائی کرے یہ پہلی چڑھائی ہے اور دوسری کی دوسری چڑھائی ہے۔

۱۶۶- پہلے جنم کے پاس سے یا اس جنم کے پاس سے ہاتھی و گھوڑا دولت وغیرہ ہاتھ سے نکلیا دین اسوقت دوسرے راجہ پر چڑھائی کرے خواہ دولت و ہاتھی و گھوڑا وغیرہ سامان اپنے پاس موجود ہے اور جا نہیں دوست کی حفاظت نہیں ہو سکتی تب اس کے واسطے بنانا چاہئے۔ یہ دو طرح کا قیام ہے۔

۱۶۷- اپنے کام سدھ ہونیکے واسطے ہاتھی و گھوڑا وغیرہ و سنبھاپت (لینے سپہ سالار) کو دشمن کے کئے ہوئے فساد دور کرنے کیواسطے ایک جگہ پر قائم رکھنا یہ پہلا بھید ہوا اور قلعہ میں سے اسیر تمام فوج راجہ کا قائم ہونا یہ دوسرا بھید ہے۔

۱۶۸- دشمن سے دیکھی ہو خواہ دشمن سے دیکھ نہوے ان دو فائدہ دن کے لئے طاقتور ہونے کی پناہ لیوے یہ دو طرح کی پناہ ہے۔

۱۶۹- جب لڑائی کے سچھے اپنی لڑائی کو یقیناً جانے اور اسوقت تھوڑے ہی دشمن وغیرہ کا نقصان دیکھے تب صلح کرے۔

تانسانسار्वانمیسندھیاآتماہیہمیرپنکرمی: ॥ व्यस्येवस-
 मस्यैश्वर्योरुघेरानयेनच ॥ १५६ ॥ सन्धिचविग्रहंचैवयानमा-
 सनमेवच ॥ द्वैधीभावंसंश्रयंचयद्गुणाश्चिन्तयेत्सदा ॥ १६०
 ॥ आसनंचैवयानंचसन्धिविग्रहमेवच ॥ कार्यवीक्ष्यप्र-
 युक्तीतद्वैधंसंश्रयमेवच ॥ १६१ ॥ सन्धित्वद्विविधंविद्याश-
 नाविग्रहमेवच ॥ उभेयानासनेचैवद्विविधः संश्रयः स्मृतः ॥
 १६२ ॥ समानयानकर्माचविपरीतस्तथैवच ॥ तदात्वायति
 संयुक्तः सन्धिर्ज्ञेयोद्विलक्षणाः ॥ १६३ ॥ स्वयंकृतश्चकार्या-
 र्यमकालेकालवत् ॥ मित्रस्यचैवाप्रकृतेद्विविधोविग्रहः
 स्मृतः ॥ १६४ ॥

۱۵۹- ان سب راجاؤن کو سام وغیرہ چار تہ پیردن میں سے جیسا موقع ہو ایک ایک چار
 کے دیلے سے اور اپنی فوج و ہمت سے قابو میں کرنا چاہئے۔

۱۶۰- صلح و بگاڑ و دشمنی کے اوپر چڑھائی و قیام و بھید و کسی زور و راجہ کی پناہ لینا اور
 چھ باتوں کو ہمیشہ خیال کرنا چاہئے۔

۱۶۱- کام کا موقع دیکھ کر ہمہ تلہ ان چھ باتوں کے جہان کی ضرورت ہو وہاں اسکو کرے۔

۱۶۲- صلح - بگاڑ - چڑھائی - قیام - بھید - پناہ لینا - یہ چھ باتیں دو دو طرح کی
 ہیں۔

۱۶۳- استیوقت یا زمانہ آئندہ میں نتیجہ ملنے کے واسطے ایک راجہ کے ساتھ دوسرا راجہ

پر چڑھائی کرنا یہ سمان پان کرنا نام صلح کہاتی ہے اور اگر تم بیان جاؤ گے تو ہم وہاں جائینگے
 یہ کہہ کر صلح کرے تو وہ سمان پان کرنا نام صلح ہے۔

۱۶۴- وقت پر خواہ بے وقت اپنی خواہش سے آپ بگاڑ کیا یہ پہلا بگاڑ ہوا اور اپنے دوست
 کی توہین دیکھ کر توہین کرنے والے سے بگاڑ کیا وہ دوسرا بگاڑ ہوا۔

मध्यमस्यप्रचारंचविजिगीषोश्चवेष्टितम्॥ उदासीनप्रचा-
 रंचशत्रोश्चैवप्रयत्नतः॥ १५५॥ सताःप्रक्षतयोमूलंमराडल-
 स्यसमासतः॥ अष्टौचान्याःसमाख्याताद्वादशीचतुताःसह-
 ताः॥ १५६॥ अमात्यराष्ट्रदुर्गार्थदराडारण्याःपंचचायराः॥
 प्रत्येकंकथिताह्येताःसंक्षेपेराद्विसप्ततिः॥ १५७॥ अनन्तर-
 मरिंविद्यादरिसेविनमेवच॥ श्रीरनन्तरंभिन्नमुदासीनंतयोः
 परम्॥ १५८॥

۱۵۵۔ دشمن و دشمن فتح کی خواہش کرنیوالا ہمیشہ ادا سین ان چاروں کی خواہش لی دیتا
 کرے اور بچا رہے۔

۱۵۶۔ راجہ منڈل کی یہ چار مول پرکرت ہیں آٹھ ساکھا پرکرت ہیں سب ملکر بارہ ہوتی ہیں
 ۱۵۷۔ چار مول پرکرت اور آٹھ ساکھا پرکرت بخون میں ہر ایک کی پانچ پانچ دہیر پرکرت
 ہیں سب ملکر ہتیر پرکرت ہیں۔

۱۵۸۔ اپنے راجہ کے سامنے کا راجہ دشمن ہے اور اسکی سیوا کرنے والا بھی دشمن ہے
 اس راجہ کے ملک سے آگے جو راجہ ۵۰۰ دوست ہے اور دوست سے آگے جو راجہ ۵۰
 دہا ادا سین ہے۔

۲۔ جہم اسکو کہتے ہیں کہ جو دشمن و دشمن فتح چاہئے والے ان دونوں کے ملک کے بیچ میں راجہ رکھتا ہو اور انھیں دونوں
 راجہ کی صلح و جنگ کرا دینے کی طاقت رکھتا ہو۔

۳۔ ادا سین دہا کہ جو دشمن و فتح چاہئے والے دشمن ان تینوں کی صلح و جنگ کرا دینے کی طاقت رکھتا ہو۔
 ۴۔ آٹھ ساکھا پرکرت ہیں دشمن و ملک کے لگا کر دشمن و دشمن ہمت کا دوست دشمن کے دوست کا دوست
 پارشن گراہ اگر تہ پارشن گراہا سارا کر تہا۔

۵۔ پانچ دہیر پرکرت ہیں۔ وزیر راجہ۔ قلمہ دولت۔ ستر۔

जडमूकान्धवधिरांस्तिर्यग्योनान्वयोतिगान् ॥ स्त्रीन्तेच्छव्या
धितव्यंगान्मंत्रकालेऽपसारयेत् ॥ १४६ ॥ भिन्दन्त्यवमतामं-
त्रंतिर्यग्योनास्तथैवच ॥ स्त्रियश्चैवविशेषेरातस्मात्तत्राह-
तोभवेत् ॥ १५० ॥ मध्यंदिनेऽर्द्धरात्रेवाविश्रान्तोविगतक्लमः ॥
चिन्तयेद्धर्माकार्यान्सार्द्धंतेरेकएववा ॥ १५१ ॥ परस्परविरु-
द्धानांतेषांचसमुपार्जनम् ॥ कन्यानांसम्यदानंचकुमाराणां
चरसरां ॥ १५२ ॥ दूतसम्प्रेषणांचैवकार्यशेषंतथैवच ॥
अन्तःपुरप्रचारंचप्रराधीनांचचेष्टितम् ॥ १५३ ॥

۴۹-۱۔ باؤلا گولگا۔ اندھا بہا پرند۔ بڑھا یعنی ۸۰ برس سے زیادہ عمر کا کچھ عورت مر لی ہیں ایک
عضو نہ کہنے والا ان سب کو وقت صلح و مشورہ کے اپنے پاس نہ رکھے۔

۱۵۰-۱۔ یہ سب پہلے جیم کے پاپ سے ایسے ہوئے ہیں اس لیے اپان پاکر بھید کو ظاہر
کرتے ہیں اور پرند اور بڑھے اور عورت انھوں کی عقل قائم نہیں رہتی اس وجہ سے بھی بھید
ظاہر کرتے ہیں اس واسطے وقت مشورہ انتظام ملک کے یہ لوگ پاس رہنے پادین۔
۱۵۱-۱۔ دوپہر دن یا آدھی رات کے وقت آرام و پیغمبری سے ان مشیروں کے ساتھ باطل
آپ ہی دھوم دار عقد کر د کام بچا کرے۔

۱۵۲-۱۔ دھن ملنے کی واسطے ایسی تدبیر سوچے کہ جہین دھوم ارتقہ کام جو باہم مختلف
ہیں انھوں کا برو دھوم ہو دے اپنے کام سڑھ ہونے کی واسطے کہ بیان گواہان اور
شاستر کے موافق پڑھائے سکھائے کی واسطے راج کماروں کی حفاظت
باتوں کو بھی بچا کرے۔

۱۵۳-۱۔ سفیر وکیل کو بھیجا باقی رہا ہوا کام شکر اندر کا چلن دوسرا جاؤ نکال
لائیو والا جو شخص ہے اس کے دل کی خواہش کو جانتا ان سب باتوں کو بھی بچا کرے۔

विक्रोशन्त्योयस्यराष्ट्राद्रियन्नेदस्युभिः प्रजाः ॥ सम्यश्यतः स-
 भृत्यस्य सतः सनतु जीवति ॥ १४३ ॥ सत्रियस्य परो धर्मः प्र-
 जानामेवया लनम् ॥ निर्दिष्टफलमोक्ता हिराजा धर्मैरायुज्य-
 ते ॥ १४४ ॥ उत्थाय यश्चिमेयामेकतशौचः समाहितः ॥ हुताभि-
 र्वाक्षराणां चार्च्यं प्रविशेत्सुभां सभाम् ॥ १४५ ॥ तत्र स्थितः प्र-
 जाः सर्वाः प्रतिनन्द्य विसर्जयेत् ॥ विस्तृत्य च प्रजाः सर्वा मंत्रये-
 त्सहस्रं त्रिभिः ॥ १४६ ॥ गिरिपृष्ठं समारुह्य प्रासारं वारहो गतः
 ॥ श्वरराये निःशलाके वा मंत्रयेदविभावितः ॥ १४७ ॥ यस्य-
 मंत्रं न जानन्ति समागम्य पृथग्जनाः ॥ स ह्यत्तनां पृथिवीभुंक्ते
 कोशहीनोऽपि पार्थिवः ॥ १४८ ॥

۱۴۳۔ جس راجہ اور راجہ کے اہلکاروں کے دیکھتے ہوئے اسکے راج میں چوروں سے
 ٹوٹی ہوئی پرچا پکارتی ہے وہ راجہ زندہ نہیں ہے بلکہ مر گیا ہے۔
 ۱۴۴۔ پرچا کو پالنا کشتریوں کا پریم و دھرم ہے جو راجہ شاستر کے موافق کام کرتا ہے
 اسکو دھرماتا کہتے ہیں۔
 ۱۴۵۔ سپرات باقی رہے اٹھکراستان وغیرہ کر کے یکدل ہو کر لگن ہو تراور براہمن کا
 پوجن کر کے دربار میں داخل ہو۔
 ۱۴۶۔ دربار میں بیٹھ کر سب رعایا کو دیکھ بھال کر بول چال کر حضرت کرے بڑہ دزیوں
 کے ساتھ انتظام ملک کی بابت مشورہ کرے۔
 ۱۴۷۔ سپار یا بالاکانہ یا جنگل وغیرہ مقام خلوت میں بیٹھ کر لگاڑنے والے آدمیوں کو دود
 کر کے پنچاگت الی صلاح کا مشورہ کرے۔
 ۱۴۸۔ سوائے مشیروں کے اور لوگ میل ملاپ کر کے جس راجہ کے مشورہ کو نہیں سنا
 وہ راجہ اگرچہ بے رز ہو تو بھی پرہتوی پر راج کر سکتا ہے۔

یکتیंचरपिवर्धस्यरापयेत्करसंज्ञितम् ॥ व्यवहारेणाजीवंतं
 राजाराद्वेश्यकजनम् ॥ १३७ ॥ कारुकाञ्जिलिपिनश्चैवशुद्धं
 आत्मोपजीविनः ॥ सकैकंकारयेत्कर्ममासिमासिमहीपतिः
 ॥ १३८ ॥ नोच्छिन्नादात्मनोमूलं परेषांचातिहयाया ॥ उच्छि-
 न्दन्त्यात्मनोमूलमात्मानं तांश्चपीडयेत् ॥ १३९ ॥ तीक्ष्णाश्चै-
 वमृदुश्चस्थात्कार्यवीक्ष्यमहीपतिः ॥ तीक्ष्णाश्चैवमृदुश्चैवरा-
 जाभवतिसम्मतः ॥ १४० ॥ अमात्यमुख्यधर्मज्ञं प्राज्ञं दान्तं
 कुलोद्भूतम् ॥ स्थापयेदासने तस्मिन्निबन्धः कार्यसरोन्हरा-
 म् ॥ १४१ ॥ सर्वं सर्वं विधायेममिति कर्तव्यमात्मानः ॥ युक्तश्चै-
 वाप्रमत्तश्चपरिक्षेदिमाः प्रजाः ॥ १४२ ॥

۱۳۷ - راج مین چھوٹے آدمیوں سے بھی تھوڑا سا لگ پتا وغیرہ سال تمام میں بطور محصول کیوں
 ۱۳۸ - رستمین بنایا ہوا ہے دہرتم کے کاریگر و شودر و جسم کی تکلیف سے اوقات تلبہ کریں گے
 پتہ دار وغیرہ ان سبھوں سے ہر مہینہ میں ایک دن کام کراوے لکھا ہی محصول ہے۔
 ۱۳۹ - اگر ترقاضا سے محبت محصول رعیت سے نہ لیوے تو راجہ اپنی جڑ او کھڑتا ہے۔
 اور جس سے زیادہ محصول لیوے تو بھی اس سبب ان دونوں کاموں کو نہ کرے اگر کرے تو
 وہ راجہ آپ کو اور رعیت کو دکھی کرتا ہے۔

۱۴۰ - راجہ کام کو دیکھ کر کام کے موافق نرم و سخت ہو کر دینی اچھا کام دیکھ کر نرم ہو
 اور برا کام دیکھ کر سخت ہو ایسا راجہ سب کو اچھا معلوم ہوتا ہے۔

۱۴۱ - آپ مقدمات فیصل کریں تکلیف پاؤ تو اپنی جگہ پر ایسے برہمن کو بٹھلاؤ
 جو کہ وزیر اعظم ہو اور دھرم کا جاننے والا اور نفس پر غالب اور خاندانی ہو
 ۱۴۲ - اس طرح اپنے کرنے کے لائق کاموں کو جو بیز کرے بیہودہ پن کو چھوڑ کر مشغولی
 محنت تمام رعایا کی حفاظت کرے

و عمر طبعی ہے۔

परादेयो वक्तव्यस्य षडुक्तस्य वेतनम् ॥ वारमासिकस्त-
थाच्छादो धान्यशेरास्तु मासिकः ॥ १२६ ॥ अयविक्रयमध्या-
नं भक्तं च सपरिव्ययम् ॥ योगक्षेमं च संप्रेक्ष्य वशिजो दायये-
त्करान् ॥ १२७ ॥ यथाफलेन युज्येत राजा कर्त्ता च कर्मराम् ॥
तथा वैश्यन् पुराष्ट्रे कल्पयेत्स ततं करान् ॥ १२८ ॥ यथा ल्पा-
ल्पमदन्त्याद्यं वार्यो को वत्स यदपराः ॥ तथा ल्पाल्पो ग्रही-
तव्यो राष्ट्राज्ञा ज्ञादिकः करः ॥ १२९ ॥ यंचाशङ्गा गच्छादेयो
राज्ञापशुहिराययोः ॥ धान्यानामहमोभागः षडोद्धारश-
खवा ॥ १३० ॥

۱۲۶- جو شخص گھر کا صاف کر نیوالا اور پانی کا لانیوالا، اسکو ایک پن لومیر دیوے اور
مہینہ میں ایک درون ان دیوے اور چھ مہینہ دیکرے دیوے اور جو شخص آتم کام کر نیوالا
ہے اسکو چھ پن لومیر دیوے اور چھ مہینہ میں چار کپڑے دیوے ہر مہینہ میں چھ درون دیوے
دیوے چھ مہینہ کپڑے دیوے

۱۲۷- ان سب باتوں کا پکار کر بنیوں سے محصول لیوے یعنی کس قیمت پر خرید کیا ہو بیچنے
میں کتنا ملے گا کتنی دوسے لایا ہے کیا اسکی خوراک میں خرچ ہوا کتنا حفاظت مال میں
خرچ ہوا ہے کتنا اسکو نفع ملیگا

۱۲۸- جس طریق سے کام کر نیوالے کو اور راجہ کو فائدہ ہو اس طریق کو دیکھ کر راجہ پن لومیر دیوے اور جو شخص
۱۲۹- جس طرح جو تک اور بچھ اور بھونر یا سب کھانیکے لائق چیزوں کو تھوڑا تھوڑا کھاتے ہیں اسی
طرح راجہ راج سے محصول سالانہ کو تھوڑا تھوڑا لیوے۔

۱۳۰- پیش اور سونے کے نفع میں سے پچاسواں حصہ لیوے و صانیہ کے نفع میں آٹھواں یا
چھٹھواں یا بارھواں حصہ لیوے زمین کی عمدگی وغیرہ عمدگی اور جو تنے کی محنت و زحمت کو دیکھ کر محصول تجھیری

तेषांशाम्याशिकार्याशिथकार्याशिचैवहि॥ राज्ञोऽन्यः
सचिवःस्निग्धस्तानियश्येदतद्धितः॥ १२०॥ नगरेनगरेचैकं
कुर्यात्सर्वार्थचिन्तकम्॥ उच्चैःस्थानंघोररूपंनक्षत्राणामि-
चग्रहम्॥ १२१॥ सताननुपरिक्रामेत्सर्वानेवसदास्वयम्॥ ते-
षांचतुर्परिग्रायेत्सम्यग्ग्राह्येषुतच्चरैः॥ १२२॥ राज्ञोहिरसाधि-
कृताःपरस्वारायिनःशठाः॥ भृत्याभवन्तिप्रायेरातेभ्योर-
क्षोदिमाःप्रजाः॥ १२३॥ येकार्यिकेभ्योऽर्थमेवपुल्लीयुःपाप-
चेतसः॥ तेषांसर्वस्वमादायराजाकुर्यात्प्रवासनम्॥ १२४॥ रा-
जकर्मसुयुक्तानांस्त्रीणांयेष्यजनस्यच॥ प्रत्यहंकल्पयेद्वृत्तिं
स्थानकर्मानुरूपतः॥ १२५॥

- ۱۲۰۔ جو وزیر عظم نہایت عاقل دار السلطنت میں راجہ کے پاس رہنے والا ہو وہ سستی کو چھوڑ کر گانون اور نگر اور پور کے مالکوں کا کام اور دیگر کاموں کو بھی دیکھتا اور جانتا ہے۔
- ۱۲۱۔ ہر ایک نگر میں ایک ایسی جوتمام مطلبوں کا سوچنے والا ہو رکھے اور ایک مکان بڑا ادنیٰ جہاں تک روپ نہاویں وہ مکان ایسا خوبصورت ہو جیسے تیار و ہمین چاند ہے
- ۱۲۲۔ وہ وزیر عظم گانون اور نگر وغیرہ کے مالکوں کو بے مطلب بھی وقتا فوقتا اپنی قوت سے دیکھتا اور مخبروں کے وسیلے سے سب کے من کی بات جانتے۔
- ۱۲۳۔ راجہ کے اکثر عمدہ وارد و سرکار مال لے لیا کرتے ہیں اور ظالم ہیں سو اس طرح ان کے ہاتھ سے رعیت کی حفاظت کرے۔
- ۱۲۴۔ دلہین باپ کھنے والے جو عمدہ دار رعیت سے روپیہ لیتے ہیں راجہ انکی تمام جائز ضبط کر لے اور انکو راج سے باہر نکال دیوے۔
- ۱۲۵۔ جو عورت نوکر و چاکر راجہ کا کام کرتے ہوں انکی وجہ ہواش انکے روزمرہ کے کام کے موافق مقرر کرے۔

ग्रामस्याधिपतिंकुर्याद्दशग्रामपतितथा ॥ विंशतीशंशतेश-
चसहस्रपतिमेवच ॥ ११५ ॥ ग्रामदीधानामुत्पन्नान्ग्रामिकः
शनैः स्वयम् ॥ शंसेद्ग्रामदशेशायदशेशोविंशतीशिनम् ॥
११६ ॥ विंशतीशस्तुतत्सर्वशतेशायनिवेक्ष्येत ॥ शंसेद्ग्रामश-
तेशस्तुसहस्रपतयेस्वयम् ॥ ११७ ॥ ग्रामनिगजप्रदेयानिप्रत्यहं
ग्रामवासिभिः ॥ अन्नपानेन्यनादीनिग्रामिकस्तान्यवाप्नुया-
त् ॥ ११८ ॥ दशीकुलन्नुभुंजीतविंशीपंचकुलानिच ॥ ग्रामंश-
मंशताध्यक्षःसहस्राधिपतिःपुरम् ॥ ११९ ॥

۱۱۵۔ لیاقت کے موافق کسی کو ایک گائون کا کیو دسل گائون کا کیو بین گائون کا
کیو تلو گائون کا کیو ہزار کا مالک کرے۔

۱۱۶۔ گائون بین کچھ واردات ہو تو گائون کا مالک آہستگی دسل گائون کے مالک سے
کے اور وہ بین گائون کے مالک سے کہے۔

۱۱۷۔ بین گائون کا مالک تلو گائون کے مالک سے کہے اور وہ ہزار گائون کے
مالک سے کہے۔

۱۱۸۔ ہر دوز جو حصہ راجہ کا مثل اناج اور پان اور لکڑی وغیرہ گائون کے رہنے والوں
سے لینے کے لائق ہے۔ اسکو گائون کا مالک لیوے۔

۱۱۹۔ دسل گائون کا مالک ایک کل کی مقدار کے موافق زمین اپنے گزارہ کے
واسطے لیوے اور بین گائون کا مالک پانچ کل کے موافق لیوے اور تلو گائون کا مالک ایک گائون
درجہ متوسط کو کیو اور ہزار گائون کا مالک ایک پورا اپنے گزارہ کے واسطے لیوے۔

چھیل سے ایک ہل چلا دے ایسے دہل سے جھدر نہ بین جوتی جائے اُتھدر زمین کو کل کتے ہیں۔

सामादीनामुपायानांचतुर्णामपिपरिडिताः॥सामदराडोप्र-
शंसन्तिनित्यंराष्ट्राभिद्वन्द्वे॥१०६॥यथोद्धरतिनिर्दत्ताक-
संधान्यंचरसति॥तथारसेनृपोराष्ट्रंहन्याच्चपरिपन्थिनः॥
११०॥मोहाज्ञानास्वराष्ट्रयःकर्मयत्यनवैसया॥सोऽचिराद्भू-
श्यतेराज्याज्जीविताच्चसवान्धवः॥१११॥प्रासीरकर्मरातातप्रा-
णाःक्षीयन्तेप्राणिनांयथा॥तथाशक्तमपिप्राणाःक्षीय-
न्तेराष्ट्रकर्मराता॥११२॥राष्ट्रस्यसंग्रहेनित्यंविधानमिदमा-
चरेत्॥सुसंगृहीतराष्ट्रोहिपार्थिवःसुखमेधते॥११३॥द्वयो-
स्त्रयारातांपंचानांमध्येगुल्ममधिष्ठितम्॥तथाग्रामशता-
नांवकुर्यादष्टस्यसंग्रहम्॥११४॥

۱۰۹۔ سام وغیرہ چار تہ سیروں میں سام و ونڈ کی تعریف پنڈت لوگ واسطے ترقی راج کرتے ہیں۔

۱۱۰۔ جسطرح کھیتی کرنا اور اناج کی حفاظت کرنا ہے اور گھاس وغیرہ ادا کھاڑ دینا ہے اسی طرح راجہ حفاظت راج کی کرتے اور دشمنوں کو نصیحت دینا اور دکرے۔

۱۱۱۔ جو راجہ بدون غور کے سٹوہ سے راج کو دکھ دیتا ہے وہ تھوڑے دنوں میں اپنا راج اور بیرکان دور بھائی سندون کو نالود کرنا ہے۔

۱۱۲۔ جطرح شہر کو دکھ دینے سے پران کو دکھ ہوتا ہے شیطرح راج (یعنی عربت) کے دکھ ہونے سے راجہ کا پران دکھ مانتا ہے۔

۱۱۳۔ راج کی ترقی کی دوا سب سے ہمیشہ اس گن میں چلے جس راجہ کسی راج نے اچھی طرح ترقی پائی ہے وہ راجہ بخوشی تمام ترقی پاتا ہے۔

۱۱۔ وہ تین پانچ گانوں کے بیچ میں ایک حفاظت کا مکان بناوے آئیں اور اسے انتظام کرنے کے اپنے ایکاروں کو رکھے۔

۹۸۔ ہلو انون کے دھرم بے عیب قدیم کو کما کشتری لوگ لڑائی میں دشمنوں کو مارتے ہوئے
 اس دھرم کو نہ چھوڑیں۔
 ۹۹۔ جو چیزیں ملیں اس کے ملنے کی خواہش کرے اور جو مل گئی اس کی حفاظت نہ کرے۔
 ۱۰۰۔ را جب کے پرشار تھو (یعنی سوگ وغیرہ) کا پرچہ بھی چار طرح کا ہے اس کو جانے اور سستی کو
 ترک کر کے ان چاروں کا بیون یعنی استعمال کرے جو اوپر کے اشلوک میں کے گئے۔
 ۱۰۱۔ جو چیزیں ملیں اس کی خواہش کرے اور جو نہ ملے ذریعہ سے حاصل ہوئی دشمنانہ وغیرہ
 اس کی حفاظت کرے جبکی حفاظت دیکھنے سے ہوتی ہے اس کی ترقی دیکھنے سے کرے بیان جبری
 چیز کو دان سے قائم کرے۔
 ۱۰۲۔ باقی گھوڑا وغیرہ کی سواری اور جنگ کے قاعدے سیکھنے کی مہارت کرے اور اس کے
 وغیرہ کے وسیلے سے اپنی شجاعت کی شہرت ہمیشہ کرے اور منتر اور چار دھیمیتھا وغیرہ کو
 ظاہر کرے اور دشمن کے عیب کو چلتا رہے ان سب باتوں کو ہمیشہ کرتا رہے۔
 یعنی جو ہر کام چاری اور بان پتھ اور سنیاسی اور بھن گس ہو تری وغیرہ جکا دن رات برہم کرم ہی میں گزارا کرے
 ان لوگوں کو ان چیزوں کو دے۔

ن سۄم ن ن ب و س ن ن ا ہ ن ن ن ن ن ن ر ا یۄ د م ॥ ن ا یۄ د م ا ن ی پ ش ی ن ن ی
 ر ۄ ا س م ا ر ت م ॥ ۴۲ ॥ ن ا یۄ د م س ن پ ر ا م ن ا ر ت ن ا ت ی پ ر ی ک ش ت م
 ॥ ن م ی ت ن ی ر ا ر ت ت س ت ا ن ی م م نۄ س م ر ن ॥ ۴۳ ॥ ی س تۄ م ی ت : ی ر ا
 ر ت : س ی ا م ہ ن ی ت ی ر ۄ : ॥ م ر تۄ ر ی ہۄ ک ت ک ی چ ی ت ت س ر ی پ ر ت ی ی
 ت ॥ ۴۴ ॥ ی ر ا س ی سۄ ک ت ک ی چ ی د مۄ ر ا ر ی سۄ پ ا ر ج ت م ॥ م ر ت ا ت
 ت س ر ی ر ا ت ت ی ر ا ر ت ت ہ ت س ی ت ॥ ۴۵ ॥ ر ی ا ر ہ ہ س ت ن ن ر ہ ہ ن
 د ا ن ی پ ش ی ن ی : ॥ س ر ہ ر ی ا ر ا کۄ پ ی چ ی ی ر ت ی ت ی ت س ی ت
 ت ॥ ۴۶ ॥ ر ا ن ر ہ ر ی ر ا ر م ی ت ی ر ا ر ی د ی ک ی شۄ ت ی : ॥ ر ا ن ا ر
 س ر ی ی د ی م ی ر ا ت ی م ر ی م ج ت م ॥ ۴۷ ॥

۴۲ - جو شخص سوتا ہو یا رزہ اسکے بدن میں ہوبے ہتھیار ہو لڑائی کا ارادہ نہ رکھتا ہو
 کسی کے ساتھ تماشا دیکھنے کو آیا ہو ایسے آدمیوں کو بھی نہ مارے۔
 ۴۳ - جسکا ہتھیار ٹوٹ گیا ہو بسبب مار جانے فرزند وغیرہ کے بیچ میں ہو زخم شدید میں مبتلا
 ہو ہو لڑائی سے بھاگا ہو اہوان سب کو چھو لوگوں کے دھرم کو خیال کر کے نہ مارے۔
 ۴۴ - جو آدمی ڈر کر بھاگ کر لڑائی میں دوسرے کے ہتھیار سے زخمی ہو کر مارا گیا ہے وہ اپنے
 مالک کے پاپ کو پاتا ہے۔

۴۵ - جو آدمی بھاگ کر مارا گیا اسکا پنیہ (یعنی پیٹہ فعل نکلیا) سوگ کے ملنے کیواسطے جو فراہم
 ہوا ہو اسکو اسکا مالک پاتا ہے۔

۴۶ - تنہ گھوڑا ہتھی - حقیری - دھن دھانیہ چار پایہ عورت اور تمام دولت سوا سونا چاندی
 کے - سیادیتیل وغیرہ ان سب کو فتح کرے وہی اسکا مالک ہوتا ہے۔

۴۷ - سوتا چاندی زمین وغیرہ جو عمدہ چیزیں فتح ہون انکا فتح کرنے والا اپنے راجہ کو
 دیوے یہ وید میں لکھا ہے اور راجہ اس چیز کو ان سب پہلوانوں کو تقسیم کرے جنھوں نے
 ملک فتح کیا ہو۔

पात्रस्य हि विशेषेण श्रद्धा न तमेव च ॥ अल्पस्या बहवा प्रेत्य
 दानस्या वाप्यते फलम् ॥ ८६ ॥ समोत्तमा धर्मैराजा त्वाहृतः पा-
 लयन् प्रजाः ॥ न निवर्त्तत संग्रामात्सा त्रं धर्ममनुस्मरन् ॥ ८७ ॥
 संग्रामे च निवर्त्ती त्वं प्रजानां चैव पालनम् ॥ शुश्रूषा ब्राह्मणा-
 नां च राजा श्रेयस्करं परम् ॥ ८८ ॥ आहवे युमिथोऽन्योन्यं जि-
 घांसन्तो महीक्षितः ॥ युध्यमानाः परं शक्त्या स्वर्गायान्य परां
 मुरवाः ॥ ८९ ॥ न कूटे रायुर्धैर्यं न्याद्युध्यमाने रोरिषून् ॥ न क-
 रीभिर्नापि हि धैर्नाग्निं ज्वलित तेजसैः ॥ ९० ॥ न च हन्यात्स-
 लारूढं न क्लीपं न कृतांजलिम् ॥ न मुक्तकेशं नासीनं न तवा-
 स्मीति वा दिनम् ॥ ९१ ॥

۸۶- جو براہمن ان لیتا ہے اسکی عبادت کی بزرگی اور دینے والے کی توفیق کی وجہ
 دان کا پھل تھوڑا یا بہت پر لوگ میں ملتا ہے۔

۸۷- جو راجہ رعایا کی پرورش کرتا ہو کشتی کے وھرم کا خیال رکھتا ہو اگر اسکو اس
 بڑا یا چھوٹا راجہ لڑائی کے واسطے بلاوے تو اسکا مقابلہ کرے لڑائی سے منصف نہ پھیرے۔

۸۸- جنگ میں ثابت قدم رہنا رعیت کی پرورش کرنا برہمنوں کی سیوا کرنا یقین کا راجہ
 کے پریم کلیان کرنے والے ہیں۔

۸۹- لڑائی میں مارے ہوئے اور لڑائی میں منصف نہ پھیر کر جو کشتی مرنے والے سورگ میں
 جاتا ہے۔

۹۰- جو ستھار زر سے بھالے گئے اور خشکے اوپر لکڑی اور اندر سے لوہا ہے اور جس تیرکی
 گالسی کرنے کی صورت ہے اور جو تھپتھپا رگ سے گرم کیا گیا ہو تھپتھپا لڑائی میں نہ ہو گیا۔

۹۱- زمین پر کھڑا ہو اور تخت اور ماتھے جوڑنے والا اور جسے شر کے بال کھلے ہوتے اور
 ایسا کہنے والے لوگ میں تھپتھا برہمن اور شیخے ہوئے کو نہ مارے۔

अध्यक्षान्विविधान्कुर्यात्तत्रतत्रविपश्चितः॥तेऽस्यसर्वाण्य
वेक्षेरन्पूरांकार्याणि कुर्वताम्॥८१॥ आचक्षानां गुरुकुला-
द्विशाराणां पूजको भवेत्॥ नृपाणामस्योद्येयनिधिर्ब्राह्मोऽ
भिधीयते॥८२॥ नतं स्तेनानचामित्राहरन्ति न च नश्यति॥ त-
स्माद्वाजानिधातव्यो ब्राह्मणोऽस्योनिधिः॥८३॥ नस्क-
न्तेन व्ययतेन विनश्यति कर्हिचित्॥ वरिष्ठमग्निहोत्रेभ्यो ब्रा-
ह्मणास्यमुखे हृतम्॥८४॥ सममब्राह्मणोऽनं द्विगुरां ब्राह्म-
णान्बुवे॥ प्राधीते शतसाहस्रमनन्तं वेदपाशो॥८५॥

۸۱- ہر ایک جگہ پر ایک ایک عالم عمدہ دارانواع اقسام کا رکھے وہ عمدہ دار راہ کے
نوکرون کا کام لیتے۔

۸۲- جو برہمن گرو گھل میں دویا کو پرھکر اپنے باپ کے گھر آویں راجہ انکا پوجن کرے
وے برہمن راجہ کے خزانہ بے زوال ہیں۔

۸۳- جو دولت و سامان برہمن کو دیا جاتا ہے وہ لازوال ہے اسکو چور چور اسین سکتا
پس راجہ اپنی دولت سے ایسے برہمنوں کی سیوا کرے۔

۸۴- برہمن کے مکھ میں جو ہون کیا گیا یعنی دولت اور پتر دن اور شیون کیلئے جو انکو بھوجن کرایا
گیا خواہ پریشتر کی خوشی کیواسطے بھوجن کرایا گیا وہ گناہین نہ خراب جادے نہ دکھ دوی
اور ایسا ہون دینے پر ہم بھوج) اگن ہون سے بڑا ہے۔

۸۵- سوا برہمن کے کشتی وغیرہ کو بھندرو یوے اسقدر ملتا ہے سو کہ برہمن کو دینے
سے دو چند ملتا ہے وید کے ایک سا کھا پڑھے ہوئے کو دینے سے لاکھ گنا ملتا ہے
تمام وید پڑھے ہوئے کو دینے سے بے نہایت بچھل ملتا ہے۔

۸۶- برہمن اسکو کہتے ہیں کہ جو اپنے دن و آئندہ کے دھرم میں قائم ہو کر پریشتر کی اپنا شکر تپ اور گنیانی گنیانی ہو

تस्याہا یو دھرماسنن دھن دھانینا ہنہ: ॥ براہماری: شیلیہ
 رینہ رینہ نونہ کونہ ॥ ۱۵ ॥ تسم مध्ये सुपर्याप्तं कारयेद्गृहमा-
 त्मनः ॥ गुप्तं सर्वतु कं शुभं जलहसममन्वितम् ॥ ॱ६ ॥ तदध्या-
 स्यो ब्रह्मेन्द्राद्यां सवर्गां लक्षणां चिताम् ॥ कुले महति समू-
 तां ह्यारुण्य गुरां चिताम् ॥ ॱ७ ॥ पुरोहितं च कुर्वीत हरपुत्रां दे-
 वचर्त्विजाम् ॥ तेऽस्य गृह्याणिकर्माणि कुर्युर्व्येता नितानि-
 च ॥ ॱ८ ॥ यजेत राजा क्रतुभिर्विविधैरामदसिरीः ॥ धर्मार्थं चै-
 व विप्रैर्ध्यात्वा ह्योगान्धनानि च ॥ ॱ९ ॥ सांवत्सरिकमासे च
 राश्यां तां हारयेद्बलिम् ॥ स्याच्चान्द्रायणशे लोके वर्त्तत पितृवंच-
 यु ॥ ॲ० ॥

۶۵۔ قلعہ کے اندر یہ سامان موجود ہے۔ ہتھیار۔ دھن۔ سوہانہ۔ سواری۔ براتیں۔ کاریگر
 خستہ۔ یعنی کل۔ گھاس۔ پانی

۶۶۔ اس قلعہ کے اندر اپنا مکان ایسا بناوے کہ زمین علیحدہ علیحدہ ٹھورات و دیوتاؤں ہتھیاروں
 اگن کے گھر ہوں اور گھاسین بھی ہو اور سب فضلوں کے پھل پھول بھی موجود ہوں مکان سفید
 اور آئین باؤلی کنواں درخت ہوں۔

۶۷۔ اس مکان میں بیٹھ کر ایسی ہم قوم عورت کے ساتھ شادی کرے کہ جو اچھے خاندان کی
 ہو اور دل کو پیاری ہو اور خوبصورت و بہتر سندھیا کی خلعت ہو۔

۶۸۔ پردہت اور توگ (یعنی گیارہ سالہ) ان دونوں کو اختیار دیں دونوں اس کے بہتر فیوض کو لیں

۶۹۔ نیک کار کی گیتہ سنت گن دے کر کرے اور دھرم کی واسطے براتیں کو بھوک دینے
 مکان و چار پائی و زیور و کپڑا وغیرہ ادھن کو دے دے۔

۸۰۔ راجہ اپنی راج سے اپنا حصہ سالانہ لےوے اور دیدا حکام کی تعمیل کرے اور تمام رعایا کو
 مثل اپنی اولاد کے پرورش کرے اور رعیت اسکو باپ کی طرح سمجھا سکے حکم کی تعمیل کرے

धनुर्दुर्गमहीदुर्गमब्दुर्गवार्क्षमेववा॥ न्दुर्गगिरिदुर्गस्वासमा-
 श्रित्यवसेत्पुरम्॥ ७०॥ सर्वेसातुप्रयत्नेनगिरिदुर्गसमाश्रयेत्
 ॥ सबाह्विबह्वगुरायेनगिरिदुर्गविशिष्यते॥ ७१॥ त्रीशयद्यान्या
 श्रितास्त्वेवांश्चगगर्त्ताश्रयाऽप्सराः॥ त्रीशयुत्तराशिराक्रमशः
 स्रवंगमनरामराः॥ ७२॥ यथादुर्गाश्रितानेतान्नोपहिंसन्ति
 शत्रवः॥ तथास्योनहिसन्तिनृपदुर्गसमाश्रितम्॥ ७३॥ सकः
 शतंयोधयतिप्राकारस्थोधनुर्धरः॥ शतंशसहस्राशितस्मा-
 दुर्गविधीयते॥ ७४॥

۷۰۔ جبکہ چاروں طرف پانی ہو جان کی زمین ٹھنڈی ہو جبکہ چاروں طرف پانی ہو جبکہ
 چاروں طرف درخت ہوں جبکہ چاروں طرف آدمی جنگجو ہوں جبکہ چاروں طرف پیار ہوں
 یہ چھ مقامات مانند قلعہ کے ہیں ایسے مقام پر راجہ قیام کرے بیان پر دوسری فوج
 نہ جاسکے۔

۷۱۔ جس ملک کے چاروں طرف پیار میں اس ملک میں قیام کرے جتنا کہ ایسا ملک ملے
 تب تک دوسرے ملک میں قیام نہ کرے ان سمجھوں میں ایسا ملک سب سے اچھا ہے۔
 ۷۲۔ پہلے تین قلعہ میں ہرن۔ چوہا جل کے جیورہ تین تین پچھلے تین قلعہ میں ستر آدمی رہتے ہیں۔
 ۷۳۔ جسطرح ہرن وغیرہ اپنے قلعہ میں رہتے ہیں دشمنوں سے تکلیف نہیں پاتے
 اسی طرح راجہ قلعہ میں رہنے سے دشمنوں سے تکلیف نہیں پاتا۔

۷۴۔ قلعہ میں رہنے والا ایک کماندار بیچے رہنے والے سوار آدمی سے لڑائی کر سکتا ہے
 اور قلعہ میں رہنے والے ایک سوار آدمی بیچے رہنے والے دس ہزار آدمی سے لڑائی کر سکتا
 ہیں اسلئے قلعہ بنانے کا آپدیش کرتے ہیں۔

अमात्येदराडआयतोदराडेवैनयिकीक्रिया॥ नृपतौकोशरा-
 डेचदूतेसन्धिविपर्ययो॥ ६५॥ दूतसवहिसन्धतेमिनत्येवच
 सहतान्॥ दूतस्तत्कुरुतेकर्ममिद्यत्तेयेनवानवा॥ ६६॥ सवि-
 द्यादस्यकृत्येषुनिगूदेद्भिःतचेष्टितैः॥ आकारमिंगितंचेष्टांमृ-
 त्येषुचचिकीर्षितम्॥ ६७॥ बुध्वाचसर्वतत्वेनपरराजचिकी-
 र्षितम्॥ तथाप्रयत्नमातिष्ठेद्यथात्मानंनपीडयेत्॥ ६८॥ जा-
 गत्संसम्यसम्पन्नमार्यप्राप्त्यमनाविलम्॥ रम्यमानतसामन्त्रं
 त्याजीव्यंदेशमावसेत्॥ ६९॥

۶۵- وزیر کے اختیار میں منرا ہے اور منرا کے اختیار میں اخصاف ہے راجہ کے اختیار میں
 خزانہ اور راجہ سے دوت کے اختیار میں صلح اور لڑائی ہے -
 ۶۶- دوت ہی بگڑے ہوئے کو ملاتا ہے اور ملے ہوئے کو لگاڑتا ہے جس سے ملاپ اور لگاڑ
 ہوتا ہے وہ کام دوت ہی کرتا ہے -

۶۷- سب اہلکاروں میں دوت ہی راجہ کی ہمت اور اشارہ اہم آثار اور قیافہ سے راجہ کے
 کرنے کے لائق سب کام کو جانے -

۶۸- اور دوسرے راجاؤں کے دل کی اصل بات اپنی حکمت سے معلوم کرے اور ایسی تدبیر کرے
 کہ جس سے اپنی آتما کو تکلیف نہ ہو -

۶۹- جس ملک میں تختہ راپانی اور گھاس ہو اور زمین ہو اور دھوپ اور غلہ ہو اس کو
 جاگل دیش کہتے ہیں زمین اس میں اچھے آدمی ہوں اور بیارہنوں اور وہ
 ملک پھل و پھول لٹاؤ وغیرہ سے منور ہو اور وہاں کے سب سمت کے آدمی ملائم ہوں اور
 زراعت و تجارت وغیرہ دولت ملنے کی تدبیریں وہاں پر ناسانی تمام ممکن ہوں کسی
 ملک میں راجہ قیام کرے -

نित्यंतسینما شاست: सर्वकार्याणि निःक्षिपेत् ॥ तेन सार्धं-
विनिश्चित्य ततः कर्म समाभेत् ॥ ५६ ॥ अन्यानपि प्रकुर्वीत
शुचीन्वाज्ञानवस्थितान् ॥ सम्यगर्थसमाहृतं न मात्यान्नुप-
शीक्षितान् ॥ ६० ॥ निर्वर्त्तेतास्य यावद्भिरितिकर्त्तव्यतान् ॥
तावतोऽतद्वितान्दक्षान् प्रकुर्वीत विचक्षणान् ॥ ६१ ॥ तेषाम-
र्थे नियुज्जीत शूरान्दक्षान् कुलोज्जितान् ॥ शुचीनां कर्मकर्त्तान्
भीरून् नन्तर्निवेशने ॥ ६२ ॥ दूतं चैव प्रकुर्वीत सर्वशास्त्रविशार-
दम् ॥ इंगिताकारचेष्टज्ञं शुचिंदसंकुलोज्जितम् ॥ ६३ ॥ अनुर-
क्तः शुचिर्दसः स्मृतिमान् देशकालचित् ॥ वपुष्मान् वीतभीर्वा-
गी दूतोरज्ञः प्रशस्यते ॥ ६४ ॥

۵۹- اعتماد پاکر اسی برہمن وزیر کے ساتھ یقین کر کے کام شروع کرے۔
۶۰- جو آدمی پاک پین اور سب باتوں کے جاننے والا اور اچھی راہ سے دولت حاصل کرے
پین اور عمدہ طریق سے خفا امتحان ہو گیا ایسے اور بھی وزیر مقرر کرے۔
۶۱- جتنے آدمیوں سے مطلب حاصل ہو سکے اتنے آدمیوں کو نو کر رکھے مگر وہ آدمی چاہے
دستبرد ہو شیار و کام کرنے میں صاحب ہمت ہوں۔
۶۲- ان وزیروں میں جو ہوشیار و عمدہ خاندانی و پاک و نجو ہوں انکو وہ کام
سپرد کرے جس میں دولت کی پیدائش ہو اور جو آدمی وزیر بنے پین انکو قلم کے اندر رکھے
۶۳- جو آدمی شاستہ کا جاننے والا اور اشاروں اور قیافوں کا سمجھنے والا اور پاک اور
ہوشیار اور عمدہ خاندان ہو سکود و تر یعنی سفیر وکیل مقرر کرے۔
۶۴- جو دوت اپنے مالک کو خوش رکھنے والا و پاک و ہوشیار و سب باتوں کو یاد رکھنے
والا و ملک و وقت کا جاننے والا اور اچھی صورت و شکل والا اچھی تقریر کرنے والا و نجو ہوں
وہ دوست راجہ کو چھپا ہوتا ہے۔

व्यसनस्य च मृत्योश्च व्यसनं कष्टमुच्यते ॥ व्यसन्यधोऽधो व्रज-
ति स्वर्गात्यव्यसनी मृतः ॥ ५३ ॥ मीलाञ्छास्त्रविदः शूरांस्तलव्य-
लक्षान्कुलोज्ज्वलान् ॥ सचिवान्समचाद्यैवाप्रकुर्वीत परीक्षिता-
न् ॥ ५४ ॥ अपि यत्सुकरं कर्म तदप्येकेन दुष्करम् ॥ विशेषतो
ऽसहायेन किञ्चुराज्यं महोदयम् ॥ ५५ ॥ तैः सार्धं चिन्तयन्नि-
त्यं सामान्यसन्धिविग्रहम् ॥ स्थानं समुदयं गुप्तिं लब्धप्रशम-
नानि च ॥ ५६ ॥ तेषां स्वस्वमभिप्रायमुपलभ्य पृथक् पृथक् ॥
समस्तानां च कार्येषु विदध्याद्वितमात्मनः ॥ ५७ ॥ सर्वेषां तु
विशिष्टेन ब्राह्मणेन विपश्चिता ॥ मंत्रयेत्यमं मंत्रराजा वाङ्मु-
खाय संयुतम् ॥ ५८ ॥

۵۳۔ ان اٹھارہ کلام بیس بیس اور موت میں پسینہ ہون ہے کیونکہ بیسین والا ترک میں جاتا ہے اور جسے بیسین کو ترک کیا وہ منزل کے بعد سوگ میں جاتا ہے اسکو بیسین کہتے ہیں
۵۴۔ جو لوگ شاستر کے جاننے والے۔ و شجاع و حکم انداز ہوں اور اچھے خاندان میں پیدا ہوتے ہیں انکا امتحان لیکر راجہ انکو اپنا وزیر بنا دے اور وہ وزیر بعد ازاں سات یا آٹھ ہون
۵۵۔ جو کام سہل ہے وہ بھی اکیلے نہیں ہو سکتا اور راج کا ج بڑا بھاری ہے کہ طرح اکیلے ہو سکے۔
۵۶۔ ان وزیروں کے ساتھ امور مفصلہ ذیل پر ہر روز غور کرے یعنی صلح و جنگ و خزانہ و شہر و راج و رعیت خانہ وغیرہ
و فوج کی پرورش و غلہ و سونا وغیرہ کی سپدائش کا مقام و اپنی و راج کی حفاظت اور ملے ہوئے دھن کو اچھے لوگوں کو دان دینا۔

۵۷۔ وزیر لوگ جو صلاح دین اسکو علیحدہ علیحدہ با ایک ہی دفعہ سمجھ کر حکم مناسب دے کہ ہمیں اپنا بھلا ہو۔

۵۸۔ سب وزیروں میں جو اچھا ہو اسے ساتھ چھ گن لے لے پر مंत्र (یعنی صلاح) کو چار چھ گن لے لے

* جسکا تیر لٹا: برخطا نمک۔

धैर्यं न्यसाहसं शोहं ईर्ष्यास्यार्थदूषणम् ॥ वाग्दराब्जं च पारु-
 ध्यं क्रोधजोऽपि गरीष्ठकः ॥ ४८ ॥ द्वयोरप्येतयोर्मूलं यंसर्व-
 कवयो विदुः ॥ तं यत्नेन जयेत्सो भंतश्चावेता बुभौ गरीष्ठ ॥ ४९ ॥
 पानपक्षाः स्त्रियश्चैव मृगायाचयथाक्रमम् ॥ एतत्कष्टतमं वि-
 द्याच्चतुष्कं कामजे गुरौ ॥ ५० ॥ दराडस्य पातनं चैव वाक्पारु-
 ध्यार्थदूषणौ ॥ क्रोधजोऽपि गरीष्ठकश्चैव तत्त्विकं सदा ॥ ५१ ॥
 सप्तकस्यास्य वर्गस्य सर्वत्रैवानुषंगिणः ॥ पूर्वपूर्वगु-
 रुतरं विद्याद्यसनमात्मवान् ॥ ५२ ॥

۴۸۔ جو چیزیں کروڑوں سے پیدا ہوتی ہیں وہ یہ ہیں۔ بدرون جانے عیب کو کہنا ایسے
 بل سے کام کرتا۔ دغا سے کیسے مار ڈالنا۔ دوسری عظمت کو نہ سنا۔ کیسے ہر شے میں عیب
 لگانا۔ ارہتہ کو چورانہ۔ خواہ جو چیز دینے کے قابل ہے اس کو دنیا سخت زہین
 سے گفتگو کرنا۔ دغا سے تارنا کرنا۔

۴۹۔ اوپر جو دو طرح کی باتیں وہ جب ترک کہہ آئے ہیں اون کی جڑ لایچ ہے لیکن لایچ
 سے وہ پیدا ہوتی ہیں اس واسطے لایچ کو حکمت عملی سے چھوڑنا چاہیے
 اس کو قابو میں کرنے سے سب قابو میں ہو جاتی ہیں اس بات کو عقل مند
 نے کہا ہے۔

۵۰۔ کام سے پیدا ہوتی چیزوں میں شہ اپنا۔ پالنا کھیلنا۔ عورت کی اطاعت نہ کرنا
 کھیلنا۔ یہ چاروں ایک سے ایک زیادہ زبوں ہیں۔

۵۱۔ کروڑوں سے پیدا ہوتی چیزوں میں دغا سے مارنا۔ گالی دینے کے لائق
 چیز کو نہ دینا یہ تین ہمیشہ بہت زبوں ہیں۔

۵۲۔ یہ ساتواں ایک جگہ رہنے والے ہیں انہیں درجہ بدرجہ ایک سے ایک زیادہ
 زبوں ہیں۔

ت্রেविद्येभ्यस्त्रयींविद्यांदशानीतिचशाश्वतीम्॥ आन्वीसि
कींचात्वविद्यांवार्त्तारम्भाश्चलोकतः॥ ४३॥ इन्द्रियाणांज-
येयोगंसमातिष्ठेद्दिवादिशम्॥ जितेन्द्रियोहिशक्नोतिवश-
स्थापयितुंप्रजाः॥ ४४॥ दशकामसमुत्थानितथाद्यैक्रोधजा
निच॥ व्यसतानिदुरक्तानिप्रयत्नेनचिक्वर्जयेत्॥ ४५॥ कामजेषु
प्रसक्तोहिव्यसनेषुमहीयतिः॥ विद्युज्यतेऽर्थधर्माभ्यांक्रोधजे
ष्वात्मनेवतु॥ ४६॥ सुगयासादिवास्वमःपरिवारःस्त्रियोमदः
तौर्यत्रिकंव्यात्याचकामजोरशकोगराः॥ ४७॥

۴۳- تین دید کے جاننے والوں سے تینوں دید کو اڑھڑا اور نیت جاننے والوں سے
نیت شاستر کو اور برہم دیا جاننے والوں سے برہم دیا کو پڑھے اور حصول دولت کی توبہ
جاننے والوں سے کھیتی اور تجارت اور حفاظت چار پایہ وغیرہ کو سیکھے۔

۴۴- رات دن اندریوں کو قابو میں کرنے کی کوشش کرے جو راجہ جیتندر ی لینے
اپنے نفس پر غلبہ ہے وہ تمام رعایا کو اپنے اختیار میں رکھ سکتا

۴۵- دس چیز کام سے پیدا ہوتی ہیں اور آٹھ چیز کردہ سے پیدا ہوتی ہیں
اولکائیک واجب سمجھے۔

۴۶- کام سے پیدا ہوتی چیزوں میں معروف ہونے سے راجہ کے دھرم اور اخلاق کا
ناش ہو جاتا ہے اور کردہ سے پیدا ہوتی چیزوں میں معروف ہونے سے
راجہ آپٹ جاتا ہے۔

۴۷- جو چیزیں کام سے پیدا ہوتی ہیں وہ یہ ہیں۔ شکار کھیلنا پالت گھیلنا دن میں
دوسرے کا عیب ظاہر کرنا عورت کی خدمت کرنا۔ شراب پکارت ہو جانا۔ ناخا۔ گانا بجانا
بے فائدہ کھوسنا

ब्राह्मणान्यर्युपासीत प्रातरुत्थाय पार्थिवः ॥ त्रैविद्यब्रह्म-
न्विदुषस्तिष्ठेत्तेषां च शासने ॥ ३७ ॥ ब्रह्मांश्च नित्यं सेवेत विप्रा-
न्वेदविदः शुचीन् ॥ ब्रह्मसेवी हि स ततं रसो भिरपि पूज्यते ॥ ३८ ॥
तेभ्योऽधिगच्छेद्विनयं विनीतात्मापि नित्यशः ॥ विनीतात्मा
हि नृपतिर्न विनश्यति कर्हि चित् ॥ ३९ ॥ बहवोऽविनयान्नृणां
राजानः सपरिच्छदाः ॥ बलस्था अपिराज्यानि विनयात्प्रति-
प्रेहिरे ॥ ४० ॥ वेनो विनष्टोऽविनयान्न ह्ययश्चैव पार्थिवः ॥ सु-
दासो यवनश्चैव सुसुरवो निमिरेव च ॥ ४१ ॥ पृथुस्तु विनयाद्वा-
ज्यं प्राप्तवान्न नुरेव च ॥ कुवेरश्च धनैश्चर्य्य ब्राह्मणाय चैव गा-
धिजः ॥ ४२ ॥

۷۴۔ راجہ وقت ضیح اٹھکر رگ بھر سام دیدن کے ارتھہ جلنے والے برہمنوں کا دشمن اور اوریوچن کرے اور انکا تابع حکم رہے۔

۸۔ کمپو تراور بڈھے وید پڑھنے والے براہمنوں کی ہر روز خدمت کرے ایسا براجرا کیشن سے بھی پوچھا جاتا ہے۔

۹۴۔ پیدائشی عقل اور دیکھنا سنانے کے پڑھنے سے جو عقل پیدا ہو ان دونوں کی وجہ سے اگر مزاج ملائم ہو تاہم میرا دیا وقتی عاجزی کے براہمنوں سے عاجزی کیا کرے تاکہ کبھی نہ ٹانہ ہو۔
۹۵۔ بہت راجہ عاجزی کرنے سے مع اپنی راجہ و دولت کے بگڑ گئے اور جنگل میں رہنے والے راجاؤں نے عاجزی کرنے سے راجہ کو پایا ہے۔

۱۴۔ بین ہنش مہین کا بیٹا اس سکھ نم یہ سب راہیو جو عاجزی نکرے کے مٹ گئے۔
۱۵۔ عاجزی کرنے سے پر تھوڑے دن پانچ پایا اور کبیر بھگوان کے بھندارے کے
جرائی ہوئے اور سو امنہ کشتری سے یہ امن ہو گئے۔

یاتر شیا مہ لہ ہتا سہ دشا ڈش رتیا پاہا ॥ پراستا تان سہ
 ہا نلینہ تا چہ تا ڈھ پش پتی ॥ ۲۵ ॥ تاسا ڈھ : ساسا رتا رتا
 ناں ساسا وادینا ॥ ساسا ساسا رتا رتا پراستا تان سہ
 دشا ॥ ۲۶ ॥ تان رتا پراستا تان ساسا رتا رتا پراستا تان
 ساسا وادینا : ساسا وادینا ساسا وادینا ॥ ۲۷ ॥ دشا ڈھ
 ہا نلینہ تا چہ تا ڈھ پش پتی : ॥ دشا ڈھ ہا نلینہ تا
 چہ تا ڈھ پش پتی : ॥ دشا ڈھ ہا نلینہ تا چہ تا ڈھ
 پش پتی : ॥ دشا ڈھ ہا نلینہ تا چہ تا ڈھ پش پتی : ॥
 دشا ڈھ ہا نلینہ تا چہ تا ڈھ پش پتی : ॥ دشا ڈھ ہا
 نلینہ تا چہ تا ڈھ پش پتی : ॥ دشا ڈھ ہا نلینہ تا چہ
 تا ڈھ پش پتی : ॥ دشا ڈھ ہا نلینہ تا چہ تا ڈھ پش
 پتی : ॥ دشا ڈھ ہا نلینہ تا چہ تا ڈھ پش پتی : ॥

- ۲۵ - جہاں سیاہ رنگ سب آئینہ والا ناسن کرنا والا ڈھ گھوڑا ہے وہاں پر جا کو وہ
 ہین ہوتا لیکن اس حالت میں کہ جب ڈھ دینے والا آدمی اچھی طرح سے ڈھ کو دیکھے -
 ۲۶ - جو راجہ سچ بولنے والا اور غور کرنے والا اور دھرم دار تھے کام نینوں میں ہوشیار اچھی طرح
 سے جانتے والا وہی اس ڈھ کا دینے والا ہے -
 ۲۷ - اس سزا کو دینے سے راجہ و دھرم دار تھے و کام سے بڑھتا ہے جتنے آدمی کامی کر دے
 دینے میں دے سب سزا ہی سے مارے جاتے ہیں -
 ۲۸ - مزا نہایت پر جلال ہے جو راجہ شاستر کو نہیں جانتا وہ سزا وہی کو اختیار نہیں کر سکتا
 وہی سزا اور دھرمی راجہ اور اس کے رشتہ داروں کو نہیں دیا جاتا کہتی ہے -
 ۲۹ - وہی سزا قلعہ و راج و ساکن و متحرک عالم و انتر کش یعنی عالم بالا میں جو سن دیوتا کو
 پناہ انکو تکلیف دیتی ہے
 ۳۰ - جو راجہ پناہ ہین رکھتا اور جاہل اور لالچی اور دنیاوی عیش میں بھولا ہوا ہے وہ نقصان
 کے موافق سزا ہین دیکھتا -

समीक्ष्यसधतः सम्यक्सर्वारंजयतिप्रजाः ॥ असमीक्ष्यप्रणी-
 तस्तु विनाशयतिसर्वतः ॥ १९ ॥ यद्विप्ररायेद्राजा दराडदं-
 ड्येव तद्विप्रः ॥ शूले मत्स्यानिवाप्य ह्यर्ध्वलान् च लवत्तराः
 ॥ २० ॥ अद्यात्काकः पुरोडाशं चालित्वा हविस्तथा ॥ स्वा-
 म्यं च न स्यात्कस्मिंश्चित्त्वर्ते ताधरोत्तरम् ॥ २१ ॥ सर्वो दराड नि-
 तो लोको दुर्लभो हि शुचिनरः ॥ दराडस्य हि भयात्सर्वजगद्भोगा-
 यकल्पते ॥ २२ ॥ देवतानवगन्धर्वारक्षांसि पतंगो रगाः ॥ तेषां
 भोगाय कल्पते दराडे नैव निपीडिताः ॥ २३ ॥ दुष्येयुः सर्ववर्णा-
 अभिघेरन् सर्वसेतवः ॥ सर्वलोकप्रकोपश्च भवेद्दराडस्य विभ्र-
 मात् ॥ २४ ॥

۱۹- جب غوز کر کے اچھی طرح سے منرا دیجاتی ہے تب تمام رعایا کو آرام ملتا ہے اور جب ہی
 منرا بد دن غوز کر کے بے محابا دیجاتی ہے تب تمام رعایا کو سب طرف سے ستا دیتی ہے۔

۲۰- اگر راجہ شستی کر کے اشخاص واجب التقریر کو منرا نہ دیوے تو زیر دست آدمیوں کو
 زیر دست آدمی جیسا مشکل کر دیوں۔

۲۱- اگر منرا نہ تو دیو تاؤں کا حصہ کو کو اکھاڑا لے اور کوئی مالک نہ ہے سب لوٹ پلٹ ہو جا
 ۲۲- جتنے جاندار ہیں سب منرا کے لائق ہیں پاک آدمی تاؤں ہیں منرا کے خوف سے سب
 جاندار کام کرنے کی طاقت رکھتے ہیں۔

۲۳- دیودانور کشتش کشتی سانپ یہ سب منرا کے ویلے سے کام کرنے کی طاقت
 رکھتے ہیں۔

۲۴- منرا کے لائق آدمیوں کو منرا نہ دینے سے اور منرا نہ دینے کے لائق آدمیوں کو منرا
 دینے سے تمام درن و شرٹ ہو جائینگے اور مر جاد اٹوٹ جائیگی تمام عالم درہم برہم
 ہو کر مگر جائیگا۔

तस्माद्धर्मयमिष्टेषुसव्यवस्थेन्नराधिपः॥ अनिष्टंचाप्यनि
 ष्ठेषुतंधर्मनविचालयेत्॥ १३॥ तस्यार्थेसर्वभूतानांगोपारं
 धर्मात्मात्मजम्॥ ब्रह्मतेजोभयंदराडमस्तुजत्पूर्वमीश्वरः १४
 ॥ तस्यसर्वाणिभूतानिस्थावराणिचराणिच॥ भयाद्भोगा-
 यकल्पन्तेस्वधर्मान्नचलन्तिच॥ १५॥ तद्देशकालौशक्तिं
 चविद्यांचावेक्ष्यतत्त्वतः॥ यथार्हतःसंप्ररायेन्नेष्ट्वन्याय-
 वर्त्तिषु॥ १६॥ सराजायुरुषोदराडःसनेताशासिताचसः॥
 चतुर्गामाश्रमाराणंचधर्मस्यप्रतिभूःस्मृतः॥ १७॥ दराडःशा-
 स्तिप्रजाःसर्वादराडसवाभिरसति॥ दराडःसुप्तेषुजागर्त्तिद-
 राडंधर्मविदुबुधः॥ १८॥

۱۳۔ اس سبب سے دھشت انشت میں دید کے موافق جس دھرم کو راجہ قائم کرے
 اس سے انحراف نہ کرنا چاہئے۔

۱۴۔ ایشور نے اس راجہ کے واسطے سب جانداروں کے حفاظت کے لئے اپنے بیٹے
 برہم تیج روپ دند کو پہلے ہی پیدا کیا۔

۱۵۔ اس دند کے خوف سے جانداران ساکن و متحرک بھوک کرنے کے لئے سمر تھہرتے
 ہیں اور اپنے دھرم سے منحرف نہیں ہو سکتے۔

۱۶۔ ملک وقت و علم و طاقت کو دیکھ کر مجرموں کو درجہ بدرجہ سزا سے مناسب
 دیوے۔

۱۷۔ دہی دند (یعنی منرا) جگا اوپر بیان کیا گیا ہے راجہ ہے اور دہی مرد ہے اور سب
 بہنیز عورت ہیں کاموں کا انجام دینے والا چارو آتش بونے دھرم کا حکم دینے والا اور من دہی ہے۔

۱۸۔ سب رعایا کی حفاظت کرنے والا اور حکم دینے والا اور سوتے ہوئے لوگوں کا جگانیا والا
 دہی دند ہے اسی دند کو پنڈت لوگ دھرم کہتے ہیں۔

سوऽग्निर्भवति वायुश्च سوऽرکः सोमः सधर्मराट् ॥ सकुबेरः
 सवरुणाः समहेन्द्रः प्रभावतः ॥ ७ ॥ बालोऽपि नावसन्तव्यो
 मनुष्य इति भूमिपः ॥ महती देवता ह्येषानररूपेणातिष्ठति ॥
 ८ ॥ एकमेव दहत्यग्निर्नरानुरूपसर्पिरास ॥ कुलन्दहति
 राजाग्निः सपशूद्वयसंचयम् ॥ ९ ॥ कार्य्यं सोऽवेक्ष्य शक्ति-
 च देशकालौ च तत्त्वतः ॥ कुरुते धर्मसिद्ध्यर्थं विश्वरूपं पुनः
 पुनः ॥ १० ॥ यस्य प्रसादे यद्याश्री विजयश्च पराक्रमे ॥ मृत्यु-
 च्छवसति क्रोधे सर्व्वतेजो मयो हिसः ॥ ११ ॥ तं यस्तु द्वेष्टि सं मो-
 हात्सविनश्यत्यसंशयम् ॥ तस्य ह्याशुचिनाशा यराजा प्रकु-
 रुते मनः ॥ १२ ॥

۷۔ وہی راجہ اپنے پر بھاء کے موافق۔ اگر ہوا سو ج چن در مان دھرم راج اندر
 کبیر برن ہے۔

۸۔ راجہ بالک بھی ہو تو بھی بھل انسانی اسکی تحقیر نہ کرنا چاہیے کیونکہ راجہ بصورت اپنا
 بڑا دیوتا بن پر قائم ہے۔

۹۔ اگر گے سامنے جو کوئی جاتا ہے صرف اسی کو اگن جلاتی ہے مگر راج روپ اگن
 تمام خاندان کو مع اسباب و چار پایہ کے جلا دیتی ہے۔

۱۰۔ وہ راجہ اپنے کام و شگست و دیش و کال کو تو تھوڑا روک دیکھ کر دھرم سدھ کیلئے
 انیک روپ یارم بار دھارن کرتا ہے۔

۱۱۔ جس راجہ کی خوشی دین لکشی رہتی ہے اور پر اکرم دین فتح اور غنیمت موت وہ راجہ
 تمام تیجوں کا دھارن کر لیا کرتا ہے۔

۱۲۔ جو آدمی مٹھ سے ایسے راجہ کے ساتھ دشمنی کرتا ہے وہ ضرور ناش ہو جاتا ہے
 ایسے آدمی کے ناش کے لئے راجہ بہت جلد دل لگاتا ہے۔

राजधर्मान्प्रवक्ष्यामियथावृत्तोभवेन्नृपः॥सम्भवश्चयथा
तस्यसिद्धिश्चयस्मायथा॥१॥ब्राह्मंप्राप्तेनसंस्कारंसत्रि
येरायथाविधि॥सर्वस्यास्ययथान्यायंकर्तव्यपरिरक्ष-
णाम्॥२॥अराजकेहिलोकेऽस्मिन्सर्वतोविद्रुतेभयात्॥
रक्षार्थमस्यसर्वस्यराजानमस्तजत्यभुः॥३॥इन्द्रानिलयमा-
काराणामग्नेश्चवरुणास्यच॥चन्द्रचित्तेशयोश्चैवमात्राभि-
निर्मितो नृपः॥४॥यस्मादेवांसुरेन्द्राणांमात्राभ्योनिर्मि-
तो नृपः॥तस्मादग्निभवत्येषसर्वभूतानितेजसा॥५॥तपत्या-
दित्यवद्यैषचसुंघिचमनांसिच॥नचैनंभुविशक्नोलिकश्चि-
दप्यभिचीक्षितुम्॥६॥

۱۔ جس پر کار سے راجون کی پیدائش اور پریم ستر اور آجرن ہے اس سب کو کہیں گے۔

۲۔ کشتری بدھ جینوں کے کر اپنی راج کی پر جا کا پالن ارزد سے اضا ف کے کرے۔

۳۔ جو ملک سب طرف سے خوفناک ہے اور دشمن راج نہیں ہے اس ملک کی حفاظت کیونکہ اسے سری برہما جی نے راجہ کو پیدا کیا۔

۴۔ اندر۔ بالویم۔ راج۔ سورج۔ آگن۔ برہن۔ چند مان کبیر۔ ان آٹھوں کے اس سے شری برہما جی نے راجہ کو پیدا کیا۔

۵۔ جو کہ دیوتوں کے انش سے راجہ پیدا ہوا اس سب سے اپنے تیج سے جانداروں کو مغلوب کرتا ہے۔

۶۔ دیکھنے والے کی آنکھوں کو اور دل کو سورج کی طرح تپاتا ہے کوئی آدمی نہیں پر راجون کے رویہ کو نہ دیکھ سکتا کیونکہ اولکایچ سورج کے مانند ہے۔

دशलکشا کاندھرم مनु تیष्ठن ماहितः ॥ वेदान्तं विधिवच्छ्रु-
त्वासंन्यसेदक्षरादिजः ॥ ६४ ॥ संन्यस्य सर्वकर्माणि कर्महो-
षानपानुत्सृज ॥ नियतो वेदमभ्यस्य पुत्रैश्चर्यैः सुखं वसेत् ॥ ६५ ॥
॥ सवं संन्यस्य कर्माणि स्वकार्यपरमोऽसृहः ॥ संन्यासेना-
यहत्यैनः प्राप्नोति परमां गतिम् ॥ ६६ ॥ यद्यवोऽभिहितो ध-
र्मो ब्राह्मणस्य चतुर्विधः ॥ दुराथोऽस्य फलः प्रेत्य राज्ञां ध-
र्मनिबोधत ॥ ६७ ॥

इति मानवे धर्मशास्त्रे भृगुप्रोक्तायां संहितायां षष्ठोऽध्यायः ६

۹۴ - بے فکر ہو کر اس دھرم کو کرتا ہوا بدھ پور دک دیدانت شاستر کو شکر تینوں بن
لیئے قرع کو ادا کر کے سناس دھارن کرے۔
۹۵ - سب کرموں کو چھوڑ کر اور کرم دوش کا ناش کر کے نیم سے دید کا ابھياس کر کے
پتر کے ایشوچ میں سکھ سے رہے۔
۹۶ - اس طرح سب کرموں کو چھوڑ کر آتم گیان کو مقدم کر سورگ وغیرہ کی خواہش چھوڑ کر
سناس کے وسیلہ سے پابون کو دور کر کے پر مکت کو پاتا ہے۔
۹۷ - بھگ جی کہتے ہیں کہ اے رش لوگو آپ سے براہمنوں کا چار پرکار کا دھرم کہا دھرم
پاک ہے اور پر کوک بین اسکا پھل بے زوال ہے اسکے بعد راجون کا دھرم کہتے ہیں۔
من جی کا دھرم شاستر بگ جی کی سنگھٹا کا چھٹھواں ادھیاے
سمپت ہوا۔

सर्वेषामेव चैतेषां वेदस्य तिविधानतः ॥ गृहस्य उच्यते श्रेष्ठः स
 त्रीनेतान् विभर्ति हि ॥ ८९ ॥ यद्यानदी नदाः सर्वे सागरे यांति सं-
 स्थितिम् ॥ तथैवाश्रमिणाः सर्वे गृहस्थे यांति संस्थितिम् ॥ ९० ॥
 चतुर्भि रपि चैवैतेर्नित्यमाश्रमिभि र्विजैः ॥ दशलक्षणाको ध-
 र्मः सेवितव्यः प्रयत्नतः ॥ ९१ ॥ धृतिः समाहमोऽस्ते यं शौचमि-
 न्द्रियनिग्रहः ॥ धीर्विद्यासत्यमक्रोधोदशकंधर्मलक्षणम् ॥
 ९२ ॥ दशलक्षणानि धर्मस्य ये विप्राः समधीयते ॥ अधीत्य-
 चानुवर्तन्ते ते यान्ति परमां गतिम् ॥ ९३ ॥

۸۹- وید اور اسمرت کے برہمان سے چارو آشرمون سے گریہتمہ آشرم ہوا
 ہے کیونکہ تینوں آشرم میں رہنے والے آدمیوں کو کھانے اور کپڑے سے گریہتمہ
 ہی پائے کرتا ہے۔

۹۰- صبط ندی اور نالے سمندر میں جا کر قائم ہوتے ہیں اسی طرح سب آشرم والے
 گریہتمہ ہی میں قیام پاتے ہیں۔

۹۱- چارو آشرم والے ہمیشہ دس لکھن والے دھرم کو تدبیر سے اختیار کریں

۹۲- دھرم کے دس لکھن میں ستونش (یعنی قناعت) کشا (یعنی کسی سے نقصان پاکر)

نقصان نہ کرنا) دم (یعنی بکار نہ لینا) بے لگا کر من میں بکار نہ لینا) چوری کا تیاگ

پوترا (یعنی طہارت) بشیون سے اندریوں کو روکنا۔ شاستر وغیرہ کا اتنو گیشن

آتم گیشن (یعنی خود شناسی) شیتہ۔ غصہ کرنے والی بات میں بھی غصہ

نہ کرنا

۹۳- جو آدمی ان دھرمون کو جان کر عنایت کرتا ہے وہ پریم گت کو
 پاتا ہے۔

अधियज्ञं ब्रह्मजपेदाधिदैविकमेव च ॥ अध्यात्मिकं च सततं
वेदान्ताभिहितं च यत ॥ ८३ ॥ इदं शरणाभ्यासज्ञानाभिर्मेव वि-
जानताम् ॥ इदमन्विच्छतां स्वर्गमिदमानन्त्यमिच्छताम् ॥
८४ ॥ अनेन क्रमयोगेन परिव्रजतियो द्विजः ॥ स विधूयेह पा-
पानं परब्रह्माधिगच्छति ॥ ८५ ॥ एष धर्मोऽनुशिष्टो बो-
धीनां नियतात्मनाम् ॥ वेदसंन्यासिकानां तु कर्मयोगं निबो-
धत ॥ ८६ ॥ ब्रह्मचारी गृहस्थश्च वानप्रस्थो यतिस्तथा ॥ एते
गृहस्थप्रभवाश्चत्वारः पृथगाश्रमाः ॥ ८७ ॥ सर्वेऽपि क्रमश-
स्त्वेते यथाशास्त्रं नियेचिताः ॥ यथोक्तकारिणां विप्रं नयन्ति
परमां गतिम् ॥ ८८ ॥

۸۳ - گیتہ اور دیوتا اور جیوان سمجھون کے ادھکار کر کے جو برہم کا مَرُوپ دید اور ویدانت میں
کہا ہے ان سمجھون کا برت یا دن کرنے والا جو وید، اسکا چکر ہے۔

۸۴ - گیتانی اور گیتانی اور موکش و سورگ کی اچھا کر نیوالوں کو تدبیر تباہی والا ایک پد
ہی ہے

۸۵ - جو برہمن کشتری ویشیہ اس طریق سے سنیاسی ہوتا ہے وہ اس لوک میں پاپ کو
چھوڑ کر لوک میں پر برہم کو پاتا ہے۔

۸۶ - بھگت جی کہتے ہیں کہ اے رشیو چار طرح کے جوتی میں کیسے بھوکے ہیں۔ برہمن
ان سمجھون کا سادھارن دھرم کہا اپنیوں میں جو پس کیسے برہمن انکا سادھارن دھرم کہتے ہیں
۸۷ - برہم چاری گریستھ بان پرستھ تپس لیس تپس سنیاسی یہ چار دھرم علیحدہ علیحدہ گریستھ
ہی سے پیدا ہیں۔

۸۸ - جو برہمن شاستر کی بددھ سے ان چار دھرم کا بیون کرتا ہے وہ پرہم گت کو پاتا
ہے۔

जराशोकसमाविष्टरोगायतनमातुरम् ॥ रजस्वलमनित्यंचभूता
वासमिमंत्यजेत् ॥ ७७ ॥ नदीकूलंयथावसौवसंवाशकुनिर्यथा
॥ तथात्यजनिमन्देहंकाच्छाद्वाहाद्विमुच्यते ॥ ७८ ॥ प्रियेषुष्वे
षुसुक्ततमप्रियेषुचदुष्कृतम् ॥ विस्तृत्यध्यानयोगेनब्रह्माभ्ये-
तिसनातनम् ॥ ७९ ॥ यथाभावेनभवतिसर्वभावेषुनिःस्पृहः ॥
तदासुखमवाप्नोतिप्रेत्यचेहचशाश्वतम् ॥ ८० ॥ अनेनविधि-
नासर्वास्त्यक्त्वासंगान्शनैःशनैः ॥ सर्वद्वन्द्वविनिर्मुक्तोब्रह्म-
रायेवावतिष्ठते ॥ ८१ ॥ ध्यानिकंसर्वमेवैतद्यदेतदमिश्रितम्
॥ नह्यनध्यात्मवित्कश्चित्क्रियाफलमुपाप्नुते ॥ ८२ ॥

۷۷- ضیعی اور رنج کی وجہ سے بیماری کا گھر ہو کھ پیاس سردی گرمی سے بے چین رہو گن کے
ساتھ ناش ہونے والا بیچ عناصر کا گھر ایسے بدن میں جو آتما رہتا ہے سو ایسے بدن کو ترک
کرے یعنی جس کرم کرنے سے ایسا شریریلے وہ کرم نہ کرے۔

۷۸- چطرح ندی کے کنارے کو درخت چھوڑ دیتا ہے اور درخت کے پرند درخت کو اسطرح
شریر کو تیاگ کرتا ہوا برہم کی اپنا شنا کرنا والا کشت روپی گراہ سے چھوٹ جاتا ہے۔
۷۹- برہم کو جاننے والا مہاتما ہت کارج میں سیکرت کو تیاگ کر کے دھیان یوگ کے وسیلے
برہم میں لین ہو جاتا ہے۔

۸۰- جب پرمارتھ کی وجہ سے بشیون میں دوش جانکر سب چیزوں سے بیخوش ہو جاتا ہوتا
اس لوک میں اور پرلوک میں سکھ پاتا ہے۔
۸۱- اسطرح آہستہ آہستہ سب کو تیاگ کر کے کام کر دوہم سردی و گرمی وغیرہ جو جفت خیرین
میں ان سے علیحدہ ہو کر برہم میں لین ہوتا ہے۔

۸۲- پتر وغیرہ کی ممتا کا تیاگ اور مان و آہان کا سہنا سب بائین جیوتما کو پرتما کے دھیان
کے وسیلے سے ملتی ہیں آتما کا بنانے والا آدمی کر یا پھیل دینی مودہ کا تیاگ اور جفت چیزوں کا سہنا اور کس لینا

دھتھننہ دھما یمانا ناں دھا تھناں ہین ی دھما سلا: ॥ تھینہ نینیا راناں دھتھ-
 نہ دھو دھا: پرا رانا سنی پھات ॥ ۱۱ ॥ پرا رانا یامہ دھہ دھو دھا نڈا ر-
 رانا مینہ کینہ لکھ ی م ॥ پرا تھارہ رانا سانس رانا نڈا نینا نینا شورا-
 نڈا رانا ॥ ۱۲ ۥ ۱۳ ۥ ۱۴ ۥ ۱۵ ۥ ۱۶ ۥ ۱۷ ۥ ۱۸ ۥ ۱۹ ۥ ۲۰ ۥ ۲۱ ۥ ۲۲ ۥ ۲۳ ۥ ۲۴ ۥ ۲۵ ۥ ۲۶ ۥ ۲۷ ۥ ۲۸ ۥ ۲۹ ۥ ۳۰ ۥ ۳۱ ۥ ۳۲ ۥ ۳۳ ۥ ۳۴ ۥ ۳۵ ۥ ۳۶ ۥ ۳۷ ۥ ۳۸ ۥ ۳۹ ۥ ۴۰ ۥ ۴۱ ۥ ۴۲ ۥ ۴۳ ۥ ۴۴ ۥ ۴۵ ۥ ۴۶ ۥ ۴۷ ۥ ۴۸ ۥ ۴۹ ۥ ۵۰ ۥ ۵۱ ۥ ۵۲ ۥ ۵۳ ۥ ۵۴ ۥ ۵۵ ۥ ۵۶ ۥ ۵۷ ۥ ۵۸ ۥ ۵۹ ۥ ۶۰ ۥ ۶۱ ۥ ۶۲ ۥ ۶۳ ۥ ۶۴ ۥ ۶۵ ۥ ۶۶ ۥ ۶۷ ۥ ۶۸ ۥ ۶۹ ۥ ۷۰ ۥ ۷۱ ۥ ۷۲ ۥ ۷۳ ۥ ۷۴ ۥ ۷۵ ۥ ۷۶ ۥ ۷۷ ۥ ۷۸ ۥ ۷۹ ۥ ۸۰ ۥ ۸۱ ۥ ۸۲ ۥ ۸۳ ۥ ۸۴ ۥ ۸۵ ۥ ۸۶ ۥ ۸۷ ۥ ۸۸ ۥ ۸۹ ۥ ۹۰ ۥ ۹۱ ۥ ۹۲ ۥ ۹۳ ۥ ۹۴ ۥ ۹۵ ۥ ۹۶ ۥ ۹۷ ۥ ۹۸ ۥ ۹۹ ۥ ۱۰۰ ۥ ۱۰۱ ۥ ۱۰۲ ۥ ۱۰۳ ۥ ۱۰۴ ۥ ۱۰۵ ۥ ۱۰۶ ۥ ۱۰۷ ۥ ۱۰۸ ۥ ۱۰۹ ۥ ۱۱۰ ۥ ۱۱۱ ۥ ۱۱۲ ۥ ۱۱۳ ۥ ۱۱۴ ۥ ۱۱۵ ۥ ۱۱۶ ۥ ۱۱۷ ۥ ۱۱۸ ۥ ۱۱۹ ۥ ۱۲۰ ۥ ۱۲۱ ۥ ۱۲۲ ۥ ۱۲۳ ۥ ۱۲۴ ۥ ۱۲۵ ۥ ۱۲۶ ۥ ۱۲۷ ۥ ۱۲۸ ۥ ۱۲۹ ۥ ۱۳۰ ۥ ۱۳۱ ۥ ۱۳۲ ۥ ۱۳۳ ۥ ۱۳۴ ۥ ۱۳۵ ۥ ۱۳۶ ۥ ۱۳۷ ۥ ۱۳۸ ۥ ۱۳۹ ۥ ۱۴۰ ۥ ۱۴۱ ۥ ۱۴۲ ۥ ۱۴۳ ۥ ۱۴۴ ۥ ۱۴۵ ۥ ۱۴۶ ۥ ۱۴۷ ۥ ۱۴۸ ۥ ۱۴۹ ۥ ۱۵۰ ۥ ۱۵۱ ۥ ۱۵۲ ۥ ۱۵۳ ۥ ۱۵۴ ۥ ۱۵۵ ۥ ۱۵۶ ۥ ۱۵۷ ۥ ۱۵۸ ۥ ۱۵۹ ۥ ۱۶۰ ۥ ۱۶۱ ۥ ۱۶۲ ۥ ۱۶۳ ۥ ۱۶۴ ۥ ۱۶۵ ۥ ۱۶۶ ۥ ۱۶۷ ۥ ۱۶۸ ۥ ۱۶۹ ۥ ۱۷۰ ۥ ۱۷۱ ۥ ۱۷۲ ۥ ۱۷۳ ۥ ۱۷۴ ۥ ۱۷۵ ۥ ۱۷۶ ۥ ۱۷۷ ۥ ۱۷۸ ۥ ۱۷۹ ۥ ۱۸۰ ۥ ۱۸۱ ۥ ۱۸۲ ۥ ۱۸۳ ۥ ۱۸۴ ۥ ۱۸۵ ۥ ۱۸۶ ۥ ۱۸۷ ۥ ۱۸۸ ۥ ۱۸۹ ۥ ۱۹۰ ۥ ۱۹۱ ۥ ۱۹۲ ۥ ۱۹۳ ۥ ۱۹۴ ۥ ۱۹۵ ۥ ۱۹۶ ۥ ۱۹۷ ۥ ۱۹۸ ۥ ۱۹۹ ۥ ۲۰۰ ۥ ۲۰۱ ۥ ۲۰۲ ۥ ۲۰۳ ۥ ۲۰۴ ۥ ۲۰۵ ۥ ۲۰۶ ۥ ۲۰۷ ۥ ۲۰۸ ۥ ۲۰۹ ۥ ۲۱۰ ۥ ۲۱۱ ۥ ۲۱۲ ۥ ۲۱۳ ۥ ۲۱۴ ۥ ۲۱۵ ۥ ۲۱۶ ۥ ۲۱۷ ۥ ۲۱۸ ۥ ۲۱۹ ۥ ۲۲۰ ۥ ۲۲۱ ۥ ۲۲۲ ۥ ۲۲۳ ۥ ۲۲۴ ۥ ۲۲۵ ۥ ۲۲۶ ۥ ۲۲۷ ۥ ۲۲۸ ۥ ۲۲۹ ۥ ۲۳۰ ۥ ۲۳۱ ۥ ۲۳۲ ۥ ۲۳۳ ۥ ۲۳۴ ۥ ۲۳۵ ۥ ۲۳۶ ۥ ۲۳۷ ۥ ۲۳۸ ۥ ۲۳۹ ۥ ۲۴۰ ۥ ۲۴۱ ۥ ۲۴۲ ۥ ۲۴۳ ۥ ۲۴۴ ۥ ۲۴۵ ۥ ۲۴۶ ۥ ۲۴۷ ۥ ۲۴۸ ۥ ۲۴۹ ۥ ۲۵۰ ۥ ۲۵۱ ۥ ۲۵۲ ۥ ۲۵۳ ۥ ۲۵۴ ۥ ۲۵۵ ۥ ۲۵۶ ۥ ۲۵۷ ۥ ۲۵۸ ۥ ۲۵۹ ۥ ۲۶۰ ۥ ۲۶۱ ۥ ۲۶۲ ۥ ۲۶۳ ۥ ۲۶۴ ۥ ۲۶۵ ۥ ۲۶۶ ۥ ۲۶۷ ۥ ۲۶۸ ۥ ۲۶۹ ۥ ۲۷۰ ۥ ۲۷۱ ۥ ۲۷۲ ۥ ۲۷۳ ۥ ۲۷۴ ۥ ۲۷۵ ۥ ۲۷۶ ۥ ۲۷۷ ۥ ۲۷۸ ۥ ۲۷۹ ۥ ۲۸۰ ۥ ۲۸۱ ۥ ۲۸۲ ۥ ۲۸۳ ۥ ۲۸۴ ۥ ۲۸۵ ۥ ۲۸۶ ۥ ۲۸۷ ۥ ۲۸۸ ۥ ۲۸۹ ۥ ۲۹۰ ۥ ۲۹۱ ۥ ۲۹۲ ۥ ۲۹۳ ۥ ۲۹۴ ۥ ۲۹۵ ۥ ۲۹۶ ۥ ۲۹۷ ۥ ۲۹۸ ۥ ۲۹۹ ۥ ۳۰۰ ۥ ۳۰۱ ۥ ۳۰۲ ۥ ۳۰۳ ۥ ۳۰۴ ۥ ۳۰۵ ۥ ۳۰۶ ۥ ۳۰۷ ۥ ۳۰۸ ۥ ۳۰۹ ۥ ۳۱۰ ۥ ۳۱۱ ۥ ۳۱۲ ۥ ۳۱۳ ۥ ۳۱۴ ۥ ۳۱۵ ۥ ۳۱۶ ۥ ۳۱۷ ۥ ۳۱۸ ۥ ۳۱۹ ۥ ۳۲۰ ۥ ۳۲۱ ۥ ۳۲۲ ۥ ۳۲۳ ۥ ۳۲۴ ۥ ۳۲۵ ۥ ۳۲۶ ۥ ۳۲۷ ۥ ۳۲۸ ۥ ۳۲۹ ۥ ۳۳۰ ۥ ۳۳۱ ۥ ۳۳۲ ۥ ۳۳۳ ۥ ۳۳۴ ۥ ۳۳۵ ۥ ۳۳۶ ۥ ۳۳۷ ۥ ۳۳۸ ۥ ۳۳۹ ۥ ۳۴۰ ۥ ۳۴۱ ۥ ۳۴۲ ۥ ۳۴۳ ۥ ۳۴۴ ۥ ۳۴۵ ۥ ۳۴۶ ۥ ۳۴۷ ۥ ۳۴۸ ۥ ۳۴۹ ۥ ۳۵۰ ۥ ۳۵۱ ۥ ۳۵۲ ۥ ۳۵۳ ۥ ۳۵۴ ۥ ۳۵۵ ۥ ۳۵۶ ۥ ۳۵۷ ۥ ۳۵۸ ۥ ۳۵۹ ۥ ۳۶۰ ۥ ۳۶۱ ۥ ۳۶۲ ۥ ۳۶۳ ۥ ۳۶۴ ۥ ۳۶۵ ۥ ۳۶۶ ۥ ۳۶۷ ۥ ۳۶۸ ۥ ۳۶۹ ۥ ۳۷۰ ۥ ۳۷۱ ۥ ۳۷۲ ۥ ۳۷۳ ۥ ۳۷۴ ۥ ۳۷۵ ۥ ۳۷۶ ۥ ۳۷۷ ۥ ۳۷۸ ۥ ۳۷۹ ۥ ۳۸۰ ۥ ۳۸۱ ۥ ۳۸۲ ۥ ۳۸۳ ۥ ۳۸۴ ۥ ۳۸۵ ۥ ۳۸۶ ۥ ۳۸۷ ۥ ۳۸۸ ۥ ۳۸۹ ۥ ۳۹۰ ۥ ۳۹۱ ۥ ۳۹۲ ۥ ۳۹۳ ۥ ۳۹۴ ۥ ۳۹۵ ۥ ۳۹۶ ۥ ۳۹۷ ۥ ۳۹۸ ۥ ۳۹۹ ۥ ۴۰۰ ۥ ۴۰۱ ۥ ۴۰۲ ۥ ۴۰۳ ۥ ۴۰۴ ۥ ۴۰۵ ۥ ۴۰۶ ۥ ۴۰۷ ۥ ۴۰۸ ۥ ۴۰۹ ۥ ۴۱۰ ۥ ۴۱۱ ۥ ۴۱۲ ۥ ۴۱۳ ۥ ۴۱۴ ۥ ۴۱۵ ۥ ۴۱۶ ۥ ۴۱۷ ۥ ۴۱۸ ۥ ۴۱۹ ۥ ۴۲۰ ۥ ۴۲۱ ۥ ۴۲۲ ۥ ۴۲۳ ۥ ۴۲۴ ۥ ۴۲۵ ۥ ۴۲۶ ۥ ۴۲۷ ۥ ۴۲۸ ۥ ۴۲۹ ۥ ۴۳۰ ۥ ۴۳۱ ۥ ۴۳۲ ۥ ۴۳۳ ۥ ۴۳۴ ۥ ۴۳۵ ۥ ۴۳۶ ۥ ۴۳۷ ۥ ۴۳۸ ۥ ۴۳۹ ۥ ۴۴۰ ۥ ۴۴۱ ۥ ۴۴۲ ۥ ۴۴۳ ۥ ۴۴۴ ۥ ۴۴۵ ۥ ۴۴۶ ۥ ۴۴۷ ۥ ۴۴۸ ۥ ۴۴۹ ۥ ۴۵۰ ۥ ۴۵۱ ۥ ۴۵۲ ۥ ۴۵۳ ۥ ۴۵۴ ۥ ۴۵۵ ۥ ۴۵۶ ۥ ۴۵۷ ۥ ۴۵۸ ۥ ۴۵۹ ۥ ۴۶۰ ۥ ۴۶۱ ۥ ۴۶۲ ۥ ۴۶۳ ۥ ۴۶۴ ۥ ۴۶۵ ۥ ۴۶۶ ۥ ۴۶۷ ۥ ۴۶۸ ۥ ۴۶۹ ۥ ۴۷۰ ۥ ۴۷۱ ۥ ۴۷۲ ۥ ۴۷۳ ۥ ۴۷۴ ۥ ۴۷۵ ۥ ۴۷۶ ۥ ۴۷۷ ۥ ۴۷۸ ۥ ۴۷۹ ۥ ۴۸۰ ۥ ۴۸۱ ۥ ۴۸۲ ۥ ۴۸۳ ۥ ۴۸۴ ۥ ۴۸۵ ۥ ۴۸۶ ۥ ۴۸۷ ۥ ۴۸۸ ۥ ۴۸۹ ۥ ۴۹۰ ۥ ۴۹۱ ۥ ۴۹۲ ۥ ۴۹۳ ۥ ۴۹۴ ۥ ۴۹۵ ۥ ۴۹۶ ۥ ۴۹۷ ۥ ۴۹۸ ۥ ۴۹۹ ۥ ۵۰۰ ۥ ۵۰۱ ۥ ۵۰۲ ۥ ۵۰۳ ۥ ۵۰۴ ۥ ۵۰۵ ۥ ۵۰۶ ۥ ۵۰۷ ۥ ۵۰۸ ۥ ۵۰۹ ۥ ۵۱۰ ۥ ۵۱۱ ۥ ۵۱۲ ۥ ۵۱۳ ۥ ۵۱۴ ۥ ۵۱۵ ۥ ۵۱۶ ۥ ۵۱۷ ۥ ۵۱۸ ۥ ۵۱۹ ۥ ۵۲۰ ۥ ۵۲۱ ۥ ۵۲۲ ۥ ۵۲۳ ۥ ۵۲۴ ۥ ۵۲۵ ۥ ۵۲۶ ۥ ۵۲۷ ۥ ۵۲۸ ۥ ۵۲۹ ۥ ۵۳۰ ۥ ۵۳۱ ۥ ۵۳۲ ۥ ۵۳۳ ۥ ۵۳۴ ۥ ۵۳۵ ۥ ۵۳۶ ۥ ۵۳۷ ۥ ۵۳۸ ۥ ۵۳۹ ۥ ۵۴۰ ۥ ۵۴۱ ۥ ۵۴۲ ۥ ۵۴۳ ۥ ۵۴۴ ۥ ۵۴۵ ۥ ۵۴۶ ۥ ۵۴۷ ۥ ۵۴۸ ۥ ۵۴۹ ۥ ۵۵۰ ۥ ۵۵۱ ۥ ۵۵۲ ۥ ۵۵۳ ۥ ۵۵۴ ۥ ۵۵۵ ۥ ۵۵۶ ۥ ۵۵۷ ۥ ۵۵۸ ۥ ۵۵۹ ۥ ۵۶۰ ۥ ۵۶۱ ۥ ۵۶۲ ۥ ۵۶۳ ۥ ۵۶۴ ۥ ۵۶۵ ۥ ۵۶۶ ۥ ۵۶۷ ۥ ۵۶۸ ۥ ۵۶۹ ۥ ۵۷۰ ۥ ۵۷۱ ۥ ۵۷۲ ۥ ۵۷۳ ۥ ۵۷۴ ۥ ۵۷۵ ۥ ۵۷۶ ۥ ۵۷۷ ۥ ۵۷۸ ۥ ۵۷۹ ۥ ۵۸۰ ۥ ۵۸۱ ۥ ۵۸۲ ۥ ۵۸۳ ۥ ۵۸۴ ۥ ۵۸۵ ۥ ۵۸۶ ۥ ۵۸۷ ۥ ۵۸۸ ۥ ۵۸۹ ۥ ۵۹۰ ۥ ۵۹۱ ۥ ۵۹۲ ۥ ۵۹۳ ۥ ۵۹۴ ۥ ۵۹۵ ۥ ۵۹۶ ۥ ۵۹۷ ۥ ۵۹۸ ۥ ۵۹۹ ۥ ۶۰۰ ۥ ۶۰۱ ۥ ۶۰۲ ۥ ۶۰۳ ۥ ۶۰۴ ۥ ۶۰۵ ۥ ۶۰۶ ۥ ۶۰۷ ۥ ۶۰۸ ۥ ۶۰۹ ۥ ۶۱۰ ۥ ۶۱۱ ۥ ۶۱۲ ۥ ۶۱۳ ۥ ۶۱۴ ۥ ۶۱۵ ۥ ۶۱۶ ۥ ۶۱۷ ۥ ۶۱۸ ۥ ۶۱۹ ۥ ۶۲۰ ۥ ۶۲۱ ۥ ۶۲۲ ۥ ۶۲۳ ۥ ۶۲۴ ۥ ۶۲۵ ۥ ۶۲۶ ۥ ۶۲۷ ۥ ۶۲۸ ۥ ۶۲۹ ۥ ۶۳۰ ۥ ۶۳۱ ۥ ۶۳۲ ۥ ۶۳۳ ۥ ۶۳۴ ۥ ۶۳۵ ۥ ۶۳۶ ۥ ۶۳۷ ۥ ۶۳۸ ۥ ۶۳۹ ۥ ۶۴۰ ۥ ۶۴۱ ۥ ۶۴۲ ۥ ۶۴۳ ۥ ۶۴۴ ۥ ۶۴۵ ۥ ۶۴۶ ۥ ۶۴۷ ۥ ۶۴۸ ۥ ۶۴۹ ۥ ۶۵۰ ۥ ۶۵۱ ۥ ۶۵۲ ۥ ۶۵۳ ۥ ۶۵۴ ۥ ۶۵۵ ۥ ۶۵۶ ۥ ۶۵۷ ۥ ۶۵۸ ۥ ۶۵۹ ۥ ۶۶۰ ۥ ۶۶۱ ۥ ۶۶۲ ۥ ۶۶۳ ۥ ۶۶۴ ۥ ۶۶۵ ۥ ۶۶۶ ۥ ۶۶۷ ۥ ۶۶۸ ۥ ۶۶۹ ۥ ۶۷۰ ۥ ۶۷۱ ۥ ۶۷۲ ۥ ۶۷۳ ۥ ۶۷۴ ۥ ۶۷۵ ۥ ۶۷۶ ۥ ۶۷۷ ۥ ۶۷۸ ۥ ۶۷۹ ۥ ۶۸۰ ۥ ۶۸۱ ۥ ۶۸۲ ۥ ۶۸۳ ۥ ۶۸۴ ۥ ۶۸۵ ۥ ۶۸۶ ۥ ۶۸۷ ۥ ۶۸۸ ۥ ۶۸۹ ۥ ۶۹۰ ۥ ۶۹۱ ۥ ۶۹۲ ۥ ۶۹۳ ۥ ۶۹۴ ۥ ۶۹۵ ۥ ۶۹۶ ۥ ۶۹۷ ۥ ۶۹۸ ۥ ۶۹۹ ۥ ۷۰۰ ۥ ۷۰۱ ۥ ۷۰۲ ۥ ۷۰۳ ۥ ۷۰۴ ۥ ۷۰۵ ۥ ۷۰۶ ۥ ۷۰۷ ۥ ۷۰۸ ۥ ۷۰۹ ۥ ۷۱۰ ۥ ۷۱۱ ۥ ۷۱۲ ۥ ۷۱۳ ۥ ۷۱۴ ۥ ۷۱۵ ۥ ۷۱۶ ۥ ۷۱۷ ۥ ۷۱۸ ۥ ۷۱۹ ۥ ۷۲۰ ۥ ۷۲۱ ۥ ۷۲۲ ۥ ۷۲۳ ۥ ۷۲۴ ۥ ۷۲۵ ۥ ۷۲۶ ۥ ۷۲۷ ۥ ۷۲۸ ۥ ۷۲۹ ۥ ۷۳۰ ۥ ۷۳۱ ۥ ۷۳۲ ۥ ۷۳۳ ۥ ۷۳۴ ۥ ۷۳۵ ۥ ۷۳۶ ۥ ۷۳۷ ۥ ۷۳۸ ۥ ۷۳۹ ۥ ۷۴۰ ۥ ۷۴۱ ۥ ۷۴۲ ۥ ۷۴۳ ۥ ۷۴۴ ۥ ۷۴۵ ۥ ۷۴۶ ۥ ۷۴۷ ۥ ۷۴۸ ۥ ۷۴۹ ۥ ۷۵۰ ۥ ۷۵۱ ۥ ۷۵۲ ۥ ۷۵۳ ۥ ۷۵۴ ۥ ۷۵۵ ۥ ۷۵۶ ۥ ۷۵۷ ۥ ۷۵۸ ۥ ۷۵۹ ۥ ۷۶۰ ۥ ۷۶۱ ۥ ۷۶۲ ۥ ۷۶۳ ۥ ۷۶۴ ۥ ۷۶۵ ۥ ۷۶۶ ۥ ۷۶۷ ۥ ۷۶۸ ۥ ۷۶۹ ۥ ۷۷۰ ۥ ۷۷۱ ۥ ۷۷۲ ۥ ۷۷۳ ۥ ۷۷۴ ۥ ۷۷۵ ۥ ۷۷۶ ۥ ۷۷۷ ۥ ۷۷۸ ۥ ۷۷۹ ۥ ۷۸۰ ۥ ۷۸۱ ۥ ۷۸۲ ۥ ۷۸۳ ۥ ۷۸۴ ۥ ۷۸۵ ۥ ۷۸۶ ۥ ۷۸۷ ۥ ۷۸۸ ۥ ۷۸۹ ۥ ۷۹۰ ۥ ۷۹۱ ۥ ۷۹۲ ۥ ۷۹۳ ۥ ۷۹۴ ۥ ۷۹۵ ۥ ۷۹۶ ۥ ۷۹۷ ۥ ۷۹۸ ۥ ۷۹۹ ۥ ۸۰۰ ۥ ۸۰۱ ۥ ۸۰۲ ۥ ۸۰۳ ۥ ۸۰۴ ۥ ۸۰۵ ۥ ۸۰۶ ۥ ۸۰۷ ۥ ۸۰۸ ۥ ۸۰۹ ۥ ۸۱۰ ۥ ۸۱۱ ۥ ۸۱۲ ۥ ۸۱۳ ۥ ۸۱۴ ۥ ۸۱۵ ۥ ۸۱۶ ۥ ۸۱۷ ۥ ۸۱۸ ۥ ۸۱۹ ۥ ۸۲۰ ۥ ۸۲۱ ۥ ۸۲۲ ۥ ۸۲۳ ۥ ۸۲۴ ۥ ۸۲۵ ۥ ۸۲۶ ۥ ۸۲۷ ۥ ۸۲۸ ۥ ۸۲۹ ۥ ۸۳۰ ۥ ۸۳۱ ۥ ۸۳۲ ۥ ۸۳۳ ۥ ۸۳۴ ۥ ۸۳۵ ۥ ۸۳۶ ۥ ۸۳۷ ۥ ۸۳۸ ۥ ۸۳۹ ۥ ۸۴۰ ۥ ۸۴۱ ۥ ۸۴۲ ۥ ۸۴۳ ۥ ۸۴۴ ۥ ۸۴۵ ۥ ۸۴۶ ۥ ۸۴۷ ۥ ۸۴۸ ۥ ۸۴۹ ۥ ۸۵۰ ۥ ۸۵۱ ۥ ۸۵۲ ۥ ۸۵۳ ۥ ۸۵۴ ۥ ۸۵۵ ۥ ۸۵۶ ۥ ۸۵۷ ۥ ۸۵۸ ۥ ۸۵۹ ۥ ۸۶۰ ۥ ۸۶۱ ۥ ۸۶۲ ۥ ۸۶۳ ۥ ۸۶۴ ۥ ۸۶۵ ۥ ۸۶۶ ۥ ۸۶۷ ۥ ۸۶۸ ۥ ۸۶۹ ۥ ۸۷۰ ۥ ۸۷۱ ۥ ۸۷۲ ۥ ۸۷۳ ۥ ۸۷۴ ۥ ۸۷۵ ۥ ۸۷۶ ۥ ۸۷۷ ۥ ۸۷۸ ۥ ۸۷۹ ۥ ۸۸۰ ۥ ۸۸۱ ۥ ۸۸۲ ۥ ۸۸۳ ۥ ۸۸۴ ۥ ۸۸۵ ۥ ۸۸۶ ۥ ۸۸۷ ۥ ۸۸۸ ۥ ۸۸۹ ۥ ۸۹۰ ۥ ۸۹۱ ۥ ۸۹۲ ۥ ۸۹۳ ۥ ۸۹۴ ۥ ۸۹۵ ۥ ۸۹۶ ۥ ۸۹۷ ۥ ۸۹۸ ۥ ۸۹۹ ۥ ۹۰۰ ۥ ۹۰۱ ۥ ۹۰۲ ۥ ۹۰۳ ۥ ۹۰۴ ۥ ۹۰۵ ۥ ۹۰۶ ۥ ۹۰۷ ۥ ۹۰۸ ۥ ۹۰۹ ۥ ۹۱۰ ۥ ۹۱۱ ۥ ۹۱۲ ۥ ۹۱۳ ۥ ۹۱۴ ۥ ۹۱۵ ۥ ۹۱۶ ۥ ۹۱۷ ۥ ۹۱۸ ۥ ۹۱۹ ۥ ۹۲۰ ۥ ۹۲۱ ۥ ۹۲۲ ۥ ۹۲۳ ۥ ۹۲۴ ۥ ۹۲۵ ۥ ۹۲۶ ۥ ۹۲۷ ۥ ۹۲۸ ۥ ۹۲۹ ۥ ۹۳۰ ۥ ۹۳۱ ۥ ۹۳۲ ۥ ۹۳۳ ۥ ۹۳۴ ۥ ۹۳۵ ۥ ۹۳۶ ۥ ۹۳۷ ۥ ۹۳۸ ۥ ۹۳۹ ۥ ۹۴۰ ۥ ۹۴۱ ۥ ۹۴۲ ۥ ۹۴۳ ۥ ۹۴۴ ۥ ۹۴۵ ۥ ۹۴۶ ۥ ۹۴۷ ۥ ۹۴۸ ۥ ۹۴۹ ۥ ۹۵۰ ۥ ۹۵۱ ۥ ۹۵۲ ۥ ۹۵۳ ۥ ۹۵۴ ۥ ۹۵۵ ۥ ۹۵۶ ۥ ۹۵۷ ۥ ۹۵۸ ۥ ۹۵۹ ۥ ۹۶۰ ۥ ۹۶۱ ۥ ۹۶۲ ۥ ۹۶۳ ۥ ۹۶۴ ۥ ۹۶۵ ۥ ۹۶۶ ۥ ۹۶۷ ۥ ۹۶۸ ۥ ۹۶۹ ۥ ۹۷۰ ۥ ۹۷۱ ۥ ۹۷۲ ۥ ۹۷۳ ۥ ۹۷۴ ۥ ۹۷۵ ۥ ۹۷۶ ۥ ۹۷۷ ۥ ۹۷۸ ۥ ۹۷۹ ۥ ۹۸۰ ۥ ۹۸۱ ۥ ۹۸۲ ۥ ۹۸۳ ۥ ۹۸۴ ۥ ۹۸۵ ۥ ۹۸۶ ۥ ۹۸۷ ۥ ۹۸۸ ۥ ۹۸۹ ۥ ۹۹۰ ۥ ۹۹۱ ۥ ۹۹۲ ۥ ۹۹۳ ۥ ۹۹۴ ۥ ۹۹۵ ۥ ۹۹۶ ۥ ۹۹۷ ۥ ۹۹۸ ۥ ۹۹۹ ۥ ۱۰۰۰ ۥ

۱۔ جطرح سب دھات دھل چاندی دسونا وغیرہ آگ میں تپانے سے میں سے صاف
 ہو جاتی ہے اسی طرح پرایا نام کرنے سے اندریوں کا سب دوش بھسم ہو جاتا ہے۔
 ۲۔ پرایا نام کے دیکھنے سے راگ دوش وغیرہ دشمن کو جلا دینا چاہئے برہم میں مل
 لگانے سے پاپ کو دور کرنا اور اندریوں کو روکنے سے بے کو دور کرنا اور دھیان سے کوہلو بھ
 نڈا وغیرہ جو کہ ایشور سے نسبت نہیں رکھتے چھوڑنا چاہئے۔
 ۳۔ اویخ میخ بھوتوں میں اس انتر اتما کی گت کو دھیان جوگ کر کے دیکھے جس گت توت
 کے موافق سنسکار سے جدا کرنا کرنا والے آدمی کشت سے بھی نہیں دیکھ سکتے۔
 ۴۔ تنو پوروک برہم کو دیکھنے والا آدمی کرہوں کے بندھن میں نہیں آتا اور جو آدمی برہم درشن
 سے محروم رہتا ہے وہ سنسکار کو پاتا ہے برہم کو نہیں پاتا۔
 ۵۔ جیون کو نہ مارنا اندریوں کی صحبت میں نہ پڑنا وید کے موافق کرم کو نہ اترنا تپ کرنا
 کے ذریعہ سے عقل مند آدمی برہم پر دی کو سادھن کرتا ہے۔
 ۶۔ (ب نثریر کا برہن کرتے ہیں) ہار کا بھسٹ لینے ستون رگون سے کسا ہوا خون و گوشت
 سے لپکا ہوا چمڑے سے بندھا ہوا بودا غلیظ و پیشاپے بھرا ہوا ہے۔

सूक्ष्मात्तान् चान्वेसेत योगेन परमात्मनः ॥ देहेषु च समुत्पत्ति
मुत्तमेष्वधमेषु च ॥ ६५ ॥ दूषितोऽपि चोद्धर्मा यत्र तत्राश्रमे र-
तः ॥ समः सर्वेषु भूतेषु न लिङ्गं धर्माकारणम् ॥ ६६ ॥ फलं क-
तक ह्यस्य यद्यप्यस्य प्रसादकम् ॥ न नाम ग्रहणादेव तस्य वा-
रिप्रसीदति ॥ ६७ ॥ संरक्षणार्थं जन्तूनां रात्रा वहनिवासदा ॥
शरीरस्यात्यये चैव समीक्ष्य वसुधां चरेत् ॥ ६८ ॥ अहाराद्या
च यान् जन्तून् हिनस्त्यज्ञानतो यतिः ॥ तेषां स्नात्वा विशुद्ध्यर्थं
प्राणायामान् च डाचरेत् ॥ ६९ ॥ प्राणायामा ब्राह्मणस्य त्रयो
ऽपि विधिवत्कृताः ॥ व्याहृतिप्रणवैर्युक्ता विज्ञेयं परमं तपः
॥ ७० ॥

۶۵- یوگ کے وسیلے سے پرما تا کی گت کو اعمال نیک بد کا نتیجہ پانے کی واسطے اتم مدھم
ادھم یون مین جانداروں کی پیالیش کو بھی غور کرے۔

۶۶- کسی آشرم میں رہے اور اس آشرم کے دھرم پر چلتا ہو لیکن برہم بدھ سے سب کو
برابر دیکھے یہی دھرم ہے گیر داکٹر اور غیرہ پہنچا کچھ دھرم مین داخل نہیں ہے۔

۶۷- نرملی پھل اگرچہ پانی کو صاف کرتا ہے لیکن اسکے نام لینے سے پانی صاف نہیں ہوتا
جب اسکو گھسکر پانی مین دالینگے تب صاف ہوگا اسطرح چھ دھارن کرنا کچھ دھرم نہیں ہے۔
بلکہ اس دھرم پر جانا دھرم کہلاتا ہے۔

۶۸- جانداروں کی حفاظت کیواسطے دن رات ہر وقت زمین کو دیکھ کر چلے تاکہ کوئی حیو
نہ مرے اور اسکے بدن کو بھی تکلیف نہ ہو۔

۶۹- جو سنیاسی بغیر جانے جانداروں کو مارتا ہے اس پاپ کے دور کرنے کے واسطے
اتن کر کے چھ پرایا نام کرنے سے سدھ ہو جاتا ہے۔

۷۰- بیاسہرت اور اونکار کر کے بدھ سے تین پرایا نام بھی کرے تو اس پر اسہن کا پرہم تپ ہے۔

अल्पान्नाभ्यवहारेण सहः स्थानासनेन च ॥ द्विधमाराणां नि-
विष्यैरिन्द्रियाणि निवर्त्तयेत् ॥ ५६ ॥ इन्द्रियाणां निरोधेन राग
द्वेषस्येराच ॥ अद्विसया च भूतानाममृतत्वाय कल्पते ॥ ६० ॥
अवसेत गतीन्दराणां कर्मशेषसमुद्भवाः ॥ निरये चैव यतनं यात-
नाश्च यमस्ये ॥ ६१ ॥ विप्रयोगं प्रियैश्चैव संयोगं च तथा प्रियैः ॥
जरया चाभिभवनं व्याधिभिश्चोपपीडनम् ॥ ६२ ॥ देहादुत्कमरां
चास्मात्पुनर्गर्भं च संभवम् ॥ योनि कोटि सहस्रेषु सृती आस्था-
न्तरात्मनः ॥ ६३ ॥ अधर्मप्रभवं चैव दुःस्वयोगं शरीरिणाम् ॥ ध-
र्मार्थप्रभवं चैव सुखसंयोगमक्षयम् ॥ ६४ ॥

۵۹ - تھوڑا بھوجن کرے اور ایک کانت میں رہے اس سے نشیون کی تلو کی ہوئی اندریون
کو تیرت کرے یعنی نفس انارہ کو ہوا و ہوس سے خالی کرے -

۶۰ - اندریون کو روکنا راگ اور ودیش سے الگ رہنا کسی جاندار کو نہ مارنا ان باتوں سے
شکاسی ہو کش کے لائق ہوتا ہے -

۶۱ - کرموں کے دوش سے آدمیوں کی حالت اور ترک میں پڑنا اور ہم آج کے ملک میں
بڑا دکھ پانا ان سب باتوں کو دیکھتے ہوئے بچا کرے -

۶۲ - پیاری چیزوں کا چھوٹنا اور غوب چیزوں کا ملنا بجا لت پیری بے قدری گناہ و
عذاب درج ان باتوں پر بھی غور کرے -

۶۳ - بدن سے جان کا نکلنا پھر حمل میں قیام کرنا کہ دردن قالب میں پیدا ہونا
ان باتوں پر بھی غور کرے -

۶۴ - دبیہ دھاری آدمیوں کے آدھرم سے دکھ کا ہونا اور دھرم دار تھو سے
لازوال سکھ کا ہونا بھی غور کرے -

अतएव जसानीयात्रा शितस्यस्युर्निर्वृणानिच ॥ तेषामहिः स्मृ-
तं शौचं च मसानाभिवाधरे ॥ ५३ ॥ अलाबुं सरुपात्रं च मन्त्रायं
वैदलं तथा ॥ एतानि यतिपात्राणि मनुः स्यायं भुयोऽब्रवीत् ॥ ५४ ॥
एककालं चरं ह्येसं न प्रसज्येत विस्तरे ॥ भैसे प्रसक्तो हियतिर्वि-
ययेष्वपि सज्जति ॥ ५५ ॥ विधूमे सन्नमुसले व्यंगारे भुक्तवज्जने
॥ वृत्तेशरावसम्पाते भिक्षां नित्यं यतिश्चरेत् ॥ ५६ ॥ अलाभेन वि-
घारी स्यान्नाभे चैव न हर्षयेत् ॥ प्राणायामिकमात्रः स्यान्नात्रा-
संगादि निर्गतः ॥ ५७ ॥ अभिपूजितलाभास्तु जुगुप्सेतैव सर्व-
शः ॥ अभिपूजिततामैश्वर्यतिर्मुक्तोऽपि वद्यते ॥ ५८ ॥

۵۳۔ جو برتن کالنے و پتیل وغیرہ کے مین آنکو چھوڑ کر تو بنا وغیرہ کو رکھے مہین چھینو
اشکو پانی و مٹی سے پاک کرے جیسے بگیہ مین چمن نام برتن کو پاک کرتے ہین۔

۵۴۔ لوکی اور کاٹھ اوٹھی اور بالسن کا برتن اپنے پاس رکھے صرف اتنی ہی برتن بنیاد
کے مین الیا مین جی نے کہا ہے۔

۵۵۔ صرف ایک وقت پھیکھٹے زیادہ پھیکھ لینے کی خواہش نہ کرے کیونکہ زیادہ پھیکھ
لینے سے سنیاسی لذت دنیا مین گرفتار ہو جاتا ہے۔

۵۶۔ جو وقت گھر ہتھ کے گھر مین دھواں دوسل کی آواز نہو اور آگ بھی روشن نہو اور سب
آدی بھوجن کر چکے ہوں اور جو ٹھنی پتیل وغیرہ گھر سے باہر ڈال دیکنی ہو سو وقت سنیاسی پھیکھ
کیوں سٹے ہمیشہ جا ہے۔

۵۷۔ پھیکھ نہ لے تو رہنمیدہ نہو اور لے تو خوش نہو مہین پران کی کشا ہو وہی کرے اور
دغیرہ ساگری مین اچھے برے کا خیال نہ کرے جیسا بلجائے اسی سے کارروائی کرے۔

۵۸۔ جو چیز لو جا سے لے آئی نہو کرے لینے اُسکو نہ لیوے اور پو جا مین خوش ہونے سے
کٹ روپ سنیاسی بندھن مین پھنس جاتا ہے۔

कुच्यन्तंनप्रतिक्रुद्धेदाकुचःकुशलंवदेत्॥ सप्तद्वारावकीर्णां
 चनवाचनस्यतांघरेत्॥ ४८॥ अध्यात्मरतिरासीनो निरपेक्षो
 निराश्रयः॥ आत्मनैवसहायेनसुखाधीविचरेदिह॥ ४९॥
 नवोत्पातनिमित्ताभ्यांननक्षत्रांगविद्यया॥ जानुशासनवा
 दभ्यांभिसांलिप्सेतकहिंचित्॥ ५०॥ नतापसैर्वाह्यरौर्वाच
 यो गिरिविवाश्रयभिः॥ आकीर्णाभिसुकैर्वाचैरागारमुपसंज-
 जेत॥ ५१॥ लक्ष्मकेशनखश्मश्रुःपात्रीदराडीकुसुमवान्॥
 विचरेन्निभृतो नित्यां सर्वभूतान्यपीडयन्॥ ५२॥

۴۸۔ اپنے اوپر کوئی غصہ نہ کرے تو آپ اس پر غصہ نہ کرے اور اگر اپنی برائی کرے تو بھی اپنا پیرو
اچھی باتوں سے اسکو خوش کرے پانچ گیارہ اندری اور بن اور بدھ ان ساتوں سے جو خیر
گزرتن کی گئی ہیں بانی کی پر برت ہے پس ان ساتوں سے ملو جو مطلب حاصل کیا
گیا اس مطلب سے نسبت رکھتے والی بانی کو نہ بوسے بلکہ جو بانی برہم سے نسبت رکھتی ہو
بوسے ملنے پر ہم نوا کرے۔

۹۴۔ ہتھالین پریت کہتا ہے کسی چیز کی خواہش کرے اسن کھانا چھوڑ دے صرف اپنی
اقتی کو مددگار جانے سکھائے ہے اس لوک پن رہے

۵۔ زلز زمین آنکھوں کا پھر کنا وعینہ منتشر اور ہمتہ کی رکھا انجمن کا
چل کر نیت شاعر کا آپدیش کر کے کہی عیبیکہ لینے کا خواہش نہ

۱۵۔ پتیوی برہمن و پرند و نشہ و مہب کھاری یہ سب جس گھر میں مہن اس گھر کو چھوڑ دے۔

۵۴ - بال و ناخن و مو چیمه کو چھوٹا رکھتے و نڈ و گنڈل و پاتر کو پاس رکھتے کسی جاندار کو بیچ
 و نکلیت نہ دیوے نہ بیفیکر ہو کر صبیحہ رہے۔

अनग्निरनिकेतः स्याद्भामभनार्थमाश्रयेत् ॥ उपेक्षकीऽशं-
कुसुकोमुनिभावसमाहितः ॥ ४३ ॥ कपालंहसमूलानिकु-
चेलमसहायता ॥ समताचैव सर्वस्मिन्नेतन्मुक्तस्य लक्षणा-
म् ॥ ४४ ॥ नाभिनन्देत मरणां नाभिनन्देत जीवितम् ॥ कालमे-
व प्रतीक्षेत निर्देशं भूतको यथा ॥ ४५ ॥ हृदि पूतं न्यासेत्याहं व-
स्त्रपूतं जलं पिबेत् ॥ सत्यपूतां च देहा च मनः पूतं समाचरेत् ॥ ४६
॥ अतिवासांस्तितिक्षेत नाचमन्येत कंचन ॥ न च समरेहमात्रि-
त्यधैरं कुर्वीत केनचित् ॥ ४७ ॥

۴۳۔ اگن اور گھر سے علیحدہ ہو کر سب چیزوں کو ترک کر کے ستیقیم لوقل ہو کر رجم میں
چت لگائے ہوتے ان کی واسطے گاتوں کا آسرا کرے۔
۴۴۔ مکت کا لکشن یہ ہے کہ بھیکھ کے واسطے مٹی کا برتن رکھے درخت کی ٹری میں ہو
اور ایسے کپڑے رکھے کہ جو کسی کام کے لائق نہ ہوں اور کسی سے مدد نہ چاہے اور سبھا تدارون
کو برابر سمجھے۔

۴۵۔ موت یا زندگی ان دونوں میں سے کسی کی خواہش نہ کرے صرف وقت ہی کا خیال رکھے
جیسے نوکرا اپنے مالک کے حکم کا خیال رکھتا ہے۔

۴۶۔ بال اور ہڈی سے علیحدہ رہنے کے لئے دیکھ کر زمین پر پاتوں رکھے اور چھوٹے
چھوٹے جانداروں کی حفاظت کے لئے پانی چھان کر پیوے اور جو باتیں سچ
کر کے پاک ہیں انکو پوسے اور من کو تنکلاپ سے خالی کر کے ہر وقت پوتر
اتھا رہے۔

۴۷۔ لوگوں کی ہیودہ باتوں کی برداشت کرے اور کسی کا آچان (توہین) نہ کرے اور
نہ کسی سے دشمنی کرے۔

अनधीत्यद्विजोवेशननुत्याद्यतथासुतान् ॥ अनिष्टाचैवय-
ज्ञेशमोसमिच्छन्त्रजत्यधः ॥ ३७ ॥ प्राजायत्यांनिरूप्येष्टिंसर्व-
वेस्सरसिरााम् ॥ आत्मन्यग्नीन्समारोप्यब्राह्मणाः प्रब्रजे-
मृहात् ॥ ३८ ॥ योदत्वासर्वभूतेभ्यः प्रब्रजत्यभयंमृहात् ॥ त-
स्यतेजोमयालोकाभवन्निब्रह्मवादिनः ॥ ३९ ॥ यस्मादराव-
यिभूतानां द्विजानोत्पद्यतेमयम् ॥ तस्यदेहाद्विसुक्तस्यभयं-
नास्तिकुतश्चन ॥ ४० ॥ आगारादभिनिष्क्रान्तः पवित्रोपचि-
तोमुनिः ॥ समुपोदेषुकामेषुनिरयेसः परिब्रजेत् ॥ ४१ ॥ स-
कण्वचरेन्नित्यंसिद्ध्यर्थमसहायवान् ॥ सिद्धिमेकस्यसम्य-
श्यन्नजहातिनहीयते ॥ ४२ ॥

۷۷- جو براہمن کشمکش ویشیہ دید کو نہ پڑھکر اور دھرم سے پتھر نہ پیدا کر کے اور گیئہ کا نشہان
نہ کر کے موکش کی اچھا کرتا ہے وہ ترک میں جاتا ہے۔

۷۸- پر جاپت دیوتا کی گیئہ کر کے سب کو دکھنا دے کر سب گن کو اپنی آتما میں رکھ کر براہمن
گھر سے نکلے لینے سنیاس دھارن کرے

۷۹- جو آدمی وید کا پڑھنے والا نام جاندار دن کو پیونی دے کر گھر سے باہر نکلتا ہے (یعنی)
سنیاس دھارن کرتا ہے) اسکو تیج روپ لوک ملتا ہے۔

۸۰- جس براہمن سے سب جاندار دن کو تھوڑا بھی ڈر نہیں ہے اسکو پر لوک میں کسی بچہ
بہن ہو تا۔

۸۱- گھر سے نکلا ہوا اور طہارت سے ترقی پایا ہوا اور بچا کرتا ہوا اور دوسری دی ہوئی
وغیرہ چیزوں میں اچھا نہ رکھنے والا سنیاس دھارن کرے۔

۸۲- کسی کی مدد کی خواہش نہ کرے ہمیشہ اکیلا ہے سدھ کے لئے ایک ہی کو سدھ ہوتی ہے
اسات کو دیکھ کر کیوتیاگ نہیں کرتا اور اسکو بھی کوئی تیاگ نہیں کرتا۔

अपराजितां वास्याय व्रजे हि शमजिह्वागः ॥ अनिपाताच्छ-
रीरस्य युक्तो वार्यनिलाशनः ॥ ३१ ॥ आसां महर्षिचर्याणां त्य-
क्तान्यतमया तनुम् ॥ वीतशोकमयो विप्रो ब्रह्मलोके महीय-
ते ॥ ३२ ॥ बनेषु च बिहृत्यैवं तृतीयं भागमायुषः ॥ चतुर्थमायु-
षो भागं त्यक्त्वा संगान्परिव्रजे ॥ ३३ ॥ आश्रमाराश्रमंगत्वाह-
तहोमोजितेन्द्रियः ॥ भिक्षावलिपरिश्रान्तः प्रवजन् प्रेतवर्द्धते
॥ ३४ ॥ अरुणानि त्रीराष्टपाकृत्य मनोमोक्षे निवेशयेत् ॥ अ-
नपाकृत्य मोक्षस्तु सेवमानो ब्रजत्यधः ॥ ३५ ॥ अधीत्य विधि-
वद्देवान्पुत्रांश्चोत्पाद्य धर्मतः ॥ द्वाचशक्तितो यज्ञैर्मनोमो-
क्षे निवेशयेत् ॥ ३६ ॥

۱۳۰- خواہ پانی دہوا کو کھانا ہوا ایساں کو نہ لینے پورب وائر گوشت کی طرف سیدھا چلا جا
جیتک مشریرینہ چھوٹے۔

۱۳۱- یہ سب آپرن بڑے بڑے رشیوں کے کہا ہے جنہیں کسی آپرن مشریر کا تیاگ کر کے تنو
اور ڈر کو چھوڑ کر برہمن پوجت ہوتا ہے۔

۱۳۲- اس طرح سے عمر کا تیرا حصہ جنگل میں آخر کر کے سنگھ کو چھوڑ کر عمر کے حصہ چارم میں
سنیاس کو دھارن کرے۔

۱۳۳- اندریوں کو جیت کر ہون کو تمام کر ایک شترم سے دو شتر آشرم میں جا کر بھیکھ اور بل
کرم سے تنہا جو سنیاس لیکر پرلک میں برہمن پد کو پاتا ہے۔

۱۳۴- تینوں برن یعنی قرصن جسکو دیورن پھر برن رشن برن کہتے ہیں ادا کر کے دلو کو پھر
میں لگا دے بدرون او اگر لے ان تینوں قرصنوں کے جو موکش کا سیون کرتا ہے وہ کرکین پاتا

۱۳۵- برہمن سے دید کو پھر مکر و مہرم سے پھر پیکر کے اپنے مقدور کے موافق گیشہ کو کرتا ہوا
موکش میں دل لگا دے۔

अनीनात्मनिर्वैतानांसमारोप्यथाविधि ॥ अनग्निरनि-
केतास्यात्सुनिर्मूलफलाशनः ॥ २५ ॥ अप्रयत्नः सुखार्थेषु-
ब्रह्मचारीधराशयः ॥ शरशोषममश्चैव वृक्षमूलनिवेतनः ॥
२६ ॥ तापसेव्येव विप्रेषु यात्रिकं भैक्षमाहरेत् ॥ गृहमेधिसु-
चान्येषु विज्ञेयुवनवासिषु ॥ २७ ॥ ग्रामाराहृत्य वा श्रीयारक्षो
प्रासान्वनेव सन् ॥ प्रतिगृह्ययुटेनैव पारिनाशकलेन वा ॥
२८ ॥ सताश्चान्याश्च सेवेतरीक्षाविप्रो वनेव सन् ॥ विविधा-
श्चोपनिषद्गीरात्मसंसिद्धये शुतीः ॥ २९ ॥ ऋषिभिर्ब्राह्मणै-
श्चैव गृहस्थैरेव सेविताः ॥ विद्यातपोविबुध्यर्थं शरीरस्य च शु-
द्धये ॥ ३० ॥

۲۵۔ برہم سے اگن ہو ترکی آگ کو اپنی آتما میں قائم کرے بعد اسکے اگن اور استھان سے علیحدہ ہو کر مڑول پھیل کھاتا ہوا شاستر کو بچا رہے۔

۲۶۔ سکھ کے واسطے کوشش و تدبیر کرے برہم چاری ہو کر زمین پر سوگد و خدمت کی جڑ میں قیام کرے اور قیام گاہ سے محبت نہ کرے۔

۲۷۔ تپسوی برہمن سے بھیگے مانگے اور جو گریستہ بن باسی و روج ہیں اُن سے بھی بھیک مانگے۔

۲۸۔ خواہ گاؤں سے بھیگے مانگ کر آٹھ لقمہ کھائے جنگل میں رہ کر دنیا یا ہاتھ یا مٹی کے برتن کے ٹکڑے میں بھیگے لیوے۔

۲۹۔ جنگل میں رہ کر اس دیکشا کا اور دوسری دیکشا کا بھی سیون کرے اور طرح طرح کے اسپند و نین جو وید کے منتر ہیں ان کو اُمت کی بے بی ریکار سدھ ہونے کے لئے پڑھے اور سمجھے۔

۳۰۔ بدن کے شرع ہو اور تپ بڑھنے کے واسطے اس دویا کا سیون کرے جس دویا کا سیون ریش اور گریستہ برہمنوں نے کیا ہے۔

نक्तंचान्नंसमशीयादिवावाहत्यशक्तیتः ॥ चतुर्थकालिको
 वास्यात्याद्याद्यमकालिकः ॥ १९ ॥ चान्द्रायणाविधानैर्वा
 शुक्लकृषोचवर्त्तयेत् ॥ पक्षान्तयोर्वायशीयाद्यवाशुं कथि
 तांसहत् ॥ २० ॥ पुष्यमूलफलीर्वायिकेवलैर्वर्त्तयेत्सरा ॥ का-
 लपक्षैः स्वयंशीरोर्वैखानसमंते स्थितः ॥ २१ ॥ भूमौ वियरिव-
 र्त्तततिष्ठेद्वाप्रपदैर्दिनम् ॥ स्थानासनाभ्यां विहरेत्सर्वनेयूपय-
 न्नपः ॥ २२ ॥ ग्रीष्मे पंचतपस्तु स्याद्द्वर्षास्वभावकाशिकः ॥ अ-
 र्द्वासास्तु हेमन्ते क्रमशो वर्द्धयंस्तपः ॥ २३ ॥ उपस्थं शंखिषव-
 रां पितृन् देवाश्च तर्षयेत् ॥ तपश्चरंश्चोग्रतरं शोधयेद्देहमात्मनः
 ॥ २४ ॥

۱۹- اپنی طافت کے موافق دن میں لاکرات کو بھوجن کرے یا ایک دن آپاس کرے
 دوسرے دن ایک دفعہ بھوجن کرے یا تین دن آپاس کرے چوتھے دن ایک دفعہ بھوجن کرے
 ۲۰- چاندرا میں برت کو کرے خواہ امداد یا خواہ پورنکاشی کے دن ایک دفعہ جوگی پس
 کھائے۔

۲۱- جو پھول پھل و مٹول سب گزرنے آئیام کے پختہ ہو کر خود بخود کرے ہون انکو کھا کر زندگی
 بسر کرے۔

۲۲- بان پرستہ کے مت میں رہ کر صرف زمین ہی پر ٹٹا کرے یا پانوں کے اگلے حصے کے زور
 سے تمام دن کھڑا رہے اور آستھان اور آسن میں مبارک کرے تینوں کال یعنی صبح دوپہر شام کو
 اشنان کرے۔

۲۳- آہستہ آہستہ تپ کو بڑھاتا ہو گرمی میں پنج اگن تاپے برسات میں مکان بے پردہ میں
 رہے اپنے کھلے سیدان میں رہے جاڑے میں کیلا کپڑا پہنے رہے۔
 ۲۴- تینوں کال اشنان کر کے دیوتا اور پیروں کا تپ کرے بڑھاری تپ کو کرتا ہو ابدن کو سکھاؤ

स्थलजोदकशाकानिपुष्पमूलफलानिच॥ मेध्यदृक्षोद्भवा
न्यद्यात्तेहांश्चफलसंभवान्॥ १३॥ वर्जयेन्मधुमांसंचभौमा
निकयकानिच॥ भूस्तरांशिशुकंचैवक्षेष्मातकफलानिच॥
१४॥ त्यजेदाश्वयुजेमासिमुन्यन्नपूर्वसंचितम्॥ जीर्णानिचै
ववासांशिशाकमूलफलानिच॥ १५॥ नफालकसमश्नीया
दुस्तसमपिकेनचित्॥ नग्रामजातान्यार्तोऽपिमूलानिचफ
लानिच॥ १६॥ अश्विपक्षाशनोवास्यात्कालयक्षभुगेववा।
अशमकुहोभवेद्वापिदन्तोत्तूरवलिकोऽपिवा॥ १७॥ सद्यःप्र
क्षालकोवास्यान्माससंचयिकोऽपिवा॥ षण्मासनिचयो
वास्यात्समानिचयशववा॥ १८॥

۱۳۔ زمین و پانی و پاک و دخت سے جو ساگ و ٹول و پھول و پھل پیدا ہوتے ہیں۔ انکو
بھون کرے اور پھل سے پیدا ہونے تیل کو بھی بھون کرے۔
۱۴۔ شراب و انس و زمین سے پیدا ہوا چھتر اکا رو بھون کر جو مالوہ ویش میں مشہور
سکر ساگ جو باہلیک ویش میں مشہور ہے، و بھون ان سکا کھانا ترک کرے۔
۱۵۔ عینون کا ان جو پورا ہے و پارچہ گندہ و بوسیدہ دشا ٹول و پھل ان سب کو ترک کرے
کنوار کے مینے میں۔

۱۶۔ جو چیز بل کے ذریعہ سے پیدا ہوتی اور جو چیز کھیت کے متصل ہو اگر چہ اسکو اناکے
ترک بھی کر دیا ہو تو بھی اسکو بھون کرے اور دکھی ہو تو بھی جو پھل ٹول بدن مل چلائیے
گانوں کے اندر پیدا ہوتے ہوں انکو نہ کھائے۔
۱۷۔ جو چیز آگ کے ذریعہ سے یا زمانہ پاکر خپت ہوتی ہو اسکو بھون کرے چھتر سے کوٹ کر
دانٹون کی اوکھلی بنا کر بھون کرے۔
۱۸۔ ایک دن بھون کے لائق چیز کو رات یا ایک مہینہ یا چھ مہینہ یا ایک سال تک بھون کے لائق چیز کو رکھے۔

यद्द्रव्यं स्यात्ततोद्द्याहलिं भिक्षां च शक्तिः ॥ अमूलफल-
भिक्षाभिरर्चयेदाश्रमागतान् ॥ ७ ॥ स्वाध्याये नित्यमुक्तः स्या-
द्दानो मेवः समाहितः ॥ दातानित्यमना दाता सर्वभूतानुकम्प-
कः ॥ ८ ॥ वेतानिकं च जुहुयादग्निहोत्रं यथाविधि ॥ दर्शमस्क-
न्धन्मर्त्यपौराणमासं च योगतः ॥ ९ ॥ ऋषेष्ट्या प्रायशां चैव
चातुर्मास्यानि चाहरेत् ॥ उत्तरायणां च क्रमशो दासं स्याद्यन-
मेव च ॥ १० ॥ वासन्तशारदैर्मध्ये मुन्यन्वैः स्वयमाहूतेः ॥ पुरो-
डाशां च रुक्षैव विधिवन्निर्वपेत्स्थक ॥ ११ ॥ देवताभ्यस्तुत-
व्रुत्वा वन्यं मेध्यतरं हविः ॥ शेषमात्मनियुं जीतलवरां च स्वयं
कृतम् ॥ १२ ॥

۷۔ جس چیز کو کھائے اسی چیز سے بل کرے اور اسی چیز کو حرب مقدور اپنے بھی کھے
اور اسکے قیام گاہ پر جو کوئی آوے تو ہول جل بھل سے اسکا پوچھ کرے۔
۸۔ سہ روز و پڑھے جنت کو تمام رکھے سب کا دوست ہو کر سے مردی و گری و کام و کرد
و غیر کی برداشت کرے کسی سے کچھ نہ دیوے سب خیرین پر دیار رکھے۔
۹۔ ہر بلیق شاستر سے کن ہو کرے اور درشن پوز ناسٹ لگئے کرے۔
۱۰۔ نکتہ یگنیہ اگرین چانتر ناس اتراسن دگشاین کر من کو کرے۔
۱۱۔ سنت اور چارے مین جو پاک غلہ قابل خورش منشیہ ران پیدا ہوتا ہے اسکو خور
لا کر اس سے بطسہ بن شاستر علیحدہ علیحدہ پر ڈال اس چر دیوتاؤن کو یگنیہ بندہ
کے لئے دیوے۔
۱۲۔ نہایت پاک ہنسیہ دیوتاؤن کو دے کر جو بچے اسکو آپ بھوچن کرے اپنے بنائے ہے
ناب کو بھوچن کرے۔

سर्वं शुद्धाश्रमे स्थित्वा विधिवत् स्नातको द्विजः ॥ बनेव सेतुं नियतो
 यथावद्विजितेन्द्रियः ॥ १ ॥ गृहस्थस्तु यदा पश्येच्च लीयलित
 मात्मनः ॥ अयस्य संवेचापत्यंतदारायं समाश्रयेत् ॥ २ ॥ स
 त्यंत्य ग्राम्यमाहारं सर्व्वं चैव परिच्छदम् ॥ पुत्रेषु भार्य्यानि सि
 प्यवनंगच्छेत्सहैव वा ॥ ३ ॥ अग्निहोत्रं समादाय गृह्यं चापि
 परिच्छदम् ॥ ग्रामादारायं निःस्त्य निवसेन्नियतेन्द्रियः ॥ ४
 ॥ सुन्यनैव विविधैर्भैः शाकमूलफलैर्न वा ॥ सतानेव महा
 यज्ञान्निर्व्वपेद्विधिपूर्व्वकम् ॥ ५ ॥ वसीत चर्मवीरम्यासायं
 स्नायात्प्रगोतया ॥ जटाश्च विभ्रयान्नित्यं शमश्रुलोमनखानि
 च ॥ ६ ॥

- ۱۔ اس طریق سے گرسختہ ہنرمین رہ کر سناکت ج بیکرد و اس پر غالب رہ کر جنگلیں اسے
 کر کے عبادت کے مقیم ہو دے۔
- ۲۔ جب گرسختہ آدمی آپ کو حالت پیری میں دیکھے اور بیٹی کے بیٹے کو دیکھے تب جنگلیں
 مت م کرے۔
- ۳۔ گائون کے اہار کو اور گھڑی ساگری کو ترک کر کے اور عورت کو بیٹے کے سپرد کر کے
 جنگل میں جائے خواہ مع عورت کے جنگل میں جا۔
- ۴۔ آگن موتر کو اور مع ساگری کے گھڑی آگن کو بیکر اور اندریون کو روک کر گائون سے
 نکل کر جنگلیں رہے۔
- ۵۔ انواع و اقسام کے مٹیوں کے ان اور پوتر شاک مول پھل انھوں سے شاستر کے موافق
 بیج بھاگیتو کو کرے۔
- ۶۔ چمرا یا کپڑے کا گڑا ہنجر جوشام نشان کرے خا و موچھ و بال اور ناخن کو بڑھا دے
 یعنی مجامعت نہ بنوادے۔

अनेन नारीवत्तेन मनोवाग्देहसंयता ॥ इहाश्यांकीर्तिमाप्नोति
 पतिलोकं परत्र च ॥ १६६ ॥ एवं ह्येतां सवर्णां स्त्रीं हि जातिः पूर्व
 मारिरासीत् ॥ दाहयेदग्निहोत्रेण यज्ञपात्रैश्च धर्मवित् ॥ १६७
 भार्यायै पूर्वमारिरागैदत्वा मनीनन्त्यकर्मणि ॥ पुनर्दरक्रियां कु-
 र्यात्पुनराधानमेव च ॥ १६८ ॥ अनेन विविधानित्यं पंचयज्ञान्न
 हापयेत् ॥ द्वितीयमायुषोभागं कृतसारो गृहे वसेत् ॥ १६९ ॥

इति मानवे धर्मशास्त्रे धृगुप्रोक्तायां संहितायां
 पंचमोऽध्यायः ५

۱۶۶۔ اس طرح دل و زبان و جسم کو قابو میں کر کے اس لوگ میں بڑی نیکنامی اور لوگ
 میں بہت لوگ کو پاتی ہے۔
 ۱۶۷۔ دھرم کے جاننے والے برہمن و کشتری و ویشیہ ایسی اپنی ذات کی استری کے
 مرجانے میں اسکا دواہاگن ہو کر کی آگ اور بگیہ پاتر سے کریں۔
 ۱۶۸۔ اسکے بعد عمل آخری کر کے دوسرا دواہا کریں اور آگن کو استھاپن کریں۔
 ۱۶۹۔ اس طرح سے ہمیشہ بگیہ کو کریں آگن کو بھی ترک نہ کریں اور ٹھکے دوسرے حصہ تک
 دواہ کر کے گھر میں رہیں۔

من جی کا دھرم استرجی کی سنگھتا کا
 پانچوان ادھیائے سمپت ہوا

۱۶۰۔ بعد وفات شوہر کے پتہ پتہ استری برہم چچ میں قائم رہے تو بہرون پتہ اولاد کے شوہر گ میں جاتی ہے جیسے کمار برہم چادی شوہر گ کو گئے۔

۱۶۱۔ جو عورت اولاد کے ہونے کی طمع سے دوسرے پتہ سے جماع کرتی ہے وہ دنیا میں بدنام ہوتی ہے اور عاقبت میں پتہ لوک یعنی عالم شوہر کو مین پاتی۔

۱۶۲۔ دوسرے پتہ سے جو اطلاق پیدا ہوتی ہے وہ شاستری کی موافق اپنی اولاد مین کلماتی کیونکہ پتہ پتہ استری کو شاستری میں دوسرے پتہ مین لکھا ہے۔

۱۶۳۔ جو عورت اپنے کم ہنر والے شوہر کو چھوڑ کر دوسرے زیادہ ہنر والے شوہر کو اختیار کرتی ہے وہ دنیا میں مکروہ اور دو شوہر والی کہلاتی ہے۔

۱۶۴۔ دوسرے شوہر سے جماع کرنے سے عورت دنیا میں بدنام ہوتی ہے اور گیدڑ کا جھم پائی اور پاپ روگون سے بھی ہوتی ہے۔

۱۶۵۔ جو عورت دوسرے شوہر سے جماع مین کرتی اور دل و زبان جسم کو اپنے قانون میں رکھتی ہو وہ پرتلوک میں پتہ لوک کو پاتی ہے اور اچھے لوگ اسکو ساوہو کہتے ہیں۔

नास्तिस्त्रीणां शयन्यज्ञो न वतं नाप्युपोषितम् ॥ पतिं शुश्रूष
ते येन तेन स्वर्गे महीयते ॥ १५५ ॥ पारिग्राहस्य सा धीस्त्री
जीवतो वा मृतस्य वा ॥ पतिलोकमभीप्सन्तीना चरेत्किंचिद
प्रियम् ॥ १५६ ॥ कामक्षुक्षपयेद्देहं पुण्यमूलफलैः स्वभैः ॥ न तु
नामापिशुक्लीयात्यथोपेते परस्य तु ॥ १५७ ॥ आसीतामरणा
त्क्षान्तानियता ब्रह्मचारिणी ॥ योधर्मसकपत्नीनां कां सन्ती
तमनुत्तमम् ॥ १५८ ॥ अनेकानि सहस्रारिणिकुमारब्रह्मचारि
णाम् ॥ दिवंगतानि विप्रारणामकृत्वा कलसन्नतिम् ॥ १५९ ॥

۱۵۵۔ عورتوں کے واسطے یگیہ اور برت اور پاس علیہ ہینین ہے مرن شوہر کی تجددی
سے شوگر لوگ میں ہو چکر درجہ اعلیٰ پاتی ہے۔

۱۵۶۔ پت بڑا استری پت کے لوگ میں جانے کی خواہش رکھنے والی بکالت زندگی با دنا
اپنے شوہر کے کوئی کام ایسا نہ کرے جو اس کے شوہر کے خلاف مرعی ہو۔

۱۵۷۔ بعد وفات اپنے شوہر کے دوسرے شوہر کا نام بھی نہ لیوے اچھے مول بھیل بھول ہے
حب خواہش تھوڑا کھا کر صبح البدن بھلا وقتا بسر کرے۔

۱۵۸۔ جس استری کا ایک ہی پت ہے وہ پت بڑا دھرم کی خواہش کرتی ہوتی اپنے مرتے تک
نیم سے برہم جاری ہو کر لاغر بدنی سے زندگی بسر کرے۔

۱۵۹۔ اگر کوئی کہ بدن اولاد کے شوگر ہینین ملتا اسلئے اولاد کے واسطے دوسرے شوہر کرنا چاہیے۔
اسکا جواب یہ ہے کہ کسی ہزارہ کمار برہم جاری برہمن بدن پہلے اولاد کے شوگر کو چلے گئے اس
بات کو سمجھ کر بدون اولاد کے نیم سے رہے۔

پت بڑا استری اس عورت کو کہتے ہیں جو کوئی کام خلاف مرعی شوہر کے دکرے اور شوہر کو مش پریشوں کے بھلا کرے
یہو اور بھلت کرتی رہے۔

पित्राभर्त्रासुतेवापिनेच्छेद्विरहमात्मनः॥ एषां हि विरहे रा-
स्त्रीगर्ह्ये कुर्यादुभेकुले॥ १४६॥ सदा प्रहृष्टया भाव्यं गृहका-
र्येषु दक्षया॥ सुसंस्कृतोपस्करया व्यये चासुक्तहस्तया॥
१४७॥ यस्मै दद्यात्पिता त्वेनां भ्राता चानुमते पितुः॥ तं शुश्रूषे
तजीवन्तं संस्थितं च न लंघयेत्॥ १४८॥ मंगलार्थं स्वस्त्वय न-
यज्ञश्चासां प्रजायते॥ प्रयुज्यते विवाहेषु प्रदानं स्वास्य कार-
राम्॥ १४९॥ अन्वतावतु काले च मंत्रं संस्कारकृत्यतिः॥ सु-
खस्य नित्यं दाते ह्यपरलोके च योयितः॥ १५०॥ विरीलः का-
मवृत्तो वागुरीर्वापरिवर्जितः॥ उयचर्यः स्त्रियास्ताभ्यासततं
देववत्यतिः॥ १५१॥

۱۴۹۔ باپ اور بھائی اور بیٹیاں تینوں سے علیحدہ ہونے کی خواہش کرے انہوں سے علیحدہ ہونے میں استری دونوں کو بدنامی دلاتی ہے۔
۱۵۰۔ ہر وقت خوشدل اور امور خانگی میں مستدر ہے گھر کی چیزوں کو اچھی طرح درست رکھنے فضول خرچ نہ ہو سکے۔
۱۵۱۔ باپ جسکے ساتھ شادی کروے یا باپ کے حکم سے بیٹے کے ساتھ شادی کر دے اسکی عزت میں رہے اور بعد وفات شوہر کے کسی مرد غیر سے صحبت کرے۔
۱۵۲۔ جو آدمین شانت منتر پڑھنا اور شری برہما کی واسطے بیکہ کرنا یہ دونوں استریوں کے آئندہ کی واسطے ہیں اور وہ ان شوہر کے مالک ہونیکا باعث ہے۔
۱۵۳۔ اسرت کال میں یا غیر رت کال میں منتر سنکار کرنا یا شوہر اس کو اور پر لوک میں سترنا کو شکہ دینے والا ہے۔
۱۵۴۔ اگرچہ شوہر بے ثروت ہو اور دوسری عورت کے ساتھ محبت رکھنا ہو یا بے ہنر ہو تو بھی پتہ برتا استری ہمیشہ اسکی سوا دیوان کی طرح کرے

उच्छिद्येन तु संस्पृष्टो द्रव्यहस्तः कथंचन ॥ अनिधायैव तद्रव्य
मावाचनः शुचितामियात् ॥ १४३ ॥ वाक्तो विरक्तः स्नात्वा तु घृ-
तप्राशनमाचरेत् ॥ आचामेदेव भुक्तानं स्नानं मैथुनिनः स्मृ-
तम् ॥ १४४ ॥ सुत्वा सुत्वा च भुक्त्वा च निधीष्योक्तान् तानि च
॥ पीत्वा पोऽध्येष्यमाराश्च आचामेत्प्रयतोऽपि सन् ॥ १४५ ॥
एष शौचविधिः कृत्वा द्रव्यशुद्धिस्तथैव च ॥ उक्तो वः सर्वव-
रानां स्त्रीणां धर्मान्निबोधतः ॥ १४६ ॥ बालया वा युवत्या वा
बृद्धया वा पिशोषितो ॥ न स्वातंत्र्येण कर्तव्यं किंचित्कार्यं
गृहेष्वपि ॥ १४७ ॥ बाल्ये पितुर्वशे तिष्ठेत्प्राणिग्राहस्य यौव-
ने ॥ पुत्राराणामर्त्तरि प्रेतेन भजेत्स्त्रीस्वतंत्रताम् ॥ १४८ ॥

۱۴۳- چیز کو ہاتھ میں لیے ہوئے آدمی جو ٹٹے آدمی سے چھو جائے تو اس چیز کو لئے ہوئے
ہی آجین کرنے سے پاک ہو جاتا ہے۔

۱۴۴- تھے کرنوالا اور دستوں کی بیماری والا انسان کر کے گھی کھائے اور ان بغیر بھون
کر کے آجین کرے اور جماع کر کے غسل کرے۔

۱۴۵- شوئے کر اور چھنیک کر اور بھون کر کے اور کھار کر اور جھوٹھ بول کر اور پانی پی کر یا
ہوئے پر بھی آجین کرے۔

۱۴۶- بھرگ جی کہتے ہیں کہ ہے رش لوگو آپ سے سب درون کی پاکی کے طریق کو کہلا
چیزوں کی پاکی کو بھی کہا اب اسکے بعد استر لون کے دھرم کہتے ہیں۔

۱۴۷- عورت نابالغ ہو یا جوان یا بڑھی ہو گھر میں کوئی کام خود مختاری سے نہ کرے

۱۴۸- عورت اگر کہن میں اپنے باپ کے اختیار میں رہے اور جوانی میں اپنے شوہر کے اختیار
میں اور بعد وفات شوہر کے اپنے بیٹوں کے اختیار میں رہے خود مختار ہو کر بھی رہے۔

۱۳۱۔ یہ شیخ یعنی طہارت گریستہ لوگوں کے واسطے ہے اور برہم چار یوں کو دو چنڈ اور یان پرستوں
یعنے جنگل میں عبادت کرتیواٹوں کو سہ چنڈ اور شنیاسیوں کو چہار چنڈ کرنا چاہئے۔
۱۳۲۔ لٹاؤ مونتر کے ہاتھ پانوں دھو کر آچمن کر کے اندر یوں کو چھوے اور وقت تناول طعام
دوینڈ خوانی کے بھی آچمن کر کے اندر یوں کو چھوے۔
۱۳۳۔ بدن کی طہارت کیواسطے مین دفعہ پہلے آچمن کرے تب دو دفعہ منہ دھوے اور ہتھری
اور شودر صرف ایک ہی دفعہ منہ دھو دین اور آچمن کریں۔
۱۳۴۔ نیاے سے رہنے والے شودر کو مہینہ کے اندر ایک بار حجامت کرانا چاہئے اسکی طہارت
ویشیہ کے مانند ہے اور براہمن کا پس خوردہ اسکی غذا ہے۔
۱۳۵۔ تھوک کے بوند بدن کے کسی عضو پر گر جائیں اور مچھ کا بال منہ میں جاتا رہے اور دانت
میں جو چیر لگی ہو یہ سب پاک ہیں۔
۱۳۶۔ کوئی شخص کسی کو آچمن کرانا ہو اور آچمن کر نیوالے کے منہ سے پانی کا بوند زمین پر گر
آچمن کر نیوالے کے پانوں پر پڑے تو وہ بوند آب زمین کے برابر ہے اس سے ناپاکی نہیں ہوتی۔

श्वभिर्हतस्ययन्मांसं शुचितन्मनुरब्रवीत् ॥ कव्याद्विश्वहत
 स्यान्नेद्याराडालाद्येश्वरस्युभिः ॥ १३१ ॥ ऊर्ध्वनाभेयानि स्वा-
 नितानि मेध्यानि सर्वशः ॥ यान्यधस्तान्यमेध्यानि रेहाञ्चैव
 मलाश्रुताः ॥ १३२ ॥ मसिकाविषुवश्चायामोरश्वः सूर्यर-
 स्मयः ॥ रजोभूर्वायुरग्निश्च स्पर्शमेध्यानि निर्दिशेत् ॥ १३३ ॥
 विरामूत्रोत्सर्गश्च द्यार्थमृद्धार्यादेयमर्थवत् ॥ ऐहिकानां मला-
 नां च शुद्धिद्वारशस्त्रपि ॥ १३४ ॥ वसाश्च क्रमसृडः मज्जाभूत्र-
 विद्घ्राणाकर्णाविद् ॥ श्लेष्माश्च दूषिकास्वेरोद्यादशैते चरा-
 मलाः ॥ १३५ ॥ एकालिंगे गुरेति स्वरस्तथैकत्र करेदश ॥ उभयोः
 समरातव्यामृदः शुद्धिमभीप्सता ॥ १३६ ॥

اسم ۱۔ گتہ و شیر باز و سیا دم و غیرہ دہر کے مارنے سے اوقات لمبہ کر نیوالے ان سب سے
 جو جانور کھانیکے قابل مارا گیا اور سکا گوشت سرادھ وغیرہ آتھہ بھوجن میں پاک ہونے کی گتہ
 ۲۔ نام سے اور پر کے تمام اعضا پاک ہیں اور ناف سے نیچے کے تمام اعضا ناپاک ہیں اور
 جو فضلہ بین سے علاحدہ ہو وہ بھی ناپاک ہے۔

اسم ۳۔ کھنی و قطرہ آب و سیاہ و گھوڑا و سورج کی کرن ڈھول میں ہوا دیکھ کر چھوڑی

بین پاک ہیں
 اسم ۴۔ غلیظ و پیشاب دیگر بارہو فضلون کو جبکہ وہ جسم سے علیحدہ ہو کر گرے ہو چھو کر پانی اور مٹی
 بقدر ضرورت لگا کر دھونے سے پاک ہوتا ہے۔

اسم ۵۔ آدمی کے جسم میں یہ بارہ ملینے فضلہ تھوہیں۔ چربی بیج۔ خون۔ حجاب۔ پیشاب غلیظ
 ناک۔ کھٹ۔ کھٹار۔ آسنو۔ کچھڑ۔ پسینا۔

اسم ۶۔ مٹی کے وسیلہ سے پاکی کی خواہش کر نیوالا آدمی ایک بار مٹی مقام پیشاب پر پانچ دفعہ
 مقام پاخانہ پر اور دس دفعہ بائین ہاتھ میں اور سات دفعہ داہنے ہاتھ میں لگا دے۔

पक्षिजग्धंगवाघातमवधूतमवसुतम् ॥ दूवितंकेशकीटेश्च
 मृत्युक्षेपेरासुद्यति ॥ १२५ ॥ यावन्नापेत्यमेध्याक्ताङ्गभोले
 पश्चतक्ततः ॥ तावन्मृद्वारिचारेयं सर्वासुद्रव्यसुद्रियु ॥ १२६ ॥
 ॥ श्रीशिदेवाः पवित्राशिवाक्षराणामकल्पयन् ॥ अदृष्टम
 निनिर्गोक्तं यच्च वाचा प्रशस्यते ॥ १२७ ॥ आपः सुद्राधूनि
 गतामेतद्वायं यासुगोर्भवेत् ॥ अव्याप्ताश्चेदमेधेन गन्धव-
 र्गारसान्विताः ॥ १२८ ॥ नित्यं सुखः कारुहस्तः परायेयश्च प्र-
 शस्तम् ॥ ब्रह्मचारिगतं मेधं नित्यं मेधमिति स्थितिः ॥ १२९ ॥
 ॥ नित्यं सास्यं सुचिः श्रीशांशकुनिः फलपातने ॥ प्रसवे च सु-
 चिर्वत्सः प्रवाह्यमाग्रहरो सुचिः ॥ १३० ॥

۱۳۵۔ کھانے کے لائق پرندے جس چیز کا ایک حصہ چھوٹا ہو گیا ہو اور جس چیز کو گونے ہو گئے
 لیا ہو اور جو چیز قانون لگنے سے کانپنے لگے اور جس چیز پر چٹیک پڑی ہو اور جس چیز میں بال
 چھوٹے گیرے پڑ گئے ہوں یہ سب اور بڑی پالے سے پاک ہوتے ہیں۔
 ۱۳۶۔ جس چیز میں ناپاک چیز ملی ہو جب تک اس ناپاک چیز کی تباہی نہ ہو اور اس چیز سے درجہ ہو
 تب تک مٹی اور پانی سے اسکو پاک کرنا چاہیے یہ طریق سب چیزوں کے پاک کرنا ہیں جانتا۔
 ۱۳۷۔ دیوتوں نے پرندوں کو اسلئے تین چیزیں پاک کی ہیں ایک بغیر دیکھی ہوئی چیز دوسرے
 وہ چیز جو پانی سے دھوئی گئی ہے تیسرے جو پانی سے سر شہ ہو۔
 ۱۳۸۔ جو پانی ایک گھوٹی پیاس بجھانے بھر کو ہو اور ناپاک چیز سے شامل نہ ہو اور مع رنگے
 درس کے ہو اور زمین پر قائم ہو وہ پانی پاک ہے۔
 ۱۳۹۔ کاریگر کا ہاتھ اور سپاری کی دوکان کی چیز اور پر ہر سمہ چاری کی بھیکو یہ تینوں
 چیزیں ہمیشہ پاک ہیں یہ ستر کی مر جاو ہے۔
 ۱۴۰۔ جماع کے وقت عورت کا منہ پھل گرانے میں پرندہ دودھ دیتے وقت بچہ اس کے گریختا

श्वभिर्हतस्ययन्मांसं शुचितन्मनुरब्रवीत् ॥ क्रव्याद्विश्वहृत
स्यान्येच्चारण्डालाद्येश्चदस्युभिः ॥ १३१ ॥ ऊर्ध्वनाभेयानि स्वा-
नितानि मेध्यानि सर्वशः ॥ यान्यधस्तान्यमेध्यानि देहाद्यैव
मलाश्रुताः ॥ १३२ ॥ मल्लिकाविषुवश्चायागौरश्वः सूर्यर-
श्मयः ॥ रजोभूर्वायुरग्निश्चस्पर्शमेध्यानि निर्दिशेत् ॥ १३३ ॥
विरासूत्रोत्तर्गं शुद्धार्थं मृद्वार्थादेयमर्थवत् ॥ रैहिकानां मला-
नां च शुद्धियुद्वादशस्त्वपि ॥ १३४ ॥ वसाशुक्रमसृङ् मज्जाभृश-
विद्घ्राणाकर्णाविद् ॥ श्लेष्माशुदूषिकास्वेदोद्वादशैते चराण-
मलाः ॥ १३५ ॥ एकालिंगे गुरेति स्वस्त्यैकत्र करेदश ॥ उभयो-
सप्तदातव्यामृदः शुद्धिमभीप्सता ॥ १३६ ॥

۱۔ گتہ دشمن باز و سیاہ و غیرہ دھڑک مارنے سے اوقات لمب کر نیوالے ان سب سے جو جانور کھانیکے قابل مارا گیا اور کھا گوشت سردہ و غیرہ آتھہ بھوجن میں پاک ہمن جن کے کما،
۲۔ ناف سے اوپر کے تمام اعضا پاک ہمن اور ناف سے نیچے کے تمام اعضا ناپاک ہمن اور
حوضہ بین کے علاوہ ہر وہ بھی ناپاک ہے۔

نہاں۔ کئی قطرہ آب و سایہ گھوڑا سوچ کی کرن ڈھول زمین و ہوا آگ یہ جھپٹ
مین پاک مین

۴۴۔ غلط دیشاب دیگر بار ہو فضلوں کو جبکہ وہ جسم سے علیحدہ ہو کر گئے ہو چھو کر پانی اور میٹھا بقدر ضرورت لگا کر دھونے سے پاک ہوتا ہے۔

۵۳۱۔ آدمی کے جسم میں یہ بارہ اعضاء ہیں۔ چربی، ریح، خون، مچھ، پیشاب، غلیظ، ناک، کھنٹ، کھنٹ، استخوان، کھنٹ، کھنٹ، کھنٹ۔

۶۔ مٹی کے وسیلہ سے پاکی کی خواہش کرنیوالا آدمی ایک بار مٹی مقام پشیاہ پر اپنی دفعہ
مقام پاخانہ پر اور دس دفعہ یاقین ہاتھ میں اور سات دفعہ دھونے ہاتھ میں لگا دے۔

यद्विजग्धं गवाघ्रातमवधूतमवसुतम् ॥ दूवितं केशकीरैश्च
 सत्यस्येपेराशुच्यति ॥ १२५ ॥ यावन्नापैत्यमेध्याक्ताङ्गन्धोले
 पञ्चतत्कृतः ॥ तावन्मृद्वारिवादेयं सर्वासुद्रव्यशुद्धिषु ॥ १२६ ॥
 ॥ श्रीशिदेवाः पवित्राणि ब्राह्मणानामकल्पयन् ॥ अदृष्टम
 निर्निर्णीतं यच्च वाचा प्रशस्यते ॥ १२७ ॥ आपः शुद्धाभूमि
 गतानि ह्येषां यासु गोर्भवत् ॥ अव्याप्ताश्चेरमेधेन गन्धव-
 र्गारसान्विताः ॥ १२८ ॥ नित्यं शुद्धः कारुहस्तः परायेयश्च प्र-
 शसितम् ॥ ब्रह्मचारिगतं भैरवं नित्यं मेध्यमिति स्थितिः ॥ १२९ ॥
 ॥ नित्यमायं शुचिः स्त्रीणां शकुनिः फलपातने ॥ प्रसवे च शु-
 चिर्बलः श्वास्तु ग्रहणो शुचिः ॥ १३० ॥

۱۲۵۔ کھانے کے لائق پرندے جس چیز کا ایک حصہ چھوٹا ہو گیا ہو اور جس چیز کو گھونٹے ہو گئے
 لیا ہو اور جو چیز پوتوں لگنے سے کانپنے لگے اور جس چیز پر چھینک پڑی ہو اور جس چیز میں بال
 چھوٹے کیڑے پڑ گئے ہوں یہ سب اور بڑی پالے سے پاک ہوتے ہیں۔
 ۱۲۶۔ جس چیز میں ناپاک چیز ملی ہو جب تک اس ناپاک چیز کی بو اور آلودگی اس چیز سے دور نہ ہو
 تب تک مٹی اور پانی سے اس کو پاک کرنا چاہئے یہ طریق سب چیزوں کے پاک کرینے میں جانتا۔
 ۱۲۷۔ دیوتوں نے برہمنوں کو اسلئے بتایا کہ جن چیزیں پاک کی ہیں ایک بغیر دیکھی ہوئی چیز دوسرے
 وہ چیز جو پانی سے دھوئی گئی ہے یا تھکے ہوئے پانی سے شستہ ہو۔
 ۱۲۸۔ جو پانی ایک گھونٹ پیاس بجھانے بھر کو ہو اور ناپاک چیز سے شامل نہ ہو اور مع رنگ و
 دس کے ہو اور زمین پر قائم ہو وہ پانی پاک ہے۔
 ۱۲۹۔ کاریگر کا ہاتھ اور پساری کی دوکان کی چیز اور پرہم سمجھ چاری کی بھیکھ یہ تینوں
 چیزیں ہمیشہ پاک ہیں یہ ستر کی مر جاو ہے۔
 ۱۳۰۔ جماع کے وقت عورت کا ٹھنڈا پھل گرانے میں پرندہ دودھ دیتے وقت پھر اس پر گھونٹنا

چیلن بھرمشاں شریوہر لاناں تہی بچ ॥ شاک مूल فلاناں چ
 دھان بچھو دیر سیاتے ॥ ۱۲۱ ॥ کوشیا ویک یو رھئے: کھتیا
 نام ریکو: ॥ شری فلو رھ پھاناں کوشیا راناں گور سرب پئے: ॥ ۱۲۰
 کوشیا بچھو رھ پھاناں ماسی رھ ن ماسی چ ॥ شری ویک جان تا
 کاریا گومر راناں رھ کونوا ॥ ۱۲۲ ॥ شری رانا رھ راناں چ پلا
 لں چ بچھو تی ॥ مارجن ویاں جن رھ رھ ماسی: رھ کون رھ ماسی ॥
 ۱۲۳ ॥ ماسی رھ رھ: پوری رھ رھ رھ: پوری رھ رھ: ॥ سمس رھ رھ
 شری رھ ماسی: رھ کون رھ ماسی ॥ ۱۲۴ ॥ سمس رھ رھ رھ رھ
 کون رھ رھ رھ رھ ॥ رھ رھ رھ رھ رھ رھ: شری رھ رھ رھ: ॥
 ۱۲۵ ॥

- ۱۱۹۔ جو پش چھونے کے لائن میں اُنکے چڑے کا برتن اور بالسن کا برتن ان دونوں کی
 پاکی کپڑے کی پاکی کے مانند جاتا اور ساگ مول پھل انھوں کی پاکی غلہ کی پاکی کے مانند جاتا ہے۔
- ۱۲۰۔ ریشی اور ادنی کپڑا کھاری مٹی سے اور نیپا کی کل ریشی سے اور پٹ بستر میں کپڑے سے اور
 مٹی کا کپڑا سفید مٹیوں سے پاک ہوتا ہے۔
- ۱۲۱۔ شکر کا برتن اور جو جانور شل ہاتھی وغیرہ چھونے کے قابل ہو اُسکے دہت اور سینگ اور
 ہڈی کا برتن انھوں کی پاکی شل پاکی پار چھوٹی کے جانا یا گھوکے موتر یا پانی سے سمجھنا۔
- ۱۲۲۔ پانی چھڑکے سے ترن اور کاٹھ دپلا اور جھاڑو دینے سے انگوں اور سینے سے گھراؤ
 دوسری بار لکانے سے مٹی کا برتن پاک ہوتا ہے۔
- ۱۲۳۔ شراب ریشیا غلہ کھلکا ریشیا وخن امین سے کوئی ایک لگا گیا ہو تو
 وہ برتن دوسرے بار لکانے سے پاک نہیں ہوتا۔
- ۱۲۴۔ جھاڑو۔ لگانا۔ ریشیا۔ چھڑکاؤ کرنا۔ اور پکی مٹی پھیلنا گھوکا یا س مٹی قیام ان پانچوں
 سے زمین پاک ہوتی ہے۔

مختوئے: शुद्धतेशोधनदीवेगेन शुद्धति ॥ रजसास्त्रीमनोदु-
 द्धसंन्यासेन द्विजोत्तमः ॥ १०८ ॥ अग्निगात्राणि शुद्धन्ति म-
 नः सत्येन शुद्धति ॥ विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्ध-
 ति ॥ १०९ ॥ यद्यशौचस्य वः प्रोक्तः शारीरस्य विनिर्णयः ॥ ना-
 नाविधानां द्रव्याणां शुद्धेः चरातु निर्णयम् ॥ ११० ॥ तैजसा-
 नां मरीनां च सर्वस्याश्ममयस्य च ॥ भस्मना हि मृदा चैव शु-
 द्धितक्ता मनीषिभिः ॥ १११ ॥ निर्लेपकां च नं भाराडमहिरेव वि-
 शुद्धति ॥ अजस्रममयं चैव राजतं चानुपस्कृतम् ॥ ११२ ॥ अ-
 पामस्नेहसंयोगाद्धैर्म्यं रीत्यं च निर्वभौ ॥ तस्मात्तयोः स्वयोन्मैव
 निर्गोको गुणावत्तरः ॥ ११३ ॥

۱۰۸ - جو چیزیں پاک کرنے کے قابل ہیں وہ مٹی اور پانی سے اور دیا روانی سے اور کب
 عورت کا دل غیر مرد سے لگا ہے وہ حیض سے اور برہمن سنیاں اختیار کر شیعے پاک جاتا ہے۔
 ۱۰۹ - پانی سے تمام اعضا بدن کے پاک ہوتے ہیں اور راستی سے دل پاک ہوتا ہے اور برہمن دیا
 اور تپ سے بھوت آتما لینے لنگ شریع حیو آتما کے پاک ہوتا ہے اور گیان سے بدھ شرم
 ہوتی ہے۔

۱۱۰ - بھرگ جی کہتے ہیں کہ ہر شیو جسم کی پاکی کے طریق کو کہا اب انواع قسم کی چیزوں کی پاک ہونیکا طریق
 ۱۱۱ - بنو وغیرہ کے برتن جو اہرات کے برتن پتھر کے برتن یسب راکھ دھٹی و پانی سے پاک ہوتے ہیں
 اسیات کو سن وغیرہ رشیوں نے کہا ہے۔

۱۱۲ - جس سونے یا سنگھ یا موتی یا پتھر کے برتن میں جو ٹھن وغیرہ مین لگی اور جس روپے کے برتن
 میں رکھا جائے خطوط مین یسب صرف پانی ہی سے پاک ہوتے ہیں۔
 ۱۱۳ - آگ اور پانی کے ملنے سے سونا اور چاندی پیدا ہوتا ہے اسلئے اپنی اصل کر کے دونوں
 کی پاکی سب اچھی ہے۔

अनुगम्येच्छयाप्रेतं ज्ञातिमज्ञातिमेव च ॥ स्नात्वा सचेलः स्यष्टा
 निंघृतं प्राशय विशुध्यति ॥ १०३ ॥ नविप्रंस्वेयुतिष्ठत्सुमृतं-
 शूद्रेरानाययेत् ॥ अस्वर्ग्याह्याहतिः सास्याच्छूहसंस्पर्श-
 दूषिता ॥ १०४ ॥ ज्ञातं तयोऽग्निराहारो मन्मनोवार्थपांज-
 नम् ॥ वायुः कर्मार्ककालौ च शुद्धेः कर्तृशिरिहिनाम् ॥ १०५ ॥
 सर्वेषामेव शौचानामर्थशौचं परं स्मृतम् ॥ योऽर्थे शुचिर्हि
 स शुचिर्ननु द्वारि शुचिः शुचिः ॥ १०६ ॥ साक्षात् शुच्यन्ति वि-
 द्वांसो दानेनाकार्यकारिराः ॥ प्रच्छन्नपापाजयेन तपसा वे-
 दवित्तमाः ॥ १०७ ॥

۱۰۳- مراہو آدمی اپنی ذات ہو یا دوسری ذات ہو اسکے پیچھے اپنی فوہش سے جا کر
 مع کپڑوں کے انسان کرے اور گھی کھائے اور آگ کو چھوے تب شہدہ ہوتا ہے۔
 ۱۰۴- جو براہمن کا ہم ذات موجود ہو تو اس مردہ براہمن کو شہدہ لیجائے کیونکہ شہدہ کے چھوئے
 سے اسکے شریر کی آگن میں آہستہ دینا سوگ کے واسطے مہین ہوتا۔
 ۱۰۵- گیان۔ تپ۔ آگن۔ آہار۔ مٹی۔ مین۔ جل۔ لپ۔ ہوا۔ سورج۔ زمانہ۔ یہ سب دمیون کو
 پاک کرنے والے ہیں۔

۱۰۶- سب شوج یعنی پاک ہیں اتھ شوج (یعنی دولت کو راستی سے حاصل کرنا) بڑا ہے جس
 آدمی کی دولت پاک ہر وہی پاک ہے اور جو آدمی مٹی و پانی کے سبب پاک ہو مگر دولت میں
 پاک نہیں ہے وہ آدمی پاک نہیں ہے۔

۱۰۷- جو پنڈت ہو وہ کشادہ یعنی عفو تقصیر کر کے پاک ہو جاتا ہے اور جو آدمی کام واجب
 الترتیب کو کوتاہی سے وہ دان کرے سے پاک ہوتا ہے اور جو باپ کرنے میں مصروف
 ہے وہ جب کر کے پاک ہوتا ہے اور دید پڑھنے والا تپ کر کے پاک ہوتا

لोकेशا हि दितौ राजानां शौचविधीयते ॥ शौचाशौचं हि
 मर्त्यानां लोकेशप्रभावाय यम् ॥ ६७ ॥ उद्यतैराहवेशस्तैः सत्रध-
 र्महतस्य च ॥ सद्यः सन्निवृत्ते यज्ञस्तथा शौचमिति स्थितिः ॥ ६८
 ॥ विप्रः शुद्धत्ययः सृष्ट्वा सत्रियो वाहनायुधम् ॥ वैश्यः प्रतोदं
 रश्मौ न्वायश्चिंश्चरः कृतक्रियः ॥ ६९ ॥ रात्र्योऽभिहितं शौचं स-
 पिराडेषु द्विजोत्तमाः ॥ असपिराडेषु सर्वेषु प्रेतशुद्धिं निबो-
 धतः ॥ १०० ॥ असपिराडं द्विजं प्रेतं विप्रो निर्हत्य बन्धुवत् ॥ वि-
 शुद्ध्यति त्रिरात्रेण मातुरा मांश्च बान्धवान् ॥ १०१ ॥ यद्यन्म-
 त्ति ते या न्दुर्दशा हे नैव शुद्ध्यति ॥ अनदन्मन्महैव न चेत्तस्मि-
 न् नृहेव सेव ॥ १०२

۹۶۔ راجہ سب لو کہیا نون کا اس بیٹے حصہ ہے اس سے ہر کوئی تک مین لگتا اور راجا کو کا
 مالک ہے اس سے سب دیون کی پاکی اور ناپاکی کو دور کر سکتا ہے۔

۹۸۔ رٹائی مین گشتری دھرم کر کے جو آدمی ہتھیار لگنے سے مرگئے انکو اسی وقت پاکی
 اور گنیہ قائم ہوتی ہے۔

۹۹۔ تمام کر یا کر کے سو تک کے خیر پر مین جل اور گشتری ارٹتی ہتھیار اور شیشیا اور شور لاٹھی کو چھو کر پاک تپے مین

۱۰۰۔ بھگ جی کہتے ہیں کہ ہر ش کو گو اپنے سپندون کا سو تک ہے کسا اب ان لوگون کی پریت
 شدہ کو کہتے ہیں جو سپند مین مین مین۔

۱۰۱۔ جو براہمن سپند مین مین ہے اسکو بھائی کے مانند مر گھٹ تک لیجا کر تین رات مین
 پاک ہوتا ہے اور ماما اور موسی وغیرہ کو بھی مر گھٹ تک لیجا کر تین رات مین پاک ہوتا ہے۔

۱۰۲۔ جب مرے ہوئے کے سپند کے ان کو بھوجن کرے تو دس دن مین شدہ ہوتا ہے اور
 اگر ان کو بھوجن نہ کرے اور نہ اس کے گھر مین قیام کرے تو ایک دن مین شدہ ہوتا ہے۔

+ اگر ستورانی یا رس۔

हसिरोनमृतं शूद्रं पुरद्वारेणानिर्हरेत् ॥ यच्चिमोनरपूर्वेस्तु य-
थायोगं द्विजन्मनः ॥ ६२ ॥ नराज्ञामघदोषोऽस्ति प्रतिनां न च
सन्निराणाम् ॥ सेन्द्रं स्थानमुपासीना ब्रह्मभूताहिते सरा ॥ ६३ ॥
राज्ञो महात्मिके स्थाने सद्यः शौचं विधीयते ॥ प्रजानां परिर-
क्षार्थमासनं चान्नकारणम् ॥ डिंवाहनहतानां च विद्युतापा-
थिवेन च ॥ गोत्रात्मरास्य चैवार्थे यस्य चेच्छ्रितियाथिवः ॥
६४ ॥ सोमाग्न्यर्कानिलेन्द्राणां वित्ताप्यत्योर्यमस्य च ॥ अ-
द्यानां लोकयातानां वयुर्धारयते नृपः ॥ ६६ ॥

۹۲- شہر شوم - آثر پورٹ - کٹن - دروازہ سے حسب سلسلہ اول دوم و سوم و چہارم
دروازہ سے بڑا مہلن کشتری ویشیہ ستودر کامرودہ لیجانا چاہئے۔
۹۳- راجا و برہم چاری چاندرا بن وغیرہ برت کا گرنیوالا و گیکہ گرنیوالا ان تینوں کو ستوک
ہنیں لگتا کیونکہ راجا اور راجا اندر کی جگہ پر بیٹھا ہے اور برہم چاری برت گرنیوالا اور گیکہ گرنیوالا
یہ سب ہر وقت برہم سرپ ہیں۔
۹۴- راجا اوصاف کرتھیں پاک رہتا ہے دوسرے کام میں ہنیں کیونکہ رعایا کی حفاظت وغیرہ
سنگھاسن پر بیٹھتے نہیں ہوتے۔
۹۵- بدون راجا کے جوڑائی ہوئی اور سہین جو آدمی مر گئے اور بجلی پڑ کر جو مر گئے اور راجا
کے حکم کے جو آدمی مارنے کے لائق مائے گئے اور برہمن اور گنو کے واسطے جو آدمی مر گئے
ایسے مرن میں ستوک ہنیں ہوتا اور اپنے کام کے لئے جبکہ راجا ستوک لگتا نہیں چاہتا
اسکو بھی ستوک ہنیں لگتا۔
۹۶- چند زمان - آگن - سورج با یو اور کبیر برن نیم ان سب کے دنوں کو راجا دھارن
کرتا ہے۔

آچمپپرتیو نیتینج پدشچیدرشنے ॥ سौरानां त्रान्यथोक्ताहं
 पावमानीश्चशक्तिः ॥ ८६ ॥ नारं स्पृष्ट्वा स्थिसस्नेहं स्नात्वा वि-
 प्रोचिश्च्यति ॥ आचम्यैव तु निःस्नेहं गामातभ्या र्कमीक्ष्य-
 वा ॥ ८७ ॥ आदिद्यौ नो र्वाकुर्व्यादाव्रतस्य समापनात् ॥ समा-
 प्रेतृ र्वाकं कृत्वा त्रिरात्रेणैव शुद्ध्यति ॥ ८८ ॥ दद्यात्संकज्ञाता-
 नां प्रव्रज्या सुचतिष्ठताम् ॥ आत्मना स्त्यागिनां चैव निवर्त्तते तो-
 र्वा क्रिया ॥ ८९ ॥ पावरा इमांश्चितानां च चरन्तीनां च काम-
 तः ॥ गर्भमर्तद्गुहां चैव सुरापीनां च यो विताम् ॥ ९० ॥ आचा-
 र्यस्वसु पाध्यायं पितरं मातरं च युरम् ॥ निर्हृत्य तु व्रती प्रेतान्
 व्रतेन वियुज्यते ॥ ९१ ॥

۸۶۔ ناپاکی کے دیکھنے میں آچمن کر کے بدھ سے اپنی طائفت کے موافق ہمیشہ جیسے چچا لوم
 ہو ویسے ہی سورج ناراین کے منتر یا کسی دوسرے پاک کر نیوالے منتر کا جب کرے۔
 ۸۷۔ برہمن آدمی کی استخوان ترکو چھو کر اٹھان کرنے سے پاک ہوتا ہے اور استخوان
 خشک کو چھو کر آچمن کر کے گنو چھوئے یا سورج بھگوان کے درشن سے پاک ہوتا ہے۔
 ۸۸۔ برہم چاری کسی کے مرنے میں جل نہ دیوے جب تک انکا برت پورا نہ ہو جا برت پورا ہونے
 پر جل دو کر تین رات میں پاک ہوتا ہے۔
 ۸۹۔ جسے اپنے دھرم کو چھوڑ دیا اور جو اتم ورن کی استری میں نہ رکن کے سچ سے پیدا ہوا
 اور جو جو ٹھانڈیاس دھارن کئے ہوئے ہو اور جو خلاف شاستر آتما کا تیاگ کئے والے ہوں ان کے
 مرنے میں جل نہ دینا چاہئے۔
 ۹۰۔ پاکھنڈ دھرم یعنی ویدک خلاف دھرم کر نیوالی اور اپنی خوشی سے جہان چا وہاں چاہی
 جمل اور اپنے شوہر سے دشمنی کر نیوالی شرا پینے والی ایسی عورتوں کے مرنے میں جل نہ دینا چاہئے۔
 ۹۱۔ آچارج آپا دھیا ماتا تپا گووان سمجھون کا دواہ کر نیسے برہم چارتی اپنے چھوٹے بھائی ہونے

آتیتیتھسسمیچےنیراत्रमश्चिर्भवेत्॥ मातुलेयक्षिणीरा-
 त्रिंशिम्यत्विग्वान्यवेषुच॥ ८१॥ प्रितेरजनि सज्यो तिसस्यस्या
 द्विजये स्थितः॥ अत्रोत्रियेत्वहः कृत्तमवृचानेतयायुरो॥ ८२
 ॥ शुद्धे द्विप्रोदशाहेन द्वादशाहेन भूमियः॥ वैश्यः यंचरशाहेन
 शुद्धो मासेन शुद्धति॥ ८३॥ नवर्हये दद्याहानि प्रत्यूहेनाग्नि युकि-
 याः॥ नचतत्कर्म कुर्वाणाः सनाभ्योऽप्यश्चिर्भवेत्॥ ८४॥ दि-
 वाकीर्त्तिसुदक्यांचयतितंस्तुति कान्तया॥ शवंतत्सृष्टिर्नचेव
 स्पृष्ट्वास्मानेन शुद्धति॥ ८५॥

۸۱- وید اور شستر کا پڑھنے والا مراد ہو تو دوستی وغیرہ کر کے اسکے پاس رہنے والے کو یا اسکے
 گھر میں رہنے والے کو بیس رات تک سونگ ہوتا ہے اور ما و چیلادیکر کر کے والد و بھائی نہایت
 انھون کے مرنے میں بکشتی رات (یعنی اول و آخر دن کے بیچ کی رات) تک سونگ ہوتا ہے۔
 ۸۲- راجا اگر دن میں مرے ہو تو تمام دن اور رات میں مرے ہو تو تمام رات اس راج میں رہنے والے
 پر جا کو سونگ ہوتا ہے اور مور کھ برہمن کے مرنے میں اسکے گھر میں رہنے والوں کو ایک دن
 سونگ ہوتا ہے یعنی اگر دن میں مرے ہو تو تمام دن اور رات میں مرے ہو تو تمام رات سونگ
 ہوتا ہے ہم مکتب کے مرنے میں اور کسی قدر وید اور شستر پڑھا نہ والے کے مرنے میں ایک
 دن سونگ ہوتا ہے حسب مرقوم بالا۔

۸۳- برہمن دن میں کشتی بارہ دن میں ویشیہ پندرہ دن میں شودر تیس دن
 میں شتھو سو گتے ہیں۔

۸۴- باپ کے دن کو نہ بڑھانا اور اگر بوتر نہ چھوڑنا چاہئے، اگر بوتری سامنھو نہ رکھتا ہو تو
 بیٹا وغیرہ اگر بوتر کو کر لے اس کرم کے کرنے سے ناپاکی اسکو نہیں رہتی۔

۸۵- چاندال جین والی عورت تیت عورت جسے بیٹا یا بیٹی جنی ہو مرد بے کے چھو نہوے
 ان سب کو چھو کر انسان کرنے سے پاک ہو جاتا ہے۔

بیگاتلویویدیشاسیغراواچوہیانیردیشام ॥ یچیشاندشراत्र-
 سیتاवेदेवाशुचिर्भवेत् ॥ ७५ ॥ अतिक्रान्तेदशाहेचत्रिरात्रम-
 शुचिर्भवेत् ॥ सम्यक्संन्यतीतेतुसृष्ट्वैवापोविशुद्ध्यति ॥ ७६ ॥ नि-
 र्देशंज्ञातिमशांशुत्वापुत्रस्यजन्मच ॥ सवासजलमाश्रुत्यशुद्धो
 भवतिमानवः ॥ ७७ ॥ बालेदेशान्तरस्थेचष्टयकूपिंडेचसंस्थिते
 ॥ सवासजलमाश्रुत्यसद्यरावविशुद्ध्यति ॥ ७८ ॥ अन्तर्देशा-
 हेस्याताञ्चेत्सुनर्मसाजन्मनी ॥ तावत्स्यादशुचिर्विशोयाव-
 त्तस्याहनिर्देशम् ॥ ७९ ॥ त्रिरात्रमाहुराशौचमाचार्येसंस्थि-
 तेसति ॥ तस्ययुत्रेचपत्न्यांचद्वारात्रमितिस्थितिः ॥ ८० ॥

۷۵۔ دوسرے ملک میں وفات پائے ہوئے کی خبر ملنے پر دن کے اندر سننے میں آوے تو وہ دن
 میں جتنے دن باقی رہیں ان باقی ماندہ دنوں تک سو تک ماننا چاہئے
 ۷۶۔ اگر مرنے سے دن دن بعد سننے میں آوے تو تین دن رات تک سو تک ماننا چاہئے
 اور اگر ایک سال کے بعد سننے میں آوے تو سننے والا انسان کر کے شرع ہوتا ہے۔
 ۷۷۔ دن کے بعد اگر برادری میں کسی کا مرنے اور بیٹے کا جنم سننے میں آوے تو وہ
 کپڑوں کے غسل کرنے سے پاک ہو جاتا ہے۔
 ۷۸۔ دوسرے ملک میں سمانو ذک بانگ کا مرنے میں آوے تو وہ کپڑوں کے غسل کرنے
 سے اس وقت پاک ہو جاتا ہے۔

۷۹۔ ایک کا جنم ہو کر دوسرے کا جنم دن دن کے اندر ہو یا ایک کے مرنے سے دن دن کے اندر
 دوسرے کا مرنے ہو تو پہلے سو تک کے ختم ہونے سے دوسرے سو تک بھی ختم ہو جاتا ہے۔
 ۸۰۔ آپا راج کے مرنے میں چیل کو تین رات تک سو تک ہونا ہی اور آپا راج کی استری
 اور اس کے بیٹے کے مرنے میں ایک رات دن تک سو تک ہوتا ہے تا ستر میں لکھا ہے

निरस्यतु पुमान् शुक्रमुपसृज्यैव शुध्यति ॥ वैजिकारभिसं वन्धा
दनुतन्ध्यादघं व्यहम् ॥ ६३ ॥ अह्ना चैकेन रात्र्या च त्रिरात्रैरेव च
त्रिभिः ॥ शवस्य शोविशुध्यति त्र्यहानुदकरायिनः ॥ ६४ ॥ शूरोः
प्रेतस्य शिष्यस्तु पितृमेधं समाचरत् ॥ प्रेतहारेः समंतन्नशरा-
त्रेराशुध्यति ॥ ६५ ॥ रात्रिभिर्मामसतुल्याभिर्गर्भस्त्रावे विशुध्य-
ति ॥ रजस्युपरते साध्वी कानेन स्त्री रजस्वला ॥ ६६ ॥ नृशाम-
क्षतचूडानां विशुद्धिर्नैशिकी स्मृता ॥ निर्वृत्तचूडकानां तु त्रिरा-
त्राच्छुद्धिरिष्यते ॥ ६७ ॥ ऊनद्विवार्षिकं प्रेतं निरध्वुर्वान्धवावहि
॥ अलंक्ष्यत्यशुचौ भूमावस्थिसंचयनादते ॥ ६८ ॥

۶۴۔ اگر علاوہ خواہش جماع کے تخم گرہ پر تو غسل کر کے پاک ہو جاتا ہے اور جس استری نے پہلے پت کو چھو کر دوسرا پت کیا اس استری میں دوسرا پت سے پت میدا ہو گیا تو اس میں دوسرا پت کو تین دن کا سو تک ہوتا ہے۔

۶۵۔ سپنڈ لوگ رات میں شرم ہوتے ہیں اور جو گناہ سپنڈ ایک دن سو تک کے لائق اور کبھی اس کے ہیں وہ جب مرد کو چھوئے تو تین دن میں شرم ہوتے ہیں اور جو سناو دک ہیں وہ بھی تین دن میں شرم ہوتے ہیں۔

۶۵۔ گرو کے واہ کرنے سے چیل بھی گرو کے سپنڈ کے برابر شرم کو پاتا ہے۔

۶۶۔ جب حمل گر جائے تو جتنے مہینے کا حمل ہوا اتنی ہی رات کو شرم ہوتا ہے جیسے تخم ہوئے غسل کر کے مہین والی عورت پاک ہو جاتی ہے۔

۶۷۔ جسکا منڈن ہوا ہو اسکے مرنے میں ایک رات دن کا سو تک ہوتا ہے اور منڈن ہو جا پر مرنے میں تین رات تک سو تک ہوتا ہے۔

۶۸۔ جو لڑکا دو مہینے کا ہو کر مر جائے اسکو لڑکا کر کے گانوچ سے بائیں گل میں گار دنا چاہیگی جو بچان جمع کرنا چاہیے۔

دक्षجاते: ۵ چو جا تے چکات چو ڈے چسٹھیتے ॥ اسی دوا وانہوا: س-
 رتھت کے چتھو چتے ॥ ۵۷ ॥ دشا ہشا و ما شوی چسٹھیرا ڈے
 ویدیہتے ॥ اسی وکسٹھنا دساں اسی ہکا ہکے ۵۸ ॥ اسی
 رات تاتھو رتھسٹھیتے ॥ سمانی دکھا و ستھجنا نا
 مہو رتھتے ॥ ۵۹ ॥ اسی دشا و ما شوی چسٹھیرا ڈے
 ویدیہتے ۵۹ ॥ اسی وکسٹھنا دساں اسی ہکا ہکے ۶۰ ॥ اسی
 رات تاتھو رتھسٹھیتے ۶۰ ॥ اسی دشا و ما شوی چسٹھیرا
 ڈے ویدیہتے ۶۱ ॥ اسی وکسٹھنا دساں اسی ہکا ہکے ۶۲ ॥

۵۸۔ بچکے دانت لکل آئے ہوں اور موٹن اور جینو ہو گیا ہوں انکے مرنے اور پیدا ہونے میں
 رتھتے و رات پرش تک رات پرش سے اوپر تک جنم نام گیاں تک ۵۹۔
 ۵۹۔ جو برہمن کو یکے دونوں بھاگ (یعنی منتر بھاگ اسی برہمن بھاگ) کو تمام پڑھا ہو اور
 اگن ہو کر تاتھو رتھسٹھیتے مرنے میں ایک دن رات کا سو تک ہے اور جو صرف دیکھ پڑھا ہو اور اگن
 ہو کر تاتھو رتھسٹھیتے دن کا سو تک ہو تا ہے اور جو نہ دیکھ پڑھا ہو اور اگن ہو کر تاتھو رتھسٹھیتے
 ہو اور کو چار دن کا سو تک نام اور جو سب گنوں سے خالی ہو اور کو دس دن کا سو تک ہو تا ہے۔
 ۶۰۔ ساتویں پرش میں سپند تا کی تہرت ہوتی ہے اور اپنے گور میں جب جنم نام کا گیاں بنین ستیا
 تپ سما لو دگنا کی تہرت ہوتی ہے۔

۶۱۔ جو پرش سپند میں ہوں اور برہمن کی اچھا رکھنے والے ہوں اور کو سو تک پیدا
 ہونے میں بھی مرنے کے سو تک کے برابر ہو تا ہے۔

۶۲۔ مرن کا سو تک ہو تا ہے مگر جنم کا سو تک صرف مان باپ ہی کو ہو تا ہے ان دونوں
 میں مان کو چھو نا نہ چاہیے اور باپ اسی شان کرنے کے ہو چھوٹے کے لائن ہوتا
 ہے۔

वर्षे वर्षेऽश्वमेधेन योजेत शतं समाः ॥ मां सानिचन स्वादेद्य
 स्तयोः पुराय फलं समम् ॥ ५३ ॥ फलमूलाशनेर्मध्ये सुन्यन्ना-
 नां च भोजनैः ॥ न तत्फलमवाप्नोति यन्मांसपरिचर्जनात् ॥ ५४
 ॥ मांसमभक्षयिता मुत्रयस्य मांसमिहाज्यहम् ॥ स तान्मांसस्य-
 मांसत्वं प्रवदन्ति मनीषिराः ॥ ५५ ॥ न मांसमभक्षरो दोषो न स-
 द्येन च मे युने ॥ प्रवृत्तिरेवाभूतानां निवृत्तिस्तु महाफला ॥ ५६
 ॥ प्रेतमुद्धिं प्रवक्ष्यामि इव्यमुद्धितयेव च ॥ चतुर्णां सपिवरा-
 नां यथावदनुपूर्वशः ॥ ५७ ॥

۵۳۔ جو شخص تلو پر بس تک ہر ایک برس میں ایک ایک سو میڈھ گیہ کر تا ہے اور دوسرا
 شخص مانس کو نہیں کھاتا ہے ان دونوں کے پیٹھ کا پھل برابر۔
 ۵۴۔ مانس کے ترک کرنے سے جو پھل ہوتا ہے وہ پھل کو پشیمانج تنی وغیرہ جو من جی کا
 ان ہے اور مول پھل انھوں کے کھانے سے نہیں ہوتا۔
 ۵۵۔ جبکی مانس کو میں اس لوگ میں کھاتا ہوں اور پر لوک میں کھلو کھایگا مانس لفظ
 کے ہی معنی ہیں یہ بات ہندو لوگ کہتے ہیں۔
 ۵۶۔ مانس اور شراب ان دونوں کے کھانے میں کھپے دوش نہیں ہے اور جماع میں
 بھی دوش نہیں ہے کیونکہ یہ توجیو و نکا سبھا و ہے لیکن دھنوں کا ترک کرنا برا
 پھل ہے۔

۵۷۔ اب چاروں لون کی پرست شدہ اور درہیم شرم کہتے ہیں۔

۵۸۔ اس لوگ کا اصل مطلب یہ کہ گیہ کے مانس کھانے میں اور شادی میں جماع کرنے میں اور شر و ترا منی نام گیہ
 میں شراب پینے میں دوش نہیں ہے لیکن تاہم اس کا ترک کرنا بہت اچھا ہے۔

نیشوکتسٹو یثا نیا ی یو ماں سنا تیا مانو : ॥ سہ پرتھ پرتھ یلے ن یو
 تیا سنا مانو ک وین شاتیم ॥ ۳۵ ॥ ا سسکھ تان پشون تری ن ۱۱ سٹو یث
 پرتھ کرا چن ॥ م تری سٹو سسکھ تان پشون تری ن ۱۱ سٹو یث
 ۳۶ ॥ کوریا دھت پشون سگو کوریا تپ پشون تری ن ۱۱ ن تری ن
 پشون تری ن ۱۱ ۳۷ ॥ یا و ن پشون تری ن ۱۱ پشون تری ن
 و تری ن ۱۱ ۳۸ ॥ یا و ن پشون تری ن ۱۱ پشون تری ن
 ۳۹ ॥ یا و ن پشون تری ن ۱۱ پشون تری ن
 ۴۰ ॥ یا و ن پشون تری ن ۱۱ پشون تری ن
 ۴۱ ॥ یا و ن پشون تری ن ۱۱ پشون تری ن
 ۴۲ ॥ یا و ن پشون تری ن ۱۱ پشون تری ن
 ۴۳ ॥ یا و ن پشون تری ن ۱۱ پشون تری ن
 ۴۴ ۱۱ پشون تری ن ۱۱ پشون تری ن
 ۴۵ ۱۱ پشون تری ن ۱۱ پشون تری ن
 ۴۶ ۱۱ پشون تری ن ۱۱ پشون تری ن
 ۴۷ ۱۱ پشون تری ن ۱۱ پشون تری ن
 ۴۸ ۱۱ پشون تری ن ۱۱ پشون تری ن
 ۴۹ ۱۱ پشون تری ن ۱۱ پشون تری ن
 ۵۰ ۱۱ پشون تری ن ۱۱ پشون تری ن

۴۶۔ جو شخص کو ستر کی پردہ جو مانس شرمہ ہو او سو جو آدمی سنین کھاتا وہ پر لوک میں کسٹ خیم تک

۴۷۔ وہ کو بدون محنت کاسنکار سنین ہو او سو کو برہن کہی نہ کھائے اور ہیشہ شاستر کے موافق ہو

۴۸۔ بدون ہینا چوہ کاسنکار سنین ہو او سو کو برہن کہی نہ کھائے اور ہیشہ شاستر کے موافق ہو

۴۹۔ مانس کی پیدائش اور حیوانیت کا نہایت دل چاہت ہو گی یا میٹھی کا پیش بنا کر کھا لگ کر پیش

۵۰۔ جو آدمی پردہ کو چھوڑ کر شپا کی طرح مانس سنین کھاتا وہ لوگ میں سب سے چھوٹا ہوتا ہے

۵۱۔ جس کی صلاح بفریہ ہو سنا ہو سکے اور تنہا سے مانس کو کاٹنے والا مارنیوالا بیچنے والا مول لینے والا بنائے والا اسے آنیوالا مانس کا کھانا بیوالا یہ آتھو مارنیوالے ہی کہلاتے ہیں۔

۵۲۔ جو شخص دوسرے کے مانس سے اپنے مانس کے بڑھانے کی اچھا کرتا ہے اس کو زیادہ کوئی دوسرا پانی نہیں ہے۔

मधुपर्ध्वः १२

न्यवेत्याः कचयज्ञेचपितृदेवतकर्मणि ॥ अत्रैवयशोविहिंस
जः ॥ अभोत्रवीक्षनुः ॥ ४१ ॥ एष्वर्थेषुयशुंहिसंवेदतत्त्वार्थवि
वरण्येसमभमानंचयशुंचैवगमगत्युत्तमांगतिम् ॥ ४२ ॥ गृहेषु
द्यपिसंचप्रवोवसन्नात्मवान्निजः ॥ नावेदविहितान्हिसामाय
चरे ॥ अमेयुनेरेत ॥ ४३ ॥ यावेदविहिताहिसानियतास्मिंश्चरा
सकानि ॥ सामेवतांविद्याद्देदाहर्मोहिनिर्वभो ॥ ४४ ॥ योऽहिं
कचित्सुधृतानिहिनस्त्यात्मसुखेच्छया ॥ सजीवंश्चमृतश्चैव न
कीर्षति ॥ स्वमेधते ॥ ४५ ॥ योवन्धनवधक्लेशान्प्राशिनानंचि
॥ ससर्वस्यहितप्रेषुःसुखमत्यन्तमश्नुते ॥ ४६ ॥

در کرم میں نہ مارنا چاہیے

۴۱۔ نہ پرگ یگیہ یو کرم۔ پتر کرم ان سب میں پیش کو مارنا چاہیے اور

اس بات کو مٹری میں جی نہ لے گا ہے۔

۴۲۔ ایسے کرموں میں پیش کو مار کر دیکھ اصل مطلب کو

کو تم گت کو پہونچاتا ہے۔

۴۳۔ جو ہنس اس دنیا میں دیکھ حکم کے موافق ہے اس کو ہنس لینا جان کسی نجانا چاہیے کیونکہ وہ

ہی سے دھرم نکلا ہے۔

۴۴۔ جو جو مارنے کے لائق نہیں ہے، انکو جو کوئی اپنے سکھ کے واسطے مارتا ہے وہ جیتا ہوا مردہ ہے

کیونکہ سکھ نہیں پاتا ہے۔

۴۵۔ جو شخص کسی جاندار کو پکڑنے اور مارنے اور ایذا دینے کی خواہش نہیں رکھتا وہ سبکا بھلا

چاہنے والا ہے اسلئے بڑا سکھ پاتا ہے۔

चरारामचमचरादंष्ट्रिणामप्यदंष्ट्रिणः॥अहस्ताश्चसहस्ता
नांश्चरारांचैवभीरवः॥२६॥नात्तादुष्यत्यदन्नाद्यान्प्राणि-
नोऽहन्यहन्यपि॥धात्रैवसृष्ट्याद्याश्चप्राणिनोऽत्तारणवच
॥३०॥यज्ञायजग्धिर्मांसस्येत्येवदैवोविधिःस्मृतः॥अतोऽ-
न्यथाप्रवृत्तिस्तुराससोविधिरुच्यते॥३१॥क्रीत्वास्वयंवायु-
त्याद्यपरोपकृतमेववा॥देवान्यित्त्वश्चार्थयित्वास्वादन्मांसं-
नदुष्यति॥३२॥नादाद्यविधिनामांसंविधिज्ञोऽनापरिद्विजः
॥जग्ध्वाह्यविधिनामांसंप्रेत्यतैरद्यतेऽवशः॥३३॥नतादृशंभ-
वत्येनोमृगहन्तुर्धनार्थिनः॥यादृशंभवतिप्रेत्यद्यथा मांसा-
निषादतः॥३४॥

۲۹- جانداران بہتر کی غذا جانداران ساکن ہیں ڈارھہ والوں کی غذا بدون ڈارھہ والے ہیں
والوں کی غذا بدون ہاتھ والے ہیں مثور میرون کی غذا ڈرتے والے ہیں
۳۰- کھانے کے لائق جانوروں کو کھانے سے کھانیوالے کو دیش ہین ہوتا کیونکہ کھانیکے لائق
جانور کو اور کھانیوالے جاندار کو برہما جی ہی نے پیدا کیا ہے۔
۳۱- گیہ کے منت مانس کو بھوجن کرنا شاستری بدھ ہی سمجھتا ہے اسکے اور مانس بھوجن کرنا کشتی
بدھ ہے۔

۳۲- مول لئے ہوئے یا دوسرے کے لئے ہوئے مانس کو دیتا اور میرون کو بھوک لگا کر کھانے
سے پاپ ہین ہوتا۔

۳۳- جو برہمن شاستری بدھ جانتے والے، وہ بغیر وقت تعصبت کے اور حالت میں بدھ
مخلاف اگر مانس کو کھاتے تو اسکے مانس کو پرلوک میں وہ کھاتا ہے جبکہ مانس کو اُسے کھایا۔
۳۴- دولت کے لئے ہرن کے ماریوالے کو دیسا پاپ ہین ہوتا جیسا پاپ ہین فائدہ مانس کھانیوالے
کو پرلوک میں ہوتا ہے۔

यत्किंचित्स्नेहसंयुक्तं भक्ष्यं भोज्यमगर्हितम् ॥ तत्पर्युषितम-
 प्याद्यंहविः शेषं च यद्भवेत् ॥ २४ ॥ चिरस्थितमपित्वाद्यमस्नेहा-
 त्तं द्विजातिभिः ॥ यवगोधूमजंसर्वपथशश्चैव विक्रिया ॥ २५ ॥
 एतदुक्तं द्विजातीनां भक्ष्या भक्ष्यमशेषतः ॥ मांसं स्यातः प्रवक्ष्या-
 मिविधिं भक्षणावर्जनैः ॥ २६ ॥ प्रोक्षितं भक्ष्येन्मांसं ब्राह्मणा-
 नां च काम्यया ॥ यथाविधिनियुक्तास्तु प्राणानामेव चात्यये
 ॥ २७ ॥ प्राणास्यान्नमिदं सर्वं प्रजापतिरकल्पयत् ॥ स्थावरं
 जंगमं चैव सर्वं प्राणास्यभोजनम् ॥ २८ ॥

۲۴۔ جو چیز گھی یا تیل سے پکی ہو اور کھانے کے لائق ہو وہ باسی بھی ہو تو اسکو بھون کرے اور
 بچا ہو اسپیٹہ بھی اگر وہ باسی ہو کھانا چاہیے۔

۲۵۔ جو چیز جو یا گھوٹوں سے بنی ہے گھی یا تیل سے نہیں پکی اور باسی اور جو چیز دوسرے
 بنی ہے وہ باسی، اسکو بھون کرے۔

۲۶۔ جو چیز برہمن کشتی ویشیہ کے کھانے کے لائق ہیں اور جو نہیں لائق ہیں انکو کھانا
 مانس کھانے کی ممانعت کوکتے ہیں

۲۷۔ پیردیش نام سنسکار سے جو مانس نیا ہے اور گھیم میں ہون کرنے سے جو مانس بچاؤ
 دونوں طرح کے مانس کو بھون کرنا چاہیے اور جب برہمنوں کو مانس کی اچھا ہوتی شستر
 کی بدھ سے مانس کو بھون کرین اور جبکہ بھوکھ سے جان جاتی ہو سو وقت بھی مانس بھون کرین

۲۸۔ استھادرجیم جتنی چیزیں دنیا میں ہیں وہ سب جان کی غذا ہیں اسات کو شتری بھاجی
 نے کہا ہے۔

۲۹۔ جو پوتاؤں کا حصہ۔

+ ساکن۔

مترک۔

शवाविधंशल्यकंगोधांस्वङ्गकूर्मशशास्तथा॥ भक्ष्यान्यंचनखे
 स्वाहरनुष्ठांश्चैकतोदतः॥ १८॥ छत्राकंविद्वराहंचलशुनंशा-
 मकुक्कुटम्॥ पलाराडुंगुंजनंचैवमत्याजग्ध्वापतेह्विजः॥ १९॥
 ॥ अमत्यैतानिषट्जग्ध्वाक्छंसांतपनंचरेत्॥ यतिचान्द्रा-
 यरांवापिशेषेषूपवसेदहः॥ २०॥ संवत्सरस्यैकमपिचरेत्क-
 च्छंह्विजोत्तमः॥ अज्ञातभुक्तशुद्ध्यर्थंज्ञातस्यतुविशेषतः २१
 यज्ञार्थंवाह्यरोर्वध्याःप्रशस्ताह्यपक्षिराः॥ भृत्यानांचैव-
 हत्यर्थमगस्त्योह्यचरत्पुरा॥ २२॥ वभूवुर्हियुरोडाशाभस्या-
 गांह्यपक्षिराम्॥ पुरारोष्यपियज्ञेषुब्रह्मसत्रसवेषुच॥
 ॥ २३॥

- ۱۸۔ پانچ ناحن والون میں سالی گوہ ساہی گپیڈا کچھوا۔ کھرہا کھانے کے لائق مین
 اور اونٹ کو چھوڑ کر ایک طرف وانت رکھنے والے علاوہ انکے فکی ممانعت ہو کھانی
 کے لائق مین مین
- ۱۹۔ ککڑ متا کا ٹون کا رہنے والا سورسٹن کا ٹون کا مرغ پیاڑ۔ گاڑ ان سب کو چاکر بھون
 کرے تو تپت ہو جاتا ہے مینے اپنے دمدم درن آشرم کے درجہ سے کر جاتا ہے۔
- ۲۰۔ اگر ان چھو کو بغیر جالے بھون کرے تو سانپ پن نام کو چھو برت کو کرے یا بیت
 برت کو کرے باقی درخت کا لاسا وغیرہ کھانے مین ایک دن فاقہ کرے۔
- ۲۱۔ جو چیز کھانیکے لائق نہیں ہے اسکو بغیر جانے کھانے مین جو دوش ہے اسکو ناش کر نیکے لئے
 سال بھر مین ایک کر چھو برت کو کرے اور اگر چاکر کھایا ہو تو اسکے لئے خاص کر چھو برت کرے۔
- ۲۲۔ یگیہ کیواسطے اور نوکروں کے کھانے کیواسطے اچھے ہرن اور پشی (پرند) مارنا چاہئے
 اگست رتن نے اگلے زمانہ مین ایسا کیا ہے۔
- ۲۳۔ اگلے زمانہ مین رشیوں نے یگیہ کے لئے کھانے کے لائق ہرن اور کشتیوں کو مارا ہے۔

کالوینکسवंहंसंचक्रांगं ग्रामकुक्षुटम् ॥ सारसं रज्जुबालंच-
 रात्पूहं शुक्रसारिके ॥ १२ ॥ प्रतुदां जालपादां श्वको यद्विनरव
 विक्रिरान् ॥ निमज्जतश्च मत्स्यादान् शौनवं स्त्रूरमेव च ॥ १३ ॥
 बकं चैव बलाकां च काकोलं खंजरीटकम् ॥ मत्स्यादान्विद्धरा-
 हांश्च मत्स्यानेव च सर्वशः ॥ १४ ॥ यो यस्य मांसमश्नाति स तं मां-
 साद उच्यते ॥ मत्स्यादः सर्वमांसादस्तस्मात्स मत्स्यान्वि वर्जयेत्
 ॥ १५ ॥ याडीनरोहितावाद्यौ नियुक्तौ हव्यकव्ययोः ॥ राजीवा-
 न्निहवराडांश्च सशलकांश्चैव सर्वशः ॥ १६ ॥ न भक्षयेदकचरान्
 ज्ञातांश्च मृगाद्विजान् ॥ भक्ष्येऽप्यसमुद्दिष्टान्सर्वान्यंच न खां-
 स्तथा ॥ १७ ॥

۱۲- گوراجل میں سپردالے ہنس چکوراگانوں کا رہنے والا مرغاس رس رجوآل پرند جل گل
 ٹوٹا- مینا- ان کو بھی نہ کھائے۔

۱۳- چوچ سے کھالے والے بٹ بھوڑ نام جانور وغیرہ آڑی وغیرہ ٹھہری وغیرہ ناخن سے
 نوچ کر کھالے والے بازو وغیرہ پانی میں ڈوب کر پھلی کھالے والے جانور کسان کے
 گھر کا ماسن سوکھا ماسن ان سب کو بھی نہ کھائے۔

۱۴- بگلا اور بلا کارلینی دوسری قسم کا بگلا نہایت سیاہ زانغ کھڑے پھلی کھانیوں
 پرندگانوں کا سورا اور پھلی ان سب کو بھی نہ کھائے۔

۱۵- جو جو جکے ماسن کو کھاتا ہے وہ اس کا کھانی والا کہلاتا ہے جیسے پھلی کھا کھانی
 اور اسکو جینے کھایا وہ گویا سب ماسن کھا چکا اسلئے پھلی کو کھانا پچا ہے

۱۶- راجپوت سنگت شد شلک پہنارو ہوا ان سب کو دیوتا اور پتروں کو بھوک لگا کر کھانا پچا

۱۷- جو جاندار اکثر اکیلے رہتے ہیں مثل سانپ وغیرہ اور جو جالے ہوئے مین میں ہرن
 و پرند وغیرہ اور پانچ ناخن والے بندر وغیرہ ان سب کو بھوچن نہ کرے۔

द्वयाकसरसंयावंपायसाष्टयमेवच॥ अनुपाकतमांसानिदे-
वान्नानिहवींषिच॥ ७॥ अनिर्देशायागोःसीरमौद्धमेकशफं
तथा॥ आविकंसंधिनीसीरंविबत्सायाश्चगोःययः॥ ८॥ आर-
रायानांचसर्वेषांमृगारांमाहियंचिना॥ स्त्रीसीरंत्तैववर्ज्यानि
सर्वशुक्तानिचैवहि॥ ९॥ अधिमस्यंचयुक्तैषुसर्वंचदधिसंभवम्
॥ यानिचैवाभिषूयन्तेपुष्पमूलफलैःसुभैः॥ १०॥ क्रव्यादाञ्च
कुनीत्सर्वांस्तथाग्रामनिवासिनः॥ अनिर्दिष्टांश्चैकशफांसि
हिमंचविवर्जयेत्॥ ११॥

۷۔ ویوتا اور پتر دن کو چھوڑ کر اپنے واسطے تل بلایا بھات دو دھ کر گھوٹ کر اٹا سے بنایا ہوا
پکوان کھیر مال لیا اور جو جانور منتر سے سیدھ بنیں کیا گیا اور کمالش اور جو آن ویوتا دن کے
واسطے بنایا گیا ہو اور انکو بھوک نہ لگایا گیا ہو اور جو پتہ ہوں کیواسطے بنایا اور ہوں بنیں ہوا
ان سب کو ویوتا اور پتر دن کے بھوک لگائے بغیر کھادے۔

۸۔ بیانے سے دن تک گند کا دودھ اور اٹنی اور ایک کھڑ والی (یعنی گھوڑی وغیرہ) اور بھیر
اور گا بھن گنو اور وہ گنو جب کچھ مر گیا ہو ان سب کا دودھ پینا منع ہے۔

۹۔ سوکے بھننے کے اور جتنے جاندار جنگل کے رہنے والے ہیں ان کا دودھ اور عورت کا دودھ
اور جو چیز بدون ملانے کسی دو مری چیز کے کھن بسبب گزرنے ایام کے کھٹی ہو جائے
ان سب کا کھانا منع ہے۔

۱۰۔ لیکن کھٹی چیز دن میں دی اور دہی سے بنی ہوئی چیزیں اور پانی سے بنایا ہوا پھل اور پھل
وغیرہ کو کھانا منع نہیں ہے۔

۱۱۔ کچے گوشت کے کھانے والے گدھے وغیرہ پرندگانوں میں رہنے والے کبوتر
وغیرہ پرند ایک کھڑ والے جانور یا ستھار انکے چوتھ ستر میں کھانے کے لائق
کے گئے ہیں اور ٹھہری ان سب کو نہ کھائے۔

شتوئے نائنو یو دھرم آت کس پتھو دی نائت ॥ ۱ ॥ سبک یو کتھو وی پراشاں سبک دھرم مانتو
 تھتا ॥ کتھو مانتو: پمبوتی ویشا سبک دھرم مانتو ॥ ۲ ॥ سبک
 واک دھرم آت مانتو: ॥ ۳ ॥ سبک دھرم آت مانتو: ॥ ۴ ॥ سبک
 دھرم آت مانتو: ॥ ۵ ॥ سبک دھرم آت مانتو: ॥ ۶ ॥

- ۱۔ اس بات کے دھرم کو سبک دھرم کہتے ہیں جو آگ سے پیدا ہوا ہے۔
- ۲۔ اس طرح برہمن لوگ جو اپنے دھرم پر جیسا کہ لکھا ہے قائم ہوں اور دھرم سبک دھرم کہتے ہیں۔
- ۳۔ مانتو جی کے پتر دھرم آت مانتو جی کے ان رشیوں سے کہا کہ جس دھرم سے برہمنوں کو موت مانتی ہے اسکو سبک دھرم کہتے ہیں۔
- ۴۔ دھرم کے بھگتوں سے کہا کہ اس دھرم سے آپا کو چھوڑنے سے کھانے کے نقص سے برہمنوں کو موت مانتی ہے۔
- ۵۔ مانتو۔ کاجر۔ پیاز۔ لکڑی۔ شالیزہ۔ وغیرہ ناپاک چیزوں کو چھوڑنا۔ ان سب کو سبک دھرم کہتے ہیں۔
- ۶۔ دھرم کا لالہ سال رنگ کا یا جو کھانے سے پیدا ہو کسی رنگ کا ہو اور جو نئی بیانی ہوئی گتو کا دو دھرم مانتو ان سب کو سبک دھرم کہتے ہیں۔

۱۸۔ گن بھی مانتو جی کا نام ہے۔ دیکھو اور جیسا کہ ۱۷۔

महर्षिपितृदेवानांगत्वान्तरायं यथाविधि॥ पुत्रे सर्वसमासज्य
वसेन्माध्यस्थमाश्रितः॥ २५७॥ एकाकीचिन्तयेन्नित्यं विवि-
क्तेहितमात्मनः॥ एकाकीचिन्तयानो हियरंश्रेयोऽधिगच्छति-
॥ २५८॥ एवोदितागृहस्थस्य वृत्तिविप्रस्य शाश्वती॥ स्नात-
कव्रतकल्पश्च सत्ववृद्धिकरः शुभः॥ २५९॥ अनेन विप्रो वृत्ते-
न वर्त्तयन्नेदं शास्त्रवित्॥ व्ययेत कल्मषो नित्यं ब्रह्मलोके म-
हीयते॥ २६०॥

इति मानवे धर्मशास्त्रे भृगुप्रोक्तायां संहितायां चतुर्थोऽध्यायः ४

۲۵۷- دیو برش پتران تینون کے رنج سے بچھاپ بھ چھوٹ کر سب چیز بیٹے کو سپرد کر کے
نمارک الدنیا ہو کر سب کو بچشم وحدت برابر دیکھے اور گھری میں رہے۔
۲۵۸- اریکانت میں اکیلا اپنی آتما کے ہمت کو نتیجہ ہی دھیان کر کے اُس میں برہم کلیا
ہوگا۔
۲۵۹- برہمن گرہستھ کا یہ نتیجہ برت کما اور بدھ کا بڑھانی والا اسناکت برت بھی کما۔
۲۶۰- دید اور شستر کا جانتے والا برہمن اور پرکھی ہوئی ریت سے رہا کرے تو سب پاؤں
سے چھوٹ کر ہمیشہ برہم لوک میں پوچھنے کے لائق ہو۔

من جی کا دھرم شستر بھگ جی کی سنگھتا

کا چوکتا ادھیاسماپت ہوا

दृढकारीमददत्तः क्रूरचोरसंभवसन् ॥ अहिंसोदमदानाभ्याज-
येत्त्वर्गांतथाव्रतः ॥ २४६ ॥ शोधोदकं मूलफलमन्मभ्युदितं
चयत् ॥ सर्वतः प्रतिपुल्लीयान्मध्वयाभयदक्षिराणाम् ॥ २४७ ॥
आहताभ्युद्यतांभिष्ठांपुस्तादप्रचोदिताम् ॥ मेनेप्रजायतिश-
ह्यामपिदुष्कृतकर्मणाः ॥ २४८ ॥ नाश्रन्तिपितरस्तस्यदशव-
र्षाशिपंचव ॥ नचहव्यंवहत्यग्निर्यस्तामभ्यवमन्यते ॥ २४९ ॥
शय्यांयुहांकुशानान्धानपःपुष्पमराण्यधि ॥ धानामत्यान्य-
योमांसंशाकंचैवननिर्नुदेत् ॥ २५० ॥

۲۴۶- کسی کام کو شرع کر کے اسکو ختم تک پھونپتے والا نرم مزاج والا
گرمی و سردی و عیسرہ و خنڈون کا سمجھنے والا۔ انوریون کو ویشیون سے روکنے والا
بد آدمیوں پر شتہ منبری ترک کرنا والا۔ جان کشی نہ کرنا والا۔ دان دینے والا سورگ
میں جاتا ہے۔

۲۴۷- لکڑی۔ جل۔ مزل۔ پھل۔ آن۔ مذقہ۔ ابھے (بیخونی) پریشاں مانگے ملین تو انکو سے
لینا چاہئے مگر نہ کا تپت۔ نامرد و دشمن سے نہ لےوے۔

۲۴۸- جبکہ کسی چیز کو دینے والے نے پہلے سے دینے کو نہ کہا ہو اور لینے والے کے پاس شیکر
بے مانگے دے تو اس چیز کو سو تپت کے لکرم کرتے والے سے بھی لینا چاہئے برہا جی نے
کہا ہے۔

۲۴۹- جو شخص ایسی چیز کو نہیں لیتا ہے اسکے لئے ہوئے ہیٹھ اور کہیہ کو دیتا اور پتہ
پتہ و برہس تک نہیں لیتے ہیں

۲۵۰- چار پائی۔ مٹگان۔ کش۔ خوشبو۔ پانی۔ پھول۔ جو آہر۔ دہی۔ لائی۔ مچھلی
دودھ۔ گوشت۔ ساگ۔ ان سب کو ترک کرے۔

شک: प्रजायते जन्तुरेकस्य प्रलीयते ॥ शक्रोऽनुभुंक्ते सुकृतमेक
 सवचदुष्कृतम् ॥ २४० ॥ स्रुतं शरीरमुत्सृज्य काष्ठलोष्ठसमं क्षितौ
 ॥ विमुखा बान्धवा यान्ति धर्मस्तमनुगच्छति ॥ २४१ ॥ तस्माद्द-
 र्मसहायार्थं नित्यं संचिनुयाच्छर्मैः ॥ धर्मैराहिसहायेन तमस्तर-
 ति दुस्तरम् ॥ २४२ ॥ धर्मप्रधानं पुरुषं तपसा हतकिल्बिषम् ॥
 परलोकं नयत्याशु भास्वंतं स्वशरीरिणाम् ॥ २४३ ॥ उत्तमैरुत्तमै-
 र्नित्यं संबधानाचरेत्सह ॥ निनीषुः कुलमुत्कर्षमनमानधर्मा-
 स्त्वजेत् ॥ २४४ ॥ उत्तमानुत्तमानाच्छेन्हीनाहीनां श्ववर्जयन्-
 ॥ बाह्यराः श्वेद्यतामेति प्रत्यवायेन शूद्रताम् ॥ २४५ ॥

۲۴۰ - ایک ہی پیدا ہوتا ہے ایک ہی مرتا ہے ایک ہی پنیہ بھوک کرتا ہے ایک ہی پ-
 بھوک کرتا ہے۔

۲۴۱ - مردہ کو لکڑی ڈھیل کی طرح زمین میں چھوڑ کر بجائی بندہ الگ جاتی ہیں ہم
 ہی ساتھ جاتا ہے۔

۲۴۲ - سلتے اپنی مدد کیوں اسے دھرم کو ہمیشہ کرتا ہے کیونکہ دھرم کی مدد سے
 بھوسا گر پار اتر جاتا ہے۔

۲۴۳ - جس آدمی دھرم بددگار ہے اور تپ سے اوسکا پاپ دور ہو گیا ہے وہی دھرم
 اسکو سورگ لوک میں لے جاتا ہے۔

۲۴۴ - خاندان کو انکی بزرگی دینے کے لئے اچھے اچھے لوگوں کے ساتھ رشتہ مندی
 کرے نالائقوں سے ترک تعلق کرے۔

۲۴۵ - اچھوں اچھوں سے رشتہ مندی کر کے اور بُردن بُردن سے ترک لوک
 براہمن بزرگی حاصل کرتا ہے اور دوش لگنے سے سودر کے برابر ہوتا ہے۔

येनयेनतुमावेनयद्यदानंप्रयच्छति॥ तत्तत्तेनैवभावेनप्राप्नो-
 तिप्रतिपूजितः॥ २३४॥ योऽर्चितंप्रतिगृह्णातिददात्यर्चितमे-
 वच॥ ताबुभोगच्छतःस्वर्गंनरकन्नुचिपर्यये॥ २३५॥ नवि-
 स्मयेततपसावदेदिद्वाचनानृतम्॥ नार्तोऽप्यपवदेद्विप्रान्नर-
 त्वापरिकीर्तयेत्॥ २३६॥ यज्ञोऽनृतेनसरतितपःसरतिवि-
 स्मयात्॥ आशुर्विप्रापवादेनदानंचपरिकीर्तनात्॥ २३७॥
 धर्मशनैःसंचिनुयाद्वल्मीकमिवपुत्तिकाः॥ परलोकसहाया-
 र्थंसर्वभूतान्यपीडयन्॥ २३८॥ नामुब्रह्मसहायार्थंपितामा-
 ताचतिष्ठतः॥ नपुत्रदारानज्ञातिर्धर्मस्तिष्ठतिकेवलः॥
 २३९॥

۲۳۴ - جو دین ج طرح دیا جاتا ہے وہ اسی طرح دو بیکر جنم میں ملتا ہے۔
 ۲۳۵ - جو شخص اچھی چیز دیتا ہے اور جو اسکو لیتا ہے وہ دونوں سوگ میں
 جاتے ہیں۔

۲۳۶ - بپ کر کے غز در کر کے یگیہ کر کے جھوٹو نہ بولے رنجیدہ ہو کر برہمن کو جا
 بیانہ کئے دان ہو کر نہ کہے۔

۲۳۷ - جھوٹو بولنا، غور کرنا، برہمن کی توہین یا ہتھیاری کرنا، دان دیکر کتنا ان
 سہون سے حسب سلسلہ یگیہ، تپ، عمر، دان کا ناش ہو جاتا ہے۔

۲۳۸ - اس طریق سے کہ جس سے کسی جاندار کو تکلیف ہونے
 پاوے پر لوک کی آواز کے واسطے دھرم کو جمع کرے جیسے چنٹی غلہ کو
 جمع کرتی ہے۔

۲۳۹ - مان، آپ، عورت، مہقوم، بیٹا، یہ سب پر لوک میں اور انہیں کر سکتے
 صرف دھرم ہی کام آتا ہے۔

यत्किंचिदपि दातव्यं याचितेनानसूयया ॥ उत्पत्स्यते हित-
 त्यात्रं यत्तारयति सर्वतः ॥ २२८ ॥ वारिदस्त्वग्निमानोति सुरवम-
 सय्यमन्नदः ॥ तिलप्रदः प्रजामिष्टां दीपदश्च सुरुत्तमम् ॥ २२९ ॥
 भूमिरो भूमिमानोति दीर्घमायुर्हिरण्यदः ॥ गृहरोऽग्न्याशि-
 वेशमानिरूप्यरो रूपमुत्तमम् ॥ २३० ॥ वासोदश्चन्द्रसालोक्य-
 मश्विसालोक्यमश्वरः ॥ अनडुहः श्रियं युष्टांगो दोषधस्य-
 विष्टयम् ॥ २३१ ॥ यानशय्याप्रदो भार्यामैश्वर्यमभयप्रदः ॥
 धान्यदः शाश्वतसौख्यं ब्रह्मरो ब्रह्मसार्धिताम् ॥ २३२ ॥ स-
 र्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते ॥ वार्यन्नगो महीवास-
 स्तिलकांचनसर्पिषाम् ॥ २३३ ॥

۲۲۸- گن مین دوش رنگا کرانگنے والون کو اپنی شکست کے موافق ان دیا کرے
 کیونکہ ہر روز جب ان دیا کرے گا تو ایکٹ ایکٹ کسی طرف سوا یا شخص آجائے گا جو سب
 طرح سے نال کر دے گا۔

۲۲۹- جل - آن - تل - دیپ - انھون کا دینے والا حسب سلسلہ آسودگی عیش لازوال
 اچھی - اولاد - اچھی - انھون کو پاتا ہے۔

۲۳۰- زمین - سونا - گھروپا انھون کا دینے والا حسب سلسلہ زمین بڑی عمر اچھا گھر چھٹی
 صورت کو پاتا ہے۔

۲۳۱- کپڑا - گھوڑا - بیل - گٹو - دینے والا حسب سلسلہ چھڑ لوک اسوتی کار لوک اور
 لازوال شہنشاہ لوک کو پاتا۔

۲۳۲- سواری - چارپائی - بھوتی - دید انھون کا دینے والا حسب سلسلہ استری
 عیش لازوال - برہم لوک کے برابر درجہ پاتا ہے۔

۲۳۳- آن - جل گیتو - زمین - کپڑا - تل - سونا - گھی - ان سب وزن میں دیکھا جائے گا۔

भुक्तातोऽन्यतमस्यान्नममत्यासपराश्रयहम्॥मत्याशुक्ता
 चरेत्काच्छरेतोविरामूत्रमेवच॥२२२॥नाद्याच्छूद्रस्यपक्वान्नं
 विद्वानत्राजिनोद्भिजः॥आददीताममेवास्मादद्यत्तावेकराशि
 कम॥२२३॥ओत्रियस्यकर्दयस्यवरान्यस्यचवार्धुधेः॥मी
 मांसित्वोभयंदेवाःसममन्नमकल्पयन्॥२२४॥तान्यजाय-
 तिराहेत्यमाक्षध्वंचियमंसमम्॥अद्यापूतंवदान्यस्यहममश-
 द्येतरता॥२२५॥अद्येष्टंचपूतंचनित्यंकुर्यादतन्नितः॥अ-
 द्याहतेह्यसयेतेभवतःस्वार्गतिर्धनेः॥२२६॥दानधर्मनियेवे-
 तनित्यमैष्टिकयोक्तिकम्॥परितुष्टेनभावेनयात्रमासाद्यश-
 क्तितः॥२२७॥

۲۲۲ - اہون میں سے کسی کے اُن کو اگر بغیر جانے ہوئے بھوجن کرے تو تین دن آپس
 کرے اور اگر جان کر بھوجن کرے تو کرچہ برت جو آگے کہیں گے اسکو کرے اور بٹا اور برتر
 کے بھوجن میں بھی عید و عید و عید وہی بھوجن کرے۔
 ۲۲۳ - پنہوت جو برہمن ہو وہ شودر کا پکوان برت کرے اگر گھر میں اُن نہ تو ایک یا ت
 کے بھوجن کے موافق کیا اُن لے لینا کچھ مضائقہ نہیں۔
 ۲۲۴ - بھل وید پڑھنے والا نیا اُن بیاج سے اوقات بسر کرے یا لا ان دونوں کے
 اُن کو دیوتاؤں نے برابر کہا ہے۔

۲۲۵ - اُن دیوتاؤں کے پاس برہما جی نے آکر کہا کہ اُن کو برابر کر و شخص فیاض
 کا ان بوجہ ملو نہتی کے پاک ہے اور بھل کا اُن بوجہ بیت نہتی نا پاک ہے۔
 ۲۲۶ - کاہلی چھوڑ کر سمیت کے ساتھ ہمیشہ لگتی۔ اور تیر چاہ و تالاب و بادلی کو کر
 نیک کمائی کا روپیہ لگا کر سمیت کے ساتھ یہ دونوں کام کرے تو لازوال ہو۔
 ۲۲۷ - ۱۔ چھ برہمنوں کو پا کر حسب مقتدرہ سریشی کے ساتھ ہمیشہ لگتی اور کھوان وغیرہ کا دیا
 کرے۔

ش्वبतांशौरیشیکانانंचवेलनिरोजकस्यच॥ रंजकस्यनृशं
 सम्ययस्यचोपपतिर्गृहे॥ २१६॥ मृद्व्यंतियेचोपपतिंस्त्रीनि
 तानांचसर्वशः॥ अनिर्देशंचप्रेतान्नमदुष्टिकरमेवच॥ २१७
 ॥ राजानंतंतेजश्चादतेश्चद्वानंबहवर्चसम्॥ आयुःसुवर्गाका
 रानंयशश्चर्मावकर्त्तिनः॥ २१८॥ कारुकानं प्रजाहन्तियत्तं
 निरोजकस्यच॥ गरानं गरीशकानंचलोकेभ्यःपरिकृत्तनि
 ॥ २१९॥ पूयंचिकित्सकस्यान्नं पुंश्चत्यास्त्वनमिन्द्रियम्॥ वि
 द्वावर्द्धविकस्यान्नं शस्त्रविक्रयिणो मलम्॥ २२०॥ यस्मिन्
 न्येत्वभोज्यान्नाः क्रमशः परिकीर्त्तिताः॥ तेषां त्वगस्थिरोमा
 शिवदन्यन्नं मनीषिणाः॥ २२१॥

۲۱۶- کتہ سے اوقات بسر نہیوالا کلوار۔ دھوبی۔ رنگریز۔ گھٹاک۔ جکے گھر میں رہا
 شوہر ہو۔

۲۱۷- جو دوسرا شوہر ہونے سے رہتی ہو اور جو عورت سے منسوب ہوں جکے عورت
 کا دسواں ہوا ہو انھوں کا ان اور جو ان آسودگی بہنیں تجتایا سب ان بھون ٹکریا۔
 ۲۱۸- راجا۔ شودر۔ چار۔ سنار۔ ان لوگوں کا ان حسب ترتیب سلسلہ پنج برہمن پنج عمر نیکیا
 کو ناش کرتا ہے۔

۲۱۹- وال بنا نہیوالا۔ دھوبی۔ ان دونوں کا ان حسب سلسلہ اولاد و طاقت کو کھوتا ہو اور
 جماعت اور بیٹیا کا ان اس سورگ لوک کو کھوتا ہو جو اور کرموں سے ملنے والا ہو۔
 ۲۲۰- علاج کرنیوالا۔ زنا کار۔ بیابج سے اوقات بسر کرنیوالا۔ تھپتھپانے والا انھوں کا
 ان حسب سلسلہ بیٹ۔ بیج۔ بٹا۔ کھکار کے برابر ہے۔

۲۲۱- جتنے ان کھانیکے لائق بہن ہیں وہ سب حسب مفصلہ بالا کھال اور ہڈی اور بال
 کے برابر ہیں۔ پندرہ توچ کما ہونے والی وغیرہ کھانیکے لائق ہوتی کھانیکے لائق ان جن کرنیوی ہو۔

अभिशास्तस्य बंधस्य पुंश्चल्यारामिकस्य च ॥ सुक्तं पर्युषितं चैव
 नृदस्योच्छिष्टमेव च ॥ २११ ॥ चिकित्सकस्य सृगयोः क्रूरस्यो-
 च्छिष्टभोजितः ॥ उपान्नं सूतिकान्नं च पर्याचान्नमनिर्देशम् ॥
 अनर्चितं वयामां समवीरायाश्च योषितः ॥ द्विघदनं नगर्यन्नं
 पतितान्नमवसुतम् ॥ २१३ ॥ पिशुनान्नतिनोश्चान्नं क्रतुवि-
 क्रयिरास्तथा ॥ शैल्यवतुनवायान्नं कतघ्नस्यान्नमेव च ॥ २१४
 ॥ कर्मारस्य निघारस्य रंगावतारकस्य च ॥ सुवर्णाकर्तुर्वेरास्य
 शस्त्रविक्रयिरास्तथा ॥ २१५ ॥

۲۱۱ - عیب دار - تاملو - زنا کار - پاکندی ان لوگون کا ان شکست باسی شود و کا جو ٹھا -
 ۲۱۲ - علاج کرنیوالا - آفت والا - کھوٹا - جو ٹھا بھوجن کرنے والا - بد کام کرنے والا ان
 بھون کا ان اور وہ ان جوڑھ خانے کے واسطے بنایا گیا ہو اور ایک صف میں کھڑی
 کھانا کھاتے ہوں اور کوئی آدمی توہین کی غرض سے سب سے پہلے بھوجن کی سماعت کی جن
 کرے اس وقت کا ان اور سوکٹ لے گا ان -
 ۲۱۳ - اور وہ ان جو ٹھٹھ واجب لتظیم کو بیفد می کے ساتھ دیا گیا ہو اور وہ انسج و پوتا
 وغیرہ کے لئے بنین بنایا گیا ہو اور پت اور پتیر نہ رکھے والی استری اور دشمن اور شہر سے
 نکالا ہو ان لوگون کا ان اور وہ ان جیسے چھینک پڑی ہو -
 ۲۱۴ - چٹل جوڑیگیہ کر کے پھر اسکو چنے والا نٹ - درسی - حسان نہ ماننے والا -
 ۲۱۵ - تو ہار نہ کھاؤ - نٹ - سوائے گانیو اسے کے ان دونوں کے پیشہ سے اوقات
 بسر کرنیوالا - سنار - بسکھور - ہتھیار نہ لینے والا -

۱ - سینہ وہ ان جو لیز لانے کسی خیر کے محض سبب گزرنے ایام کے کھٹا ہو گیا ہو -

۲ - جکا ذکر دسویں اور عیالے میں ہے -

۲۱۰۔ چور نکاحیوالا بڑھئی۔ بیابان سے جینے والا جسکی نگہیہ ابھی سماپت نہیں ہوئی کہیں قبیح کی پابجولان۔

अलिङ्गीलिङ्गिवेधेरायोवृत्तिमुपजीवति ॥ सलिङ्गिनांहरत्ये-
नस्तिर्यग्योनौचजायते ॥ २०० ॥ परकीयनिधानेषुनस्नायाच्च
कदाचन ॥ निधानकर्तुःस्नात्वातुदुष्कृतांशेनलिप्यते ॥ २०१ ॥
यानशय्यासनान्यस्यकूपोद्यानगृहाराणिच ॥ अदत्तान्युपभुं-
जानरुनसःस्यात्तुरीयभाक् ॥ २०२ ॥ नदीषुदेवरवातेषुतडागै-
षुसरःसुच ॥ स्नानंसमाचरेन्नित्यंगर्तप्रस्त्रवरीषुच ॥ २०३ ॥
यमान्सेवेतसततंननित्यंनियमाश्रुधः ॥ यमान्यतत्यकुर्वी-
राोनियमान्केवलान्भजन् ॥ २०४ ॥

۳۰۰۔ زبرخیم چاری بہین ہے اور ہریم چاری کے بھیچین سے رہتا ہے سو ہریم چاری کے پاپ کو پاتا ہے اور کھڑے کھڑے کا جہنم پاتا ہے اسی طرح سب آئندہ دالون کو چانتا۔

۲۰۱۔ دوسرے کا کھدایا ہو اکتوان یا تالاب وغیرہ جبکہ اکثر گھوٹا ہو زمین انسان کے
 اس میں انسان کرنے سے کھدائے والے کے پاس کو پانا ہے

سواری۔ چار پائی۔ کنواں۔ پانچ۔ مکان۔ یہ سب جگے ہوں اسکی اجارت
بغیر جو شخص استعمال کرتا ہے وہ جسکے یہ سب ہوں اس کے پاپ کے چوٹھائی
حصہ کو پاتا ہے۔

۲۰۴۔ ندی۔ دیوتاؤں کا کھنڈا یا ہوانا لاپ اور ستر اور جیوتا اور گڑھا ان سب میں
اسنان کرے۔

۳۰۴۔ ایم اور نیم۔ جبکہ بیان آگے آدیا گشتین ایم کو ہر روز اختیار کرے اور نیم کو ہفتین ایم کو چھوڑ کر صرف نیم کو اختیار کرنے سے نیت ہو جاتا ہے۔

۴۰۰۰۰ روپے ہفتہ لمبا چوڑا ہو۔

۶۔ آمین یہ خاک ہو گئی ہے کہ دوسرے کا کھدایا ہوا گنواں کتاب وغیرہ میں ہنسا کرنا منع ہے تو جواب یہ ہے کہ اپنا کھدایا ہوا اور دوسرا کیوں کھدایا گیا ہو تو کچھ مضافات نہیں۔

धर्मध्वजीसदालुब्धश्चभिको लोकदम्भकः॥ वैडालव्रतिको
 ज्ञेयो हिंस्रः सर्वाभिसन्धकः॥ १६१॥ अधोदृष्टिर्नैष्कृतिकः स्या-
 र्थसाधनतत्परः॥ शठो मिथ्या विनीतश्च वक्रतचरो द्विजः॥ १६२॥
 ये वक्रतिनो विप्रा ये च मार्जारलिंगिनः॥ ते पतन्त्यन्धतामि-
 खे तेन पापेन कर्मणा॥ १६३॥ न धर्मस्यापदेशेन पापं कृत्वा
 व्रतं चरेत्॥ व्रतेन पापं प्रच्छाद्य कुर्वन्त्री मूढदम्भनम्॥ १६४॥
 ॥ प्रेत्येह चेदशा विप्रा गार्ह्यन्ते ब्रह्मवादिभिः॥ छद्मनाचरितं य-
 च व्रतं रसांसि गच्छति॥ १६५॥

۱۹۵- دھرم دھوجی لو بھی بہانہ سے چلنے والا ٹھکنے والا۔ ماریوالا۔ سب کی نیند اگرنیوالا
 ایسا آدمی بیڈال بڑبک کہلاتا ہے۔

۱۹۶- پنخ می دیکھنے والا ٹھکر نزدیکی اپنے مطلب میں مستغیث معافی سے رہنے والا
 جھوٹی ملامت کرنیوالا ایسا آدمی بک بڑبک کہلاتا ہے۔

۱۹۷- بک بڑبک اور بیڈال بڑبک یہ دونوں اپنے اپنے اندھنا مستر نام نرک میں
 جاتے ہیں۔

۱۹۸- پاپ کر کے دھرم کے بہانہ سے برت کو ٹکڑے یعنی پاپ تو کرتا ہے اور ہستری
 اور شوہر کو دیکھنے دیکھنا ہے کہ میں دھرم کرتا ہوں۔

۱۹۹- وید پڑھنے والے پرش لوک اور پرلوک میں ایسے برابروں کو برا کہتے ہیں کہ
 کابرت ریشٹوں کے پاس جاتا ہے۔

× دھرم دھوجی اسکو کہتے ہیں جو بت آدمیوں کو دکھلا کر دھرم کرتا ہو۔

× بری کی طرح ہے برت مہلی۔

× بگلا کی طرح ہے برت مہلی۔

हिरण्यमायुरत्नचभूर्गोश्चाप्योषतस्तनुम् ॥ अश्वसुस्त्वचं
वासोद्युतं तेजस्तिलाः प्रजाः ॥ १८६ ॥ अतयास्त्वनधीयानः प्र-
तिग्रहरुचिर्विजः ॥ अभ्यस्यश्मज्ञवेनैव सहजेनैव मज्जति ॥
१८७ ॥ तस्माद्विद्वान्विभियाद्यस्मात्तस्मात्प्रतिग्रहात् ॥ स्व-
ल्पकेनाप्यविद्वान्विपंके गौरिव सीरति ॥ १८८ ॥ न वार्धपि
प्रयच्छेत्तु वेडालव्रतिके द्विजे ॥ न वक्रव्रतिके विप्रेनावेदवि-
दि धर्मवित् ॥ १८९ ॥ त्रिष्वप्येतेषु दत्तं हि विधिनाप्यर्जितं धनं
॥ दातुर्भवत्यनार्थाय परत्रादातुश्च ॥ १९० ॥ यथाज्ञवेनोप-
लेन निमज्जत्युदकोत्तरम् ॥ तथानिमज्जतोऽधस्तादज्ञौ दातुः प्र-
तीच्छको ॥ १९१ ॥

۱۸۹- سنو اوردان کا دان لینے سے سورکھ برہمن کی عمر کم ہو جاتی ہے اس طرح گنہ اور زمین
جسم کو گھوڑا اٹکھون کو کپڑا چڑے کو گھی تیج کو تل سپتر دن کو نقصان پہنچاتا ہے۔

۱۹۰- جو برہمن تپ اور وید ابھیاس نہیں کرتا ہے اور دان لیا کرتا ہے وہ مع اس دن
دینے والے کے ڈوب جاتا ہے جیسے پانی کی گھاس کی ناؤ۔

۱۹۱- اس طرح سورکھ برہمن گھوڑا دان لینے سے بھی ڈوبتا ہے وہ نہ جھڑک چڑھیں کہ
تکلیف اٹھاتی ہے اس طرح وہ بھی تکلیف اٹھاتا ہے۔

۱۹۲- پتہ بال بڑنک بہت بڑنک سورکھ ان تینوں برہمنوں کو دھرم جاننے والا آدمی
پانی تک ڈبوئے۔

۱۹۳- ہر پوزوک پیدا کئے ہوئے دھن کو ان تینوں کو دینے سے پڑوک میں کچھ فائدہ نہیں

۱۹۴- جھڑک چڑھنے کی ناؤ پر چڑھ کر آدمی پانی میں ڈوب جاتا ہے اس طرح سورکھ برہمن کو دان
دینے والا اور لینے والا دونوں ترک میں ڈوبتے ہیں۔

۸۔ اسکی تشریح اشوک ۱۹۵، ۱۹۶ میں لکھی ہے۔

नया शिष्यादचपलो नने चपलोऽनृजुः ॥ नस्याद्याकपल-
श्चैव न पश्यो ह कर्मधीः ॥ १७७ ॥ येनास्य पितरो याता येन याता-
यिता महाः ॥ तेन यायात्स तां मार्गं तेन गच्छन्न रिष्यते ॥ १७८ ॥
ऋत्विक्पुरोहिताचार्येमा तुलातिथि संश्रितेः ॥ बालवद्वा तु-
र्ये वैद्यैर्जाति सम्वन्धि वान्धवैः ॥ १७९ ॥ माता पितृभ्यां यामीभि-
र्भात्रा पुत्रेण भार्यया ॥ दुहित्रा दासवर्गेण विवादन स माचरे-
त् ॥ १८० ॥ सेतैर्विवादा न्मृत्युज्य सर्वयापैः प्रमुच्यते ॥ रुमिर्जि-
तैश्च जयति सर्वौ लोकानि मान्मृही ॥ १८१ ॥ आचार्यो ब्रह्म-
लोकेशः प्राजापत्ये पिता प्रभुः ॥ अतिथिस्त्विन्द्रलोकेशो दे-
वलोकस्य च त्विजः ॥ १८२ ॥

۱۷۸۔ ہاتھ پاؤں آنکھ زبان سے شوخی نہ کرے پیر مہار ہے کسی کی بُرائی میں نہ ہے۔
 ۱۷۹۔ بہت پرکار کا شاستر ارغھ سنبھو سنے پیر تپا ہے آد کر کے سنگر بیت جوشا ستر ارغھ ہے
 اسی کا شٹھان کرے اُس کر کے ادھرم سے مارا بہین جانا۔
 ۱۸۰۔ رتوک۔ پردھت۔ اچارج۔ مایا اتھ۔ آشرت۔ بال۔ بردھ۔ اتر۔ پیدجا۔ سمندی۔ یانر۔
 ۱۸۱۔ جام۔ مانا۔ پنا۔ بھالی۔ پتر۔ استری۔ مٹی۔ داس لوگ بھون کے ساتھ لڑائی نہ کرے۔
 ۱۸۲۔ بھون سے لڑائی نہ کرے سے سب پاؤں چھوٹ جانا ہے ان سبھوں ہارنے سے گرتھ
 آدمی سب لوگ جیتنا ہے۔

۱۸۲۔ آچلج بریم لوک سوای ہر اور تپا پر چا پت لوک کا اتھھ اندر لوک اور تر لوک دیو لوک کا سوای ہے۔

تہا مکیش واسے

۱۰ سالہ لڑکے۔

۱۰ استری کشیں والے۔

دین اور شوق و غیرہ۔

ناہرمشچریتو لokesatya:फलतिगौरिव॥ शनैरावर्तनानस्तु
कर्तुमुलानिहन्ति॥ १७२॥ यदिनात्मनिपुत्रेषुनचेत्पुत्रेषुन-
मयु॥ नत्वेवतुक्तोऽधर्मःकर्तुर्मवतिनिष्कलः॥ १७३॥ अध-
मैरौधतेतावत्ततोभद्रासिपश्यति॥ ततःसपत्न्याज्जयतिस-
मूलस्तुविनश्यति॥ १७४॥ सत्यधर्मार्थवृत्तेषुशौचेचैवारमेत्त-
रा॥ शिष्यांश्चशिष्याद्धर्मरावाग्वाहूरसंयतः॥ १७५॥ परि-
त्यजेदर्थकामौयोस्यातांधर्मवर्जितौ॥ धर्मचाप्यसुरबोर्क-
लोकविक्रयमेवच॥ १७६॥

۱۶۲- ادھرم جلدی نہیں پھل دیتا جیسے زمین بیج بونے سے جلدی پھل نہیں
دیتی کچھ دنوں بعد پھل دیتی ہے۔

۱۶۳- ادھرم کا پھل ادھرم کرنے والے کو نہیں ملتا تو اُسکے بیٹے کو ملتا ہے۔ اگر
بیٹے کو نہ ہوا تو اسکے پوتے کو ملتا ہے اگر پوتے کو بھی نہ ملا تو نانی کو ملتا ہے حاصل

یہ کہ ادھرم بے پھلے نہیں رہتا۔

۱۶۴- ادھرم کرنے والا پہلے ادھرم کرنے سے بڑھتا ہے پھر کلیان پاتا ہے پھر شمن
کو جیتتا ہے آخر کو جڑ بننا دے سے مٹ جاتا ہے۔

۱۶۵- جھلے لوگوں کا اچارست ادھرم پوترتا ہے ان سب میں ہمیشہ مصروف رہے
استری۔ پوتر۔ داس۔ جیلہ۔ ان سب کو راہ راستی بتا دے بلانی بائہ اور کاسنم

کرے۔

۱۶۶- ادھرم سے برکت جو ارتھ کام ہے اوسکا تیاگ کرنا دھرم ہے مگر لوک ریت
کے خلاف ہے اور جو زمانہ آئندہ میں سکھ دینے والا نہیں ہے اسکو بھی تیاگ

کرنا چاہیے۔

x بلانی کاسنم یہ ہے کہ پڑے۔ بائہ کاسنم یہ کہ بائہ کے سب کسی کو گلیں نہ پونچا سے اور کاسنم یہ کہ تھوڑا بہت جو کچھ ملی اسی کو لے کر

अयुध्यमानस्योत्पाद्यब्राह्मरास्यासृगंगतः॥ दुःखं सुमहदा
 मोतिप्रेत्याप्राज्ञतयानरः॥ १६७॥ शोशितं यावतः पांसून् संशु-
 क्तातिमहीतलात्॥ तावतोऽद्यानमुत्रान्यैः शोशितोत्पादको
 ऽद्यते॥ १६८॥ न कदाचिद्धिजेतस्माद्विद्वानवगुरुरपि॥ न ताड्ये
 चरोनापिन गात्रात्त्रावयेदसृक्॥ १६९॥ अधार्मिको न रोधो
 हियस्य चाप्यनृतं धनम्॥ हिंसारतश्च योनित्यनेहासौ सुखमे-
 धते॥ १७०॥ न सीदन्नपि धर्मरा मनोधर्मनिवेशयेत्॥ अधा-
 र्मिकाराणां पापानामाशुपश्यन्वियर्घ्यम्॥ १७१॥

۱۶۷- جو براہمن لڑائی نہیں کرتا ہے۔ اس کے بدن سے خون نکالنے والا اپنی عقل
 سے پر لوک میں بڑا دکھ پاتا ہے۔

۱۶۸- جو براہمن لڑائی نہیں کرتا اس کے بدن سے ہتھیار سے خون نکالنے والا پر لوک میں
 نہا دکھ پاتا ہے ہتھیار وغیرہ سے براہمن کے بدن سے جو خون نکل کر زمین پر گرتا ہے اس
 خون میں جتنے ذرے زمین کے آلودہ ہو جاتے ہیں اتنے برس تک پر لوک
 میں وہ خون نکالنے والا کٹہ و سیارہ وغیرہ سے بھوجن کیا جاتا ہے۔

۱۶۹- اس لیے عقلمند آدمی کبھی براہمن کو مارنے کے واسطے ہتھیار نہ اٹھاوے
 بلکہ تنکے سے بھی نہ مارے۔ اور نہ جسم سے خون نکالے۔

۱۷۰- جو ادھرمی یا نا پاک دولت والے یا ہر روز جان مارنے والے ہیں وہ اس
 لوک میں شکم نہیں پاتے۔

۱۷۱- ادھرمی اور پاپیوں کے دھن وغیرہ کو جلد ناش ہوتے
 ہوئے دیکھ کر اور ادھرم میں تکلیف پانے پر بھی ادھرم میں مصروف
 ہوتے۔

यत्कर्मकुर्वतोऽस्यस्यात्परितोषोऽन्तरात्मनः ॥ तत्प्रयत्नेन
कुर्वीतविपरीतं तु वर्जयेत् ॥ १६१ ॥ आचार्यं च प्रवक्तारं पित-
रं मातरं गुरुम् ॥ न हिंस्याद्वाह्मणान् गान्धर्वसर्वान् चैव तयस्विनः
॥ १६२ ॥ नास्ति वयं वेदनिन्दां च देवतानां च कुत्सनम् ॥ द्वेषं दंष्ट्रां
च मानं च क्रोधं तैस्त्रयं च वर्जयेत् ॥ १६३ ॥ परस्य दण्डं नोद्य चे-
त्कुक्षौ नैव निपातयेत् ॥ अन्यत्र पुत्राच्छिव्याद्वा शिष्टं धृता-
डयेत्तु तो ॥ १६४ ॥ ब्राह्मणाया वगुर्येव हि जातिर्वत काम्यया
॥ शतं वर्षाणि तामिस्तेन स्केपरिवर्त्तते ॥ १६५ ॥ ताडयित्वा-
त्यो नापि संस्मान्मतिपूर्वकम् ॥ एकविंशतिमाजातीः या-
पयो निबुजायते ॥ १६६ ॥

۱۶۱- جس کرم کے کرنے سے اپنے دل کو اطمینان ہو اسکو کرے اور اگر بالعکس جو تو کرے

۱۶۲- آجارج دیدکار تھ پڑھائیوالا باپ مان گردو برہمن گنو- تیسوی- نہیں سے کسی کو نہ مارے۔

۱۶۳- ناسٹیک پن- دید اور دیوتا کی برائی کرنا دشمنی- پاکھنڈ- غرور- غصہ- تند مزاجی
ان سب کو نہ کرے۔

۱۶۴- غصہ سے کیسے مارنے کو ڈرانا پھیکے اور کسی کو ضرب جسمانی پہنچا دے مگر بیٹا
اور چیلہ کو تعلیم کیو اسطے جسم پر ضرب دینا ناموزون نہیں ہے۔

۱۶۵- برہمن کشتری ویشیہ اگر برہمن کو مار ڈالنے کی نیت سے ہتھیار اٹھا دیں اور
ماین مین تو بھی تاسیر نام نرک میں تو برس تک رہتے ہیں۔

۱۶۶- اگر غصہ کر کے قصداً ایک تنکے سے بھی مارے تو اسیں جہنم تک پہنچیں یوں مین
دیجئے کتنے دگر معا وغیرہ کے جسم میں پیدا ہوتا ہے۔

× پیچھے یگیو پوت کرانے والا۔

شुतिमृत्युरितं सम्यं निवृद्धं स्वेषु कर्मसु ॥ धर्ममूलं निवेवेत स-
दाचारमतन्द्रितः ॥ १५५ ॥ आचारात्तमते ह्यायुराचारोपि-
ताः प्रजाः ॥ आचाराद्धनमक्षय्यमाचारो हन्यत लक्षणां ॥ १५६ ॥
॥ दुराचारो हि पुरुषो लोके भवति निन्दितः ॥ दुरचभागी च स-
ततं व्याधितोऽत्यायुरेव च ॥ १५७ ॥ सर्वलक्षणाहीनोऽपि-
यः सदाचारवान्नरः ॥ अहधानोऽनस्यश्च शतं वर्षाणि जी-
वती ॥ १५८ ॥ यद्यत्परवशं कर्मात्तत्तद्यत्नेन वर्जयेत् ॥ यद्यस-
त्त्ववशं तस्यात्तत्तत्त्वेन वेतयत्नतः ॥ सर्वपरवशं दुःखं सर्वमा-
त्मवशं सुखम् ॥ एतद्विद्यात्समासेन लक्षणां सुखदुःखयोः
॥ १६० ॥

۱۵۵- ویداور شاستر کے موافق جو اچھے لوگوں کا آچار ہے وہ عین دھرم ہو گا ہلی چھوڑ
اُسی آچار پر ہمیشہ چلے۔

۱۵۶- اگر واقعی اولاد دلازوال دولت یہ سب آچار سے ملتے ہیں اور جو عیوب نتیجہ بد
دینے والے جسم میں ہوں ان کو آچار دور کرنا ہے۔

۱۵۷- در آچاری آدمی دنیا میں بدنام ہونا ہے اور ہمیشہ رنج و مصیبت میں رہ کر تھوڑی
دن جیتا ہے۔

۱۵۸- جبین کوئی لکشن نہیں ہے اور کسی کی بُرائی نہیں کرتا اور شر دھا اور اچھے لوگوں
کی طرح آچار رکھتا ہے وہ تو ہر سن تک جیتا ہے۔

۱۵۹- جو کرم دوسرے کے اختیار میں آسکو ترک کرے اور جو اپنے اختیار میں ہے
اسکا سیون کرے۔

۱۶۰- جو کرم برائے بس ہیں ہے وہ دکھ ہے اور جو کرم اپنے بس ہیں ہے وہ سکھ ہے
سکھ دکھ کا یہ لکشن ہے۔

پौर्वیکींसंस्मراجتاतिं ब्रह्मैवाभ्यसते पुनः ॥ ब्रह्माभ्यासेन च
 जस्य मनसं सुखमश्नुते ॥ १४६ ॥ सावित्राञ्जानि होमांश्च कु-
 र्यात्पर्वसु नित्यशः ॥ पितृश्चैवाधकास्वर्चं नित्यमन्वहका-
 सुच ॥ १४७ ॥ दूरादावसथान् भूत्रं दूरात्यादावसेचनम् ॥ उच्छि-
 द्धान्निधेकं च दूरादेव समाचरेत् ॥ १४८ ॥ मैत्रं प्रसाधनं स्नानं
 दक्षधावनमंजनम् ॥ पूर्वाह्न एव कुर्वीत देवतानां च पूजनम् ॥
 १४९ ॥ देवतान्यपि गच्छेत्तु धार्मिकाश्च द्विजोत्तमान् ॥ ईश्व-
 रं चैव रक्षार्थं गुरुत्वेन च यर्वसु ॥ १५० ॥ अभिवाद्ये हृद्वांश्च र-
 द्याश्चैवासनं स्वकम् ॥ कृतांजलि रुयासीत गच्छतः शुचतोऽ-
 न्वियात् ॥ १५१ ॥

- ۱۴۹۔ اگلی جنم کی ذرات کو یاد کرتے ہوئے پھر دیدہی کا استعمال کرتا رہے ویر کے
 استعمال سے ہمیشہ سکھ ملتا ہے۔
 ۱۵۰۔ پررب میں ہر روز گائتری دیوتا کا ہون اور ارٹھ تراس کے لئے سانت ہوں کہ
 کہے شیکا آؤ شیکا میں پتروں کی ہر روز پوجا کرے۔
 ۱۵۱۔ اگر کے گرہ سے دور دیش میں موتہ۔ پاؤ پر چھالیں۔ جوٹھا آن۔ سہج۔ ان سب کو
 تیاک کرے۔
 ۱۵۲۔ بساتیاگ (یعنی رفع براز) سنگار وغیرہ آستان۔ داتون۔ انجن۔ دیوتا کا پون
 ان سب کاموں کو قبل و وہر کرنا چاہئے۔
 ۱۵۳۔ رکش کے واسطے دیوتا۔ دھارک۔ برہمن۔ گرو۔ راجا۔ ان سب کا درشن پر
 میں کرے۔
 ۱۵۴۔ اگر کوئی بڑا بوڑھا اپنے گھر میں آوے تو اسکو پرنام کر کے اپنا آسن بیٹھنے
 کہو اسے اور ہاتھ جوڑ کر سامنے کھڑا رہے جب چلنے لگے تو آپ بھی پیچھے ہو کر چلے۔

स्थष्टैतानशुचिर्नित्यमग्निः प्राणानुपस्थशेत ॥ गात्राणि चैव
सर्वाणि नाभिं पारितलेन ह ॥ १४३ ॥ अनातुरः स्वानि स्वानि
न स्पृशेदनिमित्ततः ॥ रोमाणि च रहस्यानि सर्वाण्येव विवर्ज-
येत् ॥ १४४ ॥ मंगलाचारयुक्तः स्यात्प्रयतात्मा जितेन्द्रियः ॥ ज-
येच्च जुहुयाच्चैव नित्यमग्निमतद्वितः ॥ १४५ ॥ मंगलाचारयु-
क्तानां नित्यं च प्रयतात्मनाम् ॥ जपतां जुहुतां चैव विनिषातो
न विद्यते ॥ १४६ ॥ वेदमेवाभ्यसेन्नित्यं यथाकालमतद्वितः
॥ तं ह्यस्याहः परं धर्ममुपधर्मोऽन्यउच्यते ॥ १४७ ॥ वेदाभ्या-
सेन सततं शौचेन तपसे च ॥ अशोहेराचमूतानां जातिं स्म-
रति योर्विकीम् ॥ १४८ ॥

۱۳۳۔ جنکو چھونا نہیں کیا ہے اگر انکو چھوے تو آچھن کر کے ہاتھ میں پانی رکھ کر
اس پانی سے ناک کان غیر سب اندریوں کو اور سب بدن کو چھوے اور پھر ہتھیلی سے چھوے۔
۱۳۴۔ آتر جو نہیں ہے، وہ بغیر ضرورت اپنی اندریوں کو نہ چھوے اور پوشیدہ مقامات کے
بال یعنی نعل بمقام پاخانہ و پیشاب وغیرہ کے بال بھی نہ چھوے۔
۱۳۵۔ خوش فہم داند و باہر سے پاک صاف رکھ کر نفس پر قادر ہو کر چھپھون کرے
کاہلی نہ کرے۔

۱۳۶۔ جو شخص ان سب کمروں کو کرتا ہے اور شستر کی ریت پر چلتا ہو اور کا دیوتا اور
آدمی کے نقصان نہیں کر سکتے۔
۱۳۷۔ اس چھوڑ کر اپنے وقت پر ہر روز وید کا استعمال کرے یہ پریم دھرم ہے اور
سب آپ دھرم ہے۔

۱۳۸۔ ہر روز وید کا اچھیا س پوتر ماتپ چھون پڑ دیا کرنا یہ سب کرنے سے اگلی جنم کی
ذات یاد آتی ہے۔

۱۴۲۔ برہمہن جو شے منہ پر کرا ہے، ہاتھوں سے براہمن و گنوا گن کو نہ چھوئے اور جو اترتے
اس پوتہ میں ہے وہ چاند سورج و ستاروں کو نہ دیکھے۔

मध्यदिनेऽर्द्धरात्रे च श्राद्धं भुक्त्वा च सामिषम् ॥ सन्ध्ययोरुभयो-
 रश्वेन सेवेन चतुष्षयम् ॥ १३१ ॥ उद्धर्तनमपस्नानं विरासूत्रैरक्त-
 मेव च ॥ श्रद्धा निष्कृतवात्तानि नाधितिष्ठेत्तु कामतः ॥ १३२ ॥ वै-
 श्यां नोपसेवेत महायं चैव वैरिणाः ॥ अधार्मिकं तस्करं च पर-
 स्त्रैव च योयितम् ॥ १३३ ॥ नहीदृशमना युष्यं लोके किंचन वि-
 द्यते ॥ यादृशं पुरुषस्येह परदारोपसेवनम् ॥ १३४ ॥ सत्रियं चै-
 व सार्धं च ब्राह्मणां च बह्वश्रुतम् ॥ नावमन्येत वै भूषाः कृशानपि
 कराचन ॥ १३५ ॥ सतत्त्वयं हि पुरुषं निर्दहेद्वमानितम् ॥ तस्मा-
 देतत्त्वयं नित्यं नावमन्येत बुद्धिमान् ॥ १३६ ॥

۱۳۱ دن کو وقت دوپہر اور آدھی رات کو اور صبح و شام کی وقت اور شرادھ کا مہینہ
 بھوجن کر کے چوراہے میں بنجائے۔

۱۳۲۔ اوٹن کی لہجی پر استنان کرنے سے جو پانی زمین پر گرے اس پر غلیظ اور شیب
 و لطفہ دکھکھار دھوک دے ان سب پر قصداً نہ ٹھہرے۔

۱۳۳۔ دشمن اور دشمن کا دوست اور ادھری اور چور اور پرانی عورت ان سب کی
 صحبت میں نہ رہے۔

۱۳۴۔ پرانی عورت کی صحبت کے برابر دوسری کوئی چیز غم کی گھٹائے والی مرد کو
 مین ہے۔

۱۳۵۔ جو شخص سب چیزوں میں ترقی پائے کی آرزو رکھتا ہو وہ کشتری اور سانپ اور
 بہت پرستے ہوئے برہمن اگرچہ ضعیف و لاعلم بھی ہوں تو بھی انھوں کی بقیدری
 نہ کرے۔

۱۳۶۔ یہ تینوں توہین پانے سے ناش کرتے ہیں اس لیے عقلمند آدمی ان تینوں کی
 بقیدری نہ کرے۔

सतदिदन्तोविद्वासस्वयीनिष्कार्यमन्वहम् ॥ क्रमतःपूर्वमभ्य
स्ययश्चाद्वेदमधीयते ॥ १२५ ॥ पशुमण्डूकमार्जारश्चसर्पनकु
लासुभिः ॥ अन्तरागमनेविद्यादनध्यायमहर्निशम् ॥ १२६ ॥
द्वावेववर्जयेन्नित्यमनध्यायीप्रयत्नतः ॥ स्वाध्यायभूमिंचाशु
द्धामात्मानंचाशुचिंद्विजः ॥ १२७ ॥ अमावस्यामष्टमीचयौर्गा
मासींचतुर्दशीम् ॥ ब्रह्मचारीभवेन्नित्यमष्टौस्नातकोद्वि-
जः ॥ १२८ ॥ नस्नानमाचरेद्ब्रह्मनातुरेनमहानिशि ॥ नवा-
सोभिःसहाजस्वनाविज्ञातेजलाशये ॥ १२९ ॥ देवतानांशु-
राजःस्नातकाचार्ययोस्तथा ॥ नाक्रामेत्कामतश्चायांवधु-
रोदीक्षितस्यच ॥ १३० ॥

۱۲۵- اس بات کے جاننے والے جو پرش من وہ ہر روز تینوں دیر دن کا سار بھوت
اؤنگار- بیابرت- گائتری- ان تینوں کو سلسلہ سے پڑھ کر پچھلے دیر کو پڑھتے ہیں۔
۱۲۶- جو پایہ- بینڈک- بلی- کتا- سانپ- نیولا- چوہا- اینین سے کوئی ایک اگر
گرد اور چلیے کے پیچ سے نکل جائے تو ایک رات انہیں صیائے کرنا۔
۱۲۷- پڑھنے کی زمین یا اپنا جسم ناپاک ہو تو بھی نہ پڑھے ان دونوں انہیں صیائے کرنا
جتن سے تیاگ کرے

۱۲۸- سنگت میں نہ کال میں بھی اماں اٹھائی اور پورے ماشی خیروشی ان تینوں میں ستری ہو کر کرے
۱۲۹- بھون کے ہو اور آتر ہو تو اسنان کرے کپڑا پہنے ہوئے بھی بار بار اسنان کرے آدھی
رات کو اور جو محل کا استھان چاہا ہو اس میں اسنان کرے۔
۱۳۰- دھوتا- گرد- راجہ- سنگت- اچانچ- کپڑا- برتن- جو شخص گئیے کرنے کو ہے
انہوں میں سے کسی کی چھایا میں ملنا کھڑا کرنا ہے۔

उपाकर्मणि चोत्सर्गे चिराजने यथांस्तुतम् ॥ अथ का सुत्वहोरा-
 त्रमृत्वन्ता सुचरात्रिषु ॥ ११६ ॥ नाधीयीताश्वमारुढोनह-
 नचहस्तिनम् ॥ न नावन्नाखरं नो हने रिरास्थोनयानगः ॥ ११७ ॥
 ॥ न विवादेन कलहेन सेनायां न संगरे ॥ न भुक्तमात्रे नाजीरो न व-
 मित्वानस्तके ॥ ११८ ॥ अतिथिं चाननुज्ञाप्य मारुते वाति वा-
 भृशम् ॥ रुधिरे च सुते गात्राच्छस्त्रे राचयरीसते ॥ ११९ ॥ सा-
 मध्वना हृग्यजुषीनाधीयीत कराचन ॥ वेदस्याधीत्यवाप्यंत-
 मारणाय कमधीत्यच ॥ १२० ॥ ऋग्वेरो देवदेवत्यो यजुर्वेद-
 स्तुमानुषः ॥ सामवेदः स्मृतः यिज्यत्तस्मान्नस्या शुचिर्धनि-
 ॥ १२१ ॥

۱۱۹ - آپا کرن مین اور اسکر گدید اور پیرا تراشکا مین ایک دن رات اور رت کے
 انت مین ایک دن رات اندھیا کرنا چاہئے۔
 ۱۲۰ - گھوڑا - ہاتھی - درخت - ناؤ - گدھا - اونٹ - اوسرزمین - سواری - انھون پر
 بیٹھکر دید کو نہ ٹہرے۔
 ۱۲۱ - لڑائی - جھگڑا - رنج - فوج کی لڑائی - بڑھنی - قے - ان سب مین بھی اندھیا
 جانتا اور مہو جن کر کے بھی نہ ٹہرنا۔
 ۱۲۲ - بہت ہوا چلنے مین بدن سے خون نکلنے مین ہتھار سے گھاؤ لگنے مین تنہا کی
 بلامرہی مین بھی اندھیا سے جانتا۔
 ۱۲۳ - سام دید کو سنکر گدید اور پیر دید کو نہ ٹہرے دید کا انت اور نیک پر کرن
 ان دونوں مین سے کسی کو پیر مکر اندھیا سے کرے۔
 ۱۲۴ - ارگ دید کے دیوتا دیو مین بکر دید کے دیوتا سنیشیہ مین شام دید کے دیوتا پتر
 مین اس سام دید کا شبد پوتر نہیں ہے۔

नित्यानध्यायस्यस्यात्प्रामेयुनगरेषु च॥ धर्मनैपुण्यका-
मानांप्रतिगन्धेचसर्वदा॥ १०७॥ अन्तर्गतशवेप्रामेयबलस्य
चसन्निधौ॥ अनध्यायोरुद्यमानेसमवायेजनस्यच॥ १०८॥
उदकेमध्यरात्रेचविरामूत्रस्यविसर्जने॥ उच्छिष्टः श्राद्धभुक्
घैवमनसापिनचिन्तयेत्॥ १०९॥ प्रतिगृह्यद्विजोविद्वाने-
कोद्दिष्टस्यकेतनम्॥ अहन्नकीर्तयेद्ब्रह्मराशोराहोश्चसू-
तके॥ ११०॥ यावदेकाचुद्दिष्टस्यगन्धोलेपश्चतिष्ठति॥ वि-
प्रस्यविदुषोदेहेतावद्ब्रह्मन्नकीर्तयेत्॥ १११॥ शयानः प्रो-
दपादश्चकत्वाचेवावसविधिकाम्॥ नाधीधीतामिवजग-
ध्वासूतकान्नाद्यमेवच॥ ११२॥

۱۰۷- گانون اور شہر میں تو ہر روز اندھیاء ہے اور دگندہ مین بھی اندھیاء کرنا چاہئے
پورا دھرم کرنے کی کامتا دلے کو۔

۱۰۸- جب تک گانون میں مردہ پڑا رہے تب تک ابھری کے پاس اور رونے میں
اور دوسرے کام کے لئے بہت آدمیوں کے ملاپ میں اندھیاء جاتا۔

۱۰۹- پانی میں اور آدھی رات کو پاخانہ پیشاب کرتے وقت دل میں بھی وید کا
خیال نہ لاوے اور جو کچھ منہ اور شرادھ میں بھوجن کر کے بھی کونہ پڑھے۔

۱۱۰- ایکوڈشت، شرادھ کا نیوتا لیکر نیوتا کے دن سے تین دن تک وید کونہ پڑھے
اور راجا کے سوتک میں اور چندر سورج کے گزرن میں بھی۔

۱۱۱- جب تک ایکوڈشت شرادھ کی بوباس بدن میں رہے تب تک وید کونہ پڑھے۔

۱۱۲- مانس اور سوتک کا ان دونوں میں سے کسی ایک کو بھوجن کر کے اور سوتے
ہوئے اور آسن پر پانون رکھے ہوئے اور دونوں ہستون کو تپچے کیے ہوئے وید
کونہ پڑھے۔

इमान्नित्यमनध्यायानधीयानोविवर्जयेत्॥ अध्यायनं च कु-
र्वाणः शिष्याणां विधिपूर्वकम्॥ १०१॥ करोति शिष्याः नित्यं शिष्या-
दिवायांसु सुहने॥ एतौ वर्ग्यस्वनध्यायावध्यायज्ञाः प्रचक्ष-
ते॥ १०२॥ विद्युत्तनितवर्षेयुमहोत्कानां च संज्ञवे॥ आका-
लिकमनध्यायमेतेषु मनुरब्रवीत्॥ १०३॥ एतां स्त्वभ्युदितां वि-
द्याद्यदा प्रादुष्कताग्निषु॥ तदा विद्यादनध्यायमन्तौ चाभ्रद-
र्शने॥ १०४॥ निर्घाते भूमिचलने ज्योतिषां चोपसर्जने॥ एता-
नां कालिकान् विद्यादनध्यायन्तावपि॥ १०५॥ प्रादुष्कतेऽप्य-
ग्निषु त्विद्युत्तनितनिःस्वने॥ स ज्योतिः स्यादनध्यायः शे-
चेरात्रौ च यादिवा॥ १०६॥

۱۰۱- آگے دو اندھیہ (یعنی روز تقطیل) کینگے آسین گرو در صلیہ دونوں دید کو نہ پڑھیں
۱۰۲- رات کے وقت کان میں ہوا سنائی عوار وغیرہ صول اڑتی ہو تو برسات میں اسدن
اندھیہ جاتا یہ بات اندھیہ جانتے والے نے کہا ہے۔

۱۰۳- بجلی کا چمکنا اگر خبر ہوتے میں بجلی کا ٹوٹنا ایسے وقت میں دوسر دن اس وقت
کت اندھیہ سے یہ بات من جی نے کہا ہے۔

۱۰۴- بجلی کا چمکنا اگر خبر پانی برسات میںون شام کی وقت ہون تو فصل برسات میں اندھیہ جاتا
ہمیشہ نہیں کیونکہ برسات میں تو یہ سب ہوتا ہی میں اور اگر فصل ابر دکھائی دیکو بھی اندھیہ
۱۰۵- اکاش میں اوتپات کا شبد ہوا اور بھو چال اور چند سورج تارا ان سب کا اپدرو ہو
تو جو وقت یہ ہون اس سے دوسر دن اس وقت تک اندھیہ ہر فصل میں جاتا۔

۱۰۶- وقت صبح و شام ہون کے لیے آگ لکری کے گھسنے سے ظاہر ہوتی اور اس وقت یہاں کا چمکنا
اگر جاتا ہوا اگر برسات ہوئی تو دن بھر اندھیہ ہے اور اگر وقت صبح و شام اور کمری ہوئی نہیں
بائیں ہون تو صرف رات بھر اندھیہ جاتا دوسر دن کے اس وقت تک۔

आचारायां प्रौढयद्यां वा व्युपाकृत्य यथाविधि ॥ युक्तश्चन्द्रा-
 स्य धीयीत मासान्विप्रोऽर्द्धयं च मान् ॥ ६५ ॥ पुष्ये तु चन्द्रसांकु-
 र्या हृदि रुत्सर्जनं द्विजः ॥ माघशुक्लस्य वा प्राप्ते पूर्वाह्ने प्रथ-
 मेऽहनि ॥ ६६ ॥ यथाशास्त्रं तु कृत्वाैव सुत्सर्यं चन्द्रसांवहिः ॥
 विस्मृत्य स्मिणीं रात्रिं तदेकमहर्निशम् ॥ ६७ ॥ अत ऊर्ध्वं तु
 चन्द्रां सिशुक्लेषु नियतः पठेत् ॥ वेदांगानि च सर्वाणि कृत्वा-
 पक्षेषु संपठेत् ॥ ६८ ॥ नाविस्पृष्टमधीयीत न ह्यद्रजनसन्निधौ
 ॥ न निशान्ते परिशान्तौ ब्रह्माधीत्यपुनः स्वयेत् ॥ ६९ ॥ यद्यो-
 दितेन विधिनानित्यं चन्द्रस्कृतं पठेत् ॥ ब्रह्मचन्द्रस्कृतं वैवदि-
 जो युक्तो ह्यनायदि ॥ १०० ॥

۹۵۔ آون یا بھا دون میں بدھ سے اُپاکرم کر کے ساڑھے چار مہینے تک کوشش کر کے وید کو پڑھے۔

۹۶ سارے چار مہینے لوبہ کی پختہ کشت زمین کا نوں سے باہر جا کر جھنڈ کا تیاگ کرے اور
سادن یا بھادون میں جو اُپا کر ن کیا تھا سکو کا کھٹکل پر یو امین پور یا مین کاں میں لکھنا
کرے۔

۹۔ بطرح گانوں کے باہر جا کر تمیھا شکست آسہر گریپتی رات مت یا آسہر گانوں رات مت وید نہ ہرے۔

۹۔ اسکے بعد تم سے تکل مکش میں وید کو اور کرشن مکش میں شاستر کو پڑھے۔

49 پڑھنے میں کحرف حروف صوائت زبان سے نکلے اور شور و گے پاس پڑھتے
و اگر بات کے جو متعلق ہوں وہ کہ پڑھنے سے متعلق اس کے پاس سے نکلے

۱۰۔ جو بدھ کسی کسی اُسی بدھ سے ہر روز وہی کے دونوں جھاک (یعنی شتر اور برہمن) کو

یعنی اشترک کا دن اور آئینہ الہیہ و نوخون کپڑے کا طرح ہیں ان دونوں کی طرح کی رات۔

संजीवनं महावीचितं पनं स अतापनम् ॥ संहतं च सकाको-
 लं कुडूमलं प्रतिमूर्त्तिकम् ॥ ८६ ॥ लोहशंकुमृजीषं च यन्था
 नं शात्मलीनदीम् ॥ असिपत्रवनं चैव लोहदारकमेव च ॥ ८७ ॥
 यतद्विदन्तो विद्वांसो ब्राह्मणा ब्रह्मवादिनः ॥ न स ज्ञः प्रतिगृ-
 ह्णाति प्रेत्य श्रेयोऽभिकांक्षिराः ॥ ८८ ॥ ब्राह्मो मुहूर्त्तं बुध्येत ध-
 र्मार्योऽप्यनुचिंतयेत् ॥ कायलेशांश्च तन्मूलान्वेदतत्त्वार्थमे-
 व च ॥ ८९ ॥ उत्थायावश्यं कृत्वा कृतशौचः समाहितः ॥ पु-
 र्व्वान्तन्ध्यां जपं स्तिष्ठेत्स्वकाले चापरां चिरम् ॥ ९० ॥ ऋषयो
 दीर्घसन्ध्यत्वा दीर्घमायुरवाप्नुयुः ॥ प्रज्ञायशश्च कीर्त्तिं च ब्रह्म-
 वर्चसमेव च ॥ ९१ ॥

۸۹- سنجیون - مہاویچ - پتن - پرتاپن - سنگھات - کاکول - کڈل - پوت
 مرتک

۹۰- لوہ شنگ - ریش - شال ملی ندی - اس تپرن - لوہ دارک -

۹۱- اس بات کے جاننے والے اور پرلوک مین کلیان چاہنے والے اور وید کے
 پڑھنے والے جو برہمن مین وہ راجہ سے دان نہیں لیتے -

۹۲- دو گھڑی رات رہے اٹھ کر دھرم اور راتھ کا دھیان کرے دھرم
 دارتھ کی خبر جو کایا کلیس ہے اسکو اور وید کے تتوارتھ لینے برہم گیان کو بھی
 دھیان کرے

۹۳- اٹھ کر ضروری کاموں سے فرصدت کر کے طہیان کے ساتھ صہارت کرے
 اور صبح و شام بندھیا مین دیر تک چپ کرتا رہے -

۹۴- دیر تک بندھیا کرنے سے ریش لوگوں بڑی عمر کو پایا ہے اور بدھ اور ریش
 اور کیرت اور برہم تیج کو بھی پایا ہے

केशमहान्यहारांश्चशिरस्येतान्विवर्जयेत् ॥ शिरस्नातश्चतैले
ननांगं किंचिदपि स्थितात् ॥ ८३ ॥ नराजः प्रतिगृह्णीयाद्राजन्य
प्रसूतितः ॥ सूनाचक्रध्वजवतां वैभेरी ॥ वचजीवताम् ॥ ८४ ॥ द-
शसूनासमंचक्रंदशचक्रसमो ध्वजः ॥ दशध्वजसमो वैशो दश-
वैशसमो नृपः ॥ ८५ ॥ दशसूनासद्व्याशियोवाहयतिसौ नि-
काः ॥ तेन तुल्यः स्मृतो राजा घोरस्तस्य प्रतिग्रहः ॥ ८६ ॥ योराजः
प्रतिगृह्णातिलुब्धस्योच्छास्त्रवर्जितः ॥ सपर्यायेरायातीमा-
नरकानेकविंशतिम् ॥ ८७ ॥ तामिस्रमन्धतामिस्रं महारौरव-
शैरवी ॥ नरकं कालसूत्रंच महानरकमेव च ॥ ८८ ॥

۸۳۔ غصہ سے اپنے یا دوسرے کے سر میں نہ مارے اور بالوں کو نہ کھینچے
اگر سر میں تیل لگا کر کسنان کرے تو پھر اور کسی عضو میں تیل نہ لگا دے۔

۸۴۔ جو راجا کستری میں ہے اس سے اور کسائی اور تیلی اور کلارا اور جو مرد یا عورت بیسیا
کی جیو کا سے جینے والے میں ان سے دان نہ لیوے۔

۸۵۔ دس کسائی کے برابر تیلی ہے دس تیلی کے برابر کلار ہے دس کلار کے برابر بیسیا
دس بیسیا کے برابر راجا ہے۔

۸۶۔ جو کسائی اپنے نیچے دس ہزار جان مارتا ہے اس کے برابر راجا ہو جو راجا
کا دان نہ کھتے۔

۸۷۔ جو راجا لالچی اور مسلمان شستر کے کام کرنے والا ہے اس سے
جو کوئی دھن لیتا ہے وہ سلسلہ سے اکتیس طرح کے نرک جو آگ کے کہیں گے

اوس میں جاتا ہے۔

۸۸۔ تانتر۔ اندھنا شتر۔ ماریہ۔ زور۔ زور۔ نرک۔ کال۔ سوتر۔ مس
نرک۔

अचसुर्विययवुर्गनप्रमाद्येतकह्निचित्॥नविरासूत्रंनिरीक्षेत
नवाह्नभ्यांनदींतरेत्॥७७॥अधितिष्ठेन्नकेशास्तुनभस्मास्थिक
पालिकाः॥नकार्यासास्थिनतुयान्दीर्घमायुर्जिजीविषुः॥७८॥
नसंवसेद्यपितैर्नचाण्डालैर्नपुल्कसैः॥नमूर्खैर्नवलितैश्चनानां
त्यैर्नान्यावसायिभिः॥७९॥नशूद्रायमतिदद्यान्नोच्छिद्यंनह
विष्कतम्॥नचास्योयदिशेद्धर्मंनचास्यव्रतमादिशेत्॥८०॥
योत्यस्यधर्ममाचष्टेयश्चैवादिशतिव्रतम्॥सोऽसंहतंतामतमः
सहतेनैवगच्छति॥८१॥नसंहताभ्यांपारिभ्यांकराड्येदात्म
नःशिरः॥नस्यशेद्यैतदुच्छिद्योनचस्नायाद्विनाततः॥८२॥

۷۷۔ جو ملک آنکھوں سے دیکھا نہیں ہے اور جس مقام پر مرجان یا انڈیشہ ہے اس ملک مقام
میں کبھی نہ جائے اور اپنے غلیظ و پیشاب کو کھینچ کر نہ دیکھے اور نہ ہی کو ہاتھوں سے تیرے
۷۸۔ زیادہ عمر کا چاہئے والا آدمی بال باریک یا بیڑی یا مٹی کے ٹوٹے ہوئے برتنوں کے
ٹکڑے یا بنو لایا بھوسا پر کھڑا نہ رہے۔

۷۹۔ دو ٹکڑے کا ٹون کے رہنے والے آدمی جو تپت چاٹال کیسے مندران دولت
مور کھدھو بی وغیرہ دانتیا و سانی ہوں انھوں کے ساتھ ایک خشت کے سایہ میں نہ رہے۔
۸۰۔ شودر کو صلاح نہ دے سوا اس کے اور شودرون کو جو ٹھانڈے سے جو ہیدہ ہوں کرنے سے
بچ رہا، وہ شودر کو نہ دے اور دھرم اور برت کا اپدیش بھی شودر کو نہ دے۔

۸۱۔ جو شخص شودر کو دھرم اور برت کا اپدیش دیتا، وہ مع اس شودر کے ہمہرت نام نہ رکھیں جاتا،
۸۲۔ ملے ہوئے دونوں ہاتھوں کے اپنے سر کو نہ کھلاؤ اور ہاتھ جو کچھ ہوں تو سر کو نہ چھو
اور شر کو چھو کر گلے سے اسنان نہ کرے یعنی سر سے پاؤں تک اسنان نہ کرے۔

✽۔ یعنی نکھاد سے شودر کی ستری میں پیدا۔ ۷۷۔ یعنی چاٹال سے نکھاد کی ستری میں پیدا۔ ۷۸۔ مگر مار کھڑے پران میں نکھاد
کر بغیر ضرورت کے سر سے اسنان نہ کرے۔

लोष्ठमर्दीदृशाच्छेदीनस्वरवादीचयोनरः॥सविनाशं व्रजत्या-
शुस्त्वचकोऽशुचिरेवच॥७१॥नविगर्ह्यकथांकुर्याद्बहिर्मा-
त्यंनधारयेत्॥गवांचयानंघृष्टेनसर्वथैवविगर्हितम्॥७२॥
अद्वारेणाचनातीयाद्यासंवावेशमवाचतम्॥रात्रौचवृक्षमू-
लानिदूरतःपरिवर्जयेत्॥७३॥नासैःक्रीडेत्कदाचित्तुस्वय-
न्योपानहीहरेत्॥शयनस्थोऽपिभुञ्जीतनपाशस्थंनचा-
सने॥७४॥सर्वचतिलसंकष्टंनाद्यादस्तमितेरवो॥नचनग्नः
शयीतेहनचोच्छिष्टःकचिद्भजेत्॥७५॥आर्द्रपादस्तुभुञ्जी-
तनार्द्रपादस्तुसंविशेत्॥आर्द्रपादस्तुभुञ्जानोरीर्घमायुर-
वाप्नुयात्॥७६॥

۱۔ ڈھیلا۔ مروں کرنیوالا تنکا ٹوڑنے والا۔ دھتوں سے ناخن اکھاڑنیوالا۔ چلی کرنیوالا ناپاک رہنے والا جلد ناش ہو جاتا ہے۔

۲۔ لوک ریت یا وید ریت میں دل لگا کر نقد گوئی نہ کرے بلکہ نین مین مالانہ پینے پیل کی پیٹھ پر چڑھ کر نہ چلے یہ سب باتیں ہمیشہ منع ہیں۔

۳۔ گائوں یا گھریہ دونوں طرف سے گھرے ہوئے ہوں تو دروازہ چھوڑ کر اور طرف سے بھاگ کر اس کے اندر نہ جاؤ اور رات کے وقت درخت کی جڑ میں نہ رہو۔

۴۔ پالنا نہ کھینچ کھیلے اپنا جوتا اپنے ہاتھ سے اٹھا کر ایک جگہ سے دوسری جگہ نہ لے جائے بلکہ پاؤں سے لیجائے چار پائی پر پیچھ کر اور بہت آن کو ہاتھ میں رکھ کر سہم سے ٹھوڑا تھوڑا نکال کر اور آسن کے اوپر بھون کے پاتر کو رکھ کر بھون کرے۔

۵۔ تل ملی ہوئی چیز کو رات کے وقت نہ کھائے تنکا ہو کر سو دے جو ٹھکے نہ کھیں گے۔
۶۔ گیلے پاؤں ہو کر بھون کر نا اچھا لگے گیلے پاؤں ہو کر سونا منع ہے جو شخص پاؤں ہو کر بھون کرتا ہے وہ بڑی عمر کو پاتا ہے۔

نपाہیہاवयेत्कांस्येकशचिदपिभाजने॥ नभिन्नभाराडेभु-
ज्जीतनभावप्रतिदूषिते॥ ६५॥ उपानहोचवासश्चधृतमन्ये-
र्नधारयेत्॥ उपवीतमलंकारंस्वजंकरकमेवच॥ ६६॥ नावि-
तीतेर्ब्रजेजुर्ध्वेर्नचसुध्याधिपीडितेः॥ नभिन्नशृंगासिखुरैर्न-
बालधिविरूपितेः॥ ६७॥ विनीतैस्तुब्रजेनित्यमाशुर्गेर्लसराणा-
न्वितेः॥ वरारूपोयसम्यनैःप्रतोदेनातुदन्धशम्॥ ६८॥ बा-
लातपःप्रेतधूमोवर्ज्यभिन्नंतयासनम्॥ नछिन्द्यान्नखलो-
मानिदन्तैर्नोत्पादयेन्नखान्॥ ६९॥ नसह्योसंचसद्गीयान्न-
छिन्द्यात्कर्जेस्त्वशम्॥ नकर्मनिष्फलंकुर्यान्नायत्यामसु-
खोदयम्॥ ७०॥

۶۵- کانسے کے برتن میں پائون نہ دھو دے اور پھوٹے برتن میں یا جس برتن میں
اپن من پر سن بنو سیم بھو جن نکرے۔

۶۶- جو تہا جھتری جینو گنہا بھو لونکی مالا کندل کپڑا۔ ان سب کو اگر کسی استعمال
کیا ہو تو آپ استعمال نکرے۔

۶۷- جس رتھ میں ایسا بیل لگا ہو کہ جبکہ رتھ میں چلنا نہ سکھایا گیا ہو یا بھوکھا یا پیاسا
یا بیمار ہو یا جبکی سینگ آنکھ کھر لو چھ ٹوٹ گئی ہو ایسے رتھ پر سوار ہو کر نہ چلے۔

۶۸- جس رتھ میں ایسا بیل لگا ہو کہ جبکہ رتھ میں چلنا سکھایا گیا ہو اور لکشن رنگ پ
جکا اچھا ہو اس رتھ پر سوار ہو کر چلے مگر بیل کو پنیا سے نہ مارے۔

۶۹- صبح کے وقت میں گھڑی تک سورج کا گھام اور کسی کے مت میں کنیاں راس میں
سورج کا گھام چلتے ہوئے روئے کا دھوان ٹوٹا اس ان سب علیحدہ سے بال اور ناخن

نہ نوچے اور ناخن کو نہ توٹنے نہ ا دکھاڑے۔

۷۰- مٹی اور ڈھیلہ کو نہ مردن کر ناخن سے تنکے نہ توڑی مہمانہ کام نکر اور حکام کر کر سیکھنے والا بیتن اسکا نام

नावारयेगांधयत्तीनचाचसीतकस्यचित॥ नदिवीन्यायुधं-
 द्याकस्यचिद्वर्शयेद्बुधः॥ ५६॥ नाधार्मिकेवसेद्वामेनव्याधि-
 वह्नलेभ्रशम्॥ नैकःप्रयद्येताध्वानंनचिरंपर्वतेवसेत्॥ ६०॥
 नशूद्रराज्येनिवसेन्नाधार्मिकजनावृते॥ नपाषाणीगराणा-
 क्रान्तेनोपसृष्टेऽन्यजैर्नृभिः॥ ६१॥ नभुंजीतोदृतस्नेहंना-
 तिसौहित्यमाचरेत्॥ नातिप्रगेनातिसायंनसायंप्रातराशि-
 तः॥ ६२॥ नकुर्वीतद्व्याचेष्टान्वार्थञ्जलिनापिवेत्॥ नो-
 त्संगेभक्षयेद्भक्ष्यान्नजातस्यात्कुतहली॥ ६३॥ नचत्येदथ-
 वागायेन्नवादित्राशिवाक्ष्येत्॥ नास्फोटयेन्नचक्ष्वेडेन्नच-
 रत्तोविरावयेत्॥ ६४॥

۵۹ - دودھ یا پانی پیتی ہوئی گتو کو نہ ہٹا دے اور نہ کسی سے کہے اور اندر دھنکھ کو بکھیر
 کسی کو نہ دکھاوے۔

۶۰ - جس گائون میں دھرم نہیں ہے۔ اور آفتون سے بھر اسوا، اوسمین نہ رہے اکیلے
 راہ نہ چلے بہت دنوں تک پہاڑ پر نہ رہے۔

۶۱ - جس گائون میں شور و کاراج ہے اور حسین اور قمری پاکھنڈی چاٹڈال آدمی بناو
 کرتے ہوں اس گائون میں نہ رہے۔

۶۲ - جس خیر سے تیل نکال لیا گیا ہو اسکو دکھاے اور عین صبح اور عین شام کیوقت چھو
 نکرے اور بہت چھوچن نکرے اور اگر صبح کو زیادہ کھا گیا ہو تو شام کو نہ کھاے۔

۶۳ - جس تجارت سے اس لوک اور پر لوک میں کچھ فائدہ نہوا سکو نکرے اور چلو سے پانی نہ پیتے
 جانکھ پر لوڈ وغیرہ رکھ کر نہ کھاے اور بے مطلب کسی کے بھیکے جاننے کی خواہش نہ کرے۔

۶۴ - ناچنا۔ گانا۔ بجانا۔ تالی کھونا۔ کٹ کٹانا۔ مٹکے سے گدھے وغیرہ کی بولی بولنا
 سب باتون سے پرہیز کرے۔

नाग्निं मुखेनोपधमेन्नग्नांनेक्षेत च स्त्रियम् ॥ नामेध्यं प्रक्षिपे-
त्सर्गो न च पादौ प्रतापयेत् ॥ ५३ ॥ अधस्तान्नोपदध्याच्च न चैनम-
भिलंघयेत् ॥ न चैनं पादतः कुर्यान्न प्रस्तावाधमाचरेत् ॥ ५४ ॥
नास्तीयात्तन्धिवेलायां न गच्छेन्नायिसन्विशेत् ॥ तच्चैव प्र-
लिखेद्भूमिं नात्मानोपहरेत्प्रजम् ॥ ५५ ॥ नाप्सु मूत्रं पुरीषं वा
क्षीवनं वा स मुक्त्वजेत् ॥ अमेध्यं लिप्तं मन्यद्वा लोहितं वा विषा-
शिवा ॥ ५६ ॥ नैकः स्वयेच्छून्यगोहेशयानं न प्रबोधयेत् ॥ नो-
दक्ययाभिभाषेत यज्ञं गच्छेन्न चादृतः ॥ ५७ ॥ अग्न्यगारे ग-
वां गोष्ठे ब्राह्मणानां च सन्निधौ ॥ स्वाध्याये भोजने चैव दक्षि-
णां पारिणामुद्धरेत् ॥ ५८ ॥

۵۳۔ اگن کو منع سے نہ چھو کنا اور اگن میں ناپاک چیز نہ ڈالنا اور پانوں کو نہ تپنا اور
 تنگی استری کو نہ دیکھنا چاہئے۔

۴۵۔ چار پائی کے بیچے اگن کو نہ رکھنا اور نہ اس کو ناگکھنا اور نہ پانوں سے چھونا اور نہ پیران باد صفا کرنا چاہئے۔

۵۵۔ وقت صبح و شام کھانا اور سونا اور چلنا بچا ہے اور زمین پر لکیریں نہ کھینچے اور جو بھول کی مالا اپنے بدن میں پہنے اسکو آپ نہ اذکارے دوسرے سے اتروالے۔

۵۶۔ پانی میں پیشاب اور غلیظہ اور کھکھار اور نا پاک چیز اور خون اور زہر ان سب کو نہ ڈالنا چاہیے۔

۵۷۔ گھر میں اکیلا نہ سوو اور خوشنصیب آپ سے علم وغیرہ میں زیادہ ہو اور سوتا ہوا دس کو نہ جگا دے اور حیض والی عورت سے بات نہ کرے اور بغیر لباس کے یکیدہ میں نہ جگے۔

۵۸۔ اگرں کا گھر۔ گیتو کا استھان۔ براہمن کے پاس وید کا پڑھنا۔ بھوجن کا کرنا ان سب
میں والنا باخم نکالنا چاہتے۔

نससत्वेषु गर्तेषु नगच्छन्नापि च स्थितः ॥ न नदी तीरमासाद्य
न च पर्वतमस्तके ॥ ४७ ॥ वाय्वग्निविप्रमादित्यमयः पश्यं
स्तथैव गाः ॥ न कदाचन कुर्वीत चिरामूत्रस्य विसर्जनम् ॥ ४८
॥ तिरस्कृत्योच्चरेत्काष्ठलोष्ठपत्रहरादिना ॥ नियम्य प्रयतो
वाचं संवीतांगोऽवगुण्ठितः ॥ ४९ ॥ सूत्रोच्चारसमुत्सर्गं निवा
कुर्याद्दुःखं सुखं ॥ दक्षिणाभिमुखो रात्रौ सन्ध्योश्च यथा दि
वा ॥ ५० ॥ छायायामन्धकारे वारात्रावहनि चाह्नयः ॥ यथा
सुखं सुखं कुर्यात्प्राणावाधाभयेषु च ॥ ५१ ॥ प्रत्यग्निं प्रति स-
ूर्यं च प्रति सोमोदकद्विजान् ॥ प्रतिगां प्रति वातं च प्रज्ञानश-
क्तिमेहतः ॥ ५२ ॥

۴۷- کھڑے ہو کر اور اس گڑھے میں جسمین جاندار رہتے ہوں اور چلتے ہوئے اور ندی
کے کنارہ اور پہاڑ کے چوٹی پر بھی پاخانہ و پیشاب نہ کرے۔
۴۸- اگن- سوچ- جل- براہمن- گتو- ہوا- ان سب کو دیکھتے ہوئے بھی پاخانہ و پیشاب
نہ کرے۔

۴۹- سوکھانپتہ گھاس بھوس- کا ٹھوڈھیل وغیرہ سے زمین کو چھپا کر اور سر کو
باندھ کر سب اعضا کو کپڑے سے پوشیدہ کر کے خاموش ہو کر پاخانہ و پیشاب نہ کرے۔
۵۰- دن کو وقت صبح و شام اتر طرف منہ کر کے اور رات کو دکھن طرف منہ کر کے پاخانہ
و پیشاب نہ کرے۔

۵۱- چھپایا- اندھکار- پران بادھما- بھتے- ان سب میں رات یا دن کو جب طرف منہ
کرنے سے شکھ ہو اس طرف منہ کر کے پاخانہ و پیشاب نہ کرے۔
۵۲- اگن- سوچ- سوم- جل- براہمن- گتو- ہوا- ان سب کو دیکھتے ہوئے پاخانہ
و پیشاب نہ کرے نہ بدھ کا ناش ہوتا ہے۔

۱۴۔ جو شخص حینِ والی عورت سے صحبت کرتا ہے اسکی عقل و جلال و قوت و نظر و عمر یہ سب کم ہو جاتی ہے۔
۱۵۔ جو شخص حینِ والی عورت سے صحبت نہیں کرتا ہے اسکی عقل و جلال و قوت و نظر و عمر یہ سب بڑھتی ہے۔
۱۶۔ عورت کے ساتھ بھونچ کر نا اور جو وقت عورت کھاتی ہو یا چھپکتی ہو یا جمبائی لیتی ہو یا سکھ سے بیٹھی ہو تو اسکو نہ دیکھنا چاہئے۔
۱۷۔ اور جو وقت عورت آنکھوں میں آنجن یا بدن میں اٹھن لگاتی ہو یا تنگی ہو یا لڑکا جفتی ہو تو اسکو نہ دیکھے جس پر بدن کو تیج کی اجھٹا ہو۔
۱۸۔ ایک کڑا اپنے ہونٹے بھونچ کرے تنگ ہو کر سنان کرے راستہ اور رکھ اور گھوڑے کے استھان میں پیشاب کرے۔
۱۹۔ بونا ہوا کھیت پانی۔ آگ۔ پرادہ۔ پہاڑ۔ دیوتاؤں کا پرانا مسدز۔ چھوٹے چھوٹے کیرؤن سے ڈھبر کی ہوئی مٹی۔ ان سب چیزوں پر پیشاب کرے۔

लुप्तकोशनखश्मशुर्दान्तःशुक्लाम्बरःसुचिः॥स्वाध्यायेचैव
युक्तःस्यान्नित्यमात्महितेषुच॥३५॥वैरावींधारयेद्यधिं
सौस्कंचकमराडलुम्॥यज्ञोपवीतंवेदंचशुभेरीकमेचकुगडले
॥३६॥नेसेतोद्यन्तमादित्यंनास्तंयान्तंकराचन॥नोपसृष्टं
नवारिस्थंनमध्यनमसोगतम्॥३७॥नलंघयेद्धत्सतंत्रीनप्रधा
वेच्चवर्षति॥नचोदकोनिरीसेतस्वरूपमितिधारणा॥३८॥
मृदंगांदैवतंबिप्रंघृतंसधुचतुष्ययम्॥प्रदक्षिणानिकुर्वीतप्र-
ज्ञातांश्चवनस्पतीम्॥३९॥नोपगच्छेत्प्रमत्तोऽपिस्त्रियमा-
र्त्तवदर्शने॥समानशयनेचैवनशयीततयासह॥४०॥

۳۵- وید خوانی اور ہمال نیک بین ہمیشہ مصروف رہے اور بال اور ناخن اور ڈاڑھی
کو چھوٹا کیے رہے سفید کپڑے پہنے پاک صاف رکھر جو اس پر ضابطہ
رہے۔

۳۶- بانس کی لاٹھی۔ کنڈل مع پانی۔ جینیو۔ سونے کے دو کنڈل۔ وید
انکو استعمال کرے۔

۳۷- وقت طلوع وقت غروب وقت دوپہر آفتاب کو نہ دیکھے اور اگر سن پڑتا
ہو تب بھی نہ دیکھے اور نہ پانی کے اندر آفتاب کو دیکھے۔

۳۸- بچھڑا باندھنے کی رسی کو نہ مانگے پانی بہتے ہوئے نہ دوڑے۔ پانی میں اپنی
صورت نہ دیکھے یہ شسترین لکھا ہے۔

۳۹- کہیں جانا ہو اور سامنے۔ اکھاری۔ مٹی گنو۔ دیوتا۔ برہمن۔ گھی۔ شہد چوراہا
جانا ہو اور دھت یہ سب ملیں تو دہنی طرف اوٹ کر گئے جائے۔

۴۰- اگر شتون بدرجہ قایت ہو تو بھئی حیض والی عورت سے صحبت کرے اور پورا چار پالی
پر عورت کے ساتھ نہ سوو۔

آسا سنا شن شایا مبر دیرمूल فله نوا ॥ ناسک شیدر سے جے-
 ہش کتیتو ۛن رچیتو ۛ تیثی: ॥ ۲۶ ॥ پارا ورشید نو ویکرم سٹھا
 نئیدال بتریکا وڈٹان ॥ ہئوکان بکھتئی شواڈ: مائے-
 رانا پینا رچیت ॥ ۳۰ ॥ وید ویدیا بترکنا تاں شوتریا نگرہ مہ-
 دین: ॥ پوجیے دوی کوی ن وپری تاں شورجیے ॥ ۳۱ ॥ شکتی
 تو ۛ پچمانیہو دا توی گڑھ مہ دینا ॥ سانبھاگ شہوتیہ:
 کتوی ۛ ن پری دت: ॥ ۳۲ ॥ راجتو دین مانی وڈتس سیدرنا
 تک: سٹھا ॥ یا جیانیہ واسینو رپین لکھت تری تیثی:
 ॥ ۳۳ ॥ ن سیدرنا تکی وپری: سٹھا شکت: کھنچن ॥ ن جی-
 رانا مل بھاسا مہ وڈتس مہ ستی ॥ ۳۴ ॥

۲۹۔ اُس مہو جن شیا جل نول مہل ان مہو ن میں سے کسی ایک چیز سے تھیا شکت پیر پوجا
 پائے مہو گڑھ سٹھ کے گھر میں نر سے پاوے۔

۳۰۔ اگر پا کھنڈی و ناقص سٹھ سے اوقات سہ کر نولے و بیدال ترنگ ویدروانی
 نکر نیو لے و خلافت دلیل ٹھانیو لے سب مہو کال میں آدین تو گفتگو سہی اکی پوجا لکر مہو جن
 ۳۱۔ جو گڑھ سٹھ وید میں یا پرت میں یا دونوں میں پکا ہے اُسکا پوجن مہیہ اور کپتہ سے کرے
 خلافت عمل نکرے۔

۳۲۔ جو برہم چاری یا سنیاسی وغیرہ اپنے ہاتھ سے کھانا نہیں بناتے ہیں اُنکو جتنی مہو
 گڑھ سٹھ آدی کھانا پانی دے پھر کرکالوں کے کھانے سے جو کھانا پانی پھر جس در جانداروں کو دے۔
 ۳۳۔ اگر شاک گڑھ سٹھ مہو کھے سچ میں ہو تو راجا و جمان و دیار تھی ان سب و مہو
 اور کسی سے نہ لیوے شاستری مر جادے۔

۳۴۔ جو گڑھ سٹھ سٹھات اور صاحب قدرت ہو وہ مہو کھے کسی طرح رنجیدہ دل نہو اور مہو
 ہوتے ہوئے پرانے اور مہیہ کپڑے نہ پہنے۔

वाच्येकेजुह्वतिप्रासांप्रासांवाचंचसर्वदा॥वाचिप्राशोचयश्य-
त्तोयज्ञनिर्घत्तिमक्षयाम्॥२३॥जानेनेवापरेविप्रायजंत्येतैर्म-
खैःसदा॥ज्ञानमूलांकियामेवांपश्यन्तोज्ञानचक्षुषा॥२४॥अ-
ग्निहोत्रंचजुह्वयादाघंतेद्युनिशोःसदा॥दर्शनचादमासान्तेयै-
रामासेनचैवहि॥२५॥सस्यान्तेनवमस्येष्ट्यातथत्वत्तेद्विजोऽ-
ध्वरैः॥पशुनात्वयनस्यादीसमान्तेसोमिकैर्मखैः॥२६॥नानि-
ष्ट्वानवमस्येष्ट्यापशुनाचाग्निमान्निजः॥नवान्नमद्यान्मांसं-
वादीर्घमायुर्जिजीविषुः॥२७॥नवेनानर्चिताह्यस्ययशुहव्येन-
वा

२३- جو آدمی بانی اور پران میں لایا جاتا ہے وہ پران کو بانی میں اڑاتی ہے۔
کو بانی میں لایا جاتا ہے وہ پران کو بانی میں اڑاتی ہے۔
جو آدمی بانی اور پران میں لایا جاتا ہے وہ پران کو بانی میں اڑاتی ہے۔

۲۵- طلوع آفتاب و عدم طلوع آفتاب میں ہون کرنا جائز ہے اور بادش اور پور نماشی کے دن بھی ہون کرنا چاہیے۔

۲۶- جب نیا غلہ پیدا ہو اور وقت نویسی ہو کرنا اور فصل کے اخیر میں چتر ناس لگیے اور دونوں آئین میں پسٹس ہون کرنا چاہیے اور سال کے اخیر پر اکشوم وغیرہ لگیے کرے۔

۲۷- جو برہمن اگر سنو تری زیادہ عمر ہوئے کی خواہش رکھتا ہو وہ نیا غلہ جنٹک اس غلہ سے لگیے کرے اور پس کا مالٹ جنٹک اس مالٹ سے لگیے کرے دونوں کو بھو جن نہ کرے۔

۲۸- جو آگ نیا غلہ اور پس کے مالٹ سے اسودہ ہین ہوئی وہ اس آدمی کے پران کو بھو جن کر نیکی اچھا کرتی ہے جسے نئے غلہ اور پس کے مالٹ سے لگیے نہیں کیا اور کھانے لگا۔

सर्वान्परित्यजेदर्थान्वाध्यायस्यविरोधिनः॥ यथातथाध्यापयं-
स्तुसाध्यस्यकृतकृत्यता॥ १७॥ वयसःकर्मणोऽर्थस्यश्रुतस्या-
भिजनस्यच॥ वेषवाग्बुद्धिसारूप्यमाचरन्विचरेदिह॥ १८॥ बु-
द्धिबुद्धिकसरायाशुधान्यानिचहितानिच॥ नित्यंशास्त्राण्य
वेसेतनिगमांश्चैववेदिकान्॥ १९॥ यथायथाहिपुरुषःशास्त्रं
समधिगच्छति॥ तथातथाविजानातिविज्ञानं चास्यरोचते॥ २०॥
ऋषियज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा॥ न्ययज्ञं पितृयज्ञं च यथाश-
क्ति न हापयेत्॥ २१॥ एतानेके महायज्ञान्यज्ञशास्त्रविदो ज-
नाः॥ अनीहमानाः सततमिन्द्रियेष्वेव जुह्वति॥ २२॥

۱۷- جس دولت سے وید پڑھنے میں ہر جہاں سکو ترک کرے اور جس طریق سے وید پڑھنے میں ہر جہاں اس طریق سے مطلب حاصل کرے۔

۱۸- عمر و دولت و عمل و سنی سنائی بات و ملک پوشاک و تقریر و عقل ان سب کی صورت کو آچرن کرتا ہے اور دنیا میں رہے۔

۱۹- عقل و دولت کو ترقی دینے والے جو مفید و بیک (وہ راکٹ وغیرہ) و دیگر علم و صنعت و طب و سحر الی و دھرم شاستر وغیرہ علوم میں انکو روزمرہ مطالعہ کیا کرے۔

۲۰- آدمی جیسی جیسی مہارت شاستر میں کرتا ہے ویسا ویسا اسکا مطلب سمجھتا ہے اور گیان بھی اسکو اچھا لگتا ہے۔

۲۱- ریش گیہ۔ ویکو گیہ۔ بھوت گیہ۔ منشیہ گیہ۔ پتر گیہ۔ ان سب گیہوں کو فنی (اسکان) بنے ترک نہ کرے۔

۲۲- جو آدمی گیہ شاستر کو جانتے ہیں مگر ان گیہوں کے کرنے کی خواہش نہیں کرتے رہے ہمیشہ اندر لوں میں بیٹھ کر رہتے ہیں۔

नलोकवत्तवर्त्ततद्वत्तिहेतोः कथंचन॥ अजिह्मामशठांशुदां
जीवेद्वाह्यराजीविकाम॥ ११॥ संतोषं परमास्थाय सुखार्थी
संयतो भवेत्॥ सन्तोषमूलं हि सुखं दुःखमूलं विपर्ययः॥ १२॥
अतोऽन्यतमया हृत्या जीवंस्तु स्नातको द्विजः॥ स्वर्गायुष्यय-
शस्या निव्रतानि मानि धारयेत्॥ १३॥ चेरोदितं स्वकं कर्म
नित्यं कुर्यादतन्द्रितः॥ तद्विकुर्वन् यथाशक्ति प्राप्नोति पर-
मांगतिम्॥ १४॥ नेहेतार्थान्प्रसंगेन न विरुद्धेन कर्मणा॥ न
विद्यमाने धर्मे बुनात्यामपि यतस्ततः॥ १५॥ इन्द्रियार्थेषु
सर्वेषु न प्रसज्येत कायतः॥ अतिप्रसक्तिं चैतेषां मनसा स-
न्निवर्त्तयेत्॥ १६॥

۱۱- واسطے حصول معاش کے دروغ گوئی و شیرین زبانی و مضحکہ نہ اختیار کرے دروغ
و فریب الی معاش کو ترک کر کے براہمنوں کی نیک معاش سے اوقات گزاری کرے۔
۱۲- قناعت کر کے جو اس کو قابو میں لائے کیونکہ خوشی کی بنیاد قناعت ہے اور رنج کی
جڑ بے صبری ہے۔

۱۳- بنجھا معاش مفصلہ یا لا کے کسی معاش سے اوقات گزاری کرے اور دیکھنے سے
قانع ہو کر سہارتن کیوں واسطے اندریوں کو قابو میں لائے اور سوگ اور عمر اور نیکی
کیوں واسطے مفید برت جو اس کے کہیں گے اسکو کرے۔
۱۴- کاپلی چھوڑ کر اپنے اعمال مندرجہ دید کو کرے حتی المقدور ان اعمال کو کرے
مکت پردی کو پا دیگا۔

۱۵- گناہ بھانا اور جو آدمی گمراہی کے لائق نہیں ہے اسکو گمراہ کرنا ان سب باتوں سے
اوقات گزاری کرے اور جو آدمی تپت یعنی اپنے درجے بھڑک ہو گیا اسکو صحت و غیرہ بھی نہ کیے۔
۱۶- اندریوں کو قابو میں لاکر اوکی زیادتی خواہش کو دل سے دور کرے۔

सत्याहृतंतुवाशिज्यंतेनचैवापिजीव्यते॥सेवाश्चक्षितिराख्या
तातस्मात्तांपरिवर्जयेत्॥६॥कुशूलधान्यकोवास्यात्कुंभी-
धान्यकस्यवा॥अहेहिकोवापिभवेदश्चस्तनिकस्यवा॥७॥
चतुर्णामपिचैतेषां द्विजानां ह्यहमेधिनाम्॥ज्यायान्यरः परो-
जेयो धर्मतो लोकजित्तमः॥८॥यस्कर्मैको भवेत्येषां त्रिभिस्-
त्यः प्रवर्तते॥ द्वाभ्यामेकश्चतुर्थस्तु ब्रह्मसत्रे राजीवति॥९॥
वर्त्तयंश्च शिलोब्ध्याभ्यामग्निहोत्रपरायणाः॥३४॥यार्वाय
नां तीयाः केवलानिर्वपेत्सह॥१०॥

۴- بنیائے کرم کو جھوٹھی سجھتے ہیں سیوا کو کتا کی برت کھتے ہیں اسلئے
سیوا نہ کرے۔

۵- نیتہ نیتیک و مہرم وغیرہ کرنوالے کو اتنا غلہ فراہم کرنا چاہئے جو تین سال
تک کافی ہو یا ایک سال تک یا ایک دن تک کفایت کرے۔

۸- چار طرح کے برہمن کہے میں امین پہلے سے دو مہرا دو سہرے تیس تیر
سے چوتھا بڑا ہے۔ اور دس و مہرم سے نوٹ کو جیت کھتے ہیں۔

۹- ان چار دین پہلا چھ کرم سہرا دقا بسر کرے اور دو سہرا تین کرم سے اور تیسرا
دو کرم سے اور چوتھا ایک کرم سے اوقات بسر کرے۔

۱۰- شل اور انچھ سے اوقات گذاری کرے اگر نہ ہو تو کرے اما دس اور پورما
اور سو وقت جبکہ نیا غلہ پیدا ہوتا ہے ان تینوں وقت میں بگیہ کرے۔

۱۱- یعنی بگیہ کرنا پڑھانا دان لینا رت وغیرہ جو اوپر کہہ لے ہیں۔

۱۲- یعنی بگیہ کرنا پڑھانا دان لینا۔

۱۳- یعنی بگیہ کرنا پڑھانا۔

۱۴- یعنی پڑھانا۔

चतुर्थमायुषोभागमुयित्वाद्यंशुरोद्विजः॥ द्वितीयमायुषो-
भागंकृतदारोग्यहेवसेत्॥ १॥ अद्रोहेरोचभूतानामल्पद्रोहे
रावायुनः॥ यावत्तिस्तांसमास्थायविप्रोजीवेदनापदि॥ २॥
यात्रामात्रप्रसिद्ध्यर्थंस्वैःकर्मभिरगर्हितैः॥ अक्लेशेनशरीर
स्यकुर्वीतधनसंचयम्॥ ३॥ ऋतामृताभ्यांजीवेत्तुमृतेनप्र-
मृतेनवा॥ सत्यान्मृत्याभ्यामपिबानश्वद्यत्कादाचन॥ ४॥
ऋतमुच्छशिलंजेयममृतंस्यादयाचितम्॥ मृतन्नुयाचितंभे-
द्यंप्रमृतंकर्षरांमृतम्॥ ५॥

- ۱- تمام عمر کے چار حصے فرغن کر کے اول حصہ تک گرد و گل میں باس کر کے دوسرے حصہ تک شادی کر کے گھر میں رہے۔
- ۲- جو وجہ سہاوش ایسی ہے کہ حاصل ہونا اور نکاحا بحالت عدم ایذا رسانی جائز ارکان کم ایذا دہی جائز ارکان ممکن ہے اس سے برآہن اپنی پسند آفات کر کے بشرطیکہ وقت مصیبت نہ ہو۔
- ۳- اعمال نیک سے اور ایسے طریقہ سے کہ جس سے بدن کو تکلیف نہ صرف اپنے کھانے پھرنے کو دولت جمع کرے۔
- ۴- رت اُمت مرت پر مرت جو ٹھہرے ان سب طریقوں سے زندگی بسر کرے۔
- ۵- انچھ شل کورت تھے ہیں بغیر مانگے لے اسکو اُمت کہتے ہیں مانگے سے لے اسکو مرت کہتے ہیں۔ کیفیت کو پر مرت ہیں۔

۱۰ اس مقام پر یہ شک ہو سکتا ہے کہ یقیناً عمر کی تعداد صحیح معلوم نہیں ہو سکتی جبکہ چار حصہ مقرر کرے لیکن آدمی کی عمر کھانک میں تلوہرس کی ہوتی ہے تو پچیس برس چوتھا حصہ ہوا۔

वसून्वदन्तितुपित्त्वनरुद्रांश्चैवपितामहान्॥ प्रपितामहां-
स्तथादित्याज्जुतिरेषासनातनी॥ २८४॥ विघसाशीभवेन्नि-
त्यंनित्यंवाग्यतभोजनः॥ विघसोभुक्तशेषंतुयज्ञशेषंतथा-
मृतम्॥ २८५॥ सतद्धोऽभिहितंसर्वविधानंपांचयाज्ञिकम्॥
द्विजातिसुख्यच्चत्तीनांविधानंश्रूयतामिति॥ २८६॥

इतिमानवेधर्मशास्त्रेभृगुप्रोक्तायांसंहितायां
तृतीयोऽध्यायः ३

۲۸۴ - پتا کو بُو کتے ہیں پتا مہ کو ڈر کتے ہیں پر پتا مہ کو اوتیتہ کتے ہیں یہ نیتہ
شرت ہے۔

۲۸۵ - برا مہنوں کے بھوجن سے یا گیہ کرنے سے جو کھانا بیچ رہے اسکو آپ
بھوجن کرے

۲۸۶ - بھوک جی کتے ہیں کہ ہے رش لوگوں بیچ گیہ کی بدھ کھی اب برا مہنوں کے
جیو کا کی بدھ کتے ہیں سنو۔

من جی کا وہ فہرم شاستر بھگ جی کی سنگھتا

کا تیسرا اوقیاسے تمام پت ہو ا۔

پ्राचीनाधीतिनासम्यगपसव्यमतद्विराता ॥ पित्र्यमानिधना
 त्कार्यविधिवहर्भयाशिना ॥ २७६ ॥ रात्रौ आर्द्धनकुर्वीतरास-
 मीकीर्तिताहिमा ॥ संध्ययोरुभयोश्चैवसूर्येचैवाचिरोदिते ॥
 २७७ ॥ अनेनविधिनाआर्द्धत्रिरब्दस्येहनिर्वपेत् ॥ हेमन्तग्री-
 ष्मवर्षासुपांचयज्ञिकमन्वहम् ॥ २७८ ॥ तपैत्यज्ञियोहोमो
 लौकिकेऽग्नीविधीयते ॥ नदर्शेनविनाआर्द्धमाहिताग्नेर्हि-
 जन्मनः ॥ २७९ ॥ यदेवतर्पयत्यद्भिः पितृन्नात्वाच्चित्तमः
 ॥ तेनैवकृत्स्नमाप्नोतिपितृयज्ञक्रियाफलम् ॥ २८० ॥

۲۷۹- واسنے کندھے پر چھو رکھے ہوئے آلس کو چھوڑے ہوئے کش ہاتھ
 میں لئے ہوئے پتر تیرت کر کے شستر کی ریتی سے پستر دن کے کرم
 کرے۔

۲۸۰- رات کے وقت شرادھ نہ کرنا چاہیے کیونکہ وہ راشی سے اور
 دونوں سدا بھیا کے وقت اوریراتہ کال میں بھڑی تک آئین بھی شرادھ
 نہ کرنا چاہیے۔

۲۸۱- اس طرح ہر سال سمیت گریشم پر شلینے جا اگر می برسات تینون فصلون میں
 تین بار شرادھ کرے اور پنج ہاگیہ تو ہر روز کرے۔

۲۸۲- اگر ہوتری کو پتر گیہ سمندھی ہون دنیا کی آگ میں مین ہوتا
 اور بغیر اناوشیا کے شرادھ نہیں ہوتی۔

۲۸۳- پنج گیہ سمندھی شرادھ ہونو سکے تو اسنان کر کے
 براہمن جس سے ترین کرے اسی سے سب پتر گیہ کے پھس کو
 پائے پیل۔

अपिनः सकृले जायाद्यो नो दद्यात्त्रयोदशीम् ॥ पायसं मधुसर्पि
भ्यां प्रावक्ष्ये कुंजरस्य च ॥ २७४ ॥ यद्यद्वदति विधिवत्सम्यक् अ-
द्वासमन्वितः ॥ तत्तत्पितृणां भवति परत्रानन्तमक्षयम् ॥ २७५
॥ कथापक्षे दशम्यादौ वर्जयित्वा चतुर्दशीम् ॥ आद्वे प्रशस्ता
स्तिथयो यथैतान तथेतराः ॥ २७६ ॥ युसु कुर्वन्दिनैर्षु सर्वा-
न्कामान्समश्नुते ॥ अयुसु तु पितृन्सर्वान्प्राप्नोति पुष्क-
लाम् ॥ २७७ ॥ यथा चैवापरः पक्षः पूर्वपक्षाद्विशिष्यते ॥ त-
था आहस्य पूर्वाह्णादपराह्णो विशिष्यते ॥ २७८ ॥

۲۷۴- پتر لوگ سناتے ہیں کہ ہمارے کل میں ایستھض پیدا ہو کہ جو بھادون کرشن ترپوشی
تتھہ یا اسی مہینہ کی کسی اور تتھہ میں اپراہن کال میں (یعنی بعد دوپہر) ہو اور کھی
لی ہوئی کھیر دیوے۔

۲۷۵- جو چیز بدھ پور رکھے پر کار سے شر دھا سبت پتر و نکو دیجاتی ہے اسکا
پھل پر لوگ تین بے انتہا ہے۔

۲۷۶- کرشن یکش میں دہمی سے لیکر چتر دشی کے سوا امارتیا تتھہ جیسی شرادھ میں
اچھی ہے ویسی اور نہیں۔

۲۷۷- تتھہ اور سم نکشتر میں شرادھ کرنے سے سہیون کا منالمتی ہے اور کھم تتھہ اور کھم
نکشتر میں شرادھ کرنے سے علم و دولت والی اولاد ملتی ہے۔

۲۷۸- جی طرح شکل یکش سے کرشن یکش آتم ہے اس طرح پورا با من کال سے اپراہن کال
شرادھ میں آتم ہے۔

۱۰ جیسے دوج و چوتھہ دہرنی و دہنی وغیرہ۔

۱۱ جیسے پرپوا تیج و اسونی و کرککا وغیرہ۔

होमासौमत्स्यमांसेनत्रीमासान्हारिणोनतु॥ औरभ्रेणायचतु
रःशाकुनेनाथपंचवे॥ २६८॥ घरासांश्चागमांसेनपार्थतेन
चसप्तवे॥ अष्टावेरास्यमांसेनरोखेरानचैवतु॥ २६९॥ दश-
मासांस्तुतृष्यन्निवराहमहिषामिधेः॥ शशकूर्मोस्तुमांसेनमां-
सानेकारशौवतु॥ २७०॥ संवत्सरस्तुगव्येनपयसापाम्यसेनच॥
वार्जोरासस्यमांसेनतृप्तिर्द्वादशवार्यिकी॥ २७१॥ कालशाकं
महाशल्काःखड्गलोहामिधमधु॥ आनन्त्योयवकल्प-
न्तेसुन्यन्तानिचसर्बशः॥ २७२॥ यत्किञ्चिन्मधुनामिश्रं प्र-
दधातुत्रयोदशीम्॥ तदप्यक्षयमेवस्याद्वर्षासुचमघासुच
॥ २७३॥

۲۶۸- مچھلی کے گوشت سے دو مہینہ تک اور ہر گ کے گوشت سے تین مہینے تک اور بھینٹ
کے گوشت سے چار مہینہ تک اور پرند جانور کے گوشت سے پانچ مہینہ تک پتر آسودہ رتے میں
۲۶۹- بکرا کے گوشت سے چھ مہینہ تک چتر مرگ کے گوشت سے سات مہینہ تک این نام ہر
کے گوشت سے آٹھ مہینہ تک زور و نام ہرن کے گوشت سے نو مہینہ پتر آسودہ رتے میں
۲۷۰- جنگلی سور یا بھینٹ کے گوشت سے دس مہینہ تک اندر گوشت اور کھجور کے گوشت گیارہ مہینہ
۲۷۱- گیو کے دودھ سے یا اسی دودھ کی کھیر سے ایک برس تک اور ایک بکرا کے دودھ
کان پانی پیتے وقت پانی کو چھوین اور سفید رنگ ہو اور اندری جکی چھین ہو اسکے گوشت سے بارہ برس
۲۷۲- کال شاک اور ماسک (ایک قسم کی مچھلی) اور گنڈا اور لال بکرا ان سب میں سے
کسی کے گوشت دینے سے اور دودھ اور رتنی سے بے اتنا برس تک
۲۷۳- موسم پر سات میں جس تر بودشی تھکھ کو مکھا نکشتر ہوا سدن میٹھی چیز دینے سے
اکیسے مہینے لازوال بھل ہوتا ہے۔
* یعنی بدھیا۔

۲۶۲۔ پت برتا ستری تپڑن کی پوجا کرنے والی لڑکا پیدا ہونے کی مراد تپتے
کے پنڈ کو اچھی طرح سے بھون کرے۔

۲۶۴۔ ٹوائس استری کے بڑی عمر والا دنیکنام و غفلت و صاحب اولاد دستوگن و صرم والا کا پیدار ہو۔

۳۶۔ ہاتھ دھو کر آچین کر کے بچا ہوا کھانا اپنی ذات و آلون کو کھلاؤ اس کے بعد رشتہ مندوں کو۔

۲۶۵۔ براہمنوں کا پس خوردہ تب تک ہے جب تک براہمن رخصت ہوں بعد رخصت ہونے براہمنوں کے جو کچھ استفان کو دھو دے اسکے بعد گرہ بلی کرے یہ دھرم ہے

۲۶۶۔ جو شبیہ تیزونکو بدھ پور دک دینے سے بہت دن تک آسودہ رکھتی ہے اور بچے انتہا پھل دیتی ہے وہ سب کتے مین پر۔

۲۶۶۔ تل۔ دھان۔ جو۔ ارد۔ جل۔ مول۔ پھل۔ انہیں سے کوئی ایک چیز بھی ناستہ
کے وافق دینے سے ایک مہینہ مکھتر آسودہ رہتا ہے۔

दर्शाः षवित्रं पूर्वाह्नो हविष्याणि च सर्वशः ॥ यवित्रं यज्ञपूर्वो-
क्तं विज्ञेया हव्यसम्पदः ॥ २५६ ॥ सुन्यन्तानिययः सोमो मांसं-
यज्ञानुयस्कृतम् ॥ अक्षारलवरां चैव प्रकृत्या हविरुच्यते ॥
२५७ ॥ विष्टन्यब्राह्मणां स्तांस्तु नियतो वाग्यतः शुचिः ॥ दक्षि-
णां दिशमाकां सन्याचेते मान्वरान्यित्दन् ॥ २५८ ॥ रातारो नोऽ-
शिवर्द्धन्ता वेदाः सन्नतिरेव च ॥ अज्ञा च नो माव्यगमहृद्देयं च
नोऽस्त्विति ॥ २५९ ॥ एवं निर्वपरां कृत्वा पिराडां स्तां स्तरनन्त-
रम् ॥ गां विप्रमज्जमग्निं वा प्राशयेदप्सु वा क्षियेत् ॥ २६० ॥ पिराड-
निर्वपरां केचित्पुरस्तादेव कुर्वते ॥ वयोभिः स्वादयन्त्यन्ये प्रक्षि-
पन्त्यनलेऽप्सु वा ॥ २६१

۲۵۶ - منتزہ پور باہن کال ہیشیہ بجوم کاشود مہنا جو اُد پر کہہ آئے ہیں یہ سب یوکر م کی
سہیت (دولت) ہیں -

۲۵۷ - غیون کے اُن دودھ - شوم ناکا رس بنایا ہوا مانس بے بنا ہوا سیندھانک
وغیرہ یہ سب بوجاوسے ہیشیہ کہاتے ہیں -

۲۵۸ - گوشتی شرادھ میں سترنگ کہنا چاہئے ان براہمنوں کو برا کر کے شرادھ کرنے
والا پوتر ہو کر نچت و کش و شاک کی طرف ہو کر پتروں سے یہ برد ان مانگے کہ

۲۵۹ - ہمارے کل میں دانا - وید - اولاد کی ترقی ہو شرادھانی رہے بہت دولت پور
دینے کی چیز ہوں -

۲۶۰ - سطح پنڈ و نکودے کے بعد اُن پنڈ وں کو گنویا براہمن یا بکریا اگن کو کھلا دے
یا جل میں ڈال دے -

۲۶۱ - کوئی آچاری کہتے ہیں کہ براہمن بھوجن کے بعد پنڈ وں ان کرنا چاہیے اور کوئی
آچاری اُن پنڈ وں کو پرندوں کو کھلانا اور کوئی جل یا اگن میں ڈال دیتے ہیں -

۲۵۵۔ اپر آہن کاں کنش گو بر آد سے بھوم کو شود لغتاً تیل او آرتنا۔ ان آو کا سنکار
بنگیت کے پوتر کر نیوا کے بر آہن یہ پیرا وں ستراد و ہین سہست ہین۔

सार्धवर्षिकमन्नाद्यंसन्नीयासाव्यवारिणा ॥ समुत्तजेद्रुक्ताव-
तामग्रतोविकिरन्मुचि ॥ २४२ ॥ असंस्कृतप्रसीतानां त्यागि-
नांकुलयोयिताम् ॥ उच्छिद्यं भागधेयं स्याद्दर्भेषु विकिरश्चयः
॥ २४५ ॥ उच्छेषां भूमिगतमजिह्मस्याशठस्य च ॥ रासवर्ग-
स्य तत्पित्र्ये भागधेयं प्रचक्षते ॥ २४६ ॥ आसपिराडक्रिया-
कर्म द्विजातेः संस्थितस्य तु ॥ श्रीदेवभोजयेच्छाह्वं पिराडमेकं तु
निर्वपेत् ॥ २४७ ॥ सहपिराडक्रियायास्तु कृतायामस्य धर्मतः
॥ अनर्थैवावृताकार्यपिराडनिर्वयरांसुतेः ॥ २४८ ॥ आहंमु-
क्ताय उच्छिद्यं वृषलाय प्रयच्छति ॥ समुदोनरकं याति काल-
सूत्रमवाकशिराः ॥ २४९ ॥

۲۴۲ - سب طرح کے آن سپنن وغیرہ سے ملا کر پانی ڈال کر اس اُن کو بھوجن کیے ہوئے
برہمنوں کے آگے زمین میں گش پر ڈال دے۔

۲۴۵ - جو بالک آگن دہا کرنے کے لائق نہیں تھے اور مر گئے ہیں جو نر و دشت کل
استریوں کو تیا کر کے مر گئے ہیں اُن سب کو یہ اُن جو گش پر ڈالا گیا ہے لکھا ہے۔

۲۴۶ - زمین پر جو جو ٹھکانے ہیں وہ اس کو گولک ہے مگر وہ وہ گش اور نٹ کھٹ
نہیں

۲۴۷ - برہمن کشتری ویشیہ کے منے کے دن سپنڈی کر یا کت دتو سے دیو کے
نمیت برہمن بھوجن کرادے بلکہ پریت کے نمیت ایک برہمن بھوجن کرادے اور ایک پند
۲۴۸ - سپنڈی کرنے کے بعد اناوتیا کی سترادھ کی برہمن سے کتیاہ (چھپاہ) میں بھی
پند کو پٹا دیوے۔

۲۴۹ - جو کوئی سترادھ کے اُن کو بھوجن کر کے جو ٹھکانے ٹوڑ کر دیتا ہے وہ ٹوڑ نیچے
مر گئے ہوئے کال سوتر نام نرک میں جاتا ہے۔

۲۳۴۔ شر کو بائز مے ہوئے اور کشت منہ میٹھے ہوئے اور جو تاپنے ہوئے جو بھون
کرتے ہیں وہ بھون رکشس کو پھونچتا ہے۔
۲۳۵۔ چاڑاں۔ سور۔ مرغ۔ کتا۔ جیغن والی عورت نامردیے سب لوگ برہمنوں کو
بھون کرتے ہوئے نہ دیکھیں۔
۲۳۶۔ دیو کرم یا پتر کرم میں ان سب کے دیکھنے سے سب کرم نشٹ ہو جاتی
ہیں۔
۲۳۷۔ سور سو نگھے سے مرغ پھر ہوا دینے سے کتا دیکھنے سے۔ شور تھو
سے ناش کرتا ہے۔
۲۳۸۔ کھینچ کا نا اگر چہ شرادہ کر نیو لے کا خدشہ کار بھی ہو کوئی ایک عضو رکھنے والا
کوئی عضو زیادہ رکھنے والا ان سب کو شرادہ کو مکان پر نکال دے۔
۲۳۹۔ اگر برہمن یا بھیکھاری بھون کو واسطے آئے ہوں تو نیو تے ہوئے برہمنوں
کی آگیا یا بھیکھاری شکست ہر ایک کا بچہ جن کرے۔

स्वाध्यायं श्रावयेत्यत्रेधर्मशास्त्राणि चैव हि ॥ आरव्यानानी-
तिहासांश्च पुराणानि खिलानि च ॥ २३२ ॥ हर्षयेद्वात्सरांस्तु-
द्योभोजयेच्च शनैः शनैः ॥ अन्नाद्येनामकृच्चैतान्गुरोश्च परिचो-
दयेत् ॥ २३३ ॥ व्रतस्थमपि दीहि त्रंश्राद्धेयत्वेन भोजयेत् ॥ कुत-
पंचासने दद्यात्तिलैश्च विकरे महीम् ॥ २३४ ॥ त्रीणि श्राद्धेयवि-
त्राणि दीहि त्रः कुतपस्तिलाः ॥ त्रीणि चात्र प्रशंसन्ति शौचम-
क्रोधमत्वराम् ॥ २३५ ॥ अत्युष्णं सर्वमन्नं स्याद्भुंजीरं स्तेचवाग्य-
ताः ॥ न च द्विजातयो ब्रूयुर्दात्राश्च हविर्गुराणाम् ॥ २३६ ॥ आवदु-
षां भवत्यन्नं यावदन्नं ति वाग्यताः ॥ पितरस्तावदन्नं नियाव-
न्नोक्ता हविर्गुराः ॥ २३७ ॥

۲۳۲- وہ دھرم شاستر کتھا اتھاس پھران شری سوکت ان سب کو براہمنوں کو
سناوے۔

۲۳۳- آپ بھٹین ہو کر شیریں بیانی وغیرہ سے براہمنوں کو خوش کرے جلدی
نہ کرے یہ اچھا لڑو ہے یہ اچھی کھیر ہے اس طرح سب چیزوں کا گن کہہ کر بھوجن کراوے۔
۲۳۴- لڑکی کا لڑکا اگر بہت مین بھی ہو تو اس کو کھانسی تھپیر سے شراوہ میں بھوجن
کراوے نیپالی مکھل کا آسن وے شراوہ کی زمین میں تل چھپکاوے۔

۲۳۵- شراوہ میں تین چیزیں پاک ہیں۔ ناقہ۔ نیپالی مکھل۔ تل۔ اوڑھن فیروز
کی تقریف وہ یہ ہیں پوتڑا۔ شانت و دھرتی۔

۲۳۶- براہمن لوگ یوں ہو کر نہایت گرم کھانے کو بھوجن کریں اگر کھانا میوا لالہ پھول
گن پوچھے تو بھی کچھ نہ بولیں۔

۲۳۷- جن تک کھانا گرم رہتا ہو اور کھانا میوا لے بولنے نہیں ہیں تب تک پوچھ گچھ کرنا
ہے۔

گوراں شسٹپشا کا تانہ یو دھیت مٹھ ॥ ویتھ سے تھت: پور
 بھما تھ و س ما تھ: ॥ ۲۲۶ ॥ مٹھ بھو جھن چ ویتھ مٹھ تانہ
 چ ک تانہ ॥ تھ تانہ تھ مٹھ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ ॥
 ۲۲۷ ॥ تھ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ ॥ تھ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ ॥
 تھ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ ॥ ۲۲۸ ॥ تھ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ ॥
 تھ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ ॥ ۲۲۹ ॥ تھ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ ॥
 تھ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ ॥ ۲۳۰ ॥ تھ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ ॥
 تھ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ تانہ ॥ ۲۳۱ ॥

۲۲۶ - اسی طرح سے کہ جس سے زمین میں گرنے کا پوس ایک جٹ ہو کہ جن دن شاگ
 دو دھ دی گئی مدھ کو زمین پر رکھے۔

۲۲۷ - لٹو وغیرہ و کھیر وغیرہ طرح طرح کے پھل ہول اور ہرڈ کا مانس اور پیٹے والی
 خوشبودار چیز ان سب کو بھی رکھے۔

۲۲۸ - ایک چیز ہو کہ سب چیزوں کو برہمنوں کے پاس لا کر یہ کہہ کر کہ یہ مینھا ہو کھتا ہو

۲۲۹ - رونا عفتہ کرنا جھوٹھ بولنا ان سب کو چھوڑ دے پافون سے ان کو نہ چھوے
 اور نہ اچھا چھا کر ان کو برتن میں رکھے۔

۲۳۰ - رونے سے پریت کو اور عفتہ کرنے سے دشمن کو اور جھوٹھ بولنے سے
 کتے کو اور پاتون سے چھونے سے راکش کو اور اچھا لے سے پاپی کو اور دن
 ملتا ہے۔

۲۳۱ - دھو کہ کو چھوڑ کر جو چیز برہمنوں کو اچھی معلوم ہو وہ وہ چیز دیوے اور پرانا تانہ
 کٹھا کے کیونکہ یہ باتیں پتھرون کو پیاری ہیں۔

دپیسما رواتو پیت ریر پوربھا مے و نیر و پے ت ॥ ویر و دھاپیت شرا دھ -
 سھ ک پیت رما شے ت ॥ ۲۲۰ ॥ پیتا دسھ نیر تھ سھ آجی وے آ -
 پیتا مھ ॥ پیتو سنا م س کیر تھ کیر تھ پیتا مھ ॥
 ۲۲۱ ॥ پیتا مھ و اتھ آڈھ مں جی تھ و ر و نھ ॥ کان مھ و
 س مں جاتھ سھ مے و س مھ آ رے ت ॥ ۲۲۲ ॥ تھ و دھ و اتھ و تھ و
 س و ویر تھ تھ و دھ کھ ॥ تھ و ر اڈا و پھ و تھ و ر و مھ و تھ
 و ر ۲۲۳ ॥ و ر اڈا و پھ و تھ و ر و مھ و تھ و ر ۲۲۴ ॥ و ر
 و ر تھ و ر و مھ و تھ و ر ۲۲۵ ॥ و ر تھ و ر و مھ و تھ و ر ۲۲۶ ॥

۲۲۰ - پتا کے جیتے پتے ہوئے جو پتا مہ غیر تین پرش میں انکی شرا و دھ کر پتا کے
 مہ مہن کی جگہ تپا ہی کو مہو جن کراوے اور پتا مہ پر پتا مہ کو پتہ دیوے اور دونوں کی مہن مہو جن پر پتا مہ
 ۲۲۱ - جکا پتا مہ گیا ہو اور پتا مہ جیتا ہو وہ پتا کا نام لیکر پر پتا مہ کا نام لیوے -
 ۲۲۲ - یا جسطح جیتے ہوئے پتا کو مہو جن کرا نا کہا ہے اسطرح جیتے ہوئے پر پتا مہ کو مہو جن
 کراوے پتا پر پتا مہ کو پتہ دیوے اس بات کو مں جی کے کہا ہے یا پتا مہ کی اگیا یا کر پتا مہ پر پتا مہ
 پر پتا مہ کو پتہ دیوے پتا مہ کو مہو جن کراوے -
 ۲۲۳ - ان مہنوں کے ہاتھ میں تھوڑے تھوڑے کھانے کے پتے لگا لا ہوا جو تھوڑا تھوڑا کھانے
 ہے اسکو پتا و غیرہ مہنوں کے ہاتھوں کو سہکے دیوے -
 ۲۲۴ - آپ دونوں ہاتھوں سے کھانے کی سب چیز کو ر و مہن سے باہر لکر تھوڑے کھانے
 کرتا ہوا مہنوں کے پاس آہستہ سے پڑوے -
 ۲۲۵ - ایک ہاتھ سے لائے ہوئے ان کو اسر لوگ چھین لیتے ہیں اسلئے دونوں ہاتھ
 سے لانا چاہئے -

अपसव्यमभौकत्वासर्वसाद्यविभ्रमम्॥ अपसव्येनहस्ते
ननिर्वपेदुदकंभुवि॥ २१४॥ स्त्रींस्तुतस्माद्विःशेषात्पिराडा
नक्तत्वासमाहितः॥ औदकेनैवविधिनानिर्वपेदसिरागामुख
॥ २१५॥ न्युपपिराडांस्ततस्तांस्तुप्रयतोविधिपूर्वकम्॥ तेषुद
र्भेषुतंहस्तंनिमृज्याह्योपभागिनाम्॥ २१६॥ आचम्योदकप
राद्यत्रिरायस्यशनैरस्तु॥ षड्भूतंश्चनमस्कुर्यात्पितृनेव
चमंत्रवित॥ २१७॥ उदकंनिनयेच्छेषशनैःपिराडान्तिकेषुन
॥ अवजिघ्रेच्चतान्पिराडान्यथान्युपान्नामाहितः॥ २१८॥
पिराडेभ्यस्त्वल्पिकांमात्रांसमादायानुपूर्वशः॥ तेनैवविश्रा
नासीनान्विधिवत्पूर्वमाशयेत्॥ २१९॥

۲۱۴۔ اگن ہون کو دشمن کر کے آپ بیتی ہو کر داسنے ہاتھ سے پندر کھنے کی
زمین پر جل دیوے۔

۲۱۵۔ ہون سے جو پیہر بجا ہو اس سے یقین نہ بنا کر دشمن کی طرف منہ کر کے
دھنچے ہاتھ سے کشتوں کے اوپر ان نیڈوں کو ایک جیت ہو کر دیوے
۲۱۶۔ جو برہ کرم کاڑ کے سوتر میں لکھی ہے اس کے مطابق کون پر ان نیڈوں کو دیگر
نیڈے کے تپے کا جو کشت ہے اوسکی جڑ میں ہاتھ کو پوسنے پر دھرتی پامہ وغیرہ تین پر
کی تربت کیواسطے۔

۲۱۷۔ منتر جاننے والا اتر منہ ہو کر آچن اور تین پر نامایم تیا شکست کر کے بست وغیرہ
چھار لون کو اور تیر دن کو مشکار کرے۔

۲۱۸۔ نیڈوں کے پہلے پندر کھنے کی زمین پر جو جل دیا اس پاتر میں بجا ہوا جل کر
اسکو ب نیڈوں کے پاس سے دیوے تھے ان نیڈوں کو ایک جیت ہو کر سلاستے تھے۔
۲۱۹۔ نیڈوں سے تقوڑا تقوڑا ان سلسلے سے لیکر نیو سے نیو سے چمچ پر ہون کو برہ کرم کر کے

आसनेषूपल्लप्रेषुवर्हिषस्तुष्टयकृष्टयक् ॥ उपस्थष्टोदकान्
सम्यग्विप्रांस्तानुयवेशयेत् ॥ २०८ ॥ उपवेशयतु तान्विप्राना-
सनेष्वजुषितान् ॥ गन्धैर्माल्यैः सुरभिभिरर्चयेद्देवपूर्वकम्
॥ २०९ ॥ तेषामुदकमानीय सपवित्रांस्तिलानयि ॥ अग्नौ कु-
र्यादनुज्ञातो ब्राह्मणो ब्राह्मणो सह ॥ २१० ॥ अग्नेः सोमयमा-
भ्यांचक्षत्वाप्यायनमादितः ॥ हविर्दानेन विधिवत्पश्चात्सं-
तर्पयेत्पितृन् ॥ २११ ॥ अग्निभावे तु विप्रस्य पारावेवोपपाद-
येत् ॥ यो ह्यग्निः स द्विजो विप्रैर्मन्त्रदर्शिभिरुच्यते ॥ २१२ ॥ अ-
क्रोधनाक्षुप्रसादान् च दत्त्वे तान् सुरात्मनान् ॥ लोकस्याप्यायने
युक्ताञ्छाद्देवान् द्विजोत्तमान् ॥ २१३ ॥

۲۰۸- انگ انگ کش کے آسنون پر نیوتے ہوئے براہمنون کو اسٹان اور
اچین کرا کے بھلا دے۔

۲۰۹- پہلے دیو کا راج میں نیوتے ہوئے براہمنون کی پھول والا وغیرہ سے
پوجن کرے بعد اس کے پتر کا راج میں نیوتے ہوئے براہمنون کی بھی پوجن کرے
۲۱۰- کش تل - سمیت جل کو براہمنون کو دے کر ان کی اگیا لیکر ان براہمنون
سمیت اگن میں ہون کرے۔

۲۱۱- پہلے - اگن سویم ییم ان سب کو ہبید دے کر تیجھے پتر دن کو ان وغیرہ دیو
۲۱۲- اگن نہ تو براہمن کے ہاتھ ہی میں ہون کرے جو اگن سو براہمن ہے اس بات
کو منتر جاننے والے براہمنون نے کہا ہے۔

۲۱۳- تاکر غصہ خوش رو و قدیم و ترقی عالم میں کوشش کرنے والے شراہ
کے پاتر براہمن ہی میں اس بات کو من وغیرہ رشتیوں نے کہا ہے اس لئے دیوتا و
شراہ کو براہمن کے ہاتھ میں دینا سہم ہے۔

راجتےماजनैरेवामथोवाराजतान्वितैः॥वार्यपिअज्जयादत्तम
 स्यायोपकल्पते॥२०२॥देवकार्याद्विजातीनांपितृकार्यवि
 शिष्यते॥दैवंहिपितृकार्यस्यपूर्वमाध्यायनंस्मृतम्॥२०३॥
 तेषामारक्षभूतन्तुपूर्वंदैवंनियोजयेत्॥रक्षांसिहिविलुंयंति
 आज्जमारक्षवर्जितम्॥२०४॥देवाद्यन्तंतदीहेतपित्राद्यन्नं
 तद्भवेत्॥पित्राद्यन्तंत्वीहमानःक्षिप्रंनश्यतिसान्वयः॥२०५॥
 द्युचिदेशंविचिक्तंचगोमयेनोपलेपयेत्॥रक्षिणाप्ररावंचैव
 मयत्नेनोपपादयेत्॥२०६॥अवकाशेषुचोक्षेषुनदीतीरेषुचै
 वहि॥विविक्तेषुचतुष्यन्तिहस्तेनपितरःसदा॥२०७॥

۲۰۲- ان سب پتر وں کو روپے کے برتن میں یا جس برتن میں روپا ملا ہوا
 ہوا سمیں اگر صرف پانی بھی دیوے تو لازوال خوشی حاصل ہوا۔

۲۰۳- برہمن کشتری- دیشیوں کے دیو کا رج سے پتر کا رج بڑا ہے اسوج
 دیو کا رج چلے جانے سے پتر کا رج پورا۔

۲۰۴- پتر کا رج کی رکٹا کر نیوالے دیو کا رج کو پہلے کرنا چاہئے رکٹا ہت کا رج
 کو رکٹش لے لیتے ہیں۔

۲۰۵- پتر کا رج کے آد اور انت میں دیو کا رج کرنا چاہئے اور دیو کا رج کے
 آد اور انت میں پتر کا رج کرنے والا اپنے دلش سمت جلد ناسن ہو جاتا
 ہے۔

۲۰۶- ایکانت پوتر دش کی طرف دھرت دیش کو گوبر سے پیسے۔

۲۰۷- یو بھاؤ سے شذھ بن وغیرہ جو دیش غری کے کنارے آریوں سے
 من لی ہو ایسی جگہ شراؤدھ کرنے سے پتر لوگ ہمیشہ سودہ
 رہتے ہیں۔

हेत्यदानवयक्षारांगान्धर्वोऽगरक्षसाम् ॥ सुपर्णाकिन्नराणां
चरुतावर्हिषदोऽत्रिजाः ॥ १९६ ॥ सोमयानामपिशारांश्च-
त्रियारांश्चविभुजः ॥ वैश्यानामाज्ययानामश्वद्वारांतुमुका-
लिनः ॥ १९७ ॥ सोमपास्तु कवेः पुत्राहविस्मन्तोऽङ्गिरः सुताः
पुलस्त्यस्याज्ययाः पुत्रावसिधस्य मुकालिनः ॥ १९८ ॥ अग्न-
निदग्धानग्निदधान्काव्यान्वर्हिषदस्तथा ॥ अग्निध्यातां
असौम्यांश्चविशारांमेवनिर्हिषोत् ॥ १९९ ॥ यस्तेतुगुरा
मुरव्याः पितृणापरिकीर्तिताः ॥ तेषामयीहविजेयं पुत्रयौ
अमनस्तकम् ॥ २०० ॥ ऋषिभ्यः पितरो जाताः पितृभ्यो देवमा-
नवाः ॥ देवेभ्यस्तु जगत्सर्वं चरं स्थारावनुपूर्वशः ॥ २०१ ॥

۱۹۶ - دیتیہ - دانو - نیکش گندھرب - ارگ - کشش - سپرن - کتر - ان سبک

پتر اتر کا پتر برہتہ -

۱۹۷ - برہمن - کشری - دیشیہ - شوہ - این سبک کے پتر برہتہ سلسلہ سووم پر

ہو - بھج - آجب - سکالی میں -

۱۹۸ - گور - اکر - پلہ - کشش کے پتر برہتہ سلسلہ سووم پر - ہوز بھج - ایچ

سکالی میں -

۱۹۹ - اگن - وگوہ - اگن - وگدھ کا دیشہ برہتہ اگن شوات سووم پر برہتہ اگن

پتر میں -

۲۰۰ - یہ سب پتر مقدم میں انھوں کے بیٹے اور پوتے بہت ہیں -

۲۰۱ - شیون پتر پیا - امو کے میں اور پتر دن سے دیوتا اور آدمی پیدا ہو سکے

میں - دیوتوں سے ساکن و متحرک جاندار لینے تمام عالم پیدا ہوا

ہے -

आमंत्रितस्तु यः आदेष्टव्यत्वा सह मोदते ॥ रातुर्यदुष्कृतं किं
चित्तत्सर्व्वप्रतिपद्यते ॥ १६१ ॥ अक्रोधनाः शौचपराः सततं
ब्रह्मचारिणः ॥ न्यस्तशस्त्रामहाभागाः पितरः सूर्यदेवताः १६२
यस्मादुत्पत्तिरेतेषां सर्व्वेषां मध्यशेषतः ॥ ये च येरूपचर्याः स्युः
नियमैस्तान्निबोधत ॥ १६३ ॥ मनोर्हैरायगर्भस्य ये मरीच्या-
दयः सुताः ॥ तेषां मृषीणां सर्व्वेषां पुत्राः पितृगराः स्मृताः ॥
१६४ ॥ विराट्सुताः सोमसदः साध्यानां पितरः स्मृताः ॥ अग्नि-
व्याताश्च देवानां मरीचा लौकविश्रुताः ॥ १६५ ॥

۱۹۱- شراؤہ کرم میں نیوتا پاکر جویرا مین شودر کی استری سے بھوک کرتا ہے وہ شراؤہ
کرنیوالے کے سپورن پاپ کو پاتا ہے۔

۱۹۲- پتر لوگ کرو دھ سے رہنڈ باہر اور بھینڈ سے پوترراگ اور ڈولیش سے رہت
ایکٹر بھوک سے رہت لڑائی سے وودیا وغیرہ آٹھ کن سے بھرے ہوئے مہا بھائی
انا دیوتار پین اسوجہ سے شراؤہ کرنے والا اور شراؤہ مین بھوجن کرنیوالا دوکو
کرو دھ سے رہت ہوں۔

۱۹۳- جسٹس ان سب کی پالیسی، اور جن نمون سے جکاسیوں، ان سب کو نیچے
بیچے۔

۱۹۴- برہما کے پتر بیجے جن جی کے مزج وغیرہ جو پتر مین تنھون کے جو پتر مین سو پتر
کن مین۔

۱۹۵- سادھ کن کے پتر پراٹ کے پتر رسوم سدھین دیوتوں کے پتر گشتوات ہیں
سب مزج کے پتر مین اور لوگ مین پرشادھ مین۔

۱۹۶- یعنی حصول مراد کی تمنا۔

۱۹۷- یعنی مارد نہ حاصل ہونے میں ریخ۔

त्रिरात्रिकेतः पंचाग्निसुपर्णाः षडंगवित् ॥ ब्रह्मदेयात्म-
सन्नानोज्येष्ठसामगरवच ॥ १८५ ॥ वेदार्थवित्प्रवक्ताचब्रह्म-
चारीसहस्रदः ॥ शतायुश्चैवविज्ञेयाब्राह्मणाः पंक्तिपावनः
॥ १८६ ॥ पूर्वद्युरपरेद्युर्वाश्चाद्वकर्मरायुपस्थिते ॥ निमंत्रये-
तत्त्ववरान्सम्यग्विप्रान्यथोदितान् ॥ १८७ ॥ निमंत्रितोद्विजः
पित्र्येनियतात्माभवेत्सदा ॥ नचछन्दास्यधीयीतयस्यश्चाद्वं-
चतद्भवेत् ॥ १८८ ॥ निमंत्रिताह्निपितरउपतिष्ठन्तिताद्विजा-
न् ॥ वायुवच्चानुराच्छन्ति तथासीनानुपासते ॥ १८९ ॥ केति-
तस्तुयथान्यायंहव्यकव्येद्विजौत्तमः ॥ कथंचिरप्यतिक्राम-
न्यायः सूकरतां व्रजेत् ॥ १९० ॥

۱۸۵۔ تر تا چائیت۔ اگر نہ ہو تری۔ تر سپرین بیا کرین وغیرہ چھ ہنگون کا پر ہنے والا برہم
دواہ سے پیدا ہوا ستم وید کے آرنیک بھاگ کو پٹھنے والا چھ نکت پوتر کر نیو ہیں
۱۸۶۔ جہدار ہتھ کا جاننے والا اور کٹنے والا برہم چارمی اور ہزار گنو دینے والا شوبہیں کا
ہو سو نکت کو پوتر کر نیو والا ہے۔

۱۸۷۔ ستر اوہ کرنے سے ایک دن پہلے یا اسی دن تین سے زیادہ اچھے برہمن ملکیں
توانگو نیوتا وینا ملکیں تو ایک یا دو یا تین کو بھی نیوتا وینا چاہئے۔
۱۸۸۔ نیوتا پا کر براہمن اس رات دن میں استری سے بھوگ کرے اور دید کو بھی نہ پرے
اور شتر اوہ کر نیو والا بھی یہ دونوں کرم نکرے۔

۱۸۹۔ نیوتا پاتے ہوئے براہمن کے پاس پتر لوگ کھڑے رہتے ہیں اور بصورت ہوا
ہو کر براہمن کے پیچھے پیچھے چلتے ہیں۔

۱۹۰۔ دو کرم اور پتر کرم میں نیوتا پا کر براہمن اگر کسی طرح بھو جن نکرے تو اس پاپ
دو گنرت جنم میں سوز ہوتا ہے۔

سوم विक्रयिरो विद्याभि वजे पूयशो गितम् ॥ न च देव त के दत्त
म प्रतिष्ठन्नुवाहु यौ ॥ १८० ॥ य च वा गिज के दत्त ने हना मु व्रत ह
वेत ॥ भस्मनी बह तं हव्यं तथा पो न भवे द्विजे ॥ १८१ ॥ इतरेषु
त्वयां तेषु यथो हि द्वेष्य साधुषु ॥ मे हो स्तुब्धः सां समज्जा स्थि-
व दन्त्यन्तं मनीषिराः ॥ १८२ ॥ अयां तथो य ह ता यं क्तिः पाव्यं
ते ये हिं जी त्त मेः ॥ तान्नि बो धत का र्त्तव्ये न हि ना भ्या न्यं क्ति पा-
वनात् ॥ १८३ ॥ अग्राः सर्वेषु वेदेषु सर्व प्रवचनेषु च ॥ श्रोत्रि-
यान्वय जा श्वैव विज्ञेयाः पंक्ति पाचनाः ॥ १८४ ॥

۱۸۰۔ سوم کتا کے بیچنے والے برہمن کو دان دینے سے دانا دوسر جنم میں غلینا کھائیا
جا نور ہوتا ہے اور اسپرچ جو کالے کیے علج کر کے والے برہمن کو دان دینے سے دانا دوسر
جنم میں خون اور سپرچ پینے والا جا نور ہوتا ہے اور مردوری لیکر تین برش تک یو مورت کی
پو جا کر نیوالا برہمن اور سپرچ لینے والے برہمن کو دان دینے سے دان کا پھل نہیں ہوتا۔
۱۸۱۔ بنیا کے کرم سے جینے والے برہمن کو دان دینے سے اس لوک اور بر لوک میں دان کا
پھل نہیں ہوتا اور پہلے پت کو چھوڑ کر دوسرا پت کر نیوالی جو سترے، اسپن دوسر پت کر
جوڑ کا پیدا ہوا اسکو دان دینا کیسا ہے جیسے راکھ میں ہون کرنا۔

۱۸۲۔ جو برہمن نیگت میں بھلانے کے لائق نہیں ہیں اور کو دان دینے سے دوسر جنم
میں دانا سینہ کا گوشت و خون و ہڈی وغیرہ کھائیوا لا جا نور ہوتا ہے۔
۱۸۳۔ جو نیگت چور وغیرہ برہمنوں سے دوشٹ ہوا اسکو پوتر کر نیوالے جو برہمن ہیں
انکو سنو۔

۱۸۴۔ جس کل میں دشن برش تک ویدا ویشا ستر کا پڑھنا اور پڑھنا چلا آیا ہے اس
کل میں پیدا ہوا اور چار وید کے چھ انگ دیا کرن وغیرہ کو پڑھا سکتا ہو وہ برہمن
نیگت کا پوتر کر نیوالا ہے۔

अपांक्तदानेयोदातुर्भवत्पूर्वकलोदयः॥ देवेह विधिपित्र्येवा
तस्य वक्ष्याम्यशेषतः॥ १६६॥ अब्रतैर्यद्विज्ञैर्भुक्तं परिवेत्नादि-
भिस्तथा॥ अपांक्तैर्यदन्ये च तद्वैरक्षांसि भुंजते॥ १७०॥ दारा
ग्निहोत्रसंयोगं कुरुते योऽग्रजे स्थिते॥ परिवेत्ता स विज्ञेयः प-
रिवित्तिस्तु पूर्वजः॥ १७१॥ परिवित्तिः परिवेत्ता यथा च परि-
विद्यते॥ सर्वे तेन रक्षं याचिरा त्वया च कथंचमाः॥ १७२॥ धा-
तुर्धृतस्य भार्यायां योऽनुस्येत कामतः॥ धर्मो राापि नियु-
क्तायां स ज्ञेयो दिधिषु पतिः॥ १७३॥ परदारे सुजायेते द्वौ सुतौ
कुराडगोलको॥ यत्पौ जीवति कुराडः स्यान्मृतमत्तोरंगोल-
कः॥ १७४॥

۱۶۹- دیو کرم یا پتر کرم میں منڈگ براہمنوں کو بھوجن کرانے سے جو پھل پرلوک میں ملتا
اسکو ہم (یعنی بھوک جی کہتے ہیں کہ

۱۶۰- اوپر کے ہوئے منڈت براہمن جو بھوجن کرتے ہیں وہ رکشش بھوجن کرتے ہیں
یعنی کچھ پھل ہمیں ہوتا۔

۱۶۱- بے دوا ہے سکے بڑے بھائی کے ہوئے ہوئے چھوٹا بھائی دواہ کرے اور اگن
ہو تر کرے تو بڑا بھائی پرست کھاتا ہے اور چھوٹا بھائی پرست کھاتا ہے۔

۱۶۲- پرست- پرستیا- پرستیا- (یعنی جس کنیا سے دواہ ہوا سو) اور اس کنیا کو دیو والا
اور دواہ کرانے والا- براہمن یہ پانچوں ترک میں جاتے ہیں۔

۱۶۳- فرے ہو بھائی کی استری کے ساتھ بھوک کرنے کی بدھ جو آگے کیٹنگے
بدھ سے بھی اپنی اچھیا سے بھوک کر نیوالا دودھ شوت کھاتا ہے۔

۱۶۴- پر استری میں دو پتر ہوتے ہیں ایک کنڈ دوسرا گولک استین حیوت پت
دالی کا بیٹا کنڈ کھاتا ہے اور فرے پت دالی کا بیٹا گولک کھاتا ہے۔

स्रोत्रसांभेदकोयश्चतेषां चावसरोरतः ॥ ग्रहसंवेशकोद्भूतो वृक्षारो-
पकणवच ॥ १६३ ॥ अक्कीडी श्येनजीवी च कन्यादूषकणवच ॥
हिंस्रो हयलहृत्तिश्च गरानां चैव याजकः ॥ १६४ ॥ आचारही-
नः क्षीयश्च नित्यं याचनकस्तथा ॥ क्षयिजीवी क्षीपरी च स-
द्भिर्निन्दनणवच ॥ १६५ ॥ ओरभिको माहिषिकः परशूर्वाय-
तिस्तथा ॥ श्रेतनिर्घातकश्चैव वर्जनीयाः प्रयत्नतः ॥ १६६ ॥
एतान् विगर्हिताचारानयां क्त्यान् विजाधमान् ॥ हिजातिप्रव-
रो विद्यानुभयत्र विवर्जयेत् ॥ १६७ ॥ ब्राह्मणस्त्वनधीयानस्त-
राग्निरिव साम्यति ॥ तस्मै हव्यनरातव्यं नाहमस्मनि हूयते
॥ १६८ ॥

۱۶۳- بندھے ہوئے پانی کو دوسرے مقام پر لیجائے والا۔ بہتے ہوئے پانی کو روکنے والا
پیشہ ہماری سے اوقات بسر کر نیوالا۔ دوت۔ مزدوری لیکر درخت لگانے والا۔
۱۶۴- کتوں سے کھیل کر نیوالا۔ بازو غیر ہر پر نہ سے اوقات بسر کر نیوالا۔ گواہی کیسیا سو
بھوک کر نیوالا۔ جو مارنے والا۔ سوڑوان سے اوقات بسر کر نیوالا۔ بہت آرمیوں کو لپیٹ کر نیوالا
۱۶۵- آچار نہ رکھنے والا۔ نامرد۔ ہر روز مانگنے والا۔ کھیتی سے اوقات بسر کر نیوالا۔ موٹا
پاکون والا اچھے لوگوں سے نہ پایا نیوالا۔
۱۶۶- بھینس بھینس سے زندگی بسر کر نیوالا۔ اپنے شوہر کو چھوڑ کر دوسرے شخص سے شادی
کر نیوالی جو عورت اسکا دوسرا شوہر مزدوری لیکر مردہ کو بھوکنے والا۔
۱۶۷- بے سب مذک آچار والے میں براہمنوں میں اومہم میں نیکن میں بھائی
لائق بین میں۔ ان سب کو دیتا یا پتہ گرم میں بھوجن نہ کراوے۔
۱۶۸- جیسے چھوس کی آگ جھٹ پٹ بکھ جاتی ہے اس طرح مور کھیر میں بڑا سیلے تیار اور
کشیہ اسکو نہ دینا چاہیے کیونکہ راکھ میں ہون بہن ہو سکتا۔

अकारणापरित्यक्तामातापित्रोः गुरोस्तथा ॥ ब्राह्मेर्यो नैश्वस-
स्वन्धैः संयोगं पतितैर्गतः ॥ १५७ ॥ अगारदाहीगरदः कुण्डा-
शीसोमविक्रयी ॥ समुद्रयायी बन्दी च तैलिकः कूटकारकः ॥
१५८ ॥ पित्रा विवदमानश्च कितबो मध्ययस्तथा ॥ पापरोम्यमि-
शस्तश्च दाम्बिको रसविक्रयी ॥ १५९ ॥ धनुः शराराणं कर्त्ता च-
यश्चाग्नेदिधिधूपतिः ॥ मित्रमुक्कधूतवलिश्च पुत्राचार्यस्तथैव
च ॥ १६० ॥ भ्रामरीगराडमाली च श्वित्र्ययोऽपि सुनस्तथा ॥ उन्म-
त्तोऽन्धश्च वर्याः स्युर्वेदनिन्दकश्च वच ॥ १६१ ॥ हस्तिगोश्चोद्-
दमको नक्षत्रैश्च जीवति ॥ पक्षिराण्यो बको यश्च शुद्धाचार्य-
स्तथैव च ॥ १६२ ॥

۱۵۸۔ اے درویش! تیرا گھر تو ترک کر نیوالا تپت پڑھنے والا تپت کو پڑھانیو الا تپت سے وہ غیر رشتہ منسوبی
۱۵۹۔ گھر میں لگ لگائیو الا زہر دینے والا گند کا آن کھانیو الا سو مٹا کا بجنے والا سمدر میں
جانیو الا ہندی تیل کے واسطے تیل وغیرہ پینے والا یہی وہ بکنے والا۔
۱۶۰۔ باپے لڑائی کر نیوالا آپ پانسہ کھیلا نہیں جانتا اور اپنے واسطے دوسرے کو پانسہ
کھلا نیوالا۔ شراب پینے والا۔ کوڑھی افسوس بہانے دھرم کرنے والا رشتہ بجنے والا۔
۱۶۱۔ تیرا کمان رکھنے والا بڑی سگی بہن کی شادی ہو کر بغیر چوٹی بہن سے شادی کر نیوالا دوست
دشمنی کر نیوالا۔ قمار بازی سے اوقات بسر کر نیوالا بیٹھے پڑھنے والا۔
۱۶۲۔ مری گند مالا۔ سفید۔ کوڑھ اور ان روگوں میں سے کوئی ایک دگر کھنے والا کھوٹا آدمی
دیوانہ۔ اندھا۔ دیکر کی نند کر نیوالا۔
۱۶۳۔ ہاتھی پیل۔ اونٹ۔ گھوڑا ان سب کو بدھیا کر نیوالا۔ خوش و ویسا اوقات بسر کر نیوالا
پرند پالنے والا۔ لڑائی کے واسطے علم اسلحہ سکھائیو الا۔
یہ یعنی باپ کے نزلے بنا پائی کا آن کھانیو الا۔

رघामन्यतमो यस्य भुजीत आद्वیجی: ॥ पितृणां तस्य हृदिः
 स्याच्छाश्वती सा प्रयोरुषी ॥ १४६ ॥ सवैप्रथमः कल्पः प्रदाने
 हव्यकव्ययोः ॥ अनुकल्पस्त्वयं ज्ञेयः सरासज्जिनुद्धितः ॥ १४७
 ॥ मातामहं मातुलं च स्वस्त्रीयं च सुरंगुरुम् ॥ दौहित्रं चित्पतिं
 बन्धुमन्निम्याज्यौ च भोजयेत् ॥ १४८ ॥ न ब्राह्मणां परोक्षे तदेव
 कर्म शिधर्मवित् ॥ पितृकर्म शितु प्राप्ते परोक्षे तत्प्रयत्नतः ॥
 १४९ ॥ ये स्तेनपतितक्ती वा ये च नास्तिकवृत्तयः ॥ तान् हव्यक-
 व्ययोर्विप्राननर्हान् नुरव्वीत् ॥ १५० ॥ जटिलं चानधीयानं
 दुर्वलं कितवन्तथा ॥ याजयन्ति च ये पूगांस्तांश्च आद्वेन भो-
 जयेत् ॥ १५१ ॥

۱۴۶۔ ان دید پانچویں میں ایک کو بھی اگر پوجا کر کے شرادھ میں بھوجن کرا دے تو
 سات برس تک پتر دن کی تربت ہوتی ہے۔

۱۴۷۔ ہمیشہ اور گنیہ ان دونوں کے دان میں مکھیہ پکیش کو کہا بگن پکیش کو جسے اچھے
 لوگوں نے اختیار کیا ہے کہتے ہیں۔

۱۴۸۔ نانا۔ ماما۔ بھائی۔ ششتر۔ دو یا گرو۔ بیٹی کا بیٹا۔ دانا۔ موشی کا بیٹا گنیہ کرنا بیٹا
 جھان۔ ان دشتو کو مکھیہ پکیش کے منوں میں بھوجن کرانا چاہئے۔

۱۴۹۔ دیو کرم میں براہمن کا امتحان نہ لینا چاہئے مگر تپہ کرم میں حکمت علی سے براہمنوں
 کا امتحان لینا چاہئے۔

۱۵۰۔ جن براہمنوں کو من جی نے شرادھ بھوجن کرانے کے لائق نہیں کہا ہے وہ ہیں
 چور۔ مہاپاتی۔ نامزد (ناتک)۔

۱۵۱۔ برہم چاری ٹورکھ۔ ناقص چرمے والا۔ جوا کھیلنے والا۔ بہت آدمیوں کو گنیہ
 کرانے والا۔

यः संगतानि कुरुते मोहाच्छादेन मानवः ॥ स स्वर्गाद्यवतेलो
काच्छादमित्रोद्दिनाधमः ॥ १४० ॥ संभोजनी साभिहितापेशा
चीरसिरादिजैः ॥ इहैवास्ते तु सालोके गौरन्धेवैकवेशमनिः ॥
॥ १४१ ॥ यथासिरोबीजमुद्धानवाप्तालभतेफलम् ॥ तथाऽन्त-
चेहविर्दत्तानदातालभतेफलम् ॥ १४२ ॥ दाहन्त्यतिप्रहीतं-
श्रुकुरुतेफलभागिनः ॥ विदुषेदसिरांस्त्वाविधिवत्तेत्यचे-
हच ॥ १४३ ॥ कामंश्चाद्वैर्चयेन्मित्रं नाभिरूपमपित्वरिम् ॥
द्विषताहिहविर्भुक्तं भवति प्रेत्य निष्फलम् ॥ १४४ ॥ यत्नेनभो
जयेच्छादेवहृद्वंशेऽपारगम् ॥ शाखान्तगमथाध्वयुं हृदोग-
त्तसमाप्तिकम् ॥ १४५ ॥

۱۴۰- جو براہمن شتر او دھ میں بھوجن ہی کیواسطے مٹر تاکر تا ہے وہ سورگ لوک سے
بکھر شٹ ہوتا ہے اور وہ براہمنوں میں ادھم ہے۔
۱۴۱- ایسا بھوجن پشچون کا ہے اسی لوک میں پھل ایک ہے جطرح اندھی گنا ایک ہی گھڑ میں
رہ سکتی ہے اسی طرح وہ بھوجن اسی لوک میں رہتا ہے پر لوک میں کام نہیں آتا۔
۱۴۲- جطرح اوسر زمین میں بیج بونے والا پھل نہیں پاتا اسی طرح مٹر کھ براہمن کو دیتا
کی چیز بھوجن کرانے سے داتا پھل نہیں پاتا۔
۱۴۳- پتہ براہمن کو برہم پورک دکتا دینے سے دینے والا اور لینے والا دونوں
پھل کو پاس میں اس لوک میں بھی اور پر لوک میں بھی
۱۴۴- شتر او دھ میں مٹر کو بھوجن کرانا کچھ مضائقہ نہیں مگر شتر اگر شیت بھی ہو تو بھی اسکو
بھوجن نہ کرنا کیونکہ اسکے بھوجن کرنے سے پر لوک میں داتا پھل نہیں پاتا ہے
۱۴۵- دیکھ دو بھاگ میں ایک مٹر بھاگ دوسرا براہمن بھاگ۔ رگ دیکھ دو دنوں بھاگ یا
یجر دیکھ دو دنوں بھاگ یا سمپور یا بھاگ کو پھر ہو تو ایسے براہمن کو میں پور دکتا شتر او دھ میں بھوجن کراد

ज्ञाननिष्ठाद्विजाः किंचित्तपोनिष्ठास्तथापरे ॥ तपःस्वाध्या
यनिष्ठाश्चकर्मनिष्ठास्तथापरे ॥ १३४ ॥ ज्ञाननिष्ठेयुक्कव्यानि
प्रतिष्ठाप्यानियत्नतः ॥ हृद्यानितुयथान्यायंसर्वेष्वेवचतुर्ष्व
पि ॥ १३५ ॥ अश्रोत्रियः पितायस्यपुत्रः स्याद्देदपारगः ॥ अश्रो
त्रियोवापुत्रः स्यात्पितास्याद्देदपारगः ॥ १३६ ॥ ज्यायांसमन-
योर्विद्यायस्यस्याच्छ्रोत्रियः पिता ॥ मंत्रसंपूजनार्थं त्सुसत्का
रमितरोऽर्हति ॥ १३७ ॥ नश्चाद्देभोजयेन्मित्रंधनैः कार्योऽस्यसं
ग्रहः ॥ नारिन्मित्रंयंविद्यात्तश्चाद्देभोजयेद्विजम् ॥ १३८ ॥ य-
स्यमित्रप्रधानानिश्चाद्दानीचहवींषिच ॥ तस्यप्रेत्यफलं ना-
स्तिश्चाद्देयुचहविःसुच ॥ १३९ ॥

۱۳۴ - چار طرح کے براہمن ہیں - گیانی - تپیوٹی - دید پانٹھی - کرم
کانڈی -

۱۳۵ - پتروں کے دینے لائق چیز کو گیانی براہمن کو دینا چاہیے اور دیوتوں کے
دینے لائق چیز کو چارو نہیں ہے جو ملے اُسکو دینا چاہیے -

۱۳۶ - جبکا باپ دید پانٹھی ہو اور آپ مورکھ ہو یا آپ دید پانٹھی ہو اور باپ مورکھ
ہو تو -

۱۳۷ - ان دونوں میں جبکا باپ دید پانٹھی ہو وہ بڑا ہے اور دوسرا یعنی ٹیپیٹھنے کو
ستکار کے لائق ہے

۱۳۸ - مشرادھ میں تتر براہمن کو بھوجن نہ کر اوسے کچھ نقدی وغیرہ وکرا طواری کر دے
بلکہ جو براہمن نہ دوست ہو نہ دشمن اُسکو بھوجن نہ کرے -

۱۳۹ - جس کسی کو دیو یا پتر کرم میں تتر ہی بھوجن کرتا ہے اُسکو بھوجن کرانے کا پھل
پر توک میں نہیں ہوتا -

اُپنی پانی بے دے پانی نہ کھانیا نہ کھانیا ॥ اُپنی پانی بے دے پانی نہ کھانیا نہ کھانیا ॥
 پانی بے دے پانی نہ کھانیا نہ کھانیا ॥ ۱۲۵ ॥ سب کو کھانیا نہ کھانیا نہ کھانیا ॥
 پانی بے دے پانی نہ کھانیا نہ کھانیا ॥ ۱۲۶ ॥ پانی بے دے پانی نہ کھانیا نہ کھانیا ॥
 پانی بے دے پانی نہ کھانیا نہ کھانیا ॥ ۱۲۷ ॥ پانی بے دے پانی نہ کھانیا نہ کھانیا ॥
 پانی بے دے پانی نہ کھانیا نہ کھانیا ॥ ۱۲۸ ॥ پانی بے دے پانی نہ کھانیا نہ کھانیا ॥
 پانی بے دے پانی نہ کھانیا نہ کھانیا ॥ ۱۲۹ ॥ پانی بے دے پانی نہ کھانیا نہ کھانیا ॥
 پانی بے دے پانی نہ کھانیا نہ کھانیا ॥ ۱۳۰ ॥ پانی بے دے پانی نہ کھانیا نہ کھانیا ॥
 پانی بے دے پانی نہ کھانیا نہ کھانیا ॥ ۱۳۱ ॥ پانی بے دے پانی نہ کھانیا نہ کھانیا ॥
 پانی بے دے پانی نہ کھانیا نہ کھانیا ॥ ۱۳۲ ॥ پانی بے دے پانی نہ کھانیا نہ کھانیا ॥
 پانی بے دے پانی نہ کھانیا نہ کھانیا ॥ ۱۳۳ ॥

- ۱۲۸۔ دیوتا یا پتروں کے نام جو چیز دینا ہو وہ دینا پائٹی ہے پوجیہ براہمن کو دے کیونکہ ایسے براہمن کو دینے سے مایہ پھل ہوتا ہے۔
- ۱۲۹۔ دیوتا یا پتروں میں ایک بھی پتہ براہمن کو بھوجن کرانے سے بڑا پھل ہوتا ہے اور بہت سے نور کھ براہمن کے بھوجن کرانے سے دیا پھل نہیں ہوتا۔
- ۱۳۰۔ دور سے دید پڑھنے والے براہمن کی پرکشا کرنا چاہیے کیونکہ دیوتا اور پتروں کی چیز کا لینے والا وہی ہے۔
- ۱۳۱۔ دس لاکھ نور کھ براہمن کے بھوجن کرانے سے جو پھل ہوتا ہے وہی پھل پتروں کے جاننے والے ایک براہمن کے بھوجن کرانے سے ہوتا ہے۔
- ۱۳۲۔ دیوتا یا پتروں کے دینے کی چیز گیانی براہمن کو دینا چاہیے کیونکہ خون سے بھرا ہوا خون ہی سے دھونے سے صاف نہیں ہوتا۔
- ۱۳۳۔ دیوتا یا پتروں کے ان کے جتنے گراس نور کھ براہمن کو بھوجن کرتا ہے اتنے شراہہ کرنیوالا آگ سے گرم کیے ہوئے لوہے کے پتہ اور دو دھارا شش کو بھوجن کرتا ہے۔

۱۴۷۔ اداوش میں شتر آدم کو لے کر لگا ابا کا رہتا ہے جو فاضل کے پتر لوگ شتر آدم
کرتے والے کو گن۔ بیٹا۔ پوتا۔ دولت ذخیرہ سب کچھ دینے میں اسے شتر آدم ضرور کرنا چاہیے

उपासते ये गृहस्थाः परपाकमबुद्धयः ॥ तेन ते प्रेत्य पशुतां व्रज-
न्यन्नादिशायिनाम् ॥ १०४ ॥ अप्रशोद्योऽतिथिः सायं सूर्योदो
गृहमेधिना ॥ काले प्राप्नस्व कालेवानास्थानं नृहेवसेत् ॥
१०५ ॥ न वै स्वयं तदनीयारतिथिं यन्नभोजयेत् ॥ धन्यं यशस्य
मायुष्यं स्वर्गं वा तिथिपूजनम् ॥ १०६ ॥ आसनावसथौ शय्या
मनुव्रज्यामुपासनाम् ॥ उत्तमे घृतं मंजुकर्षाद्धीने हीनं समे समम्
॥ १०७ ॥ वैश्वदेवे तु निर्वृत्ते यदन्योऽतिथिराव्रजेत् ॥ तस्याप्य-
न्यथाशक्तिप्रदद्यान्नबलिं हरेत् ॥ १०८ ॥ न भोजनार्थं स्वेनि-
प्रः कुलगोत्रे निवेदयेत् ॥ भोजनार्थं हितेशं सन्वान्ताशीत्युच्य-
ते बुधैः ॥ १०९ ॥

- ۱۰۴۔ جو کہ سہ پہرے بھوجن کی آپنا اگیا تا سے کرتے ہیں اسکے کرنے سے
پر لوک میں ان دینے والے کے پیش ہوتے ہیں۔
۱۰۵۔ سورج ڈوبے آتھے آیا ہو تو اسکا
یا بے وقت مگر بغیر کھانا کھائے گھر بیٹے ان کو کھانا پانی ضرور دینا چاہیے وقت پر آوے
۱۰۶۔ جو چیز آتھے بھوجن کرے میں بڑھنے پاوے
۱۰۷۔ جو آدمی دوسرا کھلاوے اسکو آپ بھی نہ کھائے آتھے کو کھانا کھانا دولت
۱۰۸۔ آسن گھرہ شیا پیچھے چلنا۔ سیوا ان سب کو اتم مدھم میں پیش میں
۱۰۹۔ اتم بھیم میں کرنا چاہیے۔
۱۰۸۔ بیشو دیو کرم کرنے کے پیچھے دوسرا آتھے آوے تو اسکو تیھا شکت ان دیو
بل کرم دکرے۔
۱۰۹۔ بھوجن کے لئے براہن اپنا محل اور گوترو کے اگر کے تو اگلی ہوئی خیر کا کھانا
ہے اس بات کو سپد تو ن نے کہا ہے

سंप्राप्ताय त्वतिथये प्रदद्यादासनोदके ॥ अन्नं चैव यथा शक्तिस-
त्कृत्य विधिपूर्वकम् ॥ ६६ ॥ शिलानस्युच्चतो नित्यं पंचाग्नीन-
पि जुह्वतः ॥ सर्वसुकृतमादत्ते ग्राह्यराशौ न चितो वसन् ॥ १०० ॥
तृणानि भूमिरुदकं वा दद्यात्तु र्थी च सूक्ष्मता ॥ सतान्यपि सतांगे हे-
नोच्छिद्यन्ते कदाचन ॥ १०१ ॥ एक रात्रं तु निवसन्नतिथिर्ब्राह्म-
राः स्मृतः ॥ अनित्यं हि स्थितो यस्मात्तस्मादतिथिरुच्यते १०२
॥ नैकग्रामीरामतिथिं विप्रं सांगतिकं तथा ॥ उपस्थितं ग्रहे वि-
द्याद्भार्यायन्नाग्रयोऽपि वा ॥ १०३ ॥

۹۹- جو آتمہ آسے آیا ہوا اسکو اپنی شکست کے موافق بدھ پوروک سن
آن جل آور سے دیوے۔

۱۰۰- جو پراہمن آتمہ بغیر پوجن پائے گھر میں رہے تو گھر والا اگرچہ پراہمنی
ہو اور شل اسچھ سے اوقات بسر کرتا ہو اور بیچ اگن کو سیون کرتا ہو تو بھی اسکا
سکرت جانا رہتا ہے۔

۱۰۱- گھاس زمین پانی شیرین زبانی ان چیزوں سے اچھے لوگوں کا گھر کبھی
خالی نہیں رہتا۔

۱۰۲- ایک رات کے رہنے والے کو آتمہ کہتے ہیں اسلئے آتمہ کو سوا
ایک رات کے ہر روز رہنا چاہئے۔

۱۰۳- جس گھر آتمہ کے گھر استری اور اگن موجود ہو اسکے گھر وشوے دیو کے
سے آتمہ آیا ہو تو آتمہ ہے مگر ایک گائون کا رہنے والا اور بچتر سہنی کتھا کہنے
والا آتمہ نہیں کہا جاتا ہے۔

۱۰۴- کھیتی کر نیوالے جب غلہ کھیت سے کاٹ کر لیا میں اس سے غلہ زمین میں لگا کر بھاتا ہے اور اسکو شے کہتے ہیں
۱۰۵- بنیاوگ بنارہن غلہ کا دھیر لگاتے ہیں اور تمام کو بو غلہ اٹھا لیا تے ہیں اس سے غلہ گرڑ پڑتا ہے اور وہ اچھے کھاتا ہے۔

एवंयः सर्वभूतानि ब्राह्मणो नित्यमर्चति ॥ स गच्छति परं स्था-
नं तेजो मूर्तिं पथर्जुना ॥ ६३ ॥ कृत्वे तद्वलिकर्मैव मतिं यिं पूर्व-
माशयेत् ॥ भिक्षां च भिक्षवे दद्याद्विधिवद्ब्रह्मचारिणो ॥ ६४ ॥ य-
त्पुरायफलमाप्नोति गां रत्वा विधिवद्गुरोः ॥ तत्पुरायफलमाप्नो-
ति भिक्षां रत्वा द्विजो गृही ॥ ६५ ॥ भिक्षामप्युदपात्रं वा सत्कृत्य वि-
धिपूर्वकम् ॥ वेदतत्त्वार्थविदुषे ब्राह्मणा यो ययाशयेत् ॥ ६६ ॥ न-
श्यन्ति हव्यकव्यानि नाराणामविजानताम् ॥ भस्मीभूतेषु विप्रे-
षु मोहाद्वृत्तानि राहभिः ॥ ६७ ॥ विद्यातपःसंयुक्तेषु ब्रह्मं विप्रमुखा-
ग्निषु ॥ निस्तारयति दुर्गाच्च महतश्चैव किल्बिषात् ॥ ६८ ॥

۹۳- اسطرح جو برہمن ہر روز سب جیوؤن کی پوجا کرتا ہے وہ تیج روپ ہو کر کوئل
مارگ سے بڑے آسمان کو جاتا ہے۔

۹۴- اسطرح مل کرم کر کے گرو جن کے بھوجن کے پہلے اہتیمہ کو بھوجن کرادے
اور برہمن چاری بھیکھاری کو بھیکھ دے۔

۹۵- بدھ پور دک گرو کو گنو دینے سے جو پھل ہوتا ہے وہی پھل بھیکھاری کو
بھیکھ دینے سے گرو ہتیمہ آشرم والا پاتا ہے۔

۹۶- وید کا بدھانت اور ارتھ جاننے والے براہمن کو اور سے بدھ پور دک
بھکت یا جل دیوے۔

۹۷- داتا لوگ جو بہت مودہ سے دیوتا یا پتر کے ہیت مودہ براہمن کو دیتے ہیں
سو سب نیکھل ہو جاتی ہے۔

۹۸- ویداوان اور پدان براہمن کے مکھ روپی اگن میں جو ہون کیا
جاتا ہے وہ بڑے پاپ سے ہون کرنے والے کو چھڑاتا ہے۔

۵۲

एवं सम्यग्धविहत्वा सर्वदिक्षु प्रदक्षिराम् ॥ इन्द्रान्तकायतीक्षुभ्यः
 मानुगेभ्यो बलिं हरेत् ॥ ८७ ॥ मरुद्भ्य इति तु वारि सिधे दध्वद्भ्य इत्य-
 पि ॥ वनस्पतिभ्य इत्येवं सुशलोत्सुखले हरेत् ॥ ८८ ॥ उच्छीर्य कोशि-
 ये कुर्याद्भद्रकाल्यै च पादतः ॥ ब्रह्मवास्तोष्पतिभ्यां तु वास्तुमध्ये
 बलिं हरेत् ॥ ८९ ॥ विश्वेभ्यश्चैव देवेभ्यो बलिमाकाश उत्सिपेत्
 ॥ दिवा चरेभ्यो भूतेभ्यो नक्तं चारिभ्य एव च ॥ ९० ॥ पृथुवास्तु नि-
 कुर्वीत बलिं सर्वात्मभूतये ॥ पितृभ्यो बलिं शेवन्नु सर्वद-
 क्षिरातो हरेत् ॥ ९१ ॥ शुनां च यतितानां च श्वपचां पायरोणि-
 णाम् ॥ वायसानां कमीराणां च शनकैर्निर्वपेद्भुवि ॥ ९२ ॥

۸۷ - اچھی پرکار سے ہون کر کے سب دشمنین پر دشمن کرم سے اندر
 برن یم چندر ان سب کو اور انھوں کے سیو کون کو بل دیوے -
 ۸۸ - دوار و بش میں مرث کو جل استھان میں جل کو موسل او کھلی کے
 استھان میں قبش ت کو -
 ۸۹ - واستو پرش کے شرپاؤ مدد مہیہ میں کرم سے شری بھدر کالی دستو
 شیت ان سب کو دیوے -
 ۹۰ - وستوے دیو دن میں بھرنے والے بھوت رات میں بھونے والے بھوت
 ان سب کو آکاش میں دیوے -
 ۹۱ - واستو پرش کی پیچھے میں سہ باتم بھوت کو بل دیوے بل سینے سے
 جو ان نیچے وہ دشمن تیر دن کو دیوے -
 ۹۲ - کشتیت دوم پاپ روگی کو اچھوٹا کیرا ان سب کو تہ سے زمین
 دیوے -

स्वाध्यायेनार्चयेद्दधीन्होमैर्देवान्यथाविधि ॥ पितृन् ब्राह्मणान्
 ननैर्भूतानि बलिकर्मणा ॥ ८१ ॥ कुर्यादहरहः ब्राह्मणाद्ये-
 नोदकेन वा ॥ ययौ मूलफलैर्वापि पितृभ्यः प्रीतिमा बहन् ८२
 ॥ एकमप्याशये द्विप्रपित्रर्थे पांचयज्ञिके ॥ न चैवात्राशये-
 त्किञ्चिद्देशवदेवं प्रतिद्विजम् ॥ ८३ ॥ वैश्वदेवस्य सिद्धस्य गृह्यो-
 ऽग्नेौ विधिपूर्वकम् ॥ आभ्यः कुर्याद्देवताभ्यो ब्राह्मणो हो-
 ममन्बहम् ॥ ८४ ॥ अग्नेः सोमस्य च वा दौतयोश्चैव समस्तयोः
 ॥ विश्वेभ्यश्चैव देवेभ्यो धन्वन्तरय एव च ॥ ८५ ॥ कर्ह्ये चैवानुम-
 तै च प्रजापतय एव च ॥ सहद्या वा षष्ठिब्योश्च तथा स्विष्टकृते-
 ऽन्ततः ॥ ८६ ॥

و در دو مهر و ام الطبع

۸۱- دید پڑھنے سے ریش کی پوجا اور ہون کرنے سے دیوتا کی پوجا شراودھ کرنے
 سے پتر کی پوجا ان دن سے سنگھ کی پوجا بلدان سے بھوت کی پوجا بدھ سنت
 کرنا چاہیے۔

۸۲- پتر دن سے پتر کرتا ہوا ان جل دو دھ مول پھل سے دن دن میں پارون
 شراودھ کرے۔

۸۳- پنج مایگیہ میں پتر دن کے نہت جو مل کرم کہا سے وہ اگر نہو کے تو ایک بہت
 برا نہون کو بھوجن کرادے بگر دھوے دیو کے نہت برا نہن بھوجن کرادے۔

۸۴- بدھ سنت اور ستھ نام کن میں جو آگے دیوتا کہین کے ادھو دن میں
 بدھ سنت آہت دیوے دیوتا

۸۵- اگر نہون۔ اگر نہون و شوت دیو و بھونتر۔

۸۶- کو۔ نہت۔ پرچاپت۔ دیاوا۔ پر پھوی۔ نہوت۔ کرت ان سب کو نہت
 دیوے۔

स्वाध्यायेनित्ययुक्तः स्याद्देवे चैवेह कर्मणि ॥ देवकर्मणि युक्तो
 हिविभर्त्ता दंचराचरम् ॥ ७५ ॥ अग्नी प्रास्ताहतिः साम्यगादि-
 त्यमुपतिष्ठते ॥ आदित्याज्जायते वसिष्ठे रक्षन्ततः प्रजाः ॥
 ७६ ॥ यथावायुं समाश्रित्य वर्त्तन्ते सर्वजन्तवः ॥ तथा गृहस्थमा-
 श्रित्य वर्त्तन्ते सर्वआश्रमाः ॥ ७७ ॥ यस्मात्त्रयोऽध्याश्रमिणो
 ज्ञानेनान्तेन चान्वहम् ॥ गृहस्थेनैव धार्यन्ते तस्माच्छ्रेष्ठाश्रमो
 युही ॥ ७८ ॥ ससन्धार्यः प्रयत्नेन स्वर्गमक्षयमिच्छता ॥ सुखं
 चेहच्छतानित्ययोऽधार्यो दुर्वलेन्द्रियैः ॥ ७९ ॥ ऋषयः पित-
 रो देवा भूतान्यतिथयस्तथा ॥ आशासते कुटुम्बिभ्यस्तेभ्यः
 कार्यविज्ञानतः ॥ ८० ॥

۶۵- جو آدمی ہر روز وید کو پڑھتا ہے اور اگن میں ہون کرتا ہے۔ وہ سپورن سنہار
 کر لے سکتا ہے۔

۶۶- اگن میں جو آہستہ پڑتی ہے وہ سونج کے پاس جاتی ہے اور سونج سے پانی
 برستا ہے پانی سے اناج پیدا ہوتا ہے ناج سے پر جا پیدا ہوتی ہے۔
 ۶۷- جطرح ہوا کے سہارے سب جو جیتے ہیں اسی طرح گڑہتھہ آشرم کے سہارے
 سب آشرم والے رہتے ہیں۔

۶۸- وید کے پڑھنے اور ان دان دینے سے تینوں آشرموں کو گڑہتھہ آشرم
 ہر روز اختیار کرتا ہے اس سے گڑہتھہ آشرم ہی بڑا ہے۔

۶۹- پر لوگ میں انکشی سونگ اور اس لوک میں سکھ کی اچھا کرنوالا اس گڑہتھہ آشرم
 کو ہر روز دھارن کرتا ہے جو درہل اندری دالون سے دھارن نہیں ہو سکتا۔

۷۰- ریش سپتر۔ دیونا اتھہ یہ سب گڑہتھون سے بھوجن کا آسرا رکھتے ہیں اسلئے ان سب کو
 ان جل دینا چاہیے۔

तासांक्रमेण सर्वासां निष्कृत्यर्थमहर्षिभिः॥ पंचकृत्प्रामहाय-
जाः प्रत्यहं गृहमेधिनाम्॥ ६६॥ अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु
तर्पणम्॥ होमो देवो वलिर्भो तो नृयज्ञोऽतिथि पूजनम्॥ ७०॥ पं-
चैतान्यो महायज्ञान्नहाययति शक्तितः॥ स गृहेऽपि वसन्नित्यं
स्वनाशे धैर्न लिप्यते॥ ७१॥ देवतातिथिभृत्यानां पितृणामात्म-
नश्चयः॥ न निर्वपति पंचानामुच्छ्वसन्नसजीवति॥ ७२॥ अहृतं
च हृतं चैव तथा प्रहृतमेव च॥ ब्राह्मणं हृतं प्राशितं च पंचयज्ञान् च-
क्षते॥ ७३॥ जपोऽहृतो हृतो होमः प्रहृतो भोति को वलिः॥ ब्रा-
ह्मणं हृतं द्विजाचार्यं प्राशितं पितृ तर्पणम्॥ ७४॥

۶۹- ان پانچو کے پرستشیت کے لیے پانچ مایگیہ کو گرسنھ لوگ ننتیہ ہی
کرین۔

۷۰- پانچ مایگیہ یہ ہیں یعنی وید کا پڑھنا۔ پتر کا ترن۔ ہون کرنا۔ بل دینا
اتھتھ کا یوجن۔ ان سب کو بلحاظ سلسلہ برہم گیہ۔ پتر گیہ۔ دیو گیہ۔ بھوت
گیہ۔ منشیہ گیہ کہتے ہیں۔

۷۱- جو کوئی سارنھ کے موافق ان پانچوں مایگیوں کو کرتا ہے وہ روز مرہ کی ہنس
(یعنی جان کشی) کے پاس سے چھوٹتا رہتا ہے۔

۷۲- جو آدمی دیوتا مسافر اقارب بزرگوں کو کھانا نہیں دیتا ہے وہ بکالت
زندگی مردہ ہے۔

۷۳- آہت۔ ہت۔ پرست۔ براہمست۔ پراشت۔ یہ پانچ گیہ

ہیں۔
۷۴- ان پانچوں کو سلسلہ جپ۔ ہون۔ بھوت بل۔ اتھتھ پوجا۔ پتر ترپن
کہتے ہیں۔

کھو بیواہے: کھیا لو پے وے دان دھ ی ن ن چ ॥ کھو لانی کھو لانی ۥ
 براہی رانی کھو لانی ۥ ۶۳ ॥ شیلپے ن وی و ہارے رانی ۥ
 کھو لانی ۥ ۶۴ ॥ گوبھیر شے ۥ
 جی وانی ۥ ۶۵ ॥ کھو لانی ۥ
 ۥ ۶۶ ॥ ۥ ۶۷ ॥ ۥ ۶۸ ॥ ۥ ۶۹ ॥ ۥ ۷۰ ॥

۶۱۔ نندت وواہ کر یا کھو لانی۔ وید کا نہ پڑھنا براہمن کا اچان ان سب باتوں سے
 کل لشت ہو جاتا ہے۔

۶۲۔ لقصو کیشی وغیرہ سودی روپیہ دینا صرف شوہر کی عورت سے لڑکا پیدا کرنا گھو
 گھوڑا رتھ کی خرید و فروخت کرنا کھیتی کرنا آج سب کو کرنا ان سب سے۔

۶۵۔ اور جو یگیہ گرائے کے لائق نہیں ہے اسکو یگیہ گرائنا اور بغیر منتر کے کرم کرنا ان
 سب باتوں سے کل جلد ناش ہو جاتا ہے۔

۶۶۔ جس کل میں منتر سے سب کرم ہوتے ہوں گو کہ بہت دولت نہو تاہم وہ کل بڑا
 کمالاتا ہے اور نیک نام ہوتا ہے۔

۶۷۔ کرم مندرجہ گریج سوتر اور پنچ یگیہ اور نیتہ بھوجن پاک ان سب کو وواہ سے کی
 اگن میں بدھ سے کرنا چاہیے۔

۶۸۔ گریستھ کے گھر میں چو لھا۔ سل۔ بٹ۔ جھاڑو۔ اوکھلی۔ موسل پانی کا گھڑا ان
 سے کام لینے میں جو مرتے ہیں۔

x لینے دیکھا پڑھنا۔ دیوریش پتر کا نہ پن۔ ہوم۔ بل۔ اٹھ کا پون۔

شوچننجامیو یو یو ترین شیتیا سوت کولم ॥ ن شوچننیت ی-
 نرے تا بھرتے تھیس رور ॥ ۶۵ ॥ جاس یو یو نی گہا نی شاپن پ-
 تیش جیتا ॥ تانی کتیا ہتا نی وین شیت نی سمن ت ॥ ۶۶ ॥
 تسمارے تا ۛ سدا پوجیا بھو شاپا چھار نا شونے ॥ بھوتیکا مہر-
 رے نی تی س تکارے بھو ت بھو چ ॥ ۶۷ ॥ سبھو بھو ماریا مارتا مارتا م-
 ریا ت بھو چ ॥ ی سمن بھو کولے نی تی کتیا رات بھو بھو ॥
 ۶۸ ॥ ی دھیت نی نرے چت پو ماں سمن پمورے ت ॥ ی پمورے ت ی ن-
 پو س ۛ پجنن پ بھرتے ॥ ۶۹ ॥ سبھو بھو رے چ ما نا یاں س رت ترو
 چتے کولم ॥ تسمان ترو چ ما نا یاں س رت مہر نرے چتے ॥ ۷۰ ॥

۵۷۔ جس کل میں استری لوگ کھی رہتی ہیں وہ کل جلد نشٹ ہو جاتا ہے۔

اور جس کل میں استری لوگ کھی رہتی ہیں وہ کل ہمیشہ بڑھتا ہے۔
 ۵۸۔ پو جانہ پا کر استری لوگ جس کل کو سراپ دیتی ہیں وہ کل چاروں طرف سے
 نشٹ ہو جاتا ہے۔

۵۹۔ اسیلے دولت کا چاہنے والا آدمی گنا کھانا سے ہمیشہ استرین کو پوجا
 کرے۔

۶۰۔ جس کل میں استری سے پت اور پت سے استری پرسن رہتی ہیں اس کل میں
 بیشک کلیان ہے۔

۶۱۔ اگر استری پت کو پرسن نہ رکھے گی تو اولاد کہاں سے ہوگی۔

۶۲۔ استری کے پرسن رہنے سے سب کل پرسن رہتا اور استری کے پرسن رہنے سے سب کل
 پرسن رہتا ہے۔

۵۶۔ جس گل میں عورتوں کی پو جا ہوتی ہے اُس گل میں دیوتا لوگ مبارکرتے ہیں۔
جہاں عورتوں کی پو جا نہیں ہوتی وہاں سب کرپا پھیل ہے۔

अतुः स्वाभाविकः स्त्रीणां रात्रयः षोडशसंख्याः ॥ चतुर्भिरितरेः
 सार्द्धं महोभिः सद्भिर्गर्हितैः ॥ ४६ ॥ तासामाद्याश्चतसस्तु निदि-
 तेकादशी च या ॥ त्रयोदशी च शेषास्तु प्रशस्ता दशरात्रयः ॥ ४७ ॥
 युग्मासु पुत्रा जायन्ते स्त्रियोऽयुग्मासुरा त्रिषु ॥ तस्माद्युग्मासु
 पुत्रार्थो संविशेदार्त्तवे स्त्रियम् ॥ ४८ ॥ युमान्युंसोऽधिके शुक्ले-
 स्त्री भवत्यधिके स्त्रियाः ॥ समे युमान्युं स्त्रियो वा क्षीरोऽल्पे च-
 विपर्ययः ॥ ४९ ॥ नित्यास्वष्टासु चान्यासु स्त्रियो रात्रिषु वर्जय-
 न् ॥ ब्रह्मचार्ये व भवति यत्र तत्राश्रमे व सन् ॥ ५० ॥

۴۶- رت کال کی سولہ رات میں با ستشنا سے چار کے جو مکروہ ہیں۔
 ۴۷- انہیں پہلی چار اور گیارھویں اور تیرھویں رات مدت (ممنوع) میں باقی
 دس رات اچھی ہیں۔
 ۴۸- غالباً ستر رات میں بھوک کرنے سے لڑکا پیدا ہوتا ہے اور یکم رات میں بھوک
 کرنے سے لڑکی پیدا ہوتی ہے۔ اسلئے لڑکا پیدا ہونے کی خواہش رکھنے والے امرا لڑکوں کو
 ۴۹- مرد کے لطف زیادہ ہونے سے یکم رات میں بھی لڑکا پیدا ہوتا ہے اور عورت کے
 لطف زیادہ ہونے سے ستر رات میں بھی لڑکی پیدا ہوتی ہے اگر مرد و عورت دونوں کا لطف
 برابر ہو تو لڑکا نامرد پیدا ہوتا ہے یا لڑکا و لڑکی دونوں پیدا ہوتے ہیں اور اگر دونوں کا لطف
 کم ہو تو حمل نہیں رہتا۔
 ۵۰- آٹھ راتیں جو منع ہیں انہیں بھوک کرنے سے جس آشرم میں رہا سہیں بہم چاری
 ہی کہلاتا ہے۔

* جیسے چھٹھویں آٹھویں دسویں بارھویں چودھویں سو لھویں رات۔

* جیسے پانچویں ساتویں نوین گیارھویں تیرھویں پندرھویں رات۔

इतरेषु तु शिष्येषु न शंसान् तवादिनः ॥ जायन्ते दुर्विवाहेषु ब्रह्मध-
र्मद्विषः सुताः ॥ ४१ ॥ अनिन्दितैः स्त्रीविवाहे रनिन्द्या भवति प्रजा
॥ निन्दितैर्निन्दितान् दृष्ट्वा तस्मान्निन्द्यान् विवर्जयेत् ॥ ४२ ॥ पाणि-
ग्रहणं संस्कारः सवर्णास्य पदिश्यते ॥ असवर्णास्वयं ज्ञेयो वि-
धिराज्ञा कर्मणि ॥ ४३ ॥ शरः सत्रियया ग्राह्यः प्रतो दो वैश्य-
कन्यया ॥ वसनस्य दशा ग्राह्याश्च द्रव्योत्काष्टवेदने ॥ ४४ ॥ ऋतु-
कालाभिगामी स्यात्स्वरा रनिरतः सदा ॥ पर्यवर्ज्य ब्रजे चैनां तद्व-
तोरतिका म्यया ॥ ४५ ॥

۱م۔ اور باقی چار دواہوں سے جو لڑکا پیدا ہوتا ہے وہ گھٹانک ہوتا ہے اور جھوٹا ہوتا ہے اور برہمن و ہوسرم کا شتر (دشمن) ہوتا ہے۔

۲م۔ استری و دواہ سے استنت اولاد پیدا ہوتی ہے اور استنت و دواہ سے استنت اولاد پیدا ہوتی ہے اس لیے استنت و دواہ نہ کرنا چاہئے۔

۳م۔ اپنی ذات کی جو کنیا ہے اسی سے بہت گہرے کا سنگار جانا دوسری ذات کی کنیا کے ساتھ دواہ نہیں جو طریق آگے کہیں گے وہ کرنا۔

۴م۔ استری کی کنیا پتر کو گہرے کرے اور دیشیہ کی کنیا کم ستور رانی کو اور شودر کی کنیاں کپڑے کے کونے کو پکڑے جیکہ اس کا دواہ بڑی ذات کے پُرش سے ہوتا ہو۔

۵م۔ رت کا مین استری سے بھوگ کرے اور دوسرے کی استری سے بھوگ نہ کری مگر اپنی استری سے رت کا مین بھی پرب کے دن بھوگ کرے اور جو استری کا مین ہو تو بغیر رت کا مین کے بھی بھوگ کرے یہ نیم ہے اور رت کا مین پاس ہے اور ستر پھر رکھتا ہو تو پھر وہ بھوگ کرے مین تو پُرا دوش ہے۔

چھ لینے بد فراغت میں سو دن تک۔

یہ کرشن کیشن کی اسٹی جتہر دشی اداوس پور غاشی نکرانت۔

योयस्यैषां विवाहानां मनुना कीर्तितो गुराः ॥ सर्वश्रुततं वि-
 प्राः सर्वकीर्तयतो ममः ॥ ३६ ॥ दशपूर्वान्परान्वंश्यानात्मानं चै-
 कविंशकम् ॥ ब्राह्मीपुत्रः सुकतहन्मोचयेदेनसः पितृन् ॥ ३७
 ॥ देवोदाजः सुतश्चैव सप्तसप्तपरावरान् ॥ आर्योदाजः सुतस्त्री-
 स्त्रीन्यद्वयत्कायोदजः सुतः ॥ ३८ ॥ ब्राह्मादिषु विवाहेषु च-
 त्वर्ध्ववानुपूर्वशः ॥ ब्रह्मवर्चस्विनः पुत्रा जायन्ते शिष्टसम्भवाः ॥
 ३९ ॥ रूपसत्त्वगुरो येता धनवन्तो यशस्विनः ॥ पर्याप्तभोगा ध-
 र्मिषा जीवन्ति च शतं समाः ॥ ४० ॥

۳۶۔ جس دواہ کا جو گن من جی نے کہا ہے وہ ہم اسے بہن لوگوں کو اچھی طرح سے کہتے ہیں
 آپ لوگ شیئہ کہ اگر۔

۳۷۔ براہم دواہ سے لڑکا پیدا ہوا اور اچھے کرموں کو کرے تو دشن برش اوپر کے اور
 دشن پرش نیچے کے اور اکیسواں اپنے کو پاپ سے چھڑاتا ہے۔

۳۸۔ دیو دواہ سے لڑکا پیدا ہو کر اچھے کرم کرنے والا ہو تو سات برش
 اوپر کے اور سات برش نیچے کے اور پندرھواں اپنے پاپ سے چھڑاتا
 ہے اور آرش دواہ سے لڑکا پیدا ہو کر تین تین پرش اوپر اور نیچے کے
 اور پرا چا پیتہ دواہ سے لڑکا پیدا ہو کر چھ چھ برش نیچے کے اور اوپر کے
 ان سب کو پاپ سے چھڑاتا ہے بشرطیکہ اچھے کرموں کا کرنے
 والا ہو۔

۳۹۔ براہم دواہ وغیرہ چار دواہوں سے جو لڑکا پیدا ہوتا ہے وہ پرا تھیوی
 اور اچھے لوگوں کے برابر ہوتا ہے۔

۴۰۔ اور روپ اور اچھے گن اور دلش اور بھاگ اور دھرم اور دھن والا ہوتا ہے
 اور سو برش تک جی سکتا ہے۔

سہنوی چرناں دہرم میتی واچا نو باہی چ ॥ کنیا پردان مہمہ رچہ
 پراجاپتو وی دی: سہت: ॥ ۳۰ ॥ جاتی مہو بر ویراں دتوا کنیا مہ
 چے و شکتی: ॥ کنیا پردان سوا چنیا راسو ر دہرمہ اچھتے ॥
 ۳۱ ॥ رچھیا نونہ سہ یوگ: کنیا یا شہر سہ ॥ گانہ رچہ:
 سہو وی جی مہ یو نونہ: کام سہ مہ ॥ ۳۲ ॥ ہتوا چنیا چ میتی
 چ کو شکتی روتی روتی ॥ پرمہ کنیا ہر رانہ سہو وی دی ر
 چتے ॥ ۳۳ ॥ سہا مہ تانہ پرمہ تانہ وارہو یو یو گ چنیت ॥ سہا
 پی دی ویاہانانہ پشا چنیا مہو: ۳۴ ॥ اچھیرے و
 جاتیا رانہ کنیا رانہ ویشی مہ ॥ ہتے رانہ تہ رانہ میتی ر
 تہ کامہ ۳۵ ॥

۳۰۔ براور کنیا دونوں ساتھ دھرم کو کرین یہ بات کہہ کر براور کنیا کی پوجا کر کے کنیا کو
 دیوے یہ پرا جاپتیتہ دواہ کہلاتا ہے۔

۳۱۔ کنیا اور کنیا کی ذات والوں کو دولت دے اور کنیا لینا اسروواہ
 کہلاتا ہے۔

۳۲۔ براور کنیا ان پشیمین اچھیا کر کے جو سوگ کرین وہ گاندھرب پواہ کہلاتا ہے
 یہ دواہ یعنی شادی صحبت داری کیو اسطے ہے۔

۳۳۔ مار پیٹ ضد کر کے روتی لپکارتی ہوئی کنیا کو گھر سے لے انا کر کشش دواہ
 کہلاتا ہے۔

۳۴۔ جو عورت سوتی ہو یا دولت یا شہوت سے ہو یا کسی بیماری میں مبتلا یا بگڑ
 ہو اس سے تنہائی میں صحبت کرنا پشاح دواہ ہے یہ سہ ادمہ ہے۔

۳۵۔ ہر مہن کو جل سے کنیاں دان کرنا اچھا ہے اور شتر کی وغیرہ کا بغیر جل کے
 آپس کی اچھیا سے صرف زبان کے کہنے سے دواہ ہو سکتا ہے۔

चतुरोवाहारास्याद्यान्वशस्तान्कवयोविदुः ॥ राक्षसंसन्नि-
 यस्यैकमासुरं वैश्यश्च द्रव्योः ॥ २४ ॥ पंचानां तु त्रयो धर्म्याद्वाव-
 धर्म्योऽस्मृता विह ॥ पेशाचश्चासुरश्चैव न कर्तव्यो कदाचन ॥
 २५ ॥ पृथक् पृथक् वा मिश्रो वा विवाहौ पूर्वचोदितौ ॥ गान्धर्वो
 राक्षसश्चैव धर्म्योऽसत्रस्य तौ स्मृतौ ॥ २६ ॥ आच्छाद्य चार्चयि-
 त्वा च शुतिशीलवते स्वयम् ॥ आहूय दानं कन्याया वा ह्योध-
 र्मः प्रकीर्तितः ॥ २७ ॥ यजेतु वितते सम्यग् त्विजे कर्म कुर्वते ॥
 अलंकृत्य सुता दानं दैवधर्मं प्रचक्षते ॥ २८ ॥ सक्तं गोमिशुनं द्वे-
 वावरादादाय धर्मतः ॥ कन्याप्रदानं विधिवदा र्यो धर्मः स उच्य-
 ते ॥ २९ ॥

۲۴۔ پہلے کے چار دواہ پر امن کو اور کشتری کو رکشش دواہ اور دیشیہ کو اسر دواہ
 بعضوں نے مخصوص قرار دیا ہے۔

۲۵۔ بیلن سمجھا یا چ دواہ آخر الذکر کے تین جائز اور دونا جائز ہیں لہذا پیش اور اسر
 دواہ نہ کرنا چاہئے۔

۲۶۔ گاندھرب اور رکشش دواہ دونوں علیحدہ ہوں یا یکجا صرف کشتری کی واسطے
 کہتا ہے۔

۲۷۔ (اب آٹھو دواہ ہوں) کا لکشن کہتے ہیں (براؤ کنیا کو کپڑا اور زپور دیکر بر کو
 بلا کر کنیا کو دیوے وہ براہم دواہ کہلاتا ہے۔

۲۸۔ گیہ میں رتوج کو انکار سست کنیا کو دیوے وہ دیو دواہ کہلاتا
 ہے۔

۲۹۔ ایک یا دو گتو اور بیل برے لیکر کنیا کو دیوے وہ آرش دواہ
 کہلاتا ہے۔

دేवपित्र्यातिथेयानितत्यधानानियस्यतु ॥ नाश्रन्तिपितृदेवा-
 सन्नचस्वर्गसगच्छति ॥ १८ ॥ दृषलीफेनपीतस्यनिःश्वासो
 पहतस्यच ॥ तस्यांचैवप्रसूतस्यनिष्कृतिर्नविधीयते ॥ १९ ॥
 चतुर्गामपिवर्गानांप्रेत्यचेहहिताहितान् ॥ अथाविमान्-
 मासेनस्त्रीविवाहान्निबोधत ॥ २० ॥ ब्राह्मोदैवस्तथैवार्धः-
 प्राजापत्यस्तथासुरः ॥ गान्धर्वोराक्षसश्चैवपैशाचश्चासृगो
 ऽधमः ॥ २१ ॥ योयस्यधर्म्योवर्गस्यगुरारोषोचयस्ययो ॥ त-
 हःसर्वप्रवक्ष्यामिप्रसवेचगुरागुरान् ॥ २२ ॥ षडानुपूर्वा
 विप्रस्यसत्रस्यचतुरोवरान् ॥ विद्वद्भ्योस्तुतानेवविद्याज्जर्मा
 नरासप्तान् ॥ २३ ॥

۱۸- جس براہمن کے گھر میں نشو و رک کی کنیاں دیو کرم اور پتر کرم کرتی ہوں اسکے لئے ہوتے ہیں اور
 کنبہ کو دیوتا اور پتر نہیں لیتے اور وہ براہمن سورگ میں نہیں جاتا۔

۱۹- جس براہمن نے نشو و رک کی کنیاں کے لب پر اپنا لب ملا یا اور اسکی سانس سے اسکا منہ ملا
 بصورت ضرر نہ آپ اس سے پیدا ہوا اس براہمن کا پرستشیت شاستر میں نہیں ہے۔

۲۰- اس لوگ اور پر لوک میں چار ورون کا ہت کر نیوالا اور اہت کر نیوالا آٹھ طرح کا
 دواہ ہے اسکو ہم سے سنئے یہ بات بھرگ جی کہتے ہیں۔

۲۱- براہمن - دیو - آری - پراجا پتیہ - اتر - گاندھرپ - راکشش - پشچ - آسین - آمھون
 دواہ ادھم ہے۔

۲۲- جو دواہ جس دن کو دھرم اور جس دواہ کا جو گن اور دوش ہے اور جس دواہ پتر پیدائش میں جو
 گن گن ہو سب آپ لوگوں کے ہم کہیں گے

۲۳- پہلے کے چھ دواہ براہمن کو اور پچھلے چار کشری اور آئین سے تین باسنت
 راکشش کے ویشیہ اور نشو و رک کو بعضوں نے جائز کیا ہے۔

سर्वार्थाद्येद्विजातीनां प्रशस्तादरकर्मणि ॥ कामतस्तु प्रवृत्ता-
नामिमाः स्युः क्रमशो वराः ॥ १२ ॥ शृङ्गेव भार्या शूद्रस्य सा च-
स्या च विशः स्मृते ॥ ते च स्वाचे वरा जश्वाश्च स्वाचाग्रजन्मनः ॥
१३ ॥ न ब्राह्मराक्षत्रिययोराप्यपि हितवतोः ॥ कस्मिंश्चिद-
पि वृत्तान्ते शूद्रा भार्या पदिश्यते ॥ १४ ॥ हीनजातिस्त्रियं मोहा
दुद्वहन्तो द्विजातयः ॥ कुलान्येव न यन्याश्च सप्तज्ञानानि शूद्र-
ताम् ॥ १५ ॥ शूद्रावेदीयतत्यत्रैतत्तदयतनस्य च ॥ शौनकस्य-
सुतोत्पत्या तदयत्यतया शृङ्गोः ॥ १६ ॥ शूद्रां शयनमारोप्य ब्रा-
ह्मराज्यात्यधोगतिम् ॥ जनयित्वा सुतं तस्यां ब्राह्मराजादिवही-
यते ॥ १७

۱۲- تینوں ورنوں کو اپنی ذات کی عورت کے ساتھ دواہ کرنا افضل ہے اور اگر سبب
تقریب کا بدیو غیر ذات کی لڑکی کے ساتھ دواہ کرے تو بطریق ذیل کرے مگر وہ افضل نہیں
۱۳- ستود صرف اپنی ذات کی لڑکی سے اور ویشیہ اپنی ذات اور ستود کی لڑکی سے اور کشتری
اپنی ذات اور ویشیہ اور ستود کی لڑکی سے اور براہمن چار ورنوں کی لڑکی سے دواہ کر سکتا ہے
۱۴- مگر کسی پُران میں وقت مصیبت کے بھی براہمن اور کشتری کو ستود ذات کی لڑکی کے
ساتھ دواہ کرنا پایا نہیں گیا۔

۱۵- براہمن کشتری ویشیہ تینوں ورن اگر محبت کی وجہ سے ذات کی لڑکی کے ساتھ دواہ کرے
تو اولاد اور اپنی کل کو جلد ناس کر دیتے ہیں۔
۱۶- اتر اور استھیریش کا یہ ہے کہ ستود کی کہنا سے دواہ کرنے سے تینوں ورن تپت
ہو جاتے ہیں اور ستوماتریش کا یہ ہے کہ ستود کی لڑکی سے لڑکا پیدا ہونے سے تپت
ہوتا ہے اور بھوگیش کا یہ ہے کہ پوتا پیدا ہونے سے تپت ہوتا ہے۔

۱۷- ستود کی لڑکی کو اپنی بیگ پر بٹھاتی براہمن جب کہ میں جائے اور اسے لڑکا پیدا ہونے سے ہم کرم اگر ہو جائے

۱۱۔ جس لڑکی کے بھائی نہو اور جس کے باپ کا نام معلوم نہو اُس سے دوا نہ کرنا چاہئے
کیونکہ پتر کا دھرم کا شجرہ ریگا۔ (باب وواہ کے وقت ارادہ کرے کہ اس
لڑکی کا لڑکا سپراسو کا دسکو پتر کا کرن تمہنے مین پس وہ لڑکا اپنے نانا کا
ہوگا۔

षट्त्रिंशदधिकं चर्यं गुरोर्ब्रैवेदिकं ब्रतम् ॥ तदर्द्धिकं वा अहरा
 ग्रहरा न्तिकमेव वा ॥ १ ॥ वेदानधीत्यवेरो वा वेदं वा पियथा क्र-
 मम् ॥ अविद्युतब्रह्मचर्यो गृहस्थाश्रममावसेत् ॥ २ ॥ तंप्रतीतं स्व-
 धर्मेणाब्रह्मदायहरंपितुः ॥ रुग्निरांतस्य आसीनमर्हयत्यथमं
 गवा ॥ ३ ॥ गुरुणानुमतः स्नात्वा समावृत्तो यथाविधि ॥ उद्धेत
 द्विजो भार्यां सवर्णां लक्षणां विताम् ॥ ४ ॥ असपिण्डा च या-
 मातुरसगोत्रचयापितुः ॥ साप्रशस्ता द्विजातीनां दारकर्मणि-
 भैशुने ॥ ५ ॥ महान्ययिसमृद्धानि गोजाविधनधान्यतः ॥ स्त्री-
 सम्बन्धे दशैतानि कुलानि परिवर्जयेत् ॥ ६ ॥

۱- چھتیس یا اٹھائے یا نو برش تا تکفیل علم و دید کے تینوں دیدوں کے پڑھنے کا برت کرنا چاہیے۔

۲- تینوں دید یا دو دید یا ایک دید سسکے پڑھ کر اکھنڈ برت کر نیوالا آدمی گزشتہ اشرم میں آویسے۔

۳- دھرم کا ایشٹھان کرنے سے جو برہم چاری پرسدھ ہو اور باپ سے ویر پڑھا ہو مالا پہنے ہو شیا پر بیٹھا ہو اور گھو کے دو دھ آدھ سے مدھ پرک بنا کر آچارج یا باپ اس کی پوجا کرے۔

۴- گرو کی آگیا سے انسان کر کے سماو تن کرم کر کے اپنی ذات کی اچھی ٹرکی سے (دواہ شادی) کرے۔

۵- جو ٹرکی مان کے سپنڈ میں نہ ہو اور نہ باپ کے گوتر میں ہو ایسی ٹرکی تینوں ونوں کو زوجہ بنانے کے لئے اچھی ہوتی ہے۔

۶- اگرچہ گھو بکری دولت وغیرہ کی کثرت ہو تو بھی جو دشمن اگل یعنی خاندان کے کسینگو ان میں دواہ نہ کرنا چاہیے۔

नाब्राह्मणो गुरो शिष्यो वा समात्यन्तिकं वसेत् ॥ ब्राह्मणो वा
 ननु चानेकां सन्नातिमनुत्तमाम् ॥ २४२ ॥ यदि त्वात्यन्तिकं वा
 संरोचयेत गुरोः कुले ॥ युक्तः परिचरेत्तस्मात् शरीरविमोक्षरा
 त् ॥ २४३ ॥ आसमाप्तेः शरीरस्य यस्तु शुभ्रयते गुरुम् ॥ स गच्छ
 त्यं च सावित्री ब्रह्मणाः सन्नशाश्वतम् ॥ २४४ ॥ न पूज्य गुरुवे-
 किंचिदुपकुर्वीत धर्मवित् ॥ स्वास्यंस्तु गुरुणा ज्ञप्तः शक्त्या शु-
 र्वर्थमाहरेत् ॥ २४५ ॥ क्षेत्रं हिरण्यं गामश्च कृत्रो यानहमास-
 नम् ॥ धान्यं शाकं च वासांसी गुरवे प्रीतिमाचरेत् ॥ २४६ ॥

۲۴۲- آتم گت کی اچھا کرنے والا آدمی کشتری وغیرہ گورو اور کچھ برہمن کے پاس
 زیادہ قیام نہ کرے۔

۲۴۳- اگر گرو کے پاس زیادہ عرصہ تک قیام کرنا منظور ہو تو ہوشیار رہی سے
 جب تک زندہ رہے خدمت کرتا ہوا قیام کرے مگر برہمن گرو کے پاس یہ بیشک
 برہمن چاری کہلاتا ہے۔

۲۴۴- جو برہمن چاری شریرتیاک کرنے تک گرو کی سیوا کرتا ہے وہ محنت پرست
 برہمن لوک کو پاتا ہے۔

۲۴۵- دھرم کا جانتے والا برہمن چاری جب تک پرمنا ہے تب تک سوا سیوا کے
 دوسرا ایک گرو کا نہ کرے پڑھنے کے بعد مارتن کے منت استان کر کے گرو کا
 حکم لیکر گرو کو صبح تو صبح دیکھتا رہے۔

۲۴۶- بیجے۔ زمین۔ سونا۔ گنو۔ گھوڑا۔ چھتری۔ جوتا۔ آسن۔ شاک۔ کپڑا وغیرہ
 گرو کو دیوے۔

۲ یعنی پتر گل میں آسنے کے لئے دعا کے واسطے۔

तेषामनुपरोधेन पारश्चर्यं यथा चरेत् ॥ तत्तन्निवेदयेत्तेभ्यो मनो
वचनकर्मभिः ॥ २३६ ॥ त्रिष्वेतेष्विति कृत्यं हि पुरुषस्य समा-
प्यते ॥ एष धर्मः परः साक्षादुपधर्मोऽन्य उच्यते ॥ २३७ ॥ अह-
धानः शुभां विद्यामावहीतावगादपि ॥ अन्यादपि परं धर्मं स्त्री
रत्नं दुष्कृतादपि ॥ २३८ ॥ विद्यादप्यमृतं ब्राह्मं बालादपि सुभा-
षितम् ॥ अमित्रादपि सहजमभेधादपि कांचनम् ॥ २३९ ॥
स्त्रियोरत्नान्यद्यो विद्याधर्मः शौचं सुभाषितम् ॥ विविधानि-
चशिल्पानि समादेयानि सर्वतः ॥ २४० ॥ अत्राक्षरादध्यय-
नमायत्काले विधीयते ॥ अनुब्रज्या च शुश्रूषायावदध्ययनं
पुरोः ॥ २४१ ॥

۴۴۲۔ اٹھون کی سیوا کرتا ہوا اور دوسرا دھرم بھی کرے تو سن بانی کرم کو کے
اٹھون سے کہہ پوے۔

۲۴۷۔ آئین تینوں میں آدمی کے کرنے کی جو بات ہے وہ ہو جاتی ہے پس انکی حد کے سوا ہی اور دھرم جو میں وہ آپ دھرم میں۔

۸۔ شردھاکر کے اچھی دوا کو بیچ ذات سے بھی لینا اور پریم و محرم کو چاندرا سے بھی لینا اور سندھ استری کو دشت نخل سے بھی لینا چاہیے۔

۹ سو ۲۔ زہر و طفل و دشمن۔ ان تینوں سے تندرستی کے موافق آبجیات و شیریں دہانی و طہ نیک و طلا کو لے لیا جاسکتا ہے۔

ہم ۲۔ عورت و جواہرات و علم و دھرم و صفائی و پاکیزگی و شیریں و بانی و طرح طرح کی کار گیری ان سب کو جہان سے ملے وہاں سے لینا چاہئے

۴۴۱۔ اگر مصیبت آپڑے تو کشتی وغیرہ سے براہمن پڑھے اور جب تک پڑھے تک اُس گرو کے پیچھے چلے اور سوا کرے۔

तस्य वहिः त्रयो लोकास्तस्य त्रय आश्रमाः ॥ तस्य वहिः त्रयो वेदा
स्तस्य वोक्तास्त्रयोऽनयः ॥ २३० ॥ पिता वै गार्हपत्योऽग्निर्मा-
ताग्निर्दक्षिणाः स्मृतः ॥ गुरु राहवनीयस्तुमान्नित्रेता गरीय-
सी ॥ २३१ ॥ त्रिष्वप्रमाद्यन्ते तेषु त्रीं लोकां विजयेद्ब्रह्मी ॥ दी-
प्रमानः स्ववपुर्वादेव वहि विमोदते ॥ २३२ ॥ इमं लोकं मातृ-
भक्त्या पितृभक्त्या तु मध्यमम् ॥ गुरुशुश्रूषया त्वेवं ब्रह्मलोकं
समश्नुते ॥ २३३ ॥ सर्वे तस्याहता धर्मा यस्यैते त्रय आहताः ॥
अनाहतास्तु यस्यैते सर्वान् तस्याः फलाः क्रियाः ॥ २३४ ॥ या-
वत्त्रयस्ते जीवे युस्ता वन्नान्यं समाचरेत् ॥ ते ध्वेव नित्यं शुश्रूषं
कुर्वात्यियं हिते ततः ॥ २५ ॥

۲۳۰- تینوں لوک تینوں آشرم تینوں وید تینوں اگن ہی تینوں شخص میں۔
۲۳۱- گارہ پتیہ اگن پتا ہے اور دکن اگن ماما ہے آہونی اگن گروہین ہی تینوں
اگن محبت بڑی ہیں۔
۲۳۲- ان تینوں کی خدمت گزاری میں مستعد رہنے سے آدمی تینوں لوک کو جیت کر اور
بڑا بیج والا ہو کر دو تاون کی طرح سورگ میں آسند کرتا ہے۔
۲۳۳- مانا کی بھکت کرتے سے بھو لوک اور تپا کی بھکت کرتے سے اترکشی لوک
گرو کی بھکت کرنے سے برہم لوک کو پاتا ہے۔
۲۳۴- جس شخص نے ان تینوں کا آدر کیا وہ گویا سب صرموں کا آدر کر چکا اور جنے ان
تینوں کا آدر نہیں کیا اس کی سب کر پائیں چھل ہے۔
۲۳۵- جب تک یہ تینوں زندہ رہیں تب تک خود مختار ہو کر دوسرا دھرم نہ کرے
انہیں کی خدمت اور بھلائی اور مرضی میں رہے۔
x یعنی ماما کرے۔

धर्मार्थावुच्यते श्रेयः कामार्थो धर्मस्य च ॥ अर्थस्येह वा श्रेय-
स्त्रिवर्ग इति तु स्थितिः ॥ २२४ ॥ आचार्यो ब्रह्मणो मूर्तिः पिता
मूर्तिः प्रजायते ॥ माता दयिव्या मूर्तिस्तु भ्राता स्त्री मूर्तिरात्मनः
॥ २२५ ॥ आचार्यश्च पिता चैव माता भ्राता च पूर्वजः ॥ नार्त्तना-
थ्यवसनव्यावासाशो न विशेषतः ॥ २२६ ॥ यं माता पितृभेदे-
शंसते ते संभवे च राम ॥ न तस्य निस्कृतिः शक्या कर्तुं वर्षशते-
रपि ॥ २२७ ॥ तयोर्नित्यं प्रियं कुर्यादाचार्यस्य च सर्वदा ॥
तेष्वेव त्रिषु लघुषु तपः सर्वं समाधत्ते ॥ २२८ ॥ तेषां त्रयाणां-
स्तु श्रूया परमंतप उच्यते ॥ न तैरम्य न तु ज्ञातो धर्ममन्यं समा-
चरेत् ॥ २२९ ॥

۲۲۴- کسی کے مت میں دھرم اور ارتھ دونوں اور کسی کے مت میں ارتھ اور کام اور کسی کے مت میں صرف دھرم کلیان کرنا والا ہے اب اپنی مت کو کہتے ہیں کہ دھرم اور ارتھ اور کام تینوں باہم موافق ہیں۔ انھیں تینوں سے سب کچھ ملتا ہے۔

۲۲۵- آچارج پر راتما کی مورت ہے اور ماتا پر تھوی کی مورت ہے اور تپا برہما کی مورت ہے اور سگا بھائی اپنی گرد کی مورت ہے۔

۲۲۶- آچارج اور تپا اور سگا بھائی ان تینوں کی تو میں تجھ پر دل ہو پیر بھی نہ کرے اس بات کی تمہیں براہمن کو تو ضروری واجب ہے۔

۲۲۷- آدمی کے پیدا ہونے میں جو تکلیف مان اور باپ ستنے ہیں اس کا عوض سونپ کے ادیکار کرنے سے بھی نہیں ہو سکتا یہ سب دیوتا روپ ہیں ایک ایمان نہ کرنا چاہیے۔

۲۲۸- مان اور باپ اور آچارج ان تینوں کی خدمت ہمیشہ کرنا چاہیے ان کے خوش کرنے سے سب عبادت پوری ہوتی ہے

۲۲۹- ان تینوں کی سیوا پرست یعنی عبادتِ عظیم ہو ان لوگوں کے حکم نہ کوئی دوسرا دھرم نہ کرنا چاہیے

यथास्वनन्वनिशेनानशेवार्थविगच्छति॥ तथागुरुनातांविधां
 शुश्रूषुरधिगच्छति॥ २१८॥ सुराडोवाजविलोवास्यारघवास्या
 च्छिरवाजतः॥ नैनं ग्रामेऽभिनिम्लोचेत्सूर्योनाभ्युदियात्कचित
 ॥ २१९॥ तंचेत्सूर्युदियात्सूर्यः शयानं कामचारतः॥ निम्लो-
 चेद्वाप्यविज्ञानाज्जपन्नुपवसेद्दिनम्॥ २२०॥ सूर्योराश्याभि
 निर्मुक्तः शयानोऽभ्युदितश्चयः॥ प्रायश्चित्तमकुर्वारामु-
 क्तः स्यान्महत्तैनसा॥ २२१॥ आचम्यप्रयतो नित्यमुमेसन्धो
 समाहितः॥ शुचौरेशेजपञ्जप्यमुयासीतयथाविधिः॥ २२२॥
 ॥ यद्विस्त्रीयद्यवरजः श्रेयः किंचित्समाचरेत्॥ तत्सर्वमाचरेत्
 त्तोयत्रवाख्यमेत्मानः॥ २२३॥

۲۱۸- جس طرح کد اوی سے کھو دتے کھو دتے اوی پانی پاتا ہے اس طرح گرد کی سواگر
 کرتے گرد کی سپنورن دیا کو چیلے پاتا ہے۔

۲۱۹- اگرچہ برہم چاری مؤثر مند اے یا جبار کھائے یا چوٹی کو جھا کے برابر بنائے ہو
 مگر وقت طلوع و غروب آفتاب کے گانون یا شہر میں نہ رہے یعنی یہ دونوں وقت
 شہر سے باہر برہم چاری پر گزین۔

۲۲۰- اگر برہم چاری وقت طلوع و غروب آفتاب کے گھر میں موجود ہو تو اس کو سزا ہے کہ گناہ
 آپاس کرے۔

۲۲۱- اگر اوپر کہا ہوا پریشیت تکرے تو بڑا پاپ ہوتا ہے۔

۲۲۲- آچمن کر کے دونوں ہنڈھیا میں ایک چت ہو کر پوتر استھان میں چھڑک
 گا تیری کا چپ کرے۔

۲۲۳- عورت یا چھوٹا آدمی کوئی اچھی بات کرتا ہو تو اس کو آپ بھی کرے یا ناستر
 کے موافق جس عمل میں دل کو اطمینان ہو وہ کام کرے۔

گुरुپत्नीتپوवतीर्नाभिवाद्ये ह्यपारयोः ॥ पुराविंशतिवर्षेण
 गुरादोषो विज्ञानता ॥ २१२ ॥ स्वभावययनारीणां नराणां मि-
 हवृषणाम् ॥ अतोऽर्घान्नप्रमाद्यन्निप्रमदासु विपश्चितः ॥ २१३
 ॥ अविद्वांसमलं लोके विद्वांसमपि बाधुनः ॥ प्रमदाउत्पथं ने-
 तुं कामक्रोधवशानुकम् ॥ २१४ ॥ मात्रास्वस्वादुहित्रावान-
 विविक्ता मनो भवेत् ॥ बलवानिन्द्रियग्रामो विद्वांसमपि क-
 र्यति ॥ २१५ ॥ कामन्तु गुरुपत्नीनां युवतीनां युवाधुवि ॥ विधि-
 बद्धं न कुर्यात्सावहमिति बुवन् ॥ २१६ ॥ विप्रोऽप्यपारयह-
 रामन्वहं चाभिचारनम् ॥ गुरुदारेषु कुर्वीत सतां धर्ममनुस्म-
 रन् ॥ २१७ ॥

۲۱۲ جو چیلہ بیٹی پرش کاسو اور عیب نہر جانتا سو وہ گرو کی جوان عورت کا پانوں
 پر نام نہ کرے

۲۱۳ آدمیوں کو عیب لگانا عورتوں کی عادت ہے اسلئے نہڑت لوگ عورتوں سے
 پیشیا رہیں۔

۲۱۴ کام کرو دھرمست نہڑت ہو یا مورکھ جو اسکو بڑی راہ میں لیجانے کیواسطے
 استری لوگ سا مرتھ رکھتی ہیں

۲۱۵۔ مان بہن لڑکی ان کے ساتھ اکیلے مکان میں نہ رہے کیونکہ اندری بہت
 بلان ہیں نہڑتوں کو بھی بڑی راہ پر پہنچ لیجاتی ہیں۔

۲۱۶۔ گردی جوان عورت کو جوان چیلہ اچھی طرح سے یہ لکڑی میں فلانا ہون میں
 گر کر ڈنڈوت کرے۔

۲۱۷ سفر سے آکر اچھے لوگوں کے دھرم کو یاد کر کے گردی استری کے پاؤں
 پیرے اور پر نام تو ہر روز کرے۔

विद्यागुरुष्वेतदेवनित्याद्यतिः स्वयोनिसु ॥ प्रतिषेधस्तु चा-
धर्मान्धर्मचोपरिशक्त्यपि ॥ २०६ ॥ अथस्तुगुरुवद्वृत्तिनित्य-
मेव समाचरेत् ॥ गुरुपुत्रेषु चार्येषु गुरोश्चैव स्वबन्धुसु ॥ २०७ ॥
बालसमानजन्मावाशिष्योवायज्जकर्मणि ॥ अध्यापयन्तु-
रमुतो गुरुवन्मानमर्हति ॥ २०८ ॥ उत्सादनं च गात्राणां स्नाय-
नोच्छिद्यभोजने ॥ न कुर्याद्गुरुपुत्रस्य पादयोश्चावनेजनम् ॥ २०९ ॥
गुरुवत्प्रतिपूज्याः स्युः सवर्णा गुरुयोचितः ॥ असवर्णास्तु संपू-
ज्याः प्रत्युत्थानाभिवादनैः ॥ २१० ॥ अभ्यंजनं स्नायनं च गा-
त्रोत्सादनमेव च ॥ गुरुपत्न्या न कार्या शिकेशानां च प्रसाध-
नम् ॥ २११ ॥

۲۰۶- اسی طرح سوا آچارج کے آپا دھیا وغیرہ دس گروہین اور چچا وغیرہ رشتہ دار
اور ادھرم سے بچا بیوا لے اور اچھی بات سکھانے والے بھی مثل گرو کے ہیں۔
۲۰۷- جو بڑے لوگ ہیں اور گرو کے بڑے بیٹے اور گرو کے بھائی ہندو میں سب کو
بھی مثل گرو کے جانے۔
۲۰۸- گرو کا بیٹا اپنی عمر سے چھوٹا ہو یا بڑا ہو اور پڑھانے کی سامرتھ رکھتا ہو اور اپنی
لیکھنے دیکھنے کو اوستے تو اس کی تعظیم مثل گرو کے کرتا چاہئے۔
۲۰۹- انسان کرنا۔ اسٹن لگانا۔ جو ٹھٹھا بھوجن کرتا۔ پانوں و صونایہ سب کام گرو کے
بیٹے کے نہ کرے۔
۲۱۰- گرو کے ہتھم زود کی پوجا مثل گرو کے کرے اور جو عورت ہتھم نہیں ہے تو اس کی
پوجا نہیں ہے کہ اٹھ کر صرت پر نام کرے۔
۲۱۱- گرو کی استری کے بدن میں تیل یا اسٹن نہ لگاوے اور نہ اسٹن کرے
نہ بال سکھاوے۔

परिचारात्त्वरोभवतिश्वाधैभवतिनिन्दकः॥ परिभोक्ताकृमि
भवतिकीदोभवतिमत्सरी॥ २०१॥ दूरस्थो नार्चयेदनेन कुड्योनां
तिकेस्त्रियाः॥ यानासनस्थश्चैवैनमवरुह्याभिवादयेत्॥ २०२॥
प्रतिवातेऽनुवातेचनासीतगुरुगासह॥ असंश्रवेचैवगुरोर्न किं
चिदपि कीर्तयेत्॥ २०३॥ गोऽश्वोऽथानप्रासादस्तरेषुकण्डेषु
च॥ आसीतगुरुगासार्धशिलाफलकनौयुच॥ २०४॥ गु-
रोर्गुरौ सन्निहिते गुरुवह्निमाचरेत्॥ नचातिसृष्टोगुरुगा
स्वाच्युत्तमिवास्ते॥ २०५॥

۲۰۱۔ گرو کا سچا یا جھوٹا عیب کہنے سے گدھا اور سزا کرنے سے گٹا ہوتا ہے اور
اور گرو انجنت و حق بھوجن کرنے سے جھوٹا کیرا اور گرو کی بڑائی نہ سمجھنے سے بڑا
کیرا ہوتا ہے۔

۲۰۲۔ گرو کی پوجا دور سے (یعنی کسی کے ہاتھ پوجا کی ساگر ی بھیج کر) نہ کرے اور غصہ
سے بھی نہ کرے اور اگر اپنی عورت کے پاس بیٹھا ہو یا سواری یا آسن پر بیٹھا ہو تو سواری
سے اتر کر اور آسن کو چھوڑ کر پرنام کرے۔
۲۰۳۔ جو آدمی گرو کے ملک سے چیلے ملک میں آیا ہو یا چیلے کے ملک سے
گرو کے ملک میں آیا ہو ان دونوں کے روبرو چیلے گرو کے ساتھ نہ رہے جو بات
گرو کی سنتے ہیں نہ آدے ایسی کوئی بات گرو کی یا اور کسی کی نہ کہے یعنی گرو سے چھپا
کوئی بات نہ کہے۔

۲۰۴۔ بیل گھوڑا اونٹ والے رتھ یا گاڑی پر اور چٹائی اور تھپڑ اور لکڑی اور ناو پر
گرو کے ساتھ بیٹھے۔

۲۰۵۔ گرو کے گرو کو بھی مثل اپنے گرو کے جانے اور بغیر حکم گرو کے اپنے ملک سے
آئے ہوئے چچا وغیرہ کو پرنام نہ کرے۔

प्रतिश्रवणासंभावेनसयानःसमाचरेत्॥ नासिनोनचमुञ्जानो
नतिष्ठन्नपरांमुखः॥ १६५॥ आसीनस्यस्थितःकुर्व्यादभिग
च्छस्तुतिष्ठतः॥ प्रत्युज्जस्यत्वाव्रजतःपश्चाद्भावंस्तुधावतः१६६
परांमुखस्याभिमुखोदूरस्थस्येत्यचान्तिकम्॥ प्रणाम्यतुश-
यानस्यनिदेशेचैवतिष्ठतः॥ १६७॥ नीचंशय्यासनंचास्यस-
र्वदागुरुसन्निधौ॥ गुरोस्तुचसुर्विषयेनयथेष्टासनोभवेत्॥
॥ १६८॥ नोदाहरेदस्यनामपरोक्षमपिकेवलम्॥ नचैवास्या
बुकुर्वीतगतिमायितचेष्टितम्॥ १६९॥ गुरोर्यत्रपरीवारोनि-
न्दावापिप्रवर्तते॥ करोतत्रपिधातव्योगन्तव्यंवातनोऽन्य-
तः॥ २००॥

۱۹۵- سوتا ہوا اور آسن پر بیٹھنا ہوا اور مجھو جن کرتا ہوا اور مکھ پھیرے سے گرو سے
بات چیت نہ کرے اور نہ سنے۔

۱۹۶- گرو بیٹھے ہوں تو آپ کھڑا ہو کر اور گرو کھڑے ہوں تو آپ چل کر اور گرو چلتے ہوں
تو آپ سانسے جا کر اور گرو دوڑتے ہوں تو آپ بھی پیچھے دوڑ کر گفت و شنید کرے۔
۱۹۷- گرو منہ پھیرے کھڑے ہوں تو سانسے جا کر اور دور ہوں تو پاس جا کر اور سوتے
ہوں تو پر نام کر کے اونکی اکیا کو سنے۔

۱۹۸- گرو کے پاس خواب گاہ اور بسترہ اپنا بیچار کھے جیسا دل چاہے دیا نہ
رکھے۔

۱۹۹- گرو کے پیچھے بھی صرف انکے نام کو نہ لیوے اور گرو کی جیسی چال ڈھال
بولی چھیٹھا (یعنی وضع) ہو ویسی اپنی نہ رکھے۔

۲۰۰- جہاں گورو کا سچا یا جھوٹا عیب کہا جاتا ہو یا سزا (بدگویی) ہوتی ہو وہاں اپنے
کان بند کر کے یا وہاں سے اٹھ جائے۔

جناہا سہوہ کرمہ تہذیب دین مانیہ مہی: ॥ راجنہوہ شہوہ سہوہ
 نہت تہذیب دین مانیہ ॥ ۱۰۱ ॥ چوہیتوہ گورہا نیت مہوہ دین
 یوا ॥ کورہا دین مانیہ مہوہ سہوہ دین مانیہ ॥ ۱۰۲ ॥ شہوہ
 رنہوہ یوا چنہوہ دین مانیہ سہوہ ॥ نیت مہوہ پرائل سہوہ دین
 مہوہ گورہا سہوہ ॥ ۱۰۳ ॥ نیت مہوہ دین مانیہ سہوہ
 سہوہ دین مانیہ ॥ آسہوہ مانیہ مانیہ سہوہ دین مانیہ ॥
 ۱۰۴ ॥ ہینا نیت مہوہ سہوہ سہوہ دین مانیہ ॥ ۱۰۵ ॥
 سہوہ مانیہ سہوہ دین مانیہ ॥ ۱۰۶ ॥

۱۰۱۔ شرادھ میں بھوجن کرنا برا نہیں ہے کام ہے کستری دیشیہ برہم چاریون کا کام

۱۰۲۔ گرو کی اجازت ہو یا نہ ہو گرو کے پڑھنے اور گورو کی بھلائی کرنے میں کوشش کری
 ۱۰۳۔ جسم و زبان و عقل و دل کو قابو میں رکھ کر ہاتھ جوڑے ہوئے گورو کو دیکھنا ہو
 سانسے کھڑا رہے۔

۱۰۴۔ دانتے ہاتھ کو چادرہ سے ہمیشہ باہر رکھے سادھ کی طرح آچار سے رہے
 چھیل پینے کو چھوڑے رہے اور جب گورو بیٹھنے کی اجازت دین تب سانسے
 اٹکے بیٹھے۔

۱۰۵۔ گرو کے سامنے ایسا طریقہ اختیار کرے کہ جیسا گورو بھوجن کرے اس
 سے اونے اور جہ کا بھوجن آپ کرے اور جیسا کپڑا اگر پہنیں اس سے کم درجہ
 کا کپڑا آپ پہنے اور جیسی صورت سے گورو دین اس سے کمتر صورت سے
 آپ رہے اور گورو کے جاگنے سے پہلے جاگے اور گورو کے سونے کے بعد آپ
 سووے۔

पुरोःकुलेनभिक्षेतनजातिकुलबन्धुषु ॥ अलाभेत्वन्यगेहानां प्र-
 वृत्तं पूर्वविवर्जयेत् ॥ १८४ ॥ सर्ववापि चरेद्ग्रामं पूर्वोक्तानामसं-
 भवे ॥ नियम्य प्रयतो वाचमभि शस्तांस्तु वर्जयेत् ॥ १८५ ॥ दृश-
 दाहृत्य समिधः सन्निदध्यादिहायसि ॥ सायं प्रातश्च जुह्यात्ता-
 मिरग्निमतद्धितः ॥ १८६ ॥ अकृत्वा भैक्षचरामसमिधचपा-
 वकम् ॥ अनातुरः समरात्रमवकीर्णाव्रतं चरेत् ॥ १८७ ॥ भैक्षे रा-
 वर्तयेन्नित्यं नैकाच्चादीमवेद्वती ॥ भैक्षे रात्रतिनोदतिरुपवासस-
 मास्मृता ॥ १८८ ॥ व्रतवद्देवदेवत्ये पित्र्ये कर्मरायथर्विवत् ॥ का-
 ममभ्यर्थितोऽश्रीयाद्व्रतमस्य न लुप्यते ॥ १८९ ॥

- ۱۸۴۔ گرد کے گل میں ذات کے گل میں بھائی کے گل میں بھیکہ نہ مانگے اور اگر کہیں
 نہ ملے تو اوّل اول کو چھوڑ کر دوسرے دوسرے سے مانگے۔
- ۱۸۵۔ جو ایسے گھر نہوں تو سب گانوں میں ہوں ہو کر اندریوں کو قابو میں لا کر بھیکہ مانگے۔
 لیکن پاپیوں کا گھر چھوڑ دیوے۔
- ۱۸۶۔ دور سے لکڑی لا کر زمین سے اوپر آکاش میں (یعنی اونچے پر) رکھے اُسی لکڑی
 سے صبح و شام ہوں کرے۔
- ۱۸۷۔ اگر سامر تک ہو تو سات دن تک بھیکہ نہ مانگے اور آگ میں ہوں کرے اور دیگر
 نام برت (جو آگے کہیں گے) کرے۔
- ۱۸۸۔ ہر روز بھیکہ مانگ کر بھوجن کرے مگر ایک ہی گھر کا ان نہ کھائے بھیکہ مانگ کر
 بھوجن کرنا برت کے برابر ہے۔
- ۱۸۹۔ اگر کسی شخص نے بسو دیو یا پتر کرم کے منت نیوت دیا ہو تو خاطر خواہ شراہرین
 بھوجن کرے لیکن دونوں کرموں میں سے کسی برتی اور رش کی طرح مدفعہ۔ مالش وغیرہ
 اشتیاء ممنوعہ سے پرہیز کرے ایسا کرنے سے برت نہیں جاتا۔

अभ्यंगमजनंचाक्षोरुपानच्छत्रधासाम् ॥ कामंक्रोधंचलोभंच
 नर्तनगीतवादनम् ॥ १७८ ॥ द्यूतंचजनवादंचपरिवादंतथान्त-
 म् ॥ स्त्रीणांचप्रेक्षरालम्भमुपघातंपरस्यच ॥ १७९ ॥ एकः
 शयीतसर्वत्रनरेतःस्कन्दयेत्कचित् ॥ कामाद्विस्कन्दयनरेतो
 हिनस्तिव्रतमात्मनः ॥ १८० ॥ स्वप्नोसित्वात्रह्यचारीहिनःसुख-
 मकामतः ॥ स्नात्वाकर्मवर्धयित्वात्रिःपुनर्मामित्यृचंपठेत् ॥ १८१
 ॥ उदकुम्भंसुमनसोगोशकन्नुत्तिकाकुशान् ॥ आहरेद्यावद-
 र्यानिभैसंचाहरहश्चरेत् ॥ १८२ ॥ वेद्यज्ञैरहीनानांप्रशस्तानां
 स्वकर्मासु ॥ ब्रह्मचार्याहरेद्भैसंगृहेभ्यःप्रयतोऽन्वहम् ॥
 १८३ ॥

۱۷۸- ادمین- کاجل- جوتا- چتری- کام- کرو دھ لو جت- نا چن- گانا

۱۷۹- جوا- جگر- کسی کا جھوٹا عیب بیان کرنا- عورتوں کو دیکھنا اور اوستے ملنا
 کسی کی بدخواہی- ان سب باتوں سے پرہیز کرے-

۱۸۰- اکیلا سو دے بیج کو دگر ادے اور جو کوئی عدا بیج کو گراتا ہے وہ اپنا برت
 کھوتا ہے-

۱۸۱- اگر خواب میں بلا خواہش بیج گر جائے تو غسل کر کے سویرج کی پوجا کر کے پیرنام
 اس شتر کو تین بار چپ کرے-

۱۸۲- پانی کا گھڑا پھول گو برہٹی کش- ان سب کو ضرورت کے موافق لا دے اور ہر روز
 بھیکہ مانگے

۱۸۳- جو شخص وید اور گیتہ اور اپنے اچھے کرمن کے ساتھ ہوا سکے گھر سے
 بھیکہ لا دے-

नाभिव्याहारयेद्ब्रह्मस्वधानिनयनादते॥ शूद्रेणाहिसमस्तावद्याव
 हेदेन जायते॥ १७२॥ कृतोपनयनस्यास्य व्रतादेशनमिष्यते॥ ब्रह्म
 णो ग्रहणांचैव क्रमेणाविधिपूर्वकम्॥ १७३॥ यद्यस्य विहितं चर्म
 यत्सूत्रं याचमेखला॥ यो दराडो यच्च वसनंतत्तदस्य व्रतेऽपि ॥
 १७४॥ सेवेते मांस्तु नियमान् ब्रह्मचारी गुणैव सन्॥ सन्नियम्येंद्रि
 यग्रामंतपो वृद्धार्थमात्मनः॥ १७५॥ नित्यं स्नात्वा शुचिः कुर्या-
 देवयिषित्वतर्पणाम्॥ देवताभ्यर्चनं चैव समिदाधानमेव च १७६॥
 वर्जयेन्मधुमांसं च गन्धमाल्यं रसान् क्रियः॥ शक्तानि यानि स-
 र्वाणि प्राणिनां चैव हिंसनम्॥ १७७॥

۱۷۲- بغیر جینتو ہونے کے (ٹکے کا) دھکار شرادھ کرنے میں ہوتا ہے لیکن شہور
 کے برابر ہوتا ہے۔

۱۷۳- جینتو کے بعد برت کرنا چاہیے اور بدھ کے سامنے وید پڑھنا
 چاہیے۔

۱۷۴- جکا جو میکھلا جو حیرم جو سوت جو ڈنڈ جو کپڑا ہے وہی برت میں
 بھی رہے۔

۱۷۵- برہم چاری گرد کل میں مقیم ہو کر اندریوں کو قابو میں لا کر اپنی عبادت کی ترقی کیلئے
 بطریق مندرجہ ذیل عمل کرے۔

۱۷۶- ہر روز غسل کر کے پاک ہو کر دیوریش پتیردن کا ترپن کر کے دیوتاؤں کا پوجن
 کرے اور آگ میں ہون کرے۔

۱۷۷- مرقہ۔ مالش۔ گندھ۔ مالا۔ رس۔ استری۔ شکٹ۔ جیوؤ نکا مارنا۔

۱۷۸- جو بیٹھا ہے مگر پانی پا کر کچھ زمانہ گزرنے سے کھٹا ہو گیا ہے۔

वेदमेव सदाभ्यस्येत्तपस्तप्यन्विजोत्तमः ॥ वेदभ्यासो हि विप्रस्य
 तपः परमिहोच्यते ॥ १६६ ॥ आर्हैव स नखायेभ्यः परमंतप्यते
 तपः ॥ यः स्वान्यपि द्विजोऽधीते स्वाध्यायं शक्तितोऽन्वहम् ॥
 १६७ ॥ योऽनधीत्यद्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम् ॥ स जीवन्नेव
 शूद्रत्वमाशुगच्छति सान्वयः ॥ १६८ ॥ मातुरग्रेऽधिजननं द्वि-
 तीयं मौज्जिवन्धने ॥ तृतीयं यज्ञदीक्षायां द्विजस्य श्रुतिचोदना-
 त् ॥ १६९ ॥ तत्र यद्वृक्षजन्मास्यमौज्जिवन्धनचिह्नितम् ॥ तत्रा-
 स्य मातासावित्री पितात्वाचार्य उच्यते ॥ १७० ॥ वेदप्रदानादा-
 चार्यं पितरं परिचक्षते ॥ न ह्यस्मिन् युज्यते कर्म किंचिदामौजि-
 वन्धनात् ॥ १७१ ॥

- ۱۶۶۔ براہمن تپ کرتا ہوا وید ہی کو پڑھے یہی اوسکا بڑا تپ ہے۔
- ۱۶۷۔ شتر سے لیکر پانوں تک پڑم تپ وہ کرتا ہے جو مالا اپنے ہوے بھی شکست پورک ہر روز وید کو پڑھتا ہے (یعنی پڑم چاری کو مالا اپنا منع ہے پس فعل ممنوع کرنے پر بھی اگر وید کو پڑھا کرے تو وہ بھی تپ ہی ہے۔
- ۱۶۸۔ جو براہمن وید کا پڑھنا چھوڑ کر شاسترون کے پڑھنے میں محنت کرتا ہے وہ بحالت زندگی اپنے ویش سمیت شور و بھاؤ کو حاصل کرتا ہے۔
- ۱۶۹۔ وید میں براہمن کے تین جنم لکھے ہیں پہلا جنم ماما سے دوسرا جینیو ہونے سے تیسرا یگیہ کرنے سے۔
- ۱۷۰۔ تین جینیو ہونے سے جو جنم ہوتا ہے اوسمیں گاتھیری ماما ہے آچارج پتا ہے۔
- ۱۷۱۔ وید کے پڑھانے سے آچارج تپا کلاتا ہے جب تک جینیو نہیں ہوتا تب تک آدمی کا ادمکار کسی کام میں نہیں ہوتا۔

यस्य वाङ्-मनسی शुद्धे सम्यग्-गुणे च सर्वदा ॥ सर्वे सर्वमवाप्नोति-
 वेदान्तोपगतं फलम् ॥ १६० ॥ नारुक्षुदः स्यादात्तोऽपि न परद्रो-
 हकर्मधीः ॥ यथास्योद्विजते वाचाना लोकांतामुदीरयेत् ॥
 १६१ ॥ समानाद्वाह्यगोनित्यमुद्विजेत विद्यादिव ॥ अमृतस्ये-
 वंचाकांक्षेदवमानस्य सर्वदा ॥ १६२ ॥ सुखं त्यज्य मत्तः शोते सुखं
 च प्रतिबुध्यते ॥ सुखं चरति लोकेऽस्मिन् न वमन्ता विनश्यति
 ॥ १६३ ॥ अनेन क्रमयोगेन संस्कृतात्मा द्विजः शनैः ॥ गुणैव सन्तं
 चिनुयाद्ब्रह्माधिगमिकं तयः ॥ १६४ ॥ तपो विशेषैर्विविधैर्ब्र-
 ह्मविधिचोदितैः ॥ वेदः कृत्स्नोऽधिगन्तव्यः सरहस्योद्विजन्मना
 ॥ १६५ ॥

۱۶۰- جسکی بانی اور سن شدھ ہے اور ہمیشہ پایا سے بچا ہوا، وہ ویدانت کے پھل کو

پاتا ہے۔

۱۶۱- تو کبھی ہونے پر بھی ایسی بات نہ کہے کہ جس سے کسی کے دل پر گھاؤ لگے اور جد نہ کرے۔

۱۶۲- براہمن تعلیم و تکریم کو مثل زہر کے اور توہین اور تحقیر کو مثل آنجیات کے سمجھتا رہے۔

۱۶۳- توہین پائے والا خوشی تمام سوتا اور جاگتا اور بھرتا ہے اور توہین کر نیوالا مر جاتا ہے۔

۱۶۴- اس طرح سنسکار کو پاک کرنا آہستہ آہستہ گرد کل میں باس کرتا اور ہیشم کو پراپت کر نیوالا تب کو کرے۔

۱۶۵- طرح طرح کے تپ اور برت کو کر کے وید کو مع علم پوشیدہ کے پڑھے۔

نہاयेनेनपलितेनवित्तेननबन्धुभिः॥ ऋषयश्चत्रिरधर्मयो-
 ऽनुवानःसनीमहान्॥ १५४॥ विप्रारांज्ञानतो ज्यैष्ठ्यंक्षत्रि-
 याराणानुवीर्यतः॥ वैश्यानां धान्यधनतश्शूद्राणामेवजन्मतः
 ॥ १५५॥ नतेनब्रह्मोभवतियेनास्यपलितंशिरः॥ योवैयुवाप्य-
 धीयानस्तंदेवाःस्थविरंविदुः॥ १५६॥ यथाकाष्ठमयोहस्तीय-
 थाचर्ममयोमृगः॥ यश्चविप्रोऽनधीयानस्त्रयस्तेनामविभ्रति॥
 १५७॥ यथावराहोऽफलःस्त्रीयुयथागोर्गविचाफला॥ यथा-
 चाज्ञोऽफलंरानंतथाविप्रोऽनुचोऽफलः॥ १५८॥ अहिंसेयेव
 भूतानांकार्यंश्रेयोऽनुशासनम्॥ बाकौवमधुराश्लक्षणाप्रयो-
 ज्याधर्ममिच्छता॥ १५९॥

۱۵۴ - زیادہ عمر ہونے اور بالوں کے ہلکے جانے اور زیادہ دولت اور بہت رشتہ داروں
 بڑا بہن کھاتا بلکہ انگ سہیت دید کا پڑھنے والا بڑا ہے یہ رشیوں کا قول ہے۔

۱۵۵ - براہمنوں میں گیان سے بڑا ہی ہے کشر لون میں طاقت سے دیشیوں میں
 دولت سے شور و رون میں جہم ہونے سے۔

۱۵۶ - بالوں کے کینے سے براہمن کھاتا بلکہ جو کوئی جوان ہے اور پڑھے ہوئے ہے
 اسی کو دیوتاؤں نے بڑا کہا ہے۔

۱۵۷ - کاٹھ کا ہاتھی چڑے کا ہرن نور کھ براہمن یہ تینوں بڑا نام ہیں کچھ کام
 بہن کر سکتے۔

۱۵۸ - جطرح نامرد آدمی غورتوں میں اور گھوگھو بن میں نشیمل ہے اور جطرح مور کھ براہمن
 کو دان دینا نشیمل ہے اسی طرح بے بڑھا براہمن نشیمل ہے۔

۱۵۹ - ایسے کام کی اگیا دینا چاہئے جس میں کسی جاندار کو تکلیف نہ اور دھرم آتما آدمی کو
 بھی بانی ہونا چاہئے۔

आचार्यस्त्वस्यांजातिविधिवद्देवपारगः॥ उत्पादयतिसावि-
 त्वासासत्यासाजरासरा॥ १४८॥ अत्यंबानहवायस्यश्रुतस्यो
 पकरोतियः॥ तमपीहगुरुंविद्याच्छुतोपक्रिययातया॥ १४९॥
 ॥ ज्ञाह्यस्यजन्मनःकर्त्तास्वधर्मस्यचशासिता॥ बालोऽपिवि-
 प्रोहद्वस्यपिताभवतिधर्मतः॥ १५०॥ अध्यापयासासपितृ-
 नृशिशुरांगिरसःकविः॥ पुत्रकाइतिहोवाचज्ञानेनपरिगृह्य-
 तान्॥ १५१॥ तेतमर्थमष्टच्छन्तरेवानागतमन्यवः॥ देवाश्च
 तान्समेत्योचुन्यार्थ्यवःशिशुरुक्तवान्॥ १५२॥ असोभवति
 वैवालःपिताभवतिमन्त्रतः॥ अज्ञंहिबालमित्याहःपितेत्येव
 तुमंत्रदम्॥ १५३॥

۱۴۸۔ جو جنم گامیشری کر کے آجانیج کرتا ہے سو جنم سچا اور بے رُو آں ہے۔
 ۱۴۹۔ تھوڑا یا بہت وید کے پڑھانے سے جو آپکار کرتا ہے اسکو بھی گرد سمجھا
 جائے۔
 ۱۵۰۔ جو اپنی عمر سے چھوٹا ہے اور وید کو پڑھانا اور دھرم کو سکھانا ہے وہ بھی
 گرد کھاتا ہے۔
 ۱۵۱۔ انگریز کے بیٹے نے اپنے چچا کو پڑھایا اور بیٹا کہا اسوجہ کہ گسیان میں بڑا
 تھا۔
 ۱۵۲۔ تب وہ چچا خفا ہو کر دیوتاؤں سے پوچھنے گیا دیوتاؤں نے کہا کاسٹل
 نے اچھا کیا۔
 ۱۵۳۔ کیونکہ جو کچھ بنین جانتا وہ بالک کھاتا ہے اور جو منتر دیتا ہے وہ باپ
 کھاتا ہے۔

वित्तम्बन्धुर्वयः कर्मविद्याभवतिपंचमी ॥ एतानिमान्यस्थानानिगरीयोयद्युत्तरम् ॥ १३६ ॥ पंचानां त्रिषु च रौषु भूयांसि
गुणावन्ति च ॥ यत्र स्युः सोऽत्र मानार्हः शूद्रोऽपि दशमी गतः ॥
१३७ ॥ चक्रिणो दशमी स्थस्य रोगिरागो भारिराः स्त्रियाः ॥ स्नात
कस्य च राज्ञश्च पन्थादेयो वरस्य च ॥ १३८ ॥ तेषां न्युसमवेतानां
मान्यो स्नातकपार्थिवौ ॥ राजस्नातकयोश्चैव स्नातको नृपमा
नमाक् ॥ १३९ ॥ उपनीयतु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद्भिजः ॥ सक
ल्यं सरहस्यं च तमाचार्यं प्रचक्षते ॥ १४० ॥ एकदेशान्तु वेदस्य वे
दांगान्यपि वा पुनः ॥ योऽध्यापयति ह्यर्थमुपाध्यायः स उ
च्यते ॥ १४१ ॥

۱۳۶- دولت رشتہ دار عمر عمل علم یہ پانچو واجب لتظیم ہیں انہیں پہلے سے دوسرا
دوسرے سے تیسرا وغیرہ افضل ہے۔

۱۳۷- بمخلہ براہمن کشتری ویشیہ کے جسکے پاس پانچ چیز مندرجہ بالا ہیں کسی کوئی چیز
زیادہ ہو دے قابل لتظیم ہے اور نوی برس سے زیادہ عمر کا شودر بھی قابل لتظیم ہے۔
۱۳۸- رتھ سوانو نوے برس سے زیادہ عمر والا پھلادو جو جھ والا د عورت و برہم جاری
در آجا و نوٹہ انھون میں سے کوئی ایک آتا ہو تو اسکو راستہ دے لینے آپ
کنارے ہو جائے۔

۱۳۹- اور اشیاء متذکرہ صندرباہم راہہ کور استند دیوین اور را جا برہم جاری کو آتا
ہو ا دیکھ کر راستہ سے ہٹ جائے۔

۱۴۰- جنیو کر کے جو شخص دید کو مع علم پوشیدہ کے پڑھاتا ہے وہ آچارچ کھاتا ہے۔
۱۴۱- دید کا ایک ویش اور دید کے چھ انگ ان سب کو جو کاکے لیے جو پڑھاتا ہے
وہ اپادھیا کھاتا ہے۔

ما تھسما ماما تھلانی شش شورش پیتھسما ॥ سंपूज्या गुरु पत्नीव
समास्ता गुरु भार्यया ॥ १३१ ॥ भ्रातृर्गौर्योपसंग्राह्या सवर्गा हन्य
हन्यपि ॥ विप्रोऽप्यसंग्राह्या जातिसम्बन्धियो धितः ॥ १३२
पितुर्भगिन्यां मातुश्च ज्यायस्यां च स्वसर्ग्यपि ॥ मातृवहृत्तिमा-
तिष्ठेन्माताताभ्योगरीयसी ॥ १३३ ॥ दशाब्दारव्यं पौरसरव्यं
चाब्दारव्यं कलाभृताम् ॥ अद्पूर्वं श्रोत्रियाणां स्वल्पेनापि
स्वयोनिषु ॥ १३४ ॥ ब्राह्मणां दशवर्षं क्षत्रशतवर्षं क्षत्रभूमियम् ॥
पितापुत्रौ विजानीया द्वाह्यरास्तुतयोः पिता ॥ १३५ ॥

۱۳۱- سوتسی مائیں ساس پھو پھوے سب گزڈ کی استری کے برابر مین اسلیئے ان
سب کی پوجا گزڈ کی استری کی طرح کرنا چاہیے۔

۱۳۲- بڑے بھائی کی عورت جو ہنوم ہوا اسکا پانوں چھو کر ہمیشہ پرنام کرے اور ہنوم
رشتہ دار عورت کا بھی پانوں چھو کر پرنام کرے لیکن جبکہ سفر سے آکر اپنے دیش مین
قیام کرے تب پانوں کو نہ چھوے عرف پرنام کرے۔

۱۳۳- پھو پھو سوتسی بڑی مین اسب کو مان (یعنی والدہ) کے برابر جانے گمان اس سے بڑی ہے
۱۳۴- ایک گانوں یا ایک شہر کے رہنے والے گن سے رشتہ ہوں اور دیش برش
بڑے ہوں تو انکے ساتھ دوستی کا بیو ہار ہوتا ہے اور گنی ہو اور پانچ برش بڑا ہو تو
اُنکے ساتھ بھی دوستی۔

کا بڑا ہوتا ہے اور وید پڑھا ہوا اور تین برش بڑا ہو تو بھی دوستی کا بڑا ہوتا
ہوتا ہے اور رشتہ دار ہو تو تھوڑے ہی زمانہ مین دوستی ہوتی ہے اگر مسند رجہ بالا سے
عمر مین زیادہ ہو تو وہ بزرگ ہے۔

۱۳۵- دس برس کلہ براہمن اور تھو برش کا کستری دونوں آپس مین بیٹھنے کی طرح مین
انہن براہمن بجائے باپ کے اور کستری بجائے بیٹے کے رہے۔

आयुष्मान्भवसौम्येतिवाच्योविप्रोऽभिवादाने॥ अकारश्चा-
 स्यनाम्नोऽन्तेवाच्यःपूर्वाक्षरःसुतः॥१२५॥ योनवेत्यभिवादस्य
 विप्रःप्रत्यभिवादनम्॥ नाभिवाच्यःसविदुषायथाशूद्रस्तथैवसः
 ॥१२६॥ ब्राह्मणांकुशलंश्च्छेत्सात्रवन्धुमनामयम्॥ वैश्यंसेमं
 समागम्यशूद्रमारोग्यमेवच॥१२७॥ अवाच्योदीक्षितोनाम्ना-
 यंचीयानपियोभवेत्॥ भोभवत्पूर्वकंत्वेनमभिभाषेतधर्मवि-
 त्॥१२८॥ परपत्नीतुयास्त्रीस्यादसंबन्धाच्योनितः॥ ताम्बूया
 इवतीत्येवंसुभोभगिनीतिच॥१२९॥ मातुलांश्चपितृव्यांश्च-
 श्वसुरान्त्वजोगुरुन्॥ असावहमितिब्रूयात्पत्युत्थाययवी-
 यशः॥१३०॥

- ۱۲۵۔ اشیر باد دینے میں آیش مان بھوسو سیہ ایسا کہنا چاہیے نام کے اخیر میں ہا کر
 وغیرہ مرکبیت یعنی ترا ترا تک کہتا چاہیے۔
- ۱۲۶۔ جو شخص اشیر باد دینے کے کلام کو نہیں جانتا اس کو پر نام کرنا بچا ہے وہ
 شودر کے مانند ہے۔
- ۱۲۷۔ براہمن سے کشل کشتی سے انا سے دیشیہ سے کیشم شودر سے اردگیٹ
 پو جینا چاہیے۔
- ۱۲۸۔ جو آدمی اپنے سے چھوٹا ہے اور گیہ کرتا ہے اس کو گیہ میں بھو بھوت لفظ
 سے بولنا چاہیے نام لینا مناسب نہیں ہے۔
- ۱۲۹۔ جس عورت سے کسی طرح کا رشتہ نہیں ہے اس کو سبھگے بھوتی بھگتی ایمنی بن
 کہنے پکارنا چاہیے۔
- ۱۳۰۔ ماتون۔ چچا ستر گیہ کرانے والا گردیہ سب اپنی عمر سے چھوٹے بھی ہوں
 تو بھی انکو یہ کہہ کر میں فلانا ہوں اٹھکر پر نام کرے۔

शय्यासनेऽध्याचरितेऽप्येयमानसमाविशेत् ॥ शय्यासनस्थ-
 श्वैवेनं प्रत्युत्थायाभिवादयेत् ॥ ११९ ॥ ऊर्ध्वं प्राणा उत्क्रामंति
 यूनः स्थविरश्चायति ॥ प्रत्युत्थानाभिवादाभ्यां पुनस्ताम्रति
 पद्यते ॥ १२० ॥ अभिवादनशीलस्य नित्यं हृद्दोषसेविनः ॥ चत्वारि-
 तस्य वर्द्धन्ते आयुर्विद्यायशो बलम् ॥ १२१ ॥ अभिवादात्परं
 विप्रोज्यायां समभिवादयन् ॥ असौ नामाहमस्मीति स्वं नाम-
 परिकीर्तयेत् ॥ १२२ ॥ नामध्येयस्य ये केचिदभिवादनं जानते
 तान्माज्ञोऽहमिति ब्रूयात्त्रियः सर्वास्तथैव च ॥ १२३ ॥ भोः श-
 ब्दं कीर्तयेदन्ते स्वस्य नाम्नोऽभिवादने ॥ नाम्नां स्वरूपभावो हि
 भोभावत्रयिभिः स्मृतः ॥ १२४ ॥

۱۱۹۔ بڑے لوگ جس آسن یا سنجیا پر بیٹھے ہوں اس پر اپنے بیٹھے اور اگر آپ سنجیا یا سن پر بیٹھا ہو تو اٹھ کر پر نام کرے۔

۱۲۰۔ بڑے لوگوں کے آنے سے چھوٹے لوگوں کا دل خوش ہوتا ہے اور چھوٹے لوگ جب اٹھ کر پر نام کرتے ہیں تو اس پر نام کو پاتے ہیں۔

۱۲۱۔ جو آدمی بڑے لوگوں کو ہمیشہ پر نام کرتا ہے اور خدمت کرتا ہے اس کی عمر دیکھائی دے گی۔

۱۲۲۔ پر نام کرنے کے بعد بزرگوں سے یہ کہے کہ میں مسلمان شخص ہوں۔

۱۲۳۔ جو شخص پر نام کرنے کے کلام کو نہیں جانتا وہ صرف اپنے نام ہی کو کہے اور غور میں بھی اس طرح کہیں۔

۱۲۴۔ پر نام کرنے کے وقت اپنے نام کے اخیر میں عبودہ لفظ کو کہنے عبودہ لفظ نام کا بتانے والا ہے یہ رشتہ لوگوں نے کہا ہے

विद्यैव समं कामं मर्त्यं ब्रह्मवादिना ॥ आयद्यपि हि धोरायां
 न त्वेनामिरितो वयेत् ॥ ११३ ॥ विद्या ब्राह्मणामेत्याह शेषे वधिस्तेऽ
 स्मिरक्षमा ॥ असूयकायमांसादास्तथास्यां वीर्यवत्तमा ॥ ११४
 ॥ यमेव तु शुचिं विद्या नियत ब्रह्मचारिराम् ॥ तस्मै मां ब्रूहि वि-
 प्राय निधियाया प्रमादिने ॥ ११५ ॥ ब्रह्मयस्त्वननुज्ञात अधीया-
 नाद्वाप्नुयात् ॥ स ब्रह्मस्तेयसंयुक्तो नरकं प्रतिपद्यते ॥ ११६ ॥ लो-
 किकं वैदिकं चापितथाध्यात्मिकमेव च ॥ आददीत यतो ज्ञानं तं
 पूर्वमभिवास्येत् ॥ ११७ ॥ सावित्री सात्रसारोऽपि चरं विप्रः
 सुयन्त्रितः ॥ नायन्त्रितस्त्रिवेदोऽपि सर्वाशी सर्वविप्रयी ॥
 ॥ ११८ ॥

۱۱۳۔ دویا سہت دید پڑھنے والا خواہش میں مر جا مگر کسی ہی مصیبت میں دویا کو
 اوسر زمین میں نہ ہو دے۔
 ۱۱۴۔ دویا براہمن کے پاس اگر کہتی ہے کہ میں تمھاری دولت ہوں میری حفاظت کرو
 سنو مگر نیو اے کو مجھے مذوق تو میں بقدرت تمام تمھارے پاس رہوں گی
 ۱۱۵۔ جس براہمن کو پورا اور برہم چاری اور دولت کی حفاظت کرنیوالا اور ہوشیار
 جانواں براہمن کو مجھے دو۔
 ۱۱۶۔ گرو کی بلا اجازت جو کوئی دید کو پڑھتے پڑھاتے شکر سیکھ لیتا ہے وہ دید کا جو
 ہے ترک میں جاتا ہے۔
 ۱۱۷۔ جس سے لوگ گمان یا دید گمان یا برہم گمان سیکھے اور کو پہلے پر نام کرے۔
 ۱۱۸۔ جو شخص مرگ گائتری جانتا ہو لیکن شستر کے موافق نیام سے رہتا ہو وہ قابل
 تعظیم ہے۔ اور جو تینوں دید کو پڑھا ہو لیکن سب چیز کا بچنے والا دنا پاک چیز کا کھانے
 والا و خلان شستر نہیں کرنیوالا ہو وہ قابل تعظیم نہیں ہے۔

यः स्वाध्यायमधीतेऽब्दविधिनानियतः शुचिः ॥ तस्य नित्यं क्षर-
त्येव योऽधिष्ठतं मधु ॥ १०७ ॥ अग्नीन्धनं भैक्षचर्यामधः श-
य्यांगुरोर्हितम् ॥ आसमावर्त्तनात्कुर्यात्क्षतोपनयनो द्विजः ॥
१०८ ॥ आचार्यपुत्रः शुश्रूषुर्ज्ञानदोषार्मिकः शुचिः ॥ आसः
शक्तोर्थदः साधुः स्वोऽध्याप्यादशधर्मतः ॥ १०९ ॥ नाष्टदः क-
स्यचिद्भूयान्नचान्यायेन पृच्छतः ॥ जानन्नपि हि मेधावी जडव-
ल्लोकश्चाचरेत् ॥ ११० ॥ अधर्मेणाचयः प्राह्वयश्चाधर्मेणापृच्छ-
ति ॥ तयोरन्यतरः प्रैतिविद्द्वेषवाधिगच्छति ॥ १११ ॥ धर्मार्थोय-
त्र न स्यातां शुश्रूषावापितद्विधा ॥ तत्र विद्यानवक्तव्या शुभंवी-
जमिवोषरे ॥ ११२ ॥

۱۰۷- جو آدمی ایک سال تک پوتر ہو کر بدھ سے ہر روز دیر کو پڑھتا ہے اسکو وہی دیر
دودھ دی گئی سٹھائی دیتا ہے۔

۱۰۸- جبکا جینو ہو گیا ہو وہ دیر پڑھنے سے جب تک فارغ ہو جا تب تک ہون کر تار
اور بھیگھ مانگے زمین پر سووے گرو کی بھلائی میں رہے۔

۱۰۹- اچارج کا بیٹا خدمت کر نیوالا دھرم کر نیوالا گیان دینے والا پوتر رہنے والا شیخ
سمتر سادھ روپیہ دینے والا مقوم پدش پڑھانے کے لائق ہیں۔

۱۱۰- بغیر پوچھے کسی سے کوئی بات نہ کہے فریب سے پوچھے تو بھی نہ کہے عقل مند آدمی اور
ہونے پر بھی دنیا میں مثل شے غیر متحرک کے رہے۔

۱۱۱- جو آدمی ادھرم سے پوچھتا ہے اور جو ادھرم سے کہتا ہے دونوں میں سے ایک بھلا
یا دشمنی پیدا ہو جاتی ہے۔

۱۱۲- جہان دھرم ارتھ سیوا شاستر کے موافق نہیں ہے وہاں بدیانہ سکھانا کیونکہ عمر
بچ اور سر زمین میں زمین بویا جاتا ہے۔

پوواں سنبھاں ج پں سٹھتھتھا ویتھی مارک دشی نا ت ॥ ی شیمانیو س ما
 سینی ن: س م ی ش س و بی با و نا ت ॥ ۱۰۱ ॥ پوواں سنبھاں ج پں سٹھتھتھ
 ش مینو و ی پو ہ تھ ॥ ی شیمانیو س ما سینی نو م ل ہ تھ تھ ویتھ ویتھ ت
 م ॥ ۱۰۲ ॥ ن تھ تھ تھ تھ تھ: پوواں نو ی اس تھ ی ش ی شیمانیو ॥ س ش
 د و دھ تھ تھ تھ تھ: س ر و س ما دھ ج ک ر م ر نا: ॥ ۱۰۳ ॥ آ پ اں س م ی ی ن
 ی تھ نو ن ت ک و بی دھ م ا س تھ تھ: ॥ س ا ویتھی م ا ی دھ ی تھ تھ ا س ر ی
 س م ا دھ تھ: ॥ ۱۰۴ ॥ و س ی پ ک ر س ی و س و ا دھ ی ی و س ی ن تھ ک ॥ نا
 ن ر ا دھ ی ۵ س تھ ی ن دھ ی ی ہ م م تھ ی و س ی ہ تھ ॥ ۱۰۵ ॥ ن تھ ک ن ا س تھ ی ن
 دھ ی ی و س تھ س تھ تھ تھ تھ تھ تھ ॥ بھ ا تھ تھ تھ تھ تھ ی م ن دھ ی ی
 و س تھ تھ تھ ॥ ۱۰۶ ॥

- ۱۰۱۔ پراتہ کال گائتری کا جب کرتا رہے جب تک سورج کا درشن نہو اور سیطیح سانیکال
 میں جب تک تارے نہ دکھلائی دیں۔
- ۱۰۲۔ پراتہ کال کی سندھیا کرنے سے رات کا پاپ چھوٹ جاتا ہے اور سانیکال کی
 سندھیا کرنے سے دن کا پاپ چھوٹ جاتا ہے۔
- ۱۰۳۔ جو آدمی دونوں وقت کی سندھیا نہیں کرتا ہے وہ شودر کی طرح دوج کرم
 باہر ہو جاتا ہے۔
- ۱۰۴۔ فنگل میں جا کر پانی کے پاس ایکٹل سو کر بدھ سے گائتری کا جب کرے۔
- ۱۰۵۔ وید کے جو چھ انگ ہیں انہیں اور نینتہ کرم اور ہون کے منتر ان میں سے ہیں انہیں
 اپنے تعطیل کا پکار نہیں ہے۔
- ۱۰۶۔ نینتہ کرم میں جو منتر پڑھے جاتے ہیں وہ تعطیل کے دن بھی خالی از ثواب
 نہیں ہیں۔

۱۰۷۔ اپنے نشا۔ کلب۔ دیا کرتا۔ مرکٹ۔ جوتش۔ چھند۔

यश्चैतान्यामुयात्सर्वान्यश्चैतान्केवलस्त्यजेत्॥ प्रापरात्सर्व
कामानां परित्यागो विशिष्यते॥ ६५॥ न तथैतानि शक्यन्ते सं-
नियन्तु मतेषया॥ विषयेषु प्रजुष्टानि यथाज्ञानेन नित्यशः॥
६६॥ वेदास्त्यागश्च यज्ञाश्च नियमाश्च तपांसि च॥ न विप्रदुष्टभा-
वस्य सिद्धिं गच्छन्ति कर्हिचित्॥ ६७॥ शुक्लास्य द्वाच दृष्ट्वा च मु-
क्ता घ्रात्वा च योनरः॥ न ह्यथ तिग्मा यती वा स विज्ञेयोजिते त्रि-
यः॥ ६८॥ इन्द्रियारांतु सर्वेषां यदेकं क्षरतीन्द्रियम्॥ तेनास्य
क्षरति प्रज्ञा हतेः पादादिबोदकम्॥ ६९॥ वशे कृत्वेन्द्रियग्रामं
संयम्य च मनस्तथा॥ सर्वान्नन्साधयेदर्थानक्षिरावन्योगत-
स्तनुम्॥ १००॥

۹۵۔ جس شخص کو سب چیزیں خاطر خواہ پیشتر میں اور جو شخص پانی ہوئی سب چیزوں کو ترک
کردیتا ہے ان دونوں میں ترک کرنا والا بڑا ہے۔
۹۶۔ نعمتوں کا ترک بغیر انکے استعمال کے نہیں ہوتا کیونکہ استعمال کرنے سے جب انکا
عیب نظر آتا ہے تب انکے ترک کرنے کو دل چاہتا ہے۔
۹۷۔ جب کاجھاؤ وٹوٹا ہے اسکو دیدیتا گت نیم۔ تپ۔ گیہیہ سے کچھ سدھ
نہیں ملتی۔
۹۸۔ جو شخص سننے اور چھونے اور دیکھنے اور استعمال کرنے اور سونگھنے سے نہ خوش
ہوتا ہے اور نہ بغیر انکے ناخوش ہوتا ہے وہ جتنی دیر کھاتا ہے۔
۹۹۔ سب اندریوں میں سے ایک بھی اندری جہاں اپنے بے میں لگی بس مدھ جاتی
رہی جیسے چلنی سے پانی نکل جاتا ہے۔
۱۰۰۔ عمدہ تدبیروں سے سب اندریوں کو اور دل کو اپنے قابو میں کر کے سطح پر کر
جسمین جسم کو تکلیف نہونے پاوے سب مرادوں کو حاصل کرے۔

एकादशेन्द्रियारायाह्वानिपूर्वमनीधिराः॥ तानिमम्यव-
 ह्यामियथावदनुपूर्वशः॥ ८६ ॥ श्रोत्रंत्वक्चक्षुर्धृतिरिन्द्रियाणि
 काचैवपंचमी॥ पायुपस्थंहस्तपादंवाक्चैवदशमीस्मृता॥ ८७ ॥
 बुद्धिर्द्विधारिण्यंचैवांशोतादीन्यनुपूर्वशः॥ कर्मेन्द्रियारिणि
 पंचैवांशोत्वादीनिप्रचसते॥ ८८ ॥ एकादशमनोज्ञेयंस्वगुरो
 नोभयात्मकम्॥ यस्मिञ्जितेजिताचैतोभवतःपंचकोगराणो
 ॥ ८९ ॥ इन्द्रियाराणांप्रसंगेनदोषसूक्ष्मसंशयम्॥ सनियम्य
 तुतानेवततःसिद्धिर्नियच्छति॥ ९० ॥ नजातुकामःकामाना-
 मुपभोगेनशास्यति॥ हविषाकृष्यावर्त्मवभूयसवाभिवर्द्धते
 ॥ ९१ ॥

۸۹- اگلے پنڈتوں نے جو گیارہ اندریاں کہی ہیں ان سب کو ٹھیک ٹھیک کہتے ہیں۔
 سنو لیجئے۔

۹۰- سامنے۔ بائیں۔ شام۔ وائیں۔ لائیں۔ ہاتھ۔ پاؤں۔ زبان۔
 وقت۔ پاخانہ۔ مقام پیشاب۔

۹۱- ان سب میں پہلے پانچ گیارہ اندری کہلاتی ہیں اور دس پانچ کرم اندری کہلاتی ہیں۔

۹۲- گیارہ ان میں ہے جو اپنی صفتوں سے گیارہ اندری اور کرم اندری سے نامزد ہیں۔
 من کو جیتنے سے دس اندری جیتی جاتی ہیں۔

۹۳- اندریوں کی شگت میں پرنے سے جو دکھی ہوتا ہے اور اندریوں سے ترک تعلق
 کرنے سے جو سدھ کو پاتا ہے۔

۹۴- جس چیز کی خواہش میں لینے دل کو ہوتی ہے اسکے مل جانے پر بھی آسودہ نہیں ہوتا
 بلکہ اور خواہش زیادہ ہوتی ہے طرح کھی پانے سے آگ تیز ہوتی ہے۔

۸۴۔ دید میں لکھی ہوئی سب کھریا ناست ہونے والی ہے مگر اننگ جو برہم کا روپ ہے

لا زوال ہے۔

۵۸۔ گیٹ سے آپانس جب دس گنا زیادہ ہے جبکہ آپانس کے رہنے والے بھی نہ
سُفین سن پڑنے والے جیٹ سے آپانس جب سو گنا زیادہ ہے اور جو بے لمین
جیٹ چاپ کیا جائے انھوں نے بے لمین تو وہ جیٹ آپانس سے ہزار گنا زیادہ
ہے

۸۶۔ اور جو چار پاک گیٹھ مین اور بدھ م گیٹھ یہ سب جب گیٹھ کے سولھویں حصہ کو بھی نہیں پہنچتے۔

۸۷۔ براہمن سب جانداروں سے محبت رکھے اور صرف جپ ہی کو کرے تو
سب سدھ ہوتی ہے۔

۸۸۔ اپنے اپنے لہیوں سے اندریوں کو روکے اس طرح کہ جیسے رتھوان گھوڑے کو سب سدھ ہوئی ہے۔
کچال سے روکتا ہے۔

۸ یعنی آنکھ کو رکھنے سے زبان کو ذائقہ ہے ناک کو سونگھنے سے بدن کو چھونے سے کان کو سننے سے روک۔

एतदक्षरमेतां च जपन् व्याहृतिपूर्विकाम् ॥ संध्यगोर्वेदविद्विप्रो
वेदपुराणेन युज्यते ॥ ७८ ॥ सहस्रकृत्वस्त्वभ्यस्य बहिरेतत्त्रि-
कंद्विजः ॥ महतोऽप्येन सोमासात्त्वचेवाहिर्विमुच्यते ॥ ७९ ॥
एतयर्चा विसंयुक्तः काले च क्रियया स्वया ॥ ब्रह्मसत्रियवि-
द्यो निर्गर्हरां यातिसाधुषु ॥ ८० ॥ ॐ कारपूर्विकास्तिस्त्रोम-
ह्यव्याहृतयोऽव्ययाः ॥ त्रिपदा चैव सा वित्री विज्ञेयं ब्रह्मराणे-
मुखम् ॥ ८१ ॥ यो धीतेऽहन्यहन्येतां स्त्रीरिावर्षा रायतन्द्रितः ॥
स ब्रह्म परमभ्येति वायुभूतः स्वमूर्त्तिमान् ॥ ८२ ॥ एकाक्षरं परं
ब्रह्म प्राराणायामाः परंतपः ॥ सा वित्र्यास्तु परं नास्ति मौनात्स-
त्यं विशिष्यते ॥ ८३ ॥

۷۸۔ اڈنگ مَجھوہ مَجھوہ سَوہ اسکو اور گا تیری کے تینون چرنون کو دلوں سندھیا
مین وید پڑھنے والا براہمن جب کرے تو سمپورن پن پراپت ہون
۷۹۔ اٹھین تینون کو باہر جا کر سزا بار ایک مہینہ تک پڑھے تو پڑے پاسے چھوٹ
جائے جس طرح سانپ کپیل سے چھوٹتا ہے
۸۰۔ جو براہمن کستری ویشیہ ان تینون کو اپنے وقت پر نہیں پڑھتا ہے اسکی سادھ
لوگ نندا کرتے ہیں۔
۸۱۔ یہی تینون یعنی اڈنگ مَجھوہ مَجھوہ سَوہ گا تیری دید کا مکھ ہے اور پر ماتما کے ملنے
کا دروازہ ہے۔

۸۲۔ جو شخص کا اہلی چھوڑ کر تین برس تک ہر روز اچھین تینون کو پرے وہ شکل ہو
ہو کر برہم پردی کو حاصل کرے
۸۳۔ اذنگ یہ پر برہم ہے پرانا پیام پر مپت ہے گا تیری سے بڑا کوئی نہیں ہے
پ رہنے سے سچ بولنا چھا ہے۔

व्यत्यस्तपाणिनाकार्यमुपसंग्रहांगुरोः॥सव्येनसव्यःस्य-
 सव्योदक्षिरोनचदक्षिणाः॥७२॥अधोव्यमारांतुगुरुर्नित्य
 कालमतन्त्रितः॥अधीवभोइतिब्रूयाद्विरामोऽस्त्वितिचा-
 रमेत॥७३॥ब्रह्मराःप्ररावंकुर्यादादावन्तेचसर्वदा॥सवत्य-
 नोक्तंतपूर्वपुरस्ताच्चविशीर्यति॥७४॥प्राक्कूलान्यर्युपासी-
 नःयवित्रैश्चैवपावितः॥प्राराण्यभैस्त्रिभिःपूतस्ततश्चोका-
 रमर्हति॥७५॥अकारंचाष्टुकारंचमकारंचप्रजापतिः॥वे-
 दत्रयान्निरदुहद्भुवःस्वरितीतिच॥७६॥त्रिभ्यएवतुवेदेभ्यः
 पावंपादमदुहत्॥तदित्यूचोऽस्याःसावित्र्याःपरमेष्ठीप्र-
 जापतिः॥७७॥

۷۲۔ گرد کے سامنے ہو کر داہنے ہاتھ سے داہنے چرن اور بائیں ہاتھ سے بائیں
 چرن کو چھوئے۔

۷۳۔ گرد حکم دے تب چیل پڑھے اور جب چپ منہ کو کہے تب چپ رہے صل یہ کہ
 گرد کے حکم سے کپڑے اور چپ رہے۔

۷۴۔ سبق کے آغاز و اختتام پر پر نو اپنی اولگ کار کے اگر نہ کہے تو پڑھ ہی بھول
 جاتا ہے۔

۷۵۔ پورب منہ کش کے آسن پر بیٹھ کر پوتر منتر سے پوتر ہو کر تین بار پرانا یا ام کر
 تب اونکار کہنے کے لائق ہوتا ہے۔

۷۶۔ اکار اکار ان تینوں اکشروں کو اور مجھوہ مجھوہ سوہ انکو بھی برہما جی تینوں
 وید سے نکالا۔

۷۷۔ انھیں تینوں وید سے ایک ایک پاؤ گامیتری کا برہما جی نے نکالا۔

अमन्त्रिकातुकार्येयंस्त्रीराामाद्यदशेषतः॥ संस्कारार्थं शरीर-
स्थयथाकालं यथाक्रमम्॥ ६६॥ वैवाहिकोविधिस्त्रीराांसं-
स्कारोवैदिकः स्मृतः॥ पतिसेवागुरोवासो गृहार्थोऽग्निपरिक्रि-
या॥ ६७॥ सयप्रोक्तां द्विजातीनामोपनायनिकोविधिः॥ उत्प-
त्तिव्यञ्जकः पुरायः कर्मयोगं निबोधत॥ ६८॥ उपनीयगुरुः शि-
ष्यं शिष्येच्छोचमादितः॥ आचारमनिकार्यं च सन्ध्योपास-
नमेव च॥ ६९॥ अध्येष्यमारात्वा चान्तो यथाशास्त्रमुद्द्-
स्वः॥ ब्रह्माञ्जलिस्ततोऽध्यापोलघुवासाजितेन्द्रियः॥ ७०॥ ब-
ह्मरम्भोऽवसाने च पादौ शान्तौ गुरोसदा॥ संहृत्य हस्तावध्येयं-
सहिब्रह्माञ्जलिः स्मृतः॥ ७१॥

۶۶۔ یہ سب سنسکار عورتوں کے بلا ذریعہ منتر کے کرنا چاہئے مگر انکو جو وقت پر مطرح سے
کہا ہے اسی طرح کرنا چاہئے
۶۷۔ عورتوں کا بواہ بموجب شستر کے ہونا یہی منتر کا سنسکار ہے پت کی سیوا اگر
کے گھر میں رہنا ہے اور گھر کا کام کاج یہی اگن کی سیوا ہے۔
۶۸۔ تینوں دن کا جینو کہا وہ نہایت ثواب ہے اس سے دوسرا حجم ہوتا ہے آ
اسکے بعد کرم یوگ کو کہتے ہیں۔
۶۹۔ گرد کو چاہئے کہ پہلے پوتریا آچار اگن کی سیوا تینوں وقت کی سندھیا ان سب باتوں
چیلے کو پہلے سکھاوے۔
۷۰۔ بموجب حکم شستر کے پڑھتے وقت آچمن کر کے پوٹ رخ ہاتھ جوڑ کر جیندڑی
ہو کر چھوٹا کپڑا نپکڑ چلایا ہے۔
۷۱۔ ہر روز سونے کے آغاز و ختم ام پر دونوں ہاتھ سے گرد کے چرنوں کو
چھوڑے۔

۶۰۔ پہلے تین بار آچمن کرے پھر دو دفعہ منہ دھو دے اور ناک کان آنکھ منہ چھاتی شر کو پانی سے چھوے۔
۶۱۔ پورب منہ یا اتر منہ ہو کر ٹھنڈے پانی سے جبین پھنپیا نہو تنہائی میں پانی و صفائی سے آچمن کرے۔
۶۲۔ آچمن کرنے میں براہن چھاتی تک کشتری گلے تک دیشہ زبان تک شود۔
۶۳۔ بائین کندھے پر جینور بنے سے اپنی یعنی سبتہ کہلاتا ہے اور دائیں کندھے پر رہنے سے براہن آہنی یعنی اپنی کہلاتا ہے اور گلے میں رہنے سے نبیتی کہلاتا ہے۔
۶۴۔ بیکھلا چڑاؤ نڈ خیشو کندل لیے سب ٹوٹ جائیں تو پانی میں ڈال دے اور نیا منتر کر کے دھارن کرے۔
۶۵۔ براہن کو کیشانت کرم گرہ سے سولھویں برش اور کشتری کو بائیس برش اور دیشہ کو چوبیسویں برش کرنا چاہئے۔

पूजयेदशानंनित्यमद्याद्यैतदकुत्सयन्॥ दद्याद्द्व्येत्प्रसीरेचप्र-
तिनन्देच्चसर्वशः॥५४॥ पूजितं ह्यशानंनित्यंबलमूर्जं च यच्छ-
ति॥ अपूजितं तु तद्भुक्तमुभयं नाशयेदिरम्॥५५॥ नोच्छिष्टं क-
स्यचिद्दद्यान्नाद्याद्यैव तस्यान्तरा॥ न चैवात्यशानं क्षुर्यान्नचोच्छि-
ष्टः कचिद्भजेत्॥५६॥ अनारोग्यमनायुष्यमस्वर्ग्यं चातिभोजन-
म्॥ अपुराणं लोकविद्धिष्टं तस्मात्तत्परिबर्जयेत्॥५७॥ ब्राह्मेरा-
विप्रस्तीर्थेन नित्यकालमुपसृशेत्॥ कायत्रैदशिकाभ्यां वा न-
पित्र्येराकराचन॥५८॥ अंगुष्ठमूलस्य तले ब्राह्मं तीर्थं प्रचक्ष-
ते॥ कायमंगुलिमूलेऽग्रे देवं पितॄन्तयोरधः॥५९॥

۴۵۔ ہر روز ان کی پوچھا کرے اور ان کی قوانین نہ کرے اور ان کو دیکھ کر خوش ہو کر یہ کہہ کہ سچو سچیتہ ایسا ان ملے بھوجن کرے۔

۵۵۔ اُن کی پوجا کرنے سے بیچ اور اندری شکست دونوں پڑھتے ہیں اور پوجا کرنے سے اچھین دونوں کا ناش ہو جاتا ہے۔

۵۶۔ جو ٹھاکسی کو نہ دے دن اور رات کے پیچ میں بھوجن نہ کرے بہت بھوجن نہ کرے جو تھے منہ کیسین نہ جائے۔

۵۷۔ بیت بھوجن کرنا عمر و تغذرتی و بہشت و شراب کی واسطے نہیں ہے اور دنیا من باعث بدنامی ہے۔

۵۔ براہمن ہمیشہ برہم تیرتھ سے آچمن کرے دیوتیرتھ پیرتھ پر جاپتیرتھ سے آچمن کرے۔

۵۹۔ انگو بھا۔ ترجمہ کنشہا۔ ان تینوں کا مول سلسلہ سے یم پرتھ ہے۔

प्रतिगृह्योप्सितं दराडमुपस्थापय च भास्वरम् ॥ प्रदक्षिणां परीत्या
 ग्निं चरेद्देसं यथाविधि ॥ ४८ ॥ भवत्पूर्वचरेद्देसमुपनीतो द्विजो-
 त्तमः ॥ भवन्मध्यं तु राजन्योर्वैश्यस्तु भवदुत्तरम् ॥ ४९ ॥ मातरं-
 वा स्वसारं वा मातुर्वा भगिनीं निजाम् ॥ भिक्षेत भिक्षां प्रथमं-
 याचैनं नावमानयेत् ॥ ५० ॥ समाहृत्य तु तद्देसं यावदर्थं समाप-
 या ॥ निवेद्य गुरवेऽग्नीयादा च म्यप्राड्मुखः सुचिः ॥ ५१ ॥
 आयुष्यं प्राड्मुखो भुंक्ते यशस्यं दक्षिणां मुखः ॥ श्रियं प्रत्य-
 ड्मुखो भुंक्ते व्रतं भुंक्ते ह्युदङ्मुखः ॥ ५२ ॥ उपस्थस्य द्विजो नि-
 त्यमन्नमद्यात्समाहितः ॥ भुक्त्वा चोपस्थशोत्सम्यगद्भिः स्वा-
 निचसंस्पृशेत् ॥ ५३ ॥

۴۸- ڈیڑھ حارن کر کے سورج کے سنکھ ہو کر اگن کی پردکشا لینے طوائف کر کے طریق

مندرجہ ذیل سے بھیکھ مانگے

۴۹- بر آہن کشرشی ویشیہ میتون ورن کے برہم چاری بھیکھ مانگنے کے الفا طین سلسلہ
 کے موافق اول و درمیان و آخر میں بھوت لفظ کو کہیں گے

۵۰- پہلے مان بن موسی سے بھیکھ مانگے اور جو برہم چاری کا اپان یعنی توہین
 نہ کرے اس سے بھی مانگے۔

۵۱- پہلے چل ہو کر بھیکھ مانگ کر گورو کے پاس رکھے پھر آچین کر کے پوتر ہو کر پورب منہ
 بیٹھ کر بھوجن کرے۔

۵۲- پورب- دشن- پیم- اتر کی طرف منہ کر کے بھوجن کرنے سے سلسلہ کے موافق اتر
 نیکنامی دولت راستی کی ترقی ہوتی ہے۔

۵۳- ہر روز دل کو کیو کر کے بعد آچین کرنے کے بھوجن کرے اور بھوجن کے بعد پھر
 آچین کرے اور اندر یون کو پانی سے چھوے۔

مৌجی تریہ تسماسلشاکارپاویپرسیمبرکلا ॥ ستریت-
 سبتوموویجیوہشسشراٹانہوی ॥ ۴۲ ॥ مںجالاہتوکرت
 ویا: کوشااسنککولہجے: ॥ تریہتاہنہیکےن تریہ: پंच-
 میرکوا ॥ ۴۳ ॥ کارپاسموبیوتسادیپرسوہتتتریہ ॥ ش-
 راسکرممیراٹوہشسشراٹانہوی ॥ ۴۴ ॥ براہمراٹوہش
 پالاسوہشسشراٹانہوی ॥ پیلوہشسشراٹانہوی ॥
 تریہ: ॥ ۴۵ ॥ کوشاٹیکوہشسشراٹانہوی: کارپ: پراس-
 رات: ॥ لالاسمیتوہش: ستریتناٹانہوی: ॥ ۴۶ ॥
 کرجوہشسشراٹانہوی: ستریتناٹانہوی: ॥ انوہشسشراٹانہوی-
 راساتکونانہوی: ॥ ۴۷ ॥

۴۲ - براہمن کی مںج کی میکھلاتین لڑکی اور کشتری کو مورد کی ڈوکر کی اور ویشیہ کی
 سن کی تین پتہنا چاہئے۔

۴۳ - اگر مںج اور دوسرے نہ ملین تو کوش بھڑاگئی کی تین لڑکی کرنا چاہئے ایک یا تین یا پانچ
 گانٹھ کی کرنا چاہئے گل کی ریت کے موافق نہ یہ کہ براہمن ایک کشتری دو ویشیہ تین گانٹھ کی کھین
 ۴۴ - براہمن کو کپاس کا جینو کشتری کو سن کا ویشیہ کو بھڑکے بانوں کا پتہنا چاہئے سو
 کرج کی تگنا کر کے پھر تگنا کرنا۔

۴۵ - براہمن پیل یا پلاس کا ڈنڈ معارن کرے اور کشتری بریا کھیر کا اور ویشیہ میلو
 یا گولر کا۔

۴۶ - شر کے بالوں تک براہمن اور پشانی تک کشتری اور ناک تک ویشیہ ڈٹو کو دھلا
 کریں۔

۴۷ - سب ڈٹو ملائم و صاف و بے سوراخ و خوبصورت ہوں بد صورت یا آگ سے
 داغدار نہ ہوں۔

गर्भाष्टमेऽजेकुर्यीतब्राह्मरास्योपनायनम्॥ गर्भादेकादशे
 राज्ञोगर्भास्तुद्वादशेविशः॥ ३६॥ ब्रह्मवर्चसकामस्यकार्यवि-
 प्रस्यपंचमे॥ राज्ञोबलार्थिनषष्ठेवैश्यस्येहार्थिनोऽष्टमे॥ ३७
 ॥ आषोडशाद्ब्राह्मरास्यसावित्रीनातिवर्त्तते॥ आद्वादविंश-
 त्सत्रबन्धोराचतुर्विंशतेर्विशः॥ ३८॥ अत ऊर्ध्वत्रयोऽप्ये-
 तेयथाकालमसंस्कृताः॥ सावित्रीपतिताब्राह्मभवन्यायं
 विगर्हिताः॥ ३९॥ नैतैरपूतेर्विधिवदाप्यपिहिकर्हिचित
 ॥ ब्राह्मरायोनांश्चसम्बन्धान्नाचरेद्ब्राह्मराःसह॥ ४०॥ का-
 र्यारौखवास्तानिचर्माणिब्रह्मचास्याः॥ वसीरन्नानुशू-
 र्व्येराशाराक्षौमादिकानिच॥ ४१॥

۳۶۔ روز قیام حمل یا روز دلالت سے آنکھوں میں گیارہ ٹھوین۔ بارھ ٹھوین برش بہ ترتیب
 سلسلہ برہمن۔ کشتری ویشیہ کا جنینو کرنا چاہئے۔
 ۳۷۔ برہمن پتیج اور بٹل اور دھن کی اچھا ہو تو سلسلہ کے موافق برہمن کشتری پتیج
 پانچویں چھٹھویں۔ آنکھوں میں برش جنینو کریں۔
 ۳۸۔ سوٹہ باتیس۔ چوبیس برش تک بہ ترتیب سلسلہ برہمن کشتری ویشیہ کی گائیتری پتیج
 ۳۹۔ اسکے بعد تینوں دن اسکے اوھکاری نہیں رہتے تب انکا نام براہمنہ کہلاتا ہے اور
 آریا لوگ انکو برا کہتے ہیں۔
 ۴۰۔ جب تک ایسے برہمن پر اشیچت یعنی کفارہ نہ کریں تب تک انھوں کے ساتھ پڑھنے پڑچنے
 و دواہ شادی وغیرہ کامیو ہارنکریے۔
 ۴۱۔ اب ان تینوں دنوں کے برہمن چارویں گا چر او غیرہ سپنا کہتے ہیں۔ کہ کالا برہمن ہرن
 بکرا کا چر او برہمن کشتری ویشیہ سلسلہ کے موافق اوپر جسم میں اور سن میں بھٹیلا کر
 کپڑا نیچے کے بدن میں دھارن کریں۔

नामध्येयंदशम्यालुहारस्यांवांस्कारयेत् ॥ पुरायेतिथीयुह-
 तैवानक्षत्रेवागुरागन्विते ॥ ३० ॥ मंगल्यंवाहारास्यस्यात्वाचि-
 यस्यवलाचितम् ॥ वैश्यस्यधनसंयुक्तंशूद्रस्यतुचुगुणितम् ॥
 ३१ ॥ शर्मवद्वाहारास्यस्यादाजोरहासमन्वितम् ॥ वैश्यस्य
 पुष्टिसंयुक्तंशूद्रस्यप्रेष्यसंयुतम् ॥ ३२ ॥ स्त्रीणांमुखोद्यमभूरं
 विस्पष्टार्थमनोहरम् ॥ मंगल्यंदीर्घवर्यान्तमाशीर्वादाविधान-
 वत ॥ ३३ ॥ चतुर्थेमासिकर्तव्यंशिशोनिष्क्रमणांगुहात् ॥ य-
 स्तेऽन्नप्राशनंमासियद्वेष्टमंगलंकुले ॥ ३४ ॥ चूडाकर्मद्विजा-
 तीनांसर्वेषामेवधर्मतः ॥ प्रथमेऽव्देतृतीयेवाकर्तव्यंशुति-
 चोदनात् ॥ ३५ ॥

۳۰ - پیدائش سے گیارھواں یا بارھواں دن تمام کمرن کرنا چاہئے اگر ان دنوں
 نہ ہو سکے تو اور کسی اچھی تھکے اور نکستر اور دن میں کرنا چاہئے۔

۳۱ - براہمن کے نام میں لفظ سنگل یعنی خوشی اور کستری کے نام میں لفظ بل یعنی طاقت اور
 ویشیہ کے نام میں لفظ دھن یعنی دولت اور شوڈر کے نام میں لفظ مٹا یعنی تحقیر شامل کرنا چاہئے
 ۳۲ - براہمن کستری - ویشیہ شوڈر - اخون کے نام کے اخیر میں لفظ مٹم کرنا چاہئے
 پریشیہ حسب سلسلہ شامل کرنا چاہئے۔

۳۳ - عورت کا نام ایسا رکھنا چاہئے کہ جو فرحت انگیز ہو اور نرم اور سہل اور پیارا اور خوشی
 اور دعا کے معنی رکھتا ہو اور اخیر کا حرف اعراب کامل رکھتا ہو۔

۳۴ - چوتھے مہینہ لڑکے کو گھر سے باہر لگانا چاہئے۔ اور چھٹے مہینہ یا جس مہینہ میں
 کل کی ریت ہو ان پر اشن کرنا چاہئے۔

۳۵ - براہمن کستری ویشیہ ان سبکا جوڑا کرم لینے نوڈن پہلے یا تیسرے برش کرنا چاہئے
 یہ وید کا حکم ہے۔

सतान्द्विजातयोदेशान्नां अथैरन्ययत्नतः ॥ २३ ॥ अहस्तु यस्मिन्कस्मि
न्यानि वसेहृत्तिकर्षितः ॥ २४ ॥ स वा धर्मस्थवो योनिः समासेन प्र
कीर्तिता ॥ संभवश्चास्य सर्वस्य वरार्थं धर्मान्निबोधत ॥ २५ ॥ वै-
दिकैः कर्मभिः पुरायै नियोक्ता हि द्विजन्मनाम् ॥ कार्यः शरीरसं-
स्कारः पावनः प्रेत्य चेह च ॥ २६ ॥ गार्भेर्हो मैर्जातकर्म चोडमौजी
निबन्धनैः ॥ वैजिकं गार्भिकं चैनो द्विजानामप्यसृज्यते ॥ २७ ॥ स्वा-
ध्यायेन व्रतैर्हो मैर्बैविद्येनेज्यया सुतैः ॥ सहायजैश्च यज्ञैश्च ब्रा-
ह्मीयं क्रियते तनुः ॥ २८ ॥ प्राङ्नाभिर्वर्द्धनात्पुंसो जातिकर्म वि-
धीयते ॥ संव्रवत्वाशनं चास्य हिरण्यमधुसर्पिषाम् ॥ २९ ॥

۲۴۔ برہمن کشتری ویشیہ تو پیر کے ساتھ اس ملک میں رہیں اور شودر و جکلیف ہر شے چاہے جس ملک میں رہیں۔

۲۵۔ بھرگ جی کہتے ہیں کہ اسے رش لوگو آپ سے سب کی پیدائش اور دھرم کو پالنا کیا اب درون کا دھرم کہتے ہیں۔

۲۶۔ براہمن کشتی دکنیہ کو گر بھاؤ مکان وغیرہ شتریکہ سنسکار لوگ اور پر لوگ میں بوجھ کر کیا ہے اس لیے ان سنسکار دن کو کرنا چاہئے۔

۲۷۔ گرچہ سنکار جات کرم موندن اینہیں ان سنکاروں سے براہین کشتری ویشیہ کیج کا دور
اور گرچہ کا دوش جھوٹ جاتا ہے۔

۲۸- دیر کا پڑھنا۔ برت۔ ہون۔ ترمیدہ۔ نام برت۔ دپوش۔ پتروں کا
ترپ۔ پتھر کی انتہیت۔ ہاگیہ۔ یگیہ۔ ان سب کرموں سے یہ ترمیر موکش پانے کے
لائق ہوتا ہے۔

۲۹۔ نال چھیدن سے پہلے جات کرم ہوتا ہے اسہمین منتر پڑھ کر ورق طلا و
دگھی لڑکے کو کھلانا چاہیے۔

तस्मिन्देशेय आचारः पारंपर्यक्रमगतः ॥ वर्णानां सान्तराला
नां ससराचार उच्यते ॥ १८ ॥ कुरुक्षेत्रं च मत्स्याश्च पंचालाः शू-
रसेनकाः ॥ एवञ्च ह्यर्थिदेशो वैजह्मावर्त्तादनन्तरः ॥ १९ ॥ सतद्दे-
शप्रसूतस्य सकाशादथ जन्मनः ॥ स्वस्वंचरित्रं शिष्येऽन्यथा
सर्वमानवाः ॥ २० ॥ हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्यं यत्प्राग्निनशनादपि
॥ प्रत्यगोवप्रयागाच्च मध्यदेशः प्रकीर्तितः ॥ २१ ॥ आसमुद्राक्षु-
पूर्वादासमुद्राक्षुपश्चिमात् ॥ तयोरेवान्तरंगिर्यो रार्यावर्त्तविदु-
र्बुधाः ॥ २२ ॥ कथासारस्तु चरति मृगो यत्र स्वभावतः ॥ स ज्ञेयो
यज्ञियो देशो म्लेच्छदेशस्त्वतः परः ॥ २३ ॥

۱۸- سب ورنون اور درن سنگردن کا اس دیش میں جو آچار چلا آیا ہے وہ سداچار
کہلاتا ہے

۱۹- برہما ورت کے متصل کرشیترا- تیشہ پنچال- شورشیک- یس دیش برہم رشیوں کے

۲۰- تمام مردمان عالم پیدائیش اپنی اس ملک کے رہنے والے براہمنوں سے جانیں

۲۱- ہما چل اور بندھیا چل کا بیچ وکشن کے پورب اور پرباک کے پشیم بندھنیہ دیش کہلاتا ہے

۲۲- مشرقی سمدر سے لیکر مغربی سمدر تک اور ہما چل اور بندھیا چل کا درمیان آریاوت
کہلاتا ہے۔

۲۳- کالاہرن اپنے بسھاؤ سے جس دیش میں رہے وہ دیش گیمہ کرنے کے لائق

ہے اسکے آگے ملگیش دیش ہے۔

۲۴- سمدر اور۔

۲۵- تھانیشر کے اتر دیشیم ہمالیہ پہاڑ و جبل دیا کے بیچ کا ملک۔

۲۶- دیہہ سہرا۔

۲۷- حصار کے قریب۔

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः ॥ इतश्चतुर्विधं प्राहुः
 सासाद्धर्मस्य लक्षणम् ॥ १२ ॥ अर्थकामेष्वसत्तानां धर्मज्ञानं नि-
 धीयते ॥ धर्मज्ञानासमानानां प्रमारां परमं श्रुतिः ॥ १३ ॥ श्रुति-
 द्वैधन्तु यत्र स्यात्तत्र धर्मा बुभौस्मृतौ ॥ उभावपि हितौ धर्मो सम्य-
 गुक्तौ मनीषिभिः ॥ १४ ॥ उदितेऽनुदिते चैव समयाध्युषिते तथा
 ॥ सर्वथा वर्तते यज्जज्ञतीयं वैदिकी श्रुतिः ॥ १५ ॥ निषेकादिशमशा-
 नान्तो मंत्रैर्यस्योदितो विधिः ॥ तस्य शास्त्रेऽधिकारोऽस्मिन् ज्ञे-
 यो नान्यस्य कस्यचित् ॥ १६ ॥ सरस्वती हवद्दत्त्योर्देवनद्योर्धत्तर-
 म् ॥ तद्देवनिर्मितं देशं ब्रह्मा वर्तत प्रचक्षते ॥ १७ ॥

۱۲- وید اور شاستر اور اچھے لوگوں کا طریقہ جس سے اپنے دل کو سچی اطمینان ہو یہ چاروں
 دھرم کے لکشن ہیں۔

۱۳- ارٹھ اور کام کی جسکو خواہش نہیں ہے اسکو دھرم اور گہیان کا ادھکار ہے
 اور جسکو دھرم جاننے کی خواہش ہے اسکو مرن دیدی پرمان ہے۔

۱۴- جس کام کے کرنے میں شاستر دو طرح کے حکم لکھتا ہے اس میں دونوں درجہ قبول
 ہیں اس بات کو اچھے پرکار سے پیڑتوں نے کہا ہے۔

۱۵- سورج کے اودنے میں اور سورج کے است میں اور سورج اور کشتی کے
 منولنے میں یہ تینوں وقت ہونے کو دید میں کہے ہیں ان میں جو اچھا معلوم ہو
 کرے۔

۱۶- جہم سے مرن تک جب کاسن کا منتر سے ہوتا ہے دینے پر امن کشتی (شیم)
 اچھین تینوں درجہ کا ادھکار۔ اس شاستر میں جاننا اور کیسا ادھکار نہ جانتا۔

۱۷- دیوتاؤں کی ندی جو سرسوتی اور درکھوتی ہے ان دونوں کے بیچ جو ملک ہے
 اسکو آریاوت کہتے ہیں۔

वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद्विदाम् ॥ आचारश्चैव साधू-
नामात्मनस्तुष्टिरेव च ॥ ६ ॥ यः कश्चित्कस्यचिद्धर्मो मनुना परि-
कीर्तितः ॥ स सर्वोऽभिहितो वेदे सर्वज्ञानमयो हि सः ॥ ७ ॥ सर्व-
त्रुसमवेक्ष्येदं निखिलं ज्ञानचसुषा ॥ श्रुतिप्रामाण्यतो विद्वा-
न्त्वधर्मे निविशेते वै ॥ ८ ॥ श्रुतिस्मृत्युदितं धर्ममनुतिष्ठन् हि मा-
नवः ॥ इह कीर्त्तिमवाप्नोति प्रेत्य चानुत्तमं सुखम् ॥ ९ ॥ श्रुति-
स्तुवेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः ॥ ते सर्वार्थे व्यमीमांसे
ताभ्यां धर्मौ हि निर्वभौ ॥ १० ॥ योऽवमन्येत ते मूले हेतुशास्त्राद्य-
याद्विजः ॥ स साधुभिर्वहिष्कार्यो नास्ति को वेदनिन्दकः ॥ ११ ॥

- ۶ - دید کا قول اور دید جانے والوں کا قول و فعل و سادھ لوگون کا فعل اور وہ فعل کے کرنے سے اپنا دل مطمئن ہو یہ سب دھرم کے مول میں -
- ۷ - سب باتوں کے جاننے والے مَن جی نے جسکا جو دھرم اس شاستر میں کہا ہے سب دید میں ہے -
- ۸ - جو شخص کو بچشم عقل و اعتقاد کے دید و شاستر پر نظر کر کے اپنے دھرم پر ثابت قدم رہنا چاہئے
- ۹ - جو شخص دید و شاستر میں کے ہوئے دھرم پر چلتا ہے وہ دنیا میں نیکیاں اور عاقبت میں عیش و جاودانی حاصل کرتا ہے -
- ۱۰ - دید اور شاستر پر بحث لا طائل کر کے لئے معنی نہ لگانا چاہئے کیونکہ ابھیدرج دونوں دھرم نکلا ہے -
- ۱۱ - جو شخص دید کے احکام کو بذریعہ علم منطقی غلط سمجھ کر دید اور شاستر کی توہین کرتا ہے وہ ناستک یعنی کافر ہے اسکو سادھ لوگ اپنی منڈلی سے باہر کر دیں -

विद्वद्भिः सेवितः सद्भिर्नित्यमद्वेषरागिभिः ॥ हृदयेनाभ्यनुज्ञातो यो-
धर्मस्तन्निबोधत ॥ १ ॥ कामात्मतान प्रशस्तान् चैवेहास्त्य काम-
ता ॥ काम्यो हि वेराधिगमः कर्मयोगश्च वैदिकः ॥ २ ॥ संकल्प
मूलः कामो वै यज्ञाः संकल्पसमवाः ॥ व्रतानियमधर्माश्च सर्वे
संकल्पजाः स्मृताः ॥ ३ ॥ अकामस्य क्रिया काचिद्दृश्यते नेह
कर्हिचित् ॥ यद्यद्विकुरुते किंचित्तत्त्वतामस्य चेष्टितम् ॥ ४ ॥ तेभु-
सम्यग्वर्तमानो गच्छत्यमरलोकताम् ॥ यथा संकल्पितांश्चेह-
सर्वान् कामान् समश्नुते ॥ ५ ॥

۱۔ دوستی و دشمنی سے علیحدہ اچھے پیڑت لوگوں نے دھرم کی پیروی کی ہے اور وہ
دھرم کلیان کرنے والا ہے اس دھرم کو سب سے نیچے۔
۲۔ کہ پھل کی اچھا سے کوئی کام کرنا اچھا نہیں ہے (کیونکہ اس پھل کے بھوگئے کیواسطے
جہنم لپکا پڑتا ہے) اور جو نتیجہ کرم اور نیک ہے وہ مہاوہ قبول معرفت ہو کر مکت دینے والا
ہے مگر اس بیان سے تمام خواہش کی مخالفت نہیں ہے کیونکہ تمام بیان متعلقہ دھرم
منہرجہ و پرستاشترعین خواہش ہی ہے۔
۳۔ اچھا۔ یگیہ۔ برت۔ نیم۔ دھرم یہ سب منکلیپ (یعنی اس کام سے یہ پھل ہو کرے
ایسی پردہ سے پیدا ہوتے ہیں)۔
۴۔ بغیر اچھا کے کوئی کام نہیں ہے جو کچھ ہوتا ہے سب اچھا ہی ہے۔
۵۔ ہوتا ہے۔

۶۔ بغیر اچھا کے اگر کوئی کام کرے تو مکت حاصل ہو اور دنیا کی متنا بھی
برآوے۔

لا سیکار و بین۔ گریہا دان۔ پیون۔ سنیتون۔ جات کرم۔ نام کرن۔ ننگرین۔ ان پامن۔ چرار کرن
کرن بیدہ۔ اسپین۔ دیدار بھ (مین دیدار بھ)۔ ساورن۔ بواہ۔

स्त्रीधर्मयोगं तापस्यं मोक्षं संन्यासमेव च ॥ राज्ञश्च धर्ममखिलं कार्याणां च विनिर्णायकम् ॥ ११४ ॥ साक्षी प्रश्नविधानं च धर्मस्त्रीयुग्मयोरपि ॥ विभागधर्मयुतं च करात्कानां च शोधनम् ॥ ११५ ॥ वैश्यश्च श्रोत्रचारं च संकीर्णानां च सम्भवम् ॥ आपद्धर्मं च वर्णानां प्रायश्चित्तविधिं तथा ॥ ११६ ॥ संसारगमनं चैव त्रिविधं कर्म संभवम् ॥ निःश्रेयसं कर्मणां च गुरुरादीष्यरीक्षणम् ॥ ११७ ॥ देशधर्माज्ञातिधर्मान्कुलधर्माश्च शास्त्रतान् ॥ पाषाणगाराधर्माश्च शास्त्रेऽस्मिन्नुक्तवान्मनुः ॥ ११८ ॥ यथेदमुक्तवाञ्छास्त्रं पुरा शृणुमनुर्मया ॥ तथेदं यूयमप्यद्य सत्सकाशान्निबोधतः ॥ ११९ ॥

इति मानवे धर्मशास्त्रे भृशुप्रोक्तायां संहितायां

प्रथमोऽध्यायः १

۱۱۴۔ استری کا دھرم۔ پتیشیا۔ موکش۔ سنیا۔ راجاؤ لکا دھرم۔ سب کا منو لکا دی
۱۱۵۔ طریق گواہی گواہان۔ مرد و عورت کا دھرم۔ بھاگ دھرم۔ یعنی حصہ بانٹ
جو اکیلے کی بابت بھرمون کی سزا۔
۱۱۶۔ دیش اور شور و لکا دھرم۔ ورن سنگردن کی پیدائش۔ بیت سو درنو لکا دھرم۔ پاپ چھوڑ
۱۱۷۔ شہ اور شہ کریم۔ اتم مدھیم۔ ادم شریمن۔ ہم پانا۔ اتم گیان دینے خود
شناسی نتیجہ اعمال نیک و بد۔
۱۱۸۔ دیش۔ جات۔ کل۔ پاکھندی۔ ان بھون کا دھرم۔ اتنی باتن من جی نے اس
شستر من کی ہیں۔
۱۱۹۔ بھگ جی کتھن کہ جط۔ شہ شاستر کون جی سو پوچھا اور بھون لکا دھرم۔ ایلو جی
من جی کا دھرم شاستر بھگ جی کی سنگتا کا پہلا اور بھیا سہا پو

آचार: परमोधर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्तसूत्रवचः॥ तस्मादस्मिन्मारायु-
क्तो नित्यं स्यादात्मवाचिजः॥ १०८॥ आचारादिच्युतो विप्रो न वे-
दफलमश्नुते॥ आचारेणातु संयुक्तः सम्पूर्णाफलभासमवेत् १०९
सर्वमाचारतो हृद्याधर्मस्य सुनयोगतिम्॥ सर्वस्य तपसो मूल
माचारं जगद्गुरुः परम्॥ ११०॥ जगतश्च समुत्पत्तिं संस्कारविधिमे-
व च॥ व्रतचर्योपचारंचत्नानस्य च परं विधिम्॥ १११॥ दाराधि-
गमनंचैव विवाहानांच लक्षणां॥ महायज्ञविधानंच आह-
कल्पंच शास्त्रतः॥ ११२॥ वृत्तीनां लक्षणां चैव स्वातन्त्र्यवतानि
च॥ भक्ष्याभक्ष्यंच शौचंच द्रव्याणां शुद्धिमेव च॥ ११३॥

۱۰۸- جو آپار وید اور شاستر میں کمی ہیں وہ پریم دھرم میں اسیلے
جو براہمن یا کستری یا دیشیہ اپنا بھلا چاہے وہ اس شاستر پر عمل
کرے۔

۱۰۹- آپار بہت براہمن وید کے پھل کو نہیں بھوگ کر سکتا ہے اور آپار بہت
براہمن تمام وید کے پھل کو بھوگ کر سکتا ہے۔

۱۱۰- جب منوں نے دیکھا کہ آپار ہی سے دھرم حاصل ہوتا ہے تب سب پیشاکا
بول جو آپار ہے اسی کو اختیار کیا۔

۱۱۱- اتنی باتیں اس شاستر میں تھیں کہ گئی ہیں۔ جگت کی اُپت سنسکار بدھ
برت کا آچرن۔ استنان بدھ۔

۱۱۲- استری پر سنگ۔ بواہون کا لکشن۔ مسایکیہ۔ شرادھ۔
کی بدھ۔

۱۱۳- جیو کا کا لکشن۔ بریم چاری کا برت۔ کھانے اور نہ کھانے والی چیزیں صفائی
پذیر دن کے پاک کرنے کا طریقہ۔

तस्य कर्म विवेकार्थं शेषाणां ननु पूर्वशः ॥ स्यात्स्वबो मनुर्जी-
मानिदं शास्त्रमकल्पयत् ॥ १०२ ॥ विदुषा ब्राह्मणाने रमध्ये तव्यं
प्रयत्नतः ॥ शिष्येभ्यश्च प्रवक्तव्यं सम्यक् ज्ञान्येन केनचित् ॥ १०३
इदं शास्त्रमधीयानो ब्राह्मणाः शंसितव्रतः ॥ मनोवानदेहजै-
र्नित्यं कर्मदोषैर्न लिप्यते ॥ १०४ ॥ पुनः त्रिपुंक्तिं वश्यांश्च सप्त
सप्तपरावरान् ॥ दृष्टिबीमपि चैवेमांस्तत्त्वामेकोपि सोर्हति ॥
१०५ ॥ इदं स्वस्त्ययनं श्रेष्ठमिदं बुद्धि विवर्द्धनम् ॥ इदं यशस्य मायु-
ष्यमिदं निश्चयं संपरम् ॥ १०६ ॥ अस्मिन्धर्मोऽखिलेनोक्तो गु-
णो दोषौ च कर्मराम् ॥ चतुर्णामपि वरानामाचारश्चैव शा-
श्वतः ॥ १०७ ॥

۱۰۲- اس براہمن کے کرم اور کستری وغیرہ کے کرم جاننے کے لئے برہما جی کے بیٹے
من جی نے اس شاستر کو بنایا۔

۱۰۳- جو براہمن نہ پڑت ہیں وہ اس شاستر کو جتن سے پڑھیں اور چلیں کو (لینے
شاگردوں کو بھی پڑھاویں اور کستری وغیرہ پڑھیں مگر پڑھاویں نہیں۔
۱۰۴- جو براہمن اس شاستر کو پڑھتا ہے اور برت کرتا ہے وہ دل و زبان و جسم
پیدا ہوئے اعمال میں ملوث نہیں ہوتا۔

۱۰۵- پاپیوں کی نیکی کو براہمن پوچھتا ہے اور اپنی سات پشت اوپر کی اور سات
پشت نیچے کی پوچھتا ہے اور تمام پر حقوی کو اکیلا دھارن کر سکتا ہے۔

۱۰۶- یہ شاستر کلیان اور بدہ اور شیش اور عسدر اور رکت کا دینے
والا ہے۔

۱۰۷- اس شاستر میں تمام دھرم اور کھن کے گرن و دوش اور آچار
کے ہیں۔

۹۴۔ ساکن و متحرک جانداروں میں کثیر الفضل ہے اور اوس سے چار پائے اور اس سے
 آدی اور اس سے براہمن افضل ہے۔
 ۹۵۔ براہمنوں میں وید و شاستر کے پڑھنے والے اور اُن سے وید شاستر کے موافق کام
 کرنے کی خواہش رکھنے والے اور اُن سے وید شاستر کے موافق کام کرنے والے اور اُن سے
 برہم گمانی افضل ہیں۔
 ۹۸۔ براہمن دھرم کی صورت ہے اور دھرم کرنے کے لئے پیدا کیا گیا ہے اسلئے اکت
 پانے کے لائق ہوتا ہے۔
 ۹۹۔ برہمنوں نے واسطے حفاظت خزانہ دھرم کے بصورت براہمن نرول فرمایا ہے
 جو کچھ چیز دنیا میں ہے وہ سب گویا براہمنوں کی بیج کی چیز ہے کیونکہ برہما جی کے
 لکھ سے پیدا اور سب سے افضل ہے اسلئے سب چیزوں کا مالک براہمن ہو سکتا ہے
 براہمن کی حُر تہریف ہے کیونکہ من جی براہمنوں کو بھی چوری کی سزا آگے کہیں گے۔
 ۱۰۱۔ براہمن اپنی اپنی چیزوں کو کھاتا ہے اور پرتا ہے اور دیتا ہے اسکی مہربانی کشتی ہوگی
 چین کرتے ہیں۔

پشناناں سرانانانمیتیاध्ययनमेवच॥ वरिणकृपयंकुसीबंधये
 श्यस्यक्षयिमेवच॥ ६०॥ एकमेवतुशूद्रस्यप्रभुःकर्मसमादिश-
 त॥ एतेषामेववर्णानांशुश्रूषामनसूयया॥ ६१॥ ऊर्ध्वनामेर्मे-
 ध्यतरःपुरुषःपरिकीर्तितः॥ तस्मान्मेध्यतमन्त्वस्यमुखमुक्तंस्व-
 यम्भुवा॥ ६२॥ उत्तमांगोद्वान्येष्ट्याद्वह्नराशैवधारणात्॥
 सर्वस्यैवास्यसर्गस्यधर्मतोवाह्नराःप्रभुः॥ ६३॥ तंहिस्ययंभूः
 स्वारास्यात्तपस्तत्त्वादितोऽसृजत॥ हव्यकव्याभिवाह्यायस-
 र्वस्यास्यचगुप्तये॥ ६४॥ यस्यास्येनसदाश्रन्तिहव्यानित्रि-
 दिवौकसः॥ कव्यानिचैवपितरःकिंभूतमधिकन्ततः॥ ६५॥

۹۰ - چار پاپون کی حفاظت کرنا دان دینا۔ لگیہ کرنا۔ وید پڑھنا۔ تجارت کرنا۔ ستونج
 لینا۔ کھیتی کرنا۔ یے سات کرم ویشون کے لیے مقرر کیے۔

۹۱ - سودر کے لیے ایک ہی کرم پر بھونے کھڑا یا یعنی صدق دل سے ان تینوں
 ورنون کی خدمت کرنا۔

۹۲ - مرد کے تمام اعضا ناف کے اوپر تک کے پاک ہیں خصوصاً منہ اور بھی زیادہ
 تر پاک ہے برہما جی نے کہا ہے۔

۹۳ - دنیا میں براہمن بوجہ دھرم کے سب سے افضل ہے اسلئے کہ نہایت پاک
 عضو (یعنی منہ) سے پیدا ہوا ہے اور وید کا استعمال رکھتا ہے۔

۹۴ - برہما جی نے اپنی عبادت کے زور سے پہلے براہمن کو اپنے منہ سے پیدا کیا
 تاکہ تمام عالم کی حفاظت کرے اور منتر کے زور سے دیوتاؤں کو ہتھیہ اور پتیزون کو
 کبھی بھینچا وے۔

۹۵ - اس براہمن سے بڑھ کر اور کوئی ہے کہ جبکہ مکھ سے دیوتا لوگ ہتھیہ اور
 پتیزون کو کبھی کھاتے ہیں۔

۱۔ کتماپورمہرتیانا ماسیشیہ کرماسام ॥ فلتننننننن
 ۲۔ کتماپورمہرتیانا ماسیشیہ کرماسام ॥ ۵۸ ॥ انننننننن
 ۳۔ کتماپورمہرتیانا ماسیشیہ کرماسام ॥ ۵۹ ॥ اننننننن
 ۴۔ کتماپورمہرتیانا ماسیشیہ کرماسام ॥ ۶۰ ॥ اننننننن
 ۵۔ کتماپورمہرتیانا ماسیشیہ کرماسام ॥ ۶۱ ॥ اننننننن
 ۶۔ کتماپورمہرتیانا ماسیشیہ کرماسام ॥ ۶۲ ॥ اننننننن
 ۷۔ کتماپورمہرتیانا ماسیشیہ کرماسام ॥ ۶۳ ॥ اننننننن
 ۸۔ کتماپورمہرتیانا ماسیشیہ کرماسام ॥ ۶۴ ॥ اننننننن
 ۹۔ کتماپورمہرتیانا ماسیشیہ کرماسام ॥ ۶۵ ॥ اننننننن
 ۱۰۔ کتماپورمہرتیانا ماسیشیہ کرماسام ॥ ۶۶ ॥ اننننننن

- ۸۴ - دیدین جو عمر آدمی کی کسی ہے اور حصول مقصد کے لئے جو دعا اور بدعا
 اور آدمیوں کی خاصیت یہ سب باتیں جگ کے موافق پھیل دیتی ہیں۔
 ۸۵ - جگ کے موافق آدمیوں کا دھرم سب جگوں میں علیحدہ علیحدہ ہوتا ہے۔
 یعنی ست جگ میں اور - تریا میں اور - دوا پر میں اور - کلجگ میں -
 ہوتا ہے۔
 ۸۶ - ست جگ میں صرف عبادت اور تریا میں معرفت اور دوا پر میں گپ اور کلجگ
 میں دان مقدم رکھا گیا ہے۔
 ۸۷ - اس سپورن جگت کی رچھا کے لئے اس مہاتجسوی برہما نے منہ بانہ - جاگو
 چرن سے پیدا ہوئے چار دوروں کے کرم الگ الگ مقرر کیے۔
 ۸۸ - دید پرھنا - دید پرھنا - گیہ کرنا - گیہ کرنا - دان دینا - دان لینا -
 کرم برہمن کے لئے بنائے۔
 ۸۹ - رعایا کی حفاظت کرنا - دان دینا - گیہ کرنا - دید پرھنا - دنیا کی نعمتوں میں
 لگانا یہ پانچ کرم کشتیری کے لئے مقرر کیے۔

۱۰۷
 ۱۰۸
 ۱۰۹
 ۱۱۰
 ۱۱۱
 ۱۱۲
 ۱۱۳
 ۱۱۴
 ۱۱۵
 ۱۱۶
 ۱۱۷
 ۱۱۸
 ۱۱۹
 ۱۲۰
 ۱۲۱
 ۱۲۲
 ۱۲۳
 ۱۲۴
 ۱۲۵
 ۱۲۶
 ۱۲۷
 ۱۲۸
 ۱۲۹
 ۱۳۰
 ۱۳۱
 ۱۳۲
 ۱۳۳
 ۱۳۴
 ۱۳۵
 ۱۳۶
 ۱۳۷
 ۱۳۸
 ۱۳۹
 ۱۴۰
 ۱۴۱
 ۱۴۲
 ۱۴۳
 ۱۴۴
 ۱۴۵
 ۱۴۶
 ۱۴۷
 ۱۴۸
 ۱۴۹
 ۱۵۰
 ۱۵۱
 ۱۵۲
 ۱۵۳
 ۱۵۴
 ۱۵۵
 ۱۵۶
 ۱۵۷
 ۱۵۸
 ۱۵۹
 ۱۶۰
 ۱۶۱
 ۱۶۲
 ۱۶۳
 ۱۶۴
 ۱۶۵
 ۱۶۶
 ۱۶۷
 ۱۶۸
 ۱۶۹
 ۱۷۰
 ۱۷۱
 ۱۷۲
 ۱۷۳
 ۱۷۴
 ۱۷۵
 ۱۷۶
 ۱۷۷
 ۱۷۸
 ۱۷۹
 ۱۸۰
 ۱۸۱
 ۱۸۲
 ۱۸۳
 ۱۸۴
 ۱۸۵
 ۱۸۶
 ۱۸۷
 ۱۸۸
 ۱۸۹
 ۱۹۰
 ۱۹۱
 ۱۹۲
 ۱۹۳
 ۱۹۴
 ۱۹۵
 ۱۹۶
 ۱۹۷
 ۱۹۸
 ۱۹۹
 ۲۰۰
 ۲۰۱
 ۲۰۲
 ۲۰۳
 ۲۰۴
 ۲۰۵
 ۲۰۶
 ۲۰۷
 ۲۰۸
 ۲۰۹
 ۲۱۰
 ۲۱۱
 ۲۱۲
 ۲۱۳
 ۲۱۴
 ۲۱۵
 ۲۱۶
 ۲۱۷
 ۲۱۸
 ۲۱۹
 ۲۲۰
 ۲۲۱
 ۲۲۲
 ۲۲۳
 ۲۲۴
 ۲۲۵
 ۲۲۶
 ۲۲۷
 ۲۲۸
 ۲۲۹
 ۲۳۰
 ۲۳۱
 ۲۳۲
 ۲۳۳
 ۲۳۴
 ۲۳۵
 ۲۳۶
 ۲۳۷
 ۲۳۸
 ۲۳۹
 ۲۴۰
 ۲۴۱
 ۲۴۲
 ۲۴۳
 ۲۴۴
 ۲۴۵
 ۲۴۶
 ۲۴۷
 ۲۴۸
 ۲۴۹
 ۲۵۰
 ۲۵۱
 ۲۵۲
 ۲۵۳
 ۲۵۴
 ۲۵۵
 ۲۵۶
 ۲۵۷
 ۲۵۸
 ۲۵۹
 ۲۶۰
 ۲۶۱
 ۲۶۲
 ۲۶۳
 ۲۶۴
 ۲۶۵
 ۲۶۶
 ۲۶۷
 ۲۶۸
 ۲۶۹
 ۲۷۰
 ۲۷۱
 ۲۷۲
 ۲۷۳
 ۲۷۴
 ۲۷۵
 ۲۷۶
 ۲۷۷
 ۲۷۸
 ۲۷۹
 ۲۸۰
 ۲۸۱
 ۲۸۲
 ۲۸۳
 ۲۸۴
 ۲۸۵
 ۲۸۶
 ۲۸۷
 ۲۸۸
 ۲۸۹
 ۲۹۰
 ۲۹۱
 ۲۹۲
 ۲۹۳
 ۲۹۴
 ۲۹۵
 ۲۹۶
 ۲۹۷
 ۲۹۸
 ۲۹۹
 ۳۰۰
 ۳۰۱
 ۳۰۲
 ۳۰۳
 ۳۰۴
 ۳۰۵
 ۳۰۶
 ۳۰۷
 ۳۰۸
 ۳۰۹
 ۳۱۰
 ۳۱۱
 ۳۱۲
 ۳۱۳
 ۳۱۴
 ۳۱۵
 ۳۱۶
 ۳۱۷
 ۳۱۸
 ۳۱۹
 ۳۲۰
 ۳۲۱
 ۳۲۲
 ۳۲۳
 ۳۲۴
 ۳۲۵
 ۳۲۶
 ۳۲۷
 ۳۲۸
 ۳۲۹
 ۳۳۰
 ۳۳۱
 ۳۳۲
 ۳۳۳
 ۳۳۴
 ۳۳۵
 ۳۳۶
 ۳۳۷
 ۳۳۸
 ۳۳۹
 ۳۴۰
 ۳۴۱
 ۳۴۲
 ۳۴۳
 ۳۴۴
 ۳۴۵
 ۳۴۶
 ۳۴۷
 ۳۴۸
 ۳۴۹
 ۳۵۰
 ۳۵۱
 ۳۵۲
 ۳۵۳
 ۳۵۴
 ۳۵۵
 ۳۵۶
 ۳۵۷
 ۳۵۸
 ۳۵۹
 ۳۶۰
 ۳۶۱
 ۳۶۲
 ۳۶۳
 ۳۶۴
 ۳۶۵
 ۳۶۶
 ۳۶۷
 ۳۶۸
 ۳۶۹
 ۳۷۰
 ۳۷۱
 ۳۷۲
 ۳۷۳
 ۳۷۴
 ۳۷۵
 ۳۷۶
 ۳۷۷
 ۳۷۸
 ۳۷۹
 ۳۸۰
 ۳۸۱
 ۳۸۲
 ۳۸۳
 ۳۸۴
 ۳۸۵
 ۳۸۶
 ۳۸۷
 ۳۸۸
 ۳۸۹
 ۳۹۰
 ۳۹۱
 ۳۹۲
 ۳۹۳
 ۳۹۴
 ۳۹۵
 ۳۹۶
 ۳۹۷
 ۳۹۸
 ۳۹۹
 ۴۰۰
 ۴۰۱
 ۴۰۲
 ۴۰۳
 ۴۰۴
 ۴۰۵
 ۴۰۶
 ۴۰۷
 ۴۰۸
 ۴۰۹
 ۴۱۰
 ۴۱۱
 ۴۱۲
 ۴۱۳
 ۴۱۴
 ۴۱۵
 ۴۱۶
 ۴۱۷
 ۴۱۸
 ۴۱۹
 ۴۲۰
 ۴۲۱
 ۴۲۲
 ۴۲۳
 ۴۲۴
 ۴۲۵
 ۴۲۶
 ۴۲۷
 ۴۲۸
 ۴۲۹
 ۴۳۰
 ۴۳۱
 ۴۳۲
 ۴۳۳
 ۴۳۴
 ۴۳۵
 ۴۳۶
 ۴۳۷
 ۴۳۸
 ۴۳۹
 ۴۴۰
 ۴۴۱
 ۴۴۲
 ۴۴۳
 ۴۴۴
 ۴۴۵
 ۴۴۶
 ۴۴۷
 ۴۴۸
 ۴۴۹
 ۴۵۰
 ۴۵۱
 ۴۵۲
 ۴۵۳
 ۴۵۴
 ۴۵۵
 ۴۵۶
 ۴۵۷
 ۴۵۸
 ۴۵۹
 ۴۶۰
 ۴۶۱
 ۴۶۲
 ۴۶۳
 ۴۶۴
 ۴۶۵
 ۴۶۶
 ۴۶۷
 ۴۶۸
 ۴۶۹
 ۴۷۰
 ۴۷۱
 ۴۷۲
 ۴۷۳
 ۴۷۴
 ۴۷۵
 ۴۷۶
 ۴۷۷
 ۴۷۸
 ۴۷۹
 ۴۸۰
 ۴۸۱
 ۴۸۲
 ۴۸۳
 ۴۸۴
 ۴۸۵
 ۴۸۶
 ۴۸۷
 ۴۸۸
 ۴۸۹
 ۴۹۰
 ۴۹۱
 ۴۹۲
 ۴۹۳
 ۴۹۴
 ۴۹۵
 ۴۹۶
 ۴۹۷
 ۴۹۸
 ۴۹۹
 ۵۰۰
 ۵۰۱
 ۵۰۲
 ۵۰۳
 ۵۰۴
 ۵۰۵
 ۵۰۶
 ۵۰۷
 ۵۰۸
 ۵۰۹
 ۵۱۰
 ۵۱۱
 ۵۱۲
 ۵۱۳
 ۵۱۴
 ۵۱۵
 ۵۱۶
 ۵۱۷
 ۵۱۸
 ۵۱۹
 ۵۲۰
 ۵۲۱
 ۵۲۲
 ۵۲۳
 ۵۲۴
 ۵۲۵
 ۵۲۶
 ۵۲۷
 ۵۲۸
 ۵۲۹
 ۵۳۰
 ۵۳۱
 ۵۳۲
 ۵۳۳
 ۵۳۴
 ۵۳۵
 ۵۳۶
 ۵۳۷
 ۵۳۸
 ۵۳۹
 ۵۴۰
 ۵۴۱
 ۵۴۲
 ۵۴۳
 ۵۴۴
 ۵۴۵
 ۵۴۶
 ۵۴۷
 ۵۴۸
 ۵۴۹
 ۵۵۰
 ۵۵۱
 ۵۵۲
 ۵۵۳
 ۵۵۴
 ۵۵۵
 ۵۵۶
 ۵۵۷
 ۵۵۸
 ۵۵۹
 ۵۶۰
 ۵۶۱
 ۵۶۲
 ۵۶۳
 ۵۶۴
 ۵۶۵
 ۵۶۶
 ۵۶۷
 ۵۶۸
 ۵۶۹
 ۵۷۰
 ۵۷۱
 ۵۷۲
 ۵۷۳
 ۵۷۴
 ۵۷۵
 ۵۷۶
 ۵۷۷
 ۵۷۸
 ۵۷۹
 ۵۸۰
 ۵۸۱
 ۵۸۲
 ۵۸۳
 ۵۸۴
 ۵۸۵
 ۵۸۶
 ۵۸۷
 ۵۸۸
 ۵۸۹
 ۵۹۰
 ۵۹۱
 ۵۹۲
 ۵۹۳
 ۵۹۴
 ۵۹۵
 ۵۹۶
 ۵۹۷
 ۵۹۸
 ۵۹۹
 ۶۰۰
 ۶۰۱
 ۶۰۲
 ۶۰۳
 ۶۰۴
 ۶۰۵
 ۶۰۶
 ۶۰۷
 ۶۰۸
 ۶۰۹
 ۶۱۰
 ۶۱۱
 ۶۱۲
 ۶۱۳
 ۶۱۴
 ۶۱۵
 ۶۱۶
 ۶۱۷
 ۶۱۸
 ۶۱۹
 ۶۲۰
 ۶۲۱
 ۶۲۲
 ۶۲۳
 ۶۲۴
 ۶۲۵
 ۶۲۶
 ۶۲۷
 ۶۲۸
 ۶۲۹
 ۶۳۰
 ۶۳۱
 ۶۳۲
 ۶۳۳
 ۶۳۴
 ۶۳۵
 ۶۳۶
 ۶۳۷
 ۶۳۸
 ۶۳۹
 ۶۴۰
 ۶۴۱
 ۶۴۲
 ۶۴۳
 ۶۴۴
 ۶۴۵
 ۶۴۶
 ۶۴۷
 ۶۴۸
 ۶۴۹
 ۶۵۰
 ۶۵۱
 ۶۵۲
 ۶۵۳
 ۶۵۴
 ۶۵۵
 ۶۵۶
 ۶۵۷
 ۶۵۸
 ۶۵۹
 ۶۶۰
 ۶۶۱
 ۶۶۲
 ۶۶۳
 ۶۶۴
 ۶۶۵
 ۶۶۶
 ۶۶۷
 ۶۶۸
 ۶۶۹
 ۶۷۰
 ۶۷۱
 ۶۷۲
 ۶۷۳
 ۶۷۴
 ۶۷۵
 ۶۷۶
 ۶۷۷
 ۶۷۸
 ۶۷۹
 ۶۸۰
 ۶۸۱
 ۶۸۲
 ۶۸۳
 ۶۸۴
 ۶۸۵
 ۶۸۶
 ۶۸۷
 ۶۸۸
 ۶۸۹
 ۶۹۰
 ۶۹۱
 ۶۹۲
 ۶۹۳
 ۶۹۴
 ۶۹۵
 ۶۹۶
 ۶۹۷
 ۶۹۸
 ۶۹۹
 ۷۰۰
 ۷۰۱
 ۷۰۲
 ۷۰۳
 ۷۰۴
 ۷۰۵
 ۷۰۶
 ۷۰۷
 ۷۰۸
 ۷۰۹
 ۷۱۰
 ۷۱۱
 ۷۱۲
 ۷۱۳
 ۷۱۴
 ۷۱۵
 ۷۱۶
 ۷۱۷
 ۷۱۸
 ۷۱۹
 ۷۲۰
 ۷۲۱
 ۷۲۲
 ۷۲۳
 ۷۲۴
 ۷۲۵
 ۷۲۶
 ۷۲۷
 ۷۲۸
 ۷۲۹
 ۷۳۰
 ۷۳۱
 ۷۳۲
 ۷۳۳
 ۷۳۴
 ۷۳۵
 ۷۳۶
 ۷۳۷
 ۷۳۸
 ۷۳۹
 ۷۴۰
 ۷۴۱
 ۷۴۲
 ۷۴۳
 ۷۴۴
 ۷۴۵
 ۷۴۶
 ۷۴۷
 ۷۴۸
 ۷۴۹
 ۷۵۰
 ۷۵۱
 ۷۵۲
 ۷۵۳
 ۷۵۴
 ۷۵۵
 ۷۵۶
 ۷۵۷
 ۷۵۸
 ۷۵۹
 ۷۶۰
 ۷۶۱
 ۷۶۲
 ۷۶۳
 ۷۶۴
 ۷۶۵
 ۷۶۶
 ۷۶۷
 ۷۶۸
 ۷۶۹
 ۷۷۰
 ۷۷۱
 ۷۷۲
 ۷۷۳
 ۷۷۴
 ۷۷۵
 ۷۷۶
 ۷۷۷
 ۷۷۸
 ۷۷۹
 ۷۸۰
 ۷۸۱
 ۷۸۲
 ۷۸۳
 ۷۸۴
 ۷۸۵
 ۷۸۶
 ۷۸۷
 ۷۸۸
 ۷۸۹
 ۷۹۰
 ۷۹۱
 ۷۹۲
 ۷۹۳
 ۷۹۴
 ۷۹۵
 ۷۹۶
 ۷۹۷
 ۷۹۸
 ۷۹۹
 ۸۰۰
 ۸۰۱
 ۸۰۲
 ۸۰۳
 ۸۰۴
 ۸۰۵
 ۸۰۶
 ۸۰۷
 ۸۰۸
 ۸۰۹
 ۸۱۰
 ۸۱۱
 ۸۱۲
 ۸۱۳
 ۸۱۴
 ۸۱۵
 ۸۱۶
 ۸۱۷
 ۸۱۸
 ۸۱۹
 ۸۲۰
 ۸۲۱
 ۸۲۲
 ۸۲۳
 ۸۲۴
 ۸۲۵
 ۸۲۶
 ۸۲۷
 ۸۲۸
 ۸۲۹
 ۸۳۰
 ۸۳۱
 ۸۳۲
 ۸۳۳
 ۸۳۴
 ۸۳۵
 ۸۳۶
 ۸۳۷
 ۸۳۸
 ۸۳۹
 ۸۴۰
 ۸۴۱
 ۸۴۲
 ۸۴۳
 ۸۴۴
 ۸۴۵
 ۸۴۶
 ۸۴۷
 ۸۴۸
 ۸۴۹
 ۸۵۰
 ۸۵۱
 ۸۵۲
 ۸۵۳
 ۸۵۴
 ۸۵۵
 ۸۵۶
 ۸۵۷
 ۸۵۸
 ۸۵۹
 ۸۶۰
 ۸۶۱
 ۸۶۲
 ۸۶۳
 ۸۶۴
 ۸۶۵
 ۸۶۶
 ۸۶۷
 ۸۶۸
 ۸۶۹
 ۸۷۰
 ۸۷۱
 ۸۷۲
 ۸۷۳
 ۸۷۴
 ۸۷۵
 ۸۷۶
 ۸۷۷
 ۸۷۸
 ۸۷۹
 ۸۸۰
 ۸۸۱
 ۸۸۲
 ۸۸۳
 ۸۸۴
 ۸۸۵
 ۸۸۶
 ۸۸۷
 ۸۸۸
 ۸۸۹
 ۸۹۰
 ۸۹۱
 ۸۹۲
 ۸۹۳
 ۸۹۴
 ۸۹۵
 ۸۹۶
 ۸۹۷
 ۸۹۸
 ۸۹۹
 ۹۰۰
 ۹۰۱
 ۹۰۲
 ۹۰۳
 ۹۰۴
 ۹۰۵
 ۹۰۶
 ۹۰۷
 ۹۰۸
 ۹۰۹
 ۹۱۰
 ۹۱۱
 ۹۱۲
 ۹۱۳
 ۹۱۴
 ۹۱۵
 ۹۱۶
 ۹۱۷
 ۹۱۸
 ۹۱۹
 ۹۲۰
 ۹۲۱
 ۹۲۲
 ۹۲۳
 ۹۲۴
 ۹۲۵
 ۹۲۶
 ۹۲۷
 ۹۲۸
 ۹۲۹
 ۹۳۰
 ۹۳۱
 ۹۳۲
 ۹۳۳
 ۹۳۴
 ۹۳۵
 ۹۳۶
 ۹۳۷
 ۹۳۸
 ۹۳۹
 ۹۴۰
 ۹۴۱
 ۹۴۲
 ۹۴۳
 ۹۴۴
 ۹۴۵
 ۹۴۶
 ۹۴۷
 ۹۴۸
 ۹۴۹
 ۹۵۰
 ۹۵۱
 ۹۵۲
 ۹۵۳
 ۹۵۴
 ۹۵۵
 ۹۵۶
 ۹۵۷
 ۹۵۸
 ۹۵۹
 ۹۶۰
 ۹۶۱
 ۹۶۲
 ۹۶۳
 ۹۶۴
 ۹۶۵
 ۹۶۶
 ۹۶۷
 ۹۶۸
 ۹۶۹
 ۹۷۰
 ۹۷۱
 ۹۷۲
 ۹۷۳
 ۹۷۴
 ۹۷۵
 ۹۷۶
 ۹۷۷
 ۹۷۸
 ۹۷۹
 ۹۸۰
 ۹۸۱
 ۹۸۲
 ۹۸۳
 ۹۸۴
 ۹۸۵
 ۹۸۶
 ۹۸۷
 ۹۸۸
 ۹۸۹
 ۹۹۰
 ۹۹۱
 ۹۹۲
 ۹۹۳
 ۹۹۴
 ۹۹۵
 ۹۹۶
 ۹۹۷
 ۹۹۸
 ۹۹۹
 ۱۰۰۰

۱۔ جوت سے پانی پیدا ہوا جب کا گن رس ہے اور پانی سے زمین پیدا ہوئی جسکی
 صفت بو ہے قیامت کے بعد پیدائش عالم کی صورت یہی ہے۔
 ۲۔ دیوتاؤں کا جو جگہ بارہ ہزار پرش کا ہوتا ہے اسکا اکھٹر گنا ایک مٹو منتر ہوتا ہے
 یعنی ایک من کی سلطنت کی مدت ہے۔
 ۳۔ بے انتہا مٹو منتر اور پیدائش اور فنا عالم کھیل کے برابر پیر منحت کے برابر حاجی بار بار اور بھی زیادہ
 کیا کرتے ہیں۔
 ۴۔ ست جگہ میں دھرم چاروچرن سے رہا اور اس جگہ کے آدمی سچ بولا کرتے
 تھے اور کوئی کام دھرم کا نہیں کرتے۔
 ۵۔ تریا وغیرہ تینوں جگہوں میں لوگ دھرم بیٹے چوری جھوٹ فریب سے کام کرنے لگے
 اسلئے دھرم ایک ایک چرن گھٹا گیا۔ دینے تریا میں ایک جھوٹا پرین دو جھوٹے ہرن کو
 اور کلجگ میں تین جھوٹے کم ہو گیا۔
 ۶۔ ست جگہ میں کوئی بیمار ہوتا تھا اور جو چاہتے تھے وہی ہوتا تھا چار سو پر لوگ سببہ اور
 کی عمر ہوتی تھی تریا وغیرہ تینوں جگہوں میں عمر آدمی کی ایک ایک چرن گھٹ گئی۔

दैविकानां युگاناं लघुसहस्रं परिसंख्यया ॥ ब्राह्ममेकमहर्ज-
 यन्तावती रात्रیरेव च ॥ ۹۲ ॥ तद्वै युگसहस्रान्नं ब्राह्मं پुरا ی م-
 हर्वیدुः ॥ रात्रिंच तावती मेव ते ॥ होरा प्रविदोजनाः ॥ ۹۳ ॥ त-
 स्य सोऽहर्निशास्यान्ते प्रसुप्तः प्रतिबुध्यते ॥ प्रतिबुद्धश्च सृजति
 मनः सदसदात्मकम् ॥ ۹۴ ॥ मनःस्थितिं विकुरुते चोद्यमानं स
 स्तक्षया ॥ आकाशं जायते तस्मात्तस्य शब्दं गुरां विदुः ॥ ۹۵ ॥
 आकाशात्तु विकुर्वाणात्सर्वगन्धवहः शुचिः ॥ बलवान-
 जायते वायुः सर्वे स्पर्शा गुरातो मतः ॥ ۹۶ ॥ वायो रपि विकु-
 र्वाणाद्दिरोचिषा तमो नु रम् ॥ ज्योतिरुत्पद्यते भास्वत्तद्रूप-
 गुरा सुच्यते ॥ ۹۷ ॥

اور دیوتاؤں کے ہزار جگ کے برابر برہما جی کا ایک دن ہوتا ہے اور اتنی ہی
 رات ہوتی ہے۔
 برہما کے ہزار جگ کے برابر برہم جی کا ایک دن ہوتا ہے سو وہ دن بڑا بڑا ہے
 اور اتنی ہی رات بھی ہوتی ہے اس رات دن کے جانشین والے نئے کہا ہے۔
 وہ برہما اپنے دن میں کام کرتے ہیں اور رات میں سوتے ہیں جب جاگتے ہیں
 تب شکلیں رنگیں روپ من کو سرشت رچنے کیواسطے آگیا دیتے ہیں۔
 ۵۔ من نے برہما جی کی آگیا پاکر آپ سے آپ آکاش کو بنایا اسکی صفت
 آواز ہے۔

۶۔ آکاش سے جڑے شعبویات کی چپاٹنے والی پاک مقوی ہوا پیدا ہوتی اسکی
 نامکس ہے۔
 ۷۔ ہوا سے تاریکی دور کرنے والی اور روشنی پھیلانے والی جوت پیدا ہوتی اسکا
 نام پ ہے۔

د्वैشہیہنیवर्षप्रविभागस्तयोः पुनः॥ अहस्तत्रोदगयनं रा-
त्रिः स्यादक्षिरायनम्॥ ६७॥ ब्राह्मस्य तु स पाहस्य यत्प्रमारां
समासतः॥ सर्वैकशो युगानां लुक्रमशस्तन्निबोधत॥ ६८॥
चत्वार्यहः सहस्राणि वर्षाणामुक्तं युगम्॥ तस्य तावच्च
तीसन्ध्यासन्ध्यांश्च तथा विधः॥ ६९॥ इतरेषु ससन्ध्येषु स
न्ध्यांशेषु च त्रिषु॥ सकापायेन वर्तन्ते सहस्राणि शतानि च॥
७०॥ यरेतत्परिसंख्यातमाह वेवचतुर्थं युगम्॥ सतद्वा दश सा-
हस्रं देवानां युगमुच्यते॥ ७१॥

۶۷- آدمیوں کے ایک برش کے برابر دیوتاؤں کا ایک دن رات ہوتا ہے جبکہ
سورج اتر این رہن تب تک دن ہے اور جب تک دکشاں رہن تب تک رات ہے۔
۶۸- برہا کے رات دن کی مقدار اور ہر ایک جگہوں کی مقدار کا خلاصہ سلسلہ دیں
کتے ہیں سنو۔

۶۹- کہ دیوتاؤں کے چار ہزار برش کا ست جگ ہوتا ہے جگ کے پہلے دیوتاؤں کی
چار سو برس کی سہ ہیا کہلاتی ہے۔ اور جگ کے اخیر پرتا ہی سہ ہیا نش کہلاتا
۷۰- اور تینوں جگہوں یعنی تریا۔ دواپر۔ کالجگ۔ کی سہ ہیا اور سہ ہیا نش کی
مقدار ایک ایک ہزار اور ایک سو برش کے گھٹانے سے ہوتی ہے۔
۷۱- یہ چار جگہوں کا اندازہ کسا اسکا بارہ ہزار گتسا دیوتاؤں کا جگ
ہوتا ہے۔

۷۲- کہ کی سنگرات سے لیکر متھن کی سنگرات تک اتر این کہلاتا ہے اور کرک کی سنگرات سے لیکر دمن کی سنگرات
دکشاں کہلاتا ہے۔

۷۳- یعنی ۳۰۰ ہزار برش کا تریا جگ اور ۳۰۰ ہزار برش سہ ہیا اور ۳۰۰ ہزار برش سہ ہیا نش اور ۳۰۰ ہزار برش کا دواپر
برش سہ ہیا اور ۲۰۰ ہزار برش سہ ہیا نش اور ۱۰۰ ہزار برش کالجگ اور ۱۰۰ ہزار برش سہ ہیا اور ۱۰۰ ہزار برش سہ ہیا نش

स्वायम्भुवस्यास्य मनोः यद्वंश्या मनवोऽपरे ॥ सृष्टवत्तः प्रजाः स्वा
 स्वामहात्मानो महोजसः ॥ ६१ ॥ स्वरोचिषश्चोत्तमश्चतामसो रै-
 वतस्तथा ॥ चाक्षुषश्च महातेजा विवस्वत्सुत एव च ॥ ६२ ॥ स्वाय
 म्भुवाः चासंमैते मनवो भूरितेजसः ॥ स्वेस्वेऽन्तरे सर्वमिदमुत्पा-
 द्या पुश्चराचरम् ॥ ६३ ॥ निमेषादशचाद्यौ च काष्ठा त्रिंशत्तुताः क-
 लाः ॥ त्रिंशत्कलामुहूर्तः स्याद्दहोरात्रत्तुतावतः ॥ ६४ ॥ अहोरा-
 त्रे विभजते सूर्यो मानुषदैविके ॥ रात्रिः स्वप्नाय भूतानां चेष्टा-
 ये कर्मशा मद् ॥ ६५ ॥ पित्र्ये रात्र्यहनी मासः प्रविभागस्तु प-
 योः ॥ कर्मचेष्टा स्वहः कथाः शुक्लः स्वप्नाय शर्वरी ॥ ६६ ॥

۱- برہاجی سے جو من پیدا ہوئے اونکی نسل میں چھ من اور بھی ہیں ان میں تھوڑی
 سی پر تما کوں نے اپنے اپنے اختیار سے اپنی اپنی خلقت کو پیدا کیا۔
 ۲- ان کے نام یہ ہیں۔ سوار وحش۔ اوتھ۔ تاسش۔ ریوت۔ چاکش۔
 ۳- رات میں۔

۴- سو بھو وغیرہ ساتو من جو بڑے نیچو ان میں دے اپنے اپنے اختیار سے تمام
 حیوانات سا کوں پیدا کر کے پالنے لگے۔
 ۵- ایل کا ایک کاشٹھا۔ ۳۰ کاشٹھا کی ایک کلا۔ ۳۰ کلا کا ایک مہورت۔
 ۶- رات کا ایک دن رات ہوتا ہے۔
 ۷- آدمی اور دیوتا کے رات دن کی تیز آفتاب کے باعث سے ہوتی ہے۔
 ۸- آدمی اور دیوتا کے لئے رات اور کاروبار کے لئے دن مقرر ہوا ہے۔
 ۹- آدمیوں کے ایک مہینہ کے برابر پتر دن کا ایک رات دن ہوتا ہے۔
 ۱۰- کرشن گپش کام کرنے کے لئے دن ہے اور شکل گپش سونے کے لئے رات
 ہے۔

तमोऽयंतु समाश्रित्य चिरन्ति यति सेन्द्रियः ॥ न च संकुर्वते कर्म
तदोत्कामति मूर्त्तिः ॥ ५५ ॥ यदा रागमात्रिको भूत्वा बीजं स्थासु
चरिष्यति ॥ समाविशति संसृष्टस्तदा मूर्त्तिं विमुंचति ॥ ५६ ॥ स-
र्वं सजायत्व प्राभ्यामिदं सर्वं चराचरम् ॥ संजीवयति चाजस्रं प्रमा-
पयति चाव्ययः ॥ ५७ ॥ इदं शास्त्रं ब्रुवन् कृत्वा सोमा मे वसव्यमादि-
तः ॥ विधिवद्वाह्यामास मरीच्यादींस्त्वहं मुनीन् ॥ ५८ ॥ यत बोऽ-
यं भूयः शास्त्रं श्रावयिष्यत्यशेषतः ॥ यत इमं तोऽधिजगो सर्व-
मेयोऽखिलं मुनिः ॥ ५९ ॥ ततस्तथा स तेनोक्तो महर्षिर्मनुनाभ्यु-
॥ तान न ब्रवीद्वीक्ष्यो न्मन्त्री तात्मा श्रूयतामिति ॥ ६० ॥

۵۵ - اب مرگ کی حالت لکھتے ہیں کہ جیواندروں کے ساتھ مدت دراز تک ہر حالت میں

میں رہتا ہے اور انفس ختم ہو جاتے ہیں قلب اول سے دوسرے قلب میں جاتا ہے

۵۶ - اور جب وہ جیو غنائی ہو جس دل و عقل و خواہش و عمل و ہوا و نادانی - ان

چیزوں کے ہمراہ ختم ساکن میں جاتا ہے تب و رفت و غیرہ کا قالب پاتا ہے اور جب پتا بھی نہ ہو

مستترک میں جاتا ہے تب آدمی و غیرہ کا قالب پاتا ہے -

۵۷ - اسی طرح برہما جی جاگنے اور سونے سے تمام جانداران ساکن و متحرک کو بار بار پائش کی

اور مارنے ہیں -

۵۸ - برہما نے اس شتر کو بنا کر پہلے حکویدہ کے موافق بتلایا پھر پوتاؤں کا جگ

کو سکھلایا -

۵۹ - اور اب اس سپورن شتر کو بھگ ریش آپ لوگوں کو سنا دینگے یہ لکھن کی شتر

سے اس شتر کو پڑھا ہے -

۶۰ - جب اس طرح سن ہی نے بھگ ریش سے کہتا بھگ ریش نے پرسن ہو کر بھگ ریش

سے کہا کہ شتر -

अराव्यो मात्राविना शिष्योदशाब्दानां तथाः स्मृताः ॥ ताभिः शिष्यैः
 त्रेमिदं सर्वं समावृत्य नुपूर्वशः ॥ २७ ॥ यस्तु कर्मणि यस्मिन् सम-
 न्ययुक्तं प्रथमं प्रभुः ॥ स तदेव स्वयं भजे सृज्यमानः पुनः पुनः ॥ य-
 २८ ॥ हिंसा हिंसे मदुश्चूरे धर्मा धर्मवृत्तावृते ॥ यद्यस्य सोऽपि
 भातर्गो तत्तस्य स्वयमाविशेत् ॥ २९ ॥ यथर्तुलिंगान्यतव न ध्या-
 यमेव तर्तुपर्यये ॥ स्वानि स्वान्यभियचन्ते तथा कर्माणि देहि स-
 ॥ ३० ॥ लोकानां तु विवक्ष्यर्थं सुखवाद्गुरुपातः ॥ ब्राह्मणां
 त्रियं वैश्यं शूद्रं च निर्वर्त्तयत् ॥ ३१ ॥

پانچو مہا بھوتوں کی ناش ہونے والی سوکھ مارتا ہے وہ اس جز سے سب جگت سے ہوتا ہے۔
 پھر بھائی نے جس جاندار کو ابتدا میں جس عمل میں خاصیت میں لگایا وہ جاندار پھر
 ت پیدا ایش اسی عمل میں خاصیت میں آپ سے آپ مہر دے ہوا۔
 قتل و ترحم و نرمی و سختی و عذاب و ثواب و راست و دروغ و غیرہ جو خاصیت
 ر امین حکم دے گی وہی خاصیت اسکو پھر بوقت پیدائش از خود حاصل
 ہے جیسے فضل و نسبت وغیرہ اپنے اپنے وقت پر اپنے اپنے فواصل کو ظاہر کرتے ہیں
 ہد۔ اہل کا اگر و ترحم وغیرہ اعمال میں مہر دے ہوتے ہیں۔
 رت کا ایک عالم کے مکہ سے براہمن کو اور پاتھ سے کٹھنی کو اور جاگھ سے ویش
 ۶۔ آدمی اور کو پیدا کیا۔ یعنی ہر ایک صوم کو دیکھ مہا بھارت۔

तर्क्येवात्सुसनामानिकर्माणिचष्टयकृष्टयक॥वेदशब्देभ्यः
गदीष्टयकसंस्थाचनिर्ममे॥२१॥कर्मात्मनांचदेवानांसोऽ
ब्रजत्वाशिनांप्रभुः॥साध्यानांचगरांस्तूष्मंयतंचैवसनातनं
॥२२॥अग्निवायुरविभ्यस्तुत्रयंब्रह्मासनातनम्॥दुहोह्यद
सेचार्थमयजुःसामलक्ष्णम्॥२३॥कालंकालविभक्ती-
घनक्षत्राणिग्रहांस्तथा॥सरितःसागराञ्छैलाब्दमानिवि-
भाशिच॥२४॥तपोवाचंरतिंचैवकामंचक्रोधमेवच॥
द्विससर्जचैवेमांस्वष्टुमिच्छन्निमाःप्रजाः॥२५॥कर्मणां
विवेकार्थंधर्माधर्मोव्यवेचयत्॥दंष्ट्रैर्योजयच्चेमाःसु-
दुःखादिभिःप्रजाः॥२६॥

۲۱- پھر پریتانے سب جنوں کا نام اور کرم علیحدہ علیحدہ جیسا پیدائش سے پہلے
دیا ہی وید شبد سے جانکریا یا۔

۲۲- پھر پھر جو اپنے برہمانے دیوتاؤں کو اور ژریار نقون کو اور سوکشم جینیگیہ کو پیدا

۲۳- پھر کیسے ہونے کے لئے اگن سے رگے پیدا اور یا یوسے یجر دیدا اور سورج سے
سام دید کو نکالا۔

۲۴- پھر کال اور کال کے جھٹے یعنی برس ہینہ دن وغیرہ اور استونی وغیرہ نکشٹر اور
وغیرہ گڑھ اور ندی ٹھڈ پریت سم یکھم یعنی ٹیڑھے سیدھے مقامات کو بنایا۔

۲۵- انکے بنانے کے بعد تپ یعنی پراجاپت وغیرہ اور بانی رت یعنی چیت کا
اچھا کام کر دھ دیوتا وغیرہ پر جان سب کو بنایا۔

۲۶- کرم کے برکار جانتے کے لئے گڑھ وغیرہ دھرم اور برہمنہتیا وغیرہ اور

यन्मूर्त्यवयवाः सूक्ष्मास्तस्येमान्याश्च शंतिवदः ॥ तस्माच्छ
मित्याहुस्तस्यमूर्तिमनीषिराः ॥ १७ ॥ तदाविशंतिभूतानि
हान्तिसद्वकर्मभिः ॥ मनश्चावयवेः सूक्ष्मेः सर्वभूतकृतवय
याम् ॥ १८ ॥ तेषामिदंनुसमानांपुस्तधारामहौजसाम
हमाभ्योमूर्तिमात्राभ्यः संभवत्यवयवावयम् ॥ १९ ॥ आ
यस्यगुरां त्वेषामवाभोतिपरः परः ॥ योयोयावतिथश्चैव
तावदुगाः स्मृतः ॥ २० ॥

پُرکرتِ سمیتِ برہم کے شریک کا چھ سو گنم آئیے (یعنی تھاترا اور انیکار) اور اندریوں کے
مگر نیوالے ہیں۔
پھر اس انبہاشی اور جگت رچنے والے برہم سے اپنے اپنے کاموں کے ساتھ کام کرتے
مخلقت اور سو گنم آئیوں کے ساتھ من یعنی دل پیدا ہوا۔
پھر اس کے انبہاشی برہم نے ان سات بڑے پر اکرم رکھنے والے منت تو اور منیکار اور پانچ
نوں کے سو گنم بھاگ سے اس ناش ہو نیوالے جگت کو بنایا۔
ان صاحبو توں میں اول اول کا خواص دوسرے دوسرے میں جاتا ہے جبکہ جی جی جی
ہے اس میں دیا گن رہتا ہے۔

سین پانچ تھاترا اور ہنگامہ اور سو گنم آئیے ہیں اس میں سے ہر ایک لوگ برہم کے بھاء کو شریک کرتے ہیں۔
اکاش کا کام دھرت دینا۔ ہوا کا کام ہلکا ہلکا کرنا پانی کا کام بانٹنا پھر پھوٹی کا کام دھارن کرنا من یعنی دل کا کام
تہ کی خواہش کرنا ہے۔

جیسا کہ کاش پھیکا آئیں ایک ہی گن بنے گا ہے اور با دو ملے آئیں ایک گن آکاش کا اور دوسرا گن ایسا۔
پھر اس اور گن میں تین گن تھے شہید اسپرں دو گن آکاش اور با دو کے اور تہہ گن۔
اس تین گن اور دلی چیزوں کے اور تھہ گن۔ دوسرا لفظ ہے۔

سمننراڈے سبھ گوانو دیتا پری و تارم ॥ سبھ ی مے وا تمانو -
 رانا تارو ڈم کرو دھیا ॥ ۱۲ ॥ تا مہا س شاکلا مہا چ دھ
 مین ب نیرم مے ॥ مध्ये व्योम दिशश्चाष्टावपां स्थानं च शाश्वतम् ॥
 १३ ॥ उद्भवर्ही त्मानश्चैव मनः सदसदात्मकम् ॥ मनसश्चाप्यहंका
 रमभिमन्तारमीश्वरम् ॥ १४ ॥ महान्तमेव चात्मानं सर्वा शिषि
 णानि च ॥ विषयाणां गृहीत्वा शानैः पंचेन्द्रिमा शिच ॥ १५ ॥
 तां त्वय वाक्स्मान् य परा मप्यमितौजसाम् ॥ स निवे-
 तात्ममात्रा सुसर्वभूतानि निर्ममे ॥ १६ ॥

۱۲- برہمانے اس انڈے میں اپنے ایک برس تک ہکا اور پراتما کا دھیان کر کے
 انڈے کے دو ٹکڑے کئے۔

۱۳- اُن دو ٹکڑوں سے برہمانے شوگر اور پرتھوی کو بنایا پھر اُن دونوں کی جھ میں
 اور آٹھو دشا اور اچل شتھ ز کو بنایا۔

۱۴- پھر برہمانے پراتما سے شتھ پ لکھ پ روپ سن کو پیدا کیا اور مں کے پیدا کرنے سے
 سمر تھ اور بھمان کر نیوالے ہنکار کو بنایا۔

۱۵- اور ہنکار سے پہلے اتما کا ا پکار کر نیوالا مہت تو یعنی عقل کو پیدا کیا اور جسے
 بھوگ کرنے والی پانچ گویاں اندری اور پانچ کرم اندری اور تمنتاترا کو بنایا۔

۱۶- شکت مانوں کے شوکسم ایو نکوا اپنے بکار میں ملا کر تمام مخلوق کو بنایا۔

تतः स्वयम्भूर्भगवानव्यक्तो व्यंजयं निरुम् ॥ महाभूता
 जाः प्रादुरासीत्तमोऽबुदः ॥ ६ ॥ योऽसावतीन्द्रियग्राह्यः
 व्यक्तः सनातनः ॥ सर्वभूतमयोऽचिंत्यः समवस्वयमुद्भू-
 तः ॥ भिध्यायशरीरात्वात्सिद्धसुर्विविधाः प्रजाः ॥ अप-
 र्यादीतासुबीजमवावृजत ॥ ८ ॥ तद्वराडमभवद्धैमं स ह स
 प्रभम् ॥ तस्मिन् जज्ञे स्वयं ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः ॥ ९ ॥
 पो नारा इति प्रोक्ता आपोर्वैनस्सूनवः ॥ तायदस्यायनं
 नारायणाः स्मृतः ॥ १० ॥ यत्तत्काश्रामव्यक्तं नित्यं सद-
 कम् ॥ तद्विदुः स पुरुषो लोके ब्रह्मेति कीर्त्यते ॥ ११ ॥

جسکے پوشیدہ ولازوال قوت رکھنے والا اور اندھکار کا ناش کرنے والا پریشور پرما مت
 کو ظاہر کرتا ہوا ظاہر ہوا۔

برہما تمام اندریوں سے الگ باریک پوشیدہ ہمیشہ بے فکر و سب مخلوقات کی جان
 سے آپ ظاہر ہوا۔

جسکے دل میں یہ خواہش ہوئی کہ اپنے بدن سے ایک قسم کی خلقت پیدا کرنا چاہیے تو اس
 کو پیدا کیا پھر اس باقی میں بیج ڈالا

وہ بیج مثل طلا و آفتاب کے تصور تہیہ بن گیا پھر اس ہیہ سے
 جی جو تمام مخلوقات کے پیدا کرنے والے ہیں آپ سے آپ پیدا

منکرت میں پانی کو نارکتے ہیں اور وہ پہلے پرما کا گھر تھا اسوجہ سے پرما
 کہتے ہیں۔

برہما سب کا باعث پوشیدہ ہمیشہ قائم و فاعل مطلق ہے اسنے جس شخص کو دنیا میں
 کیا اشی کو سب لوگ برہما کہتے ہیں۔

अथमनुस्मृतिलिरव्यते

॥३॥ त्वमेकाग्रमासीनमभिगम्यमहर्षयः ॥ प्रतिपूज्ययथा
मभिमेवंवचनमब्रुवन् ॥१॥ भगवन् सर्ववर्णानां यथावदनुप-
गात् अन्तरप्रभवाणां च धर्मान् लोबकुमर्हसि ॥२॥ त्वमेको-
पात् सर्वस्य विधानस्य स्वयंभुवः ॥ अचिन्त्यस्याप्रमेयस्य का-
लात् सर्ववित्सभो ॥३॥ स तेः पृथुस्तथा सम्यगमितौ जा महात्म-
नः ॥ त्वुवाचार्यतान्सर्व्याचाहर्षीरद्वयतामिति ॥४॥ आ-
तमोभूतमप्रज्ञातमलक्षराम् ॥ अप्रतर्क्यमविज्ञेयं प्र-
सर्वतः ॥५॥

سری گنیش آئینہ

اتھ ٹیکا منوسمرا

۱۔ من جی نچت بیٹھے ہوئے تھے کہ اُنکے پاس بڑے بڑے رش لوگ آئے اور پوچھنے لگے کہ
۲۔ یہ بھگوان سب دھرم اور ورن سکروں کا دھرم ٹھیک ٹھیک ہے کیونکہ
۳۔ اے پرہیزگار چنیت اور تپت اور قدیم وید میں بیان کئے ہوئے جو بہت طرح کے
اصل مطلب کے جاننے والے ایک آپ ہی ہیں۔
۴۔ جب اُن مہاتماؤں نے اس طرح سے اُن تپتی ہوئی مہاتما سے پوچھا تب
اُن سب مہیشیوں کی پوچھا کر کے کما کر سنئے کہ
۵۔ یہ سب جگت پہلے پرکرت میں ہیں تھا اور اسکا کچھ علم و نشان نہ تھا اور نہ وہ
ہو سکتا تھا جو اب کی سی حالت میں تھا۔

* یعنی جواب میں اس سے یہ پایا جاتا ہے کہ پہلے ہی اُن مشیوں کی پوچھا کی۔

विद्युतोऽशनिमेघांश्चरोहितेन्द्रधनुंषिच॥उल्कानिः
 श्रज्योतींश्चुच्चावचानिच॥३८॥किन्नरान्वानराणां
 विधांश्चविहंगमान्॥पशून्मृगात्मनुष्यांश्चव्यालांश्चो
 दतः॥३९॥कृमिकीटपतंगांश्चयूकामसिकमत्स्यरामा
 चदंशमशकंस्थावरंचशकृविधम्॥४०॥सर्वमेतैरिदं सर्वं
 नियोगान्महात्मभिः॥यथाकर्मतथोयोगात्तद्वृष्ट्यावजं
 मम्॥४१॥येषाञ्जुषादशंकर्मभूतानामिहकीर्तितम्॥त
 श्रावोऽभिधास्यामिकमयोगंचजन्मनि॥४२॥पशवश्च
 श्वैवव्यालाश्चोभयतोदतः॥रसांसिचपिशाचाश्चमनुष
 जरायुजाः॥४३॥

اسکے بعد بجلی یا دل زدہت و منش انکا (یعنی لک کا ٹوٹنا) ثوابت و سیارہ
 کیل و قطب وغیرہ کو بنایا۔
 پھر کتھر و بنبر و چھل و چھل طرح کے پرند و چار پایہ و ہرن و آدمی و درودانہ ...

پھر بڑے کیڑے و چھوٹے کیڑے و شاہجہ و ڈھیل و مکی ڈانس و سن و ساوٹ طرح
 وخت ان سب کو بنایا۔
 جن جن جی کہتے ہیں کہ اس طرح سے بڑے بڑے رشیوں نے اپنی عبادت کے را
 حکم پا کر جانداروں کو اعمال کے موافق ساکن و متحرک بنایا۔
 ان جیوں کا جیسا کرم اس سنسار میں اگلے چار جون نے کہا ہے ان کو نکال دیا
 و ہرن و آدمی کرم آپ لوگوں سے ہم کہیں گے
 یہ و ہرن و درود و دانت دے سانب و کشش و پش و آدمی و سب حاج
 سامل کا چھپا نیوالا جو چڑا ہے اس میں رک کر پھر اس سے باہر نکلتے ہیں۔

॥ ४३ ॥ अश्विनाः पक्षिणाः सर्पानां मत्स्याश्च कच्छयाः ॥ यानि चै-
 काराणि स्थलजान्योदकानि च ॥ ४४ ॥ स्वेदजं दशमशकं चूका-
 सिकमत्सुराम् ॥ ऊष्णराशो पजायते यश्चान्यत्किंचिदीह-
 ॥ ४५ ॥ उद्भिजाः स्थावराः सर्वे बीजकारा इ प्ररोहिताः ॥ श्रो-
 तः फलपाकान्ता बहु पुष्पफलोपगाः ॥ ४६ ॥ अपुष्पाः फल-
 न्नायेते वनस्पतयः स्मृताः ॥ पुष्पिराः फलिनश्चैव वृक्षाः
 यतः स्मृताः ॥ ४७ ॥ गुच्छगुल्मश्च विविधं तथैव वृक्षा जातयः
 ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ जकारा इरु हारा ये वप्रताना वल्ल्यरावच ॥ ४८ ॥

۱۔ پرنس و سانب پھلی و کچھو ایہ سب انڈج پن (یعنی بیجہ سے پیدا ہوتے ہیں) اور
 جو اسی طرح پانی یا زمین سے پیدا ہوں وہ بھی انڈج کہلاتے ہیں۔
 ۲۔ ڈولش و مساد ڈھیل و مکھی و اڈنس یہ سب لینا سے پیدا ہوتا ہے اسلئے سویج
 کہلاتے ہیں اور جو ایسی گری سے ہوتے ہیں وہ بھی سویج کہلاتے ہیں۔
 ۳۔ شیتا و سب اڈ بھی کہلاتے ہیں کوئی تو بیج سے پیدا ہوتے ہیں اور کوئی قلم لگا-
 تے ہیں پھل پھول والے جو اپنے پر نامش ہوتے ہیں۔
 ۴۔ تین پھول نہیں لگتا فقط پھل ہی لگتا ہے او نکوئیں پت کہتے ہیں اور جن پھل پھولے کیونکہ
 ان کو لگتے ہیں او نکوئیں کہتے ہیں۔
 ۵۔ کچھ اور کلم بہت قسم کے ہوتے ہیں اور ترن کوئی تو بیج سے اور کوئی شاخ لگانے کے
 تے پن جیسے پرنانا اور بلی وغیرہ۔
 ۶۔ جین توڑ کر لگتے ہیں۔
 ۷۔ جین جڑنا سے نکلتی ہے اور بڑی شاخ بنی ہوئی۔
 ۸۔ جین سوت ہوتا ہے لکی و کمر و صاف و غیرہ۔
 ۹۔ جین جڑ ایک ہے اور ریہ بہت لگتے ہیں۔

پو جھپا تب
 سن تھا اور نہ دل

केवलं त्यग्निं मनुमन्ये प्रजापतिम् ॥ इन्द्रमेकैः परेभ्यः
ब्रह्मशाश्वतम् ॥ १२३ ॥ एव सर्वारिभूतानि यंच भि
र्त्तिभिः ॥ जन्मवृद्धिद्वयेर्नित्यं संसारयन् चक्रवत् ॥ १२४ ॥
यः सर्वभूतेषु पश्यत्यात्मानमात्मना ॥ सर्वसमतामे
त्येति परंपदम् ॥ १२५ ॥ इत्येतन्मानवंशास्त्रं भृगुप्रो
क्तम् ॥ भवत्याचारवान्नित्यं यथेष्टं प्राप्नुयाद्भक्तिम् ॥ १२६ ॥

तेमानवेधर्मशास्त्रेभृगुप्रोक्तायां संहितायां

द्वादशोऽध्यायः १२

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥

۱۲۱- اس پرش کو کوئی من کوئی اگن کوئی پرچاپت کوئی ...
۱۲۲- یہ آتما سب جانداروں میں شیخ عناصر کی مورتیوں اور فو
قی بدن و فنا کر کے ہمیشہ چکر کے مانند گردش کرتا ہے۔
۱۲۳- جو آدمی اس طریق سے سب جانداروں میں آتما کے وسیع
سمندر میں ہو کر بڑی برہم بدوی کو پاتا ہے۔
۱۲۴- اس بھگوان کے لئے ہوئے مانو شاستر کو برہمن کستری ویشیہ
کہتے ہیں اور خاطر خواہ گت کو پاتا ہے۔

منہ سہ شت و ہوم شاستر سمایت ہوا۔

सर्वमात्मनिसंपश्येत्सच्चासच्चसमाहितः ॥ सर्वह्यात्मनिसं-
 धिन्नाधर्मेकुरुतेमनः ॥ ११८ ॥ आत्मेवदेवतासर्वाः सर्वमा-
 न्यवस्थितम् ॥ आत्माहिजनयत्येषां कर्मयोगं शरीरिणा-
 म् ॥ ११९ ॥ खं सन्निवेशयेत्वेषु चेष्टनस्पर्शनेऽनिलम् ॥ पत्ति-
 मिमृशोः परन्तेजः स्नेहेऽपोगांचमूर्तिषु ॥ १२० ॥ मनसीन्दुं दिश-
 गाच्चोत्रेक्रान्तेविषाणुवलेहरम् ॥ वाच्यग्निमित्रमुत्सर्गे प्रजने-
 र्गन्तव्यं जायतिम् ॥ १२१ ॥ प्रशासितारं सर्वेषां भगीयां समराण-
 ां त्वरीं ॥ रुक्माभं स्वप्रधीगम्यं विद्यात्तं पुरुषं परम् ॥ १२२ ॥

۱- بی فکر ہو کر آتما میں سب کو دیکھے اسکو دیکھتا ہوا اور ہوم میں دل کو نہ لگا دے۔
 ۲- سب دیوتا آتما ہے آتما میں سب قائم ہے سب ارباب تالیون کے کرم کو جوگ کو یہ
 یاد کرتا ہے سب ادب کو
 ۳- ہر ایک کے دل واسے جو پے کے اکاش کو محو کرے حرکت و اس میں سب کا سب حضور
 کی ہو آتما میں باہر کی ہو او کو محو کرے اور پیٹ کی آگن میں باہر کی آگن کو اور بد اور پیر
 آتما میں سب آتما میں باہر کی ہو او کو محو کرے اور پیٹ کی آگن میں باہر کی آگن کو اور بد اور پیر
 ۴- آتما میں چند زمان کو شیر و تیر اندری میں و شا کو پا و اندری میں آتما میں سب آتما میں
 آتما میں آتما میں آتما میں آتما میں آتما میں آتما میں آتما میں آتما میں آتما میں
 پر حکمرانی کر نیوالا چھوٹے سے چھوٹا سونے کے برابر و نشانی والا سوین بد
 لے کے گہن کرنے کے لائق جو پرش ہے اسکو سب بڑا جانو۔
 ۵- تھا اور نہ

अथ मनुस्मृतेः सूचीपत्रम् ।

مطلب منو سمرت

आशय	अध्याय	अध्याय	मضمون
संसार की उत्पत्ति - आशयों	१	१	۱- فهرست مضامین
का सूचीपत्र	२	२	۲- برهم چاری کا دھرم
शिक्षा - ब्रह्मचारी का धर्म ...	३	३	۳- گریستہ کا دھرم
विवाह - गृहस्थ का धर्म -	४	४	۴- شراوه
पंचयज्ञ - राज -	५	५	۵- شش و اخلاق
विका - सुशीलता - ...	६	६	۶- بران کا سیک اور مضمون کے
जन्म मरण का सूत्र - ची-	७	७	۷- کر کے کا طریق
जों के शुद्ध करने की रीति - ...	८	८	۸- عبادت - بان پرستہ - سنیا س
तप - धाराप्रस्थ सन्यास ...	९	९	۹- دین کا دھرم
राजाओं का धर्म -	१०	१०	۱०- دلت - قانون دولانی و نو جبری
न्याय - दीवानी और फौज-	११	११	۱१- پیشہ تجارت و خدمت
दारी का कानून -	१२	१२	۱۲- آن کوم و پرت کوم - ایام
तथा - व्यापार और सेवा-	१३	१३	۱۳- مصیبت میں وزنوں کا دھرم
वृत्ति -	१४	१४	۱۴- بالیخت یعنی کفارہ
अनुलोम प्रतिलोम - आय-	१५	१५	۱۵- آواگون - لیختہ اعمال
त्तिकाल में वर्षों का धर्म - ...	१६	१६	۱۶- نیک و بد
प्रायश्चित्त -	१७	१७	
आवागमन - शुभाशुभ कर्मों	१८	१८	
का फल -	१९	१९	

M.A. LIBRARY, A.M.U.



U276

मनुस्मृतिः

मानवे धर्मशास्त्रे भृगु प्रोक्तायां संहितायां

महाभारते

पुराणां मानवो धर्मः सांसावेदश्चिकित्सितम्।

आज्ञासिद्धानि च त्वारि न हन्तव्यानि हेतुभिः१

कानपुरनगरे

नवलकिशोरीय यंत्रे मुद्रिता

संवत् १९६६ वै०।

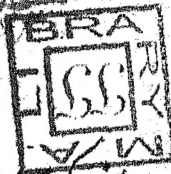
CHECKED

Date: 11/11/1966

11/11/1966

منو سمرتی

CHECKED-212



ما نو دھرم شاستر بھگ سنگھ
سنسکرت مع ترجمہ اردو مرتبہ لالہ سوامی پال صاحب

بار دوم

مطبع غنشی نول کشور مقام کاپنورین طبع ہوئی

